पित वि. संवत् १९३२ (१८७५ ई.) गणितकर्त्ता पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम. ए. प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी (लाहौर) की असली व प्रामाणिक पंचाँग २००४-०५ ई.

गौरवशाली प्रकाशन वर्ष १२९वाँ



एक मात्र वितरक :
मॉडर्न पब्लिशर्ज़
रेलवे रोड, जालन्धर
फोन : 2457160

मशहूरे आलम
पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़
माई हीरां गेट (अड्डा होशियारपुर), जालन्धर शहर – 144008

मूल्य 47.00 रु.

अन्य प्राप्ति स्थान :
जनरल बुक डिपो
अड्डा होशियारपुर, जालन्धर
फोन : 2457959


गणितकर्त्ता : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी


श्री गणेशाय नमः


संस्थापक : पं. देवी दयालु ज्योतिषी


श्री सरस्वत्यै नमः


स्वर्गीय : पं. चूनी लाल ज्योतिषी

अखिल भारतोपयोगी चित्रापक्षीय दृक् गणिताधारित

पंचाँग दिवाकर

वि. संवत् २०६१ (सन् २००४-०५ ई.)

असली, शुद्ध एवं प्रामाणिक पंचाँग

मशहूरे आलम

पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ (लाहौर वाले)

राजा सूर्य

मन्त्री मंगल

गौरवशाली प्रकाशन वर्ष १२९ वां

स्थापित वि. संवत् १९३२

गणितकर्त्ता : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम.ए. (संस्कृत-हिन्दी) (स्वर्णपदक प्राप्त)

सुपुत्रः स्वर्गीय पं. चूनी लाल ज्योतिषी प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी

सह-संपादक : पं. विवेक शर्मा (एम.ए.एल एल.बी.,), पं. पंकज शर्मा (एम.कॉम M.Tech.)

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर— 144 008 (भारत) फोन नं. : 2457959, फैक्स 2227388

प्रकाशक : मॉडर्न पब्लिशर्ज़, रेलवे रोड, जालन्धर शहर फोन : 2458388

ई-मेल पता : punditdevidayal@swiftxs.com

Printed at : **Technova Printers**, C-57-58, Focal Point, Extension, Jalandhar.

पंचाँग दिवाकर के १२५वें गौरवमयी वर्ष प्रवेश पर



अनन्त श्री विभूषित

श्री श्री १००८ काशी धर्म पीठाधीश्वर

जगद् गुरु शंकराचार्य स्वामी नारायणानन्द तीर्थ महाराज जी का शुभाशीर्वाद

भारतीय पञ्चाङ्ग पद्धतिरस्माकं हिन्दुसभ्यताया: गौरवान्विताया: समृद्धयाश्च संस्कृतेरभिव्यंजनां करोति। एकं प्रामाणिकं पञ्चाङ्गं धर्मपरायणसमाजस्य कृते पर्वत्योहार ग्रहसंचारग्रहणविवरण मुहूर्त्तज्योतिषादीनां विषयेषु आलोकस्तम्भस्य कार्यं करोति।

शताधिकवर्षेभ्य: प्राक् गणिताचार्येण सुप्रसिद्धेन ज्योतिर्विद पण्डित देवीदयाल महाभागेन लवपुरे संस्थापितं प्रकाशितं च प्रसिद्धं लोकप्रियं च पञ्चाङ्गदिवाकरम् आगामिवर्षे निज १२५तमे वर्षे प्रवेशं लभमानमस्ति। सम्प्रति तस्यैव पण्डितप्रवरस्य प्रपौत्र: गणिताचार्य: पण्डित पन्नालाल शर्मा ज्योतिर्विद् निज सुयोग्य पुत्र द्वयमाध्ययेन पञ्चाङ्गं कार्ये शुद्धस्फुटसूक्ष्मगणितागत चित्रापक्षीय निरयणपद्धतिमनुसरन् पञ्चाङ्गदिवाकरस्य लेखनं सम्पादनं च कुर्वन्नस्ति। नवीने पञ्चाङ्गदिवाकरे ज्योतिष: व्रतपर्वादि धर्मशास्त्र विषयकानामुपयोगिविषयानां च समावेशनात् पञ्चाङ्ग दिवाकरं सम्प्रति सर्वविधर्मपरायण जनसामान्यस्य कृते सुतरामुपेयोगी प्रतीयते।

आशस्यते यद् लोकहितं सम्मुखीनं कृत्वा निज कुल परम्परा परिपालने पण्डित पन्ना लाल ज्योतिर्विद् निज परिवारस्य सहयोगेन पञ्चाङ्गमिदमतोऽप्यधिकं उपयोगिनं कर्तुं प्रयासरतो भविष्यति। अस्य प्रचुर: प्रचार: प्रसारश्च भवेत् अस्योन्नतिं सुतरां कामयमान: शुभाशीरपि कामये।

तिथौ
वैशाख पूर्णिमा, भृगुवासर:
प्रविष्टे १७ वैशाख, सं. २०५६ विक्रमी

श्री हस्त-मुद्रा—
१००८ स्वामी नारायणान्द तीर्थ
रामेश्वर मठ:
श्री काशी धर्म पीठाधीश्वर
काशीक्षेत्रम् (वाराणसी)

पंचांगदिवाकर की तरह *मुफीद आलम जंत्री* उर्दू-हिन्दी-पंजाबी भाषाओं में सन् २००४ ई० की भी छपकर तैयार है जोकि उर्दु-पंजाबी पाठकों के लिए समान रूप से उपयोगी होंगी।

पंचाँग दिवाकर देखने की विधि

(१) पंचांग दिवाकर का निर्माण ग्रीनविच (Greenwich) से पूर्व रेखांश ७५°। २४ एवं अक्षांश ३१°। १९ उत्तर के आधार पर लिया गया है। पंचांग में निर्दिष्ट मुख्यत: सूर्योदयास्त भी इसी अक्षांश अर्थात् जालन्धर शहर का है।

(२) इस पंचांग का गणित भारतीय ज्योतिषाचार्यों द्वारा प्रामाणित तथा इसके निर्माण में भारत सरकार द्वारा मान्य सूक्ष्म दृक् गणित एवं चित्रा पक्षीय निरयण पद्धति का आश्रय लिया गया है।

(३) पक्ष वाले पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय, सूर्यास्त भारतीय समयानुसार जालन्धर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण वक्री भवन-संस्कार होने से सूर्योदयादिष्टादि बनाने में उपयोगी होंगे। प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में दो मिनट घटावें और सूर्यास्त में दो मिनट जमा कर देवें।

(४) तिथि, नक्षत्र, योग एवं करणों के सामने दिए गए घड़ी पल उनका सूर्योदय से समासिकाल बतलाते हैं। तिथि, नक्षत्रों आदि के घड़ी पलों के घण्टे-मिनट बनाकर उसमें स्थानीय (अपने नगर) का सूर्योदय जमा कर देने तिथि-नक्षत्रों आदि का समासिकाल भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में निकल आता है। पाठकों की सुविधा हेतु तिथि-नक्षत्रों एवं ग्रहों आदि के समासिकाल भा. स्टै. टाईम में भी दिए गए हैं। जहाँ पर २४, २५, २६ आदि अंक लिखे हैं, वहाँ २४ रात्रि १२ बजे, २५ को रात्रि के १ बजे, २६ को रात्रि के २ बजे जानें। इसी प्रकार आगे के अंकों में भी २४ घटा कर अर्ध रात्रि के बाद का समय जानें। जब तक आगामी दिवसीय सूर्योदय न हो, तब तक **भारतीय ज्योतिष परम्परानुसार पिछली तारीख** का दिन ही माना जाता है।

(५) दिनमान घड़ी पलों में है तथा दाएँ अंग्रेज़ी तारीख एवं देशीय प्रविष्टों के पश्चात् लस्टर में चन्द्र राशि-संचार भद्रा, पंचक आदि व सूर्यादि ग्रहों के नक्षत्र राशि प्रवेश काल, उदयास्तादि घड़ी पलों में दिए गए हैं। निर्दिष्ट घड़ी पलों को घण्टे मिनट बनाकर उन में स्थानीय सूर्योदय जमा करके उनको भा. स्टै. टाईम में परिवर्तित किया जा सकता है। **ध्यान रखें।**, चंद्र संचार व सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र प्रवेश सूर्योदयात् प्रवेश काल है, न कि समाप्ति काल है। तिथि, नक्षत्रादि के घंटा मिनट एवं **दैनिक ग्रह स्पष्ट भू-केन्द्रीय होने से भा. स्टैण्डर्ड टाईम में सर्वत्र भारतोपयोगी होंगे।**

(६) पक्षों में शुक्ल पक्ष को शुदि या चाँदना पक्ष, तथा कृष्ण पक्ष को वदि या अन्धेरा पक्ष भी कहते हैं। पूर्णिमा १५ के अंक से तथा अमावास को ३० के अंक में निर्दिष्ट किया गया है। तिथि क्षय के आगे शून्य (०) के चिन्ह लगाए गए हैं तथा जहाँ कहीं, **नक्षत्र या योग का क्षय** हुआ है, उसे लस्टर के ऊपर अलग से लिखा गया है। जहाँ तिथि, नक्षत्र या योग के आगे ६०। ०० घड़ी लिखा है, उससे तिथि, नक्षत्रादि की वृद्धि समझें।

पंचांगदिवाकर के तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रह-नक्षत्र आदि प्रवेश की गणित पं. पंकज शर्मा (M.Tech) द्वारा विकसित Computer Programme से की गई है।

परमोपयोगी शास्त्र वचन

(सदाचरण)

- शास्त्र में धर्म के दस सामान्य लक्षण बतलाएं हैं—
  धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयः शौचमिन्द्रय निग्रहः। धी-विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्॥ मनुस्मृति
  —अर्थात् धैर्य, क्षमा, दम (लोभादि वृत्तियों का दमन), चोरी न करना ,पवित्रता, इन्द्रियों का संयम, विवेकशील बुद्धि, विद्या, सत्य और क्रोध न करना। ये धर्म के दश (१०) सामान्य लक्षण कहे गए हैं।
- श्रुति व स्मृति से समर्थित होने पर आचार (आचरण) को श्रेष्ठ धर्म एवं अनुसरणीय कहा गया है, तथा उसे परमधर्म की संज्ञा दी गई है—
  आचारः परमो धर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त एव च। तस्मादअस्मिन् सदा युक्तो नित्यंस्यादात्मवान् द्विज॥
- वसिष्ठ धर्म सूत्रानुसार आचरणहीन व्यक्ति को तो वैद भी पवित्र नहीं करते—
  "आचरणहीनं न पुनन्ति वेदा.........."
- जिस मनुष्य ने बुरे आचरणों का त्याग नहीं कर दिया है, जिसका मन शान्त नहीं, जिसका चित्त एकाग्र नहीं है तथा जिसने मन, बुद्धि को वश में नहीं कर लिया है, उसे प्रज्ञान (सूक्ष्म बुद्धि) के द्वारा परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती—
- **नाविरतो दुश्चरितान्नऽशान्तो ना समाहितः। नऽशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात्**
- **निरुत्साहस्य दीनस्य शोकपर्याकुलात्मनः। सर्वार्था व्यवसीदन्ति व्यसनं चाधिगच्छति॥ (वाल्मी रामा)**
  —अर्थात् जो व्यक्ति उत्साहहीन होकर दीन, व्यथित एवं शोकाकुल होकर रहता है, उसके सब काम बिगड़ जाते हैं, तथा वह बहुत बड़ी विपत्ति में पड़ जाता है॥
- **येषां त्रीण्यवदातानि विद्या योनिश्च कर्म च। ते सेव्यास्तैः समास्या हि शास्त्रेभ्योऽपि गरीयसी॥**
  —अर्थात् जिनके विद्या, कुल और कर्म—ये तीनों शुद्ध हों, उन साधु पुरूषों की सेवा में रहे उनके साथ बैठना-उठना शास्त्रों के स्वाध्याय से भी श्रेष्ठ है॥
- **अग्निहोत्रं गृहं क्षेत्रं मित्र भार्या सुत शिशुम्। रिक्त पाणिर्न पश्येद्य राजानं देवतां गुरुम्॥**
  —अर्थात् अग्निहोत्र (यज्ञ, हवन आदि करने वाला), अपने घर, तीर्थ क्षेत्र, मित्र, पत्नी, पुत्र, बालक, राजा, देवता (मन्दिर) एवं गुरू के पास जाते समय कभी खाली हाथ नहीं जाना चाहिए।
- सोने से पूर्व अपना सिरहाना सदा पूर्व अथवा दक्षिण दिशा की ओर रखना चाहिए।

(१) **आसन**—बिना आसन पर बैठ कर किए गए जप, तप, पाठ एवं मन्त्र आदि अनुष्ठान पूर्ण फल प्रदायक नहीं होते। कुश, कम्बल, मृगचर्म एवं रेशम का आसान जपादि के लिए श्रेष्ठ कहे गए हैं। संतानवान गृहस्थी तो मृगचर्म पर भी न बैठे।

बांस, मिट्टी, पत्थर, तृण, गोबर, पीपल और लोहे की कील लगी चौकी (आसन) पर भी न बैठें।

(२) पक्रिमा देवी की एक बार, सूर्य की ७ बार, गणेश जी की तीन बार, विष्णु जी की चार बार तथा शिवजी की आधी प्रदक्षिण करनी चाहिए।

(३) आरती करते समय भगवान् विष्णु के समक्ष १२ बार, सूर्य के समक्ष सात, दुर्गा के सामने नौ, शंकर के समक्ष ११ बार और गणेश जी के सामने चार बार आरती घुमानी चाहिए।

(४) ईंट, लोहा, पत्थर, मिट्टी और लकड़ी—ये नए मकान में नए ही लगाने चाहिएं। एक मकान की सामग्री दूसरे मकान में लगाना अत्यन्त हानिकारक है।

विषय-सूची—पंचांगदिवाकर संवत् २०६१

इस वर्ष के नवीन, उपयोगी एवं आकर्षक विषय

प्रमुख व्रत, पर्व, त्यौहार एवं छुट्टियाँ (सन् 2004–05 ई.)

जनवरी 2004 ई.

इंग्लिश नववर्ष प्रारंभ	1 जन. गुरु
पुत्रदा एकादशी व्रत	3 जन. शनि
माघ स्नान प्रारम्भ	7 जन. बुध
श्री गणेश संकट चतुर्थी	11 जन. रवि
लोहड़ी पर्व	13 जन. मंग.
मकर संक्रान्ति (माघी)	14 जन. बुध
मौनी अमावस	21 जन. बुध
गौरी तृतीया	24 जन. शनि
श्री गणेश तिल चतुर्थी	25 जन. रवि
गणतन्त्र दिवस भारत	26 जन. चंद्र
बसन्त पंचमी	26 जन. चंद्र
रथ-आरोग्य सप्तमी	28 जन. बुध
भीष्माष्टमी	29 जन. गुरु

फरवरी

भीष्म द्वादशी	2 फर. चंद्र
पूर्णिमा, माघस्नान समा.	6 फर. शुक्र
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	18 फर. बुध
होलाष्टक प्रारम्भ	28 फर. शनि

मार्च

गोविन्द द्वादशी	3 मार्च बुध
फा. पूर्णिमा, होली पर्व	6 मार्च शनि
होलिका दहन	6 मार्च शनि
होलाष्टक समाप्त	6 मार्च शनि
होला मेला	7 मार्च रवि
शीतलाष्टमी व्रत	14 मार्च रवि
महाविषुव दिन	20 मार्च शनि
वि. संवत् 2060 पूर्ण	20 मार्च शनि
वि. संवत् 2061 प्रारंभ	21 मार्च रवि
चैत्र नवरात्रे प्रारम्भ	21 मार्च रवि
गौरी तृतीया (गणगौर)	23 मार्च मंग.
श्री लक्ष्मी पंचमी	26 मार्च शुक्र
स्कन्द षष्ठी	26 मार्च शुक्र
श्री दुर्गाष्टमी	29 मार्च चंद्र
श्री रामनवमी	30 मार्च मंग.
नवरात्रे समाप्त	30 मार्च मंग.

अप्रैल

महावीर जयंती	3 अप्रै. शनि
चैत्र पूर्णिमा, वैशा. स्नानप्रा.	5 अप्रै. चंद्र
गुड फ्राइडे	9 अप्रै. शुक्र
वैशाखी पर्व, संक्रान्ति	13 अप्रै. मंग.
अर्धकुम्भी पर्व, हरिद्वार	13 अप्रै. मंग.
श्री परशुराम जयंती	22 अप्रै. गुरु
अक्षया तृतीया	22 अप्रै. गुरु
गुरु शंकराचार्य जयंती	24 अप्रै. शनि
श्री गंगा जयंती	26 अप्रै. चंद्र
श्री जानकी, बगुलामुखी जयं.	29 अप्रै. गुरु

मई

नृसिंह चतुर्दशी	3 मई चंद्र
वैशाख, बुद्ध पूर्णिमा	4 मई मंग.
कुम्भ महापर्व (उज्जैन)	4 मई मंग.
खग्रास चन्द्रग्रहण	4 मई मंग.
वैशाख स्नान समाप्त	4 मई मंग.
वट सावित्री व्रत (अमावस)	18 मई मंग.
भावुका अमावस	19 मई बुध
रम्भा तृतीया व्रत	21 मई शुक्र
श्री गंगा दशहरा (हरिद्वार)	29 मई शनि
निर्जला एकादशी व्रत	30 मई रवि

जून

वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष)	2 जून बुध
संत कबीर जयंती	3 जून गुरु
रथ यात्रा (पुरी)	19 जून शनि
सूर्य दक्षिणायन में	21 जून चंद्र
कुमार षष्ठी	23 जून बुध
विवस्वत सप्तमी	24 जून गुरु

जुलाई

गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा	2 जुला. शुक्र
चातुर्मास्य व्रतादि प्रारंभ	2 जुला. शुक्र
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला. शुक्र
शनिवारी हरियाली अमा.	17 जुला. शनि
श्रावण अधिकमासारम्भ	18 जुला. रवि

अगस्त

भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग. रवि
श्रावण अधिकमास समाप्त	16 अग. चंद्र
मधुस्रवा-सिंघारा तीज	19 अग. गुरु
नागपंचमी	20 अग. शुक्र
श्री दुर्गाष्टमी	23 अग. चंद्र
श्री दूर्वाष्टमी व्रत	23 अग. चंद्र
श्रावण पूर्णिमा, ऋषि तर्पण	30 अग. चंद्र
रक्षा बन्धन	30 अग. चंद्र

सितम्बर

श्री गणेश बहुला चतुर्थी	2 सितं. गुरु
चन्दन षष्ठी व्रत	4 सितं. शनि
श्रीकृष्ण जन्माष्टमीव्रत स्मार्त्त	6 सितं. चं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी वैष्णव	7 सितं. मं.
श्री गुग्गा नवमी	8 सितं. बुध
कुशोत्पाटनी पिठोरी अमा.	14 सितं. मंग.
हरितालिका तृतीया	17 सितं. शुक्र
कलंक चतुर्थी (चंद्रदर्शन निषेध)	17 सितं. शु.
सिद्धिविनायक व्रत	18 सितं. शनि
ऋषि पंचमी	19 सितं. रवि
सूर्य षष्ठी व्रत	20 सितं. चंद्र
मुक्ताभरण सन्तान सप्तमी	21 सितं. मंग
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारंभ	21 सितं. मंग
श्री राधाष्टमी	21 सितं. मंग.
श्री चन्द्र नवमी	22 सितं. बुध
श्रीवामन जयंती (द्वादशी)	25 सितं. शनि
अनन्त चतुर्दशी	27 सितं. चंद्र
मे. बाबा सोढल, जालं.	27 सितं. चंद्र
भाद्र. प्रौष्ठपदी पूर्णिमा	28 सितं. मंग.
पितृपक्ष श्राद्ध प्रारंभ	29 सितं. बुध

अक्तूबर

महात्मा गांधी जयंती	2 अक्तू. शनि
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त	6 अक्तू. बुध
सर्वपितृ श्राद्ध, श्राद्ध समा.	13 अक्तू. बुध
शरद् नवरात्रे प्रारम्भ	14 अक्तू. गुरु
कार्तिक संक्रान्ति	16 अक्तू. शनि
सरस्वती पूजन	20 अक्तू. बुध
श्री दुर्गाष्टमी	21 अक्तू. गुरु
सरस्वती विसर्जन	22 अक्तू. शुक्र
महानवमी, नवरात्रे समा.	22 अक्तू. शुक्र
विजयादशमी (दशहरा)	22 अक्तू. शुक्र
भरत मिलाप	24 अक्तू. रवि
शरद् पूर्णिमा-कोजागर व्रत	27 अक्तू. बुध
शरद् पूर्णिमा	28 अक्तू. गुरु
महर्षि बाल्मीकि जयंती	28 अक्तू गुरु
कार्तिक स्नान प्रारम्भ	28 अक्तू. गुरु
करवा चौथ व्रत	31 अक्तू. रवि

नवम्बर

अहोई अष्टमी व्रत	5 नवं. शुक्र
गोवत्स द्वादशी	9 नवं. मंग.
धन त्रयोदशी	10 नवं. बुध
नरक चतुर्दशी	11 नवं. गुरु
श्रीहनुमान जयंती	11 नवं. गुरु
दीपावली, महालक्ष्मी पूजन	12 नवं. शुक्र
अन्नकूट, गोवर्धन पूजन / विश्वकर्मा दिवस (पंजाब)	13 नवं. शनि
यमद्वितीया, भाई दूज	14 नवं. रवि
सूर्य षष्ठी	17 नवं. बुध
गोपाष्टमी	19 नवं. शुक्र
अक्षया-कूष्माण्ड नवमी	20 नवं. शनि
भीष्मपंचक प्रारम्भ	22 नवं. चंद्र
देवप्रबोधिनी एकादशी	22 नवं. चंद्र
तुलसी विवाह	23 नवं. मंग
कार्तिक पूर्णिमा व्रतादौ	26 नवं. शुक्र
श्री गुरु नानक जयंती	26 नवं. शुक्र
भीष्मपंचक समाप्त	26 नवं. शुक्र

दिसम्बर

श्रीकालभैरवाष्टमी (निशीथ व्या.)	4 दिसं. श.
स्कन्द षष्ठी	16 दिसं. गुरु
चम्पा षष्ठी	17 दिसं. शुक्र
सूर्य उत्तरायणे	21 दिसं. मंग
मोक्षदा एकादशी व्रत	22 दिसं. बुध
श्री गीता जयन्ती	22 दिसं. बुध
अखण्ड द्वादशी	23 दिसं. गुरु
क्रिसमिस डे	25 दिसं. शनि
श्रीदत्तात्रेय जयंती	26 दिसं. रवि

इस वर्ष के दो प्रमुख महापर्व

(१) अर्धकुम्भी पर्व (हरिद्वार)	13 अप्रैल (मंगल)
(२) कुम्भ (सिंहस्थ) महापर्व (उज्जैन)	4 मई (मंगल)

इनकी स्नान तिथियों एवं अन्य आवश्यक जानकारी के लिए पृष्ठ 11 पढ़ें।

जनवरी 2005 ई.

इंग्लिश नववर्ष प्रारंभ 1 जन. शनि
लोहड़ी पर्व 12 जन. बुध
मकर संक्रान्ति (माघी) 13 जन. गुरु
पुत्रदा एकादशी व्रत 20 जन. गुरु
पूर्णिमा, माघस्नान प्रारंभ 25 जन. मंग
गणतन्त्र दिवस भारत 26 जन. बुध
श्री गणेश संकट चौथ 29 जन. शनि

फरवरी

भौमवती मौनी अमावस 8 फर. मंग.
गौरी तृतीया 11 फर. शुक्र
श्री गणेश तिल चतुर्थी 12 फर. शनि
बसन्त पंचमी 13 फर. रवि
रथ-आरोग्य सप्तमी 15 फर. मंग.
भीष्माष्टमी 16 फर. बुध
भीष्म द्वादशी 20 फर. रवि
पूर्णिमा, माघ स्नान समा. 24 फर. गुरु
गुरु रविदास जयंती 24 फर. गुरु

मार्च

श्री महाशिवरात्रि व्रत 8 मार्च मंग.
होलाष्टक प्रारम्भ 18 मार्च शुक्र
गोविन्द द्वादशी 22 मार्च मंग.
पूर्णिमा, होली पर्व 25 मार्च शुक्र
होलिका दहन 25 मार्च शुक्र
होलाष्टक समाप्त 25 मार्च शुक्र
होला मेला 26 मार्च शनि

अप्रैल

शीतलाष्टमी व्रत 2 अप्रै. शनि
वि. संवत् 2061 पूर्ण 8 अप्रै. शुक्र

एकादशी व्रत

पुत्रदा एका. (पौष शु.) 3 जन. शनि
षट्तिला एका. व्रत (मा. कृ.) 18 जन. रवि
जया एका. व्रत (स्मार्त्त) 1 फर. रवि
जया एका. व्रत (वैष्णव) 2 फर. चंद्र
विजया एका. (फागु. कृ.) 16 फर. चंद्र
आमलकी एका. (फागु. शु.) 2 मार्च मंग.
पापमोचनी एका. (चैत्र कृ.) 17 मार्च बुध
कामदा एका. (चैत्र शु.) 1 अप्रै. गुरु
वरूथिनी एका. (वैशा. कृ.) 15 अप्रै. गुरु
मोहिनी एका. (वैशा. शु.) 1 मई शनि
अपरा एका. (ज्ये. कृ.) 14 मई शुक्र
निर्जला एका. (ज्ये. शु.) 30 मई रवि
योगिनी एका. (आषा. कृ.) 13 जून रवि
हरिशयनी एका. (आषा. शु.) 29 जून. मंग
कामिका एका. (प्र. श्राव. कृ.) 13 जुला. मंग.
पुरुषोत्तमा एका. (अधि. श्रा. शु.) 28 जुला. बुध
पुरुषोत्तमा एका. (अधि. श्रा. कृ.) 11 अग. बुध
पवित्रा एका. (शु.श्रा.शु.) 26 अग. गुरु
अजा एका. (भाद्र. कृ.) 10 सितं. शुक्र
पद्मा एका. (भाद्र. शु.) 24 सितं. शुक्र
इंदिरा एका. (आश्वि कृ.) 10 अक्तू. रवि
पापांकुशा एका. (आश्वि. शु.) 24 अक्तू. रवि
रमा. एका. (कार्तिक कृ.) 8 नवं. चंद्र
देवप्रबोधिनी एका. (कार्तिक शु.) 22 नवं. चंद्र
उत्पन्ना एका. (मार्ग. कृ.) 8 दिसं. बुध
मोक्षदा एका. (मार्ग. शु.) 22 दिसं. बुध
सफला. एका. स्मार्त्त 6 जन. गुरु
सफला एका. वैष्णव 7 जन. शुक्र
पुत्रदा एका. व्रत 20 जन. गुरु
षट्तिला एका. व्रत 5 फर. शनि
जया एकादशी व्रत 19 फर. शनि
विजया एका. (फागु. कृ.) 6 मार्च रवि
आमलकी एका. (फागु. शु.) 21 मार्च चंद्र
पापमोचनी एका. व्रत 5 अप्रै. मंग.

व्रत श्री सत्यनारायण

पौष पूर्णिमा व्रत 7 जन. बुध
माघ पूर्णिमा व्रत 5 फर. गुरु
फाल्गुन पूर्णिमा व्रत 6 मार्च शनि
चैत्र पूर्णिमा व्रत 5 अप्रै. चंद्र
वैशाख पूर्णिमा व्रत 4 मई मंग.
ज्येष्ठ पूर्णिमा व्रत 2 जून बुध
आषाढ़ पूर्णिमा व्रत 2 जुला. शुक्र
अधि. श्राव. पूर्णिमा व्रत 31 जुला. शनि
शुद्ध श्राव. पूर्णिमा व्रत 29 अग. रवि
भाद्रपद पूर्णिमा व्रत 28 सितं. मंग.
आश्विन पूर्णिमा व्रत 27 अक्तू. बुध
कार्तिक पूर्णिमा व्रत 26 नवं. शुक्र
मार्गशीर्ष पूर्णिमा व्रत 26 दिसं. रवि

(सन् 2005 ई.)

पौष पूर्णिमा व्रत 24 जन. चंद्र
माघ पूर्णिमा व्रत 23 फर. बुध
फाल्गुन पूर्णिमा व्रत 25 मार्च शुक्र

अमावस्याएँ

(स्नान-दान, देव पितरादि तर्पणाय)

माघ (मौनी) अमावस 21 जन. बुध
फाल्गुन अमावस 20 फर. शुक्र
चैत्र (शनैश्चरी) अमा. 20 मार्च शनि
वैशाख (सोमवती) अमा. 19 अप्रै. चंद्र
ज्ये. अमा. (तर्पणाय) दुपे. व्या. 18 मई मंग.
ज्ये. अमा. (स्नानदानार्थ) उदय क. 19 मई बुध
आषाढ़ अमावस 17 जून गुरु
श्रा. शनैश्चरी हरियाली अमा. 17 जुला. शनि
अधि. श्रावण अमा. (तर्पणाय) 15 अग. रवि
अधि. सोम. श्रावण अमा. (स्नानदानार्थ) 16 अग. चंद्र
भाद्र. पिठौरी अमा. 14 सितं. मंग.
आश्विन अमा. (तर्पणाय) 13 अक्तू. बुध
आश्विन अमा. (स्नानदानार्थ) 14 अक्तू. गुरु
कार्तिक अमावस 12 नवं. शुक्र
मार्ग. (शनैश्चरी) अमा. 11 दिसं. शनि

(सन् 2005 ई.)

पौष (सोमवती) अमा. 10 जन. चंद्र
माघ (मौनी) अमा. 8 फर. मंग.
फाल्गुन अमावस 10 मार्च गुरु
चैत्र अमावस 8 अप्रै. शुक्र

श्री गणेश चतुर्थी व्रत

श्री गणेश संकट चतुर्थी 11 जन. रवि
श्री गणेश तिल चतुर्थी 25 जन. रवि
श्री गणेश चतु. (फागु.) 9 फर. चंद्र
श्री गणेश चतु. (चैत्र) 10 मार्च बुध
श्री गणेश चतु. (वैशाख) 8 अप्रै. गुरु
श्री गणेश चतु. (ज्येष्ठ) 7 मई शुक्र
श्री गणेश चतु. (आषाढ़) 6 जून. रवि
श्री गणेश चतु. (शुद्ध श्राव.) 5 जुला. चंद्र
श्रीगणेश चतु. (अधि. श्राव) 3 अग. मंग.
श्री गणेश चतु. (भाद्र. कृ.) 2 सितं. गुरु
श्रीसिद्धि विनायक (भाद्र. शु.) 18 सितं. शनि
श्रीगणेश चतु. (आश्विन) 1 अक्तू. शुक्र
श्री गणेश चतु. (कार्तिक) 31 अक्तू. रवि
श्रीगणेश चतु. (मार्गशीर्ष) 30 नवं. मंग
श्रीगणेश चतु. (पौष) 30 दिसं. गुरु.

(सन् 2005 ई.)

श्री गणेश संकट चतुर्थी 29 जन. शनि
श्री गणेश तिल चतुर्थी 12 फर. शनि
श्री गणेश चतु. (फाल्गुन) 27 फर. रवि
श्री गणेश चतु. (चैत्र) 29 मार्च मंग.

जैन व्रत-पर्व व उत्सव

मेरु त्रयोदशी 20 जन. मंग.
मर्यादा महोत्सव 28 जन. बुध
जैन महोत्सव (कांगड़ा) 4-6 मार्च
ऋषभदेव जयंती 13 मार्च शनि
वरसी तप शुरु 14 मार्च रवि
ओली तप शुरु 29 मार्च चंद्र
श्री महावीर जयंती 3 अप्रै. शनि
ओली तप समाप्त 5 अप्रै. चंद्र
बरसी तप समापन 22 अप्रै. गुरु
केवल ज्ञान दिवस 30 अप्रै. शुक्र
मेला चक्रेश्वरी देवी (सरहिंद) 5-7 जून
चातुर्मास्य व्रतादि प्रारंभ 2 जुला. शुक्र
तेरापन्थ स्थापना दिवस 2 जुला. शुक्र
जैन महोत्सव 17 जुला. शनि
पर्युषण पर्वारम्भ 11 सितं. शनि
संवत्सरी महापर्व 18 सितं. शनि
श्रीकालू निर्वाण दिवस 20 सितं. चंद्र
श्रीतुलसी पट्टारोहण 22 सितं. बुध
श्री महावीर निर्वाण 12 नवं. शुक्र
श्री वीर संवत् 2530 शुरु 13 नवं. शनि
जन्मदिन आचार्य श्रीतुलसी 14 नवं. रवि
ज्ञान पंचमी 16 नवं. मंग.
चातुर्मास्य व्रतादि समा. 26 नवं. शुक्र
मौनी एकादशी 22 दिसं. बुध
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा 31 दिसं. शुक्र

(सन् 2005 ई.)

श्री पार्श्वनाथ जयंती 6 जन. गुरु
मेरु त्रयोदशी 7 फर. चंद्र
मर्यादा महोत्सव 15 फर. मंग.
जैन महोत्सव (कांगड़ा) 23-25 मार्च
ऋषभदेव जयंती 1 अप्रै. शुक्र
वरसी तप शुरु 2 अप्रै. शनि

मुस्लिम त्यौहार

ईदुलजुहा (बकरीद) 2 फर. चंद्र
मुहर्रम, हिजरी 1425 प्रा. 22 फर. रवि
मुहर्रम ताजिया 2 मार्च मंग.
चेहलुम 10 अप्रै. शनि
शहादत-ए-ईमामहसन 19 अप्रै. चंद्र
आखिरी चहार 21 अप्रै. बुध
ईदे मिलाद (बाराह वफ़ात) 3 मई चंद्र
ईद-ए-मौलाद 8 मई शनि
ग्यारहवीं शरीफ़ 31 मई चंद्र
उर्स ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर) 18-23 अग.
जन्मदिन हज़रत अली 30 अग. चंद्र

शबे मिराज	13 सितं. चंद्र
शबे बारात	1 अक्तू. शुक्र
रमजान (रोजे शुरु)	16 अक्तू. शनि
शहादत हज़रत अली	5 नवं. शुक्र
शबे कदर	11 नवं. गुरु
जमातुलविदा	12 नवं. शुक्र
ईदुलफितर	15 नवं. चंद्र

(सन् 2005 ई.)

ईदुलजुहा (बकरीद)	21 जन. शुक्र
मुहर्रम, 1426 हिजरी प्रा.	11 फर. शुक्र
मुहर्रम (ताजिया)	20 फर. रवि
चेहलुम	31 मार्च गुरु
आखिरी चहार	6 अप्रै. बुध
शहादत-ए-ईमामहसन	8 अप्रै. शुक्र

पितृ पक्ष में श्राद्ध

अपने पूर्वज पितरों के प्रति श्रद्धा भावना बनाए रखने हेतु पितृ यज्ञ एवं श्राद्ध कर्म करना नितान्त आवश्यक है। इससे स्वास्थ्य, आयु एवं सुख-शान्ति रहती है। सन् 2004 ई. में श्राद्ध की तिथियों का विवरण:

पूर्णिमा का श्राद्ध	28 सितं. मंग.
प्रतिपदा का श्राद्ध	29 सितं. बुध
द्वितीया का श्राद्ध	30 सितं. गुरु
तृतीया का श्राद्ध	1 अक्तू. शुक्र
चतुर्थी का श्राद्ध	2 अक्तू. शनि
पंचमी का श्राद्ध	3 अक्तू. रवि
षष्ठी का श्राद्ध	4 अक्तू. चंद्र
सप्तमी का श्राद्ध	5 अक्तू. मंग.
अष्टमी का श्राद्ध	6 अक्तू. बुध
नवमी का श्राद्ध	7 अक्तू. गुरु
दशमी का श्राद्ध	8 अक्तू. शुक्र
एकादशी का श्राद्ध	9 अक्तू. शनि
द्वादशी का श्राद्ध	10 अक्तू. रवि
त्रयोदशी का श्राद्ध	11 अक्तू. चंद्र
चतुर्दशी-अमावस श्राद्ध	13 अक्तू. मंग.

भारत सरकार एवं प्रादेशिक सरकारों की छुट्टियां (सन् 2004-05 ई०)

लोहड़ी	13 जन. मंग.
मकर संक्रान्ति, माघी	14 जन. बुध
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. चंद्र
ईदुलजुहा (बकरीद)	2 फर. चंद्र
गुरु रविदास जयन्ती	6 फर. शुक्र
श्री महाशिवरात्रि	18 फर. बुध
होली	6 मार्च शनि
होला मेला (पंजाब)	7 मार्च रवि
श्री रामनवमी	30 मार्च मंग.
बैंक हालीडे	1 अप्रै. गुरु
महावीर जयंती	3 अप्रै. शनि
गुड फ्राइडे	9 अप्रै. शुक्र
वैशाखी	13 अप्रै. मंग.
अम्बेदकर जयन्ती	14 अप्रै. बुध
बुद्ध जयन्ती	4 मई मंग.
रथ यात्रा (पुरी)	19 जून शनि
श. सः ऊधम सिंह (पं.)	31 जुला. शनि
भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग. रवि
श्री कृष्ण जन्माष्टमी	6 सितं. चंद्र
बैंक हालीडे	30 सितं. गुरु
महात्मा गाँधी जयंती	2 अक्तू. शनि
दशहरा	22 अक्तू. शुक्र
वाल्मीकि जयन्ती	28 अक्तू. गुरु
दीपावली	12 नवं. शुक्र
विश्वकर्मा दिवस (पंजाब)	13 नवं. शनि
ईदुलफितर	15 नवं. चंद्र
गुरु नानक जयन्ती	26 नवं. शुक्र
क्रिसमिस डे	25 दिसं. शनि

(सन् 2005 ई.)

लोहड़ी पर्व	12 जन. बुध
मकर संक्रान्ति, माघी	13 जन. गुरु
ईदुलजुहा (बकरीद)	21 जन. शुक्र
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. बुध
गुरु रविदास जयन्ती	24 फर. गुरु
श्री महाशिवरात्रि	8 मार्च मंग.
होली	25 मार्च शुक्र
होला मेला (पंजाब)	26 मार्च शनि

दशमहाविद्या जयन्ती

श्री महातारा जयन्ती	30 मार्च मंग.
श्रीमातङ्गी जयन्ती	22 अप्रै. गुरु
श्रीबगुलामुखी जयन्ती	29 अप्रै. गुरु
श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती	4 मई मंग.
श्रीधूमावती जयन्ती	27 मई गुरु
श्रीमहाकाली जयन्ती	6 सितं. चन्द्र
श्रीभुवनेश्वरी जयन्ती	25 सितं. शनि
श्रीकमला जयन्ती	30 अक्तू. शनि
श्री त्रिपुरभैरव जयन्ती	26 दिसं. रवि
श्रीललिता जयन्ती	24 फर. गुरु

पर्व श्रीपिण्डोरीधाम (गुरदासपुर)

श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती	28 जन. बुध
होलिका दहन	6 मार्च शनि
श्रीभगवत्नारायण जयं.	10 मार्च बुध
रामनवमी पर्व	30 मार्च मंग.
वैशाखी पर्व	13-14 अप्रै.
जानकी जयंती	29 अप्रै. गुरु
गंगा दशहरा	29 मई शनि
गुरु पूर्णिमा	2 जुला. शुक्र
तुलसी जयंती पर्व	22 अग. रवि
श्री कृष्ण जयंती पर्व	6-8 सितं.
श्रीवामन जयन्ती	25 सितं. शनि
विजयादशमी	22 अक्तू. शुक्र
मह. गु. गोविन्ददास जयं.	26 अक्तू. मं.
शरद् पूर्णिमा पर्व	27-28 अक्तू.
श्री हनुमान जयन्ती	11 नवं. गुरु
दीपावली पर्व	12 नवं. शुक्र
श्रीगीता जयन्ती	22 दिसं. बुध

निरयण संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल—सन् 2004-05 ई.

नाम संक्रान्ति	ता. मास. वार	प्रवे. काल (घं. मिं.)	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टैं. टा.)
माघ संक्रान्ति	14 जन. बुध	23-43	सायं 17-19 से 30-07 तक
फागु. संक्रान्ति	13 फर. शुक्र	12-41	प्रातः 6-17 से सू. अ. तक
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च रवि	9-33	प्रातः सू. उ. से दोपहर 15-57 तक
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रै. मंग.	18-02	दोपहर 11-38 से सू. अ. तक
ज्येष्ठ संक्रान्ति	14 मई शुक्र	14-55	प्रातः 8-31 से सू. अ. तक
आषाढ़ संक्रान्ति	14 जून चंद्र	21-33	दोपहर 15-09 से सू. अ. तक
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला. शुक्र	8-26	सू. उ. से दोपहर 14-50 तक
भाद्र. संक्रान्ति	16 अग. चंद्र	16-48	प्रातः 10-24 से सू. अ. तक
आश्विन संक्रान्ति	16 सितं. गुरु	16-41	प्रातः 10-17 से सू. अ. तक
कार्तिक संक्रान्ति	16 अक्तू. शुक्र	28-34	अगले दिन सू. उ. से 10-58 तक
मार्ग. संक्रान्ति	15 नवं. चंद्र	28-19	अगले दिन सू. उ. से 10-43 तक
पौष संक्रान्ति	15 दिसं. बुध	18-57	दोपहर 12-33 से सू. अ. तक
माघ संक्रान्ति	13 जन. गुरु	29-42	अगले दिन सू. उ. से 12-05 तक
फागु. संक्रान्ति	12 फर. शनि	18-42	दोपहर 12-18 से सू.अ. तक
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च चंद्र	15-37	प्रातः 9-13 से सू. अ. तक

गुरु-पर्व दस गुरुसाहिबान—संवत् २०६१ (प्राचीन परम्परा अनुसार)

नाम गुरु साहिबान	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति-ज्योत
(1) श्री गुरु नानकदेव जी	26 नवम्बर	जन्म से	9 अक्तूबर
(2) श्री गुरु अंगददेव जी	20 अप्रै.	3 अक्तूबर	25 मार्च
(3) श्री गुरु अमरदास जी	3 मई	21 मार्च	28 सितम्बर
(4) श्री गुरु रामदास जी	30 अक्तूबर	26 सितम्बर	17 सितम्बर
(5) श्री गुरु अर्जुनदेव जी	11 अप्रैल	16 सितम्बर	23 मई
(6) श्री गुरु हरगोबिन्द जी	4 जून	11 मई	26 मार्च
(7) श्री गुरु हरिराय जी	4 फर. 04 ई. / 21 फर. 05 ई.	18 मार्च 04 ई. / 6 अप्रै. 05 ई.	6 नवम्बर
(8) श्री गुरु हरकिशन जी	10 जुलाई	6 नवम्बर	3 अप्रैल
(9) श्री गुरु तेग़ बहादुर जी	9 अप्रैल	3 अप्रैल	16 दिसम्बर
(10) श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	16 जन. 05	14 दिसम्बर	16 नवम्बर

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रथम प्रकाश — 15 सितंबर

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और यू.पी. के मुख्य मेले—सन् 2004 ई.

मे. लोहड़ी (सर्वत्र)	13 जन.
मे. दाऊ (चण्डीगढ़)	13 जन.
मे. माघी (मुक्तसर)	14 जन.
मे. पोंगल (द. भारत)	14 जन.
मे. मौनी अमावस (यू.पी.) (हरिद्वार आदि)	21 जून
मेला प्रयागराज	21 जन.
मेला बसन्त पंचमी	26 जन.
मे. महेन्द्र वाहरी (जालं.)	31 जन.
मे. मस्तुआणा (पंजाब)	1 फर.
मे. जैसलमेर (राज.)	4-6 फर.
मे. जयंती देवी (चंडीगढ़)	4-6 फर.
मे. माघी पूर्णिमा (पं., यू.पी.)	6 फर.
मेला श्री महाशिवरात्रि	18 फर.
नीलकण्ठ महादेव (गढ़वाल)	18 फर.
होलियां होलाष्टक (यू.पी.)	28-6 मार्च
मे. सावातिल्ला	4 मार्च
होला मेला (आनंदपुर सा.)	7 मार्च
मे. रामराय (देहरादून)	11 मार्च
मे. वीरमदास (पटियाला)	11 मार्च
मे. शीतलामाता (कुराली, पं.)	13-14 मार्च
मे. पिहोवातीर्थ (हरियाणा)	19 मार्च
मे. चीमा (नानकसर)	21 मार्च
मे. मनसादेवी (पंचकूला)	21-29 मार्च
गौरी तीज (जयपुर)	23 मार्च
मे. माईसरखाना (बठिंडा)	27 मार्च
मेला रामनवमी	30 मार्च
भण्डारा स्वा. संतदास जी गोपाल नगर, जालन्धर	30 मार्च
कांसा देवी (रोपड़) प्रारंभ	3 अप्रै.
मेला वैशाखी	13 अप्रै.
मे. रामथनदास (फाजिल्का)	13 अप्रै.
मे. पिंजौर (हरियाणा)	19 अप्रै.
मे. गंगा सप्तमी (हरिद्वार)	26 अप्रै.
मे. भद्रकाली (कपूरथला)	14 मई
मे. डेरा बाबा जोड़े, संत निर्मल सिंह	16 मई
मेला जोड़ (पंजाब)	23 मई
मे. गंगा दशहरा (हरिद्वार)	29 मई
वार्षिक समा. डेरा बाबा जोड़े रायपुर-रसूलपुर, जालंधर	14-15 जून
रथयात्रा उत्सव, पुरी	19 जून
मेला मढाली शरीफ़	28 जून
गुरु पूर्णिमा उत्सव	2 जुलाई
मे. काहनूवाल (गुरदासपुर)	2 जुला.
मेला नाग पंचमी (राज.)	6 जुला.
मे. पं. जोगराज (जड़ि)	16-17 जुला.
मेला सिंघारा तीज	19 अग.
मे. गौरी तीज (जयपुर, राज.)	19 अग.
श्री कृष्णजन्माष्टमी पर्व (मथुरा)	7 सितं.
मे. गुग्गा नवमी (अम्बाला)	8 सितं.
गुग्गा जाहिरपीर (नकोदर)	8 सितं.
मे. ग़ोगामेड़ी (गंगानगर)	8-22 सितं.
मे. सुथरेशाह (दिल्ली)	14 सितं.
गुसाईआणा, कुराली (पं.)	16 सितं.
रामदेव रोणेचा-जोधपुर, राज.	23 सितं.
वामन द्वादशी (पटियाला, अम्बाला)	25 सितं.
मे. छपार (मलेरकोटला, पं.)	27 सितं.
मे. सोढल, जालं. (पं.)	27 सितं.
गोईंदवाल सा., अमृतसर	28 सितं.
मे. गुग्गापीर, लुधियाना	28 सितं.
मे. फाल्गू (कुरुक्षेत्र)	14 अक्तू.
आशापूर्णी (पठानकोट)	14-21 अक्तू.
मे. हरचोवाल (गुरदासपुर)	22 अक्तू.
मे. दशहरा (सर्वत्र)	22 अक्तू.
बा. बुढ्ढा सा. अमृतसर	22 अक्तू.
मे. महा. अग्रसेन, अगरोहाधाम, हिसार	28 अक्तू.
मे. देवा (लखनऊ) प्रा.	31 अक्तू.
मे. अचलेश्वर (बटाला)	21-22 नवं.
मे. वीर वैरागी (नकोदर)	24 नवं.
मे. रामतीर्थ, अमृतसर	26 नवं.
मेला पुष्करराज	26 नवं.
मे. कपालमोचन (हरि.)	26 नवं.
मे. गढ़गंगा (यू.पी.)	26 नवं.
वार्षिक भं. संत प्रीतमदास जी, गोपाल नगर, जालं.	30 नवं.
मेला जोड़ (पंजाब)	26-28 दिसं.
मेला फतेहगढ़ (सरहिंद)	26-28 दिसं.
मेला चमकौर साहिब	26-28 दिसं.
मे. हरवल्लभ संगीत (जालं.)	27-29 दिसं.

जम्मू—कश्मीर के मेले

लोहड़ी पर्व	13 जन. मंग.
मेला पुरमण्डल	18-19 मार्च
मे. गुप्तगंगा (अखनूर)	19-21 मार्च
नवरात्रे पर्व (कटड़ा)	21-29 मार्च
मेला बाहूफोर्ट	29 मार्च चंद्र
गुरुगद्दी 1008 सतगुरु बाबा कांशीगिर जी (सुन्दरबनी)	13-14 अप्रै.
मेला रामबन	30 मार्च मंग.
नृसिंह चौदश (ऊधमपुर)	3 मई चंद्र
मेला मानसर	25-26 मई
मेला क्षीर भवानी	27 मई
शुद्ध महादेव, ऊधमपुर	3 जून
जन्म गुरु हरगोविन्द	4 जून
मेला शरीक भवानी	27 जून
मेला हरिप्रयाग (वनी)	29 जून
मेला ज्वालामुखी	1 जुला.
शहीदी दिवस	13 जुला. मंग.
दर्शन श्री अमरनाथ गुफा	30 अग. चंद्र
मेला स्वा. शंकराचार्य	30 अग. चंद्र
कैलाश यात्रा प्रारंभ	12-13 सितं.
मेला पात (भद्रवाह)	19-21 सितं.
मे. आशापति, मार्तण्ड	13 अक्तू.
मेला झिड़ी बाबा	26 नवं.
मेला पुरमण्डल	11 दिसं.

हिमाचल प्रदेश के मेले—सन् 2004 ई.

मेला श्रीब्रह्मा (कुल्लू)	20 जन.
वसन्त पंचमी (बिलासपुर)	26 जन.
शिवरात्रि (मण्डी)	18-27 फर.
मेला स्वर्गाश्रम (नूरपुर)	19 फर.
बैजनाथ (कांगड़ा)	20 फर.
वड़भाग सिंह (ऊना)	3-6 मार्च
सुजानपुर टिहरी (हमीरपुर)	6-10 मार्च
होला मेला (पौंटा साहिब)	7 मार्च
बाबा बालकनाथ (हमीरपुर)	प्रा. 14 मार्च
कनिहारा (धर्मशाला)	14 मार्च
नलवाड़ (बिलासपुर)	17-22 मार्च
वाला सुन्दरी (सिरमौर)	21 मा.-5 अप्रै.
मेला नयनादेवी (बिलासपुर)	21-29 मा
नलवाड़ (सुन्दरनगर)	22-29 मार्च
ललवाड़ (सुन्दरनगर)	23-29 मार्च
मेला लाहौल (मण्डी)	28 मार्च
श्री दुर्गाष्टमी (कांगड़ा)	29 मार्च
रोहरू (महासू)	1-2 अप्रै.
मारकण्डा (बिलासपुर)	12-15 अप्रै.
कालेश्वर महादेव (देहरा, कांगड़ा)	13 अप्रै.
राजगढ़ (सिरमौर)	13-15 अप्रै.
विशू	13 अप्रै. से
हुरला (कुल्लू)	16-17 अप्रै.
खनाणी (शिम., कुल्लू)	19-20 अप्रै.
माहूनाग (करसोग)	23-24 अप्रै.
पीपल जातर (कुल्लू)	28-30 अप्रै.
मेला स्वीटी	30 अप्रै.
मेला मनीकरण (कुल्लू)	30 अप्रै.-4 मई
मेला आनी (कुल्लू)	7-9 मई
नारकण्डा (बिलासपुर)	10-11 मई
श्यामाकाली (सरकाघाट)	11 मई
घाघरस (बिलासपुर)	14 मई
ढुंगरी जातर (मनाली)	14-15 मई
बंजार (कुल्लू)	14-18 मई
कमलाहिया (धर्मपुर)	16 मई
पशु मेला प्रारम्भ	17 मई
शाढ़ी जातर	18-23 मई
हरिदेवी (घुमारवीं)	21 मई
शीतलादेवी (सुन्दरनगर)	22-24 मई
मेला मिरपरी (मण्डी)	24-25 मई
मुरारी देवी (सरकाघाट)	25-27 मई
ग्राम पंजगाई (बिलासपुर)	29-30 मई
मेला पीपलू (हमीरपुर)	30 मई
भण्डारा बाबा वृन्दावन साहेब उदासीन आश्रम, सोलन	30 मई
मेला स्थूल मढोल	1-4 जून
मेला वाड़ी (सोलन)	14 जून
मेला अहल (हमीरपुर)	14 जून
नौवाही देवी (सरकाघाट)	14 जून
भुन्तर मेला	15-17 जून
टाणी देवी (हमीरपुर)	23 जून
माँ शूलिनी (सोलन)	25-27 जून
त्रिमौणी (सिरमौर)	11 जुला.
मेला नागनी (नूरपुर)	16 जुला.
सिद्ध बाबा शिव्वो (ज्वाली)	18 जुला.
मेला मिंजर (चम्बा) प्रा.	25 जुला.
संतोषी माता (लदरौर)	16 अग.
मेला चिन्तपूर्णी (ऊना)	23 अग.
नयनादेवी (बिलासपुर)	23 अग.
गुग्गा नवमी (बिलासपुर)	8 सितं.
बंद्राल (कुल्लू)	8 सितं.
अम्बिका देवी, सदर (मंडी)	12-13 सितं.
नलवाड़ (चिच्चोट)	16-23 सितं.
मेला लदरौर (हमीरपुर)	16 सितं.
मेला सायर (अर्की)	16-17 सितं.
यात्रा मनीमहेश चम्बा	20 सितं.
मे. बगुलामुखी (वनखंडी)	14-22 अक्तू.
मेला चामुण्डा (कांगड़ा)	14-21 अक्तू.
मेला रामलीला	14-21 अक्तू.
मेला तारादेवी	21-23 अक्तू.
मेला ज्वालामुखी	21-22 अक्तू.
शीतलामाता (मच्छिभवन)	21 अक्तू.
मेला दशहरा (अर्की)	22 अक्तू.
मेला दशहरा (कुल्लू) प्रा.	22-31 अक्तू.
मे. लावी (रामपुर, चिच्चोट)	11-14 नवं.
काली बाड़ी (शिमला)	11-12 नवं.
रेणुका (सिरमौर)	22-23 नवं.
बाबा रुद्रीनन्दनारी (ऊना)	22-26 नवं.
जोगी पांगा	26 नवं.

सायन संक्रान्ति पुण्यकाल–संवत् 2061

भारतीय मुहूर्त्त शास्त्रों ने निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल की भान्ति सायन संक्रान्ति के पुण्यकाल के समय को भी यन्त्र–मन्त्र साधना हेतु विशेष सिद्धिदायक बताया है। ग्रहणकाल, दीपावली, अक्षया तीज आदि मुहूर्त्त भी यन्त्र–मन्त्रादि अनुष्ठान के लिए प्रशस्त हैं।

2004–05ई.	राशि	प्रवेशकाल	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टै. टा.)
20 जनवरी	कुम्भ	23-13	सायं 5-13 से 21 की प्रातः 5-13 तक
19 फरवरी	मीन	13-20	प्रातः 7-20 से सायं 7-20 तक
20 मार्च	मेष	12-20	प्रातः 6-20 से सायं 6-20 तक
19 अप्रैल	वृष	23-20	सायं 5-20 से 20 की प्रातः 5-20 तक
20 मई	मिथुन	22-29	सायं 4-29 से 21 की प्रातः 4-29 तक
21 जून	कर्क	6-27	ता. 20 की रात्रि 12-27 से 21 दोप. 12-27 तक
22 जुलाई	सिंह	17-20	दोपहर 1-20 से रात्रि 11-20 तक
22 अगस्त	कन्या	24-23	सायं 6-23 से 30-23 तक
22 सितंबर	तुला	22-00	सायं 4-00 से अगले दिन प्रातः 4-00 तक
23 अक्तूबर	वृश्चिक	7-19	ता. 22 की रात्रि 1-19 से दोप. 1-19 तक
21 नवंबर	धनु	28-52	20 की रात्रि 10-52 से 21 की प्रा. 10-52 तक
21 दिसंबर	मकर	18-12	दोप. 12-12 से रात्रि 24-12 तक
19 जन.	कुम्भ	28-52	18 की रात्रि 10-52 से 20 की प्रा. 10-52 तक
18 फर.	मीन	19-02	दोपहर 1-02 से रात्रि 25-02 तक
20 मार्च	मेष	18-03	दोपहर 12-03 से रात्रि 24-03 तक

गुरु-पर्व दस गुरु साहिबान–सन् 2004 ई.

(नानकशाही कैलण्डर अनुसार)

नाम गुरु साहिबान	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति-ज्योत
(1) श्री गुरु नानक देव जी	26 नवंबर	जन्म से	22 सितं.
(2) श्री गुरु अंगददेव जी	18 अप्रैल	18 सितं.	16 अप्रैल
(3) श्री गुरु अमरदास जी	23 मई	16 अप्रैल	16 सितं.
(4) श्री गुरु रामदास जी	9 अक्तू.	16 सितं.	16 सितं.
(5) श्री गुरु अर्जुनदेव जी	2 मई	16 सितं.	16 जून
(6) श्री गुरु हरगोबिन्द जी	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च
(7) श्री गुरु हरिराय जी	31 जन.	14 मार्च	20 अक्तू.
(8) श्री गुरु हरकिशन जी	23 जुलाई	20 अक्तू.	16 अप्रैल
(9) श्री गुरु तेग बहादुर जी	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवं.
(10) श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	5 जन.	24 नवं.	21 अक्तू.

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का प्रथम प्रकाश–1 सितंबर

सिद्ध महापुरुषों के जन्मदिन

स्वामी विवेकानन्द	14 जन. बुध
श्रीरामानन्दाचार्य जयंती	14 जन. बुध
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. शुक्र
सिद्ध बाबा लालदयाल	23 जन. शुक्र
श्रीस्वा. स्वरूपानन्दी जी महाराज (हरि.)	26 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन. बुध
गुरु रविदास	6 फर. शुक्र
गुरु रामदास	14 फर. शनि
स्वामी दयानन्द सरस्वती	15 फर. रवि
परमहंस रामकृष्ण	22 फर. रवि
चैतन्य महाप्रभु	6 मार्च शनि
सन्त तुकाराम	8 मार्च चंद्र
शहीदी सः भगत सिंह	23 मार्च मंग.
श्री महावीर जयंती	3 अप्रै. शनि
श्रीस्वा. स्वरुपानन्दजी निर्वाण	7 अप्रै. बु
डॉ. अम्बेदकर	14 अप्रै. बुध
श्री वल्लभाचार्य	15 अप्रै. गुरु
श्री स्वा. निजात्मानन्दजी महाराज जयंती, हरिद्वार	20 अप्रै. मं.
छत्रपति शिवाजी	21 अप्रै. बुध
श्री परशुराम	22 अप्रै. गुरु
आद्य गुरु शंकराचार्य	24 अप्रै. शनि
स्वा. रामानुजाचार्य	25 अप्रै. रवि
श्री नारद जयंती	5 मई बुध
रविन्द्रनाथ टैगोर	7 मई शुक्र
महाराणा प्रताप	22 मई शनि
संत कबीर	3 जून गुरु
ध्यानू भगत	24 जून गुरु
ऋषि वेदव्यास	2 जुला. शुक्र
महामण्डलेश्वर स्वा. प्रेमानन्द जी महाराज जयं. (हरिद्वार)	2 जुला
लोकमान्य तिलक जयं.	23 जुला. शुक्र
गो. संत तुलसीदास	22 अग. रवि
सन्त ज्ञानेश्वर	7 सितं. मंग.
भक्त नवल (जोधपुर)	7 सितं. मंग.
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं. बुध
श्री चन्द्र जयंती	22 सितं. बुध
महात्मा गांधी, लाल बहादुर	2 अक्तू. शनि
श्री अग्रसेन जयंती	15 अक्तू. शुक्र
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू. शुक्र
श्री माधवाचार्य	23 अक्तू. शनि
श्री धनवन्तरी	10 नवं. बुध
श्री हनुमान	11 नवं. गुरु
महा. रणजीत सिंह	13 नवं. शनि
पं. जवाहरलाल नेहरू	14 नवं. रवि
विश्वकर्मा जयं.	14 नवं. रवि
सत्य श्री साईं बाबा	23 नवं. मंग
श्री वीरवैरागी	24 नवं. बुध
श्री गुरु नानक देव	26 नवं. शुक्र
डॉ० राजेन्द्र प्रसाद	3 दिसं. शुक्र
श्री दत्तात्रेय	26 दिसं. रवि
(सन् 2005 ई.)	
नेताजी सुभाषचंद्र बोस	23 जन. रवि
लाला लाजपतराय जयं	28 जन. शुक्र
स्वामी विवेकानन्द	1 फर. मंग.
स्वा. रामानन्दाचार्य	1 फर. मंग.
सिद्ध बा. लालदयाल जी	10 फर. गुरु
गुरु रविदास	24 फर. गुरु
गुरु रामदास	5 मार्च शनि
स्वामी दयानन्द	5 मार्च शनि
परमहंस रामकृष्ण	12 मार्च शनि
चैतन्य महाप्रभु	25 मार्च शुक्र
सन्त तुकाराम	27 मार्च रवि

दशावतार जयंतियां

श्रीमत्स्यावतार जयंती	23 मार्च मंग.
श्रीरामावतार जयंती	30 मार्च मंग.
श्रीपरशुराम जयंती	22 अप्रै. गुरु
श्रीनृसिंहावतार जयंती	3 मई चंद्र
श्रीकूर्मावतार जयंती	4 मई मंग.
श्रीबुद्धावतार जयंती	4 मई मंग.
श्रीकल्कि अवतार	23 जुला. शुक्र
श्रीकृष्णावतार जयंती	6 सितं. चंद्र
श्रीवाराहावतार जयंती	17 सितं. शुक्र
श्रीवामनावतार जयंती	25 सितं. शनि

प्रदोष व्रत

पौष शुक्ल	4 जन. रवि
माघ कृष्ण (सोम प्रदोष)	19 जन. चंद्र
माघ शुक्ल	3 फर. मंग.
फाल्गुन कृष्ण	18 फर. बुध
फाल्गुन शुक्ल	4 मार्च गुरु
चैत्र कृष्ण	18 मार्च गुरु
चैत्र शुक्ल	3 अप्रै. शनि
वैशाख कृष्ण	16 अप्रै. शुक्र
वैशाख शुक्ल	2 मई रवि
ज्येष्ठ कृष्ण	16 मई रवि
ज्येष्ठ शुक्ल (भौम प्रदोष)	1 जून मंग
आषाढ़ कृष्ण (भौम)	15 जून मंग.
आषाढ़ शुक्ल	30 जून बुध
प्र. श्रावण कृष्ण	14 जुला. बुध
प्र. अधि. श्राव. शु.	29 जुला. गुरु
द्वि. अधि श्राव. कृ.	13 अग. शुक्र
द्वि. श्रावण शुक्ल	27 अग. शुक्र
भाद्रपद कृष्ण	12 सितं. रवि
भाद्रपद शुक्ल	26 सितं. रवि
आश्विन कृष्ण (सोम)	11 अक्तू. चंद्र
आश्विन शुक्ल (सोम)	25 अक्तू. चंद्र
कार्तिक कृष्ण	10 नवं. बुध
कार्तिक शुक्ल	24 नवं. बुध
मार्गशीर्ष कृष्ण	8 दिसं. बुध
मार्गशीर्ष शुक्ल	23 दिसं. गुरु
(सन् 2005 ई.)	
पौष कृष्ण	8 जन. शनि
पौष शुक्ल (शनि)	22 जन. शनि
माघ कृष्ण	6 फर. रवि
माघ शुक्ल (सोम)	21 फर. चंद्र
फाल्गुन कृष्ण (भौम)	8 मार्च मंग.
फाल्गुन शुक्ल	23 मार्च बुध
चैत्र कृष्ण	6 अप्रै. बुध

सन् 2004 ई. में एकादशी व्रत, प्रदोष व्रत, सत्यनारायण व्रत, गणेश चतुर्थी व्रतादि–एक दृष्टि में

पक्ष शुक्ल/कृष्ण	एकादशी व्रत	प्रदोष व्रत	पूर्णिमा (व्रतार्थ) व्रत सत्यनारायण	श्री गणेश चौथ	संक्रान्ति	अमावस (स्नानदानार्थ)
पौष शुक्ल	3 जन. (पुत्रदा)	4 जन.	7 जन.	———	———	———
माघ कृष्ण	18 जन. (षट्तिला)	19 जन.	———	11 जन. (संकट)	14 जन. (माघ)	21 जन.
माघ शुक्ल	1 फर. (जया.) गृहस्थियों	3 फर.	5 फर.	25 जन. (तिल)	———	———
फाल्गुन कृष्ण	16 फर. (विजया)	18 फर.	———	9 फर.	13 फर. (फागु.)	20 फर.
फाल्गुन शुक्ल	2 मार्च (आमलकी)	4 मार्च	6 मार्च	———	———	———
चैत्र कृष्ण	17 मार्च (पापमोचनी)	18 मार्च	———	10 मार्च	14 मार्च (चैत्र)	20 मार्च
चैत्र शुक्ल	1 अप्रै. (कामदा)	3 अप्रै.	5 अप्रै.	———	———	———
वैशाख कृष्ण	15 अप्रै. (वरूथिनी)	16 अप्रै.	———	8 अप्रैल	13 अप्रै. (वैशा.)	19 अप्रैल
वैशाख शुक्ल	1 मई (मोहिनी)	2 मई	4 मई	———	———	———
ज्येष्ठ कृष्ण	14 मई (अपरा)	16 मई	———	7 मई	14 मई (ज्ये.)	19 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	30 मई (निर्जला)	1 जून	3 जून	———	———	———
आषाढ़ कृष्ण	13 जून (योगिनी)	15 जून	—	6 जून	14 जून (आषा.)	17 जून
आषाढ़ शुक्ल	29 जून (देव)	30 जून	2 जुलाई	———	———	———
शुद्ध श्रा. कृष्ण	13 जुला. (कामिका)	14 जुला.	———	5 जुलाई	16 जुला. (श्राव.)	17 जुलाई
प्र.श्रा. (अधि.) शुक्ल	28 जुला. (पुरुषोत्तमा)	29 जुला.	31 जुलाई	———	———	———
द्वि.श्रा. (अधि.) कृष्ण	11 अग. (पुरुषोत्तमा)	13 अग.	———	3 अगस्त	16 अग. (भाद्र.)	16 अगस्त
शुद्ध श्रा. शुक्ल	26 अग. (पवित्रा)	27 अग.	29 अगस्त	———	———	———
भाद्रपद कृष्ण	10 सितं. (अजा)	12 सितं.	———	2 सितं. (बहुला)	———	14 सितंबर
भाद्रपद शुक्ल	24 सितं. (पद्मा)	26 सितं.	28 सितंबर	———	16 सितं. (आश्वि)	———
आश्विन कृष्ण	10 अक्तू. (इंदिरा)	11 अक्तू.	———	1 अक्तूबर	———	14 अक्तूबर
आश्विन शुक्ल	24 अक्तू. (पापांकुशा)	25 अक्तू.	27 अक्तूबर	———	16 अक्तूबर	———
कार्तिक कृष्ण	8 नवं. (रमा)	10 नवं.	———	31 अक्तूबर	———	12 नवम्बर
कार्तिक शुक्ल	22 नवम्बर (देव)	24 नवं.	26 नवम्बर	———	15 नवं. (मार्ग.)	———
मार्ग. कृष्ण	8 दिसं. (उत्पन्ना)	9 दिसं.	———	30 नवम्बर	———	11 दिसम्बर
मार्ग. शुक्ल	22 दिसं. (मोक्षदा)	23 दिसं.	26 दिसम्बर	———	15 दिसं. (पौष)	———
पौष कृष्ण	6 जन. (सफला) गृह.	8 जन. 05	———	30 दिसम्बर	———	10 जन. 05

वि. संवत् २०६१ में प्रमुख संवतों का प्रारम्भ

- वि. संवत् (हेलम्ब नामक) २०६१ का शुभारम्भ = २१ मार्च, रविवार, तन्मध्ये अन्य संवतों (सन् आदि) की प्रारम्भ तिथियाँ=
- कल्पादि से गत वर्ष = १९७,२९,२९,२०५ वर्ष
- सृष्टि का आरम्भ वर्ष = १९५,५८,८५,१०५ वर्ष
- इनमें सतयुग की कुल समयावधि = १७,२८,००० वर्ष
- त्रेतायुग की कुल समय अवधि = १२,९६,००० वर्ष
- द्वापर युग की कुल समय अवधि = ८,६४,००० वर्ष
- कलियुग की कुल समय अवधि = ४,३२,००० वर्ष
- भोग्य कलि वर्ष = ४२६८९५ संवत्
- वि. सं. २०६१ में कलियुग का कल्कि सं. ५१०५=२१ अग., शनिवार
- श्री कृष्ण जन्म संवत् ५२४० प्रा.=६ सितं. (२००४ ई.), चन्द्र
- सप्तर्षि संवत् ५०८० प्रा. = २१ मार्च, (२००४ ई.) रविवार
- श्री बुद्ध संवत् २६२८ प्रा. = ४ मई, (२००४ ई.) मंगलवार
- श्रीमहावीर निर्वाण सं. २५३० प्रा.=१२ नवं., सन् २००४ ई. शुक्रवार
- सन् ईसवी (क्रिश्चियन) २००५ प्रारम्भ = १ जनवरी
- शाका संवत् १९२७ प्रा. = २२ मार्च, सन् २००५ ई., चंद्रवार
- मुस्लिम हिजरी सन् १४२५ प्रा. = २२ फर., सन् २००४ ई., रविवार
- फसली सन् १४१२ प्रारम्भ = ११ सितंबर, २००४ ई.
- बंगाली सन् १४११ प्रारम्भ = २१ मार्च, सन् २००४ ई., रविवार
- नानकशाही संवत् ५३६ प्रा. = १५ मार्च, सन् २००४ ई., सोमवार
- खालसा संवत् ३०६ प्रारम्भ = १३ अप्रैल, सन् २००४ ई.
- जय हिन्द संवत् ५८वाँ प्रा. = १५ अग., सन् २००४ ई.
- 'पंचांगदिवाकर' का प्रवेश वर्ष, १२९वाँ=२१ मार्च, २००४ ई., रविवार

राजा–मन्त्री तथा सम्वतसर के फल के विस्तृत वर्णन के लिए पढ़ें पृष्ठ 57

गण्डमूल नक्षत्र विवरण–सन् 2004–05 ई.

गण्डमूल नक्षत्रों में उत्पन्न जातक स्वयं अपने या माता–पिता के स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं उन्नति आदि के सम्बन्ध में अरिष्टकर होते हैं। गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक के नक्षत्र की 27 दिन पश्चात् उसी नक्षत्र काल में विद्वान एवं योग्य ब्राह्मण द्वारा शान्ति करवानी चाहिए। यदि जन्मकाल के निकट शान्ति न करवाई गई हो, तो जातक के जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान–पूजन करवा लेना शुभ होता है।

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता. मास	घं. मिंट	ता. मास	घं. मिंट
9 जन.	19 29	11 जन.	21 37
18 जन.	16 16	20 जन.	11 40
27 जन.	4 30	29 जन.	8 44
6 फर.	2 27	8 फर.	3 48
14 फर.	23 04	16 फर.	19 52
23 फर.	13 52	25 फर.	17 14
4 मार्च	10 55	6 मार्च	11 53
13 मार्च	4 24	15 मार्च	1 43
21 मार्च	22 39	24 मार्च	1 47
31 मार्च	20 01	2 अप्रै.	21 24
9 अप्रै.	10 47	11 अप्रै.	7 14
18 अप्रै.	5 52	20 अप्रै.	9 24
28 अप्रै.	4 30	30 अप्रै.	6 55
6 मई	19 34	8 मई	14 34
15 मई	11 42	17 मई	15 46
25 मई	11 38	27 मई	15 07
3 जून	6 08	5 जून	0 10
11 जून	17 21	13 जून	21 30
21 जून	17 38	23 जून	21 38
30 जून	16 47	2 जुला	10 55
9 जुला.	0 08	11 जुला	3 37
18 जुला.	23 22	21 जुला	3 11
28 जुला.	1 53	29 जुला	21 06
5 अग.	8 34	7 अग.	10 57
15 अग.	5 49	17 अग.	9 07
24 अग.	8 43	26 अग.	5 18
1 सितं.	18 05	3 सितं.	19 31

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता. मास	घं. मिंट	ता. मास	घं. मिंट
11 सितं.	13 25	13 सितं.	16 27
20 सितं.	14 07	22 सितं.	11 21
29 सितं.	3 21	1 अक्तू.	4 32
8 अक्तू.	21 53	11 अक्तू.	1 14
17 अक्तू.	20 11	19 अक्तू.	16 46
26 अक्तू.	11 09	28 अक्तू.	12 50
5 नवं.	6 17	7 नवं.	10 28
14 नवं.	4 39	15 नवं.	23 49
22 नवं.	17 13	24 नवं.	19 40
2 दिसं.	13 44	4 दिसं.	18 47
11 दिसं.	15 27	13 दिसं.	9 38
19 दिसं.	22 46	22 दिसं.	1 22
29 दिसं.	20 07	1 जन.	1 29
सन् 2005 ई.			
8 जन.	2 39	9 जन.	21 06
16 जन.	5 46	18 जन.	7 26
26 जन.	2 09	28 जन.	7 17
4 फर.	11 56	6 फर.	7 47
12 फर.	15 05	14 फर.	15 14
22 फर.	8 42	24 फर.	13 30
3 मार्च	18 32	5 मार्च	15 52
12 मार्च	1 34	14 मार्च	0 43
21 मार्च	16 07	23 मार्च	20 53
30 मार्च	23 55	1 अप्रै.	21 40
8 अप्रै.	11 13	10 अप्रै.	10 23

पंचकारम्भ एवं समाप्ति काल
(सन् 2004—05 ई.)

पंचक नक्षत्रों में दक्षिण दिशा की यात्रा करना, मकान, झोंपड़ी, दुकानादि की छत डालना, चारपाई–पलंगादि बुनना, मुर्दा जलाना, लकड़ी, बाँस की चटाई, दीवार प्रारम्भ करना आदि स्तम्भारोपण, ताँबा, पीतल, तृण–काष्ठादि का संचय करना, गृहारम्भ (छत डालना) आदि कृत्यों का निषेध माना जाता है। समुचित उपाय स्वरूप ही उक्त कार्यों का सम्पादन करना कल्याणकारी होगा।

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता. मास	घं. मिंट	ता. मास	घं. मिंट
23 जन.	16 39	28 जन.	6 16
20 फर.	2 31	24 फर.	15 12
18 मार्च	10 16	22 मार्च	23 56
14 अप्रै.	16 01	19 अप्रै.	7 24
11 मई	21 34	16 मई	13 31
8 जून	4 38	12 जून	19 09
5 जुला.	13 45	10 जुला	1 32
2 अग.	0 03	6 अग.	9 22
29 अग.	9 57	2 सितं.	18 25
25 सितं.	18 05	30 सितं	3 38
23 अक्तू	0 10	27 अक्तू	11 46
19 नवं.	5 36	23 नवं.	18 13
16 दिसं.	12 42	20 दिसं.	23 47
सन् 2005 ई.			
12 जन.	22 30	17 जन.	6 13
9 फर.	9 47	13 फर.	14 45
8 मार्च	20 10	13 मार्च	0 47
5 अप्रै.	4 05	9 अप्रै.	10 33

वि. संवत् 2061 में लाभ–हानि चक्र
(विंशोतरी मतानुसारेण)

आगामी वर्ष में आपको जिस राशि का लाभ–हानि का विवरण ज्ञात करना हो, तो आप निम्नलिखित अपनी राशि के नीचे लिखे लाभ–हानि के अंकों को जमा कर दें, फिर कुल जमा अंक में से 1 कम करके जोड़ को 8 से भाग दे देवें। भाग करने के पश्चात् यदि 1 बचे तो आगामी वर्ष में धन लाभ अच्छा रहेगा। मनोवांछित योजनाएँ सफल होंगी। मनोरंजक कार्यों की ओर रूचि बढ़ेगी। यदि शेष 2 बचे तो, धन लाभ मध्यम पर शुभ कार्यों पर खर्च अधिक होगा। यदि शेष 3 बचें तो लाभ कम, खर्च (अपव्यय) अधिक रहेगा। व्यर्थ भाग–दौड़ अधिक रहेगी और घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। यदि शेष 4 बचें तो, मानसिक तनाव, शरीर कष्ट और रोगादि पर खर्च हो, आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न हों। यदि शेष 5 बचें तो लाभ कम तथा फिजूलखर्ची अधिक रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न पड़ेगा। यदि शेष 6 बचे तो, भाग्योन्नति और धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। कोई बिगड़ा कार्य बनेगा। यदि शेष 7 बचें तो, व्यापार, लाटरी, सट्टे आदि द्वारा अकस्मात् धन लाभ होगा। ज़मीन–जायदाद आदि कार्यों पर खर्च होगा। आय के साधनों में भी वृद्धि होगी। यदि 8 अर्थात् 0 बचे, तो उस वर्ष लाभ कम व खर्च अधिक रहेगा, मानसिक परेशानियां भी बढ़ने के संकेत हैं।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
लाभ	14	8	14	8	11	14	8	14	11	5	5	11
हानि	11	5	2	14	11	2	5	11	2	5	5	2

केमद्रुम योग

परिभाषा–(क) यदि किसी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा से प्रथम, द्वितीय अथवा द्वादश (1, 2, 12वें) स्थानों में कोई ग्रह स्थित न हो, तो केमद्रुम नामक अशुभ योग होता है।

(ख) अथवा चन्द्र या लग्न से केन्द्र में सूर्य के अतिरिक्त कोई ग्रह न हो, तो केमद्रुम नामक अशुभ योग बनता है।

इस योग के फलस्वरूप जातक को विद्या, बुद्धि एवं सुखों में कमी रहती है। जातक वृथा बोलने वाला, धर्म विरुद्ध आचरण करने वाला, आर्थिक परेशानियां, पारिवारिक सुख में कमी, वृथा भय अनुभव करने वाला, निन्दित कर्म में रत, परन्तु दीर्घायु होता है।

'केमद्रुमे भवति पुत्रकलत्र हीनो। देशान्तरे व्रजति दुखसमाभितप्तः।
ज्ञाति प्रमोद निप्तो मुखरः कुचैलो नीचः सदाभक्त भीतियुतश्चिरायुः॥'

इस वर्ष के दो प्रमुख महापर्व

सम्वत् २०६१ (सन् 2004 ई.) को भारतवर्ष में दो महापर्व घटित हो रहे हैं।

(1) **अर्ध-कुम्भी पर्व हरिद्वार** (13 अप्रैल, मंगलवार)

(2) **कुम्भ-महापर्व, उज्जैन** (4 मई, मंगलवार)

दोनों महापर्वों पर स्नानदान आदि की मुख्य पुण्य तिथियाँ इस प्रकार से होंगी।

(1) अर्धकुम्भी पर्व हरिद्वार—



सिंहस्थ गुरु के संचार काल में जब सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है, उस दिन हरिद्वार के तीर्थ पर **अर्ध-कुम्भी** के पर्व का आयोजन होता है। इस दिन हरिद्वार में श्रीगंगा स्नान तथा जप, तप, दान आदि का विशेष माहात्म्य माना गया है। इस वर्ष वैशाख कृष्ण नवमी तिथि, मंगलवार के दिन, **13 अप्रैल, सं. 2004 ई. को अर्ध-कुम्भी** का पुण्य योग बन रहा है। कुम्भ महापर्व की भान्ति ही अर्ध-कुम्भी के पर्व पर भी तीर्थों पर स्नान, जप, ध्यान, पाठ, दान, हवन-यज्ञ एवं मन्त्र-अनुष्ठान आदि शुभ कर्मों को करने का विशेष माहात्म्य माना जाता है। **13 अप्रैल,** मंगलवार को 24/50 घट्यादि पर **हरिद्वार** में मुख्य स्नान होगा। परन्तु श्रीगंगा स्नान का मुख्य पुण्यकाल सूर्य के **अरूणोदय काल** (प्रातः 5/20 बजे) से और संक्रान्ति का विशेष पुण्य समय 13/50 घट्यादि अर्थात् दुपैहर 11 बजकर 38 मिनट से प्रारम्भ हो जाएगा।

अर्ध-कुम्भी महापर्व हरिद्वार के पावन तीर्थ स्थल पर लाखों की संख्या में श्रद्धालु जन पहुँचकर स्नान, जाप, ध्यान, तप, दान आदि करके अपना जीवन सार्थक करेंगे। इस पुण्य तीर्थ संगम पर अनेक सिद्ध-पुण्यात्मा महापुरुष एवं सन्त-महात्मा भी स्नान आदि हेतु पधारेंगे। श्रद्धालु लोग उन महात्माओं के दर्शन करके एवं उनके प्रवचनों से कृतार्थ होंगे। कुछ महात्मा लोग महापर्व से कुछ मास पूर्व ही तीर्थ स्थल की पुण्य भूमि पर आकर परम तत्त्व की प्राप्ति के लिए जप, तप, यज्ञ एवं ध्यान आदि साधना में लग जाते हैं।

हरिद्वार में **अर्ध-कुम्भी महापर्व के उपलक्ष्य में मुख्य स्नान तिथियों** का विवरण इस प्रकार है—

(क) प्रथम स्नान—चैत्र **अमावस** तिथि, **शनिवार** (20 मार्च, सं. 2004 ई.) इस दिन सायन मेष संक्रान्ति एवं सिंहस्थ गुरु होने से स्नान, दान, जपादि करने का विशेष माहात्म्य होगा।

(ख) द्वितीय स्नान—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, **रविवार** (21 मार्च, सन् 2004 ई.) इस दिन नया सम्वत्सर (वि. २०६१) और नवरात्र का प्रारम्भ दिन है।

(ग) तृतीय स्नान तिथि—चैत्र पूर्णिमा सोमवार (5 अप्रैल, सं. 2004 ई.) इस दिन से **वैशाख स्नान** का पुण्यकाल प्रारम्भ होता है।

(घ) चतुर्थ मुख्य स्नान—वैशाख कृष्ण नवमी, **मंगलवार** (13 अप्रैल, सं. 2004 ई.), मेष संक्रान्ति का पुण्यकाल दुपैहर 11/38 बजे से शुरू होगा, परन्तु इस दिन **अरूणोदय** कालिक स्नान (प्रातः 5/20 बजे) तथा उसके बाद सारा दिन भी स्नान-दान, पूजा आदि के लिए **विशेष प्रशस्त** एवं पुण्यप्रद रहेगा। इस दिन हरिद्वार में सूर्योदय 5 बजकर 56 मिनट पर होगा।

(ङ) पंचम स्नान—वैशाख **सोमवती अमावस, चन्द्रवार** (19 अप्रैल, सं. 2004 ई.), को भी श्री गंगास्नान अर्धकुम्भ के उपलक्ष्य में अत्यन्त पुण्यप्रदायक रहेगा।

(च) षष्ठ स्नान—वैशाख शुक्ल तृतीय **गुरूवार** (अक्षया तीज, 22 अप्रैल, सं. 2004 ई.) को युगादि तिथि होने से स्नान-दानादि का विशेष महत्त्व होगा।

(छ) सप्तम अन्तिम स्नान—वैशाख पूर्णिमा, मंगलवार (4 मई, सं. 2004 ई.) को चन्द्रग्रहण भी होने से इस दिन भी स्नान, दान, जपादि के लिए विशेष माहात्म्य रहेगा।

जो लोग किसी कारण अर्ध-कुम्भी हरिद्वार न जा सकें, वे अपने निवास स्थान के पास पड़ने वाली नदी, तालाब, बावड़ी या समुद्र में अथवा बाल्टी आदि में गंगाजल मिश्रित से स्नान एवं श्रीगंगा जी (हरिद्वार) का ध्यान करते हुए भगवान विष्णु, शिव एवं सूर्यादि देवों के स्तोत्रों का जाप करें तथा सूर्य भगवान को विधिपूर्वक अर्घ्य देना तथा बर्तन, अन्न, वस्त्र, फल धनादि का यथाशक्ति दान कर पुण्य फल प्राप्त कर सकते हैं।

(2) कुम्भ महापर्व (सिंहस्थ) उज्जैन—



प्रयागराज, उज्जैन, हरिद्वार और नासिक (त्र्यम्बकेश्वर) इन चारों प्रसिद्ध तीर्थ स्थानों पर हर बारह वर्षों के बाद सूर्य, गुरु (बृहस्पति) एवं चन्द्रमा—इन ग्रहों में परस्पर विशेष स्थिति उत्पन्न हो जाने से कुम्भ महापर्व का भव्य सम्मेलन आयोजित होता है। इस महापर्व पर लाखों श्रद्धालु तथा सन्त-महात्मा लोग स्नान-दान, जप-ध्यान आदि करके पुण्य लाभ करते हैं।

इस वर्ष **वैशाख शुक्ल पूर्णिमा, 4 मई-मंगलवार, सं. 2004 ई.** को उज्जैन **(अवन्तिकापुरी)** में शिप्रा नदी के तट पर कुम्भ महापर्व का आयोजन होगा। ग्रह योगानुसार जब वैशाख पूर्णिमा के दिन सूर्य मेष राशि में हो, गुरु सिंह राशि में और चन्द्रमा स्वाती नक्षत्र एवं तुला राशि में हो, तो **उज्जयिनी (उज्जैन)** में कुम्भ महापर्व लगता है—

माधवे धवल पक्षे सिंहे जीवे, अजगे रवौ, तुला राशौ निशानाथे।

स्वातिभे पूर्णिमातिथौ उज्जयिन्यां तथा कुम्भ योगोजातः क्षमातले॥

उपरोक्त ग्रहयोग 4 मई, मंगलवार (वैशाख पूर्णिमा तिथि) को घटित हो रहा है, जिससे उज्जैन में यह पुण्य महापर्व मनाया जा रहा है। मुख्यतः गुरू के सिंहस्थ राशिकालीन ही यह महापर्व घटित होता है। इस कारण इसे **सिंहस्थ पर्व** भी कहते हैं।

4 मई, मंगलवार को **खग्रास-चन्द्र ग्रहण** भी होने के कारण इस दिन कुम्भ पर्व (उज्जैन) पर स्नान, जप, तप एवं दान आदि का महत्त्व और भी बढ़ जाएगा। पुराणों में कुम्भ महापर्वों के सम्बन्ध में अनेक कथाएँ मिलती हैं। इनमें स्कन्द पुराण की कथा प्रसिद्ध है—

स्कन्द पुराण में वर्णित कथानुसार मन्थन से प्राप्त अमृत से भरे कलश (कुम्भ) की प्राप्ति के लिए देवताओं और राक्षसों के मध्य द्वादश (१२) दिव्य दिनों (मनुष्यों के १२ सौर वर्षों के तुल्य) पर्यन्त घोर युद्ध हुआ। इस युद्ध के दौरान अमृत से भरे कुम्भ को राक्षसों से बचाने के लिए इन्द्र पुत्र-जयन्त ने उसे प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन व नासिक आदि स्थलों पर छिपाने के प्रयास किए। छीना झपटी में अमृत से भरा कुम्भ छलकने से उक्त स्थानों पर अमृत की कुछ बूंदें गिर गईं। इसी कारण इन चारों तीर्थ स्थानों पर प्रति १२ वर्षों के पश्चात् एक बार कुम्भ पर्व मनाया जाता है। अमृत से भरे कलश को सूर्यदेव ने फूटने से बचाया, बृहस्पति ने उसे भूमि पर गिरने से तथा चन्द्रमा ने अमृत को पूरा छलकने से बचाया। जिससे इन तीनों ग्रहों में विशेष सम्बन्ध होने पर कुम्भ महापर्व मनाया जाता है।

कुम्भ पर्व पर स्नान दानादि का महत्त्व

शास्त्रों में उज्जैन, हरिद्वार, प्रयाग, नासिक आदि तीर्थों पर कुम्भ स्नान, दान, जप, ध्यान एवं यज्ञादि अनुष्ठान करने का विशेष माहात्म्य माना जाता है। हज़ारों अश्वमेघ यज्ञ करने से एवं सैंकड़ों वाजपेय यज्ञ करने से अथवा सारी पृथ्वी की लाख बार प्रदक्षिणा करने से जो पुण्य फल प्राप्त होते हैं, वो सब फल मात्र कुम्भ स्नान करने से प्राप्त हो जाते हैं—

अन्य च, **अश्वमेघ सहस्राणि वाजपेय शतानि च।**
लक्षं प्रदक्षिणा भूमेः कुम्भ स्नानेन हि तत्फलम्॥

कुम्भ महापर्व (उज्जैन) पर मुख्य स्नानतिथियां

4 मई, 2004 ई. को **कुम्भ स्नान** का विशेष पुण्यकाल अरूणोदय काल (सूर्योदय से डेढ़ घड़ी पूर्व) अर्थात् सू. उ. से 36 मिनट पहले का समय अरूणोदय काल होगा। जोकि प्रातः लगभग 5.19 घं. मिं. बजे होगा)। तदुपरान्त सूर्योदय तथा उससे अढ़ाई घण्टे तक स्नान, दान आदि कर्मों के लिए विशेष पुण्य प्रदायक रहेगा। मुख्य स्नान तिथि (4 मई, मंगलवार) के अतिरिक्त, उज्जैन में शिप्रा नदी के तट पर कुछ अन्य विशेष तिथियों में भी स्नान, दान आदि का माहात्म्य रहेगा, यथा—

प्रथम स्नान—चैत्र शुक्ल एकादशी, गुरूवार, तदनुसार 1 अप्रैल को प्रातः अरुणोदय काल 5 बजकर 46 मिनट से स्नान का पुण्य काल शुरू होगा।

द्वितीय स्नान—चैत्र पूर्णिमा, सोमवार को हस्त नक्षत्र में 5 अप्रैल की प्रातः 5 बजकर 44 मिनट से स्नान का पुण्य काल शुरु होगा।

तृतीय स्नान (वरूथिनी एकादशी)—वैशा. कृ. ११, गुरुवार, दिनांक 15 अप्रैल सन् 2004 ई., पुण्यकाल प्रातः 5/34 से शुरू।

चतुर्थ स्नान—वैशाख कृष्ण अमावस, सोमवार, रेवती नक्षत्र कालीन 19 अप्रैल की प्रातः 5 बजकर 36 मिनट से पुण्य काल प्रारम्भ होगा।

पंचम स्नान—वैशाख शुक्ल तृतीया, गुरूवार, कृतिका नक्षत्र कालीन तदनुसार 22 अप्रैल, 2004 ई. को प्रातः 5.27 से शुरू होगा।

षष्ठ स्नान—वैशाख शुक्ल पंचमी तिथि, तदनुसार 24 अप्रैल, 2004 ई. 5.26 से पुण्यकाल।

सप्तम स्नान—वैशाख शुक्ल एकादशी, १ मई, शनिवार पुण्य प्रातः 5.21 से शुरु होगा।

अष्टम शाही स्नान—वैशाख शुक्ल पूर्णिमा, मंगलवार 4 मई, 2004 ई. को कुम्भ पर्व का अन्तिम प्रमुख स्नान रहेगा, इसी दिन सिद्ध साधु महात्माओं की शोभा यात्राएं भी निकलेंगी। इस *दिन उज्जैन में सूर्योदय 5 घं. 55 मिं. पर होगा परन्तु स्नानादि का पुण्यकाल अरुणोदय काल 5 घं. 19 मिं. से ही प्रारम्भ हो जाएगा। वस्तुतः अर्धकुम्भ एवं कुम्भ पर्व भारतीय जन-जीवन की आध्यात्मिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक चेतना के विभिन्न आयामों के अद्भुत संगम का प्रतीक होता है, जिसमें भारत के ही नहीं बल्कि विश्व के अनेक धर्म-गुरूओं, सिद्ध-महात्माओं, महापुरूषों एवं धर्म-परायण श्रद्धालुओं का समागम होता है।*

विशेष—उज्जयिनी का सिंहस्थ कुम्भ में शाही स्नान एक बार ही होता है।

कालसर्पयोग-अरिष्ट निवारक कुछ उपाय

जन्म कुण्डली में यदि राहु और केतु के बीच एक ही तरफ में सभी सातों ग्रह (सू०, चं०, मं०, बु०, गु०, शु०, श०) पड़ जाएँ, तो कालसर्प नाम योग बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक (पुरुष अथवा स्त्री) को व्यवसाय, धन, परिवार एवं सन्तानादि के कारण विविध परेशानियों एवं दुःखों से पीड़ित रहना पड़ता है— **अग्रे वा चेत् पृष्ठतोऽप्येकपार्श्वे भानांषट्के राहुकेत्वो न खेटः।**
योगः प्रोक्तः कालसर्पश्च तस्मिन्जातो जाता वाऽर्थपुत्रर्त्तिमीयात्॥

काल सर्पयोग से पीड़ित कुछ उल्लेखनीय महत्त्वपूर्ण कुण्डलियाँ इस प्रकार से हैं—स्वतन्त्र **भारतवर्ष** एवं **पाकिस्तान की जन्म कुण्डली, पं० जवाहर लाल नेहरू**, पाकिस्तान के भूतपूर्व शासक **जुल्फ़कार भुट्टो, हिटलर (जर्मनी), सुश्री लतामंगेशकर** इत्यादि। इनकी कुण्डलियों का विश्लेषात्मक अध्ययन ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) में पढ़ें।

यदि कुण्डली में **काल सर्पयोग** पड़ा हो, तो निम्नलिखित किंचित् उपाय करने **शुभ एवं कल्याणकारी** होंगे—(१) **कालसर्प** की अरिष्ट शान्ति के लिए शिव मन्दिर में सवा लाख **ॐ नमः शिवाय** मन्त्र का पाठ करना तथा पाठोपरान्त रूद्राभिषेक करवाने का विशेष महत्त्व है। साथ ही शिवलिंग पर चांदी का **सर्प युगल-नाग स्तोत्र** एवं नाग पूजनादि करके चढ़ाना शुभ होगा। **नाग गायत्री मन्त्र—ॐ नव कुलाय विद्महे विषदंताय धीमहि तन्नो सर्पः प्रचोदयात्॥** (२) प्रत्येक शनिवार एक नारियल को तैल एवं काले तिलों का तिलक लगाकर, मौली लपेटकर अपने शिर से तीन बार (घुमा कर **ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः** मन्त्र कम-से-कम तीन बार पढ़कर चलते पानी में बहा देवें—ऐसे कम-से-कम **पाँच शनिवार** करें। (३) प्रत्येक **शनिवार** कुत्तों को दूध और चपाती डालनी तथा गौओं कौओं को तैल के छींटें देकर रसोई की प्रथम चपातियां डालना शुभ है। (४) **कालसर्प** योग के कारण यदि वैवाहिक जीवन में बाधा आती हो, तो जातक पत्नी के साथ दोबारा विवाह करें एवं घर के चौखट द्वार पर चांदी का स्वस्तिक चिन्ह बनवा कर लगवाएं। (५) घर में **मयूर पंख** का पंखा पवित्र स्थान पर रखें तथा भगवान् शिव का ध्यान करते हुए प्रातः उठते ही तथा सोने से पूर्व मयूर पंखे द्वारा हवा करें। (६) प्रत्येक संक्रान्ति को गंगा जल सहित गोमूत्र का छिड़काव घर के सभी कमरों में करें।

ग्रहण विवरण (संवत् २०६१ वि.)

वि. संवत् २०६१ में पृथ्वी पर कुल चार ग्रहण होंगे—

(1) **खण्डग्रास सूर्यग्रहण** (19 अप्रैल, 2004 ई., सोमवार)
(2) **खग्रास चन्द्रग्रहण** (4 मई, 2004 ई., मंगलवार)
(3) **खण्डग्रास सूर्यग्रहण** (14 अक्तू., 2004 ई., सोमवार)
(4) **खग्रास चन्द्रग्रहण** (28 अक्तू., 2004 ई., गुरुवार)

इन ग्रहणों में से (2) और (4) नं. वाले ग्रहण ही भारत में दिखाई देंगे। (1) तथा (3) नं. वाले ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देंगे। भारत में अदृश्य इन ग्रहणों का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है—

भारत में अदृश्य ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण

(1) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (19 अप्रैल, 2004 ई०, सोमवार)—यह ग्रहण वैशाख अमावस तदनुसार 19 अप्रैल, 04 ई., सोमवार को भा. स्टैं. टा. के अनुसार सायं 17 घं. 00 मिं. पर प्रारम्भ होकर 21 घं. 09 मिं. पर समाप्त होगा। यह ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा। अफ्रीका के दक्षिण भागों, मैडगास्कर, दक्षिण-पूर्वी ऐंटलांटिक महासागर तथा अंटारटिका के क्षेत्रों में इसे देखा जा सकेगा।

(2) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (14 अक्तू., 2004 ई०, गुरुवार)—यह खण्डग्रास सूर्यग्रहण आश्विन अमावस को 14 अक्तू., 2004 ई. , गुरुवार को भा. स्टैं. टा. के अनुसार भूगोल पर प्रातः 6 घं. 25 मिं. से प्रारम्भ होकर 10 घं. 34 मिं. पर समाप्त होगा। यह ग्रहण भारत में अदृश्य रहेगा। यह ग्रहण उत्तर-पूर्वी एशिया के देशों, जापान, कोरिया, इण्डोनेशिया, पश्चिमी प्रशान्त महासागर, पश्चिमी अलास्का में दिखाई देगा।

भारत में दृश्य ग्रहणों का विस्तृत विवरण

(1) खग्रास चन्द्रग्रहण (4 मई, 2004 ई., मंगलवार)—यह ग्रहण वैशाख पूर्णिमा को 4, 5 मई की मध्यगत रात्रि में सम्पूर्ण भारत में खग्रास के रूप में दिखाई देगा। इस ग्रहण का स्पर्श-मोक्ष आदि का काल (भा. स्टैं. टा.) इस प्रकार से है—

	घं. मिं.	
ग्रहण स्पर्श	24-18	(4/5 मई, मंगलवार) रात्रि (भा. स्टैं. टाईम)
खग्रास प्रारम्भ	25-22	
ग्रहण मध्य	26-00	
खग्रास समाप्त	26-38	
ग्रहण मोक्ष	27-42	

(ग्रहण की अवधि—3 घं. 24 मिं.) (चंद्र मालिन्यारम्भ—23 घं. 21 मिं.)
(चंद्र क्रान्ति निर्मल 28 घं. 30 मिं.)

भारत में जब 4 मई, 04 की रात्रि 12 बजकर 18 मिनट पर यह चन्द्रग्रहण शुरु होगा, उस समय सम्पूर्ण भारत में चन्द्र-उदय हो चुका होगा। भारत के सभी नगरों में 4 मई को सायं 5-30 (घं. मिं.) से 7-00 बजे तक चन्द्र-उदय हो जाएगा तथा यह खग्रास चन्द्रग्रहण 4 मई की रात्रि 12 घं. 18 मिं. से प्रारम्भ होकर 5 मई की प्रातः 3 घं. 42 मिं. पर समाप्त (मोक्ष) होगा।

भारत के अतिरिक्त इस खग्रास चन्द्रग्रहण का आरम्भ सुदूर उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों को छोड़कर एशिया (पाकिस्तान, अफगानिस्तान, इण्डोनेशिया), यूरोप (पश्चिमी क्षेत्रों को छोड़कर), अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड में दिखाई देगा। जबकि ग्रहण की समाप्ति अफ्रीका, यूरोप, पश्चिमी एशिया, पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया, दक्षिणी अमेरिका में दिखाई देगी।

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक 4 मई को 15 घं. 18 मिं. (भा. स्टैं. टा.) पर प्रारम्भ हो जाएगा।

कृत्य-अकृत्य—ग्रहण के सूतक और ग्रहण के काल में स्नान-दान, जप-पाठ, मन्त्र-अनुष्ठान, तीर्थ स्नान, ध्यान, हवनादि शुभ कृत्यों का सम्पादन करना कल्याणकारी होता है।

सूतक एवं ग्रहण-काल में मूर्ति स्पर्श करना, अनावश्यक खाना-पीना, मैथुन, सोना, तैल, तैलाभ्यंग वर्जित है। झूठ-कपटादि, वृथा-अलाप, मूत्र-पुरीषोत्सर्ग से परहेज़ करना चाहिए। वृद्ध, रोगी, बालक एवं गर्भवती स्त्रियों को यथानुकूल भोजन या दवाई आदि लेने में दोष नहीं।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण तुला राशि और स्वाती तथा विशाखा नक्षत्र में घटित हो रहा है। इसलिए तुला राशि और स्वाती व विशाखा नक्षत्र वालों के लिए यह ग्रहण विशेष रूप से अशुभफली होगा। बारह राशि वालों के लिए इस ग्रहण का फल इस प्रकार होगा—

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	स्त्री/ पति कष्ट	लाभ उन्नति	गुप्त चिन्ता	सिद्धि, शरीर कष्ट	धन लाभ	धन हानि	शरीर कष्ट, चोट	धन हानि	धन लाभ	लाभ उन्नति	विघ्न, धन हानि	हानि कष्ट

ग्रहण का अन्य फल—यह खग्रास चन्द्रग्रहण मंगलवार तथा स्वाती-विशाखा नक्षत्र में घटित हो रहा है। फलस्वरूप विश्व में कहीं सुभिक्ष, कहीं दुर्भिक्ष, चोरों तथा अग्नि का उपद्रव, व्यापारियों, अग्नि से सम्बन्धित काम करने वालों को कष्ट तथा पीड़ा होगी। मटर, चने, रुई, तेल महंगे होंगे। वर्षा कम हो, राजनेताओं में आपसी टकराव तथा विरोध रहेगा। एशिया के कई देशों में अग्निकाण्ड, प्राकृतिक प्रकोप तथा किसी विशेष प्रधान नेता के निधन के संकेत हैं।

तुलाधरे खंत्यपरांत्यसाधून् वणिग्दशार्णान् रुरुकच्छापांश्च।
हन्याद्रवीन्द्वोर्ग्रहणं तु राज्ञां करोति युद्धं त्वथ वृष्टिनाशम्॥

खग्रास चन्द्रग्रहण (4–5 मई, 04 ई.) (भा. स्टैं. टा.)

पश्चिम — उत्तर — दक्षिण — पूर्व

खग्रास प्रारम्भ — खग्रास समाप्त

मोक्ष 27 घं. 42 मिं. | 27 घं. 21 मिं. | 27 घं. 00 मिं. | 25/22 से 26/38 तक | 25 घं. 00 मिं. | 24 घं. 40 मिं. | 24 घं. 18 मिं. स्पर्श

(2) ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्रग्रहण (28 अक्तूबर, 2004 ई., गुरुवार)—यह ग्रहण आश्विन पूर्णिमा को 28 अक्तूबर, 04 के दिन प्रातः भा. स्टैं. टा. के अनुसार 6 घं. 44 मिं. से प्रातः 10 घं. 24 मिं. तक भारत के केवल सुदूर उत्तर-पश्चिमी नगरों (जम्मू-कश्मीर, राजस्थान तथा गुजरात के सुदूर पश्चिमी नगरों) में अत्यल्पकाल के लिए दिखाई देगा। इन नगरों में केवल अधिकतम 12 मिनट के लिए दिखाई देगा। (इन नगरों का चन्द्रास्त समय (भा. स्टैं. टा.) तथा पर्वकाल अलग से दिया गया है।) **ध्यान रहे**—ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण का पर्वकाल ग्रहण के प्रारम्भ से चन्द्र के अस्तकाल तक ही माना जाता है। इन नगरों में चन्द्रास्त से लगभग 10–12 मिनट पहले ही यह ग्रहण प्रारम्भ होगा। यहाँ इसका परमग्रास अत्यन्त अल्प होगा, अतः इन नगरों में भी इस ग्रहण का कोई माहात्म्य नहीं होगा। शास्त्रकारों का वचन है कि अंगुल से अल्पग्रास वाले ग्रहण की चर्चा पंचाँग आदि में नहीं करनी चाहिए— **ग्रासो नादेश्योऽगुलाल्पो रवीन्द्वोः।**

फिर भी पाठकों के लाभार्थ इसका विवरण देना उचित समझते हैं।

भा. स्टैं. टा. के अनुसार इस (ग्रस्तास्त) खग्रास चन्द्रग्रहण का स्पर्श तथा मोक्ष इस प्रकार से होगा—

		घं. मिं.	
ग्रहण आरम्भ	प्रातः	6–44	28 अक्तू., 2004 ई०,
खग्रास प्रारम्भ	,,	7–53	गुरूवार (प्रातः)
ग्रहण मध्य	,,	8–34	(भा. स्टैं. टाईम)
खग्रास समाप्त	,,	9–15	
ग्रहण समाप्त	,,	10–24	

ग्रहण का कुल काल—3 घंटे 40 मिंट

क्योंकि भारत के अधिकतर नगरों में 6–44 (घं. मिं.) से पहले ही चन्द्र-अस्त हो जाएगा। इसलिए यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। श्रीनगर, पुच्छ (जं. का.), जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर, जोधपुर (राज.), द्वारिका, माण्डवी, जामनगर (गुजरात) आदि पश्चिमी नगरों में जहाँ यह ग्रहण थोड़े समय के लिए दिखाई देगा, वहाँ भी चन्द्र अस्त अधिक 6–56 घं. मिं. तक होगा।

भारत के अतिरिक्त इस खग्रास चन्द्रग्रहण का आरम्भ सुदूर पश्चिमी एशिया (पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, ईरान आदि), अफ्रीका, ग्रीनलैण्ड, आर्कटिक क्षेत्र, उत्तरी अमरीका, मध्य अमरीका, दक्षिण अमरीका तथा ग्रहण की समाप्ति उत्तरी-मध्य-दक्षिणी अमरीका, ग्रीनलैण्ड, यूरोप तथा पश्चिमी अफ्रीका में दिखाई देगा।

ग्रहण का सूतक—जिस क्षेत्र में (क-ख रेखा से बाईं ओर) यह ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण दिखाई देगा, केवल वहीं इस ग्रहण का सूतक का विचार होगा तथा यह 27 अक्तू. की रात्रि 9 घं. 44 मिं. से प्रारम्भ होगा।

ग्रस्तास्त (अल्पकालिक) खग्रास चन्द्रग्रहण (28 अक्तू., सन् 2004 ई.)
पश्चिमी भारत के प्रमुख नगरों का चन्द्रास्त और ग्रहण पर्वकाल
(जहाँ चन्द्रास्त 6–44 से पहले होगा—वहाँ ग्रहण दिखाई नहीं देगा।)

नगर	चंद्रास्त घं. मिं.	पर्व काल मिंट						
			राजौरी	6 47	3	बाड़मेर	6 49	5
			रामबन	6 43	—	बालोतरा	6 46	2
फाज़िल्का (पं.)	6 45	1	श्रीनगर	6 46	2	बीकानेर	6 45	1
अबोहर (पं.)	6 44	0	सोपूर	6 47	3	भवारी	6 44	—
(जम्मू-कश्मीर के प्रमुख नगर)			(राजस्थान के प्रमुख शहर)			भीनमाल	6 45	1
अनन्तनाग	6 44	—	अजमेर	6 36	—	मोहनगढ़	6 51	7
अखनूर	6 45	1	अनूपगढ़	6 46	2	रानीवाड़ा	6 45	1
अमरनाथ गुफा	6 43	—	आबू	6 43	—	रामगढ़ (जैसल.)	6 54	10
उधमपुर	6 44	—	उतारनी	6 47	3	रायसिंहनगर	6 45	1
उड़ी	6 48	4	ओसिया	6 44	—	शाहगढ़	6 56	12
कठुआ	6 40	—	कूरी	6 53	9	शेरगढ़ (जोधपुर)	6 46	2
कटरा	6 47	3	कोलायत	6 45	1	श्रीगंगानगर	6 44	—
किश्तवाड़	6 41	—	खुईआला	6 54	10	सिवाना	6 45	1
गुलमर्ग	6 47	3	गिराब	6 53	9	सिरोही	6 42	—
गिलगित	6 50	6	गागरिया	6 52	8	हनुमानगढ़	6 42	—
गुरयास	6 46	2	गूढ़ा	6 47	3	(गुजरात के प्रमुख नगर)		
छम्ब	6 46	2	घोटारू	6 56	12	अमरेली	6 44	—
जम्मू	6 44	—	चारनवाला	6 48	4	काठियावाड़	6 46	2
डोडा	6 42	—	चीलो	6 42	—	जामनगर	6 50	6
द्रास	6 42	—	जालोर	6 43	—	जूनागढ़	6 46	2
नौशेरा	6 47	3	जोधपुर	6 43	—	डीसा	6 42	—
पुंछ	6 48	4	जसवन्तपुरा	6 44	—	थराड़	6 45	1
पहलगांव	6 43	—	जैसलमेर	6 51	7	द्वारिका	6 54	10
बारामूला	6 47	3	जसरासर	6 42	—	पाटन	6 42	—
श्रीवैष्णोदेवी	6 44	—	देओरा	6 52	8	पोरबन्दर	6 50	6
बड़गांम	6 46	2	देशनोक	6 44	—	भुज	6 52	8
बनिहाल	6 43	—	देवीकोट	6 51	7	महेसाणा	6 42	—
बसौली	6 41	—	नाचना	6 48	4	मण्डवी	6 52	8
भद्रवाह	6 41	—	नोखा	6 43	—	राजकोट	6 46	2
मार्तण्ड	6 44	—	पोखरन	6 48	4	रापर	6 48	4
रामनगर	6 43	—	फलौदी	6 47	3	सोमनाथ	6 46	2
रियासी	6 44	—						

यहाँ दिए गए ग्रहण चित्र (1) में 'क-ख' रेखा से दाईं ओर स्थित सभी नगर-ग्रामों में चन्द्रमा 28 अक्तूबर, 04 को प्रातः 6 बजकर 44 मिंट (चन्द्रग्रहण प्रारम्भ होने) से पहले ही अस्त हो जाएगा। अतः यहाँ यह ग्रहण नहीं दिखाई देगा। इस रेखा से बाईं ओर स्थित प्रदेशों, नगरों, देशों में ही इसे देखा जा सकेगा।

ग्रस्तास्त चन्द्र ग्रहण

28 अक्तूबर, 2004 ई०

पं० विवेक शर्मा

सूर्य-शुक्र संक्रमण
(Transit of Venus)

(8 जून, 2004 ई. मंगलवार को एक अद्वितीय आकाशीय दृश्य)

विदित ही है कि बुध व शुक्र का भ्रमण मार्ग (कक्षाएं) सूर्य एवं पृथ्वी के मध्य पड़ता है, अतः अपने भ्रमण मार्ग पर चलते-चलते कभी-कभी ये पृथ्वी व सूर्य के मध्य में आ जाते हैं। विशेष परिस्थितियों में इनका क्रान्तिवृत्त से अन्तर शून्यासन्न होने पर इनकी सूर्य के साथ 'भेदयोग' पृथ्वी पर दिखाई देगी। 'सूर्य-शुक्र' अधिक्रमण कभी-कभी ही घटित होता है। (गतवर्ष सूर्य-बुध की भेद-युति हमने पंचांग में सविस्तार से दी थी।)

इस वर्ष 8 जून, सन् 2004 ई., मंगलवार को प्रातः 10 बजकर 44 मिनट से सायं 4 बजकर 56 मिनट तक यह 'सूर्य-शुक्र' संक्रमण होगा। प्रातः 10 घं. 44 मिंट पर शुक्र सूर्य बिम्ब के लगभग पूर्व से प्रविष्ट होकर सायं सूर्य बिम्ब के पश्चिम भाग से बाहर निकल जाएगा। ध्यान रहे, शुक्र की दूरी के कारण इसका बिम्ब बहुत ही छोटा है, 4 जून से 13 जून तक शुक्र अस्त भी है1 अतः सूर्य बिम्ब से गुज़रते हुए नंगी आँख से नहीं देखा जा सकेगा। साधारण दूरबीन से (विशेष लैंस युक्त) इसे देखा जा सकेगा। यह आकाशीय घटना दर्शनीय होगी।

शनि साढ़ेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि फलादेश विचार सं. 2061 (सन् 2004-05 ई.)

विक्रमी संवत् २०६१ में 5 सितंबर तक शनि मिथुन राशि में ही संचार करेगा, 6 सितम्बर, 2004 ई. सोमवार को, वृष के चन्द्रमा एवं रोहिणी नक्षत्रकालीन प्रातः 4 बजकर, 30 मिनट से **कर्क राशि** में प्रवेश करेगा। 8 नवम्बर से वक्री होगा, तथा 13 जनवरी, सं. 2005 ई. की दुपैहर 3 बजकर 2 मिनट से पुनः **मिथुन राशि** में प्रवेश करेगा। संवत् के अन्त (8 अप्रैल, 2005 ई.) तक इसी राशि में संचार करेगा।

शनि का मिथुन राशि में संचार का विस्तारपूर्वक फल हम गतवर्षीय पंचाँग सं. २०६० में लिख चुके हैं। यहाँ पर मिथुन राशि में शनि का फल (5 सितंबर तक), पुनः (संक्षेप में) लिखते हैं–

–मिथुन राशिकालीन शनि की साढ़ेसाती एवं ढैय्या फल विचार–

(संवतारम्भ से 5 सितम्बर, 04 ई. तक)

शनि साढ़ेसाती–**वृष, मिथुन** एवं **कर्क राशि** वाले जातकों पर **शनि की साढ़ेसति** का अशुभ प्रभाव अभी 5 सितं. तक रहेगा। जबकि

शनि की ढैय्या–**बृश्चिक** व **मीन** राशि वालों पर शनि की अढैय्या का प्रभाव अभी 5 सितं. तक ही रहेगा।

गोचरवश जब शनि किसी जातक की जन्म राशि (अथवा नाम राशि) से **द्वादश, प्रथम** या **द्वितीय** स्थान में हो, तो शनि की प्रस्तुत गोचर स्थिति शनि साढ़ेसाती कहलाती है। इसके प्रभावस्वरूप मानसिक संताप, शारीरिक कष्ट, कलह-क्लेश, आर्थिक परेशानियाँ, आय कम व खर्च की अधिकता, रोग एवं शत्रु भय, बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ, सन्तान एवं परिवार सम्बन्धी परेशानियाँ उत्पन्न होती हैं यथा–

"राशौ द्वादशमूर्ध्नि जन्म-हृदये पादौ, द्वितीयेशनिः, नानाकलेश–करोति दुर्जन भयं पुत्रान प्रशुन् पीडयेत् ॥"

शनि प्रत्येक राशि में लगभग अढ़ाई वर्ष तक संचार करता है तथा जिस राशि पर संचरित होता है, उससे द्वादशस्थ एवं द्वितीय राशि को भी प्रभावित करता है। इसी कारण इसे शनि की साढ़ेसाती (साढ़ेसात वर्षीय) कहा जाता है।

शनि की ढैय्या–जब गोचरवश शनि चन्द्रराशि (या नाम राशि) से चौथे या आठवें स्थान पर संचार करता है, तब शनि की ढैय्या कहलाती है, यह अढ़ाई वर्ष की होती है, इसका प्रभाव भी अशुभ होता है।

"लघु कल्याणी (ढैय्या) प्रददाति वै रविसुतो राशे–
चतुर्थाष्टमे, व्याधिं, बन्धुविरोधंविदेशगमनं, क्लेशं च चिन्ताधिकम् ॥"

अर्थात् **शनि की ढैय्या** के प्रभावस्वरूप जातक को रोग, शोक, कलह-कलेश, धन हानि, बन्धु-विरोध, गुप्त चिन्ताएँ, विघ्न-बाधाओं एवं आर्थिक उलझनों का सामना रहता है।

ध्यान रहे, शनि सभी राशियों पर एक जैसा प्रभाव नहीं करता है, बल्कि स्वराशि, उच्च-मित्रादि स्थिति से एवं शुभाशुभ दृष्टियों के प्रभावस्वरूप इसके फल में न्यूनाधिक अन्तर पड़ना भी सम्भव है। जन्मकुण्डली एवं नवांश में शनि की स्थिति अच्छी हो, जातक की ग्रह-दशा भी शुभ हो, तो शनि की साढ़ेसति या ढैय्या का दुष्ट प्रभाव भी अपेक्षाकृत कम होगा। इसके अतिरिक्त वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ राशि पर शनि की स्थिति या दृष्टि शुभ, लाभदायक एवं योगकारक भी हो सकती है। किसी विशेष राशि पर शनि की साढ़ेसति का विचार करते समय उस राशि पर अन्य ग्रहों की स्थिति, दृष्टि आदि का प्रभाव, सुवर्णादि पाया का अवश्य विचार करना चाहिए।

–सुवर्णादि पाया फल विचार–

5 सितम्बर तक मिथुन राशि में शनि के संचार कालीन विभिन्न राशियों पर शनि का सुवर्ण आदि के पाया (पाद) का विचार शनि के परिवर्तन कालीन चन्द्रस्थित्यनुसार किया जाता है। इसका विस्तृत विवरण हम गतवर्षीय पंचांग में लिख आए हैं, सुविधा के लिए पुनः अवलोकन करें–

चन्द्र राशि के गोचर से	मेष	कन्या	मकर	चाँदी का पाया, परिश्रम से लाभ एवं सफलता होगी
चन्द्र राशि के गोचर से	वृष	कर्क	धनु	सुवर्ण का पाया-अति संघर्ष के बाद धन प्राप्ति हो
चन्द्र राशि के गोचर से	मिथुन	तुला	कुम्भ	लोहे का पाया-परेशानियों एवं दुःखों के बाद धन प्राप्ति
चन्द्र राशि के गोचर से	सिंह	बृश्चिक	मीन	ताँबे का पाया, प्रयासों में सफलता, धन लाभ, उन्नति

शनि के मिथुन राशि में संचार कालीन मेष आदि सभी द्वादश राशियों पर प्रभाव का विवरण हम गतवषीय पंचाँग दिवाकर २०६० में लिख चुके हैं। अब शनि द्वारा कर्क राशि में संचार काल का फल लिखते हैं–

—कर्क राशि में संचरणकालीन शनि साढ़ेसाती एवं ढैय्या—

(6 सितम्बर से 12 जनवरी, 2005 ई. तक)


✡ मिथुन राशि वालों को शनि की साढ़ेसति पाँव पर उतरती हुई, अर्थात् अन्तिम चरण में होगी।
✡ कर्क राशि वालों को शनि की साढ़ेसति हृदय पर चढ़ती हुई, अर्थात मध्यम अवस्था में होगी।
✡ सिंह राशि वालों को शनि की साढ़ेसति शिर पर चढ़ती हुई, अर्थात् प्रारम्भिक अवस्था में होगी।

ढैय्या विचार—**मेष** और **धनु** राशि वाले जातकों को शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव शुरु होगा। जिसके प्रभावस्वरूप घरेलू एवं व्यवसायिक उलझनें बढ़ेंगी।

सुवर्णादि पाया निर्णय—6 सितम्बर, सोमवार को प्रातः 4 बजकर, 30 मिनट से **वृष के चन्द्र** कालीन कर्क राशि में प्रविष्ट होने से मेष, वृष आदि राशियों पर शनि का सुवर्णादि पाया पिछले वर्ष जैसा ही रहेगा। अर्थात्–

(1) **मेष, कन्या व मकर** राशियों पर चाँदी का पाया शुभ
(2) **वृष, कर्क व धनु** राशियों को सोने का पाया मिश्रित फल
(3) **मिथुन, तुला व कुम्भ** राशि वालों को लोहे का पाया अशुभ फल।
(4) सिंह, बृश्चिक व मीन राशि वालों को ताम्र का पाया शुभ होगा।

(क) चाँदी का पाया हो, तो जातक को गत किए गए प्रयासों में सफलता मिलती है। आकस्मिक धन लाभ, उच्च-प्रतिष्ठा, पदोन्नति, स्त्री-सन्तान एवं भूमि आदि सुखों की प्राप्ति तथा वाहन आदि सुखों की उपलब्धि होती है।

(ख) सुवर्ण का पाया हो, तो जातक को उस अवधि में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे। परिवारिक एवं व्यवसायिक उलझनें अधिक होंगी। शत्रु एवं रोग भय, मानसिक तनाव अधिक रहे। वृथा खर्च एवं कलह-क्लेश अधिक रहे।

(ग) ताम्र का पाया—इसका फल शुभ होता है। कार्य-व्यवसाय में लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होते हैं। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बजते हैं। उच्च विद्या में सफलता तथा विवाह एवं परिवारिक सुखों की प्राप्ति तथा सवारी आदि सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होती है। देश-विदेश की यात्राओं के भी अवसर प्राप्त होते हैं।

(घ) लोहे का पाया—हो, तो जातक को आर्थिक व परिवारिक परेशानियाँ अधिक होती हैं। स्वास्थ्य में गड़बड़ तथा तनाव एवं उलझनें बढ़ती हैं। दुर्घटना से चोट आदि का भय, व्यवसाय में विघ्न बाधाएँ हों, प्रयत्न करने पर भी लाभ कम व खर्च अधिक रहे।

—कर्क राशिगत शनि का द्वादश राशियों पर प्रभाव—

(6 सितम्बर से 12 जन. 2005 ई. तक)

मेष—शनि चतुर्थ होने से (ढैय्या आदि के कारण) संघर्ष, धन-हानि, तनाव आदि अशुभ फल अधिक घटित होंगे। परन्तु इस राशि पर शनि का पाया चाँदी होने से उलझनों एवं विघ्नों के बावजूद निर्वाह-योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

वृष राशि—को शनि तृतीयस्थ होने से धन लाभ, मकान, वाहन आदि सुख साधनों एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। परन्तु शनि का पाया सुवर्ण होने से रोग एवं शत्रुभय, परिवारिक कलह, तनाव एवं वृथा खर्च भी रहेंगे।

मिथुन राशि को शनि द्वितीय रहेगा, शनि-साढ़ेसति का प्रभाव अभी रहेगा। घरेलू एवं आर्थिक उलझनें, आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। लोहे का पाया होने से संघर्ष व तनाव अधिक रहें। स्वास्थ्य सम्बन्धी सावधानी बरतें। इस पर शनि का पाया लौह है।

कर्क राशि को लग्न स्थान पर ही शनि साढ़ेसति होने से अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे, बनते कामों में अड़चनें एवं विलम्ब हो, किसी रोग के कारण कष्ट हो। शनि का पाया सुवर्ण होने से क्रोधाधिक एवं खर्चों की अधिक रहे। शनि का पाया सुवर्ण मिश्रित फल प्रदायक होगा।

सिंह राशि को शनि द्वादशस्थ होने से परिवार एवं व्यवसाय सम्बन्धी दौड़-धूप अधिक रहे, वृथा परिश्रम एवं खर्च भी बहुत अधिक रहे। परन्तु शनि का पाया तांबा होने से कुछ बिगड़े काम भी बनेंगे। अचानक धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।

कन्या राशि—को शनि एकादश (लाभ) स्थान में होने से परिश्रम के बाद धन लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। स्त्री, सन्तान एवं सवारी आदि सुखों की प्राप्ति भी होगी। शनि का पाया चाँदी होने से शुभ कार्यो पर खर्च भी होंगे।

तुला राशि—को शनि दशमस्थ होने से मिश्रित प्रभाव होंगे, परन्तु शनि का पाया लोहा होने से अत्यन्त संघर्ष, कठिनाइयों एवं विघ्नों के बाद धन, वाहन आदि सुखों का लाभ हो सकेगा। परिवारिक बन्धुओं से कलह एवं व्यय भी अधिक होंगे।

बृश्चिक राशि—को शनि नवमस्थ होने से भाग्योन्नति में विघ्न एवं विलम्ब पैदा होंगे। खर्चाधिक, धर्म की ओर रुचि में कमी रहे, परन्तु शनि का पाया ताम्र होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

धनु राशि—का । ो शनि अष्टम होने से अशुभफली होगा। ढैय्या का फल भी अशुभ है। कार्य-व्यवसाय में विघ्न बाधाओं के बाद सफलता मिले। इस राशि पर शनि का पाया सुवर्ण होने से धन लाभ मध्यम रहेगा तथा खर्च अधिक होंगे।

मकर राशि को शनि सप्तमस्थ होने से परिवार एवं व्यवसाय सम्बन्धी परेशानियाँ अधिक होंगी। बनते कार्यों में अड़चनें पैदा हों, स्वास्थ्य में कमी, परन्तु इस राशि को शनि का पाया चाँदी होने से बीच-बीच में धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे।

कुम्भ राशि को शनि षष्ठ होने से कठिनाइयों के बावजूद धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। शत्रु दबे रहेंगे। इस राशि को शनि का पाया लोहा होने से भाई-बन्धुओं से कलह एवं तकरार तथा शत्रु, रोग एवं आर्थिक कारणों से परेशानियों का सामना हो।

मीन राशि को पंचम स्थान पर शनि पूज्य होगा। उच्च विद्या प्राप्ति में विघ्न बाधाएँ उत्पन्न हों। स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी गुप्त चिन्ता हो। कार्यों में संघर्ष के बाद सफलता मिले। इस राशि को शनि का पाया तांबा होने से लाभ व उन्नति के भी अवसर प्राप्त होंगे।

✡ शनि वक्री अवस्था में 13 जनवरी, सं. 2005 ई. गुरुवार को चन्द्र के कुम्भ राशि कालीन पुनः मिथुन राशि में प्रविष्ट होगा। इस कालावधि से शनि के सुवर्णादि पाया में परिवर्तन होंगे तथा मेष आदि राशियों पर शनि के शुभाशुभ प्रभाव में और भी अधिक तीव्रता आएगी।

13 जनवरी, सन् 2005 ई. से मेषादि राशियों पर शनि का पाया इस प्रकार से होगा–

मेष, कन्या व **कुम्भ** राशि वालों को शनि का पाया सुवर्ण होगा।

वृष, सिंह व **धनु** राशि वालों को शनि का पाया ताँबा होगा।

मिथुन, तुला व **मकर** राशि को शनि का पाया चाँदी होगा।

कर्क, बृश्चिक व **मीन** राशि वालों को शनि का पाया लोहा होगा।

1. **मेष राशि** को शनि तृतीय होने से तथा राहु का भी संचार हट जाने से गतवर्ष की अपेक्षा शुभभल घटित होंगे। परन्तु पाया सुवर्ण होने से संघर्षपूर्ण हालात भी होंगे।

2. **वृष** राशि को द्वितीय शनि तथा तांबा का पाया होने से मिश्रित फल रहेंगे। कठिनाईयों के बावजूद गुज़ारे योग्य आय के साधन बनेंगे।

3. **मिथुन**–शनि साढ़ेसति के कारण तनाव व स्वास्थ्य में विकार रहे, धन का अपव्यय भी बढ़े, चाँदी का पाया होने से धन लाभ के अवसर भी प्राप्त होंगे।

4. **कर्क**–शनि की साढ़ेसति एवं लोहे का पाया होने से घरेलू एवं व्यवसाय सम्बन्धी उलझनें बढ़ेंगी तथा बनते कामों में विघ्न-बाधाएं पैदा होंगे।

5. **सिंह** राशि को एकादश शनि होने से अकस्मात् धन-लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। शनि का पाया भी ताँबा होने से उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्बन्ध बनेंगे।

6. **कन्या** राशि को दशमस्थ शनि होने से अत्यन्त संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। मकान, स्त्री एवं सवारी के सुख भी प्राप्त होंगे।

7. **तुला** राशि को नवमभाव में शनि भाग्योन्नति में विघ्नकारक होगा, परन्तु इस राशि को शनि का पाया चाँदी होने से अकस्मात् धन लाभ (लाटरी, शेयरों आदि से) के अवसर प्राप्त होंगे।

8. **बृश्चिक** राशि को पुनः शनि की ढैय्या का प्रभाव होगा। बनते कामों में विघ्न, बाधाएँ हों। शनि का पाया भी लोहा होने से निकट भाई-बन्धुओं से वैमनस्य बढ़े।

9. **धनु** राशि पर शनि की सप्तम दृष्टि पड़ने से बनते कार्यों में अड़चनें, परिवारिक सदस्यों तथा मित्रों से विरोध पैदा हो, परन्तु ताम्र का पाया लाभ के अवसर भी प्रदान करेगा।

10. **मकर** राशि को शनि शुभफल एवं लाभ के अवसर प्रदान करेगा। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के सम्पर्क से लाभ होगा। इस पर चाँदी का पाया भी शुभफली रहेगा।

11. **कुम्भ** राशि को शनि पंचमस्थ होने से परिश्रम एवं संघर्ष के बाद ही धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे इस राशि को **सुवर्ण** का पाया होना भी संघर्ष को दर्शाता है।

12. **मीन**–चतुर्थ होने से शनि की ढैय्या का प्रभाव रहेगा। इसके अतिरिक्त शनि का पाया भी लोह है। आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे।

शनि साढ़ेसती, ढैय्या एवं शनि पाया के अशुभ फल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23 हज़ार की संख्या में विधिपूर्वक जप करना, तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना या करवाना कल्याणकारी रहता है। इसके अतिरिक्त शनिवार के दिन का व्रत रखना, उड़द, सप्तधान्यादि दान, कृष्ण वस्त्र, शिव उपासना, शनि स्तोत्र तथा शनि से सम्बन्धित अन्य वस्तुओं का दान करने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त शुभ मुहूर्त में नीलम एवं विधिपूर्वक निर्मित शनि यन्त्र धारण करना भी लाभप्रद रहता है।

शनि का बीज मन्त्र– **''ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः॥''**

शनि का वैदिक मन्त्र–

''ॐ शंन्नो देवी रभिष्टये आपो भवन्तु पीतये, शंय्यो रभिस्रवन्तु नः॥''

शान्त्यर्थ शनि स्तोत्र–पिप्पलाद उवाच–

''ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तुते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते॥
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो॥
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥''

प्रतिदिन प्रातःकाल पीपल वृक्ष के समीप इस स्तोत्र का पाठ करके कच्ची लस्सी में काले तिल डालकर चढ़ाना और सायंकाल सरसों के तेल का दीपक जलाना शुभ होता है। तथा शनिकृत अरिष्ट की शान्ति होती है।

–शनि का सामान्य एवं विशेष फल वि. संवत् २०६१–

गोचर में मिथुन राशि के संचार कालीन देश के अनेक स्थलों (विशेषकर पूर्व एवं पश्चिमी क्षेत्रों में पड़ने वाले प्रदेशों की) सीमाओं पर हिंसक, आतंकवादी विस्फोटक घटनाएँ, युद्ध-भय, कहीं अनाज की कमी, दुर्भिक्ष, नेताओं में परस्पर टकराव, छत्रभंग एवं राजनीतिक अनिश्चितताओं का वातावरण हम गतवर्ष के पंचाँग पृष्ठ 17 पर उल्लेख कर चुके हैं– २०६१ में वर्षारम्भ से 5 सितम्बर, 2004 ई. तथा 13 जन. से 8 अप्रै. 2005 तक की अवधियों में भी शनि मिथुन राशि में संचरित होने से अशुभ प्रभाव करेगा–

मिथुने च यदा सौरि दुर्भिक्षं तत्र रौखम्।
पूर्व पश्चिमे दारुणं नृपाणां च महद् भयम्॥

कर्क राशिगत शनि द्वारा संचार काल में भी सामान्य लोगों के पास धन की कमी रहे, रोगों की बहुलता हो, अधिकांशतः लोग धर्म विरुद्ध आचरण करें। लोगों में दुःख, विषाद

एवं चिन्ताएँ अधिक व्याप्त रहें। पशुओं एवं धन के अपहरण, लूटमार अधिक हों, राजनेताओं में भी टकराव अधिक रहे–

रोगानित्यं ग्रसन्ति प्रचुर परिभवोवित्तनाशस्तथैव।

कार्यहानि विरूद्धैः सकल भयजनैः देशचिन्ता विषादः ॥

नोट–अधिक विस्तार के लिए आकाशी कौंसिल और भविष्यफल वाले पृष्ठों पर अवलोकन करें।

–गुरु का शुभाशुभ गोचरफल–संवत् २०६१–

4 जनवरी, सन् 2004 ई. से गुरु सिंह राशि में वक्री अवस्था में संचार करते हुए 5 मई, 2004 ई. को इसी राशि में मार्गी होगा। तदुपरान्त 22 अगस्त से अतिचारी गति को प्राप्त होता हुआ, 27 अगस्त रात्रि 11 बजकर 36 मिनट से **कन्या राशि** में प्रविष्ट होगा। 2 फरवरी, 2005 ई. से **कन्या राशि** में वक्री होकर सम्वत् के अन्त तक वक्री ही रहेगा।

ध्यान रहे, वक्री, अस्त एवं शीघ्रातिचार अवस्था में गुरु किन्हीं जातक/जातिकाओं को अशुभफल प्रदायक होता है। 27 अगस्त, 2004 तक गुरु पर शनि की दृष्टि रहने से भी गुरु प्रभावित जातकों को मानसिक कष्ट तथा सोची हुई योजनाओं में विलम्ब उत्पन्न होंगे। सामान्य लोगों में दुःख, पीड़ा एवं अत्यधिक महंगाई के कारण परेशानियां बढ़ती हैं। कहीं सत्ता परिवर्तन और दुर्भिक्ष आदि का भय होता है।

–सिंह राशिगत गुरु का गोचरफल–

(संवत् के आरम्भ से 26 अगस्त, 2004 ई. तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
संतान सुख, धर्म-कर्म में प्रवृत्ति, घरेलू सुख धन लाभ	धन हानि स्वास्थ्य संबंधी परेशानी मन उचाट रहे	आय साधारण स्त्री/पति एवं दाम्पत्य सुख रहे	अचानक धन लाभ, सुख-साधन बढ़ें परन्तु खर्च अधिक	गुज़ारे योग्य आय, आराम कम व संघर्ष अधिक कष्ट रहे	धन लाभ, नए कार्य की योजना बने	नए कार्य की योजना तथा बिगड़ा कार्य बने	धन हानि, मित्र से धोखा मिले, तनाव रहे	विद्या में सफलता, सन्तान सुख बिगड़ा कार्य बने	शरीर कष्ट, खर्च अधिक, अचानक धन हानि	स्त्री/पति सुख, धर्म-कर्म में प्रवृत्ति मान-सम्मान	रोग भय, मानसिक तनाव व उलझनें बढ़ेंगी

–कन्या राशिगत गुरु का गोचरफल–

(27 अगस्त, 2004 ई. से संवत् के अन्त तक के लिए)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
बनते कार्यों में अड़चनें शरीर कष्ट, रोग भय	सन्तान संबंधी सुख विद्या-कम्पीटशन में सफलता	भूमि-जायदाद से लाभ खर्च अधिक शरीर कष्ट	पराक्रम में वृद्धि तनाव के बावजूद गुज़ारे योग्य आय	धन लाभ, उन्नति के अवसर सवारी सुख, खर्च अधिक	धार्मिक कार्यों में रूचि शरीर कष्ट, भय	वृथा दौड़-धूप अधिक प्रिय-बन्धु से मन-मुटाव	धन लाभ के अवसर मिले, नए कार्य की योजना बने	आय कम, खर्च अधिक, धोखा मिलने के संकेत, सतर्क रहे	अकस्मात् धन लाभ व उन्नति के मौके प्राप्त हों, मंगल कार्य होगा	शरीर कष्ट, धन व पारिवारिक परेशानियां बढ़ेंगी	विशेष परिश्रम से भाग्य-उन्नति कार्यों में सफलता

गुरु के अशुभ फल की शान्ति–अथवा गुरु की शुभता बढ़ाने के लिए वृद्ध ब्राह्मण को भोजन कराना, प्रत्येक अमावस्या तथा गुरुवार का व्रत रखना, पुखराज धारण करना, पीले वस्त्र, चने की दाल, कांस्य पात्र, सुवर्ण, शक्कर, केले, लड्डुओं आदि का दान यथाशक्ति करने तथा गुरु के बीज मन्त्र अथवा गुरु गायत्री मन्त्र का जाप 19,000 की संख्या में विधिपूर्वक करना शुभ एवं फलदायक रहेगा। गुरु धनु और मीन राशि का स्वामी है।

बृहस्पति के अधिदेवता इन्द्र और प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा हैं।

गुरु गायत्री मन्त्र–

''ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्''

गुरु बीज मन्त्र–''ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः ॥''

सामान्य मन्त्र– ''ॐ बृं बृहस्पतये नमः ॥''

वैदिक मन्त्र– 'ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥'

पौराणिक मन्त्र–'देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसंनिभम्।'
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥'

राहु–केतु का शुभाशुभ गोचरफल–संवत् २०६१

संवत् २०६१ के आरम्भ से राहु मेष राशि तथा केतु तुला राशि में संचार कर रहा है। संवत् २०६१ में 25 मार्च, 2005 ई. को राहु मीन राशि तथा केतु कन्या राशि में प्रवेश करेगा। मेष तथा मीन राशिस्थ राहु के संचार का फल पृथक्-पृथक् लिख रहे हैं।

—मेष राशिस्थ राहु का गोचरफल—
(संवत् के आरम्भ से 24 मार्च, 05 ई. तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
किसी निकट बन्धु से कलह, आर्थिक समस्या हो, वृथा दौड़-धूप	अप-व्यय व्यर्थ की भाग-दौड़ अधिक बनते कामों में विलम्ब	सवारी सुख, बिगड़े कार्य बनें, प्रयासों में सफ-लता	संघर्ष के बाद धन लाभ कार्यों में स-फलता, गृह में खुशी	घरेलू उल-झनों के बाव-जूद गुजारे योग्य आय के साधन बनें	आय कम व संघर्ष अधिक रहे। शरीर कष्ट व शत्रु भय हो।	आय संबंधी परे-शानी, शरीर कष्ट व तनाव रहे	विगत किए गए प्रयासों में सफलता भाग्य में उन्नति व लाभ	बनते कामों में अड़-चनें रहे, रोग भय व गुप्त चिंता हो।	आय कम व खर्च अधिक, घरेलू उलझनें बढ़ेंगी तनाव हो।	धन लाभ, बिगड़ा कार्य बने, विद्या में स-फलता प्रिय से मुला-कात।	अचानक लाभ व हानि का संकेत घरेलू उलझनों से तनाव

तुला राशिस्थ केतु का गोचरफल
(संवत् के आरम्भ से 24 मार्च 05 ई. तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
स्त्री व पारि-वारिक चिंता, किसी से धोखा मिले	निर्वाह योग्य धन लाभ, कार्य में सफ-लता व खुशी	प्रिय बन्धु से मन-मुटाव, धन लाभ मध्यम	गृह-कलह व आ-र्थिक परिशा-नियों से अ-शान्ति रहे।	आशा-अनु-कूल सफ-लता, बिगड़े कार्यों में सुधार	प्रयत्न करने पर भी लाभ कम व खर्च अधिक रहे	आर्थिक परेशानी रुकावटें व शरीर कष्ट, स्त्री-पति से तनाव बढ़े	शत्रु भय, फिजूल खर्च, रोग-शोक व गुप्त चिन्ता	सुख साधनों में वृद्धि धन लाभ मध्यम रहो।	पुरुषार्थ वृद्धि, मंगल कार्य हो लाभ कम खर्च अधिक	शरीर कष्ट, चोट भय, आय में कमी	धन हानि, रोग भय संतान संबंधी चिंता

मीन राशिस्थ राहु का गोचरफल
(25 मार्च, 05 से संवत् के अन्त तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
बनते कार्यों में अ-ड़चनें अप-व्यय	गत किए हुए प्रयासों में सफलता	घर में मंग-लिक कार्य, धन लाभ	गुजारे योग्य आय के साधन रहें	शरीर कष्ट संघर्ष अधिक रहे	मान-सिक तनाव आर्थिक समस्या	विगत किए गए प्रयासों में सफलता	रोग भय एवं गुप्त चिन्ता रहे	आय कम, खर्च अधिक, तनाव	धन लाभ रुकावटें दूर होंगी	अचानक लाभ व हानि के योग हैं।	पारिवारिक कलह-क्लेश, वृथा दौड़-धूप

कन्या राशिस्थ केतु का गोचरफल
(25 मार्च, 05 से संवत् के अन्त तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
धन लाभ, कार्यों में सफ-लता	परिवार में मत-भेद धन लाभ साधा-रण	घरेलू कलह क्लेश, आर्थिक परेशा-नियां, तनाव	सफ-लता, बिगड़े कार्यों में सुधार	लाभ कम व खर्च अधिक रहे	रुका-वड़ें शरीर कष्ट स्त्री/ पति से तनाव रहे	शत्रु भय, फिजूल खर्च, रोग, शोक	सुख साधनों में वृद्धि, धन लाभ साधारण	मंगल कार्य हो, लाभ कम खर्च अधिक	शरीर कष्ट, चोट भय, आय में कमी	धन हानि, रोग भय संतान संबंधी चिन्ता	स्त्री/ पति को कष्ट, किसी से धोखा मिले

अनिष्ट राहु की शान्ति हेतु तिल, तेल, भूरे रंग का वस्त्र, कम्बल, नारियल, सप्तधान्य, सतनाजा, कृष्ण-पुष्प आदि का दक्षिणा सहित दान करना कल्याणकारी रहता है। जन्मपत्री अनुशीलन के बाद गोमेध भी धारण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त राहु के बीज मन्त्र **'ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः'** का 18 हज़ार की संख्या में जाप करें। गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र का पाठ भी शुभ है। राहु का वैदिक मन्त्र **'ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूति सदावृधः सखा। कयाशश्चिष्ठया वृता॥'**

केतु के अरिष्ट की शान्ति हेतु लोहा, सप्तधान्य, लाल-काला वस्त्र, नारियल, कम्बल, कस्तूरी, बेल कुष्ठाश्रम आदि में भोजन, क्षीर का दान तथा जन्मपत्री विश्लेषण के पश्चात् लहसनिया नग धारण करना कल्याणकारी रहता है। केतु के बीज मन्त्र **'ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः'** की 17 हज़ार की संख्या में जाप करना तथा श्री गणेश स्तोत्र एवं अपराजिता स्तोत्र का पाठ करना शुभ है। केतु की शान्ति के लिए वैदिक मन्त्र **'ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। सुमुषद्भिरजायथाः॥'**

सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, गुरु पुष्यादि योगः–वि. संवत् २०६१

किसी विशेष कार्य हेतु आवश्यक परिस्थितिवश अथवा शीघ्रता में कोई सुनियोजित एवं निर्धारित मुहूर्त्त न मिलता हो, तो आगे लिखे गए सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि योग, गुरु पुष्य आदि योगों में अभीष्ट कार्यो का शुभारम्भ करके मनोवांछित कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

सर्वार्थ सिद्धि योगों में—अनुबन्ध करना, परीक्षा, नौकरी, प्रतियोगिता अथवा चुनाव आदि के लिए आवेदन करना, क्रय–विक्रय करना, यात्रा या मुकदमा करना, भूमि, सवारी, वस्त्र–आभूषणादि का क्रय करना इत्यादि कृत्य किए जा सकते हैं। **अमृत सिद्धि योगों में** स. सि. योगों वाले कृत्यों के अतिरिक्त प्रेम विवाह करना, किसी कार्य सिद्धि हेतु सकाम अनुष्ठान करना आदि। रवि योग स. सि. योगों की भान्ति शुभ कार्यों के लिए प्रशस्त माने जाते हैं। **रवि योग** की उपलब्धता में यदि कोई कुयोग भी हो, तो **'रवि योग'** अन्य कुयोगों का नाश करके शुभ फल प्रदान करता है। **'अयोगः सिद्धियोगश्च, द्वावेतौ भवतो यदि। अयोगो हन्यते तत्र, सिद्धियोगः प्रवर्त्तते ॥ राजमार्तण्ड'**

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2004 ई.	घं. मि.	2004 ई.	घं. मि.
21 मार्च	सू. उ.	21 मार्च	22 39
23 मार्च	सू. उ.	23 मार्च	25 47
25 मार्च	4 11	25 मार्च	सू. उ.
27 मार्च	सू. उ.	27 मार्च	10 01
4 अप्रै.	सू. उ.	5 अप्रै.	सू. उ.
8 अप्रै.	12 49	9 अप्रै.	10 47
11 अप्रै.	सू. उ.	11 अप्रै.	7 14
13 अप्रै.	4 50	13 अप्रै.	सू. उ.
20 अप्रै.	सू. उ.	20 अप्रै.	9 24
21 अप्रै.	11 48	22 अप्रै.	सू. उ.
27 अप्रै.	2 17	27 अप्रै.	सू. उ.
28 अप्रै.	4 30	28 अप्रै.	सू. उ.
2 मई	सू. उ.	3 मई	4 59
5 मई	22 14	6 मई	19 34
9 मई	12 30	10 मई	सू. उ.
10 मई	10 54	11 मई	सू. उ.
16 मई	13 31	17 मई	सू. उ.
18 मई	18 21	20 मई	सू. उ.
24 मई	9 08	25 मई	सू. उ.
25 मई	11 38	26 मई	सू. उ.
30 मई	सू. उ.	30 मई	15 04
2 जून	8 59	3 जून	6 08
6 जून	सू. उ.	6 जून	19 05

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2004 ई.	घं. मि.	2004 ई.	घं. मि.
7 जून	सू. उ.	7 जून	17 17
11 जून	17 21	12 जून	सू. उ.
13 जून	सू. उ.	13 जून	21 30
15 जून	सू. उ.	16 जून	3 10
16 जून	सू. उ.	17 जून	सू. उ.
20 जून	15 05	21 जून	17 38
22 जून	सू. उ.	22 जून	19 51
30 जून	सू. उ.	30 जून	16 47
4 जुला	5 08	4 जुला	सू. उ.
8 जुला	24 08	10 जुला	सू. उ.
13 जुला	सू. उ.	13 जुला	9 12
14 जुला	सू. उ.	15 जुला	सू. उ.
16 जुला	18 17	17 जुला	सू. उ.
18 जुला	सू. उ.	18 जुला	23 22
27 जुला	3 41	27 जुला	सू. उ.
31 जुला	15 41	1 अग.	सू. उ.
5 अग.	8 34	7 अग.	सू. उ.
9 अग.	15 57	10 अग.	सू. उ.
11 अग.	सू. उ.	11 अग.	22 02
12 अग.	24 56	14 अग.	3 34
21 अग.	11 10	22 अग.	सू. उ.
23 अग.	9 55	24 अग.	सू. उ.
27 अग.	25 03	28 अग.	22 57

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2004 ई.	घं. मि.	2004 ई.	घं. मि.
31 अग.	18 28	1 सितं.	सू. उ.
2 सितं.	सू. उ.	3 सितं.	19 31
6 सितं.	सू. उ.	7 सितं.	सू. उ.
9 सितं.	8 28	10 सितं.	11 09
15 सितं.	17 30	16 सितं.	सू. उ.
18 सितं.	सू. उ.	18 सितं.	16 14
20 सितं.	सू. उ.	20 सितं.	14 07
24 सितं.	8 16	25 सितं.	6 47
28 सितं.	सू. उ.	29 सितं.	3 21
30 सितं.	सू. उ.	1 अक्तू	4 32
4 अक्तू	सू. उ.	5 अक्तू	सू. उ.
7 अक्तू	सू. उ.	8 अक्तू	सू. उ.
13 अक्तू	सू. उ.	13 अक्तू	25 37
22 अक्तू	सू. उ.	22 अक्तू	12 38
26 अक्तू	सू. उ.	26 अक्तू	11 09
28 अक्तू	सू. उ.	28 अक्तू	12 50
30 अक्तू	16 23	31 अक्तू	सू. उ.
1 नवं.	सू. उ.	1 नवं.	21 35
4 नवं.	सू. उ.	5 नवं.	6 17
10 नवं.	सू. उ.	10 नवं.	11 37
21 नवं.	16 41	22 नवं.	सू. उ.
27 नवं.	सू. उ.	27 नवं.	26 08
2 दिसं.	सू. उ.	2 दिसं.	13 44

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2004 ई.	घं. मि.	2004 ई.	घं. मि.
5 दिसं.	20 32	6 दिसं.	सू. उ.
10 दिसं.	17 57	11 दिसं.	सू. उ.
19 दिसं.	सू. उ.	19 दिसं.	22 46
21 दिसं.	सू. उ.	22 दिसं.	1 22
25 दिसं.	सू. उ.	25 दिसं.	8 30
(सन् 2005 ई.)			
2 जन.	सू. उ.	3 जन.	सू. उ.
7 जन.	सू. उ.	8 जन.	2 39
19 जन.	9 19	20 जन.	सू. उ.
24 जन.	23 20	25 जन.	सू. उ.
26 जन.	2 09	26 जन.	सू. उ.
30 जन.	सू. उ.	31 जन.	सू. उ.
3 फर.	13 07	4 फर.	11 56
6 फर.	सू. उ.	6 फर.	7 47
7 फर.	5 04	7 फर.	सू. उ.
8 फर.	2 08	8 फर.	सू. उ.
13 फर.	14 45	14 फर.	सू. उ.
15 फर.	16 32	17 फर.	सू. उ.
21 फर.	5 53	22 फर.	सू. उ.
22 फर.	8 42	23 फर.	सू. उ.
27 फर.	सू. उ.	27 फर.	18 10
2 मार्च	19 09	3 मार्च	18 32

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2005 ई.	घं. मि.	2005 ई.	घं. मि.
6 मार्च	13 56	7 मार्च	सू. उ.
7 मार्च	11 43	8 मार्च	सू. उ.
12 मार्च	1 34	12 मार्च	सू. उ.
13 मार्च	सू. उ.	13 मार्च	24 43
15 मार्च	सू. उ.	17 मार्च	सू. उ.
20 मार्च	13 16	21 मार्च	16 07
22 मार्च	सू. उ.	22 मार्च	18 42
30 मार्च	सू. उ.	30 मार्च	23 55
3 अप्रै.	सू. उ.	3 अप्रै.	18 37
4 अप्रै.	सू. उ.	4 अप्रै.	16 56
8 अप्रै.	11 13	9 अप्रै.	सू. उ.

अमृत सिद्धि योग
(2004–05 ई.)

23 मार्च	सू. उ.	23 मार्च	25 47
27 मार्च	सू. उ.	27 मार्च	10 01
4 अप्रै.	20 05	5 अप्रै.	सू. उ.
20 अप्रै.	सू. उ.	20 अप्रै.	9 24
2 मई	6 20	3 मई	4 59
5 मई	22 14	6 मई	सू. उ.
30 मई	सू. उ.	30 मई	15 04
2 जून	8 59	3 जून	सू. उ.
11 जून	17 21	12 जून	सू. उ.
30 जून	सू. उ.	30 जून	16 47

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग (2004-05 ई.)

(गाड़ी, आभूषणादि बहुमूल्य वस्तुएँ खरीदने हेतु विशेष मुहूर्त्त)

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योगों में बहुमूल्य एवं उपयोगी पदार्थ, वस्तुएँ जैसे—ज़मीन—जायदाद, हीरे—जवाहरात, स्वर्ण—चाँदी के आभूषण, कार, ट्रक, स्कूटर, गाय—भैंस क्रय करना, नवीन उद्योग की स्थापना आदि करना लाभदायक रहता है। इन योगों में यदि किसी की हानि हो जाए, तो भी दुगुनी अथवा तीन गुणा हानि होने की सम्भावना हो जाती है।

अमृत सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2004-05	घं. मिं.	2004-05	घं. मिं.
9 जुला	सू. उ.	9 जुला	25 32
6 अग.	सू. उ.	6 अग.	9 22
6 सितं.	26 32	7 सितं.	सू. उ.
4 अक्तू	10 43	5 अक्तू	सू. उ.
7 अक्तू	19 24	8 अक्तू	सू. उ.
30 अक्तू	16 23	31 अक्तू	सू. उ.
1 नवं.	सू. उ.	1 नवं.	21 35
4 नवं.	सू. उ.	5 नवं.	6 17
23 नवं.	18 13	24 नवं.	सू. उ.
27 नवं.	सू. उ.	27 नवं.	26 08
2 दिसं.	सू. उ.	2 दिसं.	13 44
21 दिसं.	सू. उ.	21 दिसं.	25 22
25 दिसं.	सू. उ.	25 दिसं.	8 30
3 जन.	5 19	3 जन.	सू. उ.
30 जन.	11 17	31 जन.	सू. उ.
27 फर.	सू. उ.	27 फर.	18 10
2 मार्च	19 09	3 मार्च	सू. उ.
12 मार्च	1 34	12 मार्च	सू. उ.
30 मार्च	सू. उ.	30 मार्च	23 55
8 अप्रै.	11 13	9 अप्रै.	सू. उ.

रवि सिद्धि योग

25 मार्च	4 11	26 मार्च	6 59
27 मार्च	10 01	28 मार्च	13 04
30 मार्च	18 15	1 अप्रै.	21 04
3 अप्रै.	21 02	4 अप्रै.	20 05
10 अप्रै.	8 54	11 अप्रै.	7 14
22 अप्रै.	14 33	23 अप्रै.	17 32
24 अप्रै.	20 37	25 अप्रै.	23 36
29 अप्रै.	6 04	1 मई	7 00
3 मई	4 59	4 मई	3 06
9 मई	12 30	10 मई	10 54

रवि सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2004 ई.	घं. मिं.	2004 ई.	घं. मिं.
11 मई	4 03	11 मई	9 52
22 मई	3 16	23 मई	6 17
24 मई	9 08	24 मई	24 12
25 मई	11 38	26 मई	13 41
28 मई	15 52	30 मई	15 04
1 जून	11 32	2 जून	8 59
7 जून	17 17	7 जून	22 09
8 जून	16 10	9 जून	15 48
20 जून	15 05	21 जून	17 38
21 जून	21 07	22 जून	19 51
23 जून	21 38	24 जून	22 52
26 जून	23 28	28 जून	21 18
30 जून	16 47	1 जुला	13 57
7 जुला	23 34	8 जुला	24 08
21 जुला	3 11	22 जुला	4 31
23 जुला	5 25	24 जुला	5 49
26 जुला	4 58	27 जुला	25 53
29 जुला	21 06	30 जुला	18 23
6 अग.	9 22	7 अग.	10 57
19 अग.	10 53	20 अग.	11 12
21 अग.	11 10	22 अग.	10 44
24 अग.	8 43	26 अग.	5 18
27 अग.	25 03	28 अग.	22 57
4 सितं.	21 19	5 सितं.	23 44
17 सितं.	16 57	18 सितं.	16 14
19 सितं.	15 17	20 सितं.	14 07
22 सितं.	11 21	24 सितं.	8 16
27 सितं.	4 20	28 सितं.	3 37
4 अक्तू	10 43	5 अक्तू	13 36
16 अक्तू	21 52	17 अक्तू	20 11
18 अक्तू	18 27	19 अक्तू	16 46
21 अक्तू	13 48	23 अक्तू	11 45
26 अक्तू	11 09	27 अक्तू	11 46

रवि सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2004-05	घं. मिं.	2004-05	घं. मिं.
2 नवं.	24 32	4 नवं.	3 30
14 नवं.	26 13	15 नवं.	23 49
16 नवं.	21 36	17 नवं.	19 41
20 नवं.	16 39	22 नवं.	17 13
24 नवं.	19 40	25 नवं.	21 29
2 दिसं.	13 44	2 दिसं.	16 01
3 दिसं.	16 27	4 दिसं.	18 47
14 दिसं.	6 41	15 दिसं.	3 58
15 दिसं.	18 57	15 दिसं.	25 40
16 दिसं.	23 54	17 दिसं.	22 48
19 दिसं.	22 46	21 दिसं.	25 22
24 दिसं.	5 51	25 दिसं.	8 30
2 जन.	3 40	3 जन.	5 19
13 जन.	9 18	14 जन.	7 23
15 जन.	6 10	16 जन.	5 46
18 जन.	7 26	20 जन.	11 44
22 जन.	17 24	23 जन.	20 23
23 जन.	25 29	24 जन.	23 20
31 जन.	12 38	1 फर.	13 27
11 फर.	16 14	12 फर.	15 05
13 फर.	14 45	14 फर.	15 14
16 फर.	18 32	18 फर.	23 55
19 फर.	9 10	20 फर.	2 55
22 फर.	8 42	23 फर.	11 15
1 मार्च	19 17	2 मार्च	19 09
12 मार्च	24 47	13 मार्च	24 43
14 मार्च	25 23	15 मार्च	26 48
19 मार्च	10 18	21 मार्च	16 07
23 मार्च	20 53	24 मार्च	22 38
30 मार्च	23 55	31 मार्च	10 53
31 मार्च	22 55	1 अप्रै.	21 40

द्विपुष्कर योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2004-05	घं. मिं.	2004-05	घं. मिं.
27 मार्च	13 34	28 मार्च	13 04
6 अप्रै.	14 03	6 अप्रै.	16 52
30 मई	22 31	31 मई	सू. उ.
24 जुला	5 49	25 जुला	5 41
1 अग.	20 23	2 अग.	सू. उ.
25 सितं.	6 47	26 सितं.	5 26
5 अक्तू	सू. उ.	5 अक्तू	13 36
28 नवं.	3 39	29 नवं.	4 52
1 फर.	सू. उ.	1 फर.	13 27
27 मार्च	सू. उ.	27 मार्च	25 04
5 अप्रै.	10 04	5 अप्रै.	15 15

रवि पुष्य योग

20 जून	15 05	21 जून	सू. उ.
18 जुला	सू. उ.	18 जुला	23 22
21 फर.	5 53	21 फर.	सू. उ.
20 मार्च	13 16	21 मार्च	सू. उ.

गुरु पुष्य योग

8 जन.	17 49	9 जन.	सू. उ.
5 फर.	सू. उ.	5 फर.	26 27
4 मार्च	सू. उ.	4 मार्च	10 55
7 अक्तू	19 24	8 अक्तू	सू. उ.
4 नवं.	सू. उ.	5 नवं.	6 17
2 दिसं.	सू. उ.	2 दिसं.	13 44

त्रिपुष्कर योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2004-05	घं. मिं.	2004-05	घं. मिं.
3 जन.	11 38	4 जन.	7 27
17 फर.	18 10	17 फर.	21 04
21 फर.	13 30	22 फर.	सू. उ.
22 फर.	सू. उ.	22 फर.	12 48
3 मार्च	4 36	3 मार्च	सू. उ.
8 मार्च	3 27	8 मार्च	सू. उ.
1 मई	11 39	2 मई	6 20
19 जून	12 17	20 जून	6 41
13 जुला	7 21	13 जुला	9 12
22 अग.	10 44	23 अग.	4 35
31 अग.	सू. उ.	31 अग.	18 28
5 सितं.	5 33	5 सितं.	23 44
24 अक्तू	11 11	25 अक्तू	सू. उ.
30 अक्तू	सू. उ.	30 अक्तू	10 54
9 नवं.	सू. उ.	9 नवं.	11 59
18 दिसं.	सू. उ.	18 दिसं.	10 35
28 दिसं.	सू. उ.	28 दिसं.	17 12
2 जन.	10 02	3 जन.	5 19
11 जन.	13 38	11 जन.	14 46
15 फर.	16 32	15 फर.	17 06
20 फर.	2 55	21 फर.	4 09
26 फर.	सू. उ.	26 फर.	12 55
7 मार्च	2 42	7 मार्च	सू. उ.

सू. उ. = सूर्य उदय

ज्योतिष शास्त्र और रोग विचार

(ज्योतिष तत्त्व–फलित खण्ड–भाग II से उद्धृत)

प्राचीन काल में भारत सभ्यता और संस्कृति के क्षेत्र में अत्यन्त समृद्ध एवं विकसित देश था। प्राचीन ऋषियों ने अपने दिव्य ज्ञान और योगजन्य शक्ति से ग्रहों और नक्षत्रों के सम्बन्ध में बहुत कुछ जान लिया था। वे अपने दिव्य चक्षुओं से ग्रह और नक्षत्रों से राशि, नक्षत्र, तारा समूह, सूर्य, चन्द्र, मंगल आदि ग्रहों की गति, स्थिति और संचार आदि को देखकर योगादि के बल से अपने शरीरगत चेष्टाओं से तुलना कर मनुष्य जीवन के बाह्य क्रिया-क्लापों तथा आन्तरिक मनः प्रवृत्तियों, गुण-स्वभावों तथा उनके द्वारा होने वाले शुभाशुभ फलों का निरूपण करते रहे। ज्योतिष का अगाध ज्ञान उन्हें वैदिक काल में ही था, परन्तु उसकी अभिव्यक्ति विभिन्न शाखाओं और साहित्य के रूप में क्रमशः क्षणः क्षणः कालान्तर में हुई। सहस्रों वर्ष पूर्व जव सामान्य मनुष्य ने अत्याधुनिक वैज्ञानिक यन्त्रों की कल्पना भी नहीं की थी, तभी दिव्य दृष्टि प्राप्त हमारे ऋषियों ने **''या ब्रह्माण्डे सा पिण्डे''** के सार्वभौमिक सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुए ब्रह्माण्ड और पिण्ड में नर और नारायण में तथा पुरुष और प्रकृति के मध्य तादात्म्य होने का महासूत्र संसार को मिला। इन्हीं महासूत्रों के द्वारा हमारे पूर्व ऋषियों ने अपने दिव्य ज्ञान चक्षुओं के द्वारा समस्त ग्रह-नक्षत्रों की रश्मियों का प्राणियों पर पड़ने वाले प्रभाव का सूक्ष्म निरीक्षण किया। ज्योतिष शास्त्र में सत्ताईस (27) नक्षत्रों, द्वादश राशियों, नवग्रहों आदि के द्वारा अनिष्ट रोगों के सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त की जा सकती है। कालपुरुष के विभिन्न अंगों को नियन्त्रित और निर्देशित करने वाली राशियों, नक्षत्रों, ग्रहों आदि की स्थितियों के आधार पर हम किसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। किसी जातक की जन्मपत्री में स्थित राशि, नक्षत्र, ग्रह आदि शरीर के किसी न किसी अंग का प्रतिनिधित्व करते हैं। जिस ग्रह, नक्षत्र आदि का अशुभ प्रभाव होता है, उससे सम्बन्धित शरीरांग पर रोग का प्रभाव रह सकता है। इस सम्बन्ध में चन्द्रमा के अंशादि एवं जन्म नक्षत्र के आधार पर निकाली गई विंशोत्तरी, योगिनी आदि दशाऽन्तर दशा तथा गोचर ग्रहों की वर्तमान कालिक ग्रह स्थिति का अध्ययन महत्त्वपूर्ण रहता है।

ग्रह नक्षत्र मानवीय सुख-दुख, लाभ-हानि, उन्नति-अवनति, मान-अपमान, रोग, कष्ट, सम्पत्ति-विपत्ति आदि के कारण नहीं होते, बल्कि सूचक होते हैं—**''फलानि ग्रह संचारेण सूच्यन्ति मनीषिणः। को वक्तः तारतम्यस्य वेधसं विना॥''**

मनुष्य ने जो भी शुभाशुभ कर्म पूर्व जन्मों में किए होते है, जन्मकुण्डली में ग्रह, उन्हीं कर्मों एवं उनकी प्रवृत्तियों के अनुसार राशियों एवं भावों की विभिन्न स्थितियों में बैठकर भविष्य फल की सूचना देते हैं।

मनुष्यों के अधिकांश रोग पाप कर्म के फलस्वरूप ही होते हैं—

''जन्मान्तर कृतं पापं व्याधिरूपेण बाधते। तत् शान्तिरोषधैदानं, जपं होमं कृतादिभिः॥''

चरक संहिता एवं धर्म शास्त्रों के अनुसार भी मनुष्य तथा उसके माता-पिता द्वारा इस जन्म में एवं पूर्वजन्मों में किए पाप कर्म अथवा अज्ञानतावश की गई असावधानियां ही व्याधि रूप में प्रकट होती हैं—

''धी, धृति, स्मृति विभ्रष्टः कर्म यत्ऽशुभम्। प्रज्ञापराधं तं विद्यात् सर्वदोष प्रकोपणम्॥''

इन सब प्रकार के रोगों की शान्ति जप, तप, उचित औषधि, यज्ञ, दान एवं शुभ कर्मों के द्वारा करनी चाहिए॥

नक्षत्र और रोग विचार

प्राचीन भारतीय ज्योतिष नक्षत्र पद्धति पर ही आधारित था। भारतीय ज्योतिर्विदों का नक्षत्र ज्ञान उत्कृष्ट कोटि का था। रामायण काल एवं महाभारत काल में भी ग्रह नक्षत्रों का मानव जीवन पर प्रभाव के अनेकत्र प्रसंग मिलते हैं। जैसे रामायण में श्री राम के बनवास जाने से पूर्व दशरथ ने कहा था ''कि अंगारक (मंगल) मेरे नक्षत्र को पीड़ित कर रहा है।'' महाभारत में भी श्री कृष्ण जब कर्ण के साथ भेंट करने जाते हैं, तब कर्ण ने ग्रह स्थिति का वर्णन करते हुए कहा कि ''शनि रोहिणी नक्षत्र में स्थित मंगल को पीड़ित कर रहा है॥''

यजुर्वेद की **तैत्तिरीय** संहिता में 27 नक्षत्रों की सूची का वर्णन मिलता है। यह सूची कृतिका नक्षत्र में प्रारम्भ होती है। कालान्तर में अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ हुई। चन्द्रमा को 27 नक्षत्रों एवं पृथ्वी का परिभ्रमण करने में 27.3 दिन लगते हैं, अर्थात् एक दिन में लगभग एक नक्षत्र को पार कर लेता है। मेष राशि अश्विनी नक्षत्र के 0° अंश से आरम्भ होती है।

प्राचीन वैदिक काल से ही नक्षत्रों और भारतीय जीवन पद्धति का अभिन्न सम्बन्ध रहा है। मुहूर्त ज्योतिष अधिकांशतः नक्षत्रों पर ही आधारित है। मनुष्य जीवन को स्वस्थ, सुव्यवस्थित एवं उन्नत बनाने के उद्देश्य से प्राचीन आर्ष ऋषियों द्वारा जीवन के प्रत्येक कार्य क्षेत्र से सम्बन्धित नक्षत्रों पर आधारित विभिन्न मुहूर्त्तों का आश्रय लेने का निर्देश दिया गया है। गर्भाधान से लेकर नामकरण, मुण्डन, विवाह, अन्त्येष्टि आदि सभी षोडश (16) संस्कारों तथा जीवन के अन्य सभी महत्त्वपूर्ण कार्य क्षेत्रों में नक्षत्रों एवं तदुपरि मुहूर्त्तों का समावेश अपरिहार्य रूप में स्वीकारा गया है। हमारे ऋषियों ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भूमि क्रय-विक्रय, गृह निर्माण, गृह प्रवेश, यात्रा, बीजवपन, विपणि या व्यापारारम्भ, यात्रा, जन्मदिन, विद्यारम्भ, गुरु धारण करना, पाठ, जप, मन्त्रदीक्षा, यज्ञ-हवन आदि धार्मिक अनुष्ठान, देव-प्रतिष्ठा, वशीकरण, उच्चाटन, औषध सेवन आदि सभी क्षेत्रों में नक्षत्राधारित शुभ मुहूर्त्तों को ग्रहण करने के लिए विशेष बल दिया है। प्राचीन भारतीय ज्योतिषाचार्यों ने काल पुरुष में एक महाकाल पुरुष की कल्पना की है। जिसके विभिन्न अंगों में 27 नक्षत्रों एवं 12 राशियों की कल्पना की गई है। जन्मकालीन किसी जातक का जन्म नक्षत्र या नाम नक्षत्र जब जन्म समय अथवा वर्तमान कालीन गोचरवश किसी पापी ग्रह से आक्रान्त, दृष्ट या विद्ध होता है, तो तत्सम्बन्धी शरीर के अंग में रोग या पीड़ित होता है। यदि शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो नक्षत्र अधीष्ठित शरीर का वह भाग पुष्ट होता है। **काल पुरुष** में नक्षत्रों का क्रम कृतिका से किया जाता है।

शरीर के विभिन्न अंगों पर नक्षत्रों की स्थिति

(1) कृतिका—सिर में, **(2) रोहिणी**—मस्तक में, **(3) मृगशिरा**—दोनों भौहों में, **(4) आर्द्रा**—आंखों में, **(5) पुनर्वसु**— नाक में, **(6) पुष्य**—मुख (चेहरे) में, **(7) आश्लेषा**—कानों में, **(8) मघा**—होठों एवं ठोडी में, **(9) पूर्वाफाल्गुनी**—दाहिने हाथ में, **(10) उत्तरा फाल्गुनी**—बाएँ हाथ में, **(11) हस्त**—अंगुलियों में, **(12) चित्रा**—गर्दन में, **(13) स्वाती**—छाती में, **(14) विशाखा**—हृदय में, **(15) अनुराधा**—उदर में, **(16) ज्येष्ठा**—अमाशय में, **(17) मूला**—कुक्षि (कोख) में, **(18) पूर्वाषाढ़ा**—पीठ में, **(19) उत्तराषाढ़ा**—रीढ़ में, **(20) श्रवण**—कमर में, **(21) धनिष्ठा**—गुदा में, **(22) शतभिषा**—दाहिनी जांघ में, **(23) पूर्वाभाद्रपद**—बाई जांघ में, **(24) उत्तराभाद्रपद**—पिंडलियों में, **(25) रेवती**—टखनों में, **(26) अश्विनी**—पैरों का ऊपरी भाग, **(27) भरणी**—पैरों के तलवों में वास होने की कल्पना की गई है।

ज्योतिष एवं मुहूर्त शास्त्र में **अभिजित** नामक 28वें नक्षत्र को भी सम्मिलित किया जाता है, इसकी गणना का क्रम उत्तराषाढ़ा की 15 घड़ियां और श्रवण की प्रारम्भिक 4 घड़ियाँ लेकर करते हैं। मुहूर्तादि कार्यों में इसे अति शुभ माना जाता है। परन्तु अभिजित नक्षत्र क्रान्ति वृत्त (Ecliptic) से बाहिर पड़ने के कारण चन्द्र भ्रमण के मार्ग में पड़ने वाले 27 नक्षत्रों में इसकी गिनती नहीं की जाती। 27 नक्षत्रों में जन्म का फल हम अपने ज्योतिष तत्त्व गणित खण्ड (पृष्ठ 57 से पृष्ठ 72 तक) में लिख चुके हैं, यहाँ नक्षत्रों से सम्बन्धित मुख्य रोगों का ही वर्णन किया जाता है—

27 नक्षत्रों से सम्बन्धित विशेष रोग

(1) अश्विनी—मेष राशि एवं केतु का यह नक्षत्र यदि पाप ग्रह से पीड़ित या दृष्ट हो, तो जातक ज्वर, अनिद्रा, वायु पीड़ा, फोड़े-फुँसी, जलन, सिर या पाँव पर चोट, बुद्धिभ्रम, अर्द्ध विक्षिप्तता, निम्न एवं उच्चरक्तचाप या शरीर के किसी भाग में तीव्र पीड़ा होने की सम्भावना होती है। यह गण्डमूलक नक्षत्र होने से पूज्य होता है। इसके देवता अश्विनी कुमार है। उपाय हेतु औषध सेवन के साथ अपामार्ग के पौधे की जड़ को लाल वस्त्र के टुकड़े में लपेटकर भुजा में बांधना चाहिए।

(2) भरणी—(नक्षत्र स्वामी शुक्र, राशि मेष) यदि इस नक्षत्र का स्वामी पाप ग्रहों से पीड़ित हो, तो जातक मदिरा आदि व्यसनों से ग्रस्त, तीव्र ज्वर प्रकोप, माथे एवं पांव पर चोट का भय, नज़ला, जुकाम, कफ, खाँसी, शक्तिहीनता, अति कामुकता एवं काम जन्य गुप्त रोग, पेट विकार/नेत्र आदि रोगों का भय होता है। इस नक्षत्र का देवता यम है। औषधोपचार के साथ आँवले वृक्ष की पूजा तथा अगस्त्य पौधे की जड़ लाल वस्त्र में लपेटकर भुजा में बांधें।

(3) (*i*) कृतिका—(प्रथम चरण, राशि मेष, नक्षत्र स्वा. सूर्य) यह नक्षत्र पीड़ित होने पर सिर में चक्कर, अनिद्रा, शरीर में जलन, हृदय रोग, घुटनों में दर्द, गठिया, तीव्र-ज्वर, सिर में चोट, नेत्र रोग (Eye Sight), फोड़ा-फुँसी, चेचक, शस्त्राघात या दुर्घटना, उच्चरक्तचाप आदि का भय होता है। इसका देवता अग्नि है।

(*ii*) कृतिका—(अंतिम 3 चरण, राशि वृष, नक्षत्र स्वामी सूर्य) जन्म समय यह नक्षत्र पाप ग्रह से पीड़ित हो, तो **जातक** मुख-चेहरा, गर्दन, कण्ठनली टांसिल, निचला जबड़ा, अनिंद्रा रोग, हृदय में कष्ट, विषम एवं तीव्र ज्वर, दाँत दर्द, मसूड़ों की सूजन, नेत्र रोग, फोड़ा-फुँसी, उच्च-रक्त चाप आदि रोगों की सम्भावना होती है। कपास के पौधे की जड़ भुजा में बांधने से लाभ होता है।

(4) रोहिणी—(नक्षत्र स्वामी चन्द्रमा, राशि स्वामी शुक्र)—इस नक्षत्र का अधिपति देवता ब्रह्मा है। यह नक्षत्र पापपीड़ित होने से ज्वर, सिर दर्द, प्रलाप, गले में खराबी, छाती या पाँव में दर्द, कुक्षिशूल, काम जन्य गुप्त रोग, सर्दी-जुकाम, नाक बहना, शरीर अंगों में सूजन, मस्तक में चोट आदि का भय, स्त्रियों में अनियमित मासिक धर्म की सम्भावना होती है। औषधोपचार के साथ जामुन वृक्ष की पूजा करनी चाहिए। अपामार्ग की जड़ भुजा में बांधने से लाभ होता है।

(5) (*i*) मृगशिर—(प्रथम 2 चरण के नक्षत्र में राशि स्वा. शुक्र, नक्षत्र स्वामी मंगल) यह नक्षत्र पापाक्रान्त होने से मुख पर मुहाँसे, कण्ठपीड़ा, टांसिल, खांसी, डिप्थेरिया, मलावरोध (कब्ज़), नजला-जुकाम, नेत्र-कष्ट, मलेरिया, गुप्त रोग आदि की सम्भावना होती है। इसका देवता चन्द्रमा है। श्री सत्यनारायण का व्रत रखना लाभदायक होता है।

(*ii*) मृगशिर—(अन्तिम 2 चरण) नक्षत्र स्वामी मंगल, राशि (मिथुन) स्वामी बुध है। जन्मकालीन अशुभ ग्रहों से पीड़ित होने से वात-पित्त-कफ़ (त्रिदोष) सम्बन्धी दोष, रक्तचाप, गुप्त-रोग, वायु विकार, खांसी, नज़ला, जुकाम आदि खुजली आदि त्वचा रोग, मलेरिया आदि ज्वर रोगों की सम्भावना रहती है। दवाई के साथ मन्त्रपूर्वक जयंती घास लाल कपड़े में लपेट कर भुजा में बांधें।

(6) आर्द्रा—मिथुन राशि के अन्तर्गत होने से राशि स्वामी बुध तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के देवता रूद्र (शिव) हैं। यह नक्षत्र पाप ग्रहों से पीड़ित होने से जातक तीव्र ज्वर, नजला-जुकाम, खांसी आदि वात/पित्त एवं कफ विकार, अनिद्रा, सिर में चक्कर, गले एवं कान में कष्ट एवं पीड़ा, शुष्क खांसी, नेत्र कष्ट, मतिभ्रम, कर्ण रोग, डिप्थेरिया, पेट में वायु विकार आदि की सम्भावना होती है। प्रति सोमवार शिव-पूजन तथा पीपल की जड़ दोहरी करके मन्त्रपूर्वक भुजा में बाँधना शुभ है।

(7) (*i*) पुनर्वसु—(प्रथम 3 चरणों, मिथुन राशि स्वामी बुध तथा नक्षत्र स्वामी गुरू है। आदित्य देवता हैं। जन्मकालीन पापाक्रान्त होने से कान, नाक, गले, श्वास सम्बन्धी रोग, गुर्दे व

पेट-विकार, सिर पीड़ा, पेट-गैस, तीव्र ज्वर आदि दवाई के साथ श्वेत पुष्प वाले आक की जड़ को रविपुष्य योग में दाईं भुजा में बांधे।

***(ii)* पुनर्वसु**—(चतुर्थ चरण कर्क राशि स्वामी चन्द्रमा तथा नक्षत्र स्वामी गुरू है। इसके अन्तर्गत फेफड़े, छाती का ऊपरी भाग, पेट का ऊपरी भाग, गुर्दे, वक्ष स्थल एवं स्तन सम्बन्धी रोगों की सम्भावना होती है। गाय की चारा, चापाती, गुड़ आदि से सेवा करना तथा गोमूत्र का सेवन करना, कष्टों से छुटकारा पाने में लाभप्रद होगा।

(8) पुष्य—(राशि (कर्क) स्वामी चन्द्र नक्षत्र स्वामी शनि है तथा बृहस्पति देवता है। यदि यह नक्षत्र या नक्षत्र स्वामी पाप ग्रहों से पीड़ित हो, तो जातक श्वास रोग, अल्सर, गैसट्रिक, पत्थरी, मन्दाग्नि, तीव्र ज्वर, पीलिया, शुष्क खांसी, तपेदिक, कैंसर, विटामिन सी की कमी, राजयक्षमा, एक्ज़ीमा, पायरिया आदि रोगों की सम्भावना होती है। औषधि सेवन के अतिरिक्त पीपल वृक्ष की पूजा तथा कुश की जड़ का दाईं भुजा में मन्त्रपूर्वक बांधना तथा ब्राह्मणों को दान देना कल्याणकारी होता है।

(9) आश्लेषा—कर्क राशि के अन्तर्गत राशि स्वामी चन्द्रमा एवं नक्षत्र स्वामी बुध है। यह गण्डमूलक नक्षत्र है। प्रथम चरण में शुभ, परन्तु 2, 3 एवं 4 चरण पर बालक माता-पिता के लिए कष्टकारी होता है। जन्म समय यह नक्षत्र पाप ग्रह से पीड़ित हो, तो पेट एवं वायु विकार, लिवर एवं पाचन प्रक्रिया सम्बन्धी रोग, पीलिया, पत्थरी, दन्त रोग, कफ, कोल्ड, एलर्जी, हिस्टीरिया एवं विषैली वस्तुओं एवं जन्तुओं से हानि तथा विटामिन बी की कमी होने का भय रहता है। इसका देवता नाग है। पटोल की जड़ को बाजू में बाँधना शुभ है, नाग चंपा वृक्ष की पूजा करना शुभ है।

(10) मघा—सिंह राशि अन्तर्गत स्वामी सूर्य तथा नक्षत्र स्वामी केतु है। इसके अर्यमा नामक पितर देवता हैं। जन्म समय मघा नक्षत्र अशुभ ग्रहों से पीड़ित हो, तो जातक अर्धांग पीड़ा, शिर-पीड़ा, वात विकार, हृदय की धड़कन में वृद्धि, उच्च रक्तचाप, भोजन का विषाक्त (विकार) हो जाना, गुर्दे में विकार, मानसिक विकृति, पीठ दर्द, शीत जन्य रोग एवं पितृ दोष के कारण होने वाले मानसिक व शारीरिक विकार होने की सम्भावनाएँ होती हैं। यह भी गण्डमूल नक्षत्र है। प्रथम एवं द्वितीय चरण होने से माता-पिता को कष्ट एवं परेशानी होती है। उपाय स्वरूप, वट वृक्ष की पूजा करना, श्राद्ध-तर्पण, दान तथा भृंगराज पौधे की जड़ दाईं बाजू में मंत्रपूर्वक बांधना कल्याणकारी होगा।

(11) पूर्वाफाल्गुनी—सिंह राशि अन्तर्गत स्वामी सूर्य तथा नक्षत्र स्वामी शुक्र है। जन्म कुण्डली में यह नक्षत्र पीड़ित होने से हृदय में विकार, सिर दर्द, नेत्र रोग, मानसिक व शारीरिक कष्ट, ज्वर, खांसी, पसली में पीड़ा, स्त्री या विपरीत योनि द्वारा पीड़ित, गर्भपात या सन्तान कष्ट, नाड़ी रोग, रक्तचाप, रक्तक्षीणता, पारम्परिक (Chronic) रोग आदि होने की सम्भावनाएँ होती हैं। इसका देवता भग है। दवाई के साथ-साथ भगवती देवी एवं पलाश वृक्ष की पूजा तथा पलाश के पौधे की जड़ मन्त्रपूर्वक बाजू में बांधना व दान करना कल्याणप्रद होता है।

(12) उत्तराफाल्गुनी—(प्रथम चरण) सिंह राशि होने से स्वामी सूर्य तथा नक्षत्र स्वामी भी सूर्य है। जन्मकालीन यह नक्षत्र पापाक्रान्त होने से सिर में दर्द, दुर्घटना से चोट भय, मियादी बुखार, पीठ दर्द, उच्च रक्तचाप, मानसिक उन्माद, अति क्रोध एवं उत्तेजना, हृदय पीड़ा, पेट विकार आदि। देवता अर्यमा (सूर्य का पुजारी)। श्वेतार्क की जड़ भुजा में बांधना (मन्त्रपूर्वक) तथा यथाशक्ति दान करना कल्याणकारी होता है।

***(ii)* उत्तराफाल्गुनी**—(अंतिम 3 चरण) राशि स्वामी (कन्या) बुध तथा नक्षत्र स्वामी सूर्य है। जन्म समय पापाक्रान्त होने पर जातक को उदर विकार, यकृत (Liver) में विकृति, वात-पित्त विकार, पित्त-ज्वर, गर्दन में सूजन, पीठ में दर्द, रक्तचाप, त्वचा रोग, मन्दाग्नि, नेत्र विकार आदि रोगों का भय होता है। इसका देवता भी अर्यमा देव है। यदि जातक रोगग्रस्त हो, तो उसे श्वेता ऑक की जड़ दाहिनी भुजा में मन्त्रपूर्वक बाँधनी चाहिए। शनि व मंगल के दिन जब उफा नक्षत्र हो, तो उस दिन बाँधना लाभदायक होगा।

(13) हस्त—(कन्या राशि अन्तर्गते) राशि स्वामी बुध, नक्षत्र स्वामी चन्द्रमा। जन्मकालीन यह नक्षत्र अशुभ होने से डायरिया, अफारा, पेट दर्द या वायु विकार, पाचन प्रक्रिया में विकार, आँतों में दर्द, त्वचा रोग, विटामिन बी की कमी, मियादी बुखार, अतिसार, शक्तिहीनता हाथों एवं बाजुओं में कमज़ोरी, हिस्टीरिया, पत्थरी, मधुमेह एवं पेशाब जन्य रोग, किडनी में दोष, फेफड़ों एवं श्वास प्रक्रिया में कष्ट एवं मानसिक तनाव आदि। इसका देवता सूर्य है। कष्ट निवारण हेतु औषधि उपचार के अतिरिक्त ऑक या जावित्री की जड़ भुजा में बाँधे तथा अरिष्टक वृक्ष (रीठा) की पूजा करे तथा इसके बीज मन्त्र का 7 हज़ार की संख्या में पाठ करना कल्याणकारी होता है।

(14) *(i)* चित्रा (प्रथम 2 चरण, राशि कन्या, स्वामी बुध), नक्षत्र स्वामी मंगल है। इसके अधिपति विश्वकर्मा हैं। यदि यह नक्षत्र पाप ग्रहों से प्रभावित हो तो जातक तीव्र पीड़ा, अल्सर, पित्त प्रकृति, शीघ्र क्रोधी होने का स्वभाव, मन्दाग्नी, कृमि रोग, उदर विकार, गर्भाशय विकार (स्त्री), मस्तिष्क ज्वर, किडनी विकार, पत्थरी, पेशाबजन्य, मधुमेह आदि विचित्र रोग व्याधियों से ग्रस्त होने का भय होता है। पीड़ित व्यक्ति को असगन्ध पौधे की जड़ को भुजा में मन्त्रपूर्वक धारण करना चाहिए तथा बीजमन्त्र का 10 हज़ार की संख्या में जप करें।

***(ii)* चित्रा** (अंतिम 2 चरण) तुला राशि गते स्वामी शुक्र, नक्षत्र स्वामी मंगल है। सिर दर्द, अति कामुकता, गुर्दे में पत्थरी, किडनी का मूत्राशय सम्बन्धी रोग, प्रमेह, मेरूदण्ड, मधुमेह, बहुमूत्र सम्बन्धी रोग, मस्तिष्क ज्वर, गालब्लेडर एवं किडनी सम्बन्धी दोष एवं क्लिष्ट होतु औषध सेवन के साथ-साथ अश्वगन्धा नामक पौधे की जड़ को दाईं भुजा में मन्त्रपूर्वक धारण करे तथा बीजमन्त्र का 10,000 की संख्या में जाप करें। इस नक्षत्र के भी विश्वकर्मा देवता हैं।

(15) स्वाती—(तुला राशिगते स्वामी शुक्र, नक्षत्र स्वामी राहु) जन्म समय यह नक्षत्र पापाक्रान्त हो, तो जातक को प्रमेह, बहुमूत्र, मधुमेह, किडनी (गुर्दों) में विकार, खुजली, कोढ़-एग्ज़िमा, चर्म (त्वचा) सम्बन्धी, छाती सम्बन्धी रोग, पीठ दर्द, गर्भाशय (Uteurs)

सम्बन्धी दोष, अफारा, गठिया, हर्निया, अनूर्जता (Allergy) सम्बन्धी रोगों की सम्भावना होती है। इसका देवता पवन है। स्वाती नक्षत्र सम्बन्धी अरिष्ट निवारण हेतु औषध के अलावा जावित्री की जड़ भुजा के मूल में बाँधे तथा गाय एवं ब्राह्मण को दान, भोजन आदि तथा "**ॐ वायो ये ते सहस्रिणो......**" इत्यादि मन्त्र की 10 हज़ार की संख्या में जप तथा दशमांश संख्या में हवन करें।

(16) (*i*) विशाखा (प्रथम 3 चरण तक राशि तुला, रा. स्वा. शुक्र नक्षत्र स्वामी गुरू है जबकि देवता इन्द्राग्नि है। यदि नक्षत्र स्वामी पाप ग्रह से पीड़ित हो, तो जातक को मूत्राशय सम्बन्धी रोग जैसे—मधुमेह, बहुमूत्र, किडनी (गुर्दे) में त्रुटि, त्वचा रोग, उच्चरक्तचाप अथवा निम्न रक्तचाप, हिस्टीरया, शरीर पीड़ा, हृदय एवं मस्तिष्क सम्बन्धी रोग आदि होने का भय होता है। रोग शान्ति के लिए गुंजामूल की जड़ भुजा में मन्त्र पढ़ते हुए धारण करनी चाहिए, साथ में "ॐ इन्द्राग्नि आगत" इत्यादि का 10 हज़ार की संख्या में विधिवत् जप करना चाहिए।

(*ii*) विशाखा (चतुर्थ चरण में **बृश्चिक राशि** एवं राशि स्वामी मंगल तथा नक्षत्र स्वामी गुरू ही है। यदि पापाक्रान्त हो, तो इसको भी जातक को गर्भाशय एवं जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोग, हर्निया, मस्तिष्क ज्वर, गुर्दे की पत्थरी, मधुमेह, उच्च-रक्तचाप, श्वेत-प्रदर, बहुमूत्रता, पौरूष ग्रन्थी वृद्धि शुक्राणुओं की न्यूनता, हृदय सम्बन्धी एवं गुप्त व क्लिष्ट रोगों का भय होता है। रोग शान्ति के लिए गुलाब की जड़ भुजा में बाँधना तथा इन्द्राग्नि देवता की प्रसन्नता के लिए दस हज़ार की संख्या में मन्त्र जप करना या किसी योग्य ब्राह्मण से करवाना कल्याणप्रद होता है।

(17) अनुराधा—राशि बृश्चिक तत् स्वामी मंगल तथा नक्षत्र स्वामी शनि तथा अधिपति देव मित्र अर्थात् सूर्य हैं। यदि यह नक्षत्र पापाक्रान्त हो, तो जातक/जातिका को रक्तहीनता, पेट विकार, वायुप्रकोप, गर्भाशयशूल सम्बन्धी, अनियमित मासिक धर्म, तीव्र बुखार, सिर दर्द, कोष्टबद्धता, गठिया, वात-पित्त जनित अधिक देर तक चलने वाले रोग, दुर्घटना से चोट, घाव आदि, कुछ व्याकुल, क्रोधी एवं जिद्दी स्वभाव होता है। दोष निवारण हेतु औषधि सेवन के साथ-साथ गुलाब की जड़ को चौरस करके अपनी भुजा में बांधे एवं मौलसिरी वृक्ष की पूजा करे तथा "**ॐ नमो मित्रस्य, वरूणस्य ....**" मन्त्र की दस हज़ार की संख्या में जाप करने से अरिष्ट का निवारण होता है।

(18) ज्येष्ठा—बृश्चिक राशि के अन्तर्गत होने से राशि स्वामी मंगल तथा नक्षत्र स्वामी बुध तथा इन्द्र देवता है। यह गण्डमूलक नक्षत्र है। तीसरे, चौथे चरण में माता-पिता एवं अपने स्वास्थ्य के लिए अरिष्टकर होता है। यदि पाप ग्रहों से आक्रान्त हो, तो जातक/जातिका को वात-पित्त रोगों का प्रकोप, चित्त में व्याकुलता, गुप्तांग सम्बन्धी गुप्त रोग, आंतों का विकार, वात-पित्त आदि दोषों से उत्पन्न रोग, उदर विकार, अतिकामुकता एवं आसक्ति, कन्धों में दर्द, रक्त-विकार, दाद, खुजली, कुष्ट एवं त्वचा सम्बन्धी रोग, बवासीर, गर्भाशय सम्बन्धी विकार होने की सम्भावना होती है। अरिष्ट निवारण हेतु औषध के अलावा अपामार्ग की जड़ को मन्त्रपूर्वक बाजू में धारण करें, तथा इन्द्र के बीज मन्त्र का 10 हज़ार की संख्या में जाप करें।

(19) मूला—धनु राशि के अन्तर्गत राशि स्वामी गुरू तथा नक्षत्र स्वामी केतु है। देवता **नैर्ऋति** है। यदि जन्म समय पापाक्रान्त हो तो जातक/जातिका को निम्न या उच्च रक्तचाप, कोख, कमर या घुटनों में दर्द, गठिया, पेट गैस विकार, मुख रोग, मानसिक तनाव, क्रोध एवं उत्तेजना, चर्म रोग, फोड़ा, फुँसी, शिर पीड़ा, गर्भपात, **कब्ज़** से उत्पन्न रोग, हिस्टीरिया, मिरगी, कर्ण रोग, स्थूलता आदि रोगों का भय होता है। गण्डमूल होने से नक्षत्र का प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय चरण माता-पिता एवं धन आदि के लिए अशुभ होता है। अरिष्ट निवारण हेतु मन्दार की जड़ को शुभ मुहूर्त्त में बाजू में बाँधकर वैदिक मन्त्र "**ॐ मातेव पुत्रं ....**" मन्त्र का 7 हज़ार की संख्या में जाप स्वयं अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मण से करवाएँ।

(20) पूर्वाषाढ़ा—यह नक्षत्र धनु राशि के अन्तर्गत होने से राशि स्वामी गुरू है तथा नक्षत्र स्वामी शुक्र है। इसका देवता जल है अशुभ एवं पाप ग्रस्त होने से जातक/जातिका को रीढ़ की हड्डी सम्बन्धी, मूत्राशय सम्बन्धी, मधुमेह, पथरी, वात-कफ-श्लेष्म एवं धातु क्षीणता, पेट गैस, शारीरिक चर्बी, नितम्ब, जांघ, पाचन प्रक्रिया लीवर (Liver) एवं अन्य गुप्त रोगों के होने की आशंका रहती है। रोगारिष्ट निवारण हेतु वरूण देवता की पूजा, श्वेत चन्दन का उपयोग तथा कपास की जड़ चन्दन के छींटे लगाकर मन्त्रपूर्वक बाजू में धारण करें तथा 7 हज़ार की संख्या में पू.षा. के बीजमन्त्र का पाठ स्वयं या सुयोग्य ब्राह्मण से करवाएँ।

(21) (*i*) उत्तराषाढ़ा—(प्रथम चरण) धनु राशि के अन्तर्गत होने से राशि स्वामी गुरु तथा नक्षत्र स्वामी सूर्य है। विश्व देव-देवता है। नक्षत्र पापग्रह से पीड़ित होने से जातक को नेत्र रोग, चर्म रोग, सिर दर्द, हृदय-रोग, मन्दाग्नि, व्याकुलता, अतिसार, उदर एवं मेरूदण्ड, उच्च रक्तचाप, पक्षाघात, टाईफाईड, पेट गैस, गठिया आदि रोगों का भय रहता है। रोगी की बाजू में गुरू या रविवार को मन्दार की जड़ तथा कमल पुष्प बांधना कल्याणकारी होता है।

(*ii*) उत्तराषाढ़ा—(2, 3, 4 चरण) इसके अन्तर्गत राशि मकर होने से राशि स्वामी शनि तथा नक्षत्र स्वामी सूर्य है। जन्म समय पापाक्रान्त होने से तीव्र ज्वर, वात एवं पित्त विकार, सिर पीड़ा, पाचन प्रक्रिया में दोष, पक्षाघात, उच्च या निम्न रक्तचात, श्वास रोग, एक्ज़ीमा, कुष्ठ आदि चर्मरोग, हड्डियों के जोड़ों में पीड़ा, नेत्र रोग, स्नायु दुर्बलता, हृदय दुर्बलता या मानसिक कुण्ठा एवं मेरूदण्ड सम्बन्धी रोगों का भय होता है। अरिष्ट निवारण के लिए जातक को कपास की जड़, कमल की जड़ के पुष्प **पति** के साथ रविवार के दिन बाजू में मन्त्रपूर्वक बांधने से लाभ होगा। इसके अतिरिक्त पंचांग दिवाकर में लिखे बीज मन्त्र "**ॐ विश्वेदेवाः श्रृणुतेमं.........**" का 10 हज़ार की संख्या में जप करवाना कल्याणकारी होता है।

(22) श्रवण—मकर राशि के अन्तर्गत आने से राशि स्वामी शनि तथा नक्षत्र स्वामी चन्द्रमा है तथा देवता भगवान् विष्णु हैं। नक्षत्र (राशि) पापग्रहों से पीड़ित हो तो जातक/जातिका की कमर में पीड़ा, मन्दाग्नि, स्नायु दौर्बल्य, पथरी, अधिक श्रम से मानसिक थकान, पीलिया, एलर्जी जन्य त्वचा रोग, पाचनशक्ति में कमी, नेत्र कष्ट, अनिद्रा, उन्माद, कैल्शियम की कमी, रक्त विकार, वात-कफ एवं वातशूल, मेरूदण्ड तथा पेट सम्बन्धी क्लिष्ट रोगों की सम्भावना

होती है। अरिष्ट निवारण हेतु वातावरण में गुग्गुल की धूप दें तथा अपामार्ग की जड़ को चौहरी करके बाजू में मन्त्रपूर्वक बाँधना चाहिए तथा स्वयं या योग्य ब्राह्मण द्वारा भगवान् विष्णु का जपनीय मन्त्र "**ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः............**" का दस हज़ार जप करवाना कल्याणकारी होगा।

(23) (*i*) धनिष्ठा—(प्रथम 2 चरण) मकर राशि के अन्तर्गत होने से राशि स्वामी शनि एवं नक्षत्र स्वामी मंगल है तथा देवता वसु है। जन्म नक्षत्र (राशि) पापाक्रान्त हो, तो जातक को हृदय रोग, वात-कफ-पित्तादि के रोग, जोड़ों की पीड़ा, शुष्क खाँसी, बलग़म, पेट विकार, दाँत दर्द, पित्त ज्वर, नेत्र रोग, दाद-खुजली आदि चर्म रोग, स्नायु-दौर्बल्य, उदर-विकार, चिड़चिड़ापन, मिरगी, मानसिक दुर्बलता, नौकरों से कष्ट, दुर्घटना आदि से चोट, पिशाच पीड़ा, उच्च-निम्न रक्तचाप, पीलिया, पथरी, गुप्त रोग आदि होने की स्भावना होती है।

(*ii*) धनिष्ठा—(अंतिम 2 चरण) भी कुम्भ राशि एवं स्वामी शनि तथा नक्षत्र स्वामी मंगल ही होने से ऊपर लिखे रोगों की सम्भावनाएँ होती है। यद्यपि चारों चरणों में राशि स्वामी तथा नक्षत्र स्वामी एक समान हैं। परन्तु कुम्भ राशि में उच्च रक्त चाप, एलर्जी, श्वास, घुटनों, एड़ी, हृदय, लिवर, अमाशय व गुप्त रोग सम्बन्धी रोगों की भी सम्भावना होती है। अरिष्ट निवारण हेतु भृंगराज की जड़ को बाजू में धारण करना तथा पीपल की पूजा एवं यथाशक्ति दान जप करना शुभ होता है। मन्त्र "**ॐ वसोः पवित्रमसि...........**" मन्त्र पंचांग दिवाकर में देखें।

(24) शतभिषा—(कुम्भ) राशि स्वामी शनि तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। देवता वरूण हैं। नक्षत्र पाप ग्रहों से पीड़ित होने से जातक को अनिद्रा, रक्त चाप, वायु प्रकोप, पीलिया, पथरी, जोड़ों में दर्द, छाती में दर्द, हृदया में कष्ट, रोग, दुर्घटना से चोटादि का भय, श्वास रोग, स्नायु दुर्बलता, एग्जीमा-खाज आदि चर्म रोग, पक्षाघात, शिर एवं नेत्र कष्ट आदि रोगों की सम्भावनाएं होती हैं। सर्वारिष्ट निवारण हेतु कमल पुष्प के नाल की डंडी को नीले वस्त्र में लपेटकर बाजू में मन्त्रपूर्वक बांधें तथा "**ॐ वरूणस्योत्तम्भन......**" वैदिक मन्त्र का 10 हज़ार संख्या में जप तथा इससे दशांश जप हवन करना चाहिए तथा वरूण देव की प्रसन्नता हेतु कमल-पुष्प, कर्पूर, धूप-दीपादि से वरूण देव की पूजा व ब्राह्मणों को यथा शक्ति दान करना चाहिए।

(25) (*i*) पूर्वाभाद्रपद—(प्रथम तीन चरण) कुम्भ राशि के अन्तर्गत होने से राशि स्वामी शनि तथा नक्षत्र स्वामी गुरु है। अजैकपाद देवता है।

(*ii*) पूर्वभाद्रपद के अन्तिम चरण की राशि मीन होने से राशि स्वामी गुरू तथा नक्षत्र स्वामी भी गुरू ही है। यह नक्षत्र पाप ग्रहों से पीड़ित होने से जातक/जातिका को मस्तिष्क एवं नेत्र पीड़ा, हृदय की अनियमित गति, या हृदय का फैलाव, निम्न रक्त चाप, घुटनों एवं पाँव की सूजन, वायु एवं कफ सम्बन्धी रोग, शारीरिक स्थूलता, पेट-गैस, कर्ण रोग, स्नायु दुर्बलता, मानसिक दबाव, पत्थरी, पीलिया या जिगर (Liver) में खराबी, हृदयाघात, मूर्छा, हिस्टीरिया व अन्य पेचीदा रोगों की सम्भावना रहती है। अरिष्ट निवारण के लिए चाँदी की कटोरियों में घी, तिल या छाया पात्र का दान करने तथा भृंगराज की जड़ बाजू में मन्त्रपूर्वक बाँधना तथा नक्षत्र के वैदिक मन्त्र का 10 हज़ार की संख्या में स्वयं या ब्राह्मण द्वारा पाठ करवाना शुभप्रद होता है।

(26) उत्तराभाद्रपद—(राशि मीन) राशि स्वामी ग्रह गुरू तथा नक्षत्र स्वामी शनि है। इसके देवता अहिर्बुध्न्य हैं। यह नक्षत्र पाप ग्रहों से आक्रान्त होने से जातक/जातिका अतिसार रोग, नाक, कान-आँखों सम्बन्धी कष्ट, कब्ज़, वात एवं कफ जन्य रोग, हर्निया, पेट-गैस, स्नायु ज्वर, दन्त क्षय, पाण्डु रोग, दुर्बलता, पत्थरी, पीलिया, मन्दाग्नि, हाथ-पाँव सुन्न होना या पसीना आना एवं देर तक चलने वाले रोग, चर्म रोग, अव्यवस्थित रक्तचाप, मेरू दण्ड एवं हृदय सम्बन्धी रोगों की आशंका होती है। अरिष्ट निवारण हेतु अश्वत्थ या पीपल की जड़ को गंगाजल छिड़ककर मन्त्रपूर्वक दाएँ बाजू में गुरूवार को धारण करें तथा "**ॐ शिवो नामासि....**" वैदिक मन्त्र का जप 10 हज़ार की संख्या में करवाने से लाभ होता है।

(27) रेवती—(राशि मीन) राशि स्वामी गुरू तथा नक्षत्र स्वामी बुध है। इसका स्वामी देव पूषा है। रेवती गण्डमूल नक्षत्र है। इसका चतुर्थ चरण **माता-पिता** को अरिष्टकारी माना जाता है। जन्म में पापाक्रान्त होने से जातक/जातिका को मन्दाग्नि, बुद्धि विभ्रम, नीड़ा-कम्पन, वात-पित्त-कफादि त्रिदोष से उत्पन्न विकार, कुष्ट-खुजली आदि चर्म रोग, खाँसी, कर्ण शूलादि कफज रोग, पेट-गैस, उदर-विकार, आँख, कान एवं नासिका सम्बन्धी व्याधि, पाँवों में सूजन-पीड़ा आदि, मादक वस्तुओं (मद्यपान आदि) तथा **औधियों** से उत्पन्न रोग, चित्त-व्याकुलता, आम्लपित्त, एलर्जी, कब्ज़, अनिद्रा आदि रोगों की सम्भावना होती है। अरिष्ट निवारण के लिए पीपल की जड़ तिहरी करके दाई बाजू में शुभ मुहूर्त्त कालीन गंगाजल छिड़ककर मन्त्रपूर्वक बांधे एवं भगवान् शंकर की पुष्प, चन्दन, बिल्वपत्र, धूप-दीपादि से पूजा करके "**ॐ नमः शिवायः**" का अष्टोतरशत जप करें। "**ॐ नमः शम्भवाय च मयोद्भवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च, नमः शिवाय च शिवतराय च॥**" तदुपरान्त किसी सुयोग्य ब्राह्मण द्वारा दान-सत्कारपूर्वक 7 हज़ार की संख्या में रेवती के वैदिक मन्त्र का जाप करवाना कल्याणकारी होगा।

उपरोक्त 27 नक्षत्रों से सम्बन्धित अरिष्ट-निवारण एवं शान्ति स्थापन हेतु जपनीय मन्त्र, पूजन विधि एवं सामग्री विवरण सहित आप पंचाँग दिवाकर संवत् 2061 के अन्तिम पृष्ठों में देख सकते हैं।

औषध सेवन करने का मुहूर्त्त

किसी क्लिष्ट रोग के निवारण हेतु शास्त्रकारों ने जहाँ उपयोगी मन्त्र, जप-पाठ, पूजा एवं उपयुक्त दान आदि करने के निर्देश दिए हैं, वहीं क्लिष्ट रोगों की शान्ति के लिए किसी नवीन औषधि का सेवन करने के लिए विशेष शुभ मुहूर्त्तों को ग्रहण करने के आदेश दिए हैं—

मुहूर्त्त ग्रन्थों के अनुसार लघु, मृदु, चर एवं मूल नक्षत्रकालीन औषधि सेवन का प्रारम्भ करना प्रशस्त होता है। तदनुसार अश्विनी, पुष्य, हस्त, अभिजित, कालीन सोमवार को, मृगशिर, चित्रा, अनुराधा नक्षत्र शुक्रवार को तथा स्वाती, पुर्न., श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषा सोमवार को पड़े तो विशेष प्रशस्त हैं। इसके अतिरिक्त उपरोक्त नक्षत्रों में रिक्ता (4, 9, 14) तिथियां, अमावस एवं रविवार भी पड़े तो भी शुभ माना गया है।

ध्यान रहे, जन्म नक्षत्र में नवीन औषध को सेवन करने का निषेध कहा गया है।

द्वादश भावों, राशियों एवं नवग्रहों से रोग विचार

रोग विचार की दृष्टि से भावों का विशेष महत्त्व है क्योंकि भावगत होकर ही विभिन्न राशियों एवं ग्रह अपना शुभाशुभ फल प्रकट करते हैं। इन लग्न आदि द्वादश भावों द्वारा ही मनुष्य जीवन से सम्बन्धित प्रायः सभी विषयों के बारे में माना जा सकता है। जन्म कुण्डली का कोई भी भाव अशुभ राशि एवं पाप ग्रह से दूषित होने पर जातक के शरीरांग में ग्रह राशि से सम्बन्धित वैसे ही रोग को प्रकट करने लगता है। कौन-सा भाव किस प्रकार के रोगों की अभिव्यक्ति करता है ? उसका विचार निम्नानुसार करना चाहिए—

प्रथम भाव लग्न—शारीरिक गठन, स्वास्थ्य, मस्तिष्क रोग, सिर दर्द, मानसिक रोग, स्मरण शक्ति, नेत्र रोग, मुहाँसे, उन्माद, रक्ताघात, मिर्गी आदि, इस भाव का कारक सूर्य है।

द्वितीय भाव—मुख रोग, नेत्र रोग, कर्ण रोग, दन्त, नासिका एवं कण्ठ सम्बन्धी रोग, मुख, पक्षाघात, डिप्थीरिया, फोड़ा, फुँसी, मद्य-पान, दाहिनी आँख, वाक्शक्ति, वाणी, स्वर आदि इस भाव का कारक गुरु है।

तृतीय भाव—धैर्य, सामर्थ्य, बल, दाहिना कान, भुजाएँ, श्वांस की नली, फेफड़े, खाँसी, दमा आदि श्वास रोग, पराक्रम, मस्तिष्क ज्वर, मानसिक असंतुलन, बाजु एवं कन्धे में पीड़ा या जकड़न, नकसीर, ब्रोंकाईटिस, एलर्जी, गले की खराबी, यात्रा में कष्ट, दुर्घटना आदि। इसका कारक मंगल है।

चतुर्थ भाव—छाती, हृदय एवं पसलियों के रोग, मानसिक विकार, अजीर्ण, उदर एवं पाचन सम्बन्धी रोग, गैस विकार, जलोदर, कैंसर, वातरोग, माता को कष्ट आदि, इस भाव का कारक चन्द्र व बुध हैं।

पंचम भाव—पित्त रोग, जिगर एवं गुर्दे के रोग, जठराग्नि, पीलिया, हृदय सम्बन्धी रोग, नेत्र रोग, कमर में पीड़ा, ज्वर, [illegible], स्मरण शक्ति का ह्रास आदि, दिल की धड़कन कम या अधिक होना, उदर, गर्भाशय एवं मूत्राशय सम्बन्धी रोगों का विचार। इस भाव का कारक गुरु है।

षष्ठ भाव—यह भाव तो रोग का ही स्थान है। इस भाव से विशेष तौर पर रोग का विचार करते हैं। इस भाव से नाभि, पेट, कमर एवं अंतड़ियाँ (आंतों) सम्बन्धी रोग, अपचन, दस्त आदि दाँत, अमाशय सम्बन्धी, अपैंडिक्स, पथरी, हर्निया आदि इस भाव के मंगल व शनि कारक हैं।

सप्तम भाव—इस भाव से वस्ति, गुर्दे, मूत्राशय सम्बन्धी रोग, कमर-दर्द, प्रमेह, मधुमेह, प्रदर, पथरी, गर्भाशय, बवासीर, स्पाण्डलाइटिस, रीढ़ की हड्डी का दर्द, काम एवं सैक्स एवं जननेन्द्रिय सम्बन्धी एवं गुप्त रोगों का विचार किया जाता है। इस भाव का कारक शुक्र है।

अष्टम भाव—आयु, मृत्यु, मृत्यु का कारण, वीर्य विकार, बवासीर, पथरी, हर्निया, मधुमेह, रक्त दोष, गुर्दे सम्बन्धी, वायु विकार, विचित्र पेचीदा रोग, गुदा, अण्डकोश, जननेन्द्रिय एवं गुप्तांग, दुर्घटना एवं चोट आदि स्त्रियों के मासिक धर्म की अनियमितता गर्भाशय एवं यौन रोगों आदि का विचार। इस भाव का कारक शनि है।

नवम भाव—लिवर एवं रक्त विकार, कमर एवं उसके आस-पास अंगों से सम्बन्धित रोग, गठिया, साइरिका, दुर्घटना, चोट, घाव, पक्षाघात, मज्जा एवं स्त्रियों के मासिक धर्म, पीठ, पेट एवं मेरूदण्ड से सम्बन्धित रोग, शुभाशुभ स्वप्न, गुप्त चिन्ता एवं अधिक यात्रा से उत्पन्न थकान, मन की शान्ति, सन्तोष आदि। इस भाव के कारक सूर्य व गुरू हैं।

दशम भाव—इस भाव से गठिया, एग्जिमा, त्वचा रोग, घुटनों, पीठ एवं जोड़ों के दर्द, मिर्गी, बाई जांघ, दाँतों, हड्डियों सम्बन्धी एवं वायु सम्बन्धी रोगों का विचार किया जाता है। इस भाव के सूर्य, बुध, गुरू व शनि कारक हैं।

एकादश भाव—इस भाव से रक्त संचालन प्रक्रिया, श्वास-प्रक्रिया, नसों, जोड़ों में दर्द आदि, शीत विकार, हृदय रोग, स्नायु तन्त्र, गला, कान, बायां हाथ, पिंडलियों-पाँव (विशेषकर दाहिना) आदि में चोट, शीत लगना, ठण्ड आदि का विचार किया जाता है। इस भाव का कारक भी गुरू ही है।

द्वादश भाव—इस भाव से मानसिक एवं नेत्र रोग, कर्ण पीड़ा, शक्तिहीनता (कमज़ोरी), पीलिया, अनूर्जता (Allergy), बायां कान, दोनों पैर, काम जन्य एवं स्त्री (पत्नी) सम्बन्धी रोग, पक्षाघात, एड़ी में चोट आदि का विचार। इस भाव का कारक शनि है।

मेषादि द्वादश राशियों से रोग विचार

द्वादश भावों की भान्ति द्वादश राशियों एवं नवग्रहों के द्वारा भी अरिष्ट रोगों का निर्णय किया जाता है। जैसे—मेष राशि से सिर व मस्तिष्क रचना, वृष से नेत्र, जिह्वा, मुख, कण्ठ आदि में रोग का विचार किया जाता है। शरीर में किसी भी रोग का निदान करने के लिए नक्षत्र भाव, राशियों व ग्रहों से सम्बन्धित शरीरांगों एवं रोगों की जानकारी आवश्यक है। स्पष्टीकरण के लिए भाव एवं राशियों से सम्बन्धित शरीर अंग तथा रोगों का विवरण आगे दिया जाता है—

भावों एवं राशियों से सम्बन्धित शरीरांग एवं रोग

भाव	राशि	तत्त्व	शरीरांग	सम्भावित रोग
लग्न (प्रथम)	मेष	अग्नि	मस्तक, सिर, दिमाग, ऊपरी जबड़ा, मस्तिष्क संरचना, शिर सहित मुखाकार, पिटयूटरी-ग्लैण्ड।	मस्तिष्क रोग, स्मरण शक्ति, नेत्र रोग, उन्माद, मुहांसे, मिर्गी, रक्ताघात, रक्तविकार, सिर दर्द, टाईफायड, पित्त की गर्मी आदि।
द्वितीय	वृष	पृथ्वी	नेत्र, कान, नाक, गाल, होंठ, दाँत, मुख, जिह्वा कण्ठ, थायराईड, निचला जबड़ा, वाणी, ग्रासनली (Food-Pipe)।	नेत्र, मुख, कर्ण, दन्त, नासिका एवं कण्ठ सम्बन्धी रोग, मुख-विकार, डिप्थीरिया, फोड़ा, फुँसी, दाहिनी आँख, वाक्-शक्ति, मद्य-पान।
तृतीय	मिथुन	वायु	कन्धे, भुजाएँ, कोहनी, हथेली, ऊपरी पसली, कान, फेफड़े, कण्ठ, ग्रीवा, हाथ, बाजू, श्वास नली, कोशिकाएं।	मस्तिष्क ज्वर, मानसिक असंतुलन, बाजु एवं कन्धों में पीड़ा, नकसीर, एलर्जी, सामर्थ्य खांसी, दमा आदि श्वास रोग, गले की खराबी, यात्रा में दुर्घटना, चोटादि।
चतुर्थ	कर्क	जल	फेफड़े, हृदय, नीचे की पसली, छाती, वक्षस्थल, स्तन, पेट, पाचन प्रक्रिया मानसिक शान्ति।	छाती एवं पसलियों के रोग, मानसिक विकार, अजीर्ण, पाचनशक्ति, गैस विकार, कैंसर, हिस्टीरिया, जलोदर, वात रोग आदि।
पंचम	सिंह	अग्नि	लिवर, तिल्ली, हृदय, पीठ, कोख, कमर, रक्त, जिगर, मेरूदण्ड, पीठ।	पित्त, जिगर एवं गुर्दे के रोग, नेत्रों, कमर, ज्वर, हृदय, बुद्धि विक्षिप्तता, स्मरणशक्ति, दिल की धड़कन, मूत्राशय, गर्भाशय पीलिया व लिवर सम्बन्धी।
षष्ठ	कन्या	पृथ्वी	कमर, आँतें (आंतड़ियां) नाभि चक्र, वस्ति, पेट पैर, अमाशय, पैनक्रिया, पाचन प्रक्रिया।	नाभि चक्र, पेट, कमर एवं आंतों सम्बन्धी रोग, अपचन, दस्त, मरोड़, पथरी, हर्निया, मधुमेह, दुर्घटना से चोट आदि अपैंडिक्स।
सप्तम	तुला	वायु	अण्डाशय, डिम्ब ग्रंथी गर्भाशय का ऊपर भाग वस्ति (पेड़ू), कटि।	पेड़ू, गुर्दे एवं मूत्राशय सम्बन्धी रोग, कमर दर्द, पथरी, गर्भाशय, रीढ़ की हड्डी, काम, सैक्स सम्बन्धी गुप्त रोग।
अष्टम	वृश्चिक	जल	जननेन्द्रिय, गुदा, अण्ड-कोष, भ्रूण, लिंग, योनि, गर्भाशय, प्रोस्टेट।	मृत्यु का कारण, बवासीर, हर्निया, पत्थरी, रक्तदोष, मधुमेह, गुर्दे सम्बन्धी, वायु-विकार, गुप्तांग सम्बन्धी पेचीदा यौन रोग, मासिक धर्म एवं गर्भाशय हिस्टीरिया सम्बन्धी स्त्री रोग, दुर्घटना आदि।
नवम	धनु	अग्नि	जांघ, नितम्ब, कमर, लिवर, रीढ़ की हड्डी, घुटनें।	रक्त विकार, कमर एवं लिवर सम्बन्धी, गठिया, दुर्घटना से चोट आदि ; मेरूदण्ड सम्बन्धी शुभाशुभ स्वप्न, अधिक श्रम से थकान, ऋतु विकार, गठिया, एग्ज़ीमा आदि।
दशम	मकर	पृथ्वी	दोनों घुटने, टांगें, हड्डियाँ, जोड़, बाल, नाखून, बाह्य त्वचा।	त्वचा रोग, घुटनों, पीठ एवं जोड़ों के दर्द, मिर्गी, बाईं जांघ दाँत एवं हड्डियों सम्बन्धी, वायु विकार आदि।
एकादश	कुम्भ	वायु	नसों, जोड़ों, श्वास, रक्त, संचालन, दोनों पिण्ड-लियों, कान, घुटने, एड़ीयां।	रक्त संचालन, श्वास, प्रक्रिया, नसों, जोड़ों में दर्द, शीत-विकार, हृदय रोग, स्नायु, तन्त्र, गला, बायां हाथ, पिंडलियों में दर्द, शीत, वात-कफादि प्रकोप।
द्वादश	मीन	जल	दोनों पैर, टखने, पाँव के तलवे, पैरों की अँगु-लियाँ, नसें, दाँत आदि।	नेत्र रोग, कर्ण-पीड़ा, कमज़ोरी, पीलिया, अनूर्जता (एलर्जी), बायां कान, दोनों पैर, काम जन्य एवं स्त्री सम्बन्धी कष्ट/रोग पक्षाघात, एड़ी में चोट आदि।

उपरोक्त राशियों में जो राशि शुभ ग्रहों से युक्त एवं दृष्ट होती है, वह अंग पुष्ट तथा स्वस्थ होता है, जो राशि पाप ग्रहों से युक्त, पीड़ित, दृष्ट हो, वह अंग क्षीण एवं रोग युक्त होने की सम्भावना होती है।

ग्रहों एवं राशियों के तत्त्वानुसार रोगों की पहचान

द्वादश राशियों एवं **नवग्रहों** में कुछ अग्नि तत्त्व, कुछ वायु तत्त्व आदि का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन तत्त्वों की प्रकृति के आधार पर रोगों की पहचान सरलता से हो सकती है, जैसे—

(क) अग्नि तत्त्व—मेष, सिंह व धनु अग्नि तत्त्व प्रधान राशियाँ हैं तथा **सूर्य एवं मंगल** ग्रह भी अग्नि तत्त्व प्रमुख ग्रह हैं। यदि जन्म कुण्डली में अग्नि तत्त्व वाली राशि एवं सूर्यादि ग्रह स्वगृही, उच्चादि ग्रहों से युक्त एवं दृष्ट हों, तो जातक का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा, आत्मिक बल, ओज एवं क्रियात्मक शक्ति तीव्र एवं अच्छी होती है। व्याधि एवं अस्वस्थता थोड़े काल की, परन्तु तीव्र हो सकती है। यदि मेषादि अग्नि तत्त्व की राशियां तथा सूर्य, मंगल, नीच, शत्रु आदि ग्रहों, राशि से युक्त या पाप ग्रहों से दृष्ट हों, तो जातक के निम्न रोगों से पीड़ित होने की सम्भावना होती है, जैसे—मस्तिष्क रोग, उच्चरक्तचाप, नेत्र विकार, अस्थि एवं चर्म रोग, तीव्र ज्वर, अग्नि शस्त्र, विषादि से कष्ट, माईग्रेन, मेरूदण्ड, अनिद्रा, तीव्र सिर दर्द, उदर एवं पीठ विकार, बवासीर, हृदय रोग, पित्तजनित रोग, अतिसार, चित्त व्याकुलता, नासूर, फोड़ा, घाव, जलन, पक्षाघात, शस्त्राघात, मुहाँसे, जननेन्द्रियाँ आदि गुप्त अंग।

(ख) पृथ्वी तत्त्व—वृष, कन्या व मकर राशि पृथ्वी तत्त्व प्रधान राशियाँ हैं, तथा बुध ग्रह भी पृथ्वी तत्त्व के अन्तर्गत आता है। यदि कुण्डली में पृथ्वी तत्त्व वाली राशि एवं पृथ्वी तत्त्व ग्रह बुध शुभ भाव में एवं उच्च मित्रादि राशि में हों, तो जातक अत्यन्त बुद्धिमान, कार्य-कुशल, अध्ययनशील, सतर्क, प्रभावशाली वाणी, तार्किक, उच्चशिक्षित, स्वस्थ एवं तीव्र स्मरणशक्ति एवं कार्य सिद्ध करवाने में कुशल होता है। यदि उपरोक्त वृषादि पृथ्वी तत्त्व की राशि पाप ग्रहों से पीड़ित हो, एवं बुध नीच, शत्रु आदि राशिगत हो, तो जातक की निम्नलिखित रोगों में से राश्यनुसार रोग होने की सम्भावना होती है, यथा—

मस्तिष्क विकार, स्मरण शक्ति का ह्रास, हकलाहट, पक्षाघात, सूंघने, वाणी, सुनने एवं बोलने की शक्ति का ह्रास, दौरे पड़ना, त्वचा, नाखून, कश, नाड़ी एवं हड्डियों के रोग, नेत्र रोग, कण्ठ रोग, त्वचा, खुजली या कुष्ठ रोग, मन्दाग्नि, मानसिक भ्रान्ति, नाड़ी एवं स्नायुतन्त्र की दुर्बलता, पीलिया, वात-पित-कफ त्रिदोष से उत्पन्न रोग, दुःस्वप्न, भ्रान्ति (वहम), सोच एवं वाणी में दुर्बलता आदि।

(ग) वायु तत्त्व—मिथुन, तुला एवं कुम्भ राशि—ये वायु तत्त्व की राशियाँ हैं, तथा शनि ग्रह भी वायु तत्त्व प्रधान है। यदि कुण्डली में वायु तत्त्व प्रधान राशियां शनि-शुक्र आदि मित्र ग्रह युक्त एवं शनि भी स्वगृही, उच्चादि शुभ अवस्था में हों, तो जातक उत्साहशील, स्वाभिमानी, उच्च-प्रतिष्ठित, राजनीतिज्ञ, चुस्त एवं स्वस्थ-चित्त एवं पुष्ट शरीर का होता है। यदि वायु तत्त्वीय राशियाँ सूर्य, मंगल आदि शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट अथवा उनकी दशाऽन्तरदशा हो, तो जातक को निम्नलिखित रोग होने की आशंका होती है—वायु और कफ जन्य रोग, अत्यधिक श्रम के कारण कमजोरी, ब्लडप्रैशर, कठिन उदर शूल, स्पांडलाइटिस, सन्निपात, पत्थरी, लकवा आदि, पोलियो, पक्षाघात, वातशूल, मानसिक दुर्बलता, पत्नी एवं सन्तान सम्बन्धी कष्ट, पेड़, पत्थर या शस्त्र आदि से चोट, कैंसर, मधुमेह, हाथ, पाँव एवं टांगों की दुर्बलता, प्रेत, पिशाच आदि जटिल मानसिक व कायिक रोग तथा प्राण वायु, अपान वायु आदि को संकेत करते हैं।

(घ) जल तत्त्व—कर्क, बृश्चिक एवं मीन-ये जल तत्त्व की राशियां हैं तथा चन्द्र व शुक्र भी जल तत्त्वीय ग्रह हैं। यदि उक्त राशियाँ चन्द्र-गुरु आदि ग्रहों के प्रभाव शुभस्थ हों तथा चन्द्र-शुक्र ग्रह स्वगृही, उच्च-मित्र आदि राशियों में हों तो जातक तीव्र बुद्धिमान, दूसरों के मनोभावों को समझने में कुशल, धार्मिक एवं परोपकारी, देश-विदेशों की यात्राएँ करने वाला, स्वस्थ अंगों एवं पुष्ट शरीर का होगा।

यदि जलीय तत्त्व की राशियां तथा ग्रह शत्रु, नीच आदि ग्रहों से पीड़ित हों तो जातक को उनकी दशाऽन्तर दशा एवं गोचरवश नीचे लिखे रोग होने की सम्भावनाएँ होती हैं—

नेत्र रोग, कफ, शीत (ठण्ड), उदर रोग, श्वास रोग, पागलपन, उन्माद, मानसिक रोग, हिस्टीरिया, जननेन्द्रिय, गर्भाशय, मासिक धर्म सम्बन्धी स्त्रियों के रोग, डायरिया, हैज़ा, ड्राप्सी, रक्त, त्वचा, मज्जा, वीर्य एवं मूत्राशय सम्बन्धी, अतिसार, मन्दाग्नि, कफ एवं वायु रोग, प्रमेह, मधुमेह, पत्थरी, धातु-विकार, शीत ज्वर, अनिद्रा, नाड़ी दौर्बल्य, मूत्र विकार, पाण्डु रोग (पीलिया), काम-जन्य गुप्त रोग आदि।

(ङ) आकाश तत्त्व से सम्बन्धित—यदि कुण्डली में गुरु स्वराशि, उच्चादि अवस्था में हो, तो जातक का शरीर स्थूल, पुष्ट एवं स्वस्थ होता है। यदि नीच राशिस्थ या पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो जातक को नीचे लिखे रोगों की सम्भावना होती है—

कफज रोग, मूर्छा, अंतड़ियों का ज्वर, लिवर अर्थात् यकृत् सम्बन्धी पीलिया आदि रोग, अपचन, रक्त कैंसर, उदर, वायु, गठिया, नाभिचक्र में दोष, कर्ण रोग, गुल्म (पेट का फोड़ा), टाईफाईड, हर्निया, शारीरिक स्थूलता या दुर्बलता, पेट-गैस, देव या ब्राह्मणों के शाप से कष्ट आदि।

(च) राहु के कारण होने वाले रोग—कुटिल मति, असत्य में रूचि, कुतर्क, हृदय में

रोग, कमज़ोरी, वातज पीड़ा, कृमि रोग, पैर में चोट, दिल की जलन, कुष्ट, पाँव में चोट, पीड़ा आदि, स्त्री, सन्तान आदि सम्बन्धी परेशानी, सर्प और प्रेत आदि के कारण कष्ट-भय, अरूचि, उचाटता, जोड़ों एवं वायु सम्बन्धी रोग।

(छ) केतु के कारण होने वाले रोग—चर्म रोग, श्वेत कुष्ट, विष विकार, जलोदर, गर्भाशय सम्बन्धी, फोड़े, फुँसी, चेचक, विषादि के कारण उत्पन्न रोग, दुर्घटना से चोट आदि प्रेत-पिशाच आदि जनित रोग-कष्ट, पित्त जनित रोग तथा पुरुषों एवं स्त्रियों के गुप्त पेचीदा रोगों का विचार किया जाता है।

राहु व केतु दोनों के अनिष्ट प्रभावस्वरूप कई बार ऐसे पेचीदा एवं रहस्यात्मक रोग उत्पन्न हो जाते हैं, जिनका निदान कुशल डॉक्टरों द्वारा भी नहीं हो पाता है।

जन्म कुण्डली से रोग विचार

जन्म कुण्डली में किसी भी भाव से सम्बन्धित रोग कष्ट आदि जानने के लिए निम्नलिखित तथ्यों पर विचार करना अत्यन्त आवश्यक होता है, जैसे—(1) भाव में अशुभ ग्रहों को बैठना (2) भावेश ग्रह का त्रिकादि (6, 8, 12वें) भावों में बैठना (3) भावेश का शत्रु एवं पापी ग्रहों से युक्त होना (4) भावेश का पापी ग्रहों से वीक्षित होना (5) भाव का अशुभ (शत्रु नीच आदि) ग्रहों से देखा जाना (6) भाव सम्बन्धी कारक ग्रह की शुभाशुभ स्थिति (7) जातक की वर्तमान कालीन दशा-अन्तर्दशा का विचार तथा (8) गोचर ग्रहों का शुभाशुभ विचार।

ऊपरलिखित सभी तत्त्व भाव सम्बन्धी फल को प्रभावित करते हैं। भावों तथा भावेश सम्बन्धी ग्रहों की स्थिति जितनी अधिक खराब होगी, उतना ही उस भाव सम्बन्धी कष्ट होगा।

सामान्यतः लग्नेश ग्रह चाहे स्वयं शुभ ग्रह हो, या पाप ग्रह हो, वह जहाँ बैठ जाता है, उस स्थान की वृद्धि ही करता है। लग्नेश जिस भाव के स्वामी के साथ बैठा हो, उस भाव स्वामी के फल को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त कुण्डली में सूर्य व चन्द्रादि के बलाबल का भी विचार करना चाहिए। चन्द्रमा मस्तिष्क पर प्रभाव करता है, **लग्न शरीर का द्योतक** है और **सूर्य आत्मा का**। यदि कुण्डली में सूर्य और चन्द्रमा बली हों और शत्रु ग्रहों के प्रभाव से मुक्त हों, **तो उस जातक का स्वास्थ्य अच्छा** रहता है। भारतीय आयुर्वेद की यह प्रबल मान्यता है कि शारीरिक रोगों का मस्तिष्क की स्थिति के साथ गहरा सम्बन्ध है। इसी कारण प्राचीन काल से ही हमारे ज्योतिष शास्त्र में अरिष्ट आदि के सम्बन्ध में चन्द्रमा की स्थिति एवं बलाबल पर विशेष ध्यान दिया जाता रहा है।

(1) यदि लग्नेश और षष्ठेश एक ही राशि में हों और उनके साथ सूर्य भी हो, तो जातक को षष्ठेश एवं सूर्य की दशाऽन्तर्दशा में तीव्र ज्वर, नेत्र रोग, स्त्री व संतान कष्ट, अग्नि पीड़ा आदि कष्टों की सम्भावना होती है।

(2) लग्नेश, षष्ठेश और चन्द्रमा एक ही राशि में इकट्ठे हों, तो जातक को हैज़ा, शीत-प्रकोप, मानसिक कष्ट एवं जल-वायु से सम्बन्धित रोगों एवं अनिद्रा, मन्दाग्नि, चित्त व्याकुलता आदि रोगों का भय होता है।

(3) यदि कुण्डली में लग्नेश, षष्ठेश व मंगल एक ही भाव में इकट्ठे हों, तो जातक को इन ग्रहों की दशा में दुर्घटना या शस्त्राघात से विस्फोट आदि से चोट, पीड़ा, फोड़े एवं आप्रेशनादि, ज्वर आदि रोगों की सम्भावना होती है।

(4) यदि लग्नेश व षष्ठेश के साथ बुध भी एक ही राशि में स्थित हों, तो जातक को वात-पित्त जनित रोग, अरूचि, उदर विकार, दुर्बलता, वाणी विकार, पत्थरी, वमन, डकार, मन्दाग्नि, खुजली, दाद आदि त्वचा रोग, मति-भ्रम आदि विचित्र रोगों की सम्भावना होती है।

(5) यदि लग्नेश, षष्ठेश के साथ गुरु स्वगृही, उच्चादि राशि में हों, तो जातक का शरीर प्रायः स्वस्थ होता है। परन्तु यदि गुरु व लग्नेश नीच, शत्रु आदि राशि में हो, तो जातक को कफ, कान, नाक, गला, लिवर, पीलिया, पत्थरी आदि रोगों का भय होता है।

(6) यदि लग्नेश, षष्ठेश व शुक्र एक साथ किसी अशुभ राशि में हों, तो जातक, प्रमेह, मधुमेह, गुप्त रोग, धातु क्षय सम्बन्धी रोग तथा स्त्री को भी शरीर कष्ट की सम्भावना होती है।

(7) यदि लग्नेश, षष्ठेश—दोनों शनि के साथ एक ही भाव में हों, तो जातक को दुर्बलता, वातज अर्थात् वायु प्रकोप, अपचन, श्वास रोग, हड्डियों, दाँतों एवं नेत्र सम्बन्धी रोगों का भय होता है।

(8) लग्नेश, षष्ठेश व राहु तीनों एक ही राशि में हों, तो हृदय में दुर्बलता, मानसिक, तनाव, सिर में पीड़ा, वायु प्रकोप, सर्प, प्रेत एवं चोरी आदि का भय होता है।

(9) लग्नेश, षष्ठेश व केतु तीनों एक ही भाव में हों, तो जातक को फोड़ा, फुँसी, चेचक सम्बन्धी, त्वचा रोग, विष प्रकोप तथा स्त्रियों को आप्रेशन, गर्भाशय, मासिक धर्म सम्बन्धी विकारों की सम्भावनाएँ होती हैं।

(10) यदि षष्ठ भाव या षष्ठेश के साथ बुध व शुक्र का सम्बन्ध हों, तो जातक को आहार व्यवहार में असंयम के कारण रोग होता है।

यदि षष्ठेश भौमादि पाप ग्रह के साथ लग्न में हों, तो जातक को दुर्घटना या चोटादि से व्रण या आप्रेशन होता है। यदि शनि हों, तो अपचन एवं वायु-विकार होता है।

नोट—विविध रोगों सम्बन्धी विभिन्न उदाहरण कुण्डलियों एवं शास्त्र सम्मत उपायों के साथ हमारे शीघ्र प्रकाशित होने वाली फलित और रोग सम्बन्धी आगामी पुस्तक की प्रतीक्षा करें। पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी गणितकर्ता पंचाँग दिवाकर॥

मंगलीक योग सदा अनिष्टकारी नहीं

[ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) भाग दो से उद्धृत]

वर्तमान काल में ज्योतिष शास्त्र के प्रति लोगों की रूचि एवं विश्वास तो बढ़ रहा है, किन्तु इस प्रत्यक्ष शास्त्र के वास्तविक उपयोग की ओर बहुत कम लोगों का ध्यान गया है। सामान्यतः ज्योतिषी भाई विवाह-योग्य वर कन्या के वर्ण, वश्य, तारा, राशिमैत्री, भकूट आदि अष्टकूट पर आधारित गुण मिलान के उपरान्त दोनों (वर-कन्या) की कुण्डलियों में **मंगलीक**-योग की ओर विशेष ध्यान देते हैं। मंगलीक दोष का विचार करने के लिए अर्वाचीन पुस्तक **मुहूर्त्त संग्रह दर्पण** का निम्नलिखित श्लोक आधार माना जाता है—

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
कन्या भर्तृविनाशाय वरः कन्या विनाशकृत्॥

अर्थात् लड़के या लड़की की जन्म कुण्डली में मंगल 1, 4, 7, 8 या 12वें भाव में हो, तो कन्या पति के लिए तथा यदि यही योग पति की कुण्डली में हो, तो वह पत्नी के लिए विनाशकारी अर्थात् अनिष्टकर होता है। इस प्रकार के एकांगी मंगलीक दोष के प्रतिकार हेतु यह वचन भी मिलते हैं कि यदि वर और कन्या दोनों का मंगल समान हो या कोई अन्य पापग्रह मंगल के समान स्थित हो, तो उस स्थिति में विवाह शुभ होता है। दोनों की दीर्घायु तथा पुत्र आदि सन्तान सुखों में वृद्धि करने वाला होता है—

भौमतुल्यो यदा भौमः पापो वा तादृशो भवेत्।
उद्वाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्रवर्धनः॥ ज्यो. तत्त्व.

कुछ ग्रन्थकारों ने चन्द्रमा एवं शुक्र से भी मंगलीक दोष का विचार करने का आग्रह किया है, क्योकि चन्द्रमा मन का कारक तथा शुक्र स्त्री कारक ग्रह माना गया है। फलित ग्रन्थों में अनेक स्थलों में चन्द्र एवं शुक्र से भी 1, 4, 7, 8 इत्यादि स्थानों पर मंगल की स्थिति अशुभ मानी है। यथा—**चन्द्रात् चतुर्थभे भौमो जन्म काले यदा भवेत्।**

सुखभंगो दरिद्रः स्यात्पुंसः स्त्री म्रियते ध्रुवम्॥ मा. सा.

अर्थात् चन्द्र से चतुर्थ भाव में मंगल होने से जातक सुख हीन, दरिद्र और स्त्री की आयु पति की अपेक्षा कम होती है।

इसी भान्ति चन्द्र से सप्तम मंगल हो, तो उस मनुष्य की स्त्री दुःशीला, कटुस्वभाव की एवं अप्रियवादिनी होती है—

चन्द्रात्सप्तमे भौमो जन्मकाले यदा भवेत्।
कुशीला स्त्री भवेत् तस्य सदा चऽप्रियवादिनी॥ मा. सा.

''श्री मंत्रेश्वरकृत फलदीपिका'' अनुसार भी चन्द्र व शुक्र से सप्तम भाव में मंगल एवं शनि हों, तो स्त्री व पुत्र की हानि होती है।

''भौमाऽर्क्यस्ते भृगुजशशिनो दारहीनोऽसुतो वा।'' फलदीपिका

मंगलीक दोष के सम्बन्ध में यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि प्राचीन संहिता व जातक ग्रन्थों तथा मुहूर्त्त ग्रन्थों में वर-कन्या की कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान विशेष कर मंगलीक दोष की भयोत्पादक भ्रामक स्थिति के बारे वर्णन नहीं मिलता है। आजकल अधिकांश ज्योतिषी भाई लड़के-लड़की के नक्षत्रों पर आधारित गुण-मिलान के उपरान्त स्थूल रूप से निर्मित जन्म कुण्डलियों के मिलान का निर्णय **मंगलीक योग** के आधार पर ही करते हैं। मंगलीक दोष सम्बन्धी अल्प ज्ञान एवं गलत धारणाओं के कारण ही बहुत से सुयोग्य लड़कियों व लड़कों का परस्पर विवाह नहीं हो पाता अथवा कई बार बहुत विलम्ब से बेमेल विवाह हो जाता है। कई बार तथाकथित मंगलीक दोष के दोषारोपण के फलस्वरूप लड़के या लड़की के माता-पिता को जातक की वास्तविक जन्म पत्रिका या जन्म समय आदि को छिपाने का प्रयास करते भी पाया गया है।

मंगलीक दोष के शुभाशुभ प्रभाव का निर्णय करते समय मिलान सम्बन्धी अन्य महत्त्वपूर्ण तत्त्वों को भी ध्यान में रखना चाहिए। जैसे मंगलीक दोष सम्बन्धी शास्त्रोक्त परिहार वाक्य, गुणों की अल्पता या बहुलता, सप्तम, द्वितीय (कुटुम्ब), एवं अष्टम भावों में (मंगल के अतिरिक्त) अन्य शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति एवं दृष्टि आदि का विचार इन्हीं भावों के भावेश तथा विवाह-सुख कारक चन्द्र, शुक्र एवं गुरु आदि ग्रहों की स्थिति, नवांश एवं चलित कुण्डली तथा अष्टक वर्ग में मंगल की शुभाशुभ स्थिति तथा दशाऽन्तर्दशा का आकलन करने के बाद ही मंगल या मंगलीक दोष सम्बन्धी अन्तिम निर्णय करना चाहिए। किसी जातक/जातिका की कुण्डली के लग्न, व्यय, चतुर्थ, और सप्तम स्थान में पाप ग्रह हों, तो स्त्री पति के लिए अनिष्टकारी तथा पति स्त्री के लिए अनिष्टकारी माना जाता है—

लग्नेपापा व्यये पापाः पाताले च सप्तमे तथा।
भार्या भर्तृविनाशाय भर्ता भार्या विनाशयेत्॥

इस प्रकार केवल मंगल को ही नहीं, अपितु अन्य क्रूर एवं पाप ग्रहों (शनि, राहु, केतु, सूर्य, क्षीण चन्द्र आदि) को भी न्यून या अधिक रूपेण वैवाहिक जीवन में बाधक माना गया है, केवल मात्र मंगल को नहीं।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि कुण्डली में मंगल यदि नीच, अस्त या शनि से दृष्ट, या भावेश आदि के कारण अशुभ हो, तो वह जातक का उग्र स्वभाव, झगड़ालू, उतावला, स्त्री के साथ कटु सम्बन्ध, भाई-बन्धुओं से विरोध, रोगी, मिथ्याभिमानी, असन्तुष्ट, क्रोधी, दुराग्रही एवं आर्थिक दृष्टि से परेशान होता है। यह दुर्घटना, चोट आदि का भी कारक है। परन्तु यदि कुण्डली में **मंगल शुभस्थ** हो, तो जातक उत्साहशील, धैर्यवान, पराक्रमी, भाई-बन्धुओं के सुखों से युक्त, धन, भूमि-जायदाद, स्त्री एवं पुत्र-सन्तान आदि सुख एवं उच्च पद प्राप्ति आदि प्रतिष्ठाओं को देता है। कुछ राशियों में तो मंगल वैसे भी शुभ माना जाता है, जैसे **मेष,**

वृश्चिक, मकर, सिंह, धनु और मीन॥ इसके अतिरिक्त कुण्डली में मंगल की केन्द्र-त्रिकोण की स्थिति होने से भी शुभ एवं योगकारक माना जाता है। यथा—

''सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहाः शुभफल प्रदाः॥'' पाराशर

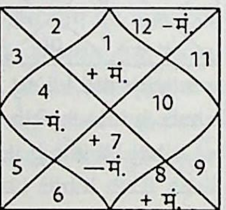
मेष, कर्क, सिंह, धनु एवं मीन आदि लग्नों में भावेश के कारण ही मंगल को शुभ एवं योग कारक माना जाता है। ध्यान रहे, सभी लग्नों एवं राशियों में मंगल का एक जैसा प्रभाव नहीं होता है।

मेषादि द्वादश लग्न और मंगलीक दोष

1. **मेष लग्न** में लग्न भाव में तथा बृश्चिक राशि में शुभ प्रभाव करता है, जबकि चतुर्थ (कर्क), सप्तम (तुला) एवं द्वादश (मीन) राशियों में वैवाहिक दृष्टि से अशुभ किन्तु व्यवसायिक दृष्टि से अच्छा फल करता है। लग्न भाव में मेष राशिस्थ मंगल होने से जातक स्वस्थ एवं आकर्षक व्यक्तित्व, भूमि, पुत्र, वाहन आदि सुखों से युक्त एवं सुप्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। मेष लग्न में केन्द्रगत मंगल **रूचक योग कारक** होता है तथा यहाँ पर मंगल की स्थिति मंगलीक दोष का **परिहार** भी मानी जाती है—

अजे लग्ने, व्यये चापे पाताले बृश्चिके कुजे। द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौम दोष न विद्यते॥

अर्थात् मेषस्थ मंगल लग्न में, बृश्चिकस्थ चतुर्थ, मकर का सातवें, कर्कराशि का आठवें एवं धनु का 12वें भाव में हो, तो मंगल दोष नहीं होता।



2. **वृष लग्न** में प्रथम भाव में भूमि, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति होती है। सप्तम भाव पर मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से वैवाहिक जीवन भी सामान्यतः ठीक रहेगा, यद्यपि स्वयं को स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी हो सकती है। इसी भान्ति चतुर्थ, सप्तम एवं द्वादश भावों में मंगल की सप्तम भाव पर स्वगृही दृष्टि एवं स्थिति होने से मंगलीक योग होने पर भी सामान्यतः दाम्पत्य सुख मिलता रहेगा, परन्तु मंगल द्वादशेश भी होने के कारण वैवाहिक सम्बन्धों में स्वाभाविक माधुर्य का अभाव होगा। यदि सप्तम भाव पर गुरु-शुक्र आदि की दृष्टि होगी, तो प्रेम-सम्बन्ध अच्छे होंगे।

3. **मिथुन लग्न** में प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भावों में मंगल जातक की संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का द्योतक है जातक को अपने तथा स्त्री के सम्बन्धों में वैमनस्य, तनाव, रोग एवं परेशानियाँ रहती हैं। परिवारिक एवं घरेलू सुखों में कमी होती है। यदि सप्तम भाव पर गुरु आदि शुभ ग्रहों की दृष्टि हो, तो वैवाहिक सुखों में वृद्धि होती है।

4. **कर्क लग्न** में मंगल केन्द्र-त्रिकोण का स्वामी होने से भूमि, वाहन, व्यवसाय एवं सन्तान आदि के सम्बन्ध में शुभफल प्रदान करता है। यदि लग्न भाव में हो, तो स्वास्थ्य एवं शिक्षा के सम्बन्ध में अस्थिरता एवं कुछ कमी करता है किन्तु सप्तम भाव पर उच्च दृष्टि होने से वैवाहिक सुखों में वृद्धिकारक होता है। चतुर्थ भाव में भी भूमि-जायदाद के सम्बन्ध में कुछ रुकावटें परन्तु सप्तम् एवं दशम् भाव पर क्रमशः उच्च एवं स्वगृही दृष्टि होने से दाम्पत्य सुख में वृद्धि तथा व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ व उन्नतिकारक होता है। सप्तम भाव में मंगल स्वोच्च स्थिति में होने से विवाह के पश्चात् विशेष लाभ एवं उन्नति प्रदायक होता है। द्वादश भाव में मंगल होने से उसकी सप्तम् भाव पर उच्च दृष्टि होने से द्वादश भाव की स्थिति भी अशुभ नहीं कही जा सकती। यहाँ पर सप्तमेश शनि की भी स्थिति शुभ हो, तो कर्क लग्न में द्वादश भाव स्थित मंगल शुभ फलप्रद होगा। परन्तु अष्टम भाव में मंगल शत्रु राशिगत होने से शुभ फलप्रद नहीं होगा। ध्यान रहे, सप्तम भाव में मकर राशि के मंगल को कुछ विद्वानों ने परिहारस्वरूप भी ग्रहण किया है। गुरू आदि शुभ ग्रह का योग या दृष्टि हो, तो विवाह सम्बन्ध ठीक रहते हैं।

5. **सिंह लग्न** की कुण्डली में मंगल केन्द्र-त्रिकोण (सुखेश एवं भाग्येश) होने से अत्यन्त शुभ एवं योगकारी ग्रह होता है। परन्तु लग्न, चतुर्थ एवं द्वादश भावों में बैठकर सप्तम् भावस्थ कुम्भ राशि को शत्रु-भाव से देखने से विवाह सम्बन्धी सुखों में कुछ कमी करता है। अष्टम् भाव में स्थित होने पर भी परिवारिक सुखों में कमी तथा भाग्य उन्नति के सम्बन्ध में विशेष संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का संकेत करता है। यदि सप्तम् या अष्टम् भाव या सप्तमेश ग्रह मंगल के साथ शनि आदि पाप ग्रहों से भी युक्त या दृष्ट हो, तो वैवाहिक जीवन में वैमनस्य एवं कटुता की मात्रा और भी अधिक बढ़ जाती है। परन्तु यदि सप्तम् भाव एवं सप्तमेश ग्रह पर गुरु आदि शुभ ग्रहों का योग या दृष्टि हो, राशिमैत्री भी हो, तो पति-पत्नी के मध्य वैवाहिक सम्बन्ध अच्छे रहते हैं।

6. **कन्या लग्न** की कुण्डली में मंगल त्रिषडायपति (3 और अष्टम भावों का स्वामी) होने से अशुभकारी होता है। लग्न भाव में शत्रु राशिगत हो, तो मंगलीक होने की स्थिति में जातक क्रोधी, उग्र स्वभाव तथा वैवाहिक सुख में भी विघ्नकारक होता है। चतुर्थ भाव एवं सप्तम भाव पर मित्र दृष्टि तथा अष्टम पर स्वगृही दृष्टि होने से जातक भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों से युक्त किन्तु दाम्पत्य सुख सामान्य होता है। चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भावों में जातक को अत्यन्त संघर्ष एवं विघ्नों के बाद भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है। वैवाहिक सुख भी कठिनाईयों एवं परेशानियों के साथ प्राप्त होते हैं। यदि मंगल के साथ गुरु या शुक्रादि का शुभ योग या दृष्टि हो, तो वर-कन्या को दाम्पत्य सुख में वृद्धि होती है।

7. **तुला लग्न** में मंगल केन्द्रपति एवं द्वितीयेश होकर यदि प्रथम भाव में मंगलीक हो, तो चतुर्थ भाव को उच्चदृष्टि से तथा सप्तम भाव को स्वगृही दृष्टि से देखने से जातक को विवाह के पश्चात् भूमि, जायदाद, वाहनादि सुखों की प्राप्ति तथा लाभ व उन्नति प्राप्त होगी। परन्तु स्वास्थ्य कुछ नर्म रहे, उदर विकार आदि की सम्भावना होगी। चतुर्थ भाव में तो मंगल उच्च राशि का होकर सप्तम भाव को स्वगृही दृष्टि से देखने से वैवाहिक सुख में वृद्धिकारक होगा, परन्तु दशम भाव को नीच दृष्टि से देखने से व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष संघर्ष का सामना होता है। सप्तम भाव में मंगल स्वगृही राशि (मेष) का होने से दाम्पत्य जीवन में तो सुख का वृद्धिकारक होगा, परन्तु व्यवसाय में कठिनाईयों के बाद सफलता होगी। यहाँ से धन स्थान पर मंगल की स्वगृही दृष्टि विवाहोपरान्त कौटुम्बिक एवं आर्थिक साधनों में वृद्धिकारक होगी। अष्टम भाव में शुक्र की राशि (वृष) पर मंगलीक की स्थिति होने से स्त्री अथवा पति की तरफ से चिन्ताजनक परिस्थिति पैदा होने की सम्भावना बन सकती है। द्वादश भाव में मंगल की सप्तम भाव पर स्वगृही दृष्टि दाम्पत्य जीवन में वृद्धिकारक होगी परन्तु शत्रु राशिगत होने से विघ्नों के पश्चात् वैवाहिक सुख प्राप्त होंगे। ध्यान रहे, तुला लग्न में मंगल मारकेश ग्रह होने के कारण कई बार कष्टकारी हालात पैदा कर देता है।

8. **वृश्चिक लग्न** में मंगल लग्नेश व षष्ठेश होने से मिश्रित प्रभाव करेगा। प्रथम भाव में मंगलीक होने से जातक साहसी, आकर्षक, प्रभावशाली व्यक्तित्व, उच्चाभिलाषी, स्वाभिमानी प्रकृति का होता है। परन्तु वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण रहने की सम्भावना रहती है। चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भावों में मंगल अनुकूल राशि का न होने से जातक को कठिन एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। विवाह के सम्बन्धों में भी परिस्थितियाँ अनुकूल न होंगी। यदि कुण्डली में शुक्र की स्थिति शुभ हो एवं स्व-राशिगत होगी तो अनुकूल दाम्पत्य सुखों की प्राप्ति होगी। वृश्चिक लग्न के सम्बन्ध में जातक/जातिकाओं की जन्म कुण्डलियों में परस्पर राशि मैत्री, गुण मिलान तथा मंगलीक के अतिरिक्त अन्य तत्त्वों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

9. **धनु लग्न** में मंगल पंचमेश एवं द्वादशेश होने के कारण मिश्रित प्रभाव करता है। लग्न, चतुर्थ एवं सप्तम भाव में मंगलीक योग होने पर भी जातक साहसी, पराक्रमी, स्वाभिमानी, अच्छी बुरी बात की पहचान रखने वाला एवं बौद्धिक कार्यों में कुशल होता है। परन्तु सप्तम भाव पर शत्रु दृष्टि एवं स्थिति होने से स्त्री को कष्ट या सुख में कमी होती है। अष्टम भाव में मंगल नीच राशि का होने से उसके नीचत्व में कमी हो जाती है परन्तु उच्च विद्या एवं पूर्ण सन्तान सुख में विघ्नकारक होता है। यद्यपि कुटुम्ब भाव को उच्च दृष्टि से देखने से विघ्नों के बावजूद जातक पारिवारिक सुख एवं भौतिक लाभ व उन्नति को प्राप्त कर लेता है। अष्टम में कर्क राशिस्थ भौम दोष का परिहार भी माना जाता है। द्वादश भाव में भौम की स्थिति वैवाहिक सुख में विलम्ब या दाम्पत्य सुख में कमी करता है। धनु लग्न में बुध एवं शुक्र की स्थिति शुभ हो, तो विवाह सुख में वृद्धि होती है।

10. **मकर लग्न** में मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होकर मंगलीक दोषकारक बनता है। लग्न भाव में मंगल उच्चराशि का तथा चतुर्थ भाव में स्व-राशिगत होकर सप्तम भाव में स्थित कर्क राशि को नीच दृष्टि से देखेगा। फलस्वरूप जातक स्वस्थ, शारीरिक सौन्दर्य तथा भूमि-जायदाद, मकान-वाहन आदि सुख साधनों से तो सम्पन्न होगा परन्तु यदि मिलान ठीक न हुआ हो तो वैवाहिक एवं दाम्पत्य सुख में कमी होने की सम्भावना बनती है। सप्तम भाव में मंगल नीचराशिस्थ होने से तथा द्वादशभाव में सप्तम पर नीच दृष्टि पड़ने से स्त्री एवं पत्नी के साथ वैमनस्य एवं टकराव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। यदि सप्तम एवं द्वादश आदि भावों पर गुरु व चन्द्र की स्थिति एवं दृष्टि पड़ रही हो तो वैवाहिक सुखों में वृद्धि होती है। मकर लग्न में मंगल योग के साथ-साथ सप्तमेश चन्द्र की शुभ-अशुभ स्थिति एवं बलाबल का आकलन भी आवश्य कर लेना चाहिए। ध्यान रहे, मकर लग्न में द्वादश भाव में धनु राशि के मंगल को परिहारस्वरूप विशेष अशुभ फलप्रद नहीं माना जाता।

11. **कुम्भ लग्न** में मंगल तीसरे एवं दशम भाव का स्वामी होकर मंगलीक योग कारक बनता है। लग्न भाव का मंगल जातक को कुछ तेज स्वभाव का, साहसी एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व देता है। जातक भूमि-मकान-वाहन आदि सुखों से सम्पन्न है। परन्तु प्रथम, चतुर्थ, सप्तम एवं अष्टम भावों में मंगल स्थित होने से जातक को अत्यन्त संघर्ष एवं कठिन परिस्थितियों का सामना होता है। पारिवारिक एवं दाम्पत्य सुख में भी कमी होती है। परन्तु यदि वर-कन्या की कुण्डलियों में शुक्र एवं गुरु की स्थिति अच्छी हो, तो परस्पर वैवाहिक सम्बन्ध अच्छे रहते हैं। द्वादश भाव में मंगल उच्च (मकर) राशि का होकर सप्तम भाव को मैत्री दृष्टि से देखता है जिससे अन्य भावों की अपेक्षा द्वादश भाव का मंगल वैवाहिक दृष्टि से कुछ शुभ कहा जा सकता है। कुम्भ लग्न सप्तमेश सूर्य एवं लग्नेश शनि के मध्य नैसर्गिक शत्रुता होने के कारण मिलान सम्बन्धी (मंगलीक योग के अतिरिक्त) अन्य तत्त्वों को भी ध्यान में रखना युक्ति-संगत होगा।

12. **मीन लग्न** में मंगल धनेश एवं भाग्येश होने के कारण विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यदि जन्मकुण्डली में शुभस्थ हो तो जातक को विवाह के पश्चात् विशेष धन लाभ एवं भाग्योन्नति प्रदान करता है। प्रथम भाव में मंगल होने से जातक साहसी, पराक्रमी, महत्त्वाकांक्षी एवं स्वाभिमानी प्रकृति का होता है। यहां से सप्तम भाव पर मंगल की शत्रु दृष्टि होने से स्त्री एवं पत्नी के साथ तनाव एवं मतान्तर की स्थिति होने की सम्भावना होती है। यदि स्त्री की कुण्डली में भी मंगल दोष हो तो परस्पर दाम्पत्य सुख

अच्छा होता है। चतुर्थ एवं सप्तम भाव में मंगल होने से जातक व्यवसायिक दृष्टि से तो समृद्ध होता है परन्तु परिवारिक सुखों में कमी रहती है। अष्टम भाव में स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी एवं विवाह सुख में कमी करता है। परन्तु ऐसा जातक व्यवसाय में धनार्जन करने में कुशल होता है। सप्तम भाव पर यदि बुध-चन्द्र आदि शुभ ग्रहों की दृष्टि या युति हो तो विवाह आदि सुखों में वृद्धि होती है। द्वादश भाव में मंगल होने से जातक चंचलबुद्धि, कामात्तुर, परिश्रमी, भ्रमणशील, व्यवहार में नीति-अनीति का कम विचार रखने वाला होगा। परन्तु यदि राशि एवं गुणमिलान ठीक न हुआ हो तो सप्तम भाव पर मंगल की शत्रु दृष्टि के फलस्वरूप दाम्पत्य सुख में कटुता एवं वैमनस्य होने की सम्भावना होती है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रत्येक लग्न में मंगल एवं मंगलीक योग का एक जैसा प्रभाव नहीं होता और न ही मंगल सदैव अनिष्टकारी प्रभाव ही करता है। सम्भवतः इसी कारण विभिन्न निबन्धकारों एवं ज्योतिषाचार्यों ने मंगलीक दोष के दुष्प्रभाव को अत्यधिक प्रबल न मानते हुए अनेक परिहार वाक्य मिलते हैं। जिनका सविस्तार वर्णन हमारे पंचांगदिवाकर (जालन्धर) में देख सकते हैं। यहाँ हम पाठकों के लाभ हेतु मंगलीक दोष को क्षीण करने वाले कुछ मुख्य परिहार वाक्य लिख रहे हैं।

(1) **शनि भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।**
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाशकृत्॥ –फलितसंग्रह

अर्थात्—यदि लड़की की कुण्डली में जिस स्थान पर मंगल स्थित (मंगलीक कारक) हो, और लड़के की कुण्डली में उसी स्थान पर शनि, मंगल, राहु आदि कोई पाप ग्रह स्थित हों, तो भौमदोष भंग हो जाता है। इसी प्रकार लड़के की कुण्डली में भौम दोष होने पर कन्या की कुम्डली में उसी भाव में कोई पाप ग्रह होने से भी भौम दोष नहीं होता।

(2) **अजे लग्ने व्यये चापे पाताले बृश्चिके कुजे।**
द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्यते॥ –मु. परिजात

अर्थात्—मेष राशि का मंगल लग्न में, बृश्चिक राशि का चौथे भाव में, मकर का सातवें, कर्क राशि का आठवें, एवं धनु राशि का मंगल बाहरवें भाव में हो, तो मंगल दोष नहीं होता।

(3) **न मंगली चन्द्र भृगु द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवा।**
न मंगली केन्द्रगते च राहुः, न मंगली मंगल-राहु योगे॥ –मुहूर्त्त दीपक

अर्थात्—यदि द्वितीय भाव में चन्द्र-शुक्र का योग हो, या मंगल गुरू द्वारा दृष्ट हो, केन्द्र भावस्थ राहु हो, अथवा केन्द्र में राहु-मंगल का योग हो, तो मंगल दोष नहीं होता।

(4) **केन्द्र कोणे शुभादये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।**
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥–मु. चिन्तामणि

अर्थात्—केन्द्र व त्रिकोण में यदि शुभ ग्रह हों, तथा 3, 6, 11वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा सप्तमेश ग्रह सप्तम में ही हो, तो मंगल दोष नहीं होता।

(5) गुरू (सप्तम भाव को छोड़कर) केन्द्र (1, 4, 10) एवं त्रिकोण (5, 9) में हो तथा सूर्य 11वें और लग्न तथा चन्द्रमा वर्गोत्तम में हो तो सम्पूर्ण दोषों का नाश माना जाता है।

केन्द्रेकोणे जीव आये रवौ वा लग्नेचन्द्रे वाऽपि वर्गोत्तमे वा।
सर्वेदोषा नाशमायन्ति चन्द्रे लाभे तद्वद् मुहूर्त्तांश दोषाः॥–मुहूर्त्त चिन्तामणि

(6) यदि वर-कन्या की कुण्डलियों में परस्पर राशिमैत्री हो, गणैक्य हो, 27 गुण या अधिक मिलान होता हो, तो भी भौम दोष नहीं रहता।

राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्।
अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥ –मुहूर्त्त दीपक

अतएव वर-कन्या की कुण्डलियों का मिलान करते समय उनके सुखी एवं सम्पन्न दाम्पत्य जीवन के लिए केवल भावस्थिति पर आधारित मंगल या मंगलीक दोष पर ही अत्यधिक बल न देते हुए मेलापक सम्बन्धी अन्य तत्त्वों जैसे मंगल के साथ अन्य ग्रहों का योग, सप्तमेश आदि, भावेश ग्रह की स्थिति, सप्तम भाव पर अन्य शुभ-अशुभ ग्रहों की दृष्टि तथा विवाह सुखकारक गुरू-शुक्र-चन्द्र आदि तथा नवांश कुण्डली में भी उक्त ग्रहों की स्थिति का सर्वाङ्ग रूप से विवेचन करनी चाहिए। इसके साथ ही चलित-कुण्डली की भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

(1) चलित भाव कुण्डली—जो ग्रह भाव मध्य होते हैं, वह भाव सम्बन्धी पूर्ण फल प्रकट करते हैं, जो ग्रह भाव सन्धि में होते हैं, वह शून्य फल दिखाते हैं। तदनुसार वर-कन्या की कुण्डलियों का मिलान करते समय दोनों की कुण्डलियों के ग्रह स्पष्ट, भाव स्पष्ट एवं चलित भाव कुण्डली बनी होनी चाहिए, तभी मंगल अथवा मंगलीक दोष की वास्तविक स्थिति का पता चल पाएगा। यदि दोनों की कुण्डलियों में **मंगल** सन्धिगत होगा, तो मंगलीक दोष भंग माना जाएगा।

(2) सप्तम भाव में सप्तमेश या शुभ एवं योगकारक ग्रहों की स्थिति अथवा मंगल या सप्तम भाव पर गुरु, शुक्र की दृष्टि अथवा सप्तमेश ग्रह की स्वगृही दृष्टि होने से मंगलीक दोष क्षीण होगा।

(3) सप्तमेश ग्रह उच्चस्थ या स्व-मित्रादि राशिगत होकर केन्द्र त्रिकोणादि भावों में स्थित हो तो विवाह में मंगल का दोष निष्प्रभावी होगा।

(4) इसके विपरीत सप्तमेश त्रिक में हो, पापग्रह युक्त व पाप दृष्ट, नीच राशिगत अथवा अस्तंगत हो तो विवाह का **पूर्ण सुख नहीं होता**—

दुःस्थे कामपतौ तु पाप ग्रहगे पापेक्षिते–तद्युते।
तज्जाया भवनस्य मध्यमफलं सर्वं शुभ चान्यथा॥

(5) इसके अतिरिक्त लग्नेश, कुटुम्बेश (द्वितीयेश), पंचमेश, अष्टमेश, सप्तमेश एवं चन्द्र, शुक्र, गुरु, मंगलादि ग्रहों के बलाबल का विचार करना भी नित्तान्त आवश्यक है।

(6) अष्टकूट नक्षत्र राशि मिलान पर यदि वर-कन्या में परस्पर राशिमैत्री उपलब्ध हो गुणाधिक्य (27 या अधिक) गुण मिलते हों तो भी मंगलीक दोष अविचारणीय होगा।

इस प्रकार वर-कन्या की कुण्डली में मंगल के अतिरिक्त कुण्डलियों में अन्य सभी ग्रहों के शुभाशुभत्व का सम्यक् विचार करते हुए विद्वान् ज्योतिषी को मेलापक सम्बन्धी अपना अन्तिम निर्णय देना चाहिए।

सूर्यादि ग्रहों के अनिष्टफल की शान्ति हेतु दान एवं जपादि मन्त्र													जप संख्या	जपकाल	जपनीय बीजमन्त्राः	हवन समिधा
सूर्य	कनक	माणिक्य	तांबा	सोना	लाल गाय	गुड़	घी	कमलादि	रक्तवस्त्र	लालचंदन	मूंगा	केशर	७०००	सूर्योदय	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	आक् काष्ठ
चन्द्र	चावल	मोती	चांदी	सोना	श्वेत बैल	मिश्री	दही	श्वेत पुष्प	श्वेतवस्त्र	श्वेतचंदन	शंख	कपूर	११०००	संध्याकाले	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	पलाश
मंगल	मसूर	मूंगा	तांबा	सोना	लाल बैल	गुड़	घी	लाल कनेर	लालवस्त्र	लाल चंदन	केशर	कस्तूरी	१००००	सू.उ. २।१५	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	खैर
बुध	मूंग	पन्ना	कांस्य	सोना	शस्त्र	शक्कर	घी	सर्व रंग पु.	हरावस्त्र	अनेक फल	हाथीदांत	कपूर	९०००	सू.उ. ५ घड़ी	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	अपामार्ग
गुरू	पीतधान्य	पुखराज	कांस्यपात्र	सोना	अश्व	लवण श	घी	पीले पुष्प	पीतवस्त्र	पीला फल	धर्मग्रंथ	लवणशहद	१९०००	संध्याकाले	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	पीपल
शुक्र	चावल	हीरा	चांदी	सोना	श्वेत घोड़ा	मिसरी	दूध	श्वेत पुष्प	सफेदवस्त्र	सफेद चंदन	दही	सुगन्धितद्रव्य	१६०००	सू. उ. काल	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	गूलर
शनि	उड़द	नीलम	लोहा	सोना	काली गाय	कुलथी	तैल	काले पुष्प	कालावस्त्र	काले जूते	भैंस	कस्तूरी	२३०००	संध्याकाल	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	शमी
राहु	सप्तधान्य	गोमेद	सीसा	सोना	काला घोड़ा	ताम्र पात्र	तैल	कृष्ण पुष्प	नीलवस्त्र	नारियल	कंबल	खड्ग	१८०००	रात्रि	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	दूर्वा
केतु	सप्तधान्य	लसनिया	लोहा	सोना	बकरा	नारियल	तेल	धूम्र पुष्प	कालावस्त्र	शस्त्र ध्वज	कंबल	कस्तूरी	१७०००	रात्रि	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	कुशा
मुंथा	चावल	मोती	कांस्यपात्र	सोना	श्वेतचंदन	ऋतुपुष्प	घृत	श्वेतपुष्प	श्वेतवस्त्र	हाथीदांत	मुंथेश ग्रह.	ग्रह अनुसार	मुंथेश ग्रह अनुसार	प्रातः	मुन्था स्वामी मन्त्र	

विशेष—ध्यान रहे, प्रत्येक ग्रह के दान के साथ यथाशक्ति दक्षिणा भी अवश्य देनी चाहिए। **सप्तधान्य**—गेहूँ उड़द, मूंगी, चने, जौं, कंगनी और धान्य, चावल।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारण हेतु औषधि स्नान

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनःशिला	पंचगव्य	बिल्व छाल	गोबर	चमेलीपुष्प	पिपरामूल	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गोदूध	लाल पुष्प	अक्षत	पुष्प	जायफल	सूरमा	तारपीन	तारपीन
देवदारू	गोबर	हींग	मोती	श्वेत सरसों	केशर	लोबान	मुत्थरां	तिलपत्र
केशर	गजमद	गोदनी	शहद	शहद	मूली बीज़	सौंफ	गजदंत	गजदंत
खश	शंख सीप	जटामांसी	सुवर्ण	गुलर	मैनशिला	खश	कस्तूरी	छागमूत्र
रक्तपुष्प	गंगाजल	मौलसिरी	जायफल	दमयंती	इलायची	खिल्ला	तिलपत्र	लाल चंदन
रक्तचंदन	श्वेत चंदन	सिगरफ	पिपरामूल	मुलट्ठी	श्वेतचंदन	शतकुसुम	गंगाजल	गंगाजल
कनेर पुष्प	स्फटिक	मालकंगनी	इत्यादि	नवीनपत्ते	गंगाजल	गाँदमिश्रित	—	—
मि. गंगाजल	गोमूत्र	गंगाजल	गंगाजल	गंगाजल				

होमादि में अग्नि वास जानना

जिस दिन को होम/हवन करना हो, उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़कर १ जमा करें फिर कुल जोड़ को ४ द्वारा भाग देवें। यदि शेष शून्य (०) अथवा ३ बचें, तो **अग्नि का वास पृथ्वी** पर होगा। इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है। यदि शेष २ बचें तो अग्नि का वास **पाताल में** होता है। इसी दिन होम करने से धन का नुक्सान होता है। यदि ४ का भाग देने से १ शेष बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है। **वार** की गणना **रविवार** से तथा तिथि की गणना **शुक्ल प्रतिपदा** से करनी चाहिए। तदुपरान्त ग्रह के मुख आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।

ग्रहों के मुख में आहुति चक्र

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि ३ या ३ से कम की संख्या आए तो होमाहुति सूर्य के मुख में जाने, तीन से आगे की संख्या से ६ तक की संख्या में मिले, तो बुध के मुख में आहुति जानें। इसी प्रकार, निम्न क्रमानुसार सब ग्रहों में होमाहुति जानें।

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चंद्र	मंग.	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

नवग्रहों के जपनीय होमार्थ (हवन) मन्त्र

सूर्य मन्त्र—अर्क (आक) समिधा द्वारा "ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम॥१॥

चन्द्रमा मन्त्र—(पलाश समिधा के साथ)—"ॐ इमं देवाऽसपत्न Ω सुवध्वंम् महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्जयायेन्द्राय इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणां Ω राजा। ॐ सोमाय स्वाहा॥ इदं चन्द्रमसे न मम॥२॥

भौम मन्त्र—(खैर की लकड़ी से)—"ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा Ω रेता Ω सि जिन्वति। ॐ भौमाय स्वाहा॥ इदं भौमाय इदं न मम॥"

बुध मंत्र—ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहिवमिष्टापूर्ते स Ω सृजेथामयं च। अस्मिन्धध्स्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजामानश्च सीदत॥ ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय इदं न मम॥

गुरू मन्त्र—(पीपल) ॐ बृहस्पतये अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छयस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ बृहस्पतये स्वाहा॥ इदं बृहस्पतये, इदं न मम।

शुक्र मन्त्र—(गूलर) **ॐ अन्नात् परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत् क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिः** ॠतेन सत्यमिन्द्रयं विपान Ω शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु॥ ॐ शुक्राय स्वाहा॥ इदं शुक्राय, न मम।

शनि मन्त्र—(शमी की समिधा) **ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः। ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय, इदं न मम्॥**

राहु मन्त्र—(दूर्वा) ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ॐ राहवे स्वाहा॥ इदं राहवे इदं न मम॥

केतु मन्त्र—(कुशा से) ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजा यथाः। ॐ केतवे स्वाहा॥ इदं केतवे, इदं न मम॥

ग्रहों के गुण, वर्ण, स्वभाव, उच्च-नीच, स्व-गृह राशि आदि चक्र

नाम ग्रह	स्व-ग्रह राशि	मूल त्रिकोण	गुण	चरादि	वर्ण जाति	रंग	उच्च राशि	नीच राशि	पुरुष स्त्री	तत्त्व	कारक	संबंध	स्व-भाव	प्रकृति	धातु	रस	शरीरांग	दिशा	दृष्टि विशेष	भाग्योदय काल
सूर्य Sun	सिंह	सिंह	सत्त्व	स्थिर	क्षत्रिय	रक्त वर्ण	मेष	तुला	पुरुष	अग्नि	आत्मा	पिता	क्रूर	पित्त	सोना	तिक्त	शिर, नेत्र	पूर्व	७	२२ से २४
चन्द्र Moon	कर्क	वृष	सत्त्व	चंचल	वैश्य	श्वेत	वृष	वृश्चि.	स्त्री	जल	मन	माता	सौम्य	वातश्ले	चांदी	क्षार	बुद्धि, रक्त	पश्चि. उत्तर	७	२४ से २५
मंगल Mars	मेष, वृश्चिक	मेष	तम	चर	क्षत्रिय	लाल	मकर	कर्क	पुरूष	अग्नि	बल	भाई	क्रूर	पित्त	ताम्र	कटु	मज्जा	दक्षिण	७,४,८	२८ से ३२
बुध Merc	मिथुन, कन्या	कन्या	रज	द्विस्वभा	वैश्य	हरा	कन्या	मीन	नपुंसक	पृथ्वी	वाणी	बंधु/मित्र	मिश्र	त्रिधातु	कांस्य	मिश्र	त्वचा, मुख	उत्तर	७	३२ से ३६
गुरू Jup.	धनु, मीन	धनु	सत्त्व	स्थिर	ब्राह्मण	पीला	कर्क	मकर	पुरूष	आकाश	विद्या	संतान	शुभ	कफ	सोना	मधुर	चर्बी	ईशान	५७९	१६ से २४
शुक्र Ven.	वृष, तुला	तुला	रज	चर	वैश्य	सफेद	मीन	कन्या	स्त्री	जल	काम	स्त्री	शुभ	वात, कफ	चांदी	अम्ल	वीर्य	दक्षि, पूर्व	७	२६ से २८
शनि Sat.	मकर, कुम्भ	कुम्भ	तम	स्थिर	शुद्र	नीला काला	तुला	मेष	नपुंसक	वायु	संघर्ष	भृत्य	क्रूर	वात, श्ले	लोहा	कषाय	स्नायु	पश्चि.	३,७,१०	३६ से ४२
राहु Rahu	कन्या	कर्क	तम	चर	अत्यज	धूम्र	वृष	वृश्चि.	पुरुष	छाया	दुःख	शत्रु	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	हड्डी	दक्षिण	७	४४ से ५०
केतु Ketu	मीन	मकर	तम	चर	शुद्र	धूम्र	वृश्चि.	वृष	पुरुष	छाया	कष्ट	बाधा	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	चर्म	उत्तर	७	४८ से ५०

राशियों के गुण-स्वभाव तत्त्व, शुभ रत्नादि चक्र

राशि	स्वा. ग्रह	अंग्रेज़ी नाम	वर्ण	जाति	क्रूरादि	चरादि	तत्त्व	गुण	जीवादि	समादि	दिशा	शुभ रत्न	बल समय	शरीरांग	दीर्घादि	नरादि	प्रकृति	गुण	पृष्ठोदय आदि
मेष	मंगल	Aries	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	चर	अग्नि	रज	धातु	विषम	पूर्व	मूंगा	रात्रि	शिर	ह्रस्व	पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
वृष	शुक्र	Taurus	श्वेत	वैश्य	सौम्य	स्थिर	पृथ्वी	तम	मूल	सम	दक्षिण	हीरा	रात्रि	नेत्र	ह्रस्व	पशु	वात	शांत	पृष्ठोदय
मिथुन	बुध	Gemini	हरा	शूद्र	क्रूर	द्वि. स्व.	वायु	सत	जीव	विषम	पश्चि.	पन्ना	रात्रि	भुजाएँ, गला	सम	नर	वात	चंचल	शीर्षोदय
कर्क	चंद्र	Cancer	श्वेत	विप्र	सौम्य	चर	जल	रज	धातु	सम	उत्तर	मोती	रात्रि	वक्ष, फेफड़े	सम	जल चर	कफ	शांत	पृष्ठोदय
सिंह	सूर्य	Leo	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	स्थिर	अग्नि	तम	मूल	विषम	पूर्व	माणक	दिन	मेरू, रक्त, हृदय	दीर्घ	पशु	पित्त	उष्ण	शीर्षोदय
कन्या	बुध	Virgo	मिश्रित	वैश्य	सौम्य	द्वि. स्व.	पृथ्वी	सत	जीव	सम	दक्षिण	पन्ना	दिन	पेट, नाभि	दीर्घ	नर	त्रिदोष	शीत	शीर्षोदय
तुला	शुक्र	Libra	नीला	शूद्र	क्रूर	चर	वायु	रज	धातु	विषम	पश्चि.	हीरा	दिन	गुर्दे, कमर	दीर्घ	नर	वात	उष्ण	शीर्षोदय
बृश्चिक	मंगल	Scorpio	ताम्र	विप्र	सौम्य	स्थिर	जल	तम	मूल	सम	उत्तर	मूंगा	दिन	गुप्तांग	दीर्घ	कीट	कफ	शीत	शीर्षोदय
धनु	गुरु	Sagittarius	पीला	क्षत्रिय	क्रूर	द्वि. स्व.	अग्नि	सत	जीव	विषम	पूर्व	पुखराज	रात्रि	जंघा	सम	नर पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
मकर	शनि	Capricor	भूरा	वैश्य	सौम्य	चर	पृथ्वी	रज	धातु	सम	दक्षिण	नीलम	रात्रि	घुटने	सम	जल पशु	वात	शीत	पृष्ठोदय
कुम्भ	शनि	Aquarius	काला	शूद्र	क्रूर	स्थिर	वायु	तम	मूल	विषम	पश्चि.	नीलम	दिन	पिंडली	लघु	जल चर	त्रिदोष	उष्ण	शीर्षोदय
मीन	गुरु	Pisces	पीला	विप्र	सौम्य	द्वि. स्वा.	जल	सतो	जीव	सम	उत्तर	पुखराज	दिन	पाँव दोनों	लघु	जल चर	कफ	शीत	उभयोदय

चर, शीर्षोदयादि राशियों का महत्त्व—उपरोक्त राशियों के गुण, **स्वभाव, तत्वादि** का फलित ज्योतिष में विशेष महत्त्व होता है। संक्षेप में, **चर** का अर्थ है चलित अर्थात् जिसमें कार्य जल्दी हो। यात्रा करें, तो शीघ्र वापिस आ जावे। स्थिर लग्न राशि में कार्य करने से स्थायी प्रभाव होता है। मकान, दुकान, व्यवसायादि में प्रवेश करे, तो बहुत वर्षों तक रहे। द्वि-स्वभाव राशि में मिला-जुला प्रभाव होता है। अर्थात् पहिला आधा भाग स्थिर प्रभाव दिखाता है, अन्तिम आधा भाग 'चर' का प्रभाव दिखाता है। इसी भान्ति धातु का अर्थ है, सोना, चाँदी, लोहा, भूमि, सवारी धनादि पदार्थ। **'मूल'** का अर्थ है, फल, वृक्ष, अनाजादि भोग्य पदार्थ। **'जीव'** का अर्थ प्राणी—स्त्री, पुत्र, पौत्र, भाई आदि। **उदाहरणार्थ**—मान लीजिए, सौम्य राशि **मीन** में यदि कोई सौम्य ग्रह (शुक्र) बैठा है, तो प्रश्नकर्त्ता को स्त्री, संतानादि का सुख लाभ होगा (क्योंकि मीन राशि जीव सम्बन्धी राशि है) और यदि कोई अशुभ या क्रूर ग्रह स्थित हो, तो स्त्री, संतानादि सुख सम्बन्धी हानि होगी। ऐसा कहना चाहिए। इसी भान्ति, राशियों की दिशा बताने का तात्पर्य यह है कि जिस राशि में कारक ग्रह बैठे हो, उस राशि की दिशा में भाग्योदय होता है। **उदाहरण** के लिए किसी की जन्म कुण्डली में लग्नेश एवं नवमेश ग्रह वृष राशि में हो, तो जातक का भाग्योदय जन्म से दक्षिण दिशा में होगा—ऐसा कहना चाहिए। जैसे—यदि **कन्या लग्न** हो, तो बुध लग्नेश, दशमेश होगा। द्वितीयेश व नवमेश शुक्र, बुध (लग्नेश) सहित नवम् (भाग्य) स्थान पर इकट्ठे हों, तो वृष राशि (दक्षिण) में भाग्योदय होगा।

अनिष्ट ग्रहों के उपायों सम्बन्धी विशेष विवरण

ज्योतिष शास्त्र में अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए अनेक प्रकार के उपाय बतलाए गए हैं। यथा सुनिश्चित संख्या में मन्त्र जाप, यथासामर्थ्य दान, हवन, जड़ी-बूटी धारण, ग्रह औषधि स्नान, व्रत-जप-तप करना, उचित नग एवं विधिपूर्वक ग्रह यन्त्र को धारण करना इत्यादि शास्त्रोक्त उपायों को अपना करके मनुष्य ग्रह जनित कष्टों का समाधान करके प्रतिकूल परिस्थितियों को भी स्वयं के अनुकूल एवं समृद्ध बना सकते हैं।

सूर्य—क्रूर ग्रह से दृष्ट, युक्त अथवा नीच राशिस्थ (तुला) हो या १, २, ४, ५, ७, ८, ९ या १२वें भावस्थ सूर्य अशुभ माना जाता है। जन्म कुण्डली अथवा वर्ष कुण्डली में सूर्य अशुभकारी हो, तो निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का ७ हज़ार से लेकर सवा लाख की संख्या में जाप करना चाहिए। जप का आरम्भ **शुक्ल पक्षीय रविवार** या सूर्य षष्ठी अथवा रवि योग या रविपुष्य योग में करना चाहिए। पाठारम्भ करने से पूर्व लाल पुष्प, अक्षत, नैवेद्य व गंगाजल लेकर पाठ का संकल्प, ध्यान व आवाहनादि करें। जप-पाठ के लिए रुद्राक्ष की माला सर्वोत्तम है। उसके अभाव में चन्दन या तुलसी की माला का प्रयोग भी कर सकते हैं। विधिपूर्वक सूर्य उपासना से पदोन्नति, आत्मशक्ति, तेज बल, राजप्रतिष्ठा एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है। प्रतिदिन पाठोपरान्त सूर्य देव को ताम्र बर्तन में शुद्ध जल, लाल चन्दन (या पुष्प) डालकर अर्घ्य देना चाहिए तदुपरान्त गायत्री मन्त्र करने का विधान है। सुनिश्चित संख्या में पाठ (जप) की पूर्ति हो जाने पर दशमांश संख्या में हवन कर लेना चाहिए।

पुराणोक्त सूर्य नमस्कार मन्त्र—

जपाकुसुम संकाश काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

वेदोक्त सूर्यमन्त्र—

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ (जप संख्या ७०००)

तन्त्रोक्त बीजमन्त्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (जप संख्या ७०००)

सूर्यार्घ्य मन्त्र—

एहि सूर्य ! सहस्त्रांशो तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पय ! मां भक्त्या गृहाणार्घ्य दिवाकर॥

सूर्यार्घ्य का लघु मन्त्र—"ॐ घृणिः सूर्याय नमः"॥

सूर्य गायत्री मन्त्र जाप, विधिपूर्वक **रविवार** का **व्रत, सूर्यमणि (मणिक्य)** धारण करना **औषधि स्नान** (मनः शिला, इलायची छोटी, देव दारू, केशर, खस, कनेरादि लाल पुष्प, तथा विधिवत् निर्मित **सूर्ययन्त्र** धारण करना तथा सूर्य देव से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

सूर्य दान योग्य वस्तुएँ—गेहूँ, गुड़, लाल वस्त्र, घी, लाल वर्ण, सवत्सा गाय, माणक, ताम्र बर्तन नारियल सहित लाल फल, ब्राह्मण भोजन एवं च सुनिश्चित पाठोपरान्त दशमांश हवन करना शुभ रहता है।

चन्द्रमा—शत्रु एवं क्रूर ग्रह से दृष्ट युत एवं नीच राशि (वृश्चिक), अथवा ४, ६, ८, १२वें भावों में स्थित चन्द्रमा अशुभ माना जाता है।

अशुभ चन्द्र की शान्ति के लिए निम्नलिखित किसी एक मन्त्र की ११ हज़ार की संख्या में जप करना, तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना शुभ रहता है। जप का आरम्भ पूर्णमाशी या शुक्ल पक्ष के सोमवार को किसी शुभ मुहूर्त्त में करना चाहिए।

तन्त्रोक्त चन्द्र मन्त्र—ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।

पुराणोक्त चन्द्र मन्त्र—ह्रीं दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषणम्॥

चन्द्र अर्घ्य मन्त्र—ॐ सोम सोमाय नमः॥

चन्द्रमा अशुभ हो, तो मानसिक विकार, नेत्र कष्ट, धन हानि, रक्त दोष, स्त्री कष्ट आदि अशुभ फल घटित होते हैं। चन्द्रमा की शुभता के लिए उपरोक्त मन्त्र-जाप के अतिरिक्त चांदी की अँगूठी में चन्द्रकान्त मणि या श्वेत सुच्चा मोती धारण करना, विधिवत, सोमवार एवं पूर्णमाशी का व्रत करना, चन्द्र मन्त्र मुद्रित करवा कर चाँदी का गोल सिक्का (Coin) गले में धारण करना, घर में श्वेत शंख रखना, औषधि एवं जड़ी-बूटी (पंचगण्य, श्वेत चन्दन आदि), विधिपूर्वक चन्द्र यन्त्र धारण करना, शिवोपासना करना कल्याणकारी रहता है। **चन्द्र शुभता बढ़ाने** के लिए दान योग्य पदार्थ चावल, सफेद चन्दन, शंख कर्पूर, दही, दूध घी, चीनी या मिश्री, क्षीर, श्वेत वस्त्र, सफेद चन्दन, चाँदी या कांसे का पात्र, चाँदी के वर्क लगी बर्फी। **बलान्वित चन्द्रमा** मन, बुद्धि, रक्त, स्त्री एवं माता, धन-सम्पदादि सुखों में वृद्धिकारक होता है।

मंगल ग्रह—१, २, ४, ५, ७, ८, ९, एवं १२वें भावों में स्थित मंगल अथवा शनि आदि शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त, या अपनी नीचराशि (कर्क) अशुभ कारक होता है। **जन्म कुण्डली** या वर्ष कुण्डली में मंगल अशुभ एवं बाधाकारक हो, तो निम्न मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का कम से कम १० हज़ार की संख्या में, शुभ मुहूर्त्त, मंगलवार को लाल पुष्प, लाल चन्दन, अक्षत (चावल), गंगाजल लेकर संकल्प पूर्वक पाठारम्भ करें। सुनिश्चित संख्या में पाठोपरान्त पाठ का दशमांश संख्या में हवन करना चाहिए।

तन्त्रोक्त भौम मन्त्र—ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

पुराणोक्त भौम मन्त्र—ह्रीं धरणी गर्भसम्भूतं विद्युत् कान्ति समप्रभम्।
कुमारं-शक्तिं हस्तं तं मंगल प्रणमाम्यहम्॥

भौम गायत्री मन्त्र—ॐ अंगारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्

उपरोक्त मन्त्र जाप के अतिरिक्त अनिष्टकर मंगल की शान्ति के लिए **मंगलवार का व्रत** रखना, श्री हनुमान उपासना, मंगल स्तोत्र पढ़ना, लाल वर्ण की गाय को चारा डालना, मूँगा पहनना, औषधि स्नान, मांस, मछली, शराब आदि से परहेज़ रखना, विधिपूर्वक बना भौम यन्त्र धारण करना, उद्यापन के दिन ब्राह्मण भोजन कराना शुभ होता है।

भौमशान्ति हेतु दान योग्य वस्तुएँ—गेहूँ, मसर की दाल, घी, गुड़, सुवर्ण, कनेर के पुष्प, लाल वस्त्र, लाल चन्दन, केशर, नारियल, सेब आदि लाल फल, मूंगा, सोना, ताम्र बर्तन, गुड़ से बने मीठे चावल या मीठी चापातियां, ब्राह्मण भोजन आदि करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है। मंगल ग्रह पराक्रम, साहस, भूमि, भाई, पुत्र, रक्त-बलादि का भी कारक है। यदि अशुभ हो तो रक्त दोष, भ्रातृ कष्ट, आकस्मिक दुर्घटना, वृथा विवाद करवाता है।

बुध ग्रह—कुण्डली में ४, ६, ८, १२वें भावों में स्थित अथवा शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट या युक्त बुध अशुभ फलदायक होता है। बुध शुभ हो, तो वाणी, बुद्धि, विद्या, संतान, व्यापार आदि में लाभकारक होता है। अशुभ बुध बुद्धि में विभ्रम, त्वचा रोग, वाणी विकार, सन्तान कष्ट रहता है। बुध की शुभता बढ़ाने के लिए निम्नलिखित उपाय करने चाहिएँ।

तन्त्रोक्त बुध मन्त्र—ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः। (जप संख्या ९०००)

पुराणोक्त बुध मन्त्र—ह्रीं प्रियंगु कालिका श्याम रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुध प्रणमाम्यहम्॥

उपरोक्त मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का कम से कम ९००० की संख्या में जाप करना, बुधवार का विधिपूर्वक व्रत रखना, औषधि स्नान, हरे रंग का नग-पन्ना (Emareld) सोने की अंगूठी में धारण करना, विधिवत् तैयार किया गया बुध यन्त्र रखना, हरी वस्तुओं का प्रयोग करना, श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ तथा श्री विष्णु उपासना करना, चौपायों को हरा चारा डालना, बुध को कन्या पूजन के उपरान्त हरी वस्तुओं (वस्त्रादि) का दान करना इत्यादि बुध ग्रह जनित अशुभ फल को शान्त करता है।

बुध के दान की वस्तुएँ—मूंगी साबुत, चीनी, छोटी इलायचियाँ, षडरसों से युक्त भोजन, हरी सब्ज़ियां, पन्ना नग, कांस्य पात्र, हरे पुष्प, हरे फल, हाथी दाँत, हरा गर्म अथवा रेशमी वस्त्र, ब्राह्मण भोजन दक्षिणा सहित दान करना कल्याणप्रद रहता है।

गुरू (बृहस्पति)—कुण्डली में ४, ६, ८, १२वें भावों में ही स्थित हो, अथवा नीच राशिगत (मकर) हो, या शत्रु या अशुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त ग्रह जातक को अशुभ प्रभाव प्रदान करता है। अशुभ गुरू जातक को विद्या में असफलता अथवा विवाह सुख में अड़चनें, पुत्र-सन्तान एवं स्त्री कष्ट, भ्रातृ विरोध, शरीर कष्ट, बुद्धि में विकार आदि अशुभ फल प्रकट करता है।

गुरु में शुभता लाने के लिए निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का ११,००० की संख्या में पाठ करना अथवा किसी योग्य ब्राह्मण से करवाना तथा पाठोपरान्त दशांश संख्या में हवन करना कल्याणकारी रहेगा।

तन्त्रोक्त गुरू मन्त्र—ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौ सः गुरवे नमः (जप संख्या १९०००)

पुराणोक्त गुरू मंत्र गत पृष्ठों (गुरू गोचर फल) में देखें।

गुरु गायत्री मन्त्र—ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥

संकल्पपूर्वक मन्त्र जाप के अतिरिक्त गुरू सम्बन्धी वस्तुओं का दान, सुवर्ण या चांदी की अँगूठी में पुखराज पहनना, विधिवत् निर्मित गुरू यन्त्र धारण, औषधि स्नान करना, **गुरूवार** का व्रत रखना, पीली वस्तुओं का प्रयोग, पीले वर्ण की गौओं की सेवा करना व गाय दान, पीपल वृक्ष की प्रतिष्ठा, ब्राह्मणों को क्षीर सहित भोजन खिलाना, दक्षिणा एवं धार्मिक ग्रन्थों का दान, गायत्री जप इत्यादि करना शुभ है।

गुरू की दान योग्य वस्तुएँ—पीले चावल, चने की दाल, हल्दी, शहद, पीला वस्त्र, पपीता, आम, केले आदि पीले फल, सवत्सा गाय, पीला कम्बल, धर्म ग्रन्थ, बेसन के लड्डू, ताम्र एवं कांस्य पात्र, शक्कर, रामायण आदि धार्मिक ग्रंथ केशर इत्यादि वस्तुओं का दान शुभ रहता है।

शुक्र ग्रह—जन्म कुण्डली में शुक्र ६, ८ या १२वें भाव में अथवा नीच राशि (कन्या) या शत्रु ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो अशुभ फल प्रदायक होता है।

शुक्र ग्रह स्त्री, धन-सम्पदा, ऐश्वर्य, वीर्य-भोग एवं वाहनादि सुख-साधनों का कारक माना जाता है। इस ग्रह की शुभता बढ़ाने के लिए निम्नलिखित मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का कम से कम १६००० की संख्या में जप करना तथा फिर दशांश हवन करना शुभ कारक माना जाता है।

तन्त्रोक्त शुक्र मन्त्र—ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

शुक्र गायत्री मन्त्र—ॐ भृगुजाय विद्महे दिव्य देहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्॥

सुनिश्चित संख्या में मन्त्र जाप के अतिरिक्त शुक्र सम्बन्धी वस्तुओं का दान तथा स्वयं प्रयोग, हीरा (Diamond) पहनना, शुक्र यन्त्र धारण करना, शुक्र-औषधि स्नान, गोदान, श्वेत एवं क्रीमवर्ण की वस्तुओं का प्रयोग, श्वेत चन्दन का तिलक, **श्री दुर्गा पूजा, श्री दुर्गा सप्तशती** का पाठ करना तथा पाँच शुक्रवार पाँच कन्याओं का पूजन करके उन्हें श्वेत वस्तुओं की भेंट देने से ग्रह शान्ति होती है।

शुक्र दान की वस्तुएँ—चाँदी, चावल, मिश्री, दूध एवं दूध से निर्मित क्षीर, बर्फी आदि, श्वेत चन्दन, श्वेत गाय, श्वेत पुष्प, श्वेत वस्त्र, श्वेत फल एवं सुगन्धित पदार्थों आदि का दान करने से शुक्र की शुभता में वृद्धि होती है।

शनि ग्रह—किसी जातक की जन्म कुण्डली में जब शनि १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १० अथवा १२वें स्थानों में हो, अथवा शत्रु या नीच (मेष) राशिगत हो अथवा सूर्य, मंगल आदि क्रूर ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो शनि अशुभ फलदायक होता है। अशुभ एवं अरिष्टकर शनि धन एवं आय के साधनों में कमी, शरीर कष्ट, मानसिक तनाव, बनते कामों में बार-बार अड़चनें पैदा होती रहती है। शनि कृत अरिष्ट निवारण हेतु निम्नलिखित मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का २३ हज़ार जप तथा जप उपरान्त दशांश संख्या में हवन करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

तन्त्रोक्त शनि मन्त्र—ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः (जप संख्या २३०००)

वेदोक्त शनि मन्त्र—ॐ शंन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्यो रभिरस्त्र वन्तु नः॥

विनियोगः—अस्य मन्त्रस्य अथर्वण ऋषिः,

गायत्री छन्दः शनि देवता–शनि प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

पुराणोक्त शनि मन्त्र—ह्रीं नीलांजन समा भासं रवि पुत्रं यमाग्रजम्।

छायामार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥

विधिपूर्वक मन्त्र जाप के अतिरिक्त शनि सम्बन्धी वस्तुओं का दान, सिक्के अथवा पंचधातु की अंगूठी में नीलम धारण करना, शनिवार का व्रत रखना, विधिवत् निर्मित शनि यन्त्र रखना, लोहे की कटोरी में तेल डालकर छाया पात्र करना, औषधि स्नान, अन्ध विद्यालय या कुष्ठाश्रम में अनाज (उड़द सहित) भोजन खिलाना, मछलियों को गेहूँ एवं उड़द के आटे की गोलियां डालना; शिव स्तोत्र एवं शनि स्तोत्र का पाठ एवं शनि से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

शनि के दान योग्य वस्तुएँ—उड़द, काले तिल, काले चने, सरसों का तेल, काली गाय, काला वस्त्र, लोहे का बर्तन, काले जूते, भैंस, कुलथी, कस्तूरी, नीलम, नारियल, काले एवं नीले पुष्प, ग़रीब वृद्ध व्यक्ति को भोजन कराना शुभ होता है। शनि का दान सायंकाल को करना प्रशस्त माना जाता है।

राहु—जिस कुण्डली में १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १० या १२वें भाव में स्थित हो अथवा शत्रु या नीच राशि में या शत्रु ग्रह युक्त, दृष्ट हो तो ऐसे जातक को शरीर कष्ट, तनाव, धन सम्बन्धी उलझनें, बुद्धि विभ्रम, कलह-क्लेश, वृथा भ्रमण आदि परेशानियों का सामना करना पड़ता है। राहु जनित अरिष्ट फल निवारण हेतु निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का १८ हज़ार की संख्या में जाप करना चाहिए।

तन्त्रोक्त राहु मन्त्र—ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।

राहुगायत्री मन्त्र—ॐ शिरो रूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहु प्रचोदयात्॥

सुनिश्चित मन्त्र जाप के अतिरिक्त राहु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान, शनिवार का व्रत, विधिपूर्वक निर्मित राहु यन्त्र धारण करना, राहु औषधि स्नान, गोमेद नग पहनना, शिव स्तोत्र एवं राहु स्तोत्र का पाठ करना, चलते पानी में नारियल बहाना, श्री दुर्गा पूजा करना, अपाहज एवं कुष्टाश्रम में अनाज, फल, आदि।

राहु दान योग्य वस्तुएँ—सप्तधान्य (सतनाजा), गोमेद, सीसा, काला घोड़ा, तैल, काले पुष्प, नीला वस्त्र, उड़द, खडग (चाकू इत्यादि), कम्बल, बिल पत्र, मौसमी फल कस्तूरी आदि। राहु का दान रात्रि कालीन करना प्रशास्त माना जाता है।

केतु—कुण्डली में १, २, ४, ५, ७, ८, एवं १२वें भाव में हो, अथवा अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या नीच राशिगत हो तो जातक / जातिका को शरीर कष्ट, आपसी कलह, व्यवसाय में हानि, घरेलू उलझनों आदि का सामना रहता है। केतु कृत अरिष्ट फल निवारण हेतु निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का १७ हज़ार की संख्या में जाप करना लाभदायक रहता है—

तन्त्रोक्त केतु मन्त्र—ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः।

केतु गायत्री मन्त्र—ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतु प्रचोदयात्॥

सुनिश्चित मन्त्र जाप के अतिरिक्त केतु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान, दुर्गा व गणेश जी की उपासना, कुत्तों को दूध-चपाती डालना, गर्म वस्त्र (कम्बलादि) का दान, केतु औषधि स्नान, अन्ध विद्यालय या कुष्ट आश्रम में अनाज, दवाईयों, वस्त्रादि का दान, पक्षियों को सतनाजा डालना तथा केतु यन्त्र धारण करना कल्याणकारी रहता है।

केतु-दान योग्य, वस्तुएं—लहसुनिया, लोहा, बकरा, नारियल, तिल, सप्तधान्य, धूम्र (धुएँ जैसे) वर्ण का वस्त्र, कस्तूरी, लौह, चाकू, कपिला गाय, दक्षिणा सहित। केतु का दान रात्रिकालीन प्रशस्त माना जाता है।

नोट—अधिक जानकारी के लिए हमारी '**शिवमन्त्रावली**' पुस्तक का अध्ययन करें।

व्यापारिक वस्तुओं में मन्दा-तेजी का दैनिक विवरण–सन् 2004 ई.

वायदा व्यापारियों के लिए आवश्यक निर्देश–व्यापारिक वस्तुओं के उतार–चढ़ाव के अध्ययन के बाद ही वस्तुओं का क्रय–विक्रय करना सफल व्यापार की कुंजी है। आगे गोचर ग्रहों, नक्षत्रों के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं (जिन्सों) के दैनिक उतार–चढ़ाव व तेजी–मन्दी की विशेष लाईनों एवं तूफानी तेजी आदि का विवरण लिख रहे हैं। ध्यान रहे, हाजर एवं वायदा बाजार पर राजनीतिक, सामाजिक एवं प्राकृतिक घटनाओं का प्रभाव भी अवश्य रहता है। इसके अतिरिक्त कुशल व्यापारी को अपनी वर्तमान ग्रहदशा तथा आर्थिक सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए ही व्यापार करना चाहिए। जन्मकुण्डली/वर्ष कुं. में हानिप्रद या अनिष्ट ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। अनुकूल ग्रह दशा जातक को व्यवसाय में विपुल धन लाभ तथा प्रतिकूल ग्रहदशा अकस्मात् धन हानि करवा सकती है।

गत संवत् २०६० में हमारे द्वारा निर्दिष्ट ग्रह स्थिति एवं अनेक तेजी–मन्दी के चांसों से सोना, चांदी, तेल, गुड़, खल के अनेक व्यापारी लाभान्वित हुए। ज्योतिष एवं आर्थिक दृष्टि से किसी विशेष जिन्स की स्पैशल दैनिक रिपोर्ट मंगवाने के लिए प्रति जिन्स की मासिक रिपोर्ट 450 रु., 2 महीने की 850 रु. तथा वार्षिक फीस 4500 रु. होगी। कृपया फीस अग्रिम भेजें।

—पं. विवेक शर्मा, एम. ए. एल. एल. बी., जालन्धर। फोन—2457959

जनवरी

1 जन. को बुध पूर्व से उदय होने से रूई पहले मन्दी होकर बाद में अचानक तेज। गेहूँ, जौं, चना, लाल मिर्च, अलसी, बिनौला के भावों में तेजी, सोने में मन्दा बनेगा। 3 जन. को मंगल रेवती में प्रविष्ट होगा तथा गुरु वक्री होगा। गेहूँ, जौं, चना, चावल, बाजरा, अलसी, सरसों व घी में मन्दा बने। सोना, ऊनी वस्त्र, चांदी आदि धातुओं में विशेष तेजी बने। रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो। 4 जन. को शुक्र धनिष्ठा में आने से सोना, चाँदी, रुई, कपास, चावल, मूँग, मोंठ, ज्वार, बाजरा, उड़द में तेजी बनेगी। गेहूँ में मन्दे का रुख ही रहेगा।

6 जन. को बुध मार्गी होगा। शेयरों, रूई में पहले मन्दी, बाद में तेजी बनेगी। चाँदी, चावल, गेहूँ, चना, अनाज तेज होंगे। अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली और गुड़ में 7 दिन के भीतर मन्दी आ जाएगी। (5 से 8 जन. तक वायदा बाज़ार तेज रहेंगे।)

9 जन. को शुक्र कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा। शुक्र पर गुरु की दृष्टि भी होगी। शेयर बाज़ार में तेजी परन्तु रुई, चांदी, गुड़, चीनी, जौं, चना, मूंग, ज्वार, बाजरा, चावल में अच्छी मन्दी बनेगी। इसी दिन राहु भरणी (3) तथा केतु विशाखा (1) में आने से कपास, गुड़, घी, तेल में तेजी भी ला सकता है। अत: तेजी–मन्दी के दौर में सावधानीपूर्वक चले। वायदा व्यापारी मन्दे को ध्यान में रखते हुए ही व्यापार करें। 11 जन. को सूर्य उ.षा. में आने से सरसों, अलसी, घी, गुड़, चावल, कपास, खल, मोठ, चना, मूँग, अरहर, शक्कर, चीनी तेज होंगे। 12 जन. को यूरेनस शतभिषा में आकर शुक्र से सम्बन्धित वस्तुओं में मन्दी करेगा। चीनी, रुई, चांदी में मन्दी बनेगी।

14 जन. को सूर्य मकर राशि में नेपच्यून के साथ मेल करेगा। संक्रान्ति 30 मुहूर्ति होने से घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, चीनी व रुई में तेजी जबकि गेहूँ, अनाज और बारदाने में मन्दे का रुख बनेगा। 15 जन. को शुक्र शतभिषा में आने से गेहूँ, गुड़, चीनी, चावल, घी, सरसों, रूई, सोना, चांदी में तेजी बनेगी। ता. 21 को बुध पू.षा. में आने से बिनौला, रूई, तेल में तेजी, धान्य, गेहूँ, जौं, चने में मन्दी, सोना, चाँदी में विशेष मन्दी बनेगी। 23 जन. शुक्रवार को चन्द्रदर्शन होने से सरसों, तिल, तेल, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, ऊनी वस्त्र में मन्दी तथा रूई, चांदी, सोना में घटाबढ़ी होकर तेजी होगी। **24 जन. को मंगल स्वराशि मेष में राहु के साथ मेल करेगा। इसी दिन सूर्य श्रवण में प्रवेश करेगा। मंगल-राहु पर गुरु की दृष्टि भी रहेगी। यह योग विशेष तेजी का है। शेयरों, गेहूँ में मन्दा, सोना, चाँदी, ऊन, रूई, कपास, पाट, बारदाना, गुड़, रसादि पदार्थों, चीनी में तेजी बनेगी।** ता. 26 को शुक्र पू.भा. में आने से रूई, चाँदी में तेजी, अनाजों में मन्दी बनेगी। ता. 31 को उ.षा का बुध भी सभी अनाजों में मन्दीकारक होगा।

फरवरी

3 फर. को बुध मकर राशि में सूर्य के साथ योग करके विशेष उथल-पुथल करेगा। रूई, सोना, चांदी, शेयरों, तेल में विशेष तेजी बनेगी। इसी दिन शुक्र मीन (उच्च) राशि में प्रवेश करेगा। यद्यपि अकेला शुक्र चाँदी में पहले मन्दी फिर तेजी करता है, परन्तु शुक्र पर शनि की दृष्टि होने से चाँदी, रूई में अच्छी तेजी सम्भव है। अनाज, सरसों, गुड़, चीनी, एरण्ड, अलसी में कुछ मन्दी करेगा। ताज़ा मशवरा प्राप्त करना लाभप्रद रहेगा।

4 फर. को शनि आर्द्रा (2) में तथा वक्री गुरु पू.फा. (3) में आने से मूँग, सरसों, जौं में तेजी बने। गुड़, चीनी, रूई, शक्कर, चाँदी में मन्दी बने।

9 फर. को बुध श्रवण में आने से गुड़, अलसी, सरसों, चना, रूई में तेजी बनेगी। 13 फर. को सूर्य कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा। गुरु की दृष्टि भी है। घी, तेल, नमक, सरसों, मूंगफली, राई में साधारण तेजी तथा रूई, पाट, अलसी, एरण्ड, गेहूँ आदि अनाज, गुड़, शक्कर, चीनी में मन्दी बनेगी।

14 फर. को मंगल भरणी में आकर रुई, कपास, जौं, चावल, सोने व चांदी में तेजी करेगा। 15 फर. को बुध पूर्व में अस्त होने से सोने में पहले मन्दी फिर तेजी, रूई में घटाबढ़ी, गेहूँ, चावल तथा अनाज में तेजी बने। 17 फर. को शुक्र रेवती में आने से रूई, कपास, चांदी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, चीनी, शक्कर तथा जवाहरात में मन्दी बनेगी। 18 फर. को बुध धनि. में आने से चावल, स्वांक में तेजी। सोना, चांदी में मन्दी, रूई में घटाबढ़ी होगी। 19 फर. को सूर्य शतभिषा में आने से सोना,

चांदी, सूत, सन, कपड़ा, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गुड़, गेहूँ के भाव तेज होंगे।

22 फर. को बुध कुम्भ रा. में सूर्य के साथ योग करेगा। गुरु की इन पर दृष्टि रहेगी। अलसी, रूई में मन्दी, चांदी में पहले मन्दी, फिर तेजी होगी। घी, तेल, रस, गुड़, चीनी में तेजी रहेगी। 25 फर. को बुध शतभिषा में आएगा। सोने, चांदी में मन्दी, अन्न, सरसों के भाव तेज रहें। 29 फर. को शुक्र मेष राशि में मंगल-राहु के साथ योग करेगा। इन पर गुरु की विशेष दृष्टि भी है। जौं, चना, गेहूँ, घी, सोना, चाँदी, गुड़, शक्कर, बारदाना, पाट आदि में विशेष तेजी बनेगी। ऊन, तिल, तेल, सरसों, अलसी, अरण्डी में कुछ मन्दी रहे।

मार्च

2 मार्च को नैपच्यून श्रवण (4) में प्रविष्ट होगा। तेल, सरसों, तिल, लाख में कुछ तेजी बने। 4 मार्च को सूर्य एवं बुध पू.भा. में तथा वक्री गुरु पू.फा. २ में प्रवेश करेगा। रेशम, सोना, चांदी, गेहूँ, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, चीनी, गुग्गुल, पीपलामूल तेज होंगे। रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी होगी। 6 मार्च को मंगल कृतिका में आने से गेहूँ, मूंग, मोठ, चावल, राई, मसूर, तिल, तेल, सरसों, घी, चांदी, सूत, वस्त्र में तेजी, रूई में पहले तेजी, फिर मन्दी बनेगी। 7 मार्च को शनि मार्गी होने से रूई, चांदी, घी में पहले तेजी होकर बाद में मन्दी बनेगी। तिल, सरसों, हींग, मिर्च में तेजी रहेगी। शेयरों में मन्दी।

9 मार्च को बुध मीन राशि में प्रवेश करेगा—इस पर शनि की विशेष दृष्टि भी होगी। यह योग विशेष तेजी की लाईन लाएगा। सोने-चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी, गुड़, चीनी, बिनौले, रूई, शक्कर, सोयाबीन, सरसों में तेजी बनेगी। 10 मार्च को बुध उ.भा. में आने से चांदी में घटाबढ़ी, तांबा, सीसा, पीतल, स्टील, गेहूँ, जौं आदि अन्न के भाव गिरेंगे, गुड़, चीनी, चावल के भाव सम रहेंगे।

11 मार्च को मंगल वृष राशि में आने से लाल वस्त्र, लाल चन्दन, लाल वर्ण की अन्य वस्तुएँ, अनाज, रूई, कपास, सूत, चन्दन, कपूर, केसर, तेल, सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं तथा शेयरों में तेजी बनेगी। 12 मार्च को शुक्र भरणी तथा राहु भर (2), केतु स्वा(4) में आने से सोना, चांदी, अफीम, लाल रंग की वस्तुओं, सरसों, तिल, तेल, अलसी, घी, उड़द, नारियल में मन्दे का वातावरण बनेगा। **14 मार्च को सूर्य मीन में बुध के साथ योग करेगा। इन पर शनि की दृष्टि भी रहेगी। तिल, तेल, अलसी, सरसों, चीनी, गुड़, शक्कर, रूई, सोने में तेजी तथा सब प्रकार के अनाज में तेजी। कुछ समय बाद चांदी, रूई के भाव गिरेंगे।**

17 मार्च को सूर्य उ.भा. में तथा बुध रेवती में प्रवेश करेगा। बुध पश्चिम से उदय होगा। चावल, धान्य, घी, तेल, बिनौला, अरण्डी, सरसों, लाल चन्दन, लाल मिर्च में तेजी बनेगी। घटाबढ़ी के बाद चांदी में मन्दी, रूई, घी तथा शेयरों में मन्दा बनेगा। 20 मार्च को शनिवासरी अमावस भी वायदा बाज़ार में तेजीकारक रहेगी।

24 मार्च को शुक्र कृतिका में आएगा। जौं, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रूई, सूत, वस्त्र, चांदी, सोना, हीरा, मोती आदि जवाहरात में मन्दी आएगी। 26 मार्च को बुध मेष राशि में शुक्र-राहु के साथ मेल करेगा। तेल, तिलहन, सरसों, चीनी, तिल, रूई, कपास, घी, गुड़, चाँदी में मन्दी, सोने में तेजी बनेगी। 27 मार्च को मंगल रोहिणी में आने से रूई, कपास, सूत, वस्त्र, रेशम, सरसों, तिल, तेल, लाल मिर्च, हींग और शेयरों में तेजी बनेगी। 28 मार्च को शुक्र वृष राशि में मंगल के साथ योग करेगा। रूई, कपास, चाँदी में मन्दी रहे। जौं, चना, गुड़, चावल, सोना कुछ तेज रहेंगे। 30 मार्च को सूर्य रेवती में आने से अलसी, सरसों, एरण्ड, मूँगफली, लहसुन, मोती, लाख, रूई, गेहूँ, जौं, चना, चावल तेज होंगे।

अप्रैल

1 अप्रै. को वक्री गुरु पू.फा. में आने से गुड़, चीनी, शक्कर, गेहूँ आदि अनाजों में मन्दी, रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी। (ता. 1 से 5 तक मुख्यत: वायदा बाज़ार में मन्दी का रुख रहे।) **6 अप्रै. को बुध वक्री होगा। मेष राशि में बुध-राहु का योग चल रहा है। वायदा बाज़ार में एकदम परिवर्तन होगा। शेयरों, चीनी, बिनौला, तिल, तेल, घी, गुड़, चांदी में तेजी, रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी, गेहूँ, जौं, चने में मन्दे का रुख बने।** 7 अप्रै. को शुक्र रोहिणी में दाखिल होगा। चांदी, सोना आदि धातु, अलसी, एरण्डी, सरसों, घी, तेल, गुड़, चीनी, लाख, छुहारा, सुपारी, नारियल, ऊन में मन्दी बने।

9 अप्रै. को शनि आर्द्रा (3) में दाखिल होगा। इसी दिन बुध पश्चिम में अस्त होगा। शेयरों, रूई, अनाज, अलसी, सरसों, तिल, तेल में मन्दी, चांदी में तेजी बनेगी। **13 अप्रैल को सूर्य मेष राशि में बुध एवं राहु के साथ योग करेगा। यह योग विशेष तेजी का है। रूई, कपास, सूत, घी, तेल, तिल, सरसों, नारियल, सुपारी, बादाम सब प्रकार के फल, गुड़, चीनी, शक्कर, सोना, चांदी तेज होंगे। गेहूँ, चावल, उड़द, मूंग, अरहर, चना, जौं, मटर आदि में मन्दी बने।** 17 अप्रै. को मंगल मृगशिर में आकर तिल, चांदी, कपास में तेजी, रूई में पहले मन्दी होकर फिर तेजी परन्तु अन्य व्यापारिक वस्तुओं में मन्दी का रुख रहे। **19 अप्रै. को सोमवती अमावस भी मन्दीकारक है।** आगामी सप्ताह रूई, चांदी, और सफ़ेद वस्त्र, सूतादि में मन्दी हो। 22 अप्रै. को बुध वक्री होकर मीन (नीच) राशि में शनि की दृष्टि के प्रभाव में होगा। रूई, गुड़, चीनी, शक्कर, गेहूँ में मन्दी हो, सोना, चांदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी हो, खल-बिनौले में तेजी हो। 25 अप्रै. को बुध पूर्व से उदय होने से गेहूँ, जौ, चना, लाल मिर्च, घी, बिनौला, अलसी के भावों में तेजी, रूई में पहले मन्दी, फिर तेजी बने।

27 अप्रै. को सूर्य भरणी नक्षत्र में तथा **मंगल मिथुन राशि में प्रवेश कर शनि के साथ योग करेगा। बाज़ार में तूफ़ानी तेजी ला सकता है। रूई, गुड़, चीनी, शक्कर, अलसी, अफीम, तांबा, मजीठ, सरसों तथा लाल रंग की वस्तुओं में विशेष तेजी बनेगी।** 30 अप्रै. को बुध मार्गी होने से घी, गुड़, खांड, तेल, मूंगफली, एरण्ड, बिनौला व रूई में मन्दी होगी।

मई

4 मई को खग्रास चन्द्रग्रहण मंगलवार को घटित हो रहा है। रूई, सूत, सुपारी, गेहूँ, अलसी आदि में अच्छी तेजी, घी, तेल, गुड़ में मन्दी बनेगी। 5 मई को गुरु मार्गी होने से भी रूई, चांदी, चावल, घी पहले तेज बाद में मन्दे होंगे। 6 मई को शुक्र मिथुन राशि में मंगल एवं शनि के साथ योग करेगा।

सामान्यतः मिथुन का शुक्र रूई, कपास, सूत, बारदाना, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर में मन्दा करता है, परन्तु हमारे विचारानुसार इस समय मन्दी न बनकर भाव कुछ सुधरेंगे, गेहूँ, चना, जौं, चावलों, अलसी, घी में तेजी बने। 8 मई को मंगल आर्द्रा में आने से रूई, सूत, कपास, अलसी, एरण्ड, गुड़, खांड, तिल, तेल, नमक में तेजी, चांदी में मन्दी बनेगी। 9 मई को बुध मेष राशि में सूर्य एवं राहु के साथ योग करेगा। बाजार का रुख एकदम परिवर्तन होगा। जोरदार तेजी-मन्दी के चांस बनेंगे। तेल, तिलहन, सरसों, खांड, घी, रूई, चना, तिल, चांदी में मन्दी, सोने में अच्छी तेजी बनेगी। 10 मई को कृतिका का सूर्य घी, रूई, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड, गेहूँ, जौ, चना, मूँग, मोठ, चावल, राई, सरसों में तेजी करेगा।

14 मई को सूर्य वृष राशि में प्रवेश करेगा। **ज्येष्ठ संक्रान्ति** 45 मुहूर्ति शुक्रवार को है। गुड़, घी आदि रस तथा रूई, तिल, तेल, सरसों में तेजी, गेहूँ, जौ, चना में मन्दी बनेगी। 17 मई को शुक्र वक्री होने से रूई, अलसी, सोने-चांदी के भावों में काफ़ी घटाबढ़ी होगी। साफ्टवेयर सैक्टर के शेयरों में विशेष तेजी, घी, तेल, गुड़, चीनी, शक्कर, चना, गेहूँ, जौं में तेजी बनेगी। 18 मई को शनि आर्द्रा (4) में तथा भौमवती अमावस होने से अलसी, सरसों, तिल, तेल, चाँदी व रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी। चांदी, दुग्धादि पदार्थों में तेजी होगी।

22 मई को बुध भरणी में आने से सभी प्रकार अनाज, चावल, गेहूँ में तेज होंगे। 24 मई को सूर्य रोहिणी में आने से तिल, तेल, एरण्डी, अलसी, सरसों, गुड़, खांड, घी, गेहूँ, जौं, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, वस्त्र, सन, सुपारी, सोना, मिर्च, राई में तेजी बने, चांदी में मन्दी बने। (24 से 28 मई तक वायदा बाज़ार में तेजी रहेगी।)

29 मई को मंगल पुनर्वसु में आने से रूई, चांदी, नमक, खांड, तिल, तेल, सरसों में तेजी बनेगी। 31 मई को बुध कृतिका में आने से रूई, सूत में तेजी, चांदी, अफीम में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

जून

2 जून को बुध वृष राशि में सूर्य व शुक्र के साथ योग करेगा। यह योग विशेष तेजी को बढ़ावा देगा। प्रायः सब वस्तुओं में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। गेहूँ, जौं, चना, चावल, मटर, रुई, कपास, सूत, अफीम, तिल, तेल, खाण्ड में तेजी बने। 4 जून को शुक्र पश्चिम में अस्त होगा। रूई, सूत, कपड़ा, तेल, घी, मूंगफली, अलसी, अरण्डी में मन्दी, चांदी में तेजी बनेगी। 7 जून को सूर्य मृगशिर तथा बुध रोहिणी में प्रवेश करेगा। इसी दिन बुध पूर्व में अस्त होगा। सोने में पहले मन्दी फिर तेजी, रूई, सूत, रेशम, सन, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, चाँदी, उड़द, मूंग, मोठ, चने, बाजरा, अलसी तथा रसदार पदार्थ, नारियल व सर्वफल तेज होंगे। 8 जून को गुरु पू.फा.(2) में आने से रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बने। 9 जून को वक्री शुक्र रोहिणी में प्रविष्ट होगा। चांदी, सोना, अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खांड, छुहारा, सुपारी, नारियल, ऊन में मन्दी बनेगी। 13 जून को शुक्र पूर्व से उदय होने से सोना, चांदी, रूई, कपास, सूत, चावल और घी में तेजी करेगा।

13 जून को ही बुध मृगशिर में आने से रूई में तेजी, तिल, सरसों, उड़द में मन्दी बने। **14 जून को सूर्य मिथुन राशि में शनि के साथ योग करेगा। सूर्य-शनि योग वायदा बाज़ार में अवश्य तेजी लाता है। बारदाना, रेशम, सूत, कपास, रुई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूंग, उड़द, गेहूँ, चना, चावल आदि तथा सोने-चांदी में भी तेजी का वातावरण बनेगा।** परन्तु इसी दिन मंगल कर्क में आने से सरसों तथा तिलहन के व्यापारी सावधानी से काम लें। लाईन एकदम उलट चल सकती है। **17 जून को बुध मिथुन राशि में सूर्य-शनि के साथ योग करेगा। यह योग विशेष तेजी का है। यद्यपि बुध वायदा बाज़ार में उथल-पुथल करता है परन्तु सूर्य-शनि के योग से यह तेजी को बढ़ावा देगा। सोना, चांदी, कपास, सूत, वस्त्र, घी, तेल, सरसों में अच्छी तेजी बनेगी।**

19 को शनिवार चन्द्रदर्शन तथा मंगल पुष्य में आने से चांदी, रूई में घटाबढ़ी के बाद सोने, चांदी में तेजी होगी। 20 जून को बुध आर्द्रा में आएगा। **शनि भी** अस्त होगा। गेहूँ, तिल, उड़द, जौ, चना, मूंग, मोठ, सोना, चांदी, रूई, शेयरों, बारदाना में पुनः घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी। सरसों की लाईन एकदम बदलेगी। 21 जून को **सूर्य आर्द्रा** में आने से रूई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूँ, चावल, चना, जौ, चांदी तेज हो, सोने में घटाबढ़ी चलेगी। 26 जून को बुध पुनर्वसु में आने से चांदी, रूई, कपास, सूत, सन में अच्छी मन्दी बने। 30 जून को बुध पश्चिम से उदय होगा। इसी दिन शुक्र मार्गी होगा। चावल, धान्य, घी, तेल, बिनौला, अरण्डी, सरसों, चांदी में 5 दिन बाद तेजी बनेगी।

जुलाई

1 जुला. को बुध कर्क राशि में मंगल के साथ मेल करेगा। रूई में मन्दी, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी, गुड़, दूध, तेल, मूंगफली, सरसों, सोने में पहले कुछ तेजी, फिर मन्दी बने। 3 जुला. को बुध पुष्य में आने से सोने, चांदी में मन्दी, रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बने। 4 जुला. को गुरु पू.फा. (3) में आने से रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी बनेगी। 5 जुला. को सूर्य पुनर्वसु में आने से रूई, सोना, चांदी, गुड़, खांड, कपास, खल, बिनौला, अरण्डी, अलसी, सरसों, लाख, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, हरड़, सुपारी, नारियल, केसर, मजीठ, सोंठ, गुग्गल आदि सुगन्धित पदार्थों में तेजी हो। 10 जुला. को मंगल तथा बुध आश्लेषा नक्षत्र में आने से तिल, तेल, सरसों, गुड़, चीनी, उड़द, मूंग में तेजी, चाँदी, रूई में मन्दी बनेगी। 11 जुला. को शनि पुर्न. (2) में आने से रूई, अनाज तेज, सरसों, अलसी, तिल, तेल मन्दे होंगे।

16 जुला. को **श्रावण संक्रान्ति** 15 मुहूर्ति है। **सूर्य कर्क राशि में मंगल एवं बुध के साथ योग करेगा। वायदा बाज़ार में विशेष तेजी बनेगी। रुई, सूत, बादाम, सुपारी, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, चांदी, सोना आदि तेज होंगे। चने, अरहर, उड़द, मूंग, बाजरा में मन्दी बनेगी।** 17 जुला. को **शनिवासरी अमावस** रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी, चांदी, अनाज और तिलहन, गुड़, चीनी में तेजी लाएगी। परन्तु कालसर्प योग के कारण अधिक तेजी की आशा न करें। 19 जुला. को सूर्य पुष्य में आने से तिल, तेल, सरसों, गुड़, खांड, चावल, गेहूँ, जौ, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गल, मोम, हींग, हल्दी, लाख, सन, ऊनी वस्त्र, सिक्का, सोना, चांदी में तेजी हो। रूई में पहले तेजी फिर मन्दी बने।

20 जुला. को बुध सिंह राशि में गुरु के साथ योग करेगा। चांदी, सोना, सूत, रूई व ऊनी वस्त्र,

खद्दे-पदार्थों में तेजी, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर आदि में मन्दी बनेगी। 21 जुला. को शुक्र मृगशिर में आने से गेहूँ, चना, ज्वार में मन्दी तथा गुड़, खांड, शक्कर में तेजी बने। 24 जुला. को गुरु पू.फा. (4) में आएगा। इसी दिन मंगल पश्चिम में अस्त होगा। गेहूँ, चना, गुड़, अलसी में तेजी, रूई में मन्दी बनेगी। 26 जुला. को शनि पूर्व दिशा से उदय होगा। लोहा, सीसा, काली वस्तुएं, गुड़, खांड, लकड़ी तेज होगी। शेयरों, रूई, अलसी, सरसों, बिनौला, मूंगफली और अरण्डी में मन्दी बनेगी। ता. 31 को मंगल सिंहराशि में बुध एवं गुरु के साथ योग करेगा तथा इन पर शनि की विशेष दृष्टि भी रहेगी। चांदी, सोना, तांबा, लोहा आदि धातु, गुड़, शक्कर, खांड, गेहूँ, अलसी, रूई, लाल वस्त्र, लाल मिर्च, लाल रंग की वस्तुओं में तेजी बनेगी। इसी दिन शुक्र मिथुन राशि में शनि के साथ योग करेगा। चने, जौं, चावलों, अलसी, घी में तेजी बनेगी।

अगस्त

2 अग. को सूर्य आश्लेषा में आने से 14 दिन में सोना, चांदी, रूई, बिनौला, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्डी, अलसी, मिर्च, मजीठ के भाव तेज होंगे। 3 अग. को बुध पू.फा. में आने से 10 दिन में गुड़, खांड, गेहूँ आदि अनाज मन्दे होंगे। 7 अग. को शनि पुनर्वसु (3) में आने से रूई, अनाज तेज, सरसों, अलसी, तिल, तेल मन्दे होंगे। 8 अग. को शुक्र आर्द्रा में आने से चांदी, चावल, खल में तेजी होगी।

10 अग. को बुध सिंह राशि में वक्री होगा। शेयरों, चांदी, खांड, बिनौला, तिल, तेल, घी, गुड़, शक्कर, कपूर आदि वस्तुओं में तेजी बनेगी। चने में मन्दा बने। 11 अग. को गुरु उ.फा. में आने से गुड़, खांड, सोना, चांदी आदि में मन्दी, रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी। 15 अग. को वक्री बुध मघा (4) में आने से गेहूँ, चना, जौ, सूत, रूई, वस्त्र, देवदारू तेज होंगे।

16 अग. को सूर्य सिंह राशि में मंग., गुरु, बुध के साथ सम्बन्ध करेगा। इस चतुर्ग्रही योग पर शनि की विशेष दृष्टि भी रहेगी। तेजी का वातावरण बनेगा। चांदी, सोना, रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों आदि तथा रक्तवर्ण की वस्तुएँ तेज होंगी। यद्यपि सोमवती अमावस श्रावण अधिक मास में अधिकतर वस्तुओं में मन्दीकारक होकर आगामी भाद्रपद मास में तेजीकारक होगी। फिर भी चतुर्ग्रही योग के प्रभावस्वरूप 2-3 दिन तेजी की लाईन चलेगी।

17 अग. को बुध पश्चिम में अस्त होने से शेयरों, रूई, कपास में मन्दी, चांदी में अच्छी तेजी बनेगी। 21 अग. को मंगल पू.फा. में आने से तिल, तेल, सरसों, मूंगफली, घी, गुड़, चीनी, नमक, सोयाबीन में तेजी होगी। 22 अग. को शुक्र पुनर्वसु में आने से धान्य, खल, बिनौला, शेयर, खाण्ड तेज, सोना, चांदी, रूई, कपास, सूत में मन्दी बनेगी।

27 अग. को गुरु कन्या राशि में प्रवेश करेगा। रूई, चांदी, ऊनी वस्त्र में मन्दी, ज्वार, बाजरा, सोयाबीन, चावल, गेहूँ, मूँग, उड़द, चना, तिल, तेल, सरसों, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बनेगी। 30 अग. को सूर्य पू.फा. में प्रवेश करेगा तथा बुध पूर्व से उदय होगा। चावल, धान्य, घी, तेल, बिनौला, अरण्डी, सरसों, चांदी, सोना, जीरा, गुड़, खाण्ड, ज्वार में तेजी बनेगी। शेयरों में मन्दी बने।

सितम्बर

1 सितं. को शुक्र कर्क में प्रवेश करेगा। रूई में पहले मन्दी, फिर तेजी हो। अलसी, एरण्डी, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी। चांदी, गेहूँ, जौ, चना, मटर, अरहर में मन्दी बनेगी। 2 सितं. को बुध मार्गी होने से रूई, शेयरों में घटाबढ़ी के बाद तेजी, गेहूँ, चना, अनाज में तेजी, अलसी, बिनौला, खल, सोयाबीन, मूँगफली और गुड़ में मन्दी बनेगी। 4 सितं. को शुक्र पुष्य में आने से रूई, सूत, सन, रेशम, ऊन, लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी बने। 5 सितं. को शनि कर्क राशि में शुक्र के साथ योग करेगा। रूई, कपास, सन, सूत में तूफ़ानी तेजी बन सकती है। तेल, तिलहन, सोयाबीन, अरण्डी, चने, सरसों में भी तेजी बनेगी।

7 सितं. को गुरु पश्चिम में अस्त होने से रूई, कपास, शेयरों, चांदी में तेजी बनेगी। सोने के भाव गिरेंगे। 11 सितं. को मंगल उ.फा. में आने से गुड़, घी, खांड, शक्कर, सोने, हल्दी, सरसों, खल में तेजी बनेगी। 12 सितं. को गुरु उ.फा. (3) में आने से गुड़, खांड, सोना, चांदी में मन्दी, रूई में घटाबढ़ी चले। 13 सितं. को सूर्य उ.फा. में आने से रूई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चांदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल नील में तेजी होगी। 14 सितं. को मंगलवारी अमावस होने से रूई, चांदी, अलसी में घटाबढ़ी और चने, गुड़, सोयाबीन में तेजी बनेगी। 15 सितं. को बुध पू.फा. में आने से गुड़, खांड, गेहूँ, अलसी, दालों में मन्दी बनेगी।

16 सितं. को सूर्य एवं मंगल कन्या राशि में गुरु के साथ योग करेंगे। यह सम्बन्ध विशेष तेजीकारक होगा। वायदा बाज़ार में तेजी का वातावरण बनेगा। रूई, नारियल, सुपारी, तिल, तेल, मजीठ, लाल वस्तुएं, चांदी, सोना, ऊनी, सूती व लाल रंग के सभी प्रकार के वस्त्र, अलसी आदि में तेजी बनेगी। 20 सितं. को बुध पूर्व में अस्त होने से गेहूँ, चावल, सोने, मूंग में घटाबढ़ी के बाद तेजी, रूई में घटाबढ़ी रहेगी। 23 सितं. को बुध उ.फा. में आने से उड़द, मूंग, मोठ, मसूर, अरहर, बिनौला में तेजी। रूई, चांदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दा बना। **25 सितं. को बुध कन्या में सूर्य, मंगल, गुरु के साथ योग करेगा। इन पर शनि को विशेष दृष्टि भी रहेगी। वायदा एवं हाज़िर बाज़ार में तेजी का वातावरण रहेगा। गेहूँ, जौं, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी, दूध, मैदा, सोयाबीन, तिल, सरसों, रिफाईंड आयल आदि में तेजी का बोलबाला रहे।** रूई, चांदी में घटाबढ़ी चले। 26 सितं. को सूर्य हस्त में आने से गेहूँ, जौ, ज्वार, गुड़, खांड, कपास, रूई, सूत, जूट, घास, लकड़ी, नमक, सोयाबीन, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी में तेजी होगी।

28 सितं. को शुक्र सिंह राशि में सोना, तांबा, जौं, चना, गेहूँ, लाल चन्दन, मजीठ, लाल मिर्च, लाल रंग की वस्तुएं, घी, में तेजी, रूई, चांदी में काफी घटाबढ़ी चलेगी। 30 सितं. को बुध हस्त में आकर वायदा बाज़ार में मन्दीकारक रहेगा।

अक्तूबर

2 अक्तू. को मंगल हस्त में आने से घी, गुड़, चीनी, नमक, खल-बिनौला, सोयाबीन में तेजी बनेगी। 3 अक्तू. को गुरु पूर्व से उदय होने से रूई, कपास, चावल, सूजी, चांदी में मन्दी बनेगी। (ता. 4 से 9 अक्तू. तक मार्किट में उथल-पुथल के बाद मन्दे का ही वातावरण रहेगा।) 10 अक्तू. को सूर्य

चित्रा में आने से रूई, सूत, सोना, चांदी, गुड़, चीनी, अरहर, गेहूँ, चना, तिल, नारियल, सन, केसर, कपूर, लाल कपड़े व लाल वस्तुओं में तेजी बने। 13 अक्तू. को गुरु हस्त में आने से शेयरों, रूई, गुड़, चीनी, शक्कर, अरण्डी, अलसी, सरसों, घी, तेल, सोना, चांदी, मोती, गेहूँ, चना, हल्दी में मन्दी बने।

16 अक्तू. को सूर्य तुलाराशि में बुध के साथ योग करेगा। गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सोना, तांबा, लाल चन्दन, सुपारी, मजीठ, सोयाबीन में तेजी बने, रूई, चांदी में मन्दे का वातावरण बनेगा। स्वाती का बुध भी रूई में मन्दीकारक रहेगा। 21 अक्तू. को शुक्र उ.फा. में आने से अनाज, रूई, सोना, चांदी, चावल, चने, अलसी में तेजी, तेल में मन्दी बने। 22 अक्तू. को मंगल चित्रा में आने से गेहूँ, चावल, चना, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, गुड़, चने में तेजी बने। 23 अक्तू. को सूर्य स्वाती में तथा शुक्र कन्या राशि में मंगल-गुरु के साथ योग करेगा। रूई, सूत, सन, रेशम, सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुग्गुल में तेजी बनेगी। चावलों में विशेष तेजी का झटका लगेगा। 24 अक्तू. को बुध विशाखा में आने से रूई, कपास, चावल, सरसों में मन्दी, चने, खल में तेजी बने। 26 अक्तू. को बुध पश्चिम से उदय होगा। चावल, घी, सरसों, चने में तेजी बनेगी। 27 अक्तू. को मंगल पूर्व से उदय होने से गुड़, सोयाबीन में मन्दी, रूई, उड़द, तिल, तेल, चने में तेजी बने। 29 अक्तू. को शनि पुष्य नक्षत्र में तथा गुरु हस्त (2) में आने से घी, शक्कर, तेल, सरसों, अलसी, तिल, मैंथायल में तेजी बने, रूई, कपास में मन्दी बने। 31 अक्तू. को बुध बृश्चिक में प्रवेश करेगा। घी, तेल, सरसों, रूई, चांदी, खल-बिनौले, चने में तेजी बनेगी।

नवम्बर

1 नवं. को शुक्र हस्त नक्षत्र में आने से रूई चांदी, चावल मंदे होंगे। सोना, गुड़, सरसों कुछ तेज, चीनी, गुड़, शक्कर में घटाबढ़ी चले। **2 नवं. को मंगल तुला राशि में सूर्य के साथ योग करेगा। रूई, कपास, सूत, सण, पाट, बारदाना, मूँगफली, गुड़, चीनी, गेहूँ, उड़द, मूँग आदि में तेजी बने।** इसी दिन अनुराधा का बुध सोने-चांदी में मन्दी करेगा। 6 नवं. को सूर्य विशाखा में आने से जौं, चावल, गेहूँ, मसूर, गुड़, चीनी, रूई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अफीम तेज। अलसी, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी।

8 नवं. को शनि वक्री होने से शेयरों, शीशा, चावल, गेहूँ, ज्वर, अलसी, सरसों, तेल, सोयाबीन, अरण्डी, रिफाईड आयल, तिल सभी प्रकार के तेलों में तेजी बनेगी। रूई, सोने, अरण्डी के भावों में घटाबढ़ी चलेगी। सोच-समझकर सौदे करें। ताज़ा मशवरा प्राप्त करें।

12 नवं. को शुक्र चित्रा, मंगल स्वाती तथा बुध ज्येष्ठा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। रूई, ऊनी वस्त्र, गेहूँ, तिल, तेल, घी, गुड़, चीनी, चावल में तेजी, सोने-चांदी के भाव सम रहेंगे।

15 नवं. को सूर्य बृश्चिक राशि में बुध के साथ मेल करेगा। रूई, तांबा, चांदी, सोना, ऊनी वस्त्रों, खल-बिनोला, सोयाबीन, तेल में तेजी, लाल रंग की वस्तुओं में कुछ मन्दी का प्रभाव रहेगा। 17 नवं. को शुक्र तुला राशि में गुरु के साथ मेल करेगा। रूई, चांदी, अफीम में पहले तेजी फिर मन्दी बने, सोने, गुड़, चीनी, चने, तेल, शेयरों में तेजी बने। इसी दिन शनि पुनर्वसु में आने से तेल, सरसों, अलसी, तिल, तेल, राई में मन्दी बनेगी। 19 नवं. को सूर्य अनुराधा में आने से जौं, चना, ऊन आदि में तेजी, गेहूँ, अलसी, मिर्च में तेजी के बाद मन्दी, सोने-चांदी में मन्दी रहे। ता. 21 तक मन्दी रहेगी। 24 नवं. 23 को शुक्र स्वाती में आने से गुड़, चीनी, मिर्च, अलसी, घी, दूध, रेशमी वस्त्रों में तेजी बने। 24 नवं. को बुध धनु राशि में आने से रूई, कपास, वस्त्र, सूत, चांदी, सोयाबीन में मन्दी बने। **30 नवं को बुध वक्री होने से शेयरों, चीनी, बिनौला, तिल, तेल, घी, गुड़, चांदी में तेजी, रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी, गेहूँ, जौ, चने में मन्दे का रुख बने।**

दिसम्बर

1 दिसं. को मंगल विशाखा में आने से रूई, कपास, गेहूँ, सूत, गुड़, खल-बिनौला, चने, पिपरमिंट में तेजी बनेगी। 2 दिसं. को सूर्य ज्येष्ठा में आने से वस्त्र, सोना, चांदी, चावल, गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, पारा, गुड़, चीनी में तेजी बने, रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। 3 दिसं. को शुक्र विशाखा में आने से रूई, अनाज, चाँदी की लाईन में अचानक परिवर्तन होगा। सावधानीपूर्वक सौदे करें। 4 दिसं. को बुध पश्चिम में अस्त होने से शेयरों, रूई, कपास, चीनी, चावल में मन्दी, चांदी, चने में अच्छी तेजी बनेगी।

6 दिसं. को बुध वक्री होकर बृश्चिक राशि में सूर्य के साथ मेल करेगा। घी, तेल, सरसों, रुई, चांदी, सोने, तांबे में तेजी बनेगी। 11 दिसं. को शनिवासरी अमावस तथा शुक्र बृश्चिक राशि में सूर्य-बुध के साथ योग करके तेजी का वातावरण बनाएगा। रूई, शेयर, चांदी, अफीम, गुड़, गेहूँ, जौ, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा, ऊनी वस्त्रों, चने, सरसों में तेजी बने। 14 दिसं. को वक्री बुध ज्ये. (1) तथा शुक्र अनुराधा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। घी, चने, मूंगफली, तिल, तेल में तेजी, गुड़, चीनी, चावल, नमक में मन्दी बनेगी।

15 दिसं. को सूर्य धनु राशि में प्रवेश करेगा। पौष संक्रान्ति 30 मुहूर्ति है। रूई, कपास, सूत, तिल, तेल, सोना, चांदी, सोयाबीन, मैंथायल में तेजी, किशमिश, छुहारे, लौंग, जीरा पहले मन्दा फिर तेज हो। माल इकट्ठा न करें, तुरन्त छोटे-छोटे सौदे कर खरीदो-फरोख्त कर लाभ लेते रहें। इसी दिन बुध पूर्व से उदय होने से गेहूँ, जौ, चना, लाल मिर्च, घी, बिनौला, अलसी के भावों में तेजी, रूई में पहले मन्दी, फिर तेजी बने। **16 दिसं. को मंगल बृश्चिक राशि में बुध एवं शुक्र के साथ योग करेगा। वायदा बाज़ार में तेजी का वातावरण रहेगा। गुड़, रूई, सोना, चांदी, सोयाबीन, खल-बिनौला, चने, सरसों, तांबा, जीरा, लाल चन्दन, लाल मिर्च में तेजी बनेगी।**

20 दिसं. को बुध मार्गी होने से घी, गुड़, चीनी, तेल, मूंगफली, एरण्ड, बिनौला व रूई में मन्दी बनेगी। शेयरों में भी मन्दी। 21 दिसं. को मंगल अनुराधा तथा बुध ज्येष्ठा में आने से रूई, कपास, गेहूँ, लाल मिर्च, लाल चन्दन, लाल रंग की अन्य वस्तुएँ, घी, गुड़, चीनी, चावल में अच्छी तेजी बनेगी। 25 दिसं. को शुक्र ज्येष्ठा में आने से सोना, चांदी, चावल, सरसों, तिल, तेल, हींग में मन्दी बने। 28 दिसं. को सूर्य पू.षा. में आने से तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, चीनी, हल्दी, गुग्गुल, चमड़ा, कपूर, ऊनी वस्त्र, सन, चांदी, सोने में तेजी बनेगी। 31 दिसं. को गुरु चित्रा में आने से चांदी, अनाज, चीनी, कपास, रूई में मन्दी बनेगी।

चमत्कारिक मन्त्र-तन्त्र एवं यन्त्र

'मन्त्र' वह दिव्य शक्ति है, जिसके द्वारा दैवी शक्तियों का अनुग्रह, उपयुक्त साधना द्वारा सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिए कर्त्तव्य की प्रेरणा देने वाली शक्ति साधना को भी मन्त्र कहते हैं।

मन्त्र सिद्धि एवं साधना के लिए दृढ़ संकल्प शक्ति एवं श्रद्धा भावना का होना आवश्यक है। जैसा कि 'भावचूड़ामणि' में लिखा गया है—

बहुजापात् तथा होमात् कायक्लेशादिविस्तरैः। न भावेन विना देवो यन्त्रमन्त्राः फलप्रदाः॥

अर्थात् चाहे कितना ही अधिक जप, होम तथा शरीर–कष्टादि किया जाएँ, परन्तु भाव के बिना देवता, मन्त्र और यन्त्र आदि फलप्रद नहीं होते।

प्राचीनाचार्यों ने मन्त्र–तन्त्रादि के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए कुछ विशेष नियमों को पालन करने के भी निर्देश दिए हैं। जैसे—गोपनीयता, मन व शरीर की शुद्धि, शुभ स्थान, सात्विक भोजन, शुभासन, विनियोग, मन्त्र, देवता, दिशा एवं शुभ–मुहूर्त्तादि का ज्ञान होना आवश्यक बताया गया है। जिनका पालन करके मन्त्रानुष्ठान शीघ्र व सुलभ हो जाती है। इनकी विस्तृत व्याख्या हमारी दिसम्बर, २००३ में प्रकाशित होने वाली पुस्तक *'शिव–मन्त्रावली'* में दी गई है।

मन्त्र एवं यन्त्रों के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, सूर्य–चन्द्र क्रान्तिसाम्य का काल, श्रीमहाशिवरात्रि काल, दीपावली, अक्षया तृतीया, सायन एवं निरयण संक्रान्ति पुण्यकाल, होलाष्टक, रवि–गुरु–पुष्यादि योग, नवरात्रों में, अमृत सिद्धि योगों, भौमवासरी अमावस आदि पर्वों को विशेष प्रशस्त माना गया है।

अभीष्ट वर प्राप्ति के लिए

जिस कन्या के विवाह–कार्य में बार–बार विघ्न–बाधाएँ पड़ती हों। उसको गुरु–पुष्य, रवि पुष्य, अक्षया तीज, श्रावण मास में, दीपावली, बसन्त अथवा नवरात्रों में निम्नलिखित मन्त्र का आरम्भ करके यथेष्ट संख्या में ५१ हज़ार अथवा सवा लाख की संख्या में नियमित रूप में, शिव–पार्वती अथवा माता के मन्दिर में धूप, दीप जलाकर पीले एवं लाल पुष्प चढ़ाकर सुनिश्चित समय में नियमित रूप से संकल्पपूर्वक एवं विधिवत् जप करना चाहिए। इससे देवी की कृपा से अवश्य कामना सिद्धि होती है—

ॐ ह्रीं गौर्ये नमः

हे गौरि शंकरार्धांगि यथा त्वं शंकर प्रिया।

तथा मां कुरु कल्याणि कान्तकान्तां सुदुर्लभाम्॥

एक अन्य उपयोगी मन्त्र—

ॐ कात्यायनि महामाये महायोगिनी अधीश्वरी।

नन्दगोपसुते देवि ! पतिं मे कुरु ते नमः॥

इसके साथ प्रति सोमवार का व्रत तथा पार्वती मंगल स्तोत्र का पाठ भी किया जाए, तो मनोवांछित फल की प्राप्ति शीघ्र होती है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक शास्त्रोक्त प्रयोग प्रसंगवश मिलते हैं, जिनका जातिका की ग्रहदशा का अवलोकन करके करना चाहिए।

(३) **ॐ देवेन्द्राणि नमस्तुभ्यं देवेन्द्र प्रिय भामिनी।**
विवाहं भाग्यमारोग्यं शीघ्रलाभं च देहि मे॥

इस मन्त्र का जप करने से पहले प्रतिष्ठित तुलसी के पौधे की पूजा करके १२ बार परिक्रमा करें, तथा परिक्रमा पूरी होने पर कन्या अपने दाहिने हाथ से दूध और बाएँ हाथ से जल द्वारा श्रीसूर्यनारायण को १२ बार ऊपर लिखे मन्त्र को पढ़ते हुए अर्घ्य देवें। इसके पश्चात् तुलसी की माला से १०८ बार जप करें। इस प्रकार प्रतिदिन अर्घ्यदान और जप करने से तथा प्रयास करते रहने से शीघ्र कार्य सिद्धि होगी।

मंगलीक दोष के परिहार तथा शीघ्र विवाह हेतु प्रयोग

मंगलीक दोष से पीड़ित जातिका को एक पंचमुखी दीप प्रज्जवलित करके मंगल ग्रह एवं अपने इष्ट का सविधि षोडशोपचार अथवा पंचोपचार पूजन करना चाहिए। पूजनोपरान्त श्री मंगल चण्डिका स्तोत्र का १०८ दिन तक नित्यप्रति ७ अथवा २१ जप करना चाहिए।

"रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि मंगलचंडिके। हारिके विपदां राशे हर्षमंगलकारिके॥
हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलदायिके। शुभे मंगलदक्षे च शुभे मंगलचंडिके॥
मंगल मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले। सदा मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये॥"

माँ गौरी का पंचमुखी दीप प्रज्जवलित करके पंचोपचार अथवा षोडशोपचार पूजन करना चाहिए। तत्पश्चात् १०८ दिन तक ७ अथवा २१ बार पार्वती स्वयंवर का पाठ करना चाहिए।

"बालार्कायुतसत्प्रभां करतले लोलम्बमालाकुलां
मालां सन्दधतीं मनोज्ञतनुं मन्दस्मितोद्यन्मुखीम्।
मन्दं मन्दमुपेयुषी वरयितुं शंभुं जगन्मोहिनीं
वन्दे देवमुनीन्द्रवन्दितपदां इष्टार्थदां पार्वतीम्॥"

मंगल के वैदिक मन्त्र का १०८ दिन तक ७ अथवा २१ माला जप करना चाहिए। दीर्घकालिक प्रभाव के लिए १०,००० आवृत्ति में जप का एक पुरश्चरण करना चाहिए। वैसे तो यह प्रयोग पर्याप्त रहेगा। परन्तु इसकी विस्तृत व्याख्या एवं इस सम्बन्ध में अन्य प्रयोगों के लिए हमारी 'शिव मन्त्रावली' का अध्ययन कर लेना चाहिए।

माता पार्वती को प्रसन्न करने के लिए—

धन्य धन्य गिरिराजकुमारी, तुम्ह समान नहि कोउ उपकारी॥ –बा. /१२५

रामचरितमानस की इस चौपाई का भी ३ माला ४० दिन तक पाठ कर लेना चाहिए।

पीलिया रोग झाड़ने का शाबर मन्त्र

जिसको पीलिया रोग हुआ हो, उसके सिर पर एक कांसे की कटोरी में तिल का तेल लेकर कटोरी रखे और डाभ (कुशा) से उस तेल को चलाते हुए चलाते हुए नीचे लिखे मन्त्र को सात बार पढ़ें। ऐसा तीन दिन तक करने से तेल पीला पड़ जाएगा और पीलिया झड़ जाएगा।

''ॐ नमो वीर वेताल कराल, नारसिंह देव, नार कहे तू देव खादी तू बादी, पीलिया कूँ भिदाती, कारे-झारे पीलिया रहे न एक निशान, जो कहीं रह जाय तो हनुमंत जति की आन। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।''

सर्वरोग निवारक शाबर मन्त्र

''वन में बैठी वानरी अंजनी जायो हनुमंत, बाला डमरू ब्याहि बिलाई आंख की पीड़ा, मस्तक पीड़ा, चौरासी, वाई, बली-बली भस्म हो जाए, पके न फूटे, पीड़ा करे, तो गोरख जती रक्षा करे, गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।''

इस मन्त्र का ४१ दिन में सवा लाख जाप करें और किसी भी रोग को दूर हटाने के लिए रोगी पर मोरपंख से १०८ बार झाड़ देवें। हनुमान जी के सामने तेल का दीपक लगाकर जप करें। इस मन्त्र के प्रभाव से सभी प्रकार के रोग ठीक हो जाते हैं।

''व्यापार वृद्धि का अमोघ शाबर मन्त्र''

''श्री शुक्ले महाशुक्ले, कमल दल निवासे श्री महालक्ष्म्यै नमो नमः। लक्ष्मी माई, सत्य की सवाई, आवो माई करो भलाई, न करो तो सात समुद्र की दुहाई, ऋद्धि-सिद्धि खावोगी तो नौ नाथ चौरासी की दुहाई।''

दीपावली की रात्रि को एकान्त में पवित्रतापूर्वक बैठकर दस हजार मन्त्र जपें। जिसकी रोजी कमजोर हो, वह व्यक्ति दुकान खोलते व बन्द करते समय इस मन्त्र के १०८ जाप करें, तो निश्चित रूप से व्यापार बढ़ेगा, लाभ के नए मार्ग बनेंगे।

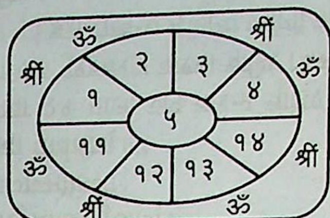
लक्ष्मी प्राप्ति के लिए श्रीकुबेरदेव का मन्त्र

धन के अधिष्ठाता श्री कुबेरदेवता का मन्त्र जपने से व्यक्ति को धन–सम्पत्ति का अभाव नहीं रहता। 'कुबेर' शब्द ही धनिक का पर्याय है। यक्षों के सम्राट् कुबेर देवता अपनी सम्पत्ति के लिए पुराणों में भी वर्णित हैं। उनकी साधना का मन्त्र निम्नांकित है। एक लाख जप करके तिल के द्वारा दशांश (दस हजार अथवा एक हजार, जैसी सामर्थ्य हो) हवन करने से कुबेरदेव की कृपा, साधक का दारिद्रय दूर कर देती है।

ध्यान मन्त्र– 'मनुजबाह्य विमानवर स्थितं, गरुड़ रत्ननिभं निधि नायकं।
शिव सखं मुकुटादि विभूषितं, वरगदे दधतं भज तुन्दिलम्॥'

मन्त्र–✦'ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन धान्याधिपतये समृद्धिं में देहि दापय स्वाहा।'
✦'ॐ श्री ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः।'

'दुर्लभ बीसा यन्त्र प्रयोग'



अष्टगन्ध की स्याही* अथवा शुद्ध सिन्दूर को शुद्ध घी (गौ का), अभाव में मीठा तेल में मिलाकर अनार अथवा तुलसी की लकड़ी की कलम (प्रमाण ८ अंगुल) से मकान अथवा दुकान की पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख दीवार पर दीपावली के शुभ पर्व पर** प्रदर्शित बीसा यन्त्र लिखें। इन यन्त्रों में से कोई यन्त्र लिखने से पहले उस स्थान को गाय के गोबर से पवित्र कर लेना चाहिए। गाय के गोबर में गंगाजल भी मिला लेना चाहिए। इन यन्त्रों में से कोई एक यन्त्र भी लिखने से ऐश्वर्य, सुख–समृद्धि और धन की वृद्धि होती है। अचला भगवती लक्ष्मी एक वर्ष तक वहाँ निवास करती है।

अथवा

	ॐ	ऐं	ॐ	
ॐ	१	९	१०	ॐ
श्री	१४	७ ॐ २ ३ ८	६	ह्रीं
ॐ	५	११	४	ॐ
	ॐ	क्लीं	ॐ	

यन्त्र लिखने के पश्चात् 卐 (स्वस्तिक), ॐ 'शुभ लाभ', 'ऐश्वर्य लाभ', 'श्रीगणेशायनमः', 'श्रीमहालक्ष्म्यैनमः', 'श्रीसरस्वत्यैनमः', 'श्री महाकाल्यैनमः', श्रीविष्णवेनमः', 'श्रीशिवायनमः', 'श्रीकुबेराय नमः' आदि मंङ्गलवाक्य भी शुद्ध घी एवं मीठा तेल मिश्रित सिन्दूर द्वारा लिख देने से उस स्थान से दुःख–दरिद्रता का नाश होता है। सुख और धन की वृद्धि होती है। ये यन्त्र और मंङ्गलमन्त्र कष्ट निवारक, पापनाशक और कल्याणप्रद हैं। लाभ उठाइये।

✡ श्वेतचन्दन, लालचन्दन, अगर, तगर, केशर, कस्तूरी, कर्पूर और गोरोचन

✡✡ श्रावण, धनिष्ठा, शतभिषा और पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र नहीं होने चाहिए।

शत्रु वशीकरण तन्त्र

● शनिवार को पुष्य नक्षत्र में लालचन्दन से भोजपत्र पर अपने शत्रु का नाम लिखकर शहद में डुबा दें तो वह शत्रु वश में हो जावेगा।

● **वशीकरण धूप**—मेषसिंगी, वच, खस, चन्दन, रोला तथा छोटी इलायची—इन सबको बराबर–बराबर लेकर कूटकर पीसकर, सब एक ही में रख ले, जब आवश्यकता पड़े तब अपने कपड़ों को इसी धूप से धूनी देकर वह कपड़े पहनकर यदि स्त्री के सामने जावे तो वह वश में हो तथा व्यापार के लिए जावे तो उसमें लाभ हो और राजा के पास जाने से राजा प्रसन्न हो।

नोट—यह सब चीजें पुष्य नक्षत्र में लाकर उसी दिन कूट छानकर रखना चाहिए।

पति-पत्नी की अनबन दूर करने का यन्त्र

यदि आपकी पति–पत्नी से छोटी–छोटी सी बात पर खट–पट होती रहती है, एक भी दिन प्रेम स्नेह के साथ नहीं व्यतीत होता, तो आप इस निम्नांकित यन्त्र को पवित्रतापूर्वक चन्दन या लाल स्याही से भोजपत्र या फल–फूल से युक्त बर्तन में सात दिन तक निरन्तर लिखें तो ईश्वर चाहेगा तो सात दिन बाद पति–पत्नी में प्रेम भाव एवं अनुकूलता होगी।

११	०	४	८
७	३	१५	१४
२७	१२	१९	१
४	६	१३	६

गर्भ स्थिर रहने का यन्त्र

विधि–इस यन्त्र को कूपर, केसर, कस्तूरी, गोरोचन, अगर, सुगन्ध, माला आदि से भोजपत्र पर रविवार या मंगलवार को लिखकर स्त्री की भुजा अथवा गले में बांध दे तो गर्भ स्तम्भन हो अर्थात् गर्भ स्थिर रहे। परीक्षित है।

२०	२७	२	७
६	३	२४	२३
२६	२१	८	१
४	५	२२	२५

–संकटनाशन गणपति स्तोत्र–

(मनोकामना पूर्ण एवं विघ्न–बाधाओं से मुक्ति के लिए)

स्तोत्र–
प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुः कामार्थसिद्धये॥ १॥
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्॥ २॥
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम्॥ ३॥
नवम भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्॥ ४॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो॥ ५॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम्॥ ६॥
जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः॥ ७॥
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः॥ ८॥

श्रीनारद पुराण अनुसार इस स्तोत्र को श्रीगणेश चतुर्थी वाले दिन से प्रारम्भ करके छः मास के बाद श्रीगणेशचतुर्थी वाले दिन ही इसे पूर्ण करें। तदनन्तर भी प्रतिदिन इस स्तोत्र का पाठ करना कल्याणप्रद रहेगा। व्यापार, पुत्र प्राप्ति, विद्यार्जन तथा आध्यात्मादि के क्षेत्र में विघ्न–बाधाओं से पीड़ित व्यक्ति को छः मास, सम्भव हो तो पूरा वर्ष प्रतिदिन प्रातः तथा मध्याह्न के समय इस स्तोत्र का श्रद्धापूर्वक पाठ करना चाहिए। तथा आठ ब्राह्मणों को अपने हाथ से सुस्पष्ट लिखकर पढ़ने के लिए दें।

पूजा के समय श्रीगणेश के साथ–साथ श्रीपार्वती और श्रीशंकर की प्रतिमा या चित्र को भी धूप, दीप, नैवेद्य अर्पित करें तथा प्रति मास की गणेश चतुर्थी का व्रत रखकर लड्डुओं का भोग लगाकर छोटी कन्याओं में बांटें।

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो।
नमो व्रातेभ्योव्रातपतिभ्यश्च वो नमो॥
नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो।
नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः॥ (शुक्लयुजर्वेद माध्य. सं. १६, २५)

नेत्रसम्बन्धी सर्वरोग नाश के लिए स्तोत्र

नेत्र ज्योति कम हो जाने पर, दृष्टि में दोष आ जाने, फूला, चौंधिया या आधाशीशी आदि से नेत्रों में खराबी आ जाने आदि की निवृत्ति के लिए निम्न 'नेत्रोपनिषद स्तोत्र' के एक हजार पाठ करवाकर सूर्यनारायण की उपासना और रविवार का व्रत करना चाहिए।

'नेत्रोपनिषद्' अर्थातश्चाक्षुषीं पठितसिद्धविद्यां चक्षूरोगहरां व्याख्यास्यामो यया चक्षूरोगाः सर्वतो नश्यन्ति। चक्षुषो दीप्तिर्भवति। अस्याश्चाक्षुषविद्यायां अहिर्बुध्न्य ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, सविता देवता, चक्षूरोगनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ चक्षुश्चक्षुश्चक्षुस्तेजः स्थिरो भव। मा पाहि पाहि। त्वरितं चक्षूरोगान् शमय शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथाहमन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय। कल्याणं कुरु कुरु। यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुः प्रतिरोधकदुष्कृतानि तानि सर्वाणि निर्मूल्य निर्मूल्य। ॐ नमश्चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः करुणाकरायामृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद् गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। उष्णो भगवान् शुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः। य इमां चाक्षुष्मतीं विद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुलेऽन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति। ॐ विश्वरूपं हरिणं जातवेदसं हिरण्मयं ज्योतीरूपं तपन्तं। सहस्ररश्मिभिः शतधा वर्तमानः पुरः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः। 'ॐ नमो भगवते आदित्याय अवाग्वादिने स्वाहा।' इति (कृ.य. चाक्षुषोपनिषद)

धन-संपदा और वैभव के लिए सर्वतोभद्र यन्त्र

इस यन्त्र को दीपावली की रात्रि को सिंह लग्न या प्रदोष/निशीथ काल में 'भोजपत्र' पर अनार की कलम द्वारा 'अष्टगंध की स्याही से' लिखना चाहिए। इस यन्त्र को लिखने से पूर्व

सामने लकड़ी के बजोट पर रेशमी वस्त्र (पीले रंग का वस्त्र) आसन के रूप में बिछाएं और चार मुख का एक मिट्टी का दीपक घी से प्रज्वलित करें।

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

ध्यान रहे–

सिन्दूरारूण कान्तिमब्ज बसतिं सौन्दर्य वरांनिधाम,
कोटी राङ्गद हार कुण्डल कटि सूत्रादि भिर्भूषितम्।
हस्ताब्जैर्वसुपात्र मब्ज युगलादर्शी वहन्ती परा,
मावीतां परिचारिकाभिरनिशं ध्यायते प्रियां शार्ङ्गिणः।

इस प्रकार ध्यान करके कमलगट्टे या रक्त चन्दन की माला से निम्नलिखित मन्त्र का जाप करना चाहिए।–**'ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।'** इस मन्त्र का जाप लगातार निशीथ काल में करें। जप के पश्चात् इसी मन्त्र से 1008 या 108 आहूतियां अवश्य देनी चाहिए। उपरोक्त अनुष्ठान योग्य एवं वैदिक ब्राह्मणों से ही कराना चाहिए।

घरेलू कलह-क्लेश दूर करने के लिए मन्त्र

"ॐ दमयन्ती-नलाभ्यां तु नमस्कारं करोभ्यहम् अभिवादो भवेदत्र कलिदोष प्रशान्तिदः। ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां प्रथग्धियाम्। निर्वैरता च जायेत संवादाग्ने प्रसीद मे।"

इस मन्त्र को उत्तराभिमुख होकर रात के 9 बजे के बाद $11\frac{1}{2}$ बजे से पहले प्रारम्भ करें। धूप ज्योति जगाकर पाँच माला मन्त्र जाप 33 दिन तक प्रतिदिन करें। तर्पण करें तथा ब्राह्मण भोजन कराएं। दीपावली की रात्रि या ग्रहण के समय निम्न मन्त्र को सिद्ध करके लिखकर देने से एवं घर में हवन करने से घर में कलह–क्लेश दूर होकर शान्ति हो जाती है।

बारह राशियों के जप मन्त्र

ज्योतिष भारत की अति प्राचीन विद्या है। हमारे प्राचीन संतों, ऋषियों ने सम्पूर्ण आकाश मंडल का व्यापक अध्ययन करने पर जो निष्कर्ष दिए हैं, उन्हें आज भी विज्ञान मानता है। उन्होंने सम्पूर्ण आकाश मण्डल को जो अनन्त असीम है, सूर्य को आधार मानकर १२ खण्डों में विभाजित कर ज्योतिष विद्या को जन्म दिया है। उसी के आधार पर नाभीय चक्र को १२ राशियों एवं २७ नक्षत्रों में बांटा गया है। अलग–अलग राशि का अपना–अपना अलग विशेष देवता से अभिन्न सम्बन्ध है। प्रत्येक साधक को अपनी जन्म राशि से सम्बन्धित देवता और ग्रह का पूजन करना कल्याणकारी रहता है।

राशियों के देवता और मन्त्र–प्रत्येक साधक को अपनी सुविधा के अनुसार प्रतिदिन अपनी राशि के अधिष्ठित मन्त्र की कम–से–कम एक माला का जाप करते रहने से शुभ फल की प्राप्ति होती है।

(१) **मेष राशि**–इस राशि के देवता भगवान् विष्णु हैं, अतः इनकी उपासना श्री लक्ष्मी नारायण मन्त्र के जाप से करनी चाहिए।

मन्त्र–"ॐ श्री लक्ष्मी नारायणाय नमः।"

इस मन्त्र का जाप केले के वृक्ष के पास अथवा लक्ष्मी–नारायण के मन्दिर में करें। फल और लड्डुओं का भोग लगाएं।

(२) **वृष राशि**–इस राशि के देवता भगवान् वासुदेव हैं। उनकी उपासना वासुदेव मन्त्र से करनी चाहिए।

मन्त्र–"ॐ क्रीं वासुदेवाय नमः"

(३) **मिथुन राशि**–इस राशि वालों को केशव मन्त्र का जाप करना चाहिए। भगवान् कृष्ण की दूध–दही, मक्खनादि से पूजन करें।

मन्त्र–"ॐ क्रीं केशवाय नमः"

(४) **कर्क राशि**–इस राशि वालों को हरिवंश मन्त्र का जाप करना चाहिए। राधा–कृष्ण के मन्दिर में खोये के लड्डुओं का भोग लगाना चाहिए।

मन्त्र–"ॐ ह्रीं हरिहराय नमः"

(५) **सिंह राशि**–इस राशि वालों को मुकुन्द भगवान् (मदन गोपाल) का पूजन लाभकारी होगा। मुकुन्द भगवान् की खीर तथा मालपुओं से पूजा करनी चाहिए।

मन्त्र–"ॐ बालमुकुन्दायः नमः"

(६) **कन्या राशि**–इस राशि वालों को पीताम्बरधारी (पीत वस्त्रधारी) भगवान् कृष्ण का ध्यान करना चाहिए। पीले चावल और पीले रंग का हलवा भगवान् को अर्पण करें।

मन्त्र–"ॐ ह्रीं पीताम्बराय परमात्मने नमः"

(७) **तुला राशि**–इस राशि वालों को भगवान् श्री राम का सपरिवार पूजन करना लाभप्रद रहेगा। अपने को अति प्रिय लगने वाले मिष्ठान सहित पूजन करना चाहिए।

मन्त्र–"श्री रामः शरणं मम"

(८) **वृश्चिक राशि**–इस राशि वालों को नर–नारायण भगवान् की उपासना करनी चाहिए। जाप के उपरांत मास में कम–से–कम एक बार ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन करवाना चाहिए।

मन्त्र–"ॐ नमो नारायणाय नमः"

(९) **धनु राशि**–इस राशि के जातक को श्री धरणीधर भगवान् का पूजन और उपासना करनी चाहिए। जगत धारण करने वाले भगवान् का ध्यान करते हुए कच्चा दूध–दही अर्पण करें।

मन्त्र–"ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं धरणीधरायः नमः"

(१०) **मकर राशि**–इस राशि वालों को ब्रह्मातारक की उपासना करनी चाहिए। जाप नियमित रूप से करते हुए संक्रान्ति और अमावस्या को सफेद वस्त्र, खीर तथा फलादि का दान ब्राह्मण को दक्षिणा सहित करें।

मन्त्र–"ॐ श्री वत्साय उपेन्द्राय नमः"

(११) **कुम्भ राशि**–कुम्भ राशि वालों को गोविन्द गोपाल की पूजा करनी चाहिए। गाय को हरा चारा और पेड़ा–शक्कर डाल कर खिलाएं। कृष्ण भगवान् का ग्वाल–बालों सहित ध्यान करें।

मन्त्र–"श्री गोपाल गोविन्दाय नमः"

(१२) **मीन राशि**–इस राशि वालों को प्रमुखत्या चक्रपाणि और दामोदर भगवान् की उपासना करनी चाहिए। जाप करते समय भगवान् विष्णु का शेष शैय्या पर विराजमान लक्ष्मी जी सहित ध्यान करें। भगवान् को दूध, क्षीर और दूध के बनी मिठाई और नारियल अर्पण करें।

मन्त्र–"ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं रथाङ्गचक्राय नमः"

उपर्युक्त मन्त्रों का जाप शुभ मुहूर्त में किसी विद्वान् ब्राह्मण द्वारा विधिपूर्वक शुरू करावें और स्वयं पाठ होते समय मांस, मछली, नशादि से परहेज करें। कम से कम दिन में एक अच्छा पुण्य कार्य अवश्य करें। माता–पिता की आज्ञा का पालन, उनकी सेवा करके आशीर्वाद ग्रहण करना कल्याणकारी रहेगा।

बारह राशियों का मासगत वार्षिक फलादेश–सन् 2004 ई.

आगे बारह राशियों का मासिक फल ग्रहों की गोचर स्थित्यनुसार लिख रहे हैं। अपने जीवन सम्बन्धी और अधिक जानकारी एवं महत्त्वपूर्ण विषयों-विद्या, व्यवसाय, विवाह, सन्तान, विदश गमनादि प्रश्नों सम्बन्धी विशेष फलादेश तथा यदि आप किसी समस्या से ग्रस्त हैं, तो शास्त्र सम्मत विशेष उपाय जानने के लिए शुद्ध एवं बड़ी जन्मपत्री का होना आवश्यक है। हमारे कार्यालय से शुद्ध एवं विस्तृत जन्मपत्री बनवाने के लिए जातक/जातिका का नाम, जन्म समय, वर्ष, स्थान (Place & Time of Birth), माता-पिता एवं व्यवसाय आदि का विवरण तथा अग्रिम रूप में पूरी फीस भेजें।

बड़ी विस्तृत जन्मपत्री हस्तलिखित फलादेश सहित की फीस 551 रु०। मध्यम जन्मपत्री 351 रु०, वर्षफल फीस 275 रु०। विदेश में उत्पन्न जातक की फीस 31 पौंड अथवा 40 डालर होगी।

—पं० पन्ना लाल ज्योतिषी, अड्डा होशियारपुर, जालंधर—8

मेष राशि (Aries)—(चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

वर्ष प्रवेश कुण्डली

2 | मं. 12 | श. 3 | 1 रा. चं. | 11 | 4 | 10 शु. | 5 गु. | 7 के. | 9 सू. बु. | 6 | 8

ग्रहगोचर—वर्षारम्भ से वर्षान्त तक राहु संचार करेगा। परन्तु 26 अग. तक गुरु की भी शुभ दृष्टि होने से घरेलू उलझनों के बावजूद बिगड़े कामों में सुधार होगा। 25 जन. से 11 मार्च तक मंगल मेष में रहने से स्वास्थ्य में सुधार, व्यवसाय सम्बन्धी नवीन योजना बने। 14 जून से 30 जुला. तक मंगल नीच राशि में रहने से बनते कामों में विघ्न तथा घरेलू सुख में कुछ कमी। स्वास्थ्य में विकार रहे।

जनवरी—राहु का संचार तथा राशिस्वामी मंगल 12वें होने से स्वास्थ्य कुछ नर्म, व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहेगी। खर्च अधिक, स्वभाव में तेज़ी रहे। बनते हुए कार्यों में रुकावटें व विलम्ब पैदा होंगे। ता. 25 से मंगल स्वराशि में होने से स्वास्थ्य में सुधार, बिगड़े कार्य बनने के योग, परिवार में शुभ एवं धार्मिक कार्य भी होंगे।

फरवरी—मंग–राहु का योग होने से कुछ अड़चनों के पश्चात् कार्यों में सफलता मिलेगी। मंगल की चतुर्थ दृष्टि के कारण माता को स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी रहेगी। वाहनादि से चोटादि का भय रहेगा। व्यवसाय सम्बन्धी उतार–चढ़ाव का सामना रहे। मासान्त में नए कार्यों की योजना बनेगी।

मार्च—व्यवसाय में विशेष उथल–पुथल और परिवार में सुख–साधनों पर खर्च में वृद्धि होगी। ता. 12 से मंगल वृष राशि में होने से पारिवारिक उलझनें, आर्थिक परेशानियां और भाई–बन्धु से कुछ तनाव भी हो। मासान्त ता. 26 से इस राशि में बुध–राहु का योग होने से मानसिक तनाव, स्वास्थ्य परेशानी और व्यवसाय में भी विघ्न–बाधाएं उत्पन्न हों।

अप्रैल—मासारम्भ में कुछ घरेलू परेशानियां उत्पन्न होंगी। माता–पिता से भी मन मुटाव रहे। ता. 13 से सूर्य बुध, राहु के साथ मेल करेगा जिससे यद्यपि धनागमन के साधनों में वृद्धि होगी। खर्च भी अधिक होगा परन्तु परिवार में तनाव, गुप्त परेशानी और स्वास्थ्य ढीला रहेगा।

मई—राशिस्वामी मंगल तृतीयस्थ शनि के साथ संचार करने से दौड़धूप अधिक, व्यवसाय में अत्याधिक परिश्रम के पश्चात् निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। घरेलू उलझनें भी रहेंगी। यद्यपि शत्रु दबे रहेंगे। किसी मंगल कार्य पर व्यय होगी। ता. 22 के बाद अचानक यात्रा के योग हैं।

जून—मासारम्भ में स्वभाव में कुछ तेजी और मानसिक तनाव रहेगा। पुरुषार्थ द्वारा निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 14 से मंगल नीच राशि में संचार करने से धन लाभ सम्बन्धी गत किए गए प्रयासों में असन्तोष एवं निराशा की भावना हो। स्वभाव में आलस्य और शिथिलता रहेगी।

जुलाई—ता. 20 तक मंगल–बुध चतुर्थ होने से माता को स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी और परिवार में कुछ तनाव होगा। यात्रा पर खर्च भी होगा। ता. 16 से सूर्य–मंगल चतुर्थ होने से स्वभाव में तेजी, छोटी–छोटी बातों में गुस्सा परन्तु कारोबार में अत्याधिक परिश्रम से कुछ कार्यों में सफलता मिलेगी।

अगस्त—मासारम्भ से मंगल सिंह राशि में गुरु के साथ मेल करेगा, जिससे शुभ एवं धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा। सन्तान सुख और विदेशी कार्यों में सफलता बनेगी। ता. 16 से पंचमस्थ पंचग्रही योग होने से व्यवसाय में विशेष उतार–चढ़ाव और सन्तान सम्बन्धी चिन्ता रहेगी।

सितंबर—ता. 1 को शुक्र और ता. 6 से शनि कर्क राशि में चतुर्थ आने से इन दिनों में विशेष उतार–चढ़ाव, संघर्ष और आय से खर्च अधिक होगा। ता. 17 से मंगल की मेष राशि पर स्वगृही दृष्टि के कारण कुछ नए–नए लोगों से मेल–जोल और मैत्री सम्बन्ध बनेंगे।

अक्तूबर—ता. 23 तक शुक्र पंचमस्थ संचार करने से सन्तान सम्बन्धी कार्यों एवं सुख–साधनों पर खर्च होगा। विद्या में अरूचि और मनोरंजन में अधिक ध्यान रहे। ता. 17 से व्यर्थ का तनाव और गुस्सा जल्दी आएगा। व्यवसाय में अत्याधिक परिश्रम आवश्यक होगा।

नवंबर—ता. 2 से मंगल तुला में सूर्य–केतु के साथ आने से परिवार में मनमुटाव व उलझनें बढ़ेंगी। मानसिक तनाव रहेगा। सन्तान से भी मतभेद उभरेंगे। किसी प्रिय व्यक्ति के व्यवहार से मन विक्षुब्ध होगा। अकस्मात् धन का अपव्यय बढ़ेगा।

दिसंबर—परिवार में मनमुटाव और बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। वृथा वाद–विवाद में खर्च भी अधिक होगा। ता. 20 के पश्चात् वृथा यात्रा, स्थानपरिवर्तन, मानसिक तनाव और अज्ञात भय बना रहेगा। सावधानी बरतें। दूरस्थ यात्रा और विदेशी कार्यों में प्रगति के योग हैं।

वृष राशि (Taurus)—(इ, उ, ए, ओ, व, वि, वृ, वे, वो)

वर्ष प्रवेश कुण्डली

3 श. | 1 रा. चं. | 12 मं. | 4 | 2 | 5 गु. | 11 | 6 | 8 | 10 शु. | के. 7 | 9 सू. बु.

ग्रहगोचर—इस राशि पर शनि की साढ़ेसति का प्रभाव 5 सितं, 2004 ई. तक रहेगा। वर्ष का पूर्वार्द्ध भाग विशेष संघर्षपूर्ण रहेगा। 27 अग. से गुरु की विशेष दृष्टि होने से शुभ कार्यों पर खर्च तथा गृह में किसी मंगल कार्य का आयोजन होगा।

जनवरी—शनि साढ़ेसति के बावजूद राशिस्वामी शुक्र भाग्यस्थान में होने से तनाव एवं उलझनों के रहते धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे। ता. 14 से धार्मिक कार्यों में रुझान रहेगा। मासान्त में द्वादश भाव में मंगल–राहु योग के कारण खर्च–क्रोध अधिक, कार्यों में विलम्ब के कारण मानसिक तनाव रहे।

फरवरी—ता. 3 से शुक्र मीन (उच्च) राशि में होने से आय के साधनों में वृद्धि होगी। मनोरंजन एवं विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक होगा। भूमि–जायदाद सम्बन्धी वाद–विवाद और लेन–देन के कार्यों में धोखे की सम्भावना है। सावधानी बरतें।

मार्च—मासारम्भ से राशिस्वामी शुक्र द्वादश भाव में मंगल–राहु के साथ है। दौड़धूप अधिक रहे तथा व्यवसाय में परेशानियों का सामना रहे। ता. 11 से मंगल इस राशि में संचार करने से मानसिक तनाव व परेशानियां बढ़ेंगी। स्वभाव में तेजी व क्रोध अधिक रहेगा।

अप्रैल—मासारम्भ में किसी मित्र के सहयोग से कोई बिगड़ा कार्य बनेगा। धन एवं सुख साधनों में वृद्धि होगी। मान–सम्मान और पराक्रम भी बढ़ेगा परन्तु शनि साढ़ेसति के कारण मानसिक तनाव बना रहेगा। ता. 13 को सूर्य द्वादश भाव में वक्री बुध–राहु के साथ मेल करेगा। विदेशी एवं सरकारी कार्यों में विघ्न–बाधाएँ उत्पन्न हों। खर्च की अधिकता रहेगी।

मई—व्यवसाय में धनागमन के साधन बढ़ेंगे परंतु परिवार में मनमुटाव और जायदाद आदि सम्बन्धी परेशानी व मतभेद उभरेंगे। ता. 18 से शुक्र वक्री होने से अकस्मात् बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। वृथा यात्रा और कुछ घरेलू समस्याएं भी उत्पन्न होंगी। मानसिक स्थिति अस्थिर रहेगी।

जून—ता. 4 से 13 जून तक शुक्रास्त रहने से अत्यधिक भागदौड़, व्यवसाय में परेशानी, बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। स्वास्थ्य में खराबी और आर्थिक हालात सामान्य रहेंगे। स्वभाव में तेजी और उत्तेजना अधिक रहे, मन में उचाटता और बनते कार्यों में विघ्न रहेंगे। यात्रा में खर्च अधिक रहे।

जुलाई—शुक्र मार्गी होने से परिस्थितियों में सुधार व अकस्मात् परिवर्तन होने के संकेत हैं। परन्तु उदर विकार एवं आंखों में कष्ट की सम्भावना रहेगी। शनि साढ़ेसति के कारण व्यर्थ की भागदौड़, वृथा खर्च और विलासादि कार्यों पर व्यय होगा।

अगस्त—31 जुला. से शुक्र मिथुन में शनि युक्त तथा चतुर्थ भाव में मंगल–गुरु–बुध योग बनेगा। जिससे धन लाभ एवं धन प्राप्ति के मार्ग प्रशस्त होंगे। कार्य–व्यवसाय में कुछ परिवर्तन की योजना बनेगी। उत्तरार्द्ध भाग में आय से खर्च अधिक और शत्रु सरगर्म रहेंगे। स्वास्थ्य भी ठीक न रहे।

सितंबर—ता. 1 से शुक्र कर्क में आने से भाई–बन्धुओं से मेल–मिलाप तथा शुभ यात्राएं भी होंगी। सर्विस अथवा व्यवसाय में उतार–चढ़ाव का सामना रहे। ता. 6 से शनि कर्क में आने से सुख–साधनों पर खर्च, मानसिक तनाव और किसी प्रिय मित्र के व्यवहार से मन परेशान होगा।

अक्तूबर—अत्यधिक परिश्रम करने पर भी धन लाभ के अवसरों का समुचित लाभ नहीं उठा पाएंगे। सन्तान के सम्बन्ध में चिन्ता और घरेलू उलझनों के कारण मन उदासीन रहेगा। ता. 19 के पश्चात् आय कम और खर्च अधिक, पारिवारिक मतभेद और कार्य स्थिति सामान्य ही रहेगी।

नवंबर—मासारम्भ में शुक्र नीच राशिगत होने से अत्यधिक संघर्ष के पश्चात् गुजारे लायक धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे। परिवार में कुछ खर्च की अधिकता और धनागमन के साधनों में वृद्धि, स्त्री एवं संतान का सहयोग प्राप्त होगा।

दिसंबर—राशिस्वामी तुला में संचार करने से उत्साह एवं आत्मविश्वास से कार्य करने पर लाभ होगा। नौकरी में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु नई योजना को साकार रूप देने के इन अवसरों का लाभ नहीं उठा पाएंगे। अचानक धन हानि व नुकसान होने के संकेत हैं।

मिथुन राशि (Gemini)–(क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)

ग्रहगोचर—इस राशि पर शनि साढ़ेसति का प्रभाव वर्षभर रहेगा। वर्षारम्भ से 5 सितं तक शनि इसी राशि पर संचार करेगा। 6 सितं से शनि कर्क में जाने से परेशानियां कुछ कम होंगी। 6 दिसं से मंगल की दृष्टि पड़ने से शरीर कष्ट एवं मानसिक परेशानियां बढ़ेंगी।

वर्ष प्रवेश कुण्डली

4, 3 श., 2, 1 चं. रा., गु. 5, 6, 12 मं., 7 के., 8, सू. 9 बु., 10, 11

जनवरी—मासारम्भ से राशिस्वामी बुध की दृष्टि पड़ने से व्यवसाय में उन्नति की योजना बनेगी। परन्तु शनि साढ़ेसति के कारण आशानुकूल लाभ नहीं हो पाएगा। बनते कामों में अड़चनें भी रहेंगी यद्यपि निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

फ़रवरी—बनते हुए कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी। यात्राओं में समय व्यतीत होगा। व्यर्थ की परेशानियां होंगी। मित्रों या सम्बन्धी से झगड़े का भय बना रहेगा। विद्यार्थियों को परिश्रम व संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा।

मार्च—इस मास अकस्मात् धन प्राप्ति के योग हैं। किसी प्रियजन की सहायता से कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। शनि साढ़ेसति के कारण मानसिक परेशानी रहेगी। परन्तु सन्तान पक्ष इज्जत को बढ़ायेगा। किसी उपलब्धि के सम्बन्ध में बेचैनी रहेगी।

अप्रैल—मासारम्भ में गत किए गए प्रयासों में सफलता मिलेगी। गृह में कोई मंगलकार्य भी सम्पन्न होगा। घरेलू उलझनों के कारण मन अशान्त रहेगा। खर्च भी बढ़–चढ़ कर होगा। धार्मिक कार्य में रूचि और वाहनादि सुख–साधनों पर खर्च होगा। श्री सुन्दरकांड का पाठ मंगलवार और शनिवार को करना शुभ रहेगा।

मई—पूर्वार्द्ध भाग में नए–नए लोगों से मेल–जोल और व्यवसाय में विशेष योजनाएं विचाराधीन रहेंगी। परन्तु सन्तान सम्बन्धी चिन्ता, सन्तान को कैरियर व विद्या के क्षेत्र में विशेष संघर्ष रहे। ता. 15 से मंगल–शनि मिथुन में संचरित और सूर्य द्वादश आने से शरीर कष्ट, नेत्र पीड़ा, मानसिक तनाव, पारिवारिक परेशानी और अकस्मात् खर्च में वृद्धि हो।

जून—अत्यधिक परिश्रम के बाद धन लाभ और सुख–साधनों में वृद्धि होगी। व्यर्थ की भागदौड़ और धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा। किसी नए कार्य की योजना को क्रियान्वित रूप देने में अड़चनें आएंगी।

जुलाई—संघर्ष के बावजूद धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। कुछ रुके हुए कार्य बनेंगे। परिवार की ओर से शुभ समाचार प्राप्त होगा। उत्तरार्द्ध भाग में आलस्य में वृद्धि, अधिकांश समय व धन मनोरंजक कार्यों पर खर्च होगा। श्री शिव उपासना करना कल्याणकारी होगा।

अगस्त—राशिस्वामी बुध इस मास मिथुन में ही शनि के साथ संचार करेगा। व्यवसायिक व्यस्ततायें बढ़ेंगी। नए कार्य की योजना में कुछ विघ्नों के उपरान्त सफलता के आसार बढ़ेंगे। 16 अग. के बाद निकट बन्धुओं के साथ मनमुटाव तथा उत्तेजना बढ़ेगी। स्वास्थ्य भी ढीला रहेगा।

सितंबर—6 सितं. से शनि कर्क में बुध के साथ मेल करेगा। रुके हुए कार्यों में प्रगति और यात्रा के योग भी हैं। आशानुकूल लाभ के लिए विशेष परिश्रम आवश्यक रहेगा। निकट बन्धुओं से कुछ मनमुटाव और अकारण ही झगड़े के आसार बढ़ेंगे।

अक्तूबर—बुध सिंह राशि में संचार करेगा। व्यवसाय में निर्वाह योग्य धन प्राप्त होगा। परन्तु अप्रत्याशित खर्चों के कारण गृह में अशान्ति का माहौल बनेगा। मासान्त में उन्नति के अवसर मिलेंगे परन्तु पारिवारिक व्यस्तता के कारण विशेष लाभ नहीं होगा।

नवंबर—पूर्वार्द्ध भाग में बुध–गुरु के योग के कारण आर्थिक कार्यों में व्यवधान होने पर भी गुजारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। किसी निकट बन्धु से तनाव हो। 17 नवं से तुला का बुध होगा। संयमपूर्वक व्यवहार और संयमित व मधुर वाणी द्वारा हालात में कुछ परिवर्तन होंगे।

दिसंबर—आशाओं में सफलता तथा अकस्मात् धन प्राप्ति के योग बनेंगे। किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। ता. 15 से उत्तरार्द्ध भाग में स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी, मानसिक तनाव एवं खर्च अधिक और आय कम होगी। किसी प्रिय व्यक्ति के व्यवहार के मन विक्षुब्ध होगा।

कर्क (Cancer)—(हि, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

ग्रहगोचर—नए वर्ष में कर्क राशिपर शनि साढ़ेसति का प्रभाव चढ़ती हुई अवस्था में होगा। 24 जन. से 10 मार्च तक इस राशि पर मंगल की अशुभ दृष्टि रहेगी। जिससे स्वास्थ्य में कमी और घरेलू परेशानियां बढ़ेंगी। 6 सिंत से वर्षान्त तक इस राशि पर शनि का संचार होने से बनते कामों में विघ्न–बाधाएँ एवं अड़चनें पड़ेंगी।

वर्ष प्रवेश कुण्डली

गु. 5, श. 3, 6, 4, 2, 7 के., 1 रा. चं., 8, 10 शु., 12 मं., 9 सू. बु., 11

जनवरी—8 जन. तक शुक्र की दृष्टि रहने से मनोरंजन आदि में विशेष

रूचि रहेगी। सुख–साधनों, वाहनादि पर खर्च होगा। सोची हुई योजनाओं में सफलता मिले। 21 जन. से मंगल की दृष्टि रहने से स्वास्थ्य में खराबी, घरेलू, परेशानियां बढ़ेंगी। परंतु मंगल दशमस्थ होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

फरवरी–पूर्वार्द्ध भाग में कार्य व्यवसाय के लिए दौड़ धूप अधिक रहेगी। अत्यधिक परिश्रम करने पर धन लाभ अल्प होगा। शनि की दृष्टि के कारण घरेलू उलझनें एवं आर्थिक परेशानियाँ अधिक रहेंगी। उत्तरार्ध भाग में कुछ बिगड़े काम बनेंगे। उच्च–प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे।

मार्च–कार्य व्यवसाय में अड़चनों के बावजूद दैनिक कार्यों में सफलता मिलेगी। व्यर्थ की दौड़ धूप, खर्च की अधिकता और प्रिय बन्धु से मनमुटाव होगा। उत्तरार्द्ध भाग में मंगल आदि ग्रहों का सम्बन्ध होने से आय के साधनों में वृद्धि और सन्तान से खुशी मिलेगी। सुख साधनों पर खर्च होगा।

अप्रैल–पराक्रम में वृद्धि एवं आय के साधनों में बढ़ौत्तरी होगी। व्यवसायिक व्यस्तताएं बढ़ेंगी। आँखों में कष्ट और चमड़ी रोग होने की सम्भावना होगी। उत्तरार्द्ध भाग में मान प्रतिष्ठा में वृद्धि और लाभ के अवसर बढ़ेंगे। शनि के कारण मानसिक तनाव होगा।

मई–मासारम्भ में सूर्य दशमस्थ तथा 6 मई से शुक्र द्वादशस्थ संचार होने से परिश्रम, पराक्रम के कारण कार्य–व्यवसाय में वृद्धि होगी परन्तु अनावश्यक खर्च भी अधिक रहेंगे। कुछ रुके हुए अधूरे कार्य विशिष्ट व्यक्तियों के सहयोग से पूर्ण होने के योग परन्तु शनि साढ़ेसति एवं दशमस्थ राहु के कारण अड़चनों का सामना अवश्य रहेगा।

जून–मासारम्भ में सूर्य एकादश में होने से कैरियर सम्बन्धी योजनाएं बनेंगी। किसी नवीन विद्या की ओर रुचि होगी। शनि साढ़ेसति के कारण मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें होंगी। 10 ता. के बाद बिगड़े कामों में सुधार होगा। मासान्त में शरीर कष्ट, उदर विकार और चोटादि का भय रहेगा।

जुलाई–शनि साढ़ेसति एवं मंगल संचार के कारण आशा के विपरीत खर्च अधिक रहेगा। स्वास्थ्य में गड़बड़, तनाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। परिश्रम व उत्साह में कमी, क्रोध, उत्तेजना अधिक रहेगी। व्यवसायिक क्षेत्र में अस्थिरता में उथल–पुथल के हालात का सामना रहे।

अगस्त–मासारम्भ में सूर्य कर्क राशि में संचार करने से आंखों में कष्ट व रक्त विकार का भय होगा। व्यवसाय में उतार–चढ़ाव व कुछ परेशानियां अवश्य रहेंगी। महत्त्वपूर्ण कार्यों में विलम्ब होने के संकेत मिलते हैं। सावधानी बरतें। स्त्री या माता का स्वास्थ्य नर्म रहे।

सितंबर–पूर्वार्द्ध भाग में विघ्न–बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। 6 सितं. से शनि कर्क राशि में आ जाने से उलझनें व तनाव बढ़ेगा। कलह–क्लेश के कारण गृह में अशान्ति होगी। भाई–बन्धुओं का सहयोग कम होगा। गुप्त शत्रु हानि पहुँचाने का प्रयास करेंगे। व्यवसाय सम्बन्धी परेशानियां तथा स्त्री/पति का स्वास्थ्य खराब रहे।

अक्तूबर–मासारम्भ में सूर्य–शनि की तृतीय–दशम स्थिति निकट सम्बन्धियों से मनमुटाव/तनाव उत्पन्न करेगी। कठिन परिस्थितियों के बावजूद धन प्राप्ति के कुछ साधन बनते रहेंगे। उत्तरार्द्ध भाग में परिवार में शुभ कार्यों पर व्यय, जमीन–जायदाद या वाहनादि का क्रय–विक्रय होगा।

नवंबर–पूर्वार्द्ध भाग में परिवार में किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में भी धन लाभ रहे। खर्चों में अधिकता हो। आलस्य, भय एवं शंकाओं के कारण लाभदायक अवसर हाथ से निकल जाएंगे। किसी निकट सम्बन्धी से धोखा मिलने के संकेत हैं।

दिसंबर–शनि की साढ़ेसति के कारण बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। आशाओं के अनुरूप सफलता प्राप्ति नहीं होगी। कुछ विवादास्पद मामलें मानसिक तनाव का कारण बनेंगे। किसी निकट सम्बन्धी से तकरार होगी। उत्तरार्ध भाग में यात्रा अथवा विदेशगमन की योजना बनेगी।

सिंह राशि (Leo)—(म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे)

वर्ष प्रवेश कुण्डली

6, 5 गु., 4, 7 के., 3 श., 8, 2, 9 बु. सू., 11, 1 रा. चं., 10 शु., मं. 12

ग्रहगोचर–वर्षारम्भ से 26 अग. तक गुरु का संचार रहेगा परन्तु 5 सितं तक शनि की तीसरी दृष्टि भी रहेगी, फलस्वरूप उलझनों के बावजूद निर्वाह योग्य आय से साधन बनते रहेंगे। 6 सितं से शनि की साढ़ेसति का प्रभाव होने से घरेलू एवं आर्थिक उलझनों का सामना रहेगा।

जनवरी–गुरु लग्नस्थ संचार करने से शुभ कार्यों पर खर्च होगा। तीर्थ यात्रा के भी संयोग बनेंगे। ता. 11–12 को कुछ सोची हुई योजनाओं में सफलता और व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर बढ़ेंगे। शुक्र भी सप्तमस्थ होने से सुख साधनों एवं पारिवारिक खर्च में वृद्धि होगी। संक्रान्ति से शिव महापुराण का पाठ करना शुभ रहेगा।

फरवरी–मासारम्भ में सूर्य–बुध षष्ठस्थ होने से यद्यपि धनागमन के साधन बनते रहेंगे। परिवार में शुभ एवं धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा। परन्तु आंखों में कष्ट, गुप्त रोग और सरकारी कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। उत्तरार्द्ध में सूर्य की स्वगृही दृष्टि होने से मान–सम्मान में वृद्धि, कुछ बिगड़े काम बनेंगे।

मार्च–मान–सम्मान में वृद्धि के साथ–साथ क्रोध, उत्तेजना एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी गड़बड़ी भी रहेगी। किसी नवीन वस्तु, वाहनादि का क्रय–विक्रय होगा। 11 मार्च से मंगल की दृष्टि तथा उत्तरार्द्ध में सूर्य अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। व्यावसायिक क्षेत्र में सांझेदारी के कार्यों में परेशानी तथा सन्तान सम्बन्धी चिन्ता रहे।

अप्रैल–मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप क्रोध, उत्तेजना अधिक रहे। व्यवसाय में उथल–पुथल रहे। ता. 10,11 को किसी नए कार्य की योजना बनेगी परन्तु अभी एक–दो माह तक क्रियान्वित नहीं हो पाएगी। किसी प्रिय बन्धु को शरीर कष्ट, अचानक तीर्थ स्थल की यात्रा होगी।

मई–पूर्वार्द्ध में शुभ एवं धार्मिक कार्यों पर धन का व्यय होगा। परंतु पारिवारिक सदस्यों के व्यवहार में कुछ रूखापन और असुन्तष्टता प्रकट होगी। खर्च की अधिकता से भी मन परेशान रहेगा। भाग्यस्थान में सूर्य–राहु योग होने से बनते कार्यों में अड़चने रहें। ता. 16 के बाद कुछ सुधार होगा।

जून–इस मास में मिश्रितफल प्राप्त होगा। अत्यधिक भागदौड़ करने पर धन लाभ अल्प और मानसिक तनाव रहेगा। मासान्त में कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। विद्या के क्षेत्र में नये सम्पर्कों से विशेष रूचि पैदा होगी। शुभ एवं धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा।

जुलाई–कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता के योग हैं। किसी उच्च प्रतिष्ठित मित्र के सहयोग से बिगड़ा कार्य बनेगा। धर्म–कर्म की ओर रूचि बढ़ेगी। परन्तु शनि की दृष्टि के कारण मानसिक दबाव भी रहेगा। अधिकांश समय मनोरंजन एवं वृथा कार्यों में व्यतीत होगा।

अगस्त–मासारम्भ में मंगल–गुरु तथा सूर्य द्वादशस्थ होने से व्यवसाय में धन लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। उच्च–प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे। घर–परिवार में मंगल कार्य के आयोजन के योग हैं। ता. 16 के बाद संतार के किसी विशेष कार्य में सफलता और भाग्यवृद्धि होगी।

सितंबर–मासारम्भ में सूर्य–मंगल का संचार होने से दैनिक कार्यों एवं सरकारी क्षेत्रों में कुछ रुके हुए कार्यों में प्रगति होगी। ता. 6 से शनि साढ़ेसति के प्रभाव के कारण पारिवारिक एवं निजी व्यस्तताओं के कारण लाभ में कमी रहेगी। स्वभाव में क्रोध एवं चिड़चिड़ापन रहेगा। कुछ सोची योजनाओं में आंशिक सफलता प्राप्त होगी।

अक्तूबर–व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। घरेलू परेशानियों के कारण मन व्यथित रहेगा। परिश्रम एवं प्रयास करने से कुछ हालात में सुधार होगा परंतु धन संचय करने में कठिनाई होगी। मासान्त में परिवार में अकारण ही विरोधाभास और तनाव उत्पन्न हो। स्वास्थ्य में खराबी रहे।

नवंबर—शनि की साढ़ेसति के कारण व्यर्थ की भागदौड़, वृथा यात्रा, अकारण क्रोध और चोटादि का भय रहेगा। परंतु ता. 14 के पश्चात् व्यवसाय में लाभ और नए–नए लोगों से सम्पर्क बढ़ेंगे। मित्रों और स्वजनों के सहयोग से कोई रुका हुआ कार्य बनने के आसार बढ़ेंगे।

दिसंबर—इस मास में विशेष उतार–चढ़ाव और पारिवारिक परेशानियों का सामना रहेगा। आलस्य में वृद्धि और व्यर्थ के कामों में समय व्यतीत होगा। उत्तरार्द्ध भाग में मनोरंजन के कार्यों पर खर्च परन्तु शनि की साढ़ेसति के कारण अकस्मात् गुप्त चिन्ता, गुप्तरोग व चोटादि का भय रहेगा।

कन्या राशि (Virgo)—(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

वर्ष प्रवेश कुण्डली



ग्रहगोचर—वर्षारम्भ से 24 जन. तक मंगल की सातवीं दृष्टि रहेगी, फलस्वरूप घरेलू परिस्थितियों के कारण भागदौड़ एवं तनाव अधिक होगा। 27 अग. से गुरु की कन्या राशि में प्रवेश करने से मानसिक तनाव रहे, धार्मिक कार्यों की ओर रूचि रहे। 6 सितं. से शनि कर्क में आकर कन्या राशि पर तृतीय दृष्टि रखेगा।

जनवरी—मासारम्भ में मंगल की सप्तम दृष्टि के कारण मानसिक तनाव व उत्तेजना अधिक रहेगी। यद्यपि निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। फिर भी खर्च की अधिकता और व्यवसायिक परेशानी भी होगी। सन्तान सम्बन्धी कार्यों में कुछ परेशानी रहेगी। बनते कामों में कुछ विघ्न उत्पन्न होंगे।

फरवरी—ता. 3 से बुध मकर में सूर्य युक्त और शुक्र भी मीन राशि में आने से सन्तान सम्बन्धी चिन्ता और सन्तान के कैरियर सम्बन्धी नयी–नयी योजनाएं बनेंगी। उत्साह में वृद्धि और धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। उत्तरार्द्ध में षष्ठ भाव में सूर्य–बुध योग रहने से शत्रुओं पर सफलता मिलेगी। स्त्री एवं सवारी सम्बन्धी सुखों में वृद्धि होगी।

मार्च—धन लाभ मध्यम परन्तु खर्च अधिक होंगे। उच्च–प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। मासान्त में आय की अपेक्षा धन का खर्च अधिक, अफसरों से तनाव और सोची हुई योजनाओं में विघ्न उत्पन्न होंगे। धन संचय में रुकावटें रहेंगी।

अप्रैल—मासारम्भ से ही बुध वक्री होने से कार्य व्यवसाय में विशेष बढ़ोत्तरी नहीं होगी। स्वास्थ्य ढीला रहेगा। ता. 9 से बुधास्त और बुध राहु युक्त होने से शरीर कष्ट और चोटादि का भय रहेगा। ता. 12 से व्यवसाय में अत्यन्त कठिन परिश्रम एवं संघर्ष के पश्चात् ही निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। खर्च बहुत अधिक होंगे।

मई—बुध मार्गी होने से हालात में सुधार होगा। परन्तु दाम्पत्य जीवन में कुछ तनाव रहे। पैतृक सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद से चिन्ता रहेगी। व्यवसायिक क्षेत्र में लाभ के अवसर मिलेंगे। विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति, विदेशी सम्बन्धियों से शुभ समाचार भी मिलेगा। पति–पत्नी के स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ता भी रहेगी।

जून—मासारम्भ में व्यर्थ यात्रा, व्यर्थ की भागदौड़ और खर्च अधिक रहेगा। ता. 2 को बुध भाग्य स्थान में सूर्य युक्त संचार करने से कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार, धनागमन के साधनों में वृद्धि और विदेशी कार्यों में प्रगति होगी। परन्तु ता. 5 के पश्चात् परिवार में कुछ मतभेद उभरेंगे। सुख साधनों पर खर्च और धन सम्बन्धी विवाद के योग हैं।

जुलाई—मासारम्भ से ही बुध लाभ स्थान में होने से व्यवसाय की दृष्टि से शुभ रहेगा। यद्यपि आय के साधनों में वृद्धि होगी। खर्च भी बढ़–चढ़ होंगे। ता. 16 के बाद विगत किए प्रयासों का प्रतिफल मिलेगा। प्रिय बन्धु से मुलाकात और पारिवारिक सहयोग से उन्नति के अवसर भी मिलेंगे।

अगस्त—इस मास में बुध–गुरु योग द्वादश होने से मिश्रित फल प्राप्त होगा। धनागमन के साधनों में वृद्धि के साथ–साथ किसी विशेष कार्य में धन खर्च करने की योजना बनेगी। संतान के किसी विशेष कार्य के बनने से अकस्मात् धन का व्यय होगा। शुभ एवं धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी।

सितंबर—ता. 6 से शनि कर्क राशि में आने से इस राशि पर तृतीय दृष्टि के कारण कार्य–व्यवसाय में विशेष परिवर्तन होंगे। व्यर्थ की भागदौड़ भी रहेगी। कार्यशैली में कुछ परिवर्तनों के पश्चात् ही लाभ के अवसर मिलेंगे। ता. 16 से इस राशि पर सूर्य–गुरु का संचार होने से परिवार में शुभ एवं धार्मिक कार्य सम्पन्न होंगे।

अक्तूबर—शनि की दृष्टि के कारण व्यर्थ की भागदौड़ और परिवर्तनों के उपरान्त ही व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता मिलेगी। ता. 12 से बुध केतु युक्त होने से धन सम्बन्धी परेशानी और व्यावसायिक कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। मासान्त में यत्किंचित साधनों द्वारा धन प्राप्ति के साधन बनेंगे।

नवंबर—मासारम्भ से सूर्य–केतु द्वितीय और राशिस्वामी बुध तृतीय भाव में स्वास्थ्य परेशानी, आर्थिक तंगी, बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। परिवार में संतान सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। धन का खर्च अधिक होगा। दौड़ धूप अधिक करने पर भी निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। वाहन आदि व घर की साज–सज्जा पर खर्च अधिक होगा। भाई बन्धु से कुछ तनाव रहे।

दिसंबर—मासारम्भ में बुध वक्री रहने से लाभ कम और परिश्रम अधिक रहेगा। किसी विशेष व्यक्ति के सहयोग से भूमि सम्बन्धी कार्यों में कुछ प्रगति होगी। सांझेदारी के कार्यों में मान–इज्जत बढ़ेगा परंतु विशेष लाभ नहीं होगा। 20 दिसं. से बुध मार्गी होने से व्यवसाय में हालात बेहतर होंगे। मासान्त में यात्रा भी होगी।

तुला राशि (Libra)—रा, री, रु, रे, रो, ता, ति, तु, ते

वर्ष प्रवेश कुण्डली



ग्रह गोचर—इस राशि पर केतु का संचार वर्षभर रहेगा। जिससे वर्ष में संघर्ष अधिक रहेगा, परन्तु राशिस्वामी शुक्र स्थिति अच्छी होने से लाभ की सम्भावनाएं भी रहेंगी। 3 फर. से शुक्र उच्चराशि (मीन) में होने से स्त्री, भूमि, सवारी आदि सुखों की प्राप्ति होगी।

जनवरी—पूर्वार्द्ध भाग में कार्य–क्षेत्र में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। नवीन कार्य की योजना बनेगी। परन्तु इस राशि पर मंगल की दृष्टि होने के कारण मानसिक तनाव, उत्तेजना तथा दौड़ धूप अधिक रहे। ता. 18 को शुभ कार्यों और धार्मिक उत्सवों में उपस्थिति मान प्रतिष्ठा बढ़ाएगी। कुछ आन्तरिक समस्याएं तथा उलझनें भी होंगी।

फरवरी—मास के आरम्भ में शुक्र उच्च राशि का होने से शुभ फल घटित होंगे। पराक्रम में पर्याप्त वृद्धि होगी। कुछ बिगड़े कार्य बनेंगे। किसी श्रेष्ठ पदाधिकारी से सम्पर्क स्थापित होंगे। खर्च की अधिकता से मानसिक परेशानी भी रहेगी।

मार्च—मास के आरम्भ से ही राशि स्वामी शुक्र की तुला राशि पर स्वगृही दृष्टि पड़ेगी। जिससे विघ्न बाधाओं के बावजूद आय के साधन बनते रहेंगे। राहु के कारण मानसिक तनाव व घरेलू उलझनें भी रहेंगी। खर्च अधिक होंगे।

अप्रैल—विघ्न बाधाओं के बावजूद गुजारे योग्य धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त हों। किसी उच्चाधिकारी से सम्पर्क स्थापित होंगे। स्त्री सुख एवं घर परिवार की ओर से खुशी का समाचार मिलेगा। सप्ताहान्त में किसी निकट बन्धु से कलह–क्लेश का भय होगा। सावधानी बरतें। धन का खर्च सोच समझकर करें।

मई—मासारम्भ में आय कम और खर्च अधिक रहेगा। व्यर्थ की भागदौड़ और फिजूल खर्ची बढ़ेगी। धन की हानि एवं स्वास्थ्य नर्म होगा। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। सन्तान सम्बन्धी कष्ट

एवं चिन्ता बढ़ेगी। मन में अशान्ति व क्रोध की मात्रा अधिक होगी। उच्च विद्या में विघ्न, किसी श्रेष्ठ व्यक्ति से मुलाकात, विलासादि की वस्तुओं पर व्यय अधिक होगा।

जून–मासारम्भ में शुक्र वक्री होने से व्यर्थ यात्रा की परेशानी उठानी पड़ेगी। गुज़ारे योग्य धन प्राप्ति व उन्नति के योग हैं। भाई–बन्धुओं का सहयोग प्राप्त होगा। व्यर्थ के झंझटों से दूर रहें। अन्यथा हानि होने की आशंका होगी। भागदौड़ करने पर भी आय अल्प होगी।

जुलाई–शुभ समाचार तथा अप्रत्याशित लाभ की प्राप्ति होगी। परिवार में मेलजोल बढ़ेगा। कार्य–व्यवसाय व नौकरी में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। उत्तरार्ध भाग में किसी बिगड़े कार्य के बनने के आसार बनेंगे। नवीन कार्य योजना के बनने से उत्साह बनेगा।

अगस्त–मासारम्भ में शुक्र भाग्यस्थान में होने से किसी प्रिय व्यक्ति से मुलाकात होगी। भाई–बन्धु से सहयोग प्राप्त होगा। अकस्मात् धार्मिक स्थल की यात्रा होगी। परिवार में खुशी का समाचार मिलेगा। विद्यार्थियों को विद्या में सफलता के लिए अत्यन्त परिश्रम एवं स्वाध्याय करने से लाभ होगा।

सितम्बर–सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी, परन्तु धन का खर्च विलास–मनोरंजन आदि कार्यों पर अधिक होगा। मासान्त में अधिकांश समय वृथा कार्यों में व्यतीत होगा। किसी प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। केतु के कारण व्यर्थ के वाद–विवाद से बचें।

अक्तूबर–पराक्रम में पर्याप्त वृद्धि होगी। बिगड़े कार्य बनेंगे। किसी श्रेष्ठ पदाधिकारी से सम्पर्क स्थापित होंगे। खर्चों की अधिकता से मानसिक परेशानी होगी। धैर्यपूर्वक परिश्रम करने से स्थिति में सुधार होगा। उत्तरार्ध में किसी मंगल कार्य पर खर्च होगा। नए लोगों के साथ सम्पर्क होगा। देश/विदेश की यात्रा के विचार बनेंगे।

नवम्बर–ता. 17 से शुक्र इसी राशि में प्रविष्ट करने से मंगल शुक्र एवं केतु ग्रहों का योग बनेगा। परिस्थितियों में विशेष उतार–चढ़ाव पैदा होंगे। आय कम परन्तु खर्च अधिक रहेंगे। निकट बन्धुओं के साथ मन–मुटाव रहेगा। वृथा विवाद से बचने की चेष्टा करें।

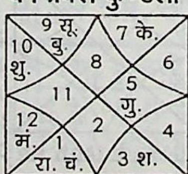
दिसम्बर–स्वास्थ्य कुछ नर्म रहे। स्वभाव में तेज़ी रहेगी। व्यर्थ की भाग दौड़ अधिक होगी। विरोधी हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे। कठिनाइयों के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होती रहेगी। किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी। श्री दुर्गासप्तशती का नियमित पाठ करना कल्याणकारी होगा।

अधिक विस्तृत फलादेश हेतु हमारे कार्यालय में वर्षफल बनवाएं।

बृश्चिक राशि (Scorpio)-(तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

ग्रहगोचर–इस राशि पर शनि की ढैय्या 5 सितं. तक रहेगी, जबकि 24 जन. से 26 अप्रै. तक मंगल की स्वगृही दृष्टि पड़ेगी, फलस्वरूप इस राशि वालों को संघर्ष व कठिन परिस्थितियों के बावजूद अप्रैल मास तक निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

वर्ष प्रवेश कुण्डली



जनवरी–मासारम्भ में मंगल पंचम भाव में होने से सर्विस अथवा व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़े। अत्यधिक भागदौड़ करने पर भी आय से व्यय अधिक होगा। मासान्त में स्थिति में सुधार की आशा है। कुछ आन्तरिक समस्याएं अभी बनी ही रहेंगी। कुछ सन्तुलन और संयम रखना उचित होगा, अन्यथा हानि हो सकती है।

फरवरी–मासारम्भ से इस राशि पर मंगल की स्वगृही अष्टम रहने से कठिन एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि तथा उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बढ़ेगा। नए–नए मित्रों के साथ सम्पर्क भी बनेंगे।

मार्च–मंगल की स्वगृही दृष्टि पड़ रही है। व्यापार–नौकरी में उन्नति के साधन बढ़ेंगे। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। विलासादि कार्यों पर अधिक व्यय होगा। विदेश से पत्राचार होगा। शुभ समाचार मिलेगा। घर में धार्मिक उत्सव होगा। वाहनादि खरीदने का साधन बनेगा। आमदनी में वृद्धि होगी। अकस्मात् यात्रा होगी। इस राशि की स्त्रियों एवं विद्यार्थियों के लिए इस सप्ताह का फल शुभ होगा।

अप्रैल–विघ्न बाधाओं के बावजूद धन लाभ व कार्यों में सफलता प्राप्त हो। कारोबार में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन का विचार बने। यात्रा का प्रोग्राम बनेगा। प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। मासान्त में स्त्री सुख व शुभ समाचार मिले। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय संघर्षपूर्ण ही रहेगा।

मई–मासारम्भ से राशिस्वामी मंगल अष्टमस्थ संचार करने से स्वास्थ्य में गड़बड़ी, रक्त–पित्त विकार, नेत्र पीड़ा एवं परिश्रम व उत्साह में कमी रहेगी। स्वभाव में क्रोध एवं चिड़चिड़ापन रहेगा। संयमपूर्ण व्यवहार करें। शत्रुओं के कारण कोई बनता कार्य रुक सकता है।

जून–मासारम्भ में सूर्य की शुभ दृष्टि पड़ने से कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी। धन लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। शुक्र की दृष्टि के कारण घर–परिवार में सुखद वातावरण होगा। मासान्त में यात्रादि पर व्यय होगा।

जुलाई–मंगल नीच राशि में होने के कारण व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहे। अत्यन्त संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति हो सकेगी। मन परेशान तथा क्रोध अधिक रहे। परिवार में मनमुटाव व बन्धुओं से टकराव के हालात पैदा होंगे। शत्रुओं के कारण कोई बनता कार्य रुक सकता है। किसी निकट शत्रु से गुप्त हानि पहुँचाने के संकेत हैं।

अगस्त–मासारम्भ से मंगल की स्वगृही दृष्टि के कारण परिश्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। कई रुके हुए कार्य पूरे होंगे। नए लोगों से मेल–मिलाप होगा। अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। घरेलू उलझनों व अपव्यय के कारण भी तनाव अधिक रहेगा।

सितम्बर–16 सितं. तक मंगल की दृष्टि रहने से आय की स्थिति में कुछ सुधार होगा। निर्वाह योग्य आमदन के साधन बनेंगे। परन्तु मंगल की दृष्टि एवं शनि साढ़ेसति के कारण बनते कार्यों में अड़चनें पड़ने के संकेत हैं। स्वास्थ्य में भी गड़बड़ रहेगी। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। पेट विकार से स्वास्थ्य खराब रह सकता है। श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ करना कल्याणकारी होगा।

अक्तूबर–मासारम्भ में ही शुक्र मंगल के साथ होकर नीच राशि कन्या में संचार कर रहा है। जिससे बनते कार्यों में विघ्न और विलम्ब होगा। नौकरी में किसी से धोखा मिल सकता है। खर्च की अधिकता से मन परेशान और अशान्त रहेगा। शरीर कष्ट और चोटादि का भय रहेगा। किसी निकट बन्धु से धोखा मिलने के संकेत हैं। मंगल स्तोत्र का पाठ करना तथा मंगलवार का व्रत करना शुभ रहेगा।

नवम्बर–मासारम्भ से इस राशि पर बुध का संचार चल रहा है। परेशानियों का सामना रहेगा। दूरस्थ यात्राएं और व्यर्थ की चिन्ता रहेगी। संतान सम्बन्धी चिन्ता और स्वास्थ्य में खराबी के योग हैं। मासान्त में अदालत के कार्यों में परेशानी तथा शत्रुओं से विशेष सतर्क रहे। घरेलू उलझनें भी बढ़ेंगी। सप्ताह में पक्षियों को बाजरा और गौओं को मीठी चपातियां व हरा चारा खिलाना शुभ रहेगा।

दिसम्बर–सप्ताहारम्भ में इस राशि पर सूर्य का संचार रहेगा। मान–सम्मान में बढ़ौत्तरी और परिवार में अकस्मात् खुशी का वातावरण होगा। ज़मीन जायदाद तथा वाहन आदि का क्रय–विक्रय होगा। नए सम्बन्धियों से मेल–जोल बढ़ेगा। विघ्नों के बावजूद कार्य व्यवसाय में उन्नति के योग हैं।

धनु राशि (Sagittarius)-(ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे)

वर्ष प्रवेश कुण्डली

10 शु., 9 सू. बु., 8, 11, 12 मं., 7 के., 1 चं. रा., 6, 3 श., 5 गु., 2, 4

गृह गोचर–वर्षारम्भ से 5 सितं. तक धनु राशि पर शनि की दृष्टि रहेगी। गुरु की दृष्टि 26 अग. तक रहेगी। गुरु की दृष्टि 26 अग. तक रहेगी। जिससे वर्ष के पूर्वार्द्ध भाग तक इस राशि पर शुभाशुभ (मिश्रित) प्रभाव रहेगा। 6 सितं. से इस राशि पर शनि की ढैय्या के कारण वर्षान्त तक बनते कामों में अड़चनें, वृथा भ्रमण, अपव्यय, पारिवारिक कलह–क्लेश आदि अशुभ फल घटित होंगे।

जनवरी–मासारम्भ में भी भाग्येश सूर्य का संचार है तथा गुरु की भी शुभ दृष्टि है। किसी धार्मिक कार्य पर धन का खर्च होगा। अधिकांश समय मनोरंजन में व्यतीत होगा। मन में उत्साह और प्रसन्नता होगी। विशेष परिश्रम से कार्य की सिद्धि होगी। मानसिक तनाव व क्रोध की भावना अधिक रहेगी। व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। उलझनपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद लाभ के अवसर प्राप्त होंगे।

फरवरी–मासारम्भ में अतिप्रिय व्यक्ति से मुलाकात होगी। भाई–बन्धु से सुख प्राप्त होगा। अकस्मात् धार्मिक स्थल की यात्रा होगी। परिवार में खुशी का माहौल होगा। गुरु सिंह राशि में ही वक्री होने से परिस्थितियों में विशेष उतार–चढ़ाव होने की सम्भावना है। धन का अपव्यय भी होगा। विद्यार्थी वर्ग को विद्या में तनाव व व्यस्तता बढ़ेगी। महिलाओं को सन्तान सम्बन्धी चिन्ता होगी।

मार्च–दैनिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यापार को बढ़ाने में मित्रों और सम्बन्धियों का सहयोग प्राप्त होगा। नये लोगों से मेल–मिलाप होगा। वाहन आदि पर खर्च होगा। धर्म–कर्म में रूचि बढ़ेगी। नौकरी में उन्नति होगी परन्तु खर्च अधिक और स्थान परिवर्तन के भी योग हैं। मासान्त में अचानक यात्रा होगी। यात्रा में चोटादि का भय रहेगा। सावधानी बरतें।

अप्रैल–धार्मिक कार्यों में प्रवृत्ति बनेगी। कामकाज अथवा व्यापार का विस्तार होगा। दूसरों पर काम छोड़कर विश्वास करना हानिकारक होगा। व्यर्थ की परेशानी उत्पन्न हो। आलस्य व उत्तेजना अधिक रहेगी। मासान्त में महत्त्वपूर्ण कार्यों में बाधाओं का सिलसिला जारी रहेगा। अकस्मात् होने वाली यात्रा में सावधानी बरतें। पर्वकाल में दिवंगत पितरों का श्राद्ध–तर्पण एवं यथायोग्य दान करना कल्याणकारी होता है।

मई–शनि की सप्तम दृष्टि के अकारण क्रोध, उत्तेजना, व्यर्थ की भागदौड़ लगी रहेगी। वृथा यात्रा, शत्रु भय, मानसिक तनाव, अवांछित स्थान परिवर्तन से परिवार में कलह–क्लेश रहेगा। सप्ताहान्त में भूमि व वाहनादि का सुख प्राप्त होगा। गृह में शुभ कार्य पर खर्च होगा। यात्रा में चोटादि का भय रहेगा। सावधानी बरतें।

जून–मासारम्भ में इस राशि पर मंगल की दृष्टि रहने से यद्यपि तनाव एवं क्रोध अधिक रहेगा किन्तु गुरु की शुभ दृष्टि होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। उच्च प्रतिष्ठित मित्रों के साथ सम्बन्ध बढ़ेंगे। मासान्त में किसी तीर्थस्थल अथवा पर्यटन स्थल की यात्रा भी होगी।

जुलाई–धन लाभ साधारण रूप से हो। कार्य क्षेत्र में दौड़धूप अधिक रहेगी। खर्चों की अधिकता से मन परेशान होगा। विशेष परिश्रम और भागदौड़ के उपरान्त सफलता के संकेत मिलते हैं। राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी। विशेष सम्पर्कों का लाभ यथाशीघ्र होगा। मासान्त में किसी शुभ समाचार के मिलने के योग है। अकस्मात् यात्रा का योग बनेगा।

अगस्त–व्यवसायिक कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। नवीन योजनाएं बनेंगी। परिश्रम करने से कार्य सिद्धि होगी। हर्ष मिलेगा। वित्तीय कार्यों में पराक्रम बढ़ेगा। नवीन और शुभ समाचार मिलेंगे। व्यवसाय–नौकरी में विघ्न–बाधाएं बनी रहेंगी। ता. 5 के बाद असमंजस की स्थिति से छुटकारा मिलेगा। घर परिवार में सुखद वातावरण होगा। परिवार में कोई शुभ समाचार मिलेगा।

सितम्बर–गुरु कन्या राशि में संचार कर रहा है। मासारम्भ में भागदौड़ अधिक रहे। चिन्ताओं में वृद्धि तथा फिजूल खर्ची बढ़ेगी। अकस्मात् यात्रा के भी योग हैं। किसी निकट बन्धु से मन मुटाव पैदा हो। कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी। किसी शुभ कार्य पर धन खर्च होगा। ता. 6 से शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव शुरू होगा।

अक्तूबर–विशेष परिश्रम और भागदौड़ से अभीष्ट कार्य की सिद्धि होगी। अधिक व्यय से मानसिक तनाव होगा। राजकीय कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। विशेष व्यक्तियों से सम्पर्क होगा। स्त्री व सन्तान सुख मिलेगा। अकस्मात् यात्रा में व्यर्थ की परेशानी और व्यस्तताएं बढ़ेंगी। ता. 22 को कोई महत्त्वपूर्ण कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा तथा उसमें सफलता भी प्राप्त होगी।

नवम्बर–मासारम्भ में मनोवांछित कार्य सम्पन्न होंगे। श्रेष्ठजनों से मुलाकात होगी। कुछ रहस्य अपने तक ही सीमित रखें, लाभकारी होगा। मासान्त में रुके हुए कार्य स्वतः हो जाएंगे। दैनिक कार्यों में कोताही न बरतें। विदेशी मित्रों से पत्राचार होगा और धन की प्राप्ति होगी। घर–परिवार में सुखद वातावरण रहेगा। परन्तु स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष सावधानी बरतें। कानूनी झंझट सुलझ जाएगा।

दिसंबर–मासारम्भ में स्वास्थ्य में खराबी और परिवारिक चिन्ता रहेगी। प्रयास करने मर किसी रुके हुए कार्य में प्रगति होगी। खर्च की अधिकता और मानसिक तनाव रहेगा। परिवार में व्यर्थ का तनाव रहेगा। अकस्मात् यात्रा होगी। ता. 21 से कार्य व्यवसाय में अकस्मात् धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे।

मकर राशि (Capricorn)—(भो, ज, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी)

वर्ष प्रवेश कुण्डली

11, 9 सू. बु., 12 मं., 10 शु., 8, 1 चं. रा., 7 के., 2, 4, 6, 3 श., 5 गु.

ग्रहगोचर–वर्षारम्भ से 7 मार्च तक शनि षष्ठ भाव में वक्री होने तथा शुक्र मकर में संचार करने से पिछले किए हुए प्रयासों में सफलता तथा घरेलू सुख–साधनों में वृद्धि होगी। 6 सितं. से वर्षान्त तक शनि की दृष्टि रहने से नई योजनाएं बनेंगी। 27 अग. से वर्षान्त तक गुरू की भी दृष्टि रहने से शुभ कार्यों की ओर प्रवृत्ति बढ़ेगी।

जनवरी–मासारम्भ में ही इस राशि पर शुक्र का संचार हो रहा है। संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद व्यवसाय में धन लाभ एवं पदोन्नति के योग हैं। स्थानान्तरण का भी योग संभव है। स्त्री व संतान सुख मिलेगा। प्रिय बन्धुओं से मिलाप हो। व्यावसायिक व्यस्तताएं बढेंगी। मासान्त में घरेलू समस्याओं पर आकस्मिक खर्चे बढ़ेंगे। मेहनत के चलते सेहत का ध्यान रखें।

फरवरी–मासारम्भ में आय कम और खर्च अधिक होगा। व्यर्थ की भागदौड़ और फिजूल खर्ची बढ़ेगी। धन की हानि एवं स्वास्थ्य नर्म होगा। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। सन्तान सम्बन्धी कष्ट एवं चिन्ता बढ़ेगी। मन में अशान्ति रहे। ता. 28 के बाद विद्या में सफलता एवं कोई मंगल कार्य होगा। श्री गणेश उपासना करना कल्याणकारी रहेगा।

मार्च–इस मास में इस राशि पर शुक्र–राहु का योग होने से परिवार में कुछ समस्याएं उत्पन्न होंगी। संतान के कैरियर सम्बन्धी परेशानी और सुख साधनों पर खर्च होगा। ता. 19–20 को व्यर्थ यात्रा पर खर्च परन्तु परिवार में तनाव और धर्म कर्म में भी आस्था कम होने लगेगी। ता. 21 से गत हालात में कुछ सुधार होगा। अनिष्ट निवारण हेतु **पापमोचनी एकादशी** का व्रत करना शुभ रहेगा।

अप्रैल–कारोबार में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। अत्यन्त कठिनाई से निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होगी। खर्चों की अधिकता से मन परेशान रहेगा। गृहस्थ जीवन में तनाव की स्थिति रहे। शरीर अस्वस्थ रहे। ता.

29 के बाद दौड़–धूप एवं घरेलू उलझनें अधिक बढ़ेंगी। आय के साधनों में विघ्न–बाधाएं रहेंगी। किसी शुभ एवं मंगल कार्य पर खर्च होगा।

मई–मासारम्भ में छठे भाव में मंगल–शनि योग होने से किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। संघर्ष एवं कठिनाइयों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। स्त्री एवं परिवार का सुख प्राप्त होगा। ता. 13 को अचानक वृथा व्यय होने के योग है। व्यर्थ की भागदौड़ से मन संतप्त रहे। पारिवारिक शान्ति के लिए सुन्दरकाण्ड का पाठ शुभ रहेगा।

जून–मासारम्भ से इस राशि पर मंगल की दृष्टि होगी, जिससे मान सम्मान में वृद्धि, धार्मिक कार्यों की ओर अभिरुचि बढ़ेगी, निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बढ़ेंगे, भूमि सवारी आदि सुख के साधनों में वृद्धि होगी। मासान्त में उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क स्थापित होंगे। महिलाओं के लिए यह मास शुभ एवं मंगलकारक रहेगा। शिव उपासना करना कल्याणकारी होगा।

जुलाई–इस मास में दौड़ धूप अधिक रहेगी। आराम कम व संघर्ष अधिक रहेगा। नौकरी एवं व्यवसाय में विघ्न उत्पन्न होंगे। जमीन–जायदाद सम्बन्धी समस्याएं उत्पन्न होंगी। ता. 21 के बाद लाटरी, सट्टे आदि द्वारा अचानक धन लाभ की संभावना होगी। स्त्री व संतान की तरफ से शुभ सूचना मिलेगी। विदेशी सम्पर्क सूत्र बनेंगे। जमीन–जायदाद सम्बन्धी सौदेबाजी के भी आसार हैं।

अगस्त–आर्थिक उलझनों के कारण मन परेशान रहे। सोची योजनाओं में विघ्न–बाधाओं का सामना रहे। यात्रा में चोटादि का भय रहेगा। कठिन परिस्थितियों के बावजूद धन प्राप्ति के कुछ साधन बनते रहेंगे। परिवार में मतभेद होंगे। मासान्त में लेन–देन के कार्यों में सावधानी बरतें। मंगल की दृष्टि के कारण चोटादि लगने का भय है। इस मास दुर्गा सप्तशती का पाठ करना शुभ होगा।

सितंबर–मासारम्भ से गुरु की शुभ दृष्टि होने से धन एवं सुख की प्राप्ति, स्त्री व संतान सुख, विद्या में सफलता और आमोद–प्रमोद आदि साधनों में विस्तार एवं वृद्धि होगी। 6 सितं से शनि की स्वगृही दृष्टि रहेगी। विघ्न–बाधाओं के बावजूद गुजारे योग्य धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे।

अक्तूबर–आर्थिक हालात आगे से बेहतर होंगे। कार्य क्षेत्र में व्यस्तताएं बनी रहेंगी। सांझेदारी में मान–इज्जत बढ़ेगी। विदेश सम्बन्धियों से कार्यों में सहायता और सहयोग प्राप्त होगा। मासान्त में शुभ समाचार और अप्रत्याशित लाभ की प्राप्ति होगी। घर परिवार में सुखद माहौल होते हुए भी गुप्त चिन्ता रहेगी। धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा। श्री सूर्य चालीसा का पाठ शुभ रहेगा।

नवंबर–शनि की स्वगृही दृष्टि पड़ रही है। कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। मित्रों की सहायता से किसी कठिन कार्य में सिद्धि होगी। निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। बनते कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी। उत्तरार्ध में व्यवसाय के सम्बन्ध में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। अपने भी परायों जैसे व्यवहार करेंगे। घरेलू उलझनों व अपव्यय के कारण भी तनाव रहेगा।

दिसंबर–धन लाभ एवं उन्नति के पर्याप्त अवसरों के बावजूद समुचित लाभ नहीं उठा पाएंगे। बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। समाज में मान–प्रतिष्ठा बढ़ेगी। पारिवारिक वातावरण कुछ बेहतर होगा। परन्तु शत्रु सरगर्म होने से परेशानी होगी। दुष्ट व्यक्तियों से सम्पर्क से बचें एवं सावधानीपूर्वक बनाएं।

कुम्भ राशि (Aquarius)—(गु, गे, गो, स, सी, सू, से, सो, द)

वर्ष प्रवेश कुण्डली

12 मं., 10 शु., 9, 1 चं. रा., 11, सू. बु., 2, 8, 3 श., 5 गु., 7 के., 4, 6

ग्रहगोचर–वर्षारम्भ से 26 अग. तक गुरु की दृष्टि रहेगी। शुभ कार्यों की ओर प्रवृत्ति रहेगी। घर में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। 14 जून से 16 सितं. तक मंगल की दृष्टि रहने से परिश्रम अधिक रहे। मानसिक उत्तेजना, उचाटता अधिक रहे। 6 सितं. से शनि छठे संचार करेगा। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी।

जनवरी–गुरु की शुभ दृष्टि पड़ने से पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। परिवार में किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। आय के साधनों में वृद्धि होगी। शनि पंचम में संचार कर रहा है। धन लाभ एवं भाग्योन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। स्त्री/ पति का स्वास्थ्य ढीला रहेगा।

फरवरी–इस मास में किसी विशेष चुनौती का सामना करना पड़ेगा। मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। धन लाभ के अवसर मिलेंगे। उत्तरार्द्ध भाग में सर्विस व व्यापार आदि में भाग–दौड़, यात्रा में कठिनाई और व्यर्थ का खर्च होगा। सन्तान के कैरियर सम्बन्धी चिन्ता रहेगी।

मार्च–7 मार्च से शनि मार्गी होने से परिस्थितियों में कुछ सुधार होगा। अनेक बाधाओं के बावजूद कामकाज में प्रगति होगी। वृथा यात्रा की परेशानी होगी। मानसिक तनाव व क्रोध की भावना अधिक रहेगी। किसी नए कार्य की योजना बनेगी। खर्च भी अधिक रहेंगे।

अप्रैल–मासारम्भ में शुक्र चौथे स्थान में है, आकस्मिक धन लाभ हो, परन्तु मनोरंजन एवं विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक रहे। देश–विदेश में सम्पर्क सूत्र बढ़ेंगे। परिवार में मंगल कार्य होने के संकेत हैं। किसी शुभ कार्य की ओर भी प्रवृत्ति बढ़ेगी। अकस्मात् शुभ यात्रा भी होगी।

मई–संघर्ष के बावजूद धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। कुछ रुके हुए कार्य बनेंगे। परिवार की ओर से शुभ समाचार प्राप्त होगा। उत्तरार्ध भाग में आलस्य में वृद्धि, अधिकांश समय व धन मनोरंजन कार्यों पर खर्च होगा। श्री शिव उपासना करना कल्याणकारी होगा।

जून–इस मास व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। आमोद–प्रमोद के साधनों एवं पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी। किसी उत्कृष्ट वस्तु का लाभ भी प्राप्त होगा। मासान्त में यात्रा व फिजूलखर्ची रहेगी।

जुलाई–मासारम्भ से ही मंगल की दृष्टि रहने से परिश्रम अधिक रहे। मानसिक उत्तेजना, उचाटता तथा उद्विग्नता अधिक रहे। आय साधारण रहे। नए लोगों के सम्पर्क से लाभ कम और खर्च अधिक होगा। उदर रोग, व्यावसायिक प्रतिकूलता तथा व्यर्थ की यात्रा सम्भव है।

अगस्त–गत किए प्रयासों में सफलता मिलेगी, परन्तु मंगल की दृष्टि तथा 15 अग. से सूर्य की भी दृष्टि होने से मानसिक तनाव एवं व्यवसाय में दौड़धूप अधिक रहेगी। मासान्त में विघ्न–बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। कुछ आलस्य का माहौल होगा। चोटादि का भय होगा।

सितंबर–मासारम्भ में 6 सितं. से राशिस्वामी शनि छठे कर्क राशि में संचार करेगा। फलस्वरूप शत्रु दबे रहेंगे अथवा शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। परंतु खर्चों में अत्यधिक वृद्धि होगी। निकटस्थ मित्र या बन्धु के साथ तनाव व लड़ाई–झगड़ा भी हो सकता है। बकाया रकम की वापसी, साहस–धैर्य से बिगड़ा काम बनेगा।

अक्तूबर–मासारम्भ से शुक्र की दृष्टि के संघर्ष के पश्चात् धन लाभ हो। उदर–विकार व आँखों में कष्ट का भय रहे। किसी शुभ कार्य पर खर्च भी हो। मासान्त में अधिकांश समय व्यर्थ के कार्यों में व्यतीत होगा। भूमि–जायदाद सम्बन्धी परिवार में कुछ परेशानी व तनाव रहे। शरीर कष्ट होने के योग है।

नवबर–मासारम्भ में धर्म–कर्म की ओर रुचि बनेगी। भूमि, वाहन आदि सुख–साधनों में वृद्धि होगी। किसी प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। मासान्त में शरीर कष्ट व तनाव रहे। अकस्मात् धन का अपव्यय बढ़ेगा।

दिसंबर–आशाओं में सफलता तथा अकस्मात् धन प्राप्ति के योग बनेंगे। किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। ता. 15 से उत्तरार्द्ध भाग में स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी, मानसिक तनाव एवं खर्च अधिक और आय कम होगी। किसी प्रिय व्यक्ति के व्यवहार से मन विक्षुब्ध होगा।

मीन राशि (Pisces)—(दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, चि)

वर्ष प्रवेश कुण्डली

9 रा. चं., 11, 2, 12 मं., 10 शु., 3 श., 9, सू. बु., 4, 6, 8, 5 गु., 7 के.

ग्रहगोचर–राशिस्वामी गुरू 26 अग. तक, छठे भाव में होने से सोची हुई योजनाएं क्रियान्वित नहीं हो पाएंगी। शनि 5 सितं. तक इस राशि को दशम दृष्टि से देखेगा, फलस्वरूप बनते हुए कार्यों में रुकावटें व विघ्न–बाधाएं उत्पन्न होती रहेंगी। 27 अग. से गुरू कन्या में आकर सप्तम दृष्टि से देखेगा। धार्मिक कार्यों की ओर प्रवृत्ति रहेगी।

जनवरी–मासारम्भ से 23 जन. तक मंगल का संचार तथा शनि की दृष्टि रहेगी। अत्यधिक भागदौड़ के उपरान्त कार्यों में सफलता मिलेगी। परिश्रम

और पुरुषार्थ करने पर धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। सांझेदारी के कार्यों में उचित लाभ नहीं होगा।

फरवरी—पराक्रम में वृद्धि और व्यवसायिक व्यस्तताएं बढ़ेंगी। धार्मिक कार्य की इच्छा जागृत होगी। किसी प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। इस राशि पर शनि की दृष्टि से कारण भागदौड़ अधिक तथा फिजूलखर्च बढ़ेगा। ता. 27 के पश्चात् कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा।

मार्च—मासारम्भ में व्यावसायिक एवं पारिवारिक समस्याओं के कारण मन विक्षिप्त रहेगा। 14 मार्च से सूर्य संचार करने से क्रोध अधिक, नेत्र कष्ट व सिर दर्द रहे। सावधान बरतें। निकट बन्धुओं से वैर—वैमनस्य तथा किसी से नाहक झगड़ा भी संभव है।

अप्रैल—मास के आरम्भ में व्यर्थ की दौड़—धूप अधिक रहेगी। परन्तु निर्वाह योग्य आय से साधन बनते रहेंगे। खर्च भी बहुत अधिक रहेंगे। उत्तरार्द्ध भाग में किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। किसी श्रेष्ठ व्यक्ति की सहायता से कोई बिगड़ा काम बनेगा।

मई—मासारम्भ में ता. 5 के गुरू मार्गी होने से मानसिक दृष्टिकोण में बदलाव आएगा। परिश्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। किसी मंगल कार्य पर व्यय होगा। ता. 26 के बाद अकस्मात् यात्रा के योग हैं। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बढ़ेंगे। कार्य व्यवसाय में लाभ व उन्नति के चांस मिलेंगे।

जून—कार्य—व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। भूमि, वाहन, विवाह आदि सुखों की प्राप्ति होगी। धर्म—कर्म की ओर रुचि रहेगी। मास के उत्तरार्ध भाग में परिवार में किसी मंगल कार्य पर खर्च होगा। शनि की दृष्टि के कारण पूर्व भाग में बनते कामों के कुछ उलझनें रहेंगी।

जुलाई—गुरू की स्थिति के कारण धार्मिक एवं शुभ कार्यों पर खर्च अधिक रहेगा। दूसरे सप्ताह नए—नए श्रेष्ठ लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। तीसरे सप्ताह कोई बिगड़ा काम बनेगा। चौथे सप्ताह स्वभाव में तेजी एवं व्यर्थ की दौड़ धूप अधिक रहेगी।

अगस्त—मासारम्भ में घर—परिवार में कोई खुशी का वातावरण बनेगा। संघर्ष के बावजूद (गुरू के कारण) आय के साधन बनते रहेंगे परन्तु कार्य—व्यवसाय में परिश्रम एवं संघर्ष अधिक रहेगा। मासान्त में स्वास्थ्य विकार एवं बनते कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी। ता. 27 से गुरू कन्या राशि में आने से परिस्थितियों में सुधार होगा।

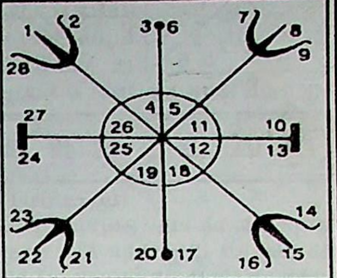
सितंबर—गुरू की दृष्टि के कारण गृह में मंगल कार्य सम्पन्न होंगे। धार्मिक कार्यों की ओर प्रवृत्ति रहेगी। किसी मित्र के सहयोग से नया कार्य आरम्भ होगा। विद्या में सफलता एवं घरेलू सुखों में वृद्धि होगी। 17 सिंत. से सूर्य की दृष्टि रहने से सरकार की ओर से लाभ, भागदौड़ अधिक, क्रोध व उत्तेजना भी अधिक रहेगी।

अक्तूबर—संघर्ष के बावजूद धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। कुछ रुके हुए कार्य बनेंगे। परिवार की ओर से शुभ समाचार प्राप्त होगा। उत्तरार्ध भाग में आलस्य में वृद्धि, अधिकांश समय व धन मनोरंजक कार्यों पर खर्च होगा। श्री दुर्गा उपासना करना शुभ एवं कल्याणकारी होगा।

नवंबर—मास के शुरू में कोई पारिवारिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। गत मास के बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार होगा। यद्यपि गुजारे योग्य आय प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे, परन्तु खर्च भी बहुत अधिक रहेंगे। निकट बन्धुओं के साथ मन—मुटाव होने की भी सम्भावना है।

दिसंबर—घरेलू परेशानियों के कारण मन व्यथित रहेगा। व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। आलस्य एवं निराशा में वृद्धि होगी। वाहनादि चलाते समय सावधानी बरतें। शरीर कष्ट का भय है। उत्तरार्द्ध भाग में आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होगा।

आज का दिन कैसा गुजरेगा ?



जिस दिन को मालूम करना हो कि आज का दिन आपका कैसा गुजरेगा ? तो उस दिन आप पंचांग में देखें कि चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। आप उस नक्षत्र को नं. १ पर से गिन कर ऊपर लिखे चक्र के क्रमानुसार २८ नक्षत्र लगा लें। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र किस स्थान पर आता है। वैसा फल जानें। यदि आपके नाम का नक्षत्र वृत्त (गोलाकार) के अन्दर पड़ेगा तो उस दिन शुभ समाचार, प्रिय बन्धु से मिलाप व धन लाभ होगा। यदि गोल वृत्त के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग खुशी में, आधा भाग फिकर और चिन्ता में व्यतीत होगा। यदि त्रिशूल के ऊपर पड़े तो पूरा दिन परेशानी, झगड़े, धन हानि व चिन्ता में व्यतीत होगा। उदाहरणार्थ आज यदि मघा नक्षत्र हो तो, उसे नं. १ लें। इसी क्रम में पूफा आदि २८ नक्षत्र क्रम से लिख लें। नक्षत्रों की तालिका इसी पंचाँग के अन्तिम पृष्ठों में देखें।

खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ?

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः। स्यात् दूरेश्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने॥

१. **अन्धाक्ष नक्षत्रों** में गुम हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा की ओर जाती है और उसकी पुनः प्राप्ति की शीघ्र सम्भावना रहती है।

२. **सुलोचन नक्षत्रों** में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है।

३. **मध्याक्ष नक्षत्र** में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। पता चलने पर भी प्राप्त (हस्तंगत) नहीं होती।

४. **मन्दाक्ष नक्षत्र** में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है। अन्धाक्षादि नक्षत्र निम्नलिखित हैं—

नक्षत्र संज्ञा	नाम नक्षत्र							मिलेगी या नहीं
(१) अन्धाक्ष	रोह.	पुष्य.	उफा.	विशा.	पूषा.	धनि.	रेव.	शीघ्र मिलेगी।
(२) सुलोचन	कृति.	पुन.	पूफा.	स्वा.	मूला.	श्रव.	उभा.	नहीं मिलेगी।
(३) मध्याक्ष	भर.	आर्द्रा.	मघा.	चित्रा.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	पता लगाने पर भी नहीं मिलेगी।
(४) मन्दाक्ष	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त.	अनु.	उषा.	शत.	बहुत यत्न करने पर मिलेगी।

वि. संवत् २०६१ में सम्वत्सर, राजा, मन्त्री आदि का फल

ॐ स्वस्ति श्री गणेशायः नमः। अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः। आदौ गणपतिं नमस्कृत्य प्रणम्य च पूर्वजानहम्। चन्द्रमिश्रं तत्पुत्रं रामजी दत्तस्य सूनं विश्वविख्यातं पण्डित देवी दयालुं स्व प्रपितामहम्। स्मरन् भक्त्या लोकहितार्धाय सुख सम्पत्ति हेतवे। हेमलम्ब नामक विक्रमी नव सम्वत्सरे शुभे नवविंशत्योत्तर शतं वर्षाणि (१२९) वर्ष प्रवेशे पं. पन्नालाल अहं प्रपौत्र पण्डित देवी दयालु मशहूर आलम ज्योतिषी, कुर्वे, पंचाँग दिवाकरम्॥

सृष्टि सम्वत् १९५,५८,८५,१०५ के अन्तर्गत श्री विक्रमी संवत् २०६१, कलि (कल्कि) संवत् ५१०५, श्री कृष्ण संवत् ५२४०, सप्तर्षि संवत् ५०८०, श्री बुद्ध संवत् २६२७-२८, श्री महावीर निर्वाण संवत् २५२९-३०, शक संवत् १९२५-२६, हिजरी सन् १४२४-२५, इंगलिश सन् २००४-०५ ई. खालसा सम्वत् ३०६, नानकशाही सम्वत् ५३६, सृष्टि संवत् के अन्तर्गत सतयुग प्रमाण १७२८०००, त्रेतायुग १२९६०००, द्वापर युग प्रमाण ८६४००० एवं कलियुग प्रमाण ४३२००० वर्षों का होता है।

वि. संवत् २०६१ का शुभारम्भ विष्णु विंशति के बार्हस्पत्यमान से ३१वाँ नया 'हेमलम्ब' नामक सम्वतसर से होगा। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (तदनुसार २१ मार्च, २००४ ई.) रविवार से संकल्पादि कार्यों में इसी का प्रयोग होगा।

हेमलम्ब नामक नए सम्वत्सर का फल–

वि. सम्वत् २०६१ का शुभारम्भ विष्णु विंशति के बार्हस्पत्यमान से ३१वां **'हेमलम्ब'** नामक नया सम्वत्सर, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को तदनुसार, २१ मार्च, सन् २००४ ई., प्रविष्टे ८ चैत्र, रविवार से प्रारम्भ होगा। आगामी सम्वत् २०६१ (सन् २००४-०५ ई.) में संकल्पादि कार्यों में **'हेमलम्ब'** नाम सम्वत्सर का प्रयोग करना प्रशस्त रहेगा॥ इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है–

हेमलम्बे नृपाः सर्वे परस्पर विरोधिनः।
प्रजा पीडात्वर्घत्वं तथापि सुखिनो जनाः॥ नारद संहिता॥
अन्येऽपि–हेमलम्बेत्वीतिभीतिः मध्यस्यार्घ वृष्टयः।
भाति भूः भूपति क्षोभः खड्गविद्युल्लतादिभिः॥

अर्थात् हेमलम्ब नामक सम्वत्सर आने से राजाओं (प्रशासकों) में परस्पर टकराव, विरोध एवं प्रतिद्वन्द्वता (होड़) की भावना अधिक रहती है, उनके इस पारस्परिक विरोध तथा आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि के कारण साधारण लोग (प्रजा) दुःखी रहते हैं, परन्तु विशिष्ट वर्ग के साभ्रान्त लोग सुखी होते हैं। पृथ्वी पर वर्षा एवं अनाज की फसल मध्यम रहे, खुशहाली एवं सुख के साधनों में विस्तार हो, परन्तु राजाओं (प्रशासकों) में परस्पर विरोध, विक्षोभ एवं टकराव रहे। कहीं युद्ध के समाचार भी मिलें। प्राकृतिक आपदाओं से जन व धन हानि का भय रहे।

***रोहिणी का वास तट पर–**"तटे वृष्टिः सुशोभना, शुभ जल वृष्टिर्धनकण वृद्धिः।" रोहिणी का वास तट पर होने से वर्षाकाल में विपुल मात्रा में वर्षा होती है। गेहूँ, चावल, धान्य, गन्ना, चने, घास आदि की पैदावार अच्छी होती है।

***सम्वत् (समय) का वास रजक (धोबी) के गृह–फल–**

"समय निवासो रजकगृहे, वापीकूपतडागानि नदी नद वनानि च। जलपूर्णानि दृश्यन्ते वासो रजक वेश्मनि॥" अर्थात् धोबी के घर सम्वत् का वास होने से कूएँ, तालाब, नदी, नाले, दरिया आदि जल से आपूरित होंगे। धान्य, चावल, मक्का, सरसों, बिनौले, गन्ना एवं अन्य सम्बन्धित फसलों की पैदावार अच्छी रहेगी। धन का प्रसार विश्व-व्यापी स्तर पर बढ़ेगा। लोगों में सुभिक्ष व सम्पन्नता बढ़े॥

***सम्वत् का वाहन अश्व–**होने से सम्वत् के मध्य समान रूप से वर्षा न हो, अर्थात् कहीं बहुत अधिक वर्षा से बाढ़ादि का प्रकोप तथा कहीं अल्प वर्षा के कारण फसलों की हानि हो। देश के राजनीतिक क्षेत्रों में विशेष उतार-चढ़ाव रहें। बाढ़, भूकम्प, ओलावृष्टि, बादल का फटना, अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक उत्पात अधिक हो।

(१) वर्ष के राजा सूर्य का फल–

सूर्ये नृपे स्वल्पफलाश्च मेघाः स्वल्पंपयो गौषुजनेषु पीडा।
स्वल्पं सुधान्यं फलं अल्पवृक्षाश्चौराग्नि बाधा निधनं नृपाणाम्॥

अर्थात् वर्ष का राजा सूर्य हो, तो उस वर्ष कुछ स्थानों पर वर्षा कम हो, गाय-भैंस आदि चौपाय दूध कम देवें। साधारण लोगों में दुःख, पीड़ाएं, कलह-क्लेश एवं कष्ट आदि अधिक रहें। धान्य, गन्ना आदि की फसल कम हो, वृक्षों पर फल, फूल आदि मौसमी फलों आदि का उत्पादन भी कम हो, प्रशासकों में परस्पर टकराव एवं विरोध अधिक रहे। चोरी, ठगी, लूट-मार एवं रेल, यान, वाहन, अग्निकाण्ड की वारदातें अधिक हों। कट्टरवाद एवं साम्प्रदायिक उपद्रव की घटनाएँ अधिक हों। लोगों में क्रोध, उत्तेजना, कलह, विचित्र एवं गम्भीर रोगों की अधिकता रहे। राजसिक प्रवृत्तियाँ अधिक बढ़ें। पूर्वोत्तर एवं पश्चिमी राष्ट्रों में विस्फोटक घटनाएँ अधिक हों। अनाज और लौह आदि के व्यापारी अच्छा लाभ उठा पाएँगे।

(२) वर्ष के मन्त्री मंगल का फल–

अवनिजो ननु मंत्रिकतां गतो भवति दस्युगदादिजवेदना।
जनपदेषु जयं सुख संचयंन बहुगोषुपयो द्विज कर्म च॥

वर्ष का मन्त्री मंगल हो, तो उस वर्ष उपयोगी वर्षा की कमी तथा अनाज के उत्पादन में भी कमी होती है। उस वर्ष चौरभय, अग्निकाण्ड, उपद्रव-उत्पातों आदि के कारण प्रजा में अशान्ति

रहती है। यद्यपि गाय-भैंस आदि चौपाय दूध अच्छा देंगे। लोग सुख-साधनों के संचयन में तथा ब्राह्मण वर्ग कर्मकाण्ड आदि कृत्यों में अधिक प्रवृत्त होंगे। सोना, चाँदी, लाख, पटसन, चावल, सुरेश, जवाहरात और अन्य लाल वर्ण की वस्तुएँ तेज भाव होंगी।

(३) सस्येश (फसलों का स्वामी) शुक्र का फल—

शुक्रो यदा धान्यपतिः धरायां मेघो जलं वर्षति शोभनं प्रियम्।
गोधूमशालीक्षुधनं प्रियंगु वृक्षेषु पुष्पाणि सुख प्रदानि॥

अर्थात् कृषि का स्वामी शुक्र हो, तो उस वर्ष पर्याप्त एवं उपयोगी वर्षा होती है। गेहूँ, जौं, चावल, ईख (गन्ना) एवं फलदार वृक्षों पर फल व फूल बहुत लगें। मौसमी मेवों की पैदावार अच्छी हो। अनाज, सोना, चाँदी एवं घी, तैल, मजीठ, चावल, हल्दी, जौं, हरड़, मेहंदी का व्यापार करने वाले विशेष लाभान्वित होंगे।

(४) धान्येश बुध का फल—

बुध धान्याधिपे मेघा जलं मुंचति वैभृशम्।
सैन्धवे लाट देशे चमाधवोल्पं च वर्षति॥

धान्यपति बुध हो, तो उस वर्ष बादल वर्षा अच्छी करते हैं। अनाज आदि की पैदावार भी अच्छी होती है। परन्तु उस वर्ष सिन्ध प्रदेश तथा लाट प्रदेश (पंजाब) में वर्षा की कमी होती है।

(५) मेघेश चन्द्र का फल—

शशिनि तोयदपेयदि गो महिष्य जखरादिषु दुग्ध रसं तदा।
फलवती धन धान्य वतीधरा विविधभोगवती ननु भामिनी॥

चन्द्रमा मेघेश (वर्षा का स्वामी) हो, तो गाय, भैंस, बकरी आदि चौपाय दूध अधिक मात्रा में देते हैं। उस वर्ष पृथ्वी पर गेहूँ, चावल, धान्यादि की फसलें अच्छी होंगी। वृक्षों पर फल-फूल आदि अधिक लगेंगे। पृथ्वी पर विविध प्रकार के मनोरंजन, ऐश्वर्य एवं उपभोग्य के साधनों में वृद्धि होगी।

(६) रसेश शनि का फल—

रविसुते रसपे रस संक्षयोन जलदागददाश्च पयोधराः।
अजगवांगजवाजि खरोष्ट्रहा जनपदेषुनरा न रसै युताः॥

संवत् में रसों का स्वामी शनि होने से वर्ष में उपयोगी एवं अनुकूल वर्षा की कमी रहे। गाय-भैंस, बकरी, हाथी, घोड़े, ऊँटादि चौपाओं की भी कमी रहे। उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में और अधिक तेजी हो। लोगों में विविध क्लिष्ट रोगों की अधिकता रहे। मनुष्यों में नीरसता अधिक हो—अर्थात् परस्पर प्रेम भावना की कमी रहे॥

(७) नीरसेश (धातुओं के स्वामी) गुरू का फल—

हरिद्रापीतवस्तूनि पीतवस्त्रादिकं च यत्।
नीरसेशोयदा जीवः सर्वेषां प्रीति रुत्तमा॥

संवत् में धातुओं का स्वामी गुरु हो, तो वर्ष में हल्दी, पीले वस्त्र, पीतल, सोना आदि पीले रंग की वस्तुओं के प्रति लोगों का लगाव विशेष रूप से अधिक रहे। अर्थात् इन वस्तुओं की मांग अधिक रहने से पीले वर्ण की वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि होगी। लोगों में धर्म-कर्म के प्रति रूचि बढ़ेगी।

(८) फलेश चन्द्र का फल—

यदि विधुः फलपोद्रुम राशयः फलयुतावलिभिः कुसुमैर्युताः।
द्विजमुखावर भोग समन्विता नृपतयोनयनाटन तत्पराः॥

अर्थात् जिस वर्ष फलों का स्वामी चन्द्रमा हो, उस वर्ष राजा (प्रशासक) प्रजा को न्याय प्रदान करने में प्रवृत्त होंगे। विद्वान् ब्राह्मण को भी मान-सम्मान एवं धनादि सुख-सुविधाएं एवं भोगों की प्राप्ति होगी। अनाज की पैदावार अच्छी रहे तथा वृक्षों पर मौसमी फलों-फूलों, लताओं एवं अन्य वनस्पतियों की पैदावार अच्छी होगी। लीडर एवं प्रशासक लोग देश-विदेशों के भ्रमण में अधिक प्रवृत्त रहें।

(९) धनेश गुरू का फल—

सुमनसां च गुरुः द्रविणाधिपो वणिजवृत्तिपराः सुखभाजनाः।
फलित पुष्पित भूमि रुहाः सदा विविधद्रव्ययुता भुविमानवाः॥

अर्थात् धन-दौलत का स्वामी गुरु (बृहस्पति) होने से वर्ष में व्यापारिक एवं वणिक् वृत्ति का व्यवहार रखने वाले लोग अधिक सुखी एवं प्रसन्नचित्त होंगे। वृक्षों पर फलों, फूलों आदि का उत्पादन अच्छा रहे। लोग विभि न प्रकार की धन-सम्पदाओं से सम्पन्न होंगे।

(१०) सेना के स्वामी चन्द्र का फल—

गढपतिः शशलांछनकोयदा नृपसुराज्य विलासित पौरजाः।
बहुधनेक्षु जगोरसभोगिनो नरवरा वरवर्णित विग्रहाः॥

जिस वर्ष दुर्गेश (सेना) का स्वामी चन्द्रमा हो, तो उस वर्ष राजनेता (प्रशासक) लोगों में सुष्ठु ढँग से राज्य व्यवस्था करने और जनता को सुख-सुविधाएँ प्रदान करने की चेष्टा करते हैं। गुड़, चीनी, गन्ना, दूध आदि वस्तुओं का व्यवसाय (क्रय-विक्रय) करने वाले विशेष तौर पर लाभान्वित रहें। विश्व के अनेक राष्ट्र प्रमुख परस्पर युद्धोन्मुख होंगे। अर्थात् परस्पर तनाव एवं टकराव की स्थिति में होंगे॥

नवमेघों में 'तम' नामक मेघ का फल

सम्वत् २०६१ में नवमेघों के अन्तर्गत तम नाम का मेघ होने से प्रजा में रोग अधिक होंगे। मेघ भी जल की वर्षा कम करते हैं। चोरी, लूट-खसोट और बेईमानी की घटनाएँ अधिक होती हैं। धान्य आदि अनाज का उत्पादन भी अपर्याप्त हो तथा साधारण लोग अनेक प्रकार के दुःखों से पीड़ित रहें—

रोगाधिक्यं जायते नीरशेषः चौराधिक्यं नैव धान्यस्यपोषः।
यस्मिन् वर्षेस्यात्तमो नाम मेघस्तस्मिन्दुखं प्राप्नुयाल्लोक संघः॥

द्वादश नागों में अश्वतर नामक नाग का फल

यस्मिन् अब्दे भुजंगेन्द्रो जायतेऽश्वतराभिधः। नव वर्षति जलंव्रजीतदासस्यं विनश्यति॥

अर्थात् अश्वतर नामक नाग होने से मेघ उपयुक्त वर्षा नहीं करते। कुछ प्रदेशों में अनाज की फसलों के सूख जाने का भय होता है।

शनि की दृष्टि—सम्वत् २०६१ के पूर्वार्द्ध (५ सितम्बर, २००४ ई.) तक के काल में शनि मिथुन राशि में ही संचार करेगा। ६ सितं., २००४ ई. को प्रात: ४.३० बजे से कर्क राशि में प्रवेश होगा तथा ८ नवम्बर से वक्री होकर १३ जन. २००५ ई. से पुन: मिथुन राशि में संचार करेगा। मिथुन राशि में संचार करते समय शनि की दृष्टि पूर्व दिशा में विशेष तौर पर रहेगी। परन्तु ६ सितम्बर के बाद दक्षिण दिशा की ओर रहेगी। फलस्वरूप दुनियां के पूर्वी गोलार्द्ध तथा ६ सितम्बर से दक्षिणी भागों में पड़ने वाले देशों एवं प्रान्तों (जैसे—पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईराक, बंगलादेश, इण्डोनेशिया, सूडान, कोरिया, अफ्रीका आदि) में आतंक एवं युद्ध के बादल मण्डराएंगे। कहीं राजनीतिक जोड़-तोड़ एवं कहीं शासन परिवर्तन होने के प्रसंग बनेंगे। भारत की पूर्वी-पश्चिमी एवं दक्षिणी सीमाओं पर कहीं विस्फोटक घटनाएँ एवं बाढ़ आदि प्राकृतिक-प्रकोपों से हानि होने के योग हैं विशेषकर मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, धनु, मकर व मीन राशि के देश व प्रदेश अधिक प्रभावित रहेंगे।

वर्षा आदि चार स्तम्भों का विचार

(1) जल स्तम्भ—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का सम्पर्क मात्र २४ प्रतिशत है। फलस्वरूप आगामी वर्ष में उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी। गेहूँ, धान्य, चने, चावल आदि अनाज के उत्पादन में वांछित वृद्धि न हो पाएगी। अनाज आदि के मूल्यों में विशेष वृद्धि होगी। कुछ प्रदेशों में दुर्भिक्ष, सूखा एवं पेयजल तथा कृषि योग्य जल की कमी अनुभव होगी।

(2) तृणस्तम्भ—वैशा. शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र ४३.२ प्रतिशत है। चारों स्तम्भों में से तृण स्तम्भ ही सम्पुष्ट है। फलस्वरूप तिनके, बांस, घास, पुष्प, वनस्पतियां, जड़ी-बूटियों की पैदावार अच्छी होगी। पशुओं के लिए चारा पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होगा। फलस्वरूप गौ-भैंस आदि चौपाय पशुओं से दूध आदि उत्पादन अच्छा होगा।

(3) वायुस्तम्भ—ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र का अभाव है। फलस्वरूप वातावरण में प्रदूषण, ऊष्णता एवं आशातीत गर्मी का प्रकोप अधिक रहेगा। राजपुताना आदि कुछ प्रदेशों में कहीं तेज आँधियों के कारण जन-धन एवं कृषि आदि को हानि पहुँचने की सम्भावनाएँ होंगी।

(4) अन्न स्तम्भ—आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को भी पुनर्वसु नक्षत्र का अभाव है। फलस्वरूप गेहूँ, धान्य, मक्का आदि का उत्पादन पर्याप्त मात्रा में न होने के कारण उनके मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि होगी। साधारण लोगों में आक्रोश एवं असंतोष की भावना व्याप्त रहेगी।

आर्द्रा कुण्डली से वर्षा-कृषि आदि का विचार, संवत् २०६१

संवत् २०६१ में सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में आषाढ़ शुक्ल चतुर्थी तिथि सोमवार ३९/१३ घट्यादि, अर्थात् २१ जून की रात्रि को 9 बजकर 08 मिनट पर, आश्लेषा नक्षत्र एवं कर्क के चन्द्र कालीन मकर लग्न में प्रविष्ट होगा।

आर्द्रा प्रवेश कुं. ३९/१३

11, 9, 12, 10, 8, 1 रा., 7 के., 2, 4 चं. मं., 6, शु., 3 सू.श.बु., 5 गु.

फल—आर्द्रा प्रवेश लग्न (मकर) पृथिवी तत्त्व राशि में हुआ है। लग्नेश शनि छटे में सूर्य के साथ अस्तंगत है। यद्यपि चन्द्रमा सप्तम भाव में जल राशि (कर्क) का भौमयुक्त होकर लग्नभाव को देख रहा है। इसके अतिरिक्त आर्द्रा प्रवेश कुण्डली में सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य संचार करने से **कालसर्प** योग के प्रभाव में हैं। जल तत्त्व प्रधान ग्रह शुक्र त्रिकोण, पंचम भाव में स्वगृही राशि में है। फलस्वरूप वर्ष में पर्याप्त वर्षा होने के बावजूद कई स्थलों पर अनुकूल एवं उपयोगी वर्षा में कमी रहेगी। इस वर्ष का जल स्तम्भ भी लगभग २४ प्रतिशत होने से अनेक प्रदेशों में अनुकूल वर्षा की कमी के कारण गेहूँ, धान्य, मक्का एवं गन्ने आदि की फसलों की पर्याप्त आकांक्षित पैदावार नहीं हो सकेगी।

आर्द्रा प्रवेश सोमवार तथा रात्रि कालीन कर्क के चन्द्रमा एवं हर्षण योग कालीन होने से यद्यपि निर्वाह-योग्य कृषि उत्पादन अवश्य हो जाने की सम्भावनाएँ हैं-

—रात्रौ स्थितासर्व सुखाय लोके।

—शशि धरवारे स्मर हरधिष्ण्ये दिनकर वेशे सतिहि सुभिक्षम्।

—रवेरार्द्रा प्रवेशस्य समये यदि हर्षणः। सर्वधान्यादि संवृद्धयाप्राणिनां हर्ष सम्भवः॥

परन्तु आर्द्रा कुण्डली में कालसर्प योग होना, छटे भाव में सूर्य-शनि का योग होना तथा आश्लेषा नक्षत्र कालीन लग्न प्रवेश होने से कृषि उत्पादन का उचित लाभ सामान्य लोगों तक नहीं पहुँच पाएगा। ईख, मक्का, फल, धान्य, गेहूँ, पशुचारा आदि उपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि के कारण साधारण लोगों में सुख की कमी रहेगी-

सार्प भंदिभं चेत् स्याद्ऽर्कस्यार्द्रा प्रवेशशने। दारूणं कर्म लोकानां भवेत् सौख्यविनाशनम्॥

अर्थात् आर्द्रा लग्न प्रवेश समय यदि आश्लेषा नक्षत्र हो, तो अधिकांशतः लोग उपद्रव, हिंसा, कलह, असत्याचरण आदि नीति विरूद्ध कार्यों में प्रवृत्त हों तथा उनमें सुख-शान्ति की कमी रहे॥

आर्षमान द्वारा रक्षा फल विचार

आर्षमान को वर्ष में राष्ट्र की रक्षा के चार दुर्गों (किले) एवं सौभाग्य व समृद्धि का प्रतीक माना जाता है।

(१) **प्रथम आर्ष**—गतवर्ष की पौष अमावस्या को मूला नक्षत्र के स्पर्श से माना जाता है। मूला नक्षत्र ५६% है।

(२) **द्वितीय आर्ष**—वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी नक्षत्र ३९% है।

(३) तृतीया आर्ष–श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र का अभाव है।
(४) चतुर्थ आर्ष–कार्तिक पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र ९२% है।

फल–इस वर्ष रक्षा के दो दुर्ग बली, द्वितीय दुर्ग मध्यम बली तथा तृतीय दुर्ग का अभाव है। फलस्वरूप अनेक अवरोधों के होने पर भी राष्ट्र आर्थिक एवं रक्षा की दृष्टि से प्रगतिपथ पर रहेगा। अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर भारत की आर्थिक एवं रक्षा के क्षेत्र में अपना पक्ष प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करेगा तथा विकासशील देशों का प्रतिनिधित्व करके ख्याति अर्जित करेगा।

श्रावण अधिक मास फल संवत् २०६१

सौर वर्ष और चान्द्र वर्ष में सांमजस्य स्थापित करने के लिए हर तीसरे वर्ष पंचांगों में एक चान्द्र मास की वृद्धि कर दी ... है। इसी को अधिक मास कहते हैं। सौर वर्ष का मान ३६५ दिन, १५ घड़ी, २२ पल एवं ५७ विपल के लगभग हैं, जबकि चान्द्र वर्ष ३५४ दिन २२ घड़ी, १ पल और २३ विपल का होता है। दोनों वर्ष मानों में प्रतिवर्ष १० दिन, ५३ घड़ी, २९½ पल का अन्तर अर्थात् लगभग ११ दिन का अन्तर पड़ जाता है। इस अन्तर में एकरूपता लाने के लिए 32 महीने, 16 दिन, 4 घड़ी बीत जाने पर अधिमास का निर्णय किया जाता है। वास्तव में सौर एवं चान्द्र मासों पर आधारित भारतीय पंचाँग व्यवस्था में यह स्थिति स्वयं ही उत्पन्न हो जाती है। सिद्धान्त शिरोमणि अनुसार भी जिस चान्द्र मास अथवा दो चान्द्र पक्षों में सूर्य संक्रान्ति का अभाव हो, उसे **अधिमास** या अधिक मास तथा जिस चान्द्र मास में दो सूर्य संक्रान्तियों का समावेश हो, वह **''क्षय मास''** कहलाता है।

''असंक्रान्ति मासोऽधिमासः स्फुट्स्यात् द्वि संक्रांतिः क्षयाख्यः कदाचित्॥''

अधिक एवं क्षय मासों में विवाह, मुण्डन, गृह प्रवेश, यज्ञोपवीत, तीर्थ–यात्रा, वास्तु कर्म, अष्टका श्राद्ध, काम्य यज्ञ–कर्म, नवीन कार्यारम्भ आदि करने वर्जित माने जाते हैं। अधिक मास को **अधिमास, मलमास** एवं **पुरुषोत्तम** भी कहते हैं।

विक्रमी संवत् २०६१ में श्रावण मास के अन्तर्गत पड़ने वाले दोनों पक्षों में सूर्य संक्रान्ति का अभाव हुआ है, फलस्वरूप श्रावण मास में अधिक मास का समावेश किया गया है। श्रावण अधिक मास 18 जुलाई से 16 अग. 2004 ई. के मध्य रहेगा। शास्त्र में श्रावण अधिक मास का फल इस प्रकार से लिखा गया है–

दुर्भिक्षं श्रावणे युग्मे पृथ्वी नाशः प्रजाक्षयः॥

अर्थात् जिस वर्ष में दो श्रावण हों अर्थात् श्रावण अधि मास हो, तो उस वर्ष पृथ्वी पर कहीं दुर्भिक्ष, उपयोगी वर्षा की कमी एवं अग्निकाण्ड, यानादि दुर्घटनाओं एवं प्राकृतिक प्रकोपों से धन एवं जन हानि की आशंका होती है। अधिक मास काल में गोचरवश कालसर्प योग भी होने के कारण पृथ्वी के पूर्व गोलार्ध में पड़ने वाले देशों–जैसे–अफ़गानिस्तान, पाकिस्तान, भारत, श्रीलंका, बंगलादेश, नेपाल, चीन, रूस आदि देशों में आन्तरिक व बाह्य राजनैतिक परिस्थितियाँ विशेष तौर पर प्रभावित रहेंगी। इन देशों में कहीं आन्तरिक विद्वेष, उपद्रव, अग्निकाण्ड, बाढ़, भूकम्प आदि से भी जन व धन सम्पदा की हानि की सम्भावनाएँ होंगी॥

–गुर्राफल विचार सन् २००४ ई. (हिजरी 1425)–

सन् ईस्वी २००४, फाल्गुन शुक्ल द्वितीया तिथि, 22 फरवरी रविवार को एक मुहर्रम (हिजरी सन् 1425) का प्रारम्भ होने से इस्लामी मतानुसार भी आगामी वर्ष का राजा (बादशाह) सूर्य ही होगा तथा इस्लामी मत के अनुसार नए वर्ष का प्रवेश 22 फरवरी से सन् 2004 ई. को सिंह लग्न में होगा। वर्ष प्रवेश कुण्डली में वर्ष लग्नेश सूर्य सातवें खाना (विदेशी सम्बन्धों) में चन्द्र के साथ होकर लग्न भाव (नेतृत्व) को देख रहा है। इसके फलस्वरूप लोगों में क्रोध (गुस्सा) उत्तेजना की भावनाएँ ज़्यादा होंगी। हुक्मरानों में भी आपसी टकराव और विरोध अधिक होगा। विभिन्न देशों के प्रमुख अध्यक्षों के दरम्यांन लड़ाई–झगड़े अधिक होंगे। मज़हबी झगड़े और तनाव अधिक रहेंगे। चोरी, बेईमानी और धोखा–फरेब की वारदातें होंगी। लग्न पर शनि की दृष्टि होने से कुछ मुस्लिम देशों का अमेरिका एवं यूरोपीय देशों के साथ वैमनस्य बढ़ेगा। धर्म–ईमान की तरफ लोगों का ध्यान कम रहे॥

इस्लामी मतानुसार
नववर्ष प्रवेश

7 के. | 6 | 5 बृ. | 4 | 3 श. | 8 | 2 | 9 | 10 बु. | 11 सू. चं. | 12 शु. | 1 मं. रा.

–वर्षादि के विश्वमान–संवत् २०६१–

वर्षादि विश्वा का कुल मान २० विश्वे होते हैं। जिस पदार्थ (विषय) के विश्वा १ से २० अंकों के मध्य जितने अधिक (२० अथवा उसके समीपस्थ) होंगे, उस वस्तु के उत्पादन की मात्रा उतनी अधिक होगी। जैसे आगे सं. २०६१ में धान्य के विश्वे १३ लिखे हैं। इसका तात्पर्य यह हुआ कि आगामी वर्ष धान्य उत्पादन सामान्य होगा।

वर्षा ११, धान्य १३, तृण ९, शीत १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ११, तृषा ११, निद्रा १५, आलस्य ११, उद्यम ११, शान्ति ७, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, निष्पत्ति १३, उत्साह ११, उग्रता १, पाप १५, पुण्य १, व्याधि १५, व्याधिनाश ११, आचार ९, अनाचार १३, मृत्यु ९, जन्म १७, उपद्रव ५, स्वास्थ्य ९, चोरभय १५, चोरनाश ७, अग्नि ३, अग्निशान्त ५, उद्भिज १३, जरायुज ३, अंडज ७, स्वेदज ११, टिड्डी ३, तोता ५, मूषक ५, सोना १५, ताँबा १३, स्वचक्र ११, परचक्र १३, वृष्टि १५, अनावृष्टि ५।

ग्रहों के आधार पर आगामी वर्ष की प्रमुख भविष्यवाणियाँ संवत् २०६१ वि. (2004-05 ई.)

- नया 'हेमलम्ब' नाम सम्वत्सर होने से भारत के राजनैतिक पटल पर विशेष उतार-चढ़ाव देखने को मिलेंगे। विभिन्न राजनीतिक पार्टियों में परस्पर टकराव तथा कहीं नए गठबन्धन बनेंगे। देश में कहीं उपद्रव, हिंसा, अग्निकांड की घटनाएं तथा झगड़े-फिसाद अधिक होंगे।
- राजा सूर्य तथा मन्त्री मंगल होने से अनेक विकासशील तथा विकसित देशों के मध्य विरोध एवं वैमनस्य बढ़ेगा। विभिन्न देशों में प्रभुसत्ता, टकराव व प्रतिद्वन्दता, हिंसा एवं होड़ की प्रवृत्ति में तनाव बढ़ेगा। सूर्य, मंगल दोनों अग्नितत्त्व प्रधान ग्रह होने से लोगों में क्रोध, उत्तेजना, धन-लोलुपता, लोभ आदि राजसिक एवं तामसिक प्रवृतियाँ बढ़ेंगी।
- रसों का स्वामी शनि होने से अधिकांश लोगों में प्रेम-भावनाओं की कमी, नीरसता, शुष्कता एवं वणिक् (व्यापार) वृत्ति को बढ़ावा मिलेगा। उपभोग्य वस्तुओं की कीमतों में अत्यधिक वृद्धि के कारण सामान्य लोग दुःखी, परेशान एवं असंतुष्ट रहेंगे।
- ३ जुला. से २८ सितंबर के मध्य खप्पर-योग एवं कालसर्प योगों की व्याप्ति होने से राजनैतिक अस्थिरता पैदा होगी, फलस्वरूप सामान्य लोगों में दुविधा, भय, विक्षोभ एवं आक्रोश की भावनाएं रहेंगी।
- सम्भावित लोकसभा के चुनावों में आश्चर्यजनक चुनाव परिणाम सुनने को मिलेंगे। अतः कलह के कारण भाजपा को चुनावों के बाद अपेक्षाकृत कम सफलता मिलेगी। कई स्थलों पर निराशा का सामना रहेगा। कांग्रेस पार्टी को गत चुनावों की अपेक्षा अच्छी सफलता प्राप्त होगी। कांग्रेस पार्टी का प्रभुत्व कई स्थानों पर बढ़ेगा। कहीं हार का भी सामना होगा।
- प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की मान-प्रतिष्ठा एवं प्रभुत्त्व में अन्तर्राष्ट्रीय एवं विश्वस्तरीय तौर पर वृद्धि होगी।
- अनेक राजनैतिक अवरोधों के बावजूद भारत दूरसंचार, उपकरणों, कम्पयूटर इंजीनियरिंग, अन्तरिक्ष एवं परमाणु विज्ञान, रबड़ उद्योग, आभूषण एवं जवाहरात, हस्त-शिल्प, वाहन निर्माण, लघु एवं मध्यम स्तरीय क्षेत्रों में उल्लेखनीय उन्नति करेगा।
- 6 अप्रैल से 4 मई के मध्य पाँच मंगलवार होने से विश्व में कहीं युद्ध भय, छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन), हिंसक व विस्फोटक घटनाएँ तथा किसी प्रमुख नेता की आकस्मिक मृत्यु होने के संकेत हैं।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तत्र केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ॥

अनादिकाल से मानव अज्ञात एवं अगोचर को जानने के लिए संवेदनशील एवं जिज्ञासु रहा है। उसकी इसी जिज्ञासा प्रवृत्ति के कारण चिन्तनशील प्रबुद्ध मनुष्यों ने अपने परिवेश से सहस्रों मील दूर संचरणशील ग्रह, नक्षत्र एवं ताराओं के स्वरूप एवं उनके पारस्परिक प्रभावों का गहन निरीक्षण, अध्ययन एवं चिन्तन करना प्रारम्भ कर दिया था।

मानव कल्याण की भावना को ध्यान में रखते हुए एवं मानव जीवन को स्वस्थ, सुव्यवस्थित एवं नियमित रूप प्रदान करने के लिए ही हमारे प्राचीन ऋषियों ने अध्यात्म एवं वैदिक ज्ञान, दर्शनशास्त्र, संगीत, आयुर्वेद, ज्योतिष आदि शास्त्रों का प्रणयन किया। ज्योतिष शास्त्र का एक अन्य नाम ज्योतिः शास्त्र भी आता है, जिसका अर्थ प्रकाश देने वाला अथवा प्रकाश के सम्बन्ध में ज्ञान करवाने वाला शास्त्र होता है—अर्थात् जिस शास्त्र से संसार का मर्म, जीवन–मृत्यु का रहस्य और जीवन के सुख–दुःख के सम्बन्ध में पूर्ण प्रकाश मिले, वह ज्योतिषशास्त्र है। **छान्दोग्य उपनिषद्** में ब्रह्म का वर्णन करते हुए बताया है कि, ''मनुष्य का वर्तमान जीवन उसके पूर्व संकल्पों और कामनाओं का परिणाम है तथा इस जीवन में वह जैसा संकल्प करता है, वैसा ही यहां से जाने पर बन जाता है। अतएव पूर्ण प्राणमय, मनोमय, प्रकाशरूप एवं समस्त कामनाओं और विषयों के अधिष्ठानभूत ब्रह्म का ध्यान करना चाहिए।''

ज्योतिष विज्ञान हमें ग्रह–नक्षत्रों सम्बन्धी कुछ शास्त्रीय सिद्धान्त प्रदान करता है, जिनके द्वारा हम पूर्व कर्मों के प्रतिफल को जानकर भविष्य में अपने जीवन को उच्चतर दिशा की ओर ले जाना है। ज्योतिष ज्ञान पर आधारित बनी एक जन्मपत्री अथवा जन्म कुण्डली अपने गर्भ में अनके रहस्य संजोए रहती है। एक कुशल एवं अनुभवी ज्योतिषी की सहायता से मनुष्य अपने जीवन सम्बन्धी अज्ञात रहस्यों को जानकर निश्चय ही भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति को प्राप्त कर सकता है।

यस्य नास्ति किल जन्मपत्रिका या शुभाऽशुभ फलप्रदर्शिनी।
अन्धकं भवति तस्य जीवितं दीपहीनमिव मन्दिरं निशि॥

अर्थात्–जिस मनुष्य के पास शुभाशुभ को बतलाने वाली जन्मपत्री नहीं है, उसका जीवन वैसे ही अन्धकारमय होता है, जैसे रात्रिकाल में किसी मन्दिर में बिना दीपक के अन्धेरा होता है।

ईश्वर की अपार कृपा से उत्तरी भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं सर्वप्राचीन प्रकाशन **''पंचांगदिवाकर'', 'मुफीद आलम जन्त्री' (उर्दू–हिन्दी–पंजाबी) एवं तिथ पत्रिका** (पंजाबी भाषा) को प्रकाशित होते हुए प्रस्तुत संवत् २०६१ (२००४–०५ ई.) में **गौरवशाली १२९ वर्ष** हो जाएंगें। इस पंचांग समूह के प्रवर्त्तक एवं संस्थापक हमारे पूज्य पितामह विश्व विख्यात **मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु जी** (लाहौर) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में हमारे प्रकाशनों को जो राष्ट्रीय एवं विश्वव्यापी स्तर पर ख्याति एवं प्रशंसा प्राप्त हुई–वह सुविज्ञ पाठकगणों से छिपी नहीं है। उत्तरी भारत में शताब्दि से भी अधिक वर्षों पर्यन्त ज्योतिष के क्षेत्र में **हमारी पंचांग, जन्त्री** एवं अन्य पुस्तक प्रकाशनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। हमारे प्रकाशनों की निरन्तर अग्रसर ख्याति को देखकर कुछ दुष्ट प्रकृति के धन लोलुप एवं लालची प्रकाशक हमारे टाईटल से मिलता जुलता टाईटल–नाम रखकर विषय–सामग्री को तोड़–मरोड़ कर छापते हैं। इस प्रकार लोगों को गुमराह व धोखा देने की कुचेष्टा करते रहे हैं। सुविज्ञ पाठकों को सूचित किया जाता है कि वह असली व प्रामाणिक **पंचांगदिवाकर, तिथ पत्रिका, मुफीद आलम जन्त्री तथा हमारी नव प्रकाशित 'अर्द्धशताब्दि पंचांग'** (संवत् २००१ से २०६० तक) खरीदते समय प्रथम पृष्ठ पर गणितकर्त्ता पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम. ए., पं. विवेक शर्मा व पंकज शर्मा, जालन्धर के नाम अवश्य पढ़ लिया करें।

गतवर्षीय पंचांगदिवाकर में चामत्कारिक भविष्यवाणियां

ईश्वर की कृपा से हमारी गत वर्षों की पंचांगों एवं जन्त्रियों से उल्लिखित **अनेकश: भविष्यवाणियां** ठीक निकलती आ रही हैं। **उदाहरणस्वरूप** जैसे–भारत का स्वतन्त्र होना, बंगलादेश के रूप में पाकिस्तान का विभाजन, कांग्रेस (ई) की पराजय, पुनः सत्ता में आना, ईरान–ईराक युद्ध (२०३९), पूर्व प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी की आकस्मिक मृत्यु (संवत् २०४१), पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गांधी की आकस्मिक मृत्यु (संवत् २०४८), पंजाब में चुनाव व शान्ति प्रक्रिया बहाल होना, सन् १९९८ में मोर्चा सरकार (गुजराल सरकार) का पतन (२०५५) तथा लोकसभा चुनावों में भाजपा का सफल होकर सत्तारूढ़ होना आदि अनेक भविष्यवाणियां जो सत्य साबित हो चुकी हैं। जिनका विवरण गत वर्षों की पंचांग में करते आए हैं। आगे संवत् २०५६ से २०६० तक की कुछ प्रमुख भविष्यवाणियां ही उद्धृत हैं, जो ईश्वर कृपावश चामत्कारिक रूप से सत्य निकलती आई हैं।

सम्वत् २०५६ के पंचांग दिवाकर (पृष्ठ ४८/४९/५५) पर–

कारगिल (जम्मू–कश्मीर) में पाक सैनिक घुसपैठ एवं युद्ध के बारे में पढ़ें (पृष्ठ 47–कालम II पर) **''जेहाद के नाम पर जम्मू–कश्मीर में भारत के विरुद्ध प्रशिक्षित सैनिक एवं आतंकवादी भेजना''** तथा जम्मू–कश्मीर के सीमावर्ती भागों में पाकिस्तानी सेना द्वारा गोलाबारी करना। पृष्ठ 49–कालम II संदर्भ जम्मू–कश्मीर। तथा हरियाणा में बंसी लाल सरकार के बर्खास्त होने के योग और दिल्ली विधानसभा चुनावों में भाजपा का गिरना–पृष्ठ 50 कालम I) और कांग्रेस का आना।

संवत् २०५७ के पंचांग में–**पाकिस्तान में शरीफ सरकार का तख्ता पलट तथा मार्शल लॉ या आपात् स्थिति का लगना एवं शासन परिवर्तन, छत्रभंग, उपद्रव, राजनीतिक टकराव व हिंसक घटनाएं होना** (पृष्ठ 51–कालम I व II)

भाजपा सरकार का गिरकर केन्द्र में भाजपा गठबन्धन सरकार का पुनः सत्ता ग्रहण करना, देखें, भारत का घटनाक्रम (पृष्ठ 52, कॉलम I)

सं. २०५८ में, भारत–पाकिस्तान सहित अनेक देश शान्ति समझौतों के प्रयास करेंगे परन्तु सफल नहीं होंगे। पृष्ठ 59 कालम II में ही उ. प्र., **राजस्थान, म. प्र., पंजाब आदि प्रदेशों में भाजपा की लोकप्रियता** को ठेस पहुँचना, पृष्ठ 56 (कालम II) पर जगत लग्न में कालसर्प योग के कारण मिथुन एवं धनु राशि वाले देशों में विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी जैसा कि **अमरीका में दुखद त्रासदी घटी। २०५९ में पृष्ठ ५६ (कालम I)** में पढ़ें–**''अफ़गानिस्तान में नया राजनैतिक ग्रुप उभर कर सामने आएगा तथा तालिबान अमरीका के प्रभाव एवं युद्ध शक्ति के सामने अधिक देर तक टिक नहीं पाएँगे।''** जैसा कि सर्वविदित है ऐसा ही हुआ। पृष्ठ ६० (कालम I) पर पंजाब के शीर्षक के अन्तर्गत स्पष्ट पढ़ें–**''आगामी विधानसभा चुनावों में सत्तारूढ़ बादल सरकार को काफ़ी कम सीटों पर विजय होगी। कांग्रेस पार्टी सशक्त व मुख्य पार्टी के रूप में उभर कर आना।''** फर. २००३ में **खप्पर योग** होने से अमेरिका व ईराक युद्ध होना पृष्ठ 58–I

संवत् २०६० की पंचांग में अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस आदि प्रमुख देश एशिया तथा अन्य विकासशील देशों के प्रति दोगली एवं पक्षपातपूर्ण नीति अपनाना (पृष्ठ 62 का. II), 7 अप्रै. से **शनि–मंगल के मध्य समसप्तक योग** होने से **अमरीका और ईराक युद्ध होना**–(पृष्ठ 60) पाकिस्तान द्वारा भारत में विध्वंसक व हिंसक कार्यवाहियों का क्रम जारी रखना (पृष्ठ 63 का. II) अग. में **पांच मंगलवार** होने के फलस्वरूप उ. प्र., म. प्र., कश्मीर आदि प्रदेशों में छत्रभंग (सत्ता–परिवर्तन) एवं हिंसक घटनाएँ अधिक होना (पृष्ठ 65 का. I, II) जैसा कि उत्तर प्रदेश एवं **कश्मीर घाटी** में हुआ। **ईराक में सत्ता परिवर्तन** के योग के बारे में स्पष्टत: पढ़ें पृष्ठ 63 कालम II पर ''अमेरिका सरकार को **ईराक पर हमले** के मुद्दे पर फ्रांस, चीन, भारत सहित अनेक देशों द्वारा विरोध करना।'' इत्यादि अनेक भविष्यवाणियाँ ज्योतिष फलित शास्त्र की प्रामाणिकता एवं सत्यता के सम्बन्ध में स्वयं सिद्ध प्रमाण हैं।

सम्वत् २०६१ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल और भविष्यफल

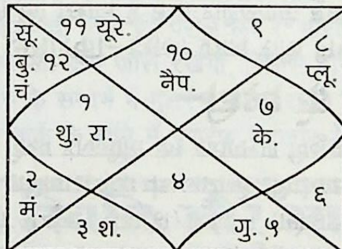
वि. सम्वत् २०६१ में ग्रहों की आकाशीय कौंसिल (ग्रह–परिषद्) के दश पदाधिकारों में से **तीन महत्त्वपूर्ण** पदाधिकार क्रूर ग्रहों को तथा सात अधिकार सौम्य (शुभ) ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। **राजा का अधिकार** प्रचण्ड एवं अग्नितत्त्व प्रधान ग्रह सूर्य को, तथा **मन्त्री पद** का **अधिकार क्रूर** एवं अग्नि तत्त्व **ग्रह मंगल को प्राप्त हुआ** है। फलस्वरूप विश्व के अनेक देश प्रभुसत्ता, टकराव, प्रतिद्वन्दिता एवं होड़ की प्रवृत्तियां बढ़ेंगी। अनेक विकासशील तथा विकसित देशों के मध्य विरोध एवं वैमनस्य बढ़ेगा। भारत और पाकिस्तान जैसे देशों में परस्पर विरोध एवं तनाव बढ़ेगा। दोनों देशों में साम्प्रदायिक तनाव, राजनैतिक अस्थिरता एवं अनिश्चितताएँ बढ़ेंगी। **हेमलम्ब** नामक सम्वत्सर का फल भी शुभ नहीं कहा जा सकता। भारत के राजनैतिक क्षेत्रों में विशेष उतार–चढ़ाव देखने को मिलेंगे। विभिन्न राजनीतिक पार्टियों में परस्पर विरोध एवं टकराव होंगे। देश में कहीं उपद्रव, हिंसा एवं अग्निकांड की घटनाएं बढ़ेंगी। **लोगों में क्रोध, उत्तेजना, लोभ एवं धन–लोलुपता** अधिक बढ़े। झगड़े–फिसाद अधिक हों। शुक्र **सस्येश** होने से गेहूँ, चावल आदि अनाज, ईख एवं मौसमी फलों की पैदावार अच्छी हो, परन्तु उत्पादनों में वृद्धि का लाभ अधिकांशतः सांभ्रान्त एवं उच्चवर्ग के लोग ही उठाएंगे। धान्येश बुध के कारण पंजाब, राजस्थान, हरियाणा आदि प्रदेशों में उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी। परन्तु फलों एवं मेघ (वर्षा) का स्वामी चन्द्र होने से कुछ प्रदेशों में फल, फूल, अनाज आदि की पैदावार अच्छी होने के संकेत हैं। उपभोग्य एवं सुख–सुविधाओं के साधनों में विस्तार होंगे। दूर संचार के उपकरणों, कम्प्यूटर इंजीनियरिंग, आभूषण, जवाहरात एवं रबड़ उद्योग एवं अन्य लघु उद्योगों तथा अन्तरिक्ष विज्ञान के संसाधनों में आश्चर्यजनक उन्नति होगी।

धनेश एवं धातुओं का स्वामी **गुरू** होने से पीतल सुवर्ण, चाँदी, ताँबा, लौह आदि धातुएँ एवं पुखराज, मोती, हीरे आदि जवाहरात **तेज़ भाव** होंगे। व्यापारिक एवं वणिक् वृत्ति का व्यवहार करने वाले अधिक सम्पन्न एवं खुशहाल होंगे। परन्तु **रसों के स्वामी शनि** के प्रभाव से उपभोग्य वस्तुओं की कीमतों में आशातीत वृद्धि से सामान्य लोग दुःखी एवं असंतुष्ट होंगे। लोगों में क्लिष्ट एवं मानसिक रोगों की अधिकता रहे। तथा लोगों में परस्पर नीरसता अर्थात् प्रेम–भावना में कमी रहे।

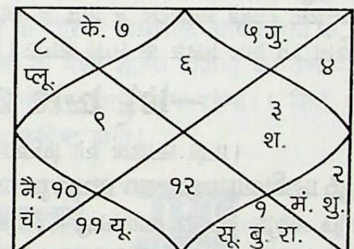
संवत् २०६१ में **चार स्तम्भों** के अनुसार जलस्तम्भ मात्र चौबीस प्रतिशत (२४%) है। फलस्वरूप वर्ष में उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी। गेहूँ, धान्य आदि अनाज का उत्पादन वाँछित मात्रा में नहीं हो पाएगा। अनाजादि के मूल्यों में भारी वृद्धि होने की सम्भावना होगी।

नव वर्ष प्रवेश एवं जगत् लग्न कुण्डली अनुसार भविष्यफल

नववर्ष प्रवेश कुं. इष्ट ५४/०३



जगत् लग्न कुण्डली ई. २९/५०



संवत् २०६१ में **नववर्ष प्रवेश,** 21 मार्च, रविवार की प्रातः 4 बजकर 12 मिनट से उभा नक्षत्र कालीन मकर लग्न में प्रविष्ट हो रहा है। लग्न भाव में नैपच्यून स्थित है, तथा लग्नेश शनि छटे भाव में पड़कर तृतीयभावस्थ वर्ष के राजा सूर्य और बुध एवं चन्द्र को दशम दृष्टि से देख रहा है। फलस्वरूप विश्व के अनेक विकसित एवं विकासशील देशों के मध्य नए राजनैतिक समीकरण बनेंगे। व्यवसायिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस, चीन आदि विकसित देशों का रवैय्या एशिया के अन्य विकासशील देशों के प्रति भेदभाव एवं पक्षपातपूर्ण रहेगा। अमेरिका की राशि (मिथुन) पर शनि की स्थिति और राशि स्वामी बुध नीच राशि में होने से राष्ट्रपति बुश द्वारा विदेश नीतियों के सम्बन्ध में अमेरिका की प्रतिष्ठा को गहरा धक्का पहुँचने के योग होंगे। ध्यान रहे, वर्ष प्रवेश लग्न में मकर लग्न राशि भारत की भी प्रभाव राशि है, फलस्वरूप विश्व राजनीति में भारत की प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परन्तु भारत के उत्तरी भागों में कहीं छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन), उपद्रव आदि होने के संकेत हैं। वर्षा भी असमय पर होगी। तथा धान्यादि अनाज महंगे होंगे–

मकरे च महोत्पातमुत्तरस्यां नृपक्षयः। वर्षमेकं सुनिष्पत्तिः पश्चिमायां महासुखम्।
मध्यदेशेऽर्धनिष्पत्तिः किंचिद्‌धान्यमहर्घता। अकाले मेघवृष्टिः स्यात् लाभो धान्यस्य विक्रयात्॥

धान्य (अनाजादि) का क्रय–विक्रय करने वाले व्यापारी विशेष रूप से लाभान्वित होंगे। मेष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, मकर व मीन राशि वाले देश एवं इन्हीं राशियों से सम्बन्धित नगरों में विशेष आश्चर्यजनक घटनाएँ घटित होंगी। फिलस्तीनी, ईराक, अफ़गानिस्तान, पाकिस्तान, भारत, दक्षिणी कोरिया, सीरिया आदि देशों के भीतर विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं।

जगत् लग्न के अनुसार भविष्य चक्र

वैशाख कृष्ण नवमी तिथि मंगलवार १३ अप्रैल सं. 2004 ई. को २९/५० घट्यादि इष्ट पर कन्या लग्न में प्रविष्ट होगा। लग्नेश बुध अष्टम भाव में सूर्य–राहु के साथ अस्तंगत

होकर स्थित है। वर्ष का राजा (सूर्य) यद्यपि अष्टम स्थान में राहु युक्त होने से विश्व के अनेक राष्ट्राध्यक्षों के लिए सन् 2004 ई. का वर्ष अत्यन्त चुनौतिपूर्ण एवं विषम परिस्थितियों से युक्त होगा। कुछ यूरोपीय एवं मुस्लिम बाहुल्य देशों में परस्पर टकराव, उपद्रव, विस्फोटक घटनाओं एवं प्राकृतिक आपदाओं के कारण जन व धन हानि होने के भी संकेत हैं, **विशेषकर मेष, मिथुन, कन्या, तुला व मकर राशि वाले देश एवं नगर** विशेष रूप से प्रभावित होंगे। इन राशियों के अन्तर्गत अमरीका, ब्रिटेन, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत, दक्षिणी कोरिया, लैबनान, इज़राइल, ईराक, श्रीलंका, नेपाल आदि देश आ जाते हैं। **कन्या** लग्न में जगत् लग्न होने से पूर्व देशों की परिस्थितियों में अधिक परिवर्तन न होंगे, दक्षिण में अनाज की कमी, बंगाल में उपद्रव तथा पश्चिमी देशों में कहीं लोग विग्रह, उपद्रव तथा पूर्वोत्तर देशों के मध्य कहीं युद्ध–विग्रह, उपद्रव, छत्रभंग होने के संकेत हैं।

कन्यायां सुस्थिरा प्राच्यां घृते महर्घतामता। मारि दक्षिण देशस्यात्तथा बंगेप्युपद्रवः।
लोक-दुखं पश्चिमायां विग्रहऽन्न समर्घता॥
चतुष्पद सुखं प्राच्यामुदीच्यां राजविग्रहः। मध्य देशे प्रजाभंगः समर्घत्वं घृतेनपुनः॥

इण्डोनेशिया, अफ्रीका, ईराक, सूडान, सीरिया, अफगानिस्तान, लेबनान, टर्की, इथोपिया पाकिस्तान आदि देशों में कहीं उपद्रव, हिंसक घटनाएं एवं छत्र भंग होने के योग बनेंगे। अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत आदि देशों में आतंकवाद फिर सिर उठाने लगेगा।

सम्वत् २०६१ में ग्रह-गोचर एवं विश्व के हालात

संवत् के **राजा सूर्य** एवं **मंत्री मंगल** के प्रभावस्वरूप तथा वर्ष–प्रवेश व जगत–लग्न दोनों कुण्डलियों में ग्रहों की स्थिति का अनुशीलन करने से यही विदित होता है कि आगामी वर्ष विश्व के बहुत से देशों की आन्तरिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ तथा बाह्य राजनैतिक वातावरण विक्षुब्ध, अनिश्चित एवं अशान्त रहेगा।

सम्वतारम्भ से पूर्व रविवार को चैत्र से संक्रान्ति होने से विश्व के कुछ देशों के मध्य युद्ध भय एवं टकराव पैदा होंगे। इज़राईल, लैबनान, अमरीका व इराक मध्य छद्म युद्ध एवं युद्धाग्नि भड़कने के योग होंगे।

संक्रान्तिरादित्य दिने न शस्ता करोति युद्ध नृपतेरतीव।
धान्यं महर्घ प्रतिरौद्र वार्ता प्रजा भवेद् दुखितहीन दीना॥

इसके अतिरिक्त चांद्र चैत्र मास में (7 मार्च से 5 अप्रैल तक) में पाँच रविवार होने से कुछ अफ्रीकाई देशों में कहीं दुर्भिक्ष एवं छत्रभंग होने का भय होगा। कहीं उपद्रव, आतंक एवं हिंसक घटनाओं के कारण रोग, शोक, भूस्खलन, बाढ़, दुर्भिक्ष एवं भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदाओं का भय होगा। आगे **वैशाख** मास (6 अप्रैल से 4 मई) के मध्य पाँच मंगलवार होने से विश्व में कहीं युद्ध भय, छत्र भंग (सत्ता परिवर्तन), हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ, राजनीतिक उलट–फेर, उपद्रव तथा किसी प्रमुख नेता की आकस्मिक मृत्यु होने के संकेत हैं–

यत्र मासे महीसूनो जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥

२८ अप्रैल से १३ जून के मध्य मिथुन राशि पर शनि–मंगल का योग रहेगा तथा २५ मई को शनि–मंगल के मध्य अंशात्मक युति होने से इस अवधि में कुछ देशों के मध्य युद्ध–भय, टकराव एवं हिंसा की घटनाएँ घटित होंगी। किसी देश में दुर्भिक्ष एवं अराजकता का वातावरण बनेगा। ३ जुला. से २८ सितं. को मध्य **खप्पर योग** होने से भारत, पाक सहित अनेक देशों में राजनीतिक अस्थिरता, उथल–पुथल एवं अशान्ति व्याप्त होगी।

''युद्धादौ शनिमाहेयो तदा दुर्भिक्षकारकौ'' (मयूरचित्र)

8 जुलाई को सूर्य–शनि के मध्य मिथुन राशि पर अंशात्मक युति बनना विश्व के किसी मूर्धन्य नेता के लिए अशुभ एवं घातक साबित होगा।

१९ मई से १७ अक्तू. के मध्य गोचरवश अनेक बार कालसर्प योग बनने से तथा 24 अक्तू. से 17 नवं. के मध्य कन्या राशि पर **गुरु–शुक्र का योग** बने रहने से अफगानिस्तान, पाकिस्तान, ईराक, बलूचिस्तान, चैचिन्या आदि मुस्लिम देशों में आतंकवाद की दावाग्नि पुनः पनपने लगेगी। भारत, श्रीलंका, बर्मा, नेपाल आदि शान्तिप्रिय देश भी इसके प्रभाव में आएंगे। इस अवधि में **भारत–पाक आदि विरोधी देशों में परस्पर युद्ध एवं सैनिक टकराव** होने के योग हैं। **भारत के पश्चिमी क्षेत्रों में कहीं हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ होने की** सम्भावना होगी–

गुरु-शुक्रो यदेकस्थो नरं युद्धं तदा भवेत्। अकाले च भवेदवृष्टि जगत्यां नात्र संशयः॥

इस अवधि में उपरोक्त देशों में कहीं छत्रभंग, युद्ध–भय तथा असामयिक वर्षा से बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों का भय होगा।

मार्गशीर्ष मास (२७ नवम्बर से २६ दिसम्बर के मध्य) में पाँच शनिवार तथा पाँच रविवार होने से किन्हीं देशों में उपद्रव, युद्ध–भय, लोगों में किलष्ट रोग, मूल्यों में आशतीत वृद्धि से लोगों में दुख, पीड़ा हो, विश्व में रोगोत्पात, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ अधिक रहें।

शनिवारा यदा पंच जायन्ते रविपंचकम्। महार्घ जायते धान्यं रोगशोकाकुला पृथिवी॥

विश्व राजनीति का वातावरण विक्षुब्ध, तनावपूर्ण एवं अशान्त होगा।

–विश्व के कुछ अन्य देश–

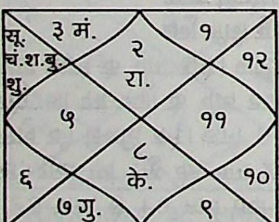
अमेरिका–इसकी प्रभाव राशि मिथुन है। जगत् लग्न के दशम भाव पर मिथुन पर शनि की स्थिति है तथा राशिस्वामी बुध भी अष्टम भाव में अस्तगत होकर सूर्य–राहु के साथ है। गतवर्ष ईराकी युद्ध के फलस्वरूप अपनी धूमिल प्रतिष्ठा का पुनरुत्थान करने के लिए बुश सरकार यूरोपीय एवं ऐशिया के विभिन्न देशों के साथ अपने राजनैतिक एवं व्यापारिक सम्बन्धों में सुधार लाने के प्रयास करेगी। ईराक पर एकतरफा हमले को लेकर

संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.) में रूस, चीन, फ्रांस, जर्मनी आदि प्रमुख देशों के विरोध का सामना करना पड़ेगा। बुश सरकार की प्रतिष्ठा को भारी ठेस पहुँचेगी एवं असमंजस की स्थिति बनेगी। भारत के सम्बन्धों में अपनी **दोगली कूटनीति** का क्रम जारी रखेगी। बाह्य तौर पर आतंकवाद के सम्बन्ध में भारत का समर्थन करने पर भी पाकिस्तान को आर्थिक एवं अत्याधुनिक हथियारों की आपूर्ति प्रदान करता रहेगा।

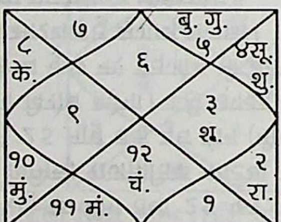
पाकिस्तान—प्रभाव राशि कन्या है। जगत् लग्न कुण्डली में भी इसी लग्न राशि का उदय हुआ है। लग्नेश बुध अष्टम भाव में सूर्य व राहु युक्त होकर शत्रु ग्रह गुरु द्वारा दृष्ट है। फलस्वरूप वर्तमान मुशर्रफ सरकार की तानाशाही नीतियों के कारण उसकी लोकप्रियता एवं प्रभाव में कमी होगी। प्रधानमन्त्री तथा विरोधी पार्टियों के साथ उनके मतभेद उभरने लगेंगे। देश के राजनीति एवं आर्थिक क्षेत्रों में भी मुशर्रफ सरकार को गम्भीर चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। सिन्ध आदि अनेक प्रान्तों में हिंसक एवं विस्फोट घटनाएँ घटित होंगी। पाकिस्तान में बेरोज़गारी ग़रीबी तथा उच्च वर्ग एवं निम्न वर्गों के बीच खाई बढ़ेगी। आतंकवादी तत्त्वों को परोक्ष रूप से भारत और कश्मीर में विध्वंसक कार्यवाहियों के निमित्त भेजने का क्रम जारी रखेगा, जिससे दोनों देशों के मध्य शान्ति प्रक्रिया को ठेस पहुँचेगी। भारत के सन्दर्भ में मुशर्रफ सरकार का रवैय्या नकरात्मक ही बना रहेगा। ६ सितं. ०४ के बाद कर्क के शनि में मुशर्रफ सरकार के लिए अरिष्ट होगा।

सम्वत् २०६१ में ग्रहों की स्थिति और भारतवर्ष

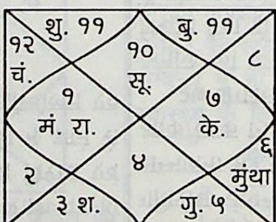
कुण्डली स्वतन्त्र भारत
15 अग. 1947 ई.



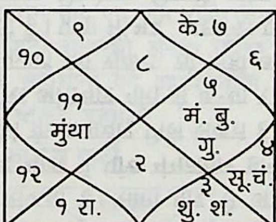
स्व. भारत का ५७वां वर्ष
15 अग. 2003 ई.



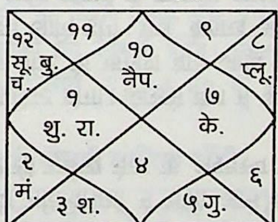
गणतन्त्र 55वां, वर्ष
26 जन. 2004 ई.



स्वतन्त्र भारत ५८वां वर्ष
15-8-2004



नववर्ष प्रवेश कुण्डली
21 मार्च, 2004 ई., रविवार



स्वतन्त्र भारत के ५७ वर्ष की वर्ष कुण्डली में **१५ अगस्त, २००३ ई.** से ही कन्या लग्न में प्रविष्ट हो चुका है। इस वर्ष कुण्डली में भारत की प्रभाव राशि (मकर) पर मुंथा पंचम भाव में शुभ है, उस पर सूर्य व शुक्र–दोनों ग्रहों की शुभाशुभ दृष्टियाँ पड़ रही हैं। फलस्वरूप वर्षारम्भ में केन्द्रीय सरकार को विशेष **क्लिष्ट एवं पेचीदा समस्याओं का सामना** रहेगा। मुंथेश शनि दशम भाव में पड़कर वर्ष लग्नेश बुध को विशेष दृष्टि से देख रहा है। जिससे केन्द्रीय गठबन्धन सरकार में कुछ विघटनकारी तत्त्व पैदा होने से राजनीतिक गतिरोध उत्पन्न होने की सम्भावना है।

५५वें गणतन्त्र दिवस (२६ जन., २००४ ई.) की कुण्डली में **मकर लग्न** उदित हुआ है। जबकि **नववर्ष प्रवेश कुण्डली में** भी यही लग्न उदित है। जिससे यही लक्षित होता है कि निकट भविष्य में भारत एक सुदृढ़ आर्थिक एवं सैन्य शक्ति के रूप में उभर कर आएगा। नवम भाव में मुंथा होने से सत्तारूढ़ सरकार देश के विकास के लिए बहुमुखी नवीन योजनाएं बनाएगी, परन्तु **मुंथेश (बुध) द्वादश** भाव में होने से तथा उस पर गुरू–शनि आदि ग्रहों की दृष्टि पड़ने से विभिन्न विकास योजनाओं के क्रियान्वन में विघ्न, बाधाएँ अधिक होंगी। भ्रष्टाचार, चोरी, जालसाजी, स्वार्थपरता एवं राजनेताओं का अपने दायित्व की प्रतिबद्धता में कमी के कारण अधिकांश विकास सम्बन्धी कार्यों का लाभ सामान्य लोगों तक नहीं पहुँच पाएगा। चतुर्थ भाव में **मंगल–राहु का योग** होने से कहीं उपयोगी वर्षा की कमी रहे, तो कहीं अति वर्षा से बाढ़ आदि का प्राकृतिक प्रकोप होने से अनाज आदि की पैदावार में कमी होगी। सामान्य लोगों में भय, दुःख, पीड़ा एवं असन्तोष होगा—

राहुरंगारकश्च राशि ऋक्षगतौ तदा।
महाभयं च सस्यानां च न वृष्टि प्रजायते॥

स्वतन्त्र भारत के ५८वें वर्ष (१५ अग. २००४ ई.) की कुण्डली में **बृश्चिक लग्न** उदित है। कुण्डली में सभी ग्रह राहु–केतु के मध्य संचरित होने से **कालसर्प** योग बना हुआ है, तथा वर्ष की मुंथा भी चतुर्थ भाव में पड़ना तथा मुंथा पर मंगल व गुरू की संयुक्त दृष्टियाँ पड़ने से **१५ अगस्त, २००४ ई.** के बाद का समय केन्द्रीय भारत **सरकार के लिए चुनौतियों से भरा एवं अग्नि–परीक्षा जैसा होगा।** विभिन्न पार्टियों में उथल–पुथल के बाद नए **राजनीतिक गठजोड़** उभर कर आएँगे।

सम्वत् २०६१ में ग्रह गोचर अनुसार भारत का घटनाक्रम

वर्ष २००४ ई. के प्रारम्भ से ही **९ जनवरी से २ फरवरी** तक **गुरू–शुक्र** के मध्य **समसप्तक** योग बना हुआ है, जिससे उत्तरप्रदेश (अयोध्या), मध्यप्रदेश, बिहार, असम आदि के पूर्वी क्षेत्रों में तथा जम्मू–कश्मीर के पश्चिमोत्तर भागों में व्यापक हिंसा, अग्निकाण्ड, उपद्रव एवं साम्प्रदायिक घटनाएँ अधिक घटित हों। राजनेताओं के मध्य भी विरोध, द्वेष एवं टकराव पैदा होंगे। सीमाओं पर सैनिक मुठभेड़, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं होने के संकेत हैं।

यदा सौरि भौमे सुरराज मंत्री–भार्गवश्च यदैक राशौ समसप्तके वा।
अयोध्या, मध्यदेशे लंकापुरे पूर्वस्यां च क्षुधाभयं शस्त्रं करोति॥

माघ मास (८ जन. से ६ फर.) के मध्य **पाँच गुरुवार** होने से कहीं पश्चिमी प्रदेशों में एवं देश की पश्चिमी सीमाओं पर आतंकवादी एवं विस्फोटक घटनाएँ, जघन्य हत्याएँ, उपद्रव एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होने के संकेत हैं–

यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः।
विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग युद्धं च जायते॥

25 जन. से 10 मार्च तक मंगल–राहु का योग तथा 29 फर. से मेष राशि पर ही मंगल, शुक्र एवं राहु का योग रहने से **विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के** मध्य विरोध एवं टकराव की स्थिति बने। आगे 9 मार्च से 25 मार्च तक बुध मीन (नीच) राशि में आने से राजनेताओं एवं प्रजा के बीच टकराव एवं विरोध बढ़ेगा। कहीं उपद्रव जन–आन्दोलन एवं टकराव बढ़ने के योग होंगे। पार्टियों के मध्य कुछ नए गठजोड़ भी बनेंगे।

धनु मीने बुधोयाति मारयेत् तु मृगान् गजान्।
राजा विरोध कृत् तत्र चान्यथा न भविष्यति॥

मृगों, हाथियों एवं अन्य चौपायों की हानि होगी।

चैत्रमास (७ मार्च से ५ अप्रैल) में ५ रविवार होने से कहीं दुर्भिक्ष, छत्रभंग, या मन्त्रिमण्डल में विशेष परिवर्तन, युद्ध–भय एवं हिंसक घटनाएं होने के संकेत हैं–

यत्रमासे रावेवारा जायन्ते पंचसततम्।
दुर्भिक्षं छत्रभंग स्यात् दारुते महद्भयम्॥

अनाज आदि आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक तेज़ी के कारण सामान्य लोगों में असन्तोष एवं विक्षोभ की भावनाएं रहेंगी। आगे वैशाख मास में (६ अप्रैल से ४ मई) के मध्य **पाँच मंगलवारों का** होना किसी प्रधाननेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु होने के संकेत हैं। कहीं उपद्रव, अग्निकाण्ड व हिंसक घटनाएँ घटित होने की भी संभावनाएँ होंगी। १ मई को **सूर्य–राहु मध्ये अंशात्मक युति** तथा २७ अप्रैल. से १३ जून के. मध्य **मंगल–शनि** का योग **मिथुन राशि पर होने** से मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश (विशेषकर अयोध्या), असम, गुजरात, एवं जम्मू–कश्मीर के उत्तर–पश्चिमी भागों में विस्फोटक घटनाएँ, सीमाओं पर युद्ध, आन्तरिक उपद्रव, जनांदोलन आदि हिंसक घटनाएं घटित होने की सम्भावनाएँ होंगी।

मिथुने च यदा सौरि दुर्भिक्षं तत्र रौखम्। पूर्व पश्चिमे दारुणं युद्धं नृपाणां च महद्भयम्।

कालसर्प योग—१९ मई से १७ अक्तू. के मध्य गोचरवश अनेक बार कालसर्प योग का प्रभाव रहेगा। फलस्वरूप इस अवधि में देश के विभिन्न प्रान्तों में राजनेताओं के मध्य विघटन की स्थिति बनेगी। कुछ नए राजनीतिक संगठन एवं गठबन्धन उभरेंगे। सत्तारूढ़ प्रमुख भाजपा पार्टी में भी पारस्परिक असन्तोष एवं आन्तरिक विरोध के तत्त्व उभरने लगेंगे तथा समन्वय की कमी होगी। राजनीतिक अस्थिरता के कारण सामान्य लोगों में भय, दुविधा, विक्षोभ, संदेह एवं आक्रोश की भावनाएं रहेंगी।

१४ जून से ३० जुलाई के मध्य वर्ष का मन्त्री मंगल नीच राशि (कर्क) में जनोपयोगी वस्तुओं की कीमतों में अत्यधिक वृद्धि से सामान्य लोगों में अत्याधिक रोष एवं क्रोध की भावनाएँ बढ़ेंगी। राजनेताओं के प्रति विश्वास में कमी आएगी।

खप्पर योग—जब चान्द्र मासों में क्रमशः **पांच शनिवार, पाँच रविवार** एवं **पांच मंगलवार** पड़ते हो, तब **खप्पर योग** बनता है। यह स्थिति प्रथम श्रावण (३ जुला.) से लेकर भाद्रपद मास (२८ सितं.) तक की अवधि में बन रही है, इस काल अवधि में सत्तारूढ़ **गठबन्धन सरकार** को गम्भीर संकटों का सामना करना पड़ सकता है। कहीं राजनीतिक गतिरोध उत्पन्न हो सकता है। सीमा पार से आतंकवादी गतिविधियों में तेजी आने की सम्भावना है। **भाद्रपद मास** में **पांच मंगलवार** होने से **किसी मूर्धन्य** नेता के अपदस्थ या आकस्मिक निधन होने के समाचार मिल सकते हैं।

२७ अगस्त से **गुरू अतिचार** गति से कन्या राशि में प्रविष्ट होगा। जिससे देश में कहीं अनाज की कमी, पेयजल का संकट, तो कहीं अत्यधिक वृष्टि के कारण बाढ़ आदि की स्थिति पैदा हो सकती है। प्रजा में भय, अशान्ति एवं उपद्रव आदि होंगे। चैत्र, वैशाख आदि में राजस्थान, झारखण्ड, मिजोरम, दिल्ली, मध्य प्रदेश आदि राज्यों में छत्रभंग अशान्ति आदि उत्पन्न होने की आंशका रहे। घी, तैल, चावल, गेहूँ आदि अनाज में तेज़ी हो।

यदा सौम्यग्रहकोऽपि अतिचारोपजायते। दुर्भिक्षं नृपपीड़ा च शुभ दृश्यते क्वचित्॥
मरुदेशे छत्रभंगश्चैत्रेवा माधवे भवेत्। गोधूमघृत तैलानि महर्घाणि समादिशत्॥

२४ अक्तूबर से १६ नवम्बर के मध्य **गुरू–शुक्र का योग कन्या** राशि में रहेगा। तथा ८ नवं. से शनि भी **कर्क राशि** में **वक्री** होगा। जिससे राजनैतिक क्षेत्रों में उथल–पुथल, केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में नए परिवर्तित गठजोड़ देखने को मिलेंगे। कहीं अनाज, पेयजल एवं उपद्रव, प्राकृतिक प्रकोपों से भय एवं हानि होने के संकेत हैं–

यदा क्रूरग्रहो वक्री हि अतिचारी सौम्यकः। पीड़ा व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्षं राज्यविग्रहम्॥

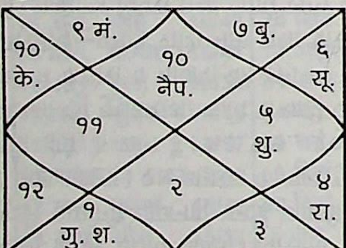
केन्द्र में राजनीतिक गतिरोध तथा राजनेताओं में परस्पर टकराव एवं विरोध पैदा होगा।

मार्गशीर्ष (२७ नवं. से २६ दिसं. तक) मास में 5 शनिवार एवं रविवार तथा पौष (२७ दिसं. से २५ जन. २००५ ई.) के मध्य पुनः **पांच मंगलवार होने से केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में तथा सत्ता के वर्तमान स्वरूप में परिवर्तन के संकेत** हैं। जम्मू–कश्मीर, असम आदि सीमावर्ती प्रदेशों में कई स्थलों पर हिंसक एवं विस्फोटक घटनाओं की भी संभावना रहेगी।

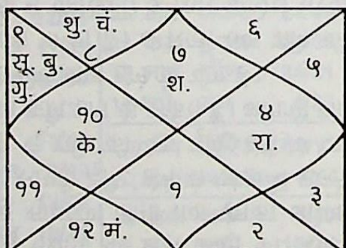
स्वतन्त्र भारत के ५८वें वर्ष की कुण्डली में बृश्चिक (स्थिर) लग्न है तथा वर्ष लग्नेश मंगल दशम भाव में गुरू, बुध शुभ ग्रहों से युक्त होकर मुंथा एवं मुंथेश शनि से दृष्ट है। फलस्वरूप राजनीतिक उथल–पुथल के बावजूद भारतवर्ष आर्थिक एवं मध्यस्तरीय उद्योगों के विकास में विशेष उन्नति करेगा। विदेश नीति के अन्तर्गत अमेरिका, रूस, चीन, अफ़गानिस्तान, नेपाल, भूटान, जापान, जर्मनी, ब्रिटेन, इज़रायल आदि देशों के साथ राजनैतिक सम्बन्ध बेहतर होंगे। पाकिस्तान के साथ अल्पकालिक सुधारों के बावजूद सम्बन्ध तनावपूर्ण रहेंगे।

भारत के प्रमुख राजनैतिक दल

भाजपा गठबन्धन की शपथ कालीन कुण्डली १९ अक्तू. १९९९ ई.



भाजपा अध्यक्ष प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी



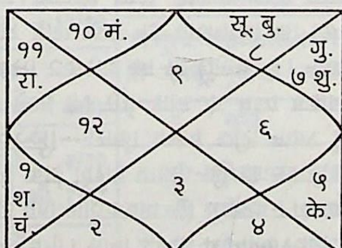
उपरोक्त भाजपा की शपथकालीन कुण्डली स्थिर लग्न (राशि बृश्चिक) में उदित है। ध्यान रहे, भाजपा प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की भी यही जन्म राशि है। **शपथकाल** कुण्डली में राशि स्वामी मंगल द्वितीय भाव में मित्रक्षेत्री होकर गुरू की स्वगृही दृष्टि को प्राप्त है। कुण्डली में ग्रह स्थिति का अनुशीलन करके हमने संवत् २०५८ (पृष्ठ 59) में स्पष्टतः भविष्य कथन किया था कि **''अनेक चुनौतियों के बावजूद गठबन्धन भाजपा सरकार अपना निर्धारित कार्यकाल पूरा कर हेगी तथा उ.प्र., राज., पंजाब, हि.प्र. आदि''** प्रदेशों में भाजपा की लोकप्रियता को ठेस पहुँचे! (पृष्ठ 59) यह तथ्य सर्व विदित है कि भाजपा गठबन्धन द्वारा भाग्यवश सन् २००४ ई० पर्यन्त अपना शासनकाल पूरा करने की प्रबल सम्भावना होगी। परन्तु आगामी वर्ष भाजपा उदित राशि स्वामी मंगल, 14 जून 2004 ई० **को नीच राशि (कर्क) में आ जाने** से भाजपा घटक के कुछ सक्रिय एवं प्रमुख सदस्यों में परस्पर वैचारिक मतभेद उभरकर आने की सम्भावना है। जिसका प्रभाव भाजपा की प्रतिष्ठा एवं लोकप्रियता पर भी अवश्य पड़ेगा। तदर्थ आने वाले लोकसभा एवं विधानसभा के चुनावों में कई प्रदेशों में भाजपा की प्रतिष्ठा को गहरी ठेस पहुँचेगी तथा उनकी आशा के विपरीत अपेक्षाकृत कम सीटों पर ही विजय प्राप्त होगी। परन्तु यदि चुनावों में विलम्ब होगा, तो लोकसभा के चुनावों में कुछ स्थलों पर आश्चर्यजनक एवं आकस्मिक सफलताएं भी मिलेंगी।

प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी जी की जन्मकुण्डली पड़े ग्रहों के अनुसार उनकी कुण्डली में कुछ बड़े प्रबल योग पड़े हुए हैं। जैसे केन्द्र एवं लग्नगत शनि उच्च राशि का होने से राजयोग कारक है।

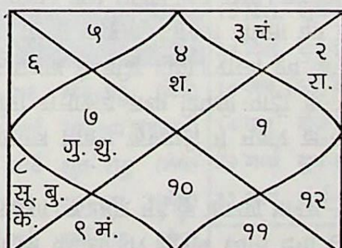
स्वोच्चे स्वकीय भवने क्षितिपाल तुल्यो।
लग्नेऽर्कजे भवति देशपुराधिनाथः॥ (फलदीपिका)

इसके अतिरिक्त यह योग **पंचमहापुरूष** योगों के अन्तर्गत **शशक योग** भी बनता है। दशम भाव में राहु होने से जातक लोकसमूहों में अग्रणी, बुद्धिमान्, महामन्त्री एवं राजनीति में सफल रहता है। (श्री महात्मा गाँधी जी की कुण्डली में भी दशम भावस्थ कर्क का राहु था।) वर्तमान में श्री वाजपेयी जी को गुरू मध्ये गुरू की अन्तर्दशा चल रही है जोकि 8 अप्रैल, 2004 ई० तक रहेगी। इस **अवधि में व्यक्तिगत तौर पर उनकी मान–प्रतिष्ठा में विश्वस्तरीय वृद्धि होगी।** यदि इस अवधि में वह लोकसभा का चुनाव लड़ते हैं, तो उनकी जीत निश्चित लगती है। श्री वाजपेयी की जन्मकुण्डली की विस्तृत समीक्षा हमारी पुस्तक **ज्योतिष तत्त्व** फलित (भाग–दो) में देख सकते हैं॥ 6 सितं. 2004 ई० से गोचरवश कर्क के शनि में उनकी कुण्डली के सप्तम भाव एवं नाम राशि (मेष) पर शनि की विशेष दशम दृष्टि होने से उनको स्वास्थ्य एवं पार्टी सम्बन्धी अनेक क्लिष्ट समस्याओं का सामना होगा। स्वास्थ्य सम्बन्ध में भी विशेष सावधानी की आवश्यकता होगी। (6) सितं. 2004 ई० के बाद स्वास्थ्य के लिए अरिष्टकर रहेगा।

कुण्डली कांग्रेस पार्टी



कुण्डली श्रीमती सोनिया गाँधी



कांग्रेस पार्टी की यथोपलब्ध कुण्डली में धनु लग्न उदित है। वर्तमान काल में राशि स्वामी गुरू लग्न से नवम् (भाग्य स्थान) में तथा जन्म राशि (मेष) से त्रिकोण पंचम भाव (प्रशासनिक बुद्धि) में संचार कर रहा है। **पंचम भाव** में चन्द्रमा नीच राशिगत शनि युक्त होने पर भी लग्नेश गुरू द्वारा दृष्ट होने से प्रशासनिक बुद्धि में वृद्धिकारक है। **फलस्वरूप** निकट भविष्य में कांग्रेस पार्टी का वर्चस्व बढ़ने के योग हैं। आगामी लोकसभा चुनावों में अपनी विरोधी पार्टियों की अपेक्षा अधिक सीटों पर कामयाब रहेगी। **श्रीमती सोनिया गाँधी की जन्म कुण्डली** में शनि–मंगल के मध्य षडाष्टकं योग बना हुआ है। परन्तु चन्द्रमा पर गुरू की विशेष दृष्टि तथा राशि–स्वामी बुध का पंचम भाव में बुध–आदित्य योग होना तथा

चतुर्थ भाव (केन्द्र) में शुक्र का स्वगृही होकर **मालव्यं योग** बनने से जातिका को नेतृत्व के गुण, उच्चपद की प्राप्ति, मान–प्रतिष्ठा एवं लोकप्रियता प्रदान करवाने में सफल होंगे। आगामी **लोकसभा चुनावों** में श्रीमती सोनिया गाँधी तथा उनकी पार्टी के सदस्य भाजपा की अपेक्षा अधिक सीटों पर कामयाब होकर निकलेगी। (19) फर. 2004 ई० तक बुध मध्ये चन्द्र दशा अत्यन्त संघर्षपूर्ण रहेगा। 22 अप्रैल, 2004 ई० के बाद 19–2–2005 ई० तक की समयावधि में विशेष शुभफल घटित होंगे। प्रधानमन्त्री बनने की सम्भावना भी हो सकती है।

भारत के कुछ मुख्य प्रान्त

हिमाचल प्रदेश—५५वें गणतन्त्र दिवस की कुण्डली में इसकी प्रभाव राशि (मीन) पर चन्द्र की स्थिति तथा मुंथा की शुभ दृष्टि है। फलस्वरूप वर्तमान कांग्रेस राज्य सरकार राज्य के विकास कार्यों की ओर विशेष ध्यान देगी। विशेषकर शिक्षा, विद्युत्, पर्यटन, कम्प्यूटर एवं तकनीकी शिक्षा, इंजीनियरिंग, फल–उद्योग, दूर–संचार, सड़क–परिवहन, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा, पेयजल, खाद्य एवं आपूर्ति आदि क्षेत्रों की ओर विशेष ध्यान देगी। भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी, महँगाई आदि जनोपयोगी समस्याओं के समाधान हेतु भी कुछ उपयोगी कदम उठाये जाएँगे। किसानों एवं लघु उद्योगों को ऋण प्रदान की व्यवस्था एवं बहुमुखी उपयोगी योजनाएँ बनाई जाएगी, परन्तु साधारण लोगों तक उनका अधिक लाभ नहीं मिल पाएगा। २७ अगस्त के बाद गुरु की स्वगृही दृष्टि होने से राज्य में उल्लेखनीय उन्नति होने के योग हैं। १३ जन., २००५ ई. से शनि की वक्र दृष्टि होने से प्राकृतिक आपदाओं एवं दुर्घटनाओं आदि से कहीं जन–धन हानि होने के संकेत हैं। आगामी लोकसभा चुनावों में कांग्रेस व भाजपा को लगभग बराबर सीटें प्राप्त होने के योग हैं।

पंजाब—प्रभाव राशि मीन तथा प्रसिद्ध राशि कन्या है। 6 सितं. तक शनि की दृष्टि रहेगी। गणतन्त्र दिवस तथा जगत् लग्न कुण्डली में ग्रहस्थिति अनुसार कांग्रेस सरकार को आगामी वर्ष लोकसभा चुनावों में लोगों के आक्रोश व विरोध का सामना करना पड़ेगा। ''गतवर्ष इसी कालम में पृष्ठ 67 पर पंजाब के बारे में की हुई भविष्यवाणियां ईश्वर कृपावश अक्षरशः सत्य प्रामाणित हुईं।'' आगामी वर्ष टैक्स वृद्धि, बिजली–पानी के मूल्यों में वृद्धि तथा ला–आर्डर (लूटमार, डकैती) की समस्याओं के कारण वर्तमान कांग्रेस सरकार को इसका नतीजा लोकसभा चुनावों में हार के रूप में चुकाना पड़ेगा। प्रधाननेता को राजनैतिक, सामाजिक तौर पर विरोध का सामना करना पड़ेगा। पार्टी में आन्तरिक कलह, छोटे व्यापारियों के विरोध तथा सत्तारूढ़ कांग्रेस का विपक्षी दलों के साथ टकराव के कारण स्थिति तनावपूर्ण रहेगी तथा विकास कार्यों में बाधाएं पड़ेंगी। आवश्यक जनपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में आशातीत वृद्धि के कारण साधारण जन परेशान एवं दुःखी रहेंगे।

हरियाणा—प्रभाव राशि मिथुन है। गणतन्त्र दिवस कुण्डली में यह राशि षष्ठ स्थान में आई है। शनि साढ़ेसति का प्रभाव तथा बुध की स्वगृही दृष्टि है। प्रधान नेता के समक्ष अनेक चुनौतियां होंगी। विभिन्न योजनाओं का लाभ सामान्यें लोगों तक नहीं पहुँच पाएगा। साधारण लोगों तथा किसानों के विरोध के कारण, आगामी लोकसभा चुनावों में चौटाला सरकार को आपेक्षित सफलता नहीं मिल पाएगी। कांग्रेस और भाजपा लाभ में रहेंगी।

जम्मू–कश्मीर—प्रभाव राशि तुला है। सारा वर्ष केतु के संचार तथा 58वें वर्ष की स्वतन्त्र कुं. में द्वादश भाव में राशि आने से राज्य में मुफ्ती सरकार को अनेक आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा। शान्ति प्रयासों को आतंकवादी विफल बनाने के लिए अनेक विध्वंसक एवं उपद्रवी कार्यवाहियां करेंगे, परन्तु सैनिकों का उन पर दबाव बढ़ेगा। असामयिक वर्ष तथा ओलावृष्टि आदि से ऋतु की अनेक फसलों को हानि पहुँचेगी। सीमा प्रान्त पर पाकिस्तान के कुटिल प्रयासों पर विशेष ध्यान देना होगा, अन्यथा यहां आतंकवाद को समाप्त न किया जा सकेगा। कश्मीर मुद्दे के कारण भारत–पाक वार्ता में कोई विशेष प्रगति नहीं हो सकेगी।

दिल्ली—इसकी प्रभाव राशि मकर है। गणतन्त्र दिवस कुण्डली में मकर लग्न ही उदित हुआ है। सूर्य–शनि के मध्य षडाष्टक योग सत्तारूढ़ तथा विपक्षी पार्टी के मध्य जबरदस्त टकराव का ही द्योतक है। भाजपा के प्रभाव में वृद्धि होगी। राज्य एवं केन्द्रीय सरकार द्वारा कुछ नई योजनाओं को क्रियान्वित किया जाएगा, जिससे जनता को लाभ पहुँचेगा। बिजली, पानी, ट्रैफिक आदि समस्याएं गम्भीर रूप धारण कर लेंगी। कांग्रेस की प्रतिष्ठा घटेगी। परन्तु लोकसभा चुनावों में बराबर की टक्कर होगी।

उत्तर प्रदेश—गणतन्त्र कुण्डली में इसकी प्रभाव राशि धनु पर बुध की स्थिति तथा उन पर शनि, गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप इस प्रदेश का राजनैतिक तनावपूर्ण एवं विक्षुब्ध रहेगा। विरोध एवं गुटबन्दी के बावजूद मुलायम सरकार अभी आगामी वर्ष लोकसभा चुनावों तक येन–केन चलती रहेगी। परन्तु लोकसभा चुनावों के बाद 1–2 मास के भीतर ही राज–सत्ता में उथल–पुथल होगी तथा नए चुनाव कराने पड़ सकते हैं।

राजस्थान—प्रभाव राशि कर्क है। नाम राशि तुला है। प्रसिद्ध राशि पर केतु का संचार तथा प्रभाव राशि पर शनि साढ़ेसति के प्रभाव के कारण प्रधान नेता के लिए समय शुभ नहीं है। कांग्रेस सरकार को विधानसभा में हार तथा लोकसभा चुनावों में साधारण सफलता प्राप्त होगी। कुछ क्षेत्रीय एवं किसानों के दल भी उभर कर सफलता प्राप्त करेंगे तथा निर्णायक तत्त्व बनेंगे। आगामी वर्ष विषम अथवा कम वर्षा के संकेत हैं। सावधान रहें।

उपरोक्त भविष्यवाणियां गोचर ग्रहों के संचार संकेतों के आधार पर अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार लिपिबद्ध की गई हैं। वास्तव में सर्वश्रेष्ठ भविष्यवेता एवं सर्वज्ञ स्वयं विधाता ही है—

फलानि ग्रहसंचारेण सूचयन्ति मनीषिणः। को वक्तः तारतम्यस्य वेधसं विना॥

लिपिबद्ध : **पं. पन्ना लाल शर्मा. पंचांगकर्त्ता**
आश्विन शुक्ल प्रति., शुक्रवार दिन. 26 सितं., 2003 ई. **जालन्धर। फोन : 2457959**

सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश, वक्री-मार्गी एवं उदयास्त घण्टे-मिन्टों में (सन् 2004-05 ई.)

सूर्य राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.
14 जन.	मकर	23/43
13 फर.	कुम्भ	12/41
14 मार्च	मीन	9/33
13 अप्रै.	मेष	18/02
14 मई	वृष	14/55
14 जून	मिथुन	21/33
16 जुला.	कर्क	8/26
16 अग.	सिंह	16/48
16 सितं.	कन्या	16/41
16 अक्तू.	तुला	28/34
15 नवं.	बृश्चि.	28/19
15 दिसं.	धनु	18/57
14 जन.(05)	मकर	5/42
12 फर.	कुम्भ	18/42
14 मार्च	मीन	15/37

मंगल राशि प्रवेश
(संवतारम्भ में वृष में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.
27 अप्रै.	मिथुन	24/13
14 जून	कर्क	10/37
31 जुला.	सिंह	24/59
17 सितं.	कन्या	4/12
2 नवं.	तुला	6/26
16 दिसं.	बृश्चि.	24/10
29 जन.(05)	धनु	9/03
12 मार्च	मकर	13/18

बुध राशि प्रवेश
(संवतारम्भ में मीन में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.
26 मार्च	मेष	7/17
6 अप्रै.	वक्री	25/58
22 अप्रै.	व. मीने	6/22
30 अप्रै.	मार्गी	18/32

बुध राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.
9 मई	मेष	7/18
2 जून	वृष	10/25
17 जून	मिथुन	6/50
1 जुला.	कर्क	13/47
20 जुला.	सिंह	11/24
10 अग.	वक्री	5/50
2 सितं.	मार्गी	18/33
25 सितं.	कन्या	12/05
12 अक्तू.	तुला	11/43
31 अक्तू.	बृश्चिक	15/55
24 नवं.	धनु	8/38
30 नवं.	वक्री	17/41
6 दिसं.	व बृश्चि.	8/09
20 दिसं.	मार्गी	12/06
5 जन. (05)	धनु	19/41
26 जन.	मकर	15/03
13 फर.	कुम्भ	14/35
1 मार्च	मीन	19/44
20 मार्च	वक्री	5/48

गुरु राशि प्रवेश
(संवतारम्भ में सिंह में वक्री)

ता. मास	राशि	घं. मिं.
5 मई	मार्गी	8/36
27 अग.	कन्या	23/36
2 फर.(05)	वक्री	7/55

शुक्र राशि प्रवेश
(संवतारम्भ में मेष में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.
28 मार्च	वृष	13/50
6 मई	मिथुन	25/54
17 मई	वक्री	27/53
28 मई	व. वृष	17/11
30 जून	मार्गी	4/48

शुक्र

ता. मास	राशि	घं. मिं.
31 जुला.	मिथुन	7/43
1 सितं.	कर्क	9/58
28 सितं.	सिंह	16/13
24 अक्तू.	कन्या	4/57
17 नवं.	तुला	20/41
11 दिसं.	बृश्चि.	25/43
4 जन.(05)	धनु	26/01
28 जन.	मकर	24/49
21 फर.	कुम्भ	24/00
17 मार्च	मीन	24/51
11 अप्रै.	मेष	4/27

शनि राशि प्रवेश
(संवतारम्भ में मिथुन में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.
6 सितं.	कर्क	4/30
8 नवं.	वक्री	12/24
13जन. (05)	व मिथुने	15/02
22 मार्च	मार्गी	9/29

राहू–केतु राशि प्रवेश

राहू संवतारम्भ से मेष में
केतु संवतारम्भ से तुला में

राहू 25 मार्च (05) मीन 5/54
केतु 25 मार्च (05) कन्या 5/54

यूरेनस

पूरा संवत् कुम्भ में संचार करेगा।

नैपचून

पूरा संवत् मकर में संचार करेगा।

प्लूटो

(संवतारम्भ में बृश्चिक में)

8 फर.(05) धनु 18/34

ग्रहों का वक्री–मार्गी

मंगल

सारा संवत् मार्गी अवस्था में ही संचार करेगा।

बुध
(संवतारम्भ में मार्गी)

6 अप्रै.	वक्री	26/03
30 अप्रै.	मार्गी	18/39
10 अग.	वक्री	5/59
2 सितं.	मार्गी	16/32
30 नवं.	वक्री	17/41
20 दिसं.	मार्गी	12/06
19 मार्च (05)	वक्री	29/48
12 अप्रै.	मार्गी	13/19

गुरु
(संवतारम्भ में कर्क में वक्री)

5 मई	मार्गी	8/36
2 फर. (05)	वक्री	7/57

शुक्र
(संवतारम्भ में मार्गी)

17 मई	वक्री	27/53
30 जून	मार्गी	4/50

शनि
(संवतारम्भ में मार्गी)

8 नवं.	वक्री	12/24
22 मार्च (05)	मार्गी	9/29

यूरेनस
(संवतारम्भ में मार्गी)

10 जून	वक्री	21/19
11 नवं.	मार्गी	24/43

नैपच्यून
(संवतारम्भ में मार्गी)

17 मई	वक्री	17/52
24 अक्तू.	मार्गी	17/29

प्लूटो
(संवतारम्भ में मार्गी)

24 मार्च	वक्री	20/43
30 अग.	मार्गी	25/00

ग्रहों का अस्तोदय

मंगल

24 जुला.	पश्चिमऽस्त	13/10
27 अक्तू.	पूर्वोदय	6/32

बुध

9 अप्रै.	पश्चिमऽस्त	9/26
25 अप्रै.	पूर्वोदय	14/28
7 जून	पूर्वेऽस्त	27/50
30 जून	पश्चिमोदय	12/48
17 अग.	पश्चिमेऽस्त	8/42
30 अग.	पूर्वोदय	20/28
20 सितं.	पूर्वेऽस्त	5/25
26अक्तू	पश्चिमोदय	7/42
4 दिसं.	पश्चिमऽस्त	18/10
15 दिसं.	पूर्वोदय	8/45
25 जन.(05)	पूर्वेऽस्त	19/48

बुध

ता. मास	राशि	घं. मिं.
1 मार्च	पश्चिमोदय	11/25
22 मार्च	पश्चिमेऽस्त	9/28

गुरु

6 सितं.	पश्चिमऽस्त	7/50
2 अक्तू.	पूर्वोदय	8/10

शुक्र

4 जून	पश्चिमेऽस्त	16/29
13 जून	पूर्वोदय	14/27
12 फर.(05)	पूर्वेऽस्त	19/27

शनि

20 जून	पश्चिमऽस्त	14/30
26 जुला	पूर्वोदय	8/45

अंशात्मक युतियां

26 फर.	मंग-राहु	(मेष)
4 मार्च	सूर्य-बुध	(कुम्भ)
18 मार्च	शुक्र-राहु	(मेष)
17 अप्रै.	सूर्य-बुध	(मेष)
1 मई	सूर्य-राहु	(मेष)
24 मई	बुध-राहु	(मेष)
25 मई	मंग.-शनि	(मिथु.)
8 जून	सूर्य-शुक्र	(वृष)
18 जून	सूर्य-बुध	(मिथुन)
8 जुला.	सूर्य-शनि	(मिथु.)
11 जुला.	मंग.-बुध	(मिथु.)
18 अग.	मंग.-बुध	(सिंह)
24 अग.	सूर्य-बुध	(सिंह)

अंशात्मक युतियां

31 अग.	शुक्र-शनि	(मिथु.)
15 सितं.	सूर्य-मंग.	(सिंह)
22 सितं.	सूर्य-गुरु	(कन्या)
27 सितं.	मंग.-गुरु	(कन्या)
29 सितं.	बुध-गुरु	(कन्या)
30 सितं.	मंग.-बुध	(कन्या)
5 अक्तू.	सूर्य-बुध	(कन्या)
17 अक्तू.	बुध-केतु	(तुला)
25 अक्तू.	सूर्य-केतु	(तुला)
5 नवं.	गुरु-शुक्र	(कन्या)
12 नवं.	मंग.-केतु	(तुला)
23 नवं.	शुक्र-केतु	(तुला)
6 दिसं.	मंग.-शुक्र	(तुला)
10 दिसं.	सूर्य-बुध	(बृश्चि.)
29 दिसं.	बुध-शुक्र	(बृश्चि.)
14 जन. (05)	बुध-शुक्र	
14 फर.	सूर्य-बुध	(कुम्भ)
29 मार्च	बुध-शुक्र	
31 मार्च	सूर्य-शुक्र	(मीन)

गुरु की अतिचार गति

20 अग. से 28 अक्तू. के मध्य गुरु सिंह तथा कन्या राशि में अतिचार गति से संचार करेगा।

ग्रहों का नक्षत्र-चरण प्रवेश-संवत् 2061 वि.

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

2004 ई.	नक्षत्र	चरण
20 मार्च	उ:भा. (2)	
24 मार्च	उ.भा. (3)	
27 मार्च	उ.भा. (4)	
30 मार्च	रेव (1)	28/37
3 अप्रै.	रेव (2)	
7 अप्रै.	रेव (3)	
10 अप्रै.	रेव (4)	
13 अप्रै.	अश्वि 1 मेष	18/02
17 अप्रै.	अश्वि (2)	
20 अप्रै.	अश्वि (3)	
23 अप्रै.	अश्वि (4)	
27 अप्रै.	भरणी (1)	9/47
30 अप्रै.	भर. (2)	
4 मई	भर. (3)	
7 मई	भर. (4)	
11 मई	कृति (1)	4/03
14 मई	कृति 2 वृष	14/55
18 मई	कृति (3)	
21 मई	कृति (4)	
24 मई	रोहि (1)	24/12
28 मई	रोहि (2)	
1 जून	रोहि (3)	
4 जून	रोहि (4)	
7 जून	मृग (1)	22/09
11 जून	मृग (2)	
14 जून	मृग 3 मिथु.	21/33
18 जून	मृग (4)	
21 जून	आर्द्रा (1)	21/07
25 जून	आर्द्रा (2)	
28 जून	आर्द्रा (3)	
2 जुला.	आर्द्रा (4)	
5 जुला.	पुर्न (1)	20/45

2004 ई.	नक्षत्र	चरण
9 जुला.	पुर्न (2)	
12 जुला.	पुर्न (3)	
16 जुला	पुर्न4 कर्क	8/26
19 जुला	पुष्य (1)	20/14
23 जुला	पुष्य (2)	
26 जुला	पुष्य (3)	
30 जुला	पुष्य (4)	
2 अग.	आश्ले (1)	19/10
6 अग.	आश्ले (2)	
9 अग.	आश्ले (3)	
13 अग.	आश्ले (4)	
16 अग.	मघा 1 सिंह	16/48
20 अग.	मघा (2)	
23 अग.	मघा (3)	
27 अग.	मघा (4)	
30 अग.	पू.फा.(1)	12/45
2 सितं.	पू.फा. (2)	
6 सितं.	पू.फा. (3)	
10 सितं.	पू.फा. (4)	
13 सितं.	उफा.(1)	6/36
16 सितं.	उ.फा.2 कन्या	16/41
20 सितं.	उ.फा. (3)	
23 सितं.	उ.फा. (4)	
26 सितं.	हस्त (1)	22/04
30 सितं.	हस्त (2)	
3 अक्तू.	हस्त (3)	
7 अक्तू.	हस्त (4)	
10 अक्तू.	चित्रा (1)	11/05
13 अक्तू.	चित्रा (2)	
17 अक्तू.	चित्रा 3 तुला	4/34
20 अक्तू.	चित्रा (4)	
23 अक्तू.	स्वा.(1)	21/30
27 अक्तू.	स्वा. (2)	

2004-05 ई.	नक्षत्र	चरण
30 अक्तू.	स्वा. (3)	
2 नवं.	स्वा. (4)	
6 नवं.	विशा(1)	5/42
9 नवं.	विशा (2)	
12 नवं.	विशा (3)	
16 नवं.	विशा 4 वृशि.	4/19
19 नवं.	अनु. (1)	11/38
22 नवं.	अनु. (2)	
26 नवं.	अनु. (3)	
29 नवं.	अनु. (4)	
2 दिसं.	ज्ये. (1)	16/01
5 दिसं.	ज्ये. (2)	
9 दिसं.	ज्ये. (3)	
12 दिसं.	ज्ये. (4)	
15 दिसं.	मूला 1धनु	18/57
19 दिसं.	मूला (2)	
22 दिसं.	मूला (3)	
25 दिसं.	मूला (4)	
28 दिसं.	पू.षा (1)	21/12
1 जन.	पू.षा. (2)	
4 जन.	पू.षा. (3)	
7 जन.	पू.षा. (4)	
10 जन.	उ.षा. (1)	23/11
14 जन.	उ.षा 2 मकर	5/42
17 जन.	उ.षा (3)	
20 जन.	उ.षा (4)	
23 जन.	श्रव (1)	25/29
27 जन.	श्रव. (2)	
30 जन.	श्रव. (3)	
2 फर.	श्रव. (4)	
6 फर.	धनि(1)	4/42

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

2005 ई.	नक्षत्र	चरण
9 फर.	धनि. (2)	
12 फर.	धनि 3 कुंभ	18/42
16 फर.	धनि (4)	
19 फर.	शत (1)	9/10
22 फर.	शत. (2)	
25 फर.	शत. (3)	
1 मार्च	शत. (4)	
4 मार्च	पू.भा. (1)	15/34
7 मार्च	पू.भा. (2)	
11 मार्च	पू.भा. (3)	
14 मार्च	पूभा 4 मीन	15/37
17 मार्च	उ.भा (1)	23/56
21 मार्च	उ.भा. (2)	
24 मार्च	उ.भा. (3)	
28 मार्च	उ.भा. (4)	
31 मार्च	रेव. (1)	10/53
3 अप्रै.	रेव. (2)	
7 अप्रै.	रेव. (3)	5/13
10 अप्रै.	रेव. (4)	
13 अप्रै.	अश्वि 1 मेष	24/09

मंगल नक्षत्र प्रवेश

22 मार्च	कृति (4)	
27 मार्च	रोहि (1)	15/47
1 अप्रै.	रोहि (2)	
7 अप्रै.	रोहि (3)	
12 अप्रै.	रोहि (4)	
17 अप्रै.	मृग (1)	12/51
22 अप्रै.	मृग (2)	
27 अप्रै.	मृग 3 मिथु.	24/13
3 मई	मृग (4)	
8 मई	आर्द्रा (1)	12/16
13 मई	आर्द्रा (2)	
18 मई	आर्द्रा (3)	

मंगल नक्षत्र प्रवेश

2004 ई.	नक्षत्र	चरण
24 मई	आर्द्रा (4)	
29 मई	पुर्न (1)	14/01
3 जून	पुर्न (2)	
9 जून	पुर्न (3)	
14 जून	पुर्न 4 कर्क	10/37
19 जून	पुष्य (1)	17/34
24 जून	पुष्य (2)	
30 जून	पुष्य (3)	
5 जुला.	पुष्य (4)	
10 जुला.	श्ले (1)	21/41
13 जुला.	श्ले. (2)	
15 जुला.	श्ले. (3)	
17 जुला.	श्ले. (4)	
31 जुला.	मघा 1 सिंहे	24/59
6 अग.	मघा (2)	
11 अग.	मघा (3)	
16 अग.	मघा (4)	
21 अग.	पूफा (1)	26/03
27 अग.	पूफा (2)	
1 सितं.	पूफा (3)	
6 सितं.	पूफा (4)	
11 सितं.	उ.फा.(1)	23/35
17 सितं.	उफा 2 कन्या	4/12
22 सितं.	उफा (3)	
27 सितं.	उफा (4)	
2 अक्तू.	हस्त (1)	16/16
7 अक्तू.	हस्त (2)	
12 अक्तू.	हस्त (3)	
18 अक्तू.	हस्त (4)	
22 अक्तू.	चित्रा (1)	27/13
28 अक्तू.	चित्रा (2)	5/02
2 नवं.	चित्रा 3 तुला	6/26
7 नवं.	चित्रा (4)	
12 नवं.	स्वा. (1)	7/56

मंगल नक्षत्र प्रवेश

2004-05 ई.	नक्षत्र	चरण
17 नवं.	स्वा. (2)	
22 नवं.	स्वा. (3)	
27 नवं.	स्वा. (4)	
2 दिसं.	विशा (1)	6/02
7 दिसं.	विशा (2)	
12 दिसं.	विशा (3)	
16 दिसं.	विशा 4 वृशि	24/10
21 दिसं.	अनु. 1	21/24
26 दिसं.	अनु (2)	
31 दिसं.	अनु (3)	
5 जन.	अनु. (4)	
10 जन.	ज्ये. (1)	6/18
15 जन.	ज्ये. (2)	
19 जन.	ज्ये. (3)	
24 जन.	ज्ये. (4)	
29 जन.	मूला 1 धनु	9/03
3 फर.	मूला (2)	
7 फर.	मूला (3)	
12 फर.	मूला (4)	
17 फर.	पू.षा. (1)	6/01
21 फर.	पू.षा. (2)	
26 फर.	पू.षा. (3)	
3 मार्च	पू.षा. (4)	6/27
7 मार्च	उ.षा. (1)	22/00
12 मार्च	उषा 2 मक.	13/18
17 मार्च	उषा (3)	
21 मार्च	उषा (4)	
26 मार्च	श्रव (1)	10/01
30 मार्च	श्रव (2)	
4 अप्रै.	श्रव (3)	
9 अप्रै.	श्रव (4)	5/07
13 अप्रै.	धनि (1)	19/17

बुध नक्षत्र प्रवेश

2004 ई.	नक्षत्र	चरण
21 मार्च	रेवती (3)	
23 मार्च	रेवती (4)	
26 मार्च	अश्वि1 मेष	7/17
29 मार्च	अश्वि (2)	
2 अप्रै.	अश्वि (3)	
6 अप्रै.	वक्री	25/58
12 अप्रै.	व अश्वि (2)	
17 अप्रै.	व अश्वि (1)	
22 अप्रै.	व रेव 4 मीने	6/22
30 अप्रै.	मार्गी	18/32
9 मई	अश्वि 1 मेष	7/18
13 मई	अश्वि (2)	
16 मई	अश्वि (3)	
19 मई	अश्वि (4)	
22 मई	भर (1)	15/18
25 मई	भर (2)	
27 मई	भर (3)	
29 मई	भर (4)	
21 मई	कृति (1)	11/58
2 जून	कृति 2 वृष	10/25
4 जून	कृतिका (3)	
6 जून	कृतिका (4)	
7 जून	रोहि (1)	18/54
9 जून	रोहि (2)	
11 जून	रोहि (3)	
12 जून	रोहि (4)	
14 जून	मृग (1)	5/24
15 जून	मृग (2)	
17 जून	मृग 3 मिथु.	6/50
18 जून	मृगे (4)	
20 जून	आर्द्रा (1)	7/43
22 जून	आर्द्रा (2)	
23 जून	आर्द्रा (3)	
25 जून	आर्द्रा (4)	

बुध नक्षत्र प्रवेश

2004 ई.	नक्षत्र	चरण
26 जून	पुर्न (1)	13/16
28 जून	पुर्न (2)	
29 जून	पुर्न (3)	
1 जुला	पुर्न 4 कर्क	13/47
3 जुला	पुष्य (1)	8/15
5 जुला	पुष्य (2)	
7 जुला	पुष्य (3)	
9 जुला	पुष्य (4)	
10 जुला.	आश्ले(1)	26/20
13 जुला	आश्ले (2)	
15 जुला	आश्ले (3)	
17 जुला	आश्ले (4)	
20 जुला	मघा 1 सिंहे	11/24
23 जुला	मघा (2)	
26 जुला	मघा (3)	
29 जुला	मघा (4)	
4 अग.	पूफा.(1)	4/50
10 अग.	वक्री	5/50
15 अग.	व मघा (4)	24/53
20 अग.	व मघा (3)	
24 अग.	व मघा (2)	
28 अग.	व मघा (1)	
2 सितं.	मार्गी	18/33
7 सितं.	मघा (2)	
10 सितं.	मघा (3)	
13 सितं.	मघा (4)	
15 सितं.	पूफा (1)	23/22
17 सितं.	पूफा (2)	
20 सितं.	पूफा (3)	
21 सितं.	पूफा (4)	
23 सितं.	उफा (1)	16/23
25 सितं.	उफा 2 कन्या	12/05
27 सितं.	उफा (3)	
29 सितं.	उफा (4)	

बुध नक्षत्र प्रवेश

2004 ई.	नक्षत्र	चरण
30 सितं.	हस्त (1)	23/31
2 अक्तू.	हस्त (2)	
4 अक्तू.	हस्त (3)	
6 अक्तू.	हस्त (4)	
8 अक्तू.	चित्रा (1)	13/03
10 अक्तू.	चित्रा (2)	
12 अक्तू	चित्रा 3 तुला	11/43
14 अक्तू	चित्रा (4)	
16 अक्तू	स्वा. (1)	13/09
18 अक्तू	स्वा. (2)	
20 अक्तू	स्वा. (3)	
22 अक्तू	स्वा. (4)	
24 अक्तू	विशा (1)	24/21
27 अक्तू	विशा. (2)	
29 अक्तू	विशा. (3)	
31 अक्तू	विशा 4 वृश्चि	15/55
2 नवं.	अनु (1)	22/32
5 नवं.	अनु. (2)	
7 नवं.	अनु. (3)	
9 नवं.	अनु. (4)	
12 नवं.	ज्ये. (1)	11/38
14 नवं.	ज्ये. (2)	
17 नवं.	ज्ये. (3)	
20 नवं.	ज्ये. (4)	
24 नवं.	मूला 1 धनु	8/38
30 नवं.	वक्री	17/41
6 दिसं.	व ज्ये. 4 वृश्चि	8/09
9 दिसं.	व ज्ये. (3)	
11 दिसं.	व ज्ये. (2)	
14 दिसं.	व ज्ये. (1)	5/33
19 दिसं.	व अनु. (4)	5/10
20 दिसं.	मार्गी	12/06
21 दिसं.	ज्ये. (1)	19/55
27 दिसं.	ज्ये. (2)	
31 दिसं.	ज्ये. (3)	

बुध नक्षत्र प्रवेश

2005 ई.	नक्षत्र	चरण
2 जन.	ज्ये. (4)	
5 जन.	मूला 1 धनु	19/41
8 जन.	मूला (2)	
10 जन.	मूला (3)	
13 जन.	मूला (4)	5/15
15 जन.	पूषा (1)	13/13
17 जन.	पूषा (2)	
20 जन.	पूषा (3)	
22 जन.	पूषा (4)	
24 जन.	उषा.(1)	11/28
26 जन.	उषा 2 मक.	15/03
28 जन.	उषा (3)	
30 जन.	उषा (4)	
1 फर.	श्रवण (1)	21/20
3 फर.	श्रवण (2)	
5 फर.	श्रवण (3)	
7 फर.	श्रवण (4)	
9 फर.	धनि (1)	19/37
11 फर.	धनि (2)	
13 फर.	धनि 3 कुंभे	14/35
15 फर.	धनि (4)	
17 फर.	शत (1)	7/02
18 फर.	शत. (2)	
20 फर.	शत. (3)	
22 फर.	शत. (4)	
24 फर.	पूभा. (1)	10/38
26 फर.	पूभा. (2)	
27 फर.	पूभा. (3)	
1 मार्च	पूभा 4 मीन	19/44
3 मार्च	उ.भा.(1)	16/34
5 मार्च	उ.भा. (2)	
7 मार्च	उ.भा. (3)	
10 मार्च	उ.भा. (4)	

बुध नक्षत्र प्रवेश

2005 ई.	नक्षत्र	चरण
12 मार्च	रेवती (1)	26/06
18 मार्च	रेवती (2)	
20 मार्च	वक्री	5/48
21 मार्च	व रेवती (1)	
27 मार्च	व उभा (4)	24/39
31 मार्च	व उभा (3)	
5 अप्रै.	व उभा (2)	
12 अप्रै.	मार्गी	13/19

गुरु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में सिंह में वक्री)

1 अप्रै.	व पूफा (1)	22/50
5 मई	मार्गी	8/36
8 जून	पूफा (2)	5/05
4 जुला.	पूफा (3)	25/01
24 जुला	पूफा (4)	26/38
11 अग.	उफा (1)	16/14
27अग.	उफा 2 कन्या	23/36
12 सितं.	उफा (3)	15/37
27 सितं	उफा (4)	26/07
13 अक्तू.	हस्त (1)	15/30
29 अक्तू	हस्त (2)	17/38
15 नवं.	हस्त (3)	22/56.
5 दिसं.	हस्त (4)	14/10
31 दिसं.	चित्रा (1)	22/02

(सन् 2005 ई.)

2 फर.	वक्री	7/55
6 मार्च	व. हस्त (4)	17/07
4 अप्रै.	व. हस्त (3)	4/50

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

21 मार्च	भर (4)	
25 मार्च	कृति (1)	6/17
28 मार्च	कृति 2 वृष	13/50
31 मार्च	कृति (3)	

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2004 ई.	नक्षत्र	चरण
4 अप्रै.	कृति (4)	
7 अप्रै.	रोहि (1)	26/04
11 अप्रै.	रोहि (2)	
15 अप्रै.	रोहि (3)	
19 अप्रै.	रोहि (4)	
24 अप्रै.	मृग (1)	17/35
30 अप्रै.	मृग (2)	
6 मई	मृग 3 मिथुन	25/54
17 मई	वक्री	27/53
28 मई	व मृग 2 वृष	17/11
4 जून	व मृग (1)	5/22
9 जून	व रोह. (4)	14/42
15 जून	व रोह. (3)	5/36
23 जून	व रोह (2)	5/19
30 जून	मार्गी	4/48
7 जुला.	रोह (3)	
15 जुला.	रोह (4)	
21 जुला	मृग (1)	21/39
26 जुला.	मृग (2)	
31 जुला	मृग 3 मिथु	7/43
4 अग.	मृग (4)	
8 अग.	आर्द्रा (1)	8/40
11 अग.	आर्द्रा (2)	
15 अग.	आर्द्रा (3)	
19 अग.	आर्द्रा (4)	
22 अग.	पुर्न (1)	14/19
25 अग.	पुर्न (2)	
29 अग.	पुर्न (3)	
1 सितं	पुर्न (4) कर्क	9/58
4 सितं.	पुष्य (1)	13/57
7 सितं.	पुष्य (2)	
10 सितं.	पुष्य (3).	
13 सितं.	पुष्य (4)	
16 सितं.	आश्ले (1)	20/31

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2004 ई.	नक्षत्र	चरण
19 सितं.	आश्ले (2)	
22 सितं.	आश्ले (3)	
25 सितं.	आश्ले (4)	
28 सितं.	मघा 1 सिंहे	16/13
1 अक्तू	मघा (2)	
4 अक्तू	मघा (3)	
7 अक्तू	मघा (4)	
10 अक्तू	पूफा (1)	4/04
12 अक्तू	पूफा (2)	
15 अक्तू	पूफा (3)	
18 अक्तू	पूफा (4)	
21 अक्तू	उफा (1)	10/08
23 अक्तू	उफा 2 कन्या	28/57
26 अक्तू	उफा (3)	
29 अक्तू	उफा (4)	
1 नवं.	हस्त (1)	11/57
4 नवं.	हस्त (2)	5/50
7 नवं.	हस्त (3)	
9 नवं.	हस्त (4)	
12 नवं.	चित्रा (1)	10/24
15 नवं.	चित्रा (2)	
17 नवं.	चित्रा 3 तुला	20/41
20 नवं.	चित्रा (4)	
23 नवं.	स्वा. (1)	6/29
25 नवं.	स्वा. (2)	
28 नवं.	स्वा. (3)	
1 दिसं.	स्वा. (4)	
3 दिसं.	विशा (1)	24/50
6 दिसं.	विशा. (2)	
9 दिसं.	विशा. (3)	
11 दिसं.	विशा. 4 वृश्चि.	25/43
14 दिसं.	अनु. (1)	17/54
17 दिसं.	अनु. (2)	
19 दिसं.	अनु. (3)	

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2005 ई.	नक्षत्र	चरण
22 दिसं.	अनु. (4)	
25 दिसं.	ज्ये. (1)	10/12
28 दिसं.	ज्ये. (2)	
30 दिसं.	ज्ये. (3)	
2 जन.	ज्ये. (4)	
4 जन.	मूला 1 धनु	26/01
7 जन.	मूला (2)	
10 जन.	मूला (3)	
12 जन.	मूला (4)	
15 जन.	पू.षा.(1)	17/30
18 जन.	पू.षा. (2)	
20 जन.	पू.षा. (3)	
23 जन.	पू.षा. (4)	
26 जन.	उ.षा.(1)	8/58
28 जन.	उषा 2 मक.	24/49
31 जन.	उ.षा. (3)	
3 फर.	उ.षा. (4)	
5 फर.	श्रव. (1)	24/27
8 फर.	श्रव. (2)	
11 फर.	श्रव. (3)	
13 फर.	श्रव. (4)	
16 फर.	धनि.(1)	16/04
19 फर.	धनि. (2)	
21 फर.	धनि 3 कुंभे	24/00
24 फर.	धनि. (4)	
27 फर.	शत.(1)	8/02
1 मार्च	शत. (2)	
4 मार्च	शत. (3)	
7 मार्च	शत. (4)	
9 मार्च	पूभा.(1)	24/20
12 मार्च	पूभा. (2)	
15 मार्च	पूभा. (3)	
17 मार्च	पूभा 4 मीने	24/51

शेष पृष्ठ 75 पर देखें।

संदिग्ध व्रत-पर्वों का शास्त्रीय निर्णय

पाठक यदि किसी अन्य व्रत-पर्व सम्बन्धी स्पष्टीकरण चाहें, तो वे पत्र व्यवहार करके मंगवा सकते हैं। (पं. पन्ना लाल)

गणगौरी तीज—**चैत्र शुक्ल तृतीया** को गणगौरी तृतीया का व्रत सौभाग्यवती स्त्रियाँ पति, पुत्रादि के अखण्ड सुख प्राप्ति के लिए करती हैं। गौरी तृतीया का व्रत चतुर्थी युक्त तृतीया में करना ही प्रशस्त माना गया है–

चतुर्थी सहिता या तु तृतीया फलप्रदा।
अवैधव्यकरी स्त्रीणां पुत्रपौत्रादि वर्द्धिनी।

द्वितीया युक्त गौरी तृतीया का व्रत शुभ नहीं माना जाता–

तृतीया न तु कर्त्तव्या द्वितीयोपहता विभो॥

यदि तृतीया दूसरे दिन सूर्योदय व्यापिनी होकर कम से कम १ मुहूर्त्त (२ घड़ी) भी हो, तो भी यह तिथि **परयुता ग्रहण** करनी चाहिए, परन्तु यदि तृतीया की वृद्धि हो तथा पर दिन में तृतीया एक मुहूर्त्त से भी कम हो, तो पूर्व व्यापिनी तृतीया ही ग्रहण करें। प्रस्तुत वर्ष २३ मार्च को तृतीया ६० घड़ी है, परन्तु २४ मार्च को तृतीया मात्र २५ पल (आधी घड़ी से भी कम) होने से **२३ मार्च, मंगलवार** को ही **गणगौरी तीज** के व्रतादि का माहात्म्य होगा, क्योंकि जिस तिथि में सूर्य उदय एवं अस्त हो, वह तिथि स्नान, दान, व्रत जपादि में सम्पूर्ण उपयोगी होती है–

या तिथि समनुप्राप्य उदयं याति भास्करः।
सा तिथिः सकला ज्ञेया स्नानदान व्रत जपादिषु॥ देवल

इसके अतिरिक्त २३ मार्च को द्वितीया विद्धा भी नहीं है।

श्री लक्ष्मी पंचमी—२५ मार्च, गुरुवार, यह व्रत चतुर्थी को स्नान आदि करके प्रारम्भ किया जाता है। पंचमी को प्रातः स्नानादि करके लक्ष्मी का पूजन व जपादि करने से अक्षय लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। इसमें सुवर्ण से युक्त कमल पुष्पों के दान का विधान है। यह व्रत चतुर्थीविद्धा पंचमी में करना चाहिए–

पंचमी शुक्ल पक्षे कृष्ण पक्षे कर्ममात्रेऽपि चतुर्थी–विद्धा ग्राह्या॥ (धर्म सिन्धु)

इसी कारण श्री लक्ष्मी व्रत २५ मार्च, गुरुवार को चतुर्थी युक्त में ग्राह्य लगाया गया है। परन्तु यदि नागपंचमी (नागव्रत) करना हो, तो पंचमी पर विद्धा, अर्थात् षष्ठी युक्ता पंचमी (२६ मार्च) को ग्राह्य होगी।

अर्द्ध कुम्भी पर्व (हरिद्वार)–

गुरू के सिंह राशि संचार काल में जब सूर्य मेष राशि (वैशाख संक्रान्ति) में प्रविष्ट होता है, तब अर्द्ध कुम्भ, हरिद्वार में श्रीगंगा तट पर स्नान दान तपादि हेतु भव्य समागम होता है। प्रस्तुत वर्ष यह योग 13 अप्रैल, **मंगलवार** को बन रहा है।

कुम्भ महापर्व (उज्जैन) वैशाख पूर्णिमा को यदि सूर्य मेष में, गुरू सिंह में तथा चन्द्र तुला में हो तो उज्जैन में कुम्भ महापर्व का आयोजन होता है।

नोट–अर्द्ध-कुम्भी (हरिद्वार) एवं कुम्भ महापर्वों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी हेतु इस पंचाँग के प्रारम्भिक पृष्ठों पर अवलोकन करें॥

●**नागपंचमी**—यह व्रत श्रावण शुक्ल उदयकालिक पंचमी को किया जाता है। यह तीन मुहूर्त्त व्यापिनी पर विद्धा ग्रहण करनी चाहिए।

श्रावणशुद्ध पंचमी नागपंचमी। इयमुदये त्रिमुहूर्त्त व्यापिनी परविद्धा ग्राह्या।
परेद्युः त्रिमुहूर्त्त न्यूना पंचमी पूर्वेद्युत्रिमुहूर्त्तन्यूनचतुर्थ्याविद्धा तदा पूर्वेव ग्राह्या॥ (ध. सि.)

परन्तु दूसरे दिन पंचमी तीन मुहूर्त्तों (६ घड़ी) से कम हो और पूर्व दिन में चतुर्थी भी तीन मुहूर्त्त से अल्प हो, तो पहिले दिन ही मनाई जानी चाहिए। उपरोक्त शास्त्रवचनों अनुसार नागपंचमी २० अगस्त शुक्रवार को ही शास्त्र सम्मत होगी। कुछ लोग परम्परागत उदय कालिक षष्ठी युक्त पंचमी को भी ग्रहण करते हैं–१

पंचमी नागपूजायां कार्या षष्ठी समन्विता।
पंचमी तु प्रकर्त्तव्या षष्ठ्या युक्ता तु नारद॥ इत्यादि

●**रक्षाबन्धन**—शुद्ध श्रावण पूर्णिमा को यह पर्व भद्रा रहित और तीन मुहूर्त्त से अधिक उदयकाल व्यापिनी पूर्णिमा के अपरान्ह काल में रक्षाबन्धन करने का शास्त्रमत है–

अथ रक्षाबन्धमस्यामेव पूर्णिमायां भद्रारहितायां।
त्रिमुहूत्ताधिकोदयव्यपिन्यामरान्हे प्रदोषे वा कार्यम्॥ (धर्म सिन्धु)

उदयकाल में तीन मुहूर्त्त से न्यून हो, तो पहिले दिन भद्रा रहित प्रदोष रहित आदिकाल में करें।

परन्तु इस वर्ष 29 अग. रविवार को प्रातः 10.24 तक चतुर्दशी है, तदुपरान्त प्रातः 10.24 रात्रि 9 बजकर 9 मिनट तक भद्रा व्याप्त है। इस स्थिति में उदयकालीन पूर्णिमा को भद्रा रहित काल में तीन मुहूर्त्त से न्यून होने पर भी पर विद्धा–अर्थात् **30 अगस्त, सोमवार को ही ग्रहण करना प्रशस्त होगा। (त्रिमुहूर्त्त न्यूनत्वे परा ग्राह्या॥ धर्म सिन्धु)**

क्योंकि रक्षाबन्धन आदि शुभ पर्व में भद्रा का सर्वथा निषेध माना गया है–

भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा।
श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं हन्ति च फाल्गुनीति॥ कृत्यशिरोमणि

रक्षाबन्धन का मन्त्र– **येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।**
तेन त्वां अनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल॥

मंगला गौरी व्रत—यह व्रत विवाह के बाद स्त्री को पाँच वर्षों तक श्रावण में प्रति मंगलवारं को करना चाहिए। विवाह के बाद प्रथम श्रावण में मायके में तथा अन्य चार वर्षों में पतिगृह में ही यह व्रत करने का विधान है। इसके करने से अखण्ड सौभाग्य (पति-सन्तान आदि) सुखों की प्राप्ति होती है। इस व्रत का प्रारम्भ शुद्ध श्रावण कृष्ण मास से करना चाहिए।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत

श्री मद्भागवत पुराण के अनुसार भगवान् श्री कृष्ण का अवतार भाद्रपद कृष्ण अष्टमी (अर्धरात्रि व्यापिनी), रोहिणी नक्षत्र (वृष के चन्द्रमा) काल में एवं वृष लग्न में हुआ था। **भविष्यपुराण** में यही वर्णन मिलता है–

"सिंहराशि गते सूर्ये गगने जलदाकुले, मासि भाद्रपदे–

अष्टम्यां कृष्ण पक्षेऽर्धरात्रके, वृष राशि स्थिते चन्द्रे, नक्षत्रे रोहिणी युते–भविष्य पुराण"

प्रस्तुत वर्ष सन् २००४ ई. में ६ सितम्बर, सोमवार को सप्तमी मात्र ३ घड़ी २३पल तक है, तदुपरान्त भाद्र. अष्टमी अर्ध रात्रि व्यापिनी होकर आगामी दिवस ९/१५ घड़ी पल तक व्याप्त है। **रोहिणी** नक्षत्र अर्ध रात्रि के बाद ५०/५३ घड़ी/पल (रात २ बजकर ३२ मिनट) तक व्याप्त है, तथा चन्द्रमा भी वृष राशि का है। उपरोक्त शास्त्र वचनों के अनुसार ६ सितंबर, स. २००४ ई., सोमवार को श्री कृष्णजन्माष्टमी के व्रतोत्सव एवं जप आदि का विशेष माहात्म्य रहेगा।

७ सितम्बर मंगलवार को अष्टमी प्रातः केवल ९ बजकर ५३ मिनट तक ही रहेगी तथा उस दिन रोहिणी नक्षत्र एवं शाम 4 बजकर 02 मिनट के बाद वृष के चन्द्र का भी अभाव रहेगा। **धर्म सिन्धुकार** के अनुसार भी निशीथ व्या. अष्टमी एवं रोहिणी योग युक्त होने से **जयन्ती नाम** योग वाली श्रेष्ठ एवं प्रशस्त जन्माष्टमी का योग होगा।

विद्धाऽधिकायां पूर्वदिन एव निशीथात्पूर्व निशीथे वा रोहिणी योगे पूर्वा।

जन्माष्टमी सैव रोहिणी युता जयन्ती संज्ञकेति जयन्तिऽष्टम्यो व्रतैक्यमाहुः ।। धर्मसिन्धुः

उपरोक्त शास्त्रीय समीक्षानुसार ६ सितं. चन्द्रवार की जन्माष्टमी को व्रतोपवास, जप, हवन आदि शुभ कृत्य करके ७ सितं. को अष्टमी तिथि के अन्त में पारण करना चाहिए।

जयन्त्याँ पूर्व विद्धायामुपवासं समाचरेत्।

तिथ्यन्ते चोत्सवान्ते वा व्रती कुर्वीत पारणामिति ॥ निर्णयामृत ॥

दूर्वाष्टमी व्रत–भविष्यपुराण के अनुसार भाद्र. शुक्ल अष्टमी तिथि को दूर्वाष्टमी का व्रत एवं पूजन किया जाता है। जो व्यक्ति श्रद्धापूर्वक इस व्रत को करता है, उसके वंश का क्षय नहीं होता तथा कुल की वृद्धि होती है। धर्मसिन्धु के अनुसार भाद्र. शुक्लाष्टमी को दूर्वाष्टमी का व्रत नियम आदि ग्राह्य है। यदि अष्टमी को मूला नक्षत्र का समावेश हो तथा अगस्त्य तारा का भी उदय हो चुका या आश्विन मास हो, तो उस स्थिति में भाद्रकृष्णाष्टमी को **दूर्वाष्टमी** का व्रतादि करें। भाद्रपद मास (सिंह के सूर्य) में ही करना प्रशस्त होता है।

इदं दूर्वा पूजनं व्रतं कन्याऽर्केऽगस्त्योदये च वर्ज्यम् नित्यम्। धर्म सि.।

इदं ज्येष्ठा मूलर्क्षयुता त्याज्य ॥ धर्म सिन्धु ॥

यदि भाद्रपद कृष्णाष्टमी से भी पहले अगस्त्योदय हो जाए तो, यह व्रत श्रावण शुक्लाष्टमी को करने का विधान है। इस वर्ष हिमाचल, पंजाब, हरियाणा, जम्मू-काश्मीर, दिल्ली आदि में भाद्र शुक्ल एवं कृष्णाष्टमी से पूर्व ही ३ सितम्बर को अगस्त्य तारा का उदय हो जाने से श्रावण शुक्ल अष्टमी अर्थात् २३ अगस्त, सोमवार को दूर्वाष्टमी का व्रत मनाना शास्त्रसम्मत होगा।

● **कलंकचतुर्थी** (पत्थर चौथ) तिथि तत्त्व चिन्तामणि के अनुसार इसे संकट चतुर्थी (या संकट चौथ) भी कहते हैं। व्रत, जप, दानादि के लिए यह तिथि तृतीया युक्ता ग्रहण करनी चाहिए–

सा च विद्धायां तृतीया युतैव कार्या शुद्धायां वादाभावः ॥ तिथि चिन्तामणि ॥

इस दिन एवं रात्रि को चन्द्र दर्शन करने का निषेध होता है। इस दिन/रात्रि में चन्द्रदर्शन करने से मिथ्या कलंक लगने का भय होता है। उसके निवारण हेतु स्यमन्तक की कथा का श्रवण करना तथा **"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः।"** मन्त्र का जाप एवं **"विघ्नानि नाशमायान्तु सर्वाणि सुरनायक। कार्य में सिद्धिमायातु पूजिते त्वयि धातरि।"** मन्त्र से श्री गणेश जी की स्तुति करके मोदक (लड्डू) आदि वितरण करके एक समय भोजन करें।

प्रस्तुत वर्ष १७ सितम्बर, शुक्रवार के दिन कलंक चतुर्थी (पत्थर चौथ) का व्रतादि होगा। इस दिन चन्द्रोदय प्रातः ८/45 बजे से लेकर रात्रि ८ बजकर ०६ मिनट तक रहेगा। इस दिन चन्द्रमा का दर्शन करने से परहेज करना चाहिए।

● **सिद्धिविनायकव्रत**–यह व्रत भाद्र-शुक्ल चतुर्थी को किया जाता है। व्रतादि हेतु यह तिथि मध्यान्ह व्यापिनी लेनी चाहिए। यदि दोनों दिन मध्यान्ह व्या. हो, तो पहली ग्रहण करनी, परन्तु यदि पहले दिन चतुर्थी मध्यान्ह का स्पर्श न करती हो और अगले दिन मध्यान्ह व्यापिनी हो, तो तब परली अर्थात् पंचमी विद्ध चतुर्थी ग्रहण करनी चाहिए।

पूर्व दिने सर्वथा मध्यान्ह स्पर्शो नाऽस्त्येव पर दिने एव मध्यान्ह–स्पर्शिनी तदैव परा ॥ धर्म सिन्धुः ॥

श्री गणेश जी का जन्म मध्यान्ह व्यापिनी तिथि को हुआ था। राजस्थान और महाराष्ट्र में यह पर्व महोत्सव के रूप में अत्यन्त धूमधाम से मनाया जाता है। प्रस्तुत वर्ष मध्यान्ह व्यापिनी चतुर्थी **18 सितम्बर**, शनिवार को होने से श्री गणेश सिद्धि **विनायक चतुर्थी** का व्रत, पूजन इसी दिन मनाया प्रशस्त एवं शास्त्र सम्मत होगा।

श्री महालक्ष्मी व्रत–स्कन्दपुराण के अनसार भाद्र. शुक्ल चन्द्रोदय कालिक अष्टमी से आरम्भ करके आश्विन कृष्ण अष्टमी पर्यन्त प्रतिदिन प्रातः स्नानादि नित्यकर्म के सोलह सूत्र के डोरे में १६ गांठ लगाकर उनको **"लक्ष्म्यै नमः"** से प्रत्येक गाँठ को अभिमन्त्रित करके लक्ष्मी की प्रतिमा की पूजा करने का विधान है। आश्विन कृष्णाष्टमी को चन्द्र को अर्घ्य देकर विसर्जन करें।

प्रस्तुत वर्ष चन्द्रोदय व्यापिनी भा. शु. अष्टमी २१ सितम्बर, मंगलवार को होगी। इस पूजा, व्रतादि का समापन ६ अक्तूबर, बुधवार चन्द्रोदय व्या. अष्टमी को होगा।

आश्विन कृष्णाष्टमी लक्ष्मीव्रते चन्द्रोदय व्यापिनी ग्राह्या।

परन्तु सूर्योदय कालिक एवं प्रदोष व्यापिनी अष्टमी में **जीवित-पुत्रिका** व्रत ग्रहण करना चाहिए।

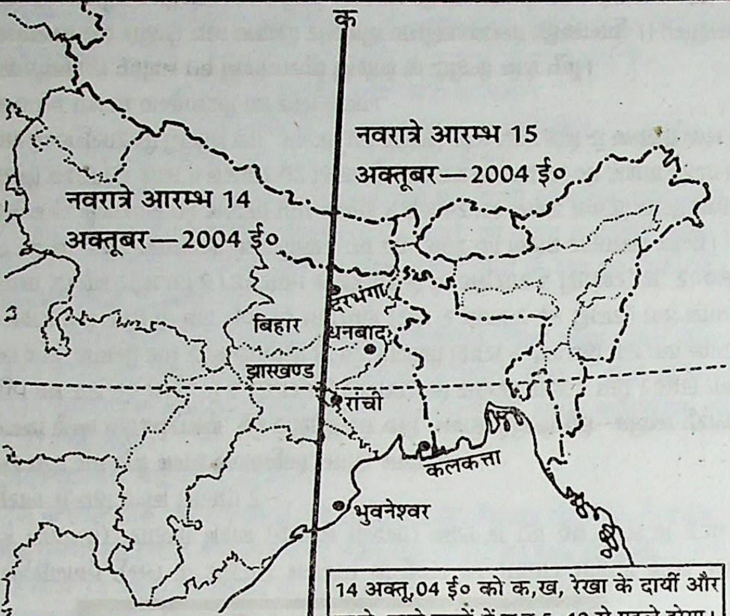
यत्रोदयं वै कूरुते दिनेशस्तदा भवेत जीवित पुत्रिकाख्या, इयं प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या
पुत्र सौभाग्यदा स्त्रीणां ख्याता सा जीवित्पुत्रिका॥ भविष्य पुराण

आश्विन नवरात्रारम्भ

सामान्य स्थितियों में शरद् नवरात्र का आरम्भ उदय व्यापिनी प्रतिपदा तिथि में किया जाता है। परन्तु तिथि गणनानुसार यदि प्रतिपदा तिथि का क्षय हो जाए, अथवा उदय कालिक प्रतिपदा एक मुहूर्त (२ घड़ी) से भी कम हो, तो उस स्थिति में शास्त्र अमावस की समाप्ति वाले दिन नवरात्रारम्भ करने की आज्ञा देते हैं–

(प्रतिपदा) मुहूर्त्त न्यून व्याप्तौ सूर्योदयास्पर्शे वा दर्श युताऽपि ग्राह्या। धर्म-सिन्धुः

प्रस्तुत वर्ष, सं. २००४ ई. १५ अक्तू. को प्रतिपदा प्रातः 6.35 स्टै. टा. तक, अर्थात् सूर्योदय से केवल मात्र ३ पल तक ही विद्यमान् है। अतएव इसी स्थिति में शास्त्रानुसार पहले दिन, अर्थात् **14 अक्तूबर, गुरुवार** से ही चैत्र नवरात्र का आरम्भ होगा। १४ अक्तू. गुरुवार को अमावस ४/२५ घट्यादि, अर्थात प्रातः 8 बजकर, 19 मिनट तक है तथा उसके पश्चात् धर्म सिन्धु अनुसार सूर्योदय से १० घड़ी बाद अर्थात् प्रातः 10 बजकर 34 मिनट पर स्थिर लग्न (बृश्चिक) में अथवा **अभिजित्** मुहूर्त्त में घटस्थापन, दुर्गा पूजा आदि शुभ कृत्यों का आरम्भ



14 अक्तू,04 ई० को क,ख, रेखा के दायीं और पड़ने वाले नगरों में सू.उ 5-49 से पहले होगा।

किया जा सकता है। अपरंच, घटस्थापन का चित्रा नक्षत्र एवं वैधृत योग में भी स्थापना करना अशुभ माना गया है, परन्तु शास्त्रकारों ने चित्रा और वैधृति योग के प्रथम चरण को छोड़कर अन्य भाग में घटस्थापन आदि करने का कोई दोष नहीं माना–

प्रतिपद्याश्वने मासि भवेद् वैधृति चित्रयोः, आद्य पादौ परित्यज्य प्रारभेत् नवरात्रकम्–कात्यायन

यद्यपि देवी पुराण में अमा. युक्त प्रतिपदा को अधिक प्रशस्त नहीं माना गया, परन्तु वहाँ भी कम से एक मुहूर्त्त (२ घड़ी) द्वितीया युक्ता प्रतिपदा को ग्राह्य माना है–

अमायुक्ता न कर्त्तव्या प्रतिपद् चाण्डिकाऽर्चने।
मुहूर्त्त मात्रा कर्त्तव्या द्वितीयया गुणन्विताम्॥ देवी पुराण

ध्यान रहे १ मुहूर्त्त स्थानीय दिनमान का १५वां भाग होता है।

कुछ विद्वानों ने तो दो मुहूर्त्ता प्रतिपदा को ही शुभ माना है–

"उदिते देवते भानौ द्विमुहूर्त्ता प्रशस्यते॥" इति

उपरोक्त शास्त्र वचनों के अनुसार १४ अक्तूबर गुरुवार से ही शरद् नवरात्र प्रतिपदा के कृत्यों का शुभारम्भ करना प्रशस्त होगा।

भारत के विभिन्न प्रदेशों एवं नगरों में अक्षांश भेद के कारण सूर्योदयास्त में भी भिन्नता रहती है। अतएव उनके दिनमान में भी अन्तर रहता है। एक मुहूर्त्त दिनमान का १५वां भाग होता है जो कि स्थूलमान से लगभग २ घड़ी होता है। पूर्वी भारत के अनेक स्थलों पर जहां पर सूर्योदय प्रातः ५.४९ से पहले होगा, वहाँ पर शरद् नवरात्रों का प्रारम्भ १५ अक्तूबर, शुक्रवार को ही मनाना उचित होगा। स्पष्टता के लिए साथ दिये गए मानचित्र (नक्शे) देखें। यहाँ 'क-ख' रेखा से दायीं पड़ने वाले नगरों में 15 अक्तू. को शारदीय नवरात्रे आरम्भ होगा जबकि बायी ओर पड़ने वाले नगरों में 14 अक्तू. को ही नवरात्रे आरम्भ करने प्रशस्त होंगे। अर्थात् जहाँ-जहाँ सूर्योदय प्रातः 5-49 से पहले होगा, वहाँ प्रतिपदा का मान २ घड़ी से अधिक होने के कारण आश्विन नवरात्रे 15 अक्तू. से प्रारम्भ होंगे जबकि लगभग उत्तर-पश्चिमी भारत में आश्विन नवरात्रे 14 अक्तू. को ही आरम्भ होंगे।

दीपावली (श्री महालक्ष्मी पूजन)



प्रस्तुत वर्ष दीपावली एवं श्रीमहालक्ष्मी पूजन का महापर्व कार्तिक अमावस, शुक्रवार, तदनुसार १२ नवम्बर (२८ कार्तिक प्रविष्टे) को होगी। कार्तिक अमावस्या प्रदोष काल से आधी रात तक रहने वाली श्रेष्ठ होती है। यदि आधी रात में अमावस तिथि न रहे, तो प्रदोष व्यापिनी ग्रहण करनी चाहिए–

लक्ष्मीपूजायां कार्तिकामावस्या प्रदोष व्यापिनी गाह्या।–तिथि निर्णय

प्रस्तुत वर्ष को कार्तिक अमावस ति. स्टै. टा. रात्रि 7 बजकर, 57 मिनट तक व्याप्त होगी। यद्यपि दीपावली का पर्व एवं प्रदोष काल प्रत्येक नगर में स्थानीय सूर्यास्त से लेकर लगभग २ घण्टे ४० मिनट पर्यन्त रहेगा। जालन्धर एवं पंजाब, हिमाचल, हरियाणा, दिल्ली, जम्मू-काश्मीर आदि में प्रदोष एवं निशीथ आदि का पर्वकाल इस प्रकार से रहेगा। प्रदोष काल से तात्पर्य है,

पृष्ठ 71 का शेष भाग

दिन-रात का संयोग काल। दिन विष्णु रूप और रात्रि लक्ष्मी स्वरूपा है। सामान्य गृहस्थियों एवं व्यापारियों के लिए प्रदोष काल का विशेष महत्त्व होता है।

प्रदोष काल–सायं 5 बजकर, 28 मिनट से प्रारम्भ होकर रात्रि 8 बजकर, 9 मिनट तक होगा। इसमें **स्थिर लग्न** (वृष) रात्रि 7 बजकर, 34 मिनट तक तथा शुभ चौघड़िया रात 7 बजकर, 09 मिनट तक रहेगी। इस काल में श्री गणेश महालक्ष्मी पूजन, पंचदेव पूजन, कुबेर पूजा, नवीन बही खातों का आरम्भ, काम्य अनुष्ठान, मन्त्र जपादि शुभ कर्म करने चाहिए।

निशीथ काल–रात्रि 8 बजकर 10 मिनट से रात्रि 10 बजकर, 50 मिनट तक निशीथ काल रहेगा। इसमें भी रात्रि 8.50 तक अमृत चौघड़िया शुभ होगी। तदुपरान्त चर चौघड़िया मिश्रित प्रभावदायक होगी। मन्त्र-तन्त्र यन्त्र आदि साधना एवं अनुष्ठान के लिए निशीथ काल शुभ माना जाता है।

महानिशीथ काल–रात्रि 10 बजकर 50 मिनट से अर्धरात्रि 25-31 अर्थात् 1 बजकर, 31 मिनट तक महानिशीथकाले, मन्त्रोपासना, ध्यान, समाधि, सिद्धि आदि क्रियाओं के लिए श्रेष्ठ माना जाता है।

स्मरण रहे, दीवाली की रात्रि को किए गए जप, तप, ध्यान, दान एवं अनुष्ठान आदि का फल अनेक गुणा अधिक होता है।

ऊपरलिखित शुभ प्रदोष आदि काल में आटा, हल्दी, अक्षत, पुष्पादि से अष्टदल बनाकर श्री महालक्ष्मी का आह्वान, स्थापन एवं श्री गणेश, महालक्ष्मी, इन्द्र, कुबेर व पंचदेवों की पूजार्चना करनी चाहिए। पूजन सामग्री में विभिन्न प्रकार के सुगन्धित द्रव्य, धूपं, दीप, अगरबत्ती, मिष्ठान्न, श्री लक्ष्मी नारायण की मूर्ति आदि स्थापित करके पूजन करना चाहिए। इस दिन श्रीसूक्त का पाठ करना शुभ होता है।

प्रार्थना मंत्र–

महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं प्रसन्ना भव मंगल।
स्वर्ण वित्तादि मद्गृहे त्वं चिरं वस॥

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2004-05 ई.	नक्षत्र	चरण
20 मार्च	उभा (1)	17/04
23 मार्च	उभा. (2)	
26 मार्च	उभा. (3)	
28 मार्च	उभा. (4)	
31 मार्च	रेव.(1)	10/29
3 अप्रै.	रेव (2)	
5 अप्रै.	रेव (3)	
8 अप्रै.	रेव (4)	
11 अप्रै.	अश्वि 1 मेष	4/27
13 अप्रै.	अश्वि (2)	

शनि नक्षत्र प्रवेश

9 अप्रै.	आर्द्रा (3)	9/15
18 मई	आर्द्रा (4)	19/30
16 जून	पुर्न (1)	5/05
12 जुला	पुर्न (2)	3/39
7 अग.	पुर्न (3)	9/48
6 सितं.	पुर्न 4 कर्क	4/30
29 अक्तू	पुष्य 1	19/50
8 नवं.	वक्री	12/24
17 नवं.	व पुर्न (4)	28/10
13 जन.	व पुर्न 3 मिथु	15/02
7 मार्च	व पुर्न (2)	16/05
22 मार्च	मार्गी	9/29
5 अप्रै.	पुर्न (3)	27/18

राहु नक्षत्र प्रवेश

12 मार्च	भर. (2)	19/45
14 मई	भर. (1)	17/59
16 जुला.	अश्वि (4)	15/53
17 सितं.	अश्वि (3)	13/07
19 नवं.	अश्वि (2)	11/15

राहु नक्षत्र प्रवेश

2004-05 ई.	नक्षत्र	चरण
21 जन.	अश्वि (1)	8/23
25 मार्च	रेव 4 मीन	5/53

केतु नक्षत्र प्रवेश

12 मार्च	स्वा (4)	19/45
14 मई	स्वा (3)	17/59
16 जुला.	स्वा (2)	15/53
17 सितं.	स्वा (1)	13/07
19 नवं.	चित्रा (4)	11/15
21 जन.	चित्रा (3)	8/23
25 मार्च	चित्रा 2 कन्या	5/53

यूरेनस

13 मार्च	शत (2)	3/40
10 जून	वक्री	21/19
20 सितं.	व शत (1)	6/18
11 नवं.	मार्गी	24/43
1 जन.	शत (2)	13/40
6 मार्च	शत (3)	7/57

नैपच्यून

17 मई	वक्री	17/52
8 अग.	व श्रव. (3)	16/30
24 अक्तू.	मार्गी	17/29
3 जन.	श्रव (4)	13/55
14 मार्च	धनि (1)	19/50

प्लूटो

24 मार्च	वक्री	20/43
23 जून	व ज्ये. (3)	23/20
30 अग.	मार्गी	25/00
2 नवं.	ज्ये. (4)	18/10
8 फर.	मूले 1 धनु	18/34

नव सम्वत्सर का फल और माहात्म्य

भारत की गौरवमयी सभ्यता एवं संस्कृति में **सम्वत्सर** का विशेष महत्त्व है। हिन्दुओं के प्रायः सभी शुभ संस्कारों (विवाह–मुण्डनादि) एवं मन्त्र–जपादि अनुष्ठानों में संकल्पादि के समय सम्वत् के नाम का प्रयोग प्रमुखता से लिया जाता है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवीन सम्वत् का प्रारम्भ होता है। सत्ययुग का आरम्भ भी इसी दिन हुआ माना जाता है तथा ब्रह्मा जी ने सृष्टि का आरम्भ भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को किया था। **''चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा संसर्ज प्रथमेऽहनि (ब्रह्मपुराण)।''** सम्भवतः इसी कारण **इसे स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त** माना जाता है। इस दिन किए गए जप–दानादि शुभ कर्मों के प्रभाव से वर्ष भर धन–सम्पदा एवं सुख–शान्ति बनी रहती है।

नव सम्वत्सर के आगमन पर प्रातः तैलाभ्यंग, नित्य कर्मों से निपटकर आसन, पाद्य, अर्घ्य, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप–दीप, ताम्बुल, नैवेद्य, फल, आदि से सम्वत्सर पूजन एवं फल श्रवणादि, नवरात्र घट–स्थापन, मिट्टी के पात्र में रखी रेत–मिट्टी में जौं–गेहूँ आदि के बीज बोना, ओंकार सहित श्री गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा–इन पंचदेवों तथा नवग्रहों की स्वयं अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मणों द्वारा पूजार्चना करवा कर उन्हें क्षीर सहित सात्त्विक भोजन करवाकर उनका **'पंचांगदिवाकर'**, सहित यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, फल एवं धनादि देकर सत्कार करना चाहिए।

पूजन के समय भगवान् ब्रह्मा एवं विष्णु की मूर्तियों के समक्ष पुष्पाक्षत, नैवेद्य, अर्घ्य गंगा जल आदि लेकर निम्न मन्त्र पढ़ें–

ॐ ब्रह्मणे नमः से ब्रह्मा जी का आवाहन तथा बहुरूपाय विष्णवे परमात्मने नमः परमात्म– विष्णुमावाहयामि स्थापयामि च। इस प्रकार अन्य देवताओं की भी (यथा समय) प्रार्थना मन्त्र पढ़ें–

''भंगवंतस्त्वत्प्रसादेन वर्षं क्षेममिहास्तु मे। संवत्सरोपसर्गा मे विलयं यान्त्वशेषतः।''

ॐ सम्वत्सराय नमः, चैत्राय नमः, वसन्ताय नमः। आदि नाम–मन्त्रों से पूजन करके विद्वान् ब्राह्मण का अर्चन करें। तथा क्षीर सहित भोजन करवाकर यथाशक्ति वस्त्र, फलों आदि का दान करें।

तदुपरान्त स्वास्ती वाचन, शान्ति पाठ आदि मांगलिक मन्त्रों का पाठ करने के पश्चात् सूर्य देव को ताम्र बर्तन से मन्त्र–पूर्वक तीन बार अर्घ्य देकर **गायत्री मन्त्र** का जाप करना चाहिए। तत्पश्चात् दिवाकर पंचाँग में किसी ब्राह्मण के श्री मुख से **सम्वत् का नाम**, सम्वत् **का वास, सवारी राजा, मन्त्री आदि का फल श्रवण करना** चाहिए चैत्र, प्रतिपदा से लेकर नवमी तक भगवान्–विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा के समक्ष नित्य ज्योति जलाकर श्रद्धानुसार श्री दुर्गासप्तशती का जप पाठ करने का विधान है।

चैत्र प्रतिपदा से नवमी तक प्रतिदिन प्रातः कटु नीम की कोमल पत्तियाँ व पुष्पों का चूर्ण बनाकर, उसमें काली मिर्च, हींग, सेंधा नमक, ईमली, अजवायन, जीरा तथा शक्कर या चीनी बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण बनाकर भगवान् को भोग लगाकर ग्रहण करने से वर्षभर आरोग्यता बनी रहती है तथा रक्त विकार, त्वचा, कुष्ठ आदि रोगों का भय नहीं रहता॥

फलित ज्योतिष में कुछ प्रसिद्ध योगों का वर्णन

निम्नलिखित योगों में राहु–केतु का समावेश नहीं किया जाता

(१) **वीणा योग**–कुंडली में सूर्यादि (राहु–केतु को छोड़कर) सात राशियों (भावों) में स्थित हों, तो वीणा नामक योग होता है। इस योग में उत्पन्न जातक व्यवहार–कुशल, संगीत, कला, साहित्य एवं गूढ़ शास्त्रों व विद्याओं में रुचि रखने वाला, विभिन्न स्त्रोतों द्वारा धनार्जन करने वाला, सुशील स्त्री, कार्य–कुशल, भूमि–मकान, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होता है। राजनीति एवं विदेशी कार्यों के क्षेत्र में भी सफलता की सम्भावना है।

(२) **रज्जु योग**–कुंडली में यदि सभी ग्रह (राहु–केतु के अतिरिक्त) चर राशियों में स्थित हों, तो यह योग होता है। इस योग वाला जातक भ्रमणशील अर्थात् घूमने–फिरने का शौकीन, सुन्दर व्यक्तित्व, धनोपार्जन के लिए देश–विदेश में जाकर लाभान्वित होने वाला तथा स्थान परिवर्तन से विशेष उन्नति प्राप्त करने वाला होता है।

(३) **मूसल योग**–कुंडली में यदि सभी ग्रह (राहु–केतु को छोड़कर) स्थिर राशियों में हों, तो मूसल नामक योग होता है। इसके फलस्वरूप जातक विद्वान, सुप्रसिद्ध, उच्च विद्या प्राप्त, सुप्रतिष्ठित, तेजस्वी, धन–सम्पदा, स्त्री, वाहन एवं सन्तान आदि सुखों से साधन–सम्पन्न व्यक्ति होता है। ऐसा जातक उच्च प्रतिष्ठित, शासनाधिकारी भी हो सकता है।

(४) **नल योग**–कुण्डली में सभी ग्रह द्विस्वभाव राशियों में हों, तो जातक कम या अधिक अंगों वाला, उच्च विद्या प्राप्ति में विघ्न–बाधाएं परन्तु धन–सम्पदा आदि का अर्जन करने में कुशल होता है। ऐसा जातक ब्राह्मण, देवताओं एवं गुरु की भक्ति एवं सेवा करने वाला, धर्म–परायण, भाई–बन्धुओं का हितकारी तथा अपना कार्य सिद्ध करवाने में कुशल होता है।

(५) **वज्र योग**–यदि कुंडली में सब शुभ ग्रह लग्न और सप्तम भाव में हों तथा चतुर्थ व दशम भावों में सब पाप ग्रह स्थित हों, तो वज्र योग होता है। ऐसा जातक अपनी प्रथम तथा अन्तिम अवस्था में सुन्दर शरीर, शूरवीर, सुख–साधनों एवं पारिवारिक सुखों से युक्त होता है परन्तु मध्यम अवस्था में अल्प सुख प्राप्त होता है। भाग्योदय अन्तिम अवस्था में ही होता है। ऐसे जातक पुलिस एवं सेना विभाग में विशेष सफल होते हैं।

(६) **शकट योग**–यदि कुण्डली में सभी ग्रह (राहु–केतु को छोड़कर) लग्न और सप्तम भावों में स्थित हों तो शकट योग होता है। इस योग के होने से जातक विशेष रोग के कारण दुःखी, स्त्री के साथ मनमुटाव एवं वैमनस्य रहता है। ऐसा जातक वाहन आदि सुख–साधनों से सम्पन्न तथा अपना काम निकलवाने में कुशल होता है।

(७) **अमल कीर्ति योग**–यदि लग्न अथवा चन्द्रमा से दशम भाव तक केवल शुभ ग्रह हों, तो अमल कीर्ति नामक योग होता है। इस योग वाला जातक धर्म–पारायण, परोपकारी, कार्य कुशल, अपने परिवार के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठ, निज पुरुषार्थ से धन सम्पदा एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने वाला होता है।

–ज्योतिष तत्त्व–फलित खण्ड–भाग–दो से उद्धृत

वि. संवत् २०६१, चैत्र शुक्ल पक्ष शाकः १९२६ — सन् 2004 ई. (ता. 21 मार्च से 5 अप्रैल तक) — जालन्धर

सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोलार्द्ध, बसन्त ऋतु — भा. स्टैं. टा.

ग्रह लोपदर्शन—सायं बुध, शुक्र पश्चिम में तथा मंगल शुक्र से ऊपर, गुरु पूर्व में तथा शनि याम्योत्तरवृत्तासन्न दिखाई देगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	चैत्र शक	मोहर्रम	मार्च	चैत्र प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.
३०/००	१	रवि	५४	३८	उभा	४०	१०	शुक्ल	२२	०३	किं	२४	२१	चै.	२९	21	८	मीन	**हेमलम्ब नाम वि. संवत्, चैत्र नवरात्रारम्भ,** घटस्थापनं, दूर्गा पूजा	११	०६	५०	३५	६	३५	१८	३५
३०/०५	२	चंद्र	५६	४५	रेव	४३	२५	ब्रह्म	२०	१८	बा	२५	४२	२	३०	22	९	मे. ४३।२५	**पंचकारम्भः** ४३/२५ (23/56 घं.मिं.), **चन्द्रदर्शनम्** ३० मुहूर्त्ति	११	०७	५०	०९	६	३४	१८	३६
३०/१०	३	मंग	६०	००	अश्वि	४८	०८	ऐंद्र	१९	४५	तै	२८	३५	३	सफ	23	१०	मेष	**मत्स्य जयंती, गणगौरी तीज,** १ सफर (मु.), स. सि. योग:	११	०८	४९	३७	६	३२	१८	३६
३०/१७	३	बुध	०	२५	भर	५४	१०	वैधृ	२०	१५	ग	०	२५	४	२	24	११	मेष	भ. ३२/५४ से प्रा., शुक्र कृतिका में ५९/२५	११	०९	४९	०५	६	३१	१८	३८
३०/२५	४	गुरु	५	२३	कृति	६०	००	विष्क	२१	४५	वि	५	२३	५	३	25	१२	वृ. १०।५५	भद्रा ५/२३ तक, श्री (लक्ष्मी) पंचमी	११	१०	४८	३०	६	२९	१८	३९
३०/२८	५	शुक्र	११	२०	कृति	१	१८	प्रीति	२३	५५	बा	११	२०	६	४	26	१३	वृष	**स्कन्द षष्ठी, अश्वि १ बुध मेष में २/००, नाग व्रतार्थ पंचमी**	११	११	४७	५५	६	२८	१८	३९
३०/३३	६	शनि	१७	४८	रोहि	८	५५	आयु	२६	२५	तै	१७	४८	७	५	27	१४	मि. ४२।४५	मंगल रोहिणी में २३/१५, स. सि. योग:	११	१२	४७	१६	६	२७	१८	४०
३०/३५	७	रवि	२४	१३	मृग	१६	३५	सौभा	२८	४८	व	२४	१३	८	६	28	१५	मिथुन	भद्रा २४/१३ से ५७/०७ तक, **शुक्र वृष राशि में १८/३०**	११	१३	४६	३६	६	२६	१८	४०
३०/४२	८	चंद्र	३०	००	आर्द्रा	२३	४३	शोभ	३०	४०	ब	३०	००	९	७	29	१६	मिथुन	**श्री दुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति,** मे. बाहूफोर्ट (जम्मू), कांगड़ा–चिन्तपूर्णी	११	१४	४५	५१	६	२४	१८	४१
३०/४५	९	मंग	३४	३०	पुर्न	२९	४०	अति	३१	३८	बा	२	१५	१०	८	30	१७	क. १३।२०	**श्री रामनवमी,** सूर्य रेवती में ५५/३५, **नवरात्र समाप्त**	११	१५	४५	०५	६	२३	१८	४१
३०/५०	१०	बुध	३७	२३	पुष्य	३४	०८	सुक	३१	२०	तै	५	५७	११	९	31	१८	कर्क		११	१६	४४	१८	६	२२	१८	४२
३०/५७	११	गुरु	३८	३०	श्ले	३६	५०	धृति	२९	४०	व	७	५१	१२	१०	अप्रै	१९	सिं. ३६।५०	भद्रा ७/५७ से ३८/३० तक, **कामदा एका. व्रत,** वक्री गुरु पू.फा. **A**	११	१७	४३	२६	६	१९	१८	४३
३१/००	१२	शुक्र	३७	४०	मघा	३७	४३	शूल	२६	३३	बव	७	५७	१३	११	2	२०	सिंह	गण्डमूल (21/24 घं. मिं. तक)	११	१८	४२	३४	६	१९	१८	४३
३१/०५	१३	शनि	३५	०५	पूफा	३६	५०	गंड	२१	५८	कौ	६	२३	१४	१२	3	२१	कं. ५१।२३	**शनि प्रदोष** व्रत, **श्री महावीर जयंती,** अनंग १३,	११	१९	४१	४०	६	१८	१८	४४
३१/१०	१४	रवि	३१	००	उफा	३४	३०	वृद्धि	१६	१०	ग	३	०३	१५	१३	4	२२	कन्या	भद्रा ३१/०० से ५८/२२ तक, दमनक चतुर्दशी, स. सि. योग:	११	२०	४०	४४	६	१७	१८	४५
३१/१३	१५	चंद्र	२५	४३	हस्त	३०	५८	ध्रुव	९	१८	बव	२५	२७	१६	१४	5	२३	तु. ५८।५०	**चैत्र पूर्णिमा व्रत, वैशाख स्नान शुरु,** श्री हनुमान जयं. (द. भारत)	११	२१	३९	४३	६	१६	१८	४५

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 29 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	१	०	४	१	२	०	६
१४	१४	११	०३	१७	००	१२	१९	१९
४३	४९	००	२६	०२	३८	४७	०७	०७
३८	१०	२२	४३	१२	५०	३६	५१	५१
५९ १७	७२२ २	३८ ४४	५८ ११	६ ९	५९ ८	२ २४	३ ११	३ ११
उभा ४	आर्द्र ३	रोहि १	अश्वि २	पूफा २	कृति २	आर्द्र २	भर. २	स्वा ४
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे — १: बु. रा.; २: मं. शु.; ३: चं. श.; ४; ५: गु.; ६; ७: के.; ८; ९; १०; ११; १२: सू.

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 5 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	१	०	४	१	२	०	६
२१	१५	१५	०७	१६	०७	१३	१८	१८
३७	३२	२८	४८	२१	२२	०६	४५	४५
५२	१४	५६	५८	५८	४१	३०	३६	३६
५९ ०३	८५७ २०	३८ २०	९ १६	५ ११	५५ ३८	३ ६	३ ११	३ ११
रेव १	हस्त २	रोहि २	अश्वि ३	पूफा १	कृति ४	आर्द्र २	भर. २	स्वा. ४
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30 बजे — १: बु. रा.; २: मं. शु.; ३: श.; ४; ५: गु.; ६: चं.; ७: के.; ८; ९; १०; ११; १२: सू.

A (१) में २५/४७, गण्डमूल ता., १ अप्रैल प्रारम्भ

चैत्र शुक्ल पक्षफल—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से **''हेमलम्ब''** नामक नया संवत्सर २०६१ प्रारम्भ होगा। सम्वत् मध्ये संकल्प आदि शुभ कार्यों में इसीका प्रयोग रहेगा। हेमलम्ब नाम सम्वत् तथा **राजा सूर्य** एवं **मन्त्री मंगल** होने से नेताओं एवं प्रशासकों में परस्पर विरोध, टकराव एवं होड़ की भावनाएँ अधिक होंगी। चोरी–ठगी, उत्पात, लूट–मार, वाहन, रेल, अग्निकांड आदि की दुर्घटनाएँ अधिक होंगी। लोगों में क्रोध, तनाव, उत्तेजना, राजसिक प्रवृत्तियाँ एवं अशान्ति बढ़ती है। सामान्य लोग अत्यधिक महँगाई एवं विभिन्न प्रकार के क्लिष्ट रोगों एवं दुःखों से पीड़ित रहें। नए वर्ष लग्न में भी राशिस्वामी शनि की सूर्य पर विशेष दृष्टि पड़ने से तथा चैत्र मास में **पाँच रविवार** होने से कहीं दुर्भिक्ष, कहीं छत्रभंग या मन्त्रीमण्डल में विशेष परिवर्तन, युद्ध भय अथवा हिंसक दुर्घटनाएं होने के संकेत मिलते हैं—**''यत्र मासे रवेर्वाराः जायन्ते पंचसततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंगः स्यात् दास्ते च महद्भयम्॥''** नवरात्रों में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सम्वत्सर पूजन, संवत् फल श्रवण, घटस्थापन तथा प्रतिपदा से नवमी तक प्रतिदिन ज्योत जलाकर श्री दुर्गा माता एवं अपने इष्ट देव पूज्य गुरु, अन्य देवताओं की पूजार्चना करके यथाशक्ति दान आदि करना कल्याणकारी रहता है।

व्यापारिक रूख—२४ मार्च को शुक्र कृतिका में आने से चावल, जौं, गुड़, घी, हींग, तैल, सरसों, रूई में तथा २६ को बुध मेष में आने से सरसों, तैल, तिल, चीनी, घी, गुड़ चाँदी में घटाबढ़ी परन्तु सोने में तेजी करेगा। **आकाश लक्षण**—पंजाब, हि. प्र., जम्मू-कश्मीर, दिल्ली, हरियाणा के कुछ प्रदेशों में (पक्ष के उत्तरार्ध भाग में) तेज़ हवाओं के साथ खण्ड वर्षा होने के योग हैं॥

वि. संवत् २०६१, वैशाख कृष्ण पक्ष शाकः १९२६														तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2004 ई. (ता. 6 अप्रै. से 19 अप्रैल तक) सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोलार्द्ध, बसन्त ऋतु					जालन्धर भा. स्टैं. टा.			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	चैत्र शाके	सफर मु.	अंग्रेज़ी	चैत्र प्रवि.	प्रवेश घटी पल	ग्रह लोपदर्शन—बुध, शुक्र सायं पश्चिम में, मंगल भी शुक्र से कुछ ऊपर, ९ अप्रै. को बुध अस्त होगा। गुरु पूर्व में तथा शनि याम्योत्तरवृत्तासन्न।	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३१/२०	१	मंग.	१९	३३	चित्रा	२६	३५	व्या. हर्ष.	१ ५३	४० २३	कौ	१९	३३	१७	१५	6	२४	तुला	**वैशाख कृष्ण पक्षारम्भः, बुध वक्री ४९/२०**	११	२२	३८	४३	६	१४	१८	४६
३१/२५	२	बुध	१२	४५	स्वा.	२१	४०	वज्र	४४	५३	ग	१२	४५	१८	१६	7	२५	तुला	भद्रा ३९/१४ से प्रा., शुक्र रोहिणी में ४९/३५	११	२३	३७	४१	६	१३	१८	४७
३१/२८	३	गुरु	५	४३	विशा	१६	३३	सिद्धि	३६	१८	वि	५	४३	१९	१७	8	२६	वृ. २/५०	भ. ५/४३ तक, **श्री गणेश चतुर्थी** व्र., चंद्रोदय रात्रि 22/22 पर **A**	११	२४	३६	३६	६	१२	१८	४७
अवम्	४	गुरु	५८	४०	००	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	0	०	००	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० **A** स. सि. योगः	०	०	०	०	०	०	०	०
३१/३५	५	शुक्र	५२	०३	अनु	११	३३	व्या.	२७	५३	कौ	२५	२२	२०	१८	9	२७	वृश्चिक	शनि आर्द्रा (३) में ७/४३, **बुधास्त पश्चिमे, गुड फाईडे**	११	२५	३५	२७	६	१०	१८	४८
३१/४०	६	शनि	४५	५३	ज्ये.	६	५३	वरी	१९	४८	ग	१८	५८	२१	१९	10	२८	ध. ६/५३	भद्रा ४५/५३ से, गण्डमूल विचार	११	२६	३४	१८	६	०९	१८	४९
३१/४३	७	रवि	४०	२०	मूला पूषा	२ ५९	४५ २०	परि	१२	१३	वि	१३	०७	२२	२०	11	२९	धनु	भद्रा १३/०७ तक, गंडमूल 7/14 तक, स. सि. योगः	११	२७	३३	०९	६	०८	१८	४९
३१/४८	८	चंद्र	३५	३८	उषा	५६	४८	शिव सिद्ध	५ ५८	१५ ५८	बा	७	५९	२३	२१	12	३०	म. १३/३८	**B अर्ध कुम्भी पर्व, हरिद्वार पुण्यकाल ११/३८ उप., मेला वैशाखी**	११	२८	३१	५८	६	०७	१८	५०
३१/५३	९	मंग.	३१	५३	श्रव	५५	१३	साध्य	५३	३०	तै	३	४६	२४	२२	13	वैशा	मकर	**सूर्य अश्वि. १ मेष** में २९/५०, **वैशाख संक्रांति** ३० मुहूर्त्ति **B**	११	२९	३०	४४	६	०६	१८	५१
३१/५८	१०	बुध	२९	०८	धनि	५४	४०	शुभ	४८	५३	व	०	३१	२५	२३	14	२	कुं. २४/५०	भ. ०/३१ से २९/०८ तक, **पंचकारंभ २४/५०**, अम्बेदकर जयंती	०	००	२९	३०	६	०५	१८	५२
३२/०३	११	गुरु	२७	२८	शत	५५	१०	शुक्ल	४५	०५	बा	२७	२८	२६	२४	15	३	कुम्भ	**वरूथिनी एकादशी व्रत, वल्लभाचार्य जयंती**	०	०१	२८	१४	६	०४	१८	५३
३२/०५	१२	शुक्र	२६	५३	पूभा	५६	४८	ब्रह्म	४२	१३	तै	२६	५३	२७	२५	16	४	मी. ४१/१८	**प्रदोष व्रतम्**	०	०२	२६	५५	६	०३	१८	५३
३२/१०	१३	शनि	२७	३०	उभा	५९	३८	ऐंद्र	४०	१८	व	२७	३०	२८	२६	17	५	मीन	भद्रा २७/३० से ५८/२४ तक, मंगल मृगे (१) में १७/०५	०	०३	२५	३२	६	१	१८	५४
३२/१८	१४	रवि	२९	१८	रेव	६०	००	वैधृ	३९	१३	श	२९	१८	२९	२७	18	६	मीन	गण्डमूल विचार	०	०४	२४	१०	६	००	१८	५५
३२/२३	३०	चंद्र	३२	१३	रेव	३	३३	विष्क	३९	०५	च	०	४६	३०	२८	19	७	मे. ३/३३	**सोमवती अमावस, स्नानदानादि**, सा. सूर्य वृष में 23/20 **C**	०	०५	२२	४७	५	५९	१८	५५

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 12 अप्रै. चन्द्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 19 अप्रैल **C** ग्रीष्म ऋतुः प्रा., गण्डमूल विचार

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	१	०	४	१	२	०	६
२८	२६	१९	०६	१५	१३	१३	१८	१८
३०	२७	५७	३९	४८	३९	३०	२३	२३
२७	३५	०२	०५	५५	१५	११	२१	२१
५८ ४९	८३५ ४०	३८ १६	३१ ५६	४ ४	५१ ११	३ ४८	३ ११	३ ११
रेव ४	पूषा ४	रोहि ३	अश्वि २	पूफा १	रोहि २	आर्द्रा ३	भर. २	स्वा ४
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

१ बु. रा.; ११; २ मं. शु.; १२ सू.; १०; ३ श.; ९ चं.; ६; ४; ८; ५ गु.; ७ के.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	१	०	४	१	२	०	६
०५	२९	२४	०२	१५	१९	१३	१८	१८
२१	०१	२४	०२	२३	२१	५८	०१	०१
३६	०२	४६	२५	५९	३०	२५	०७	०७
५८ ३७	७४० ३	३८ १३	४२ १४	२ ५२	४५ ३४	४ २४	३ ११	३ ११
अश्वि २	रेव ४	मृग १	अश्वि १	पूफा १	रोहि ३	आर्द्रा ३	भर. २	स्वा. ४
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30 बजे

२ मं. शु.; १२ चं.; ३ श.; १ सू. बु. रा.; ११; ४; १०; ५ गु.; ७ के.; ९; ६; ८

वैशाख कृष्ण पक्षफल—चैत्र पूर्णिमा से वैशाख पूर्णिमा पर्यन्त प्रतिदिन प्रातः सूर्योदय से पूर्व किसी तीर्थस्थान, नदी या कुआं, बावली, तालाब अथवा अपने घर पर ही शुद्ध जल से स्नान करें और नित्यकर्म के अतिरिक्त **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'** मन्त्र का यथाशक्ति जप एवं दान, ब्राह्मण भोजन आदि तथा भगवान् श्रीविष्णु की विधिपूर्वक पूजा करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। इस पक्ष में १३ अप्रै. मंगलवार को **अर्ध-कुम्भी का पर्व हरिद्वार** में होगा, मुख्य स्नान आदि का पुण्य दुपै. ११.३८ से शुरु होगा। वरूथिनी एकादशी का व्रत रखने से सौख्य लाभ तथा अनन्त शान्ति मिलती है। **सोमवती अमा.** को तीर्थों पर स्नान, दानादि का विशेष माहात्म्य होगा।

लोक भविष्य—वैशाख मास में पांच मंगलवार होने से उपद्रव, अग्निकाण्ड व हिंसक घटनाएँ अधिक होंगी। राजनीतिक उलटफेर, किसी प्रधान नेता की आकस्मिक मृत्यु अथवा पदच्युत होने के योग बनेंगे। **यत्र मासे महीसूनो जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥ व्यापारिक भविष्य**—१३ अप्रै. को **वैशाख संक्रान्ति** ३० मुहूर्त्ति की है। सूर्य मेष राशि में बुध-राहु के साथ योग करेगा। घी, तेल, तिल, सरसों, सब प्रकार के फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोने, चाँदी में विशेष तेजी बने। चावल, मूंग, चने, खल-बिनौले, रूई, कपास, पटसन में घटावढ़ी के बाद तेज़ी होगी। ता. १७ को मंगल मृगशिर में लोहा, ताँबा, सुवर्ण आदि धातुओं में तेजी का वातावरण करेगा। ता. १९ को **सोमवती अमावस** रुई, कपास, चाँदी, सूतादि में मन्दी का रूझान रहेगा।

राशिफल—वैशाख संक्रांति मेष, वृष, मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक, धनु, कुम्भ राशि वालों को शुभ एवं लाभदायक रहेगी। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष के आरम्भ से ही मंगल आगे और सूर्य उसके पीछे संचार कर रहे हैं। इसलिए भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों में रुक-रुक कर खण्ड वर्षा होने के योग पाए जाते हैं—**आगे मंगल पीछे भान वर्षा होवे ओससमान॥**

शकुन—वैशाख कृष्ण पंचमी को बादल चाल रहे या बूंदा-बांदी हो, तो गेहूँ, चावल आदि की खरीद कर भाद्रपद में बेचने से अच्छा मुनाफा मिलने की संभावना होती है।

वि. संवत् २०६१, वैशाख शुक्ल पक्ष शाकः १९२६															तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2004 ई. (ता. 20 अप्रै. से 4 मई तक) सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोलार्द्ध, ग्रीष्म ऋतुः					जालन्धर भा. स्टैं. टा.			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	चैत्र शक	सफर मु.	अप्रैल	वैशाख	प्रवेश घटी पल	ग्रह लोपदर्शन—बुध २५ अप्रै. से प्रातः पूर्व में, शुक्र, मंगल तथा शनि सायं पश्चिमी कपाल में होंगे, गुरु पूर्व कपाल में होगा।	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३२/२७	१	मंग	३६	१५	अश्वि	८	३५	प्रीति	३९	४८	किं	४	१४	३१	२९	20	८	मेष	वैशाख शुक्ल पक्षारम्भः, गण्डमूल 9/24 तक, स. सि. योगः	०	०६	२१	२१	५	५८	१८	५७
३२/३३	२	बुध	४१	२०	भर	१४	३८	आयु	४१	१८	बा	८	४८	वै.	३०	21	९	वृ. ३१/१८	**चंद्रदर्शन** ३० मु., शिवाजी जयं., शाकः वैशाख प्रा., **अगस्त्यास्त A**	०	०७	१९	५४	५	५७	१८	५७
३२/३५	३	गुरु	४७	१०	कृति	२१	३३	सौभा	४३	२३	तै	१४	१५	२	रवि	22	१०	वृष	**अक्षया तृतीया, परशुराम जयं., वक्री बुध मीन में १/०५,** रवि **B**	०	०८	१८	२४	५	५६	१८	५८
३२/४०	४	शुक्र	५३	३०	रोहि	२९	०३	शोभ	४५	५०	व	२०	२०	३	२	23	११	वृष	भ. २०/२२ से ५३/३० तक, **B** उलावल १ मुस्लि., केदार बद्री यात्रा	०	०९	१६	५२	५	५५	१८	५९
३२/४३	५	शनि	५९	५५	मृग	३६	४८	अति	४८	२५	ब	२६	४३	४	३	24	१२	मि. २/५८	**आद्य गुरू शंकराचार्य जयंती** **A** सि. योग 11/48 उप.	०	१०	१५	१८	५	५४	१८	५९
३२/४७	६	रवि	६०	००	आर्द्रा	४४	१८	सुक	५०	४५	कौ	२९	५८	५	४	25	१३	मिथुन	श्री रामानुजाचार्य जयंती, **बुध पूर्व से उदय** (14/28) घं. मिं.	०	११	१३	४३	५	५३	१९	००
३२/५०	६	चंद्र	५	५८	पुर्न	५१	०३	धृति	५२	२८	तै	५	५८	६	५	26	१४	क. ३४/२८	**श्री गंगा जयन्ती,** **C** भरणी में ९/५०	०	१२	१२	०४	५	५२	१९	००
३२/५५	७	मंग	११	००	पुष्य	५६	३८	शूल	५३	१३	व	११	००	७	६	27	१५	कर्क	भद्रा ११/०० से ४२/५० तक, **मंगल मिथुन में ४५/५५,** सूर्य **C**	०	१३	१०	२५	५	५१	१९	०१
३३/००	८	बुध	१४	४०	श्ले.	६०	००	गंड	५२	४३	ब	१४	४०	८	७	28	१६	कर्क	गण्डमूल विचार, **श्री दुर्गाष्टमी,** गण्डमूलादि	०	१४	०८	४२	५	५०	१९	०२
३३/०५	९	गुरु	१६	३५	श्ले.	०	३८	वृद्धि	५०	४५	कौ	१६	३५	९	८	29	१७	सिं. ०/३८	**सीता नवमी, बगुलामुखी जयंती,** गण्डमूलादि	०	१५	०६	५९	५	४९	१९	०३
३३/०८	१०	शुक्र	१६	३५	मघा	२	४८	ध्रुव	४७	१८	ग	१६	३५	१०	९	30	१८	सिंह	भद्रा ४५/३८ से, **बुध मार्गी** (18/32 घं. मिं.)	०	१६	०५	१२	५	४८	१९	०३
३३/१३	११	शनि	१४	४०	पूफा	३	०३	व्या.	४२	१८	वि	१४	४०	११	१०	मई	१९	कं. १७/४८	भ. १४/४० तक, १ मई, **श्रम दिवस, मोहिनी एकादशी व्रत**	०	१७	०३	२४	५	४७	१९	०४
३३/१८	१२	रवि	१०	५३	उफा हस्त	१ ५८	२५ ०३	हर्ष	३५	५०	बा	१०	५३	१२	११	2	२०	कन्या	**प्रदोष व्रत,** सर्वार्थ सिद्ध योगः	०	१८	०१	३५	५	४६	१९	०५
३३/२०	१३	चंद्र	५	२५	चित्रा	५३	२३	वज्र	२८	१०	तै	५	२५	१३	१२	3	२१	तु. २५/५३	भद्रा ५८/३८ से, **नृसिंह चौदश**	०	१८	५९	४२	५	४५	१९	०५
अवम्	१४	चंद्र	५८	३८	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३३/२५	१५	मंग	५०	५०	स्वा.	४७	४०	सिद्धि	१९	३०	वि	२४	४४	१४	१३	4	२२	तुला	भ. २४/४४ तक, **वैशाख (बुद्ध) पूर्णिमा, खग्रास चंद्रग्रहण, D**	०	१९	५७	४९	५	४४	१९	०६

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 28 अप्रैल

भौमे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 4 मई

D कूर्म जयंती, **कुंभ महापर्व (उज्जैन),** वैशाख स्नान समाप्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	२	११	४	१	२	०	६
१४	१७	००	२७	१५	२५	१४	१७	१७
०७	११	०८	२७	०४	३४	४०	३२	३२
५४	११	२६	५४	४३	३९	५५	३१	३१
५८ १९	७५० ५१	३८ ८	९ ५७	१ १३	३५ ४२	५ ६	३ ११	३ ११
भर	श्ले	मृग	रेव	पूफा	मृग	आर्द्र	भर.	स्वा
१	१	३	४	१	१	३	२	४
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

२ शु.
१२ बु.
३ मं. श.
१ सू. रा.
११
४ चं.
१०
५ गु.
७ के.
९
६
८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	२	११	४	१	२	०	६
१९	०८	०३	२७	१५	२८	१५	१७	१७
५७	०७	५७	४०	००	४७	१२	१३	१३
१५	५८	०५	४३	०९	४८	४२	२७	२७
५८ ६	८८७ ६	३८ ४	१८ ३९	० ०७	२६ ५५	५ ३३	३ ११	३ ११
भर	स्वा.	मृग	रेव	पूफा	मृग	आर्द्र	भर.	स्वा.
२	१	४	४	१	२	३	२	४
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30 बजे

२ शु.
१२ बु.
३ मं. श.
१ सू. रा.
११
४
१०
५ गु.
७ चं. के.
९
६
८

वैशाख शुक्ल पक्षफल—गुरुवार, २२ अप्रैल को अक्षया तृतीया एवं श्री परशुराम की पुण्य जन्मतिथि है। इसी दिन नर-नारायण अवतार श्री राम. एवं त्रेतायुग का जन्म शुभारम्भ हुआ था। इसी कारण इसे स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त भी माना जाता है। २२ अप्रै. को तृतीया तिथि २१ घड़ी के बाद रोहिणी नक्षत्र युता होने से अत्यन्त पवित्र व शुभफलप्रदा होगी। इस दिन किए हुए जप, तप, स्नान, होम, दान आदि सभी शुभ कर्मों का फल अनन्त गुणा होता है। श्री गंगा जयंती (२६ अप्रैल) को मध्यान्ह काल में स्नान, दान, पुष्प, दीपादि सहित पूजार्चन करने का विशेष माहात्म्य होगा। ता. २९ को शक्तिस्वरूपा बगुलामुखी माता की पूजार्चना करने से ऋण, रोग एवं शत्रुभय नहीं होता। वैशाख पूर्णिमा (४ मई) को वैशाख स्नान का विशेष माहात्म्य होगा। खग्रास चन्द्रग्रहण और **कुम्भ महापर्व (उज्जैन)** का आयोजन होगा।

व्यापारिक रूख—२७ को मंगल मिथुन में प्रवेश कर शनि के साथ योग करेगा। रूई, गुड़, शक्कर, अलसी, मजीठ, सरसों, ताँबा व सोना, लाल मिर्च आदि लाल रंग की वस्तुएँ तथा शेयर तेज भाव होंगे। **लोक भविष्य**—२७ अप्रै. से शनि-मंगल का योग होना, वैशाख मास में पाँच मंगलवार तथा १ मई को सूर्य-राहु मध्य अंशात्मक युति होने से अप्रैल-मई में देश के कुछ प्रदेशों जैसे—उ.प्र., म. प्र., बिहार, आसाम, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र आदि में कहीं उपद्रव, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं होने के संकेत हैं। ४ मई मंगलवार को ग्रहण होने से उपद्रव, अग्निकाण्ड एवं सम्प्रदायक दंगे होने के योग हैं। कुछ प्रदेशों में राजनैतिक अस्थिरता एवं परिवर्तन भी सम्भव। उपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि से सामान्य लोगों में क्रोध व क्षोभ की भावना व्याप्त हो। **आकाश लक्षण**—पंजाब, हि. प्र., राजस्थान, हरियाणा, उ. प्र. आदि प्रदेशों में गर्म हवाएँ एवं खण्ड वर्षा होने के योग हैं। **शकुन**—वै. शु. तृतीया को रोहिणी नक्षत्र में बूंदाबादी हो, तो आगामी सुभिक्ष के संकेत होंगे।

वि. संवत् २०६१, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष शाकः १९२६														तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2004 ई. (ता. 5 मई से 19 मई तक) सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोलार्द्ध, ग्रीष्म ऋतु	जालन्धर भा. स्टैं. टा.							
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	अं. शाके	रवि मं.	मई	वैशा. प्र.	प्रवेश घटी पल	ग्रह लोपदर्शन—प्रातः बुध पूर्व में, सायं मंग., शुक्र, शनि पश्चिमी कपाल में तथा गुरु पूर्व कपाल में नत हुए दिखाई देगा।	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३३/३०	१	बुध	४२	२५	विशा	४१	१८	व्य.	१०	१०	बा	१६	३८	१५	१४	5	२३	वृ. २७/५५	**ज्येष्ठ कृष्ण पक्षारम्भ, गुरु मार्गी** होगा ७/१३, स. सि. योगः	०	२०	५५	५२	५	४३	१९	०७
३३/३३	२	गुरु	३३	४८	अनु	३४	४०	वरी परि	० ५०	२३ ३०	तै	८	०७	१६	१५	6	२४	वृश्चिक	भद्रा ५९/३२ से, **शुक्र मिथुन में ५०/३०** नारद जयंती	०	२१	५३	५५	५	४२	१९	०७
३३/३८	३	शुक्र	२५	१५	ज्ये.	२८	१३	शिव	४०	५३	वि	२५	१५	१७	१६	7	२५	ध. २८/१३	भद्रा २५/१५ तक, **श्री गणेश चतुर्थी** चंद्रोदय 22/27, गंडमूल **A**	०	२२	५१	५७	५	४१	१९	०८
३३/४०	४	शनि	१७	१३	मूला	२२	१३	सिद्ध	३१	४०	बा	१७	१३	१८	१७	8	२६	धनु	मंगल आर्द्रा में १६/२८, गंडमूलादि **A** रवीन्द्रनाथ टैगोर जयं.	०	२३	४९	५९	५	४१	१९	०९
३३/४३	५	रवि	१०	००	पूषा	१७	०५	साध्य	२३	१८	तै	१०	००	१९	१८	9	२७	म. ३०/५८	**बुध अश्वि. १ मेष में** ४/०५ (7/18 घं. मिं.), स. सि. योगः**B**	०	२४	४७	५७	५	४०	१९	०९
३३/४८	६	चंद्र	३	५५	उषा	१३	०८	शुभ	१५	५३	व	३	५५	२०	१९	10	२८	मकर	भ. ३/५५ से ३१/३३ तक, सूर्य कृतिका में ५६/००, स. सि. योगः **C**	०	२५	४५	५३	५	३९	१९	१०
००/००	७	चंद्र	५९	१०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	सप्तमी तिथि का क्षय **C** 10/54 उप.	०	०	०	०	०	०	०	०
३३/५३	८	मंग	५५	५५	श्रव	१०	३५	शुक्ल	९	३५	बा	२७	३३	२१	२०	11	२९	कुं. ३९/४९	**पंचकारम्भः ३९/४९** **B** 12/30 स्टै.टा. उप.	०	२६	४३	४८	५	३८	१९	११
३३/५५	९	बुध	५४	१०	धनि	९	२८	ब्रह्म	४	३३	तै	२५	०३	२२	२१	12	३०	कुम्भ	**D** पुण्य संक्रां. २/५५ उप., **भद्रकाली एका.**	०	२७	४१	४५	५	३८	१९	११
३३/५८	१०	गुरु	५४	०३	शत	९	५५	ऐंद्र वैधृ	० ५८	४५ ०८	व	२४	०७	२३	२२	13	३१	मी. ५६/१५	भद्रा २४/०७ से ५४/०३ तक,	०	२८	३९	३८	५	३७	१९	१३
३४/०३	११	शुक्र	५५	२३	पूभा	११	५५	विष्क	५६	४३	ब	२४	४३	२४	२३	14	ज्ये.	मीन	**सूर्य वृष में २३/१७, ज्येष्ठ संक्रां. ४५ मुहू., अपरा एका. व्रत D**	०	२९	३७	२९	५	३६	१९	१३
३४/०५	१२	शनि	५८	००	उभा	१५	१५	प्रीति	५६	१८	कौ	२६	४२	२५	२४	15	२	मीन	गंडमूल (11/42 घं. मिं. उप.)	१	००	३५	२२	५	३६	१९	१४
३४/०८	१३	रवि	६०	००	रेव	१९	५०	आयु	५६	४८	ग	२९	००	२६	२५	16	३	मे. १९/५०	**पंचक समाप्त १९/५०, प्रदोष व्रत, गण्डमूल**	१	०१	३३	१२	५	३५	१९	१४
३४/१०	१३	चंद्र	१	५०	अश्वि	२५	३०	सौभा	५८	०५	व	१	५०	२७	२६	17	४	मेष	भ. १/५० से ३४/१२ तक, **शुक्र वक्री ५५/४७**, नैपच्यून-वक्री **E**	१	०२	३१	००	५	३४	१९	१४
३४/१३	१४	मंग	६	३३	भर	३१	५८	शोभ	५९	५३	श	६	१८	२८	२७	18	५	वृ. ४८/४३	**भौमवासरी अमावस,** शनि आर्द्रा (४) में ३४/५०, वट सावित्री **F**	१	०३	२८	४६	५	३४	१९	१५
३४/१८	३०	बुध	१२	०३	कृति	३९	०८	अति	६०	००	ना	११	४०	२९	२८	19	६	वृष	**अमावस स्नान** दान आदि, वट सावित्री पूजन, **भावुका अमावस**	१	०४	२६	३४	५	३३	१९	१६

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 11 मई   बुधे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 19 मई   **E** 17/52 घं. मिं., वट सावित्री व्रत. प्रारंभ   **F** व्रत, **शनैश्चरी जयंती**

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	२	०	४	२	२	०	६
२६	२०	०८	०१	१५	०१	१५	१६	१६
४३	४९	२३	१९	०३	१९	५२	५१	५१
२९	४९	२२	४५	०९	२९	५७	११	११
५७ ५७	८१८ ५७	३८ ००	४६ ४९	१ ९	१४ ८	६ ००	३ १०	३ १०
कृति	श्रव	आर्द्रा	अश्वि	पूफा	मृग	आर्द्रा	भर.	स्वा
१	४	१	१	१	३	३	२	४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

१ सू. बु. रा.
२
३ मं. शु. श.
४
५ गु.
६
७ के.
८
९
१० चं.
११
१२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	२	०	४	२	२	०	६
०४	०२	१३	०९	१५	०२	१६	१६	१६
२६	१३	२७	०४	१७	१२	४२	२५	२५
२७	१०	१५	५७	२२	०५	४०	४६	४६
५७ ४६	७१३ २९	३७ ५८	७१ ३१	२ ३४	३ ४३	६ २९	३ ११	३ ११
कृति	कृति	आर्द्रा	अश्वि	पूफा	मृग	आर्द्रा	भर.	स्वा.
३	२	३	३	१	३	४	१	३
०	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30 बजे

२ सू. चं.
३ मं. शु. श.
१ बु. रा.
४
५ गु.
६
७ के.
८
९
१०
११
१२

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षफल—इस पक्ष में अपरा एकादशी का विधिपूर्वक व्रत रखने से मनुष्य को सामर्थ्यवान होने पर भी कर्त्तव्यच्युत से होने वाले पापों से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। १४ मई को **ज्येष्ठ संक्रांति** भी होने से इस दिन का व्रत, शक्ति पूजार्चन करने का माहात्म्य और बढ़ जाएगा। इस पक्ष की अमावस को वैधव्यादि दोषों के परिहार हेतु सधवा स्त्रियों द्वारा वट सावित्री का व्रत, पूजन आदि करने का विधान है। यह व्रत त्रयोदशी से आरम्भ करके अमावस तक किया जाता है।। **भौमवासरी अमावस** (१८ मई) मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र आदि साधना के लिए विशेष प्रशस्त मानी जाती है। **लोक भविष्य**—ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा को बुधवार होने से वर्ष में प्रजा को व्याधिभय एवं राजाओं (देशों) के मध्य युद्ध के बादल मण्डराते हैं। **"ज्येष्ठाद्य बुधवारः स्याद् वर्षेवागामिके भयम्। तत्र चेद् मंदवारः स्यात्तदायुद्धाकुलाधरा॥"** शनि-मंगल का अशुभ योग पहले से ही मिथुन राशि पर चल रहा है, जिसमें राष्ट्राध्यक्षों के मध्य टकराव एवं हिंसक घटनाएँ अधिक होंगी। राजनीतिक क्षेत्रों में अस्थिरताएँ बढ़ेंगी। **व्यापारिक रूख**—पक्षारम्भ में गुरु सिंह राशि में मार्गी होने से रूई, चाँदी, चावल, घी आदि में मन्दी एवं घटाबढ़ी रहेगी। ता. ६ को शुक्र मिथुन राशि में आकर मंगल व शनि के साथ मेल करेगा। गेहूँ, चने, चावल, अलसी, वनस्पती, हल्दी, उड़द एवं शेयर मार्कीट में मज़बूती एवं तेजी का रुख होगा। १० को सूर्य कृतिका में आकर गेहूँ, सोना, चाँदी, धान्य, चावल, रूई आदि में तेजीकारक होगा। ता. १४ को ज्येष्ठ संक्रान्ति ४५ मुहूर्त्ति है। गुड़, घी, रूई, तिल, तैल, चना, जौं एवं खाद्य तेलों में घटाबढ़ी रहेगी। १७ ता. को **शुक्र वक्री** होने से रूई, अलसी, सोना, चाँदी तथा साफ्टवेयर शेयरों में तेजी होगी। १८ को मंगलवारी अमावस चाँदी एवं दुग्ध पदार्थों में तेजीकारक होगी। **संक्रांति फल**—वृष, मिथुन, कर्क, तुला, धनु, मकर व मीन राशि वालों को संक्रान्ति फल शुभ एवं लाभदायक होगा। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में उत्तरी भारत में गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा। मंगल सूर्य से आगे होने से तेज हवाओं के साथ रुक-रुक कर बूँदा-बाँदी होने के योग हैं॥

वि. संवत् २०६१,	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष							शाकः १९२६						तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2004 ई. (ता. 20 मई से 3 जून तक) सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोलार्द्ध, ग्रीष्म ऋतु					जालन्धर भा. स्टैं. टा.			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	वैशा. शुक्र	रवि मु.	मई	ज्ये. प्रवि	प्रवेश घटी पल	ग्रह लोपदर्शन—बुध प्रातः पूर्व में, सायं गुरु पूर्व दिशा में ऊपर उठा हुआ, मंग., शुक्र व शनि पश्चिम कपाल में दृश्य होंगे।	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३४/२०	१	गुरु	१८	०३	रोहि	४६	३८	अति	२	१०	ब	१८	०३	३०	२९	20	७	वृष	ज्ये. शुक्ल पक्षः, **चंद्रदर्शन** ४५ मु., सा. सूर्य मिथुन में 22/29 घं मिं.	१	०५	२४	२०	५	३३	१९	१७
३४/२३	२	शुक्र	२४	२०	मृग	५४	२०	सुक	४	४३	कौ	२४	२०	३१	रवि	21	८	मि. २०।३०	**रम्भा तृतीया व्रत,** १ रबि उल्सानी (मु.)	१	०६	२२	०३	५	३२	१९	१७
३४/२८	३	शनि	३०	४०	आर्द्रा	६०	००	धृति	७	२०	ग	३०	४०	ज्ये.	२	22	९	मिथुन	**प्रताप जयन्ती,** शाकः ज्येष्ठ प्रारम्भ, बुध भरणी में २४/२७	१	०७	१९	४३	५	३१	१९	१८
३४/३०	४	रवि	३६	४८	आर्द्रा	१	५५	शूल	९	४५	व	३	४४	२	३	23	१०	क. ५२।१८	भद्रा ३/४४ से ३६/४८ तक, **शहीदी दिन गुरु अर्जुन देव**	१	०८	१७	२५	५	३१	१९	१९
३४/३३	५	चंद्र	४१	५८	पुर्न	९	०५	गंड	११	५३	ब	९	२३	३	४	24	११	कर्क	सूर्य रोहिणी में ४६/४५, स. सि. योगः प्रातः 9/08 उप.	१	०९	१५	०४	५	३०	१९	१९
३४/३५	६	मंग.	४६	१३	पुष्य	१५	२०	वृद्धि	१३	१५	कौ	१४	०६	४	५	25	१२	कर्क	स. सि. योगः, गण्डमूल च. 11/38 स्टै. टा. उप.	१	१०	१२	४३	५	३०	१९	२०
३४/३८	७	बुध	४९	०५	श्ले.	२०	२८	ध्रुव	१३	४३	ग	१७	३९	५	६	26	१३	सिं. २०।२८	भ. ४९/०५ से प्रारंभ, गण्डमूलादि **B** वक्री शुक्र मृग (१) में ५९/४८	१	११	१०	१८	५	३०	१९	२०
३४/४०	८	गुरु	५०	१८	मघा	२४	०५	व्या.	१३	०३	वि	१९	४२	६	७	27	१४	सिंह	भद्रा १९/४२ तक, **मेला क्शीर भवानी** (जम्मू का.), **धूमावती जयं.**	१	१२	०७	५४	५	२९	१९	२१
३४/४३	९	शुक्र	४९	३८	पूफा	२५	५८	हर्ष	१०	५८	बा	१९	५८	७	८	28	१५	कं. ४१।०५	**वक्री शुक्र वृष रा. में २९/१५** (17/11 घं. मिं.)	१	१३	०५	२९	५	२९	१९	२२
३४/४५	१०	शनि	४७	०३	उफा	२५	५५	वज्र	७	२३	तै	१८	५१	८	९	29	१६	कन्या	**गंगा दशहरा** (हरिद्वार), मंगल पुनर्वसु में २१/२०	१	१४	०३	०२	५	२९	१९	२३
३४/४८	११	रवि	४२	३८	हस्त	२४	००	सिद्धि व्य.	२ ५५	१५ ३८	व	१४	५१	९	१०	30	१७	तु. ५२।२३	भद्रा १४/५१ से ४२/३८ तक, **निर्जला एकादशी व्रत,** स सि. योगः	१	१५	००	३१	५	२८	१९	२३
३४/५०	१२	चंद्र	३६	२८	चित्रा	२०	२०	वरी	४७	४०	ब	९	३३	१०	११	31	१८	तुला	बुध कृतिका (१) में १६/१५, **चम्पक द्वादशी,** वट सावित्री व्रतारंभ	१	१५	५८	०२	५	२८	१९	२४
३४/५१	१३	मंग.	२८	५३	स्वा.	१५	१०	परि	३८	३५	कौ	२	४१	११	१२	जून	१९	बृ. ५५।३०	**भौम प्रदोष व्रत, तारीख १ जून, 2004 ई.**	१	१६	५५	३१	५	२८	१९	२४
३४/५३	१४	बुध	२०	१८	विशा	८	५०	शिव	२८	४३	व	२०	१८	१२	१३	2	२०	बृश्चिक	भद्रा २०/१८ से ४५/३८ तक, **बुध वृष में १४/५५** (10/25 घं मिं. **A**	१	१७	५२	५७	५	२७	१९	२४
३४/५५	१५	गुरु	१०	५८	अनु ज्ये.	१ ५४	४३ १३	सिद्ध	१८	१५	ब	१०	५८	१३	१४	3	२१	ध. ५४।१३	**ज्येष्ठ पूर्णिमा, कबीर जयंती,** गंडमूल (6/08 घं. मिं. उप.), **B**	१	१८	५०	२४	५	२७	१९	२५

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 27 मई | गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 3 जून | **A वट सावित्री व्रत** (पूर्णिमा पक्षे), स. सि. योगः प्रातः 8/59 से,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	२	०	४	२	२	०	६
१२	०८	१८	१९	१५	००	१७	१६	१६
०७	१५	३०	५०	४२	५५	२९	०३	०३
५६	१२	४४	१०	४४	२३	०२	३१	३१
५७ ३५	७६७ ७	३७ ५४	९१ ५८	३ ५५	२२ ४४	६ ५२	३ ११	३ ११
रोहि	मघा	आर्द्रा	भर.	पूफा	मृग	आर्द्रा	भर.	स्वा
१	३	४	२	१	३	४	१	३
०	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

३ मं. शु. श. | २ सूर्य | बु. १ रा. | १२ | ४ | ५ चं. गु. | ११ | ६ | ८ | १० | ७ के. | ९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	२	१	४	१	२	०	६
१८	१६	२२	०१	१६	२७	१८	१५	१५
५०	१६	५५	२४	१३	१४	२४	३८	३८
३१	१६	५२	४८	३१	४५	४५	०५	०५
५७ २६	९१४ २९	३७ ५१	१०८ ५०	५ १	३४ ५७	७ ८	३ ११	३ ११
रोहि	अनु	पुर्न	कृति	पूफा	मृग	आर्द्रा	भर.	स्वा.
३	४	१	२	१	२	४	१	३
०	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30 बजे

म. ३ श. | २ सू. बु. शु. | रा. १ | १२ | ४ | ५ गु. | ११ | ६ | ८ चं. | १० | ७ के. | ९

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षफल—इस पक्ष में द्वितीया विद्धा रम्भा तीज का व्रत रखने से स्त्रियों को विवाह, सन्तति एवं सौभाग्य आदि सुखों की प्राप्ति होती है। दशमी तिथि (29 मई) को श्री **गंगा दशहरा** को हस्त नक्षत्र कालीन (दुपैः १५.५१ उप.) श्रीगंगा जी का स्नान करके चन्दन, पुष्प, चावल, नारियल फल, धूप-दीप आदि से पूजार्चना करने से विशेष पुण्य होता है। ३० मई को **निर्जला एकादशी** को निराहार व्रत रखकर प्रातः स्नानादि के पश्चात् यथाशक्ति अनाज, फलों, जलापूरित कलश (पात्र), वस्त्रों आदि का दान करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

लोक भविष्य—ज्येष्ठ मास में पाँच बृहस्पतिवार होने से पश्चिम दिशा के देशों एवं प्रदेशों में सीमाओं पर कहीं युद्ध एवं आतंक व हिंसक घटनाएं घटित होने के योग हैं। इसी पक्ष में ता. २५ को **मंगल-शनि के मध्य अंशात्मकयुति** होने से उत्तर-प्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, आसाम, लंकापुर आदि पूर्वी क्षेत्रों में कहीं उपद्रव, हिंसा एवं मन्त्री मण्डल में परिवर्तन होंगे। अत्याधिक महँगाई के कारण साधारण लोगों में क्रोध व असंतोष की भावना रहे।

व्यापारिक रुख—पंचमी तिथि (२४ मई) को सूर्य रोहिणी में आने से तिल, तैल, एरण्डी, अलसी, खल-बिनौले आदि धातुएँ तेज होगी। पक्षारम्भ में सूर्य पाप ग्रहों के मध्य होने से अनाज, धान्य आदि फसलें उत्पन्न होने पर भी नष्ट हो जाएँ या सूख जाती हैं—**"पापग्रहयोः सूर्यःसस्यं विनाशयत्पलिगः।"** २९ ता. को मंगल पुनर्वसु में आने से रूई, चाँदी, खाद्य तेल, सरसों में तेजी होगी। २ जून को बुध वृष राशि में आने से गेहूँ, चने, धान्य, रूई, खाद्य तेलों, कपास, खल-बिनौलों में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। **आकाश लक्षण**—पक्ष में गर्मी एवं लू का प्रकोप बढ़ेगा। उत्तरार्ध भाग में तेज़ गर्म हवाओं के साथ कहीं बौछारें पड़ने के योग हैं। **शकुन**—ज्ये. शुक्ल सप्तमी को बादल चाल व खण्डवृष्टि हो, तो गेहूँ, लाख, चावल आदि का संग्रह करने से अच्छा लाभ मिलने के संकेत हैं।

वि. संवत् २०६१, आषाढ़ कृष्ण पक्ष शाकः १९२६ — सन् 2004 ई. (ता. 4 जून से 17 जून तक)

सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोलार्द्ध, ग्रीष्म ऋतु

भा. स्टैं. टा.

ग्रह दर्शन—४ जून से शुक्र पश्चिमास्त होकर १३ जून से प्रातः पूर्व में उदित, ७ जून से बुध पूर्व में अस्त, सायं गुरु याम्योत्तासन्न, शनि–मंग. पश्चिम में दृश्य।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें रा. शाके	मुस्लिम	जून	ज्येष्ठ	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३४/५८	१	शुक्र	१	२०	मूला	४६	४८	साध्य शुभ	७ ५७	३८ १०	कौ	१	२०	१४	१५	4	२२	धनु	आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रा., **शुक्रास्त पश्चिमे २७/३५**, गण्डमूलादि, A	१	१९	४७	५०	५	२७	१९	२६
अवम्	२	शुक्र	५१	५५	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	द्वितीया तिथि का क्षय B३३/३८, **बुधास्त पूर्वे** ५६/०८, स.सि. योग	०	०	०	०	०	०	०	०
३४/५९	३	शनि	४३	०३	पूषा	३९	५५	शुक्ल	४७	१८	व	१७	२९	१५	१६	5	२३	म. ५३/२३	भद्रा १७/२९ से ४३/०३ तक, A ऋषभनाथ जयंती (जैन)	१	२०	४५	१५	५	२७	१९	२६
३५/००	४	रवि	३५	१०	उषा	३४	०५	ब्रह्म	३८	१५	ब	९	०७	१६	१७	6	२४	मकर	**श्री गणेश चतुर्थी व्रत** (चन्द्रोदय रात्रि 23/11), स. सि. योगः	१	२१	४२	३९	५	२७	१९	२७
३५/०१	५	चंद्र	२८	४३	श्रव	२९	३५	ऐंद्र	३०	२०	कौ	१	५७	१७	१८	7	२५	कुं. ५७/५८	**पंचकारम्भ** ५७/५८, सूर्य मृगे १ में ४१/४५, बुध रोह. में B	१	२२	४०	०२	५	२७	१९	२७
३५/०३	६	मंग	२३	५५	धनि	२६	४८	वैधृ	२३	५५	व	२३	५५	१८	१९	8	२६	कुम्भ	भद्रा २३/५५ से ५२/२८ तक, गुरु पू.फा. २ में 5/05 घं. मिं.	१	२३	३७	२२	५	२६	१९	२७
३५/०५	७	बुध	२१	००	शत	२५	५३	विष्क	१८	५५	ब	२१	००	१९	२०	9	२७	कुम्भ	वक्री शुक्र रोहिणी (४) में २३/१०	१	२४	३४	४४	५	२६	१९	२८
३५/०६	८	गुरु	२०	०३	पूभा	२६	५३	प्रीति	१५	३३	कौ	२०	०३	२०	२१	10	२८	मी. ११/२८	यूरेनस वक्री 21/19 घं. मिं.	१	२५	३२	०६	५	२६	१९	२८
३५/०७	९	शुक्र	२१	००	उभा	२९	४८	आयु	१३	४३	ग	२१	००	२१	२२	11	२९	मीन	भद्रा ५२/२० से प्रारम्भ	१	२६	२९	२७	५	२६	१९	२९
३५/०८	१०	शनि	२३	४०	रेव	३४	१८	सौभा	१३	१३	वि	२३	४०	२२	२३	12	३०	मे. ३४/१८	भद्रा २३/४० तक, **पंचक समाप्त** (19/09 घं. मिं.)	१	२७	२६	४८	५	२६	१९	२९
३५/०८	११	रवि	२७	४८	अश्वि	४०	१०	शोभ	१३	५३	बा	२७	४८	२३	२४	13	३१	मेष	**योगिनी एकादशी** व्रत, मृगे १ बुध ५९/५५, **शुक्र पूर्व से उदित** C	१	२८	२४	०९	५	२६	१९	२९
३५/१०	१२	चंद्र	३२	५८	भर	४६	५८	अति	१५	२८	कौ	०	२३	२४	२५	14	आ.	मेष	**सूर्य मिथुन** में ४०/२०, **आषा. संक्रां.** १५ मुहू., **मंगल कर्क** में D	१	२९	२१	२९	५	२६	१९	३०
३५/१०	१३	मंग	३८	४८	कृति	५४	२०	सुक	१७	३५	ग	५	५३	२५	२६	15	२	वृ. ३/४५	भद्रा ३८/४८ से, **भौम प्रदोष व्रत**, स. सि. योगः	१	००	१८	४८	५	२६	१९	३०
३५/११	१४	बुध	४५	००	रोहि	६०	००	धृति	२०	०८	वि	११	५४	२६	२७	16	३	वृष	भ. ११/५४ तक, सर्वार्थ सिद्ध योगः	१	०१	१६	०७	५	२६	१९	३०
३५/११	३०	गुरु	५१	१८	रोहि	२	०३	शूल	२२	४५	च	१८	०९	२७	२८	17	४	मि. ३५/५३	**आषाढ़ी अमावस स्नान दान** आदि, बुध मिथुन में ३/३०	१	०२	१३	२६	५	२६	१९	३०

शुक्रोदय पूर्वे 13 जून

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 10 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	२	१	४	१	२	०	६
२५	२७	२७	१४	१६	२२	१९	१५	१५
३२	३२	२०	५४	५१	५६	१५	१५	१५
१६	४२	४१	३०	४६	५२	२८	५०	५०
५७ २१	७७३ २६	३७ ४९	१२४ ४	६ ३	३७ ६	७ २२	३ ११	३ ११
मृग १	पूभा ३	पुन ३	रोहि २	पूफा २	रोहि ४	आर्द्रा ४	भर. १	स्वा ३
०	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

म. ३ श. | २ सू. बु. शु. | १ रा. | ४ | १२ | ५ गु. | ११ चं. | ६ | ८ | १० | ७ के. | ९

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 17 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	१	३	१	४	१	२	०	६
०२	२२	०१	२९	१७	१८	२०	१४	१४
१३	५८	४५	५२	३७	५८	०७	५३	५३
३६	१६	२२	४०	००	२४	४०	३५	३५
५७ १७	७०१ १५	३७ ४८	१३१ ४५	७ १	२८ १५	७ ३३	३ ११	३ ११
मृग ३	रोहि ४	पुन ४	मृग २	पूफा २	रोहि ३	पुन १	भर. १	स्वा. ३
०	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30 बजे

४ मं. | ३ सू. श. | च. २ बु. शु. | १ रा. | ५ गु. | ६ | १२ | ७ के. | ९ | ११ | ८ | १०

C २/२७, स. सि. योगः D 12/57, पुण्य संक्रांति दुपै. बाद

आषाढ़ कृष्ण पक्षफल—आषाढ़ मास में **भगवान् श्री विष्णु** की प्रसन्नता के लिए ब्रह्मचारी रहते हुए स्नानोपरान्त नित्यप्रति श्री सहित विष्णु पूजार्चना के बाद ब्राह्मण दम्पत्ति को क्षीर सहित भोजन करवाना तथा यथाशक्ति छाता, जूते, आँवले, आम, खरबूजे, घड़ा (पात्र) वस्त्र, मिष्ठान्न का दान करना तथा स्वयं भी एक समय भोजन करने से विशेष पुण्य फलों की प्राप्ति होती है। **स्वास्थ्य**—आषाढ़ मास में स्वयं को (विशेषकर सिर को) धूप व गर्मी से बचाना चाहिए। इस मास में सादा भोजन, मौसमी फलों एवं शीतल जल का सेवन करना स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद होता है।

लोक भविष्य—इस पक्ष में सूर्य मिथुन राशि में आकर शनि के साथ योग करेगा। १४ जून से **कालसर्प** योग का भी प्रभाव रहेगा। इसी दिन मंगल कर्क (नीच) राशि में प्रविष्ट होगा। फलस्वरूप देश का राजनीतिक वातावरण अत्यन्त क्लिष्ट एवं पेचीदा समस्याओं से परिपूर्ण होगा। राजनीतिक दलों में परस्पर विरोध एवं टकराव पैदा होंगे। केन्द्रिय मन्त्री मण्डल के प्रमुख नेता के लिए यह अवधि अरिष्टकर रहेगी। कुछ प्रदेशों में राजनैतिक गतिरोध पैदा होगा। पूर्वी प्रान्तों में सीमाओं पर घुसपैठ एवं सैनिक टकराव होंगे। अत्यधिक महँगाई के कारण लोगों में क्षोभ एवं असंतोष व्याप्त होगा। **व्यापारिक रूख**—पक्षारम्भ में शुक्र वृष राशि में अस्त हो रहा है, जिससे रूई, सूत, कपास, घी, तैल, अलसी, अरण्डी में मन्दी, परन्तु चाँदी में तेजी होगी। ता. ७ को बुध भी इस राशि में अस्त होने से सोना, चाँदी, उड़द, मूँग, मोठ आदि में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। ता. १४ को आषाढ़ संक्रान्ति १५ मुहूर्ति है। जिससे बारदाना, रूई,कपास, चीनी, उड़द, चावल एवं सोने-चाँदी में तेजी होगी। १४ ता. से ही मंगल कर्क (नीच) राशि में आने से गेहूँ, गुड़, शक्कर, चीनी, खल-बिनौले, गाय-भैंस आदि चौपायों में तेजी के योग बनेंगे। ता. १७ को बुध मिथुन राशि में सोना, चाँदी, रूई, कपास, वनस्पति, तेलों, पशुचारा एवं शेयरों तथा वायदा बाज़ार में तेजीकारक होगा। **आकाश लक्षण**—पक्ष में उत्तर-पश्चिमी भागों में तीव्र हवाओं के साथ रुक-रुक कर वर्षा होगी। अभी मंगल सूर्य से अग्रगामी होने से विपुल वर्षा में बाधक होगा। **शकुन**—यदि आषाढ़ प्रतिपदा को बादल गर्जे एवं वर्षा हो, तो आगामी तीन महीनों में अनाज में विशेष तेजी के संकेत हैं।

वि. संवत् २०६१, आषाढ़ शुक्ल पक्ष शाकः १९२६														तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	सन् 2004 ई. (ता. 18 जून से 2 जुलाई तक) सूर्य उत्तरायणे, उत्तरगोलार्द्धे, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु					जालन्धर भा. स्टैं. टा.			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	सौर ज्ये.	हि. मु.	जून	आषाढ़		ग्रह दर्शन–३० जून से बुध पश्चिम से उदित, २० जून से शनि पश्चिमास्त, सायं मंगल पश्चिम में, गुरु याम्योतर से कुछ पश्चिम की ओर, शुक्र प्रातः पूर्व में दृश्य होगा।	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३५/१२	१	शुक्र	५७	२३	मृग	९	४०	गंड	२५	२०	किं	२४	२१	२८	२९	18	५	मिथुन	**आषाढ़ शुक्ल पक्षारम्भः** **A शन्यस्तं पश्चिम** 14/30 घं.	२	०३	१०	४३	५	२६	१९	३१
३५/१२	२	शनि	६०	००	आर्द्रा	१६	४०	वृद्धि	२७	३८	बा	२८	४२	२९	३०	19	६	मिथुन	**चंद्रदर्शन ४५ मु., रथ यात्रा (पुरी),** मंगल पुष्य में ३०/१७	२	०४	०८	०४	५	२७	१९	३२
३५/१२	२	रवि	३	०५	पुर्न	२४	०५	ध्रुव	२९	३८	कौ	३	०५	३०	जमा	20	७	क. ७/२३	**रथ यात्रा (पुरी),** १, जमादिलावल (मु.), बुध आर्द्रा में ५/४० **A**	२	०५	०५	२०	५	२७	१९	३२
३५/१२	३	चंद्र	८	१०	पुष्य	३०	२८	व्या.	३१	०८	ग	८	१०	३१	२	21	८	कर्क	भद्रा ४०/२० से, **सूर्य आर्द्रा में** 21/08 घं. मिं., सायन दक्षिणायन **B**	२	०६	०२	३७	५	२७	१९	३२
३५/१२	४	मंग	१२	३०	श्ले.	३६	००	हर्ष	३१	५५	वि	१२	३०	आ.	३	22	९	सिं. ३६/००	भद्रा १२/३० तक, शाकः आषाढ़ प्रा., गंडमूल, स. सि. योगः	२	०६	५९	५२	५	२७	१९	३२
३५/१२	५	बुध	१५	४८	मघा	४०	२८	वज्र	३१	५०	बा	१५	४८	२	४	23	१०	सिंह	**स्कन्द षष्ठी,** गण्डमूलादि, **कुमार षष्ठी**	२	०७	५७	०८	५	२७	१९	३२
३५/११	६	गुरु	१७	४५	पूफा	४३	३०	सिद्धि	३०	४३	तै	१७	४५	३	५	24	११	कं. ५९/०३	**विवस्वत सप्तमी** (षष्ठी विद्धा)	२	०८	५४	२४	५	२८	१९	३२
३५/११	७	शुक्र	१८	१८	उफा	४५	०५	व्य.	२८	२५	व	१८	१८	४	६	25	१२	कन्या	भद्रा १८/१८ से ४७/४२ तक, **+** 6/27 घं. मिं., वर्षा ऋतुः प्रा.	२	०९	५१	३९	५	२८	१९	३२
३५/१०	८	शनि	१७	०५	हस्त	४४	५८	वरी	२४	४५	ब	१७	०५	५	७	26	१३	कन्या	बुध पुनर्वसु में १९/२७, **श्री दुर्गाष्टमी**	२	१०	४८	५५	५	२९	१९	३३
३५/१०	९	रवि	१४	१३	चित्रा	४३	०५	परि	१९	४०	कौ	१४	१३	६	८	27	१४	तु. १४/१३	**भढली नवमी, मेला शरीक भवानी** (कश्मीर)	२	११	४६	०८	५	२९	१९	३३
३५/१०	१०	चंद्र	९	३५	स्वा.	३९	३३	शिव	१३	१३	ग	९	३५	७	९	28	१५	तुला	भद्रा ३६/२८ से प्रारंभ **B** प्रा., सायन सूर्य कर्क में **+**	२	१२	४३	२०	५	२९	१९	३३
३५/०९	११	मंग	३	२०	विशा	३४	३३	सिद्ध साध्य	५ ५६	२८ ३३	वि	३	२०	८	१०	29	१६	वृ. २०/५३	भद्रा ३/२० तक, **देवशयनी एकादशी, चातुर्मास व्रतादि प्रारंभ**	२	१३	४०	३२	५	२९	१९	३३
००	१२	मंग	५५	४३	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	**द्वादशी तिथि का क्षय** ०० **C** घं. मिं.), स. सि. योगः	०	०	०	०	०	०	०	०
३५/०८	१३	बुध	४६	५८	अनु	२८	१३	शुभ	४६	४०	कौ	२१	२१	९	११	30	१७	वृश्चिक	प्रदोष व्रत, **बुधोदयः पश्चिमे (15/48), शुक्र मार्गी 4/48 C**	२	१४	३७	४४	५	३०	१९	३३
३५/०८	१४	गुरु	३७	३५	ज्ये.	२१	०८	शुक्ल	३६	१५	ग	१२	१७	१०	१२	जुला	१८	ध. २१/०८	भ. ३७/३५ से प्रा., **बुध कर्क में २०/४३,** गंडमूलादि, ता. १ जुला	२	१५	३४	५६	५	३०	१९	३३
३५/०७	१५	शुक्र	२७	५३	मूला	१३	३३	ब्रह्म	२५	३५	वि	०२	४४	११	१३	2	१९	धनु	भ. २/४४ तक, **आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, ब्यास पूजा, D**	२	१६	३२	०९	५	३०	१९	३३

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 26 जून शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 2 जुलाई **D वायु परीक्षा,** गण्डमूल, चातुर्मास्य व्रतारम्भ (मतान्तरे), कोकिला व्रत, शिवशयनोत्सव

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	३	२	४	१	२	०	६
१०	१३	०७	१९	१८	१६	२१	१४	१४
४८	१८	२५	१९	४४	०१	१६	२४	२४
५७	१६	३३	४०	३७	०३	२२	५८	५८
५७ १३	८०७ २२	३७ ४७	१२३ ४९	८ ७	८ १२	७ ४३	३ ११	३ ११
आर्द्रा	हस्त	पुष्य	आर्द्रा	पूफा	रोहि	पुर्न	भर.	स्वा
२	१	२	४	२	२	१	१	३
०	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

४ मं., २ शु., ३ सू. बु. श., १ रा., ५ गु., ६ चं., १२, ७ के., ९, ११, ८, १०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	३	३	४	१	२	०	६
१६	०९	११	०१	१९	१५	२२	१४	१४
३२	५३	१२	१४	३५	४७	०२	०५	०५
०७	०८	१४	५५	०१	१४	४७	५४	५४
५७ १०	९१५ ४	३७ ४७	१२३ २३	८ ४७	५ ४५	७ ४६	३ ११	३ ११
आर्द्रा	मूला	पुष्य	पुर्न	पूफा	रोहि	पुर्न	भर.	स्वा.
३	३	३	४	२	२	१	१	३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30 बजे

मं. ४ बु., २ शु., ३ सू. श., १ रा., ५ गु., ६, १२, ७ के., ९ चं., ११, ८, १०

आषाढ़ शुक्ल पक्षफल—द्वितीया (१९ जून) को भगवान् **श्री जगन्नाथ** की रथयात्रा का उत्सव पुरी (उड़ीसा) में बड़े हर्षोल्लास एवं श्रद्धा से मनाया जाता है। **हरिशयनी** अर्थात् **देवशयनी एकादशी** से चातुर्मास्य व्रत, नियमों आदि का पालन करते हुए का. शु. ११ तक चार मासों में जप-तप, ध्यान, प्रभुचिंतन करने का विधान है। इन चार महीनों में पराए अन्न एवं भोज्य पदार्थ का त्याग रखे। गुरू पूर्णिमा (२ जुला.) को ब्रह्मा, व्यास, शुकदेव, शंकराचार्य आदि ऋषियों का आवाहनादि पूजन करके अपने दीक्षा गुरु तथा (पिता, पितामह, भ्राता आदि) का देवतुल्य पुष्पफल, मिष्ठान्न, वस्त्रादि से पूजन व सम्मानित करना चाहिए।

लोक भविष्य—पक्षारम्भ से २७ जून तक सभी ग्रह कालसर्प योग के प्रभाव में होंगे। इस अवधि में देश का सामाजिक एवं राजनैतिक वातावरण विक्षुब्ध रहेगा। कुछ प्रदेशों में राजनीतिक अस्थिरता एवं गतिरोध पैदा होगा। भाजपा, कांग्रेस आदि कुछ प्रमुख पार्टियों के साथ कुछ नए समीकरण बनेंगे। अधिकांशतः लोग अनैतिक कार्यों में प्रवृत्त होंगे। **व्यापारिक रूख**—द्वितीया को **चन्द्रदर्शन** शनिवार को होगा, इसी दिन मंगल पुष्य नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। जिससे रूई, कपास, वस्त्र, गेहूँ, धान्य, सरसों, मूंगफली, दूध एवं दुग्ध पदार्थ, सोना, चाँदी में तेजी का वातावरण रहेगा। ता. २१ को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में सोमवार को प्रवेश होने से रूई, कपास, खल-बिनौले, अलसी, एरण्डी, गेहूँ, चावल, चने, सोना व चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। २६ को बुध पुनर्वसु में आकर रुई, कपास व चाँदी में मन्दी का रुख होगा। ३० ता. से **शुक्र मार्गी** होकर भी मन्दीकारक होगा। १ जुला. को बुध कर्क राशि में आने से चाँदी व सोने में तेजी होगी। परन्तु २ ता. से थोक व वायदा बाज़ार में अस्थिरता एवं मन्दी का माहौल होगा। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में भारत के पूर्वी, दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्रों में मानसून की वर्षा का प्रारंभ हो जाएगा। **शकुन**—आ. शु. ५ को बादल चाल एवं इन्द्रधनुष दिखाई दे तो अनाज के संग्रह से कार्तिक में विशेष लाभ मिले।

वि. संवत् २०६१, प्रथम (शुद्ध) श्रावण कृष्ण पक्ष शाकः १९२६ — सन् 2004 ई. (ता. 3 जुला. से 17 जुलाई तक) — जालन्धर

सूर्य दक्षिणायने, उत्तर गोलार्द्ध, वर्षा ऋतुः — भा. स्टैं. टा.

ग्रह लोपदर्शन—शुक्र प्रातः पूर्व में दृश्य होगा, सायं बुध, मंगल, गुरु पश्चिमी कपाल में दृश्य, शनि अभी अस्तंगत है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें आषा. श्राव	तारीखें जुला. मु.	तारीखें जुलाई	तारीखें आषाढ़	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	विवरण	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ह. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३५/०५	१	शनि	१८	२०	पूषा उषा	६ ५९	०० ०३	ऐंद्र	१५	००	कौ	१८	२०	१२	१४	3	२०	म. १९/१३	**शुद्ध श्रावण कृष्ण पक्षारम्भ**, बुध पुष्य में ६/५०, श्रावण में **A**	२	१७	२९	१९	५	३१	१९	३३
३५/०३	२	रवि	९	२८	श्रव	५३	०५	वैधृ विष्क	४ ५५	५८ ५०	ग	९	२८	१३	१५	4	२१	मकर	भद्रा ३५/३२ से, गुरु पूफा (३) में ४८/४५	२	१८	२६	२९	५	३१	१९	३३
३५/०३	३	चंद्र	१	३५	धनि	४८	३०	प्रीति	४७	५०	वि	१	३५	१४	१६	5	२२	कुं. २०/३३	भद्रा १/३५ तक, पंचकारम्भ २०/३३, **गणेश चतुर्थी व्रत**, **B**	२	१९	२३	४३	५	३२	१९	३३
००	४	चंद्र	५५	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३५/०२	५	मंग	५०	५०	शत	४५	४५	आयु	४१	२३	कौ	२३	०४	१५	१७	6	२३	कुम्भ	नागपंचमी (राजस्थाने)	२	२०	२०	५६	५	३२	१९	३३
३५/००	६	बुध	४८	२३	पूभा	४५	०३	सौभा	३६	३३	ग	१९	३७	१६	१८	7	२४	मी. ३०/००	भद्रा ४८/२३ से प्रारम्भ **B** सूर्य पुनर्वसु में ३८/०३	२	२१	१८	१०	५	३३	१९	३३
३४/५८	७	गुरु	४८	०५	उभा	४६	२५	शोभ	३३	२५	वि	१८	१४	१७	१९	8	२५	मीन	भद्रा १८/१४ तक,	२	२२	१५	२०	५	३४	१९	३२
३४/५५	८	शुक्र	४९	५५	रेव	४९	५५	अति	३२	००	बा	१९	००	१८	२०	9	२६	मे. ४९/५५	पंचक समा. ४९/५५ (25/32 घं. मिं.), गण्डमूलादि	२	२३	१२	३२	५	३४	१९	३२
३४/५४	९	शनि	५३	३३	अश्वि	५५	०८	सुक	३२	०५	तै	२१	४४	१९	२१	10	२७	मेष	मंगल आश्लेषा में ४०/१७, बुध आश्ले. में ५१/५५	२	२४	०९	४६	५	३४	१९	३२
३४/५३	१०	रवि	५८	३०	भर	६०	००	धृति	३३	२०	व	२६	०२	२०	२२	11	२८	मेष	भद्रा २६/०२ से ५८/३० तक, शनि पुर्न. (२) में ५५/१०	२	२५	०७	०१	५	३५	१९	३२
३४/५०	११	चंद्र	६०	००	भर	१	३५	शूल	३५	२३	ब	२९	१५	२१	२३	12	२९	वृ. १८/२३	**A** प्रति सोमवार शिव पूजन का विशेष विधान है, अशून्यशयन व्रत.	२	२६	०४	१५	५	३६	१९	३१
३४/४८	११	मंग	४	२३	कृति	९	००	गंड	३७	५८	बा	४	२३	२२	२४	13	३०	वृष	कामिका एकादशी व्रत, स. सि. योगः	२	२७	०१	३१	५	३६	१९	३१
३४/४५	१२	बुध	१०	४०	रोहि	१६	४०	वृद्धि	४०	३८	तै	१०	४०	२३	२५	14	३१	मि. ५०/३३	प्रदोष व्रत, स. सि. योगः	२	२७	५८	४८	५	३७	१९	३१
३४/४३	१३	गुरु	१६	५८	मृग	२४	२३	ध्रुव	४३	१०	व	१६	५८	२४	२६	15	३२	मिथुन	भद्रा १६/५८ से ४९/५४ तक,	२	२८	५६	०२	५	३७	१९	३०
३४/४०	१४	शुक्र	२२	५०	आर्द्रा	३१	३८	व्या.	४५	२०	श	२२	५०	२५	२७	16	श्राव	मिथुन	सूर्य कर्क में ७/०३, श्रावण संक्रांति १५ मुहू. पुण्य उषाकाल से. **C**	२	२९	५३	१७	५	३८	१९	३०
३४/३८	३०	शनि	२८	१०	पुर्न	३८	२०	हर्ष	४७	००	ना	२८	१०	२६	२८	17	२	क. २१/४३	शनिवासरी हरियाली अमावस, स्नानदानादि	३	००	५९	३५	५	३८	१९	२९

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 9 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	३	३	४	१	२	०	६
२३	१९	१५	१३	२०	१७	२२	१३	१३
१२	३१	३६	३८	३८	११	५७	४३	४३
२३	१६	४२	४०	४०	३४	१३	३८	३८
५७ १४	७५२ ०६	३७ ४८	९८ २	९ २९	१९ ५५	७ ४८	३ १०	३ १०
पुर्न	स्व.	पुष्य	पुष्य	पूफा	रोहि	पुर्न	भर.	स्वा
१	१	४	४	३	३	१	१	३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

४ मं. बु.
२ शु.
५ गु.
३ सू. श.
१ रा.
६
१२ चं.
७ के.
९
११
८
१०

शनौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 17 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	२	३	३	४	१	२	०	६
००	२५	२०	२५	२१	२०	२३	१३	१३
५०	३४	३९	४४	५७	३७	५९	१८	१८
१६	२५	११	५०	१३	१८	२७	१२	१२
५७ १५	७२३ ११	३७ ४९	८१ ११	१० १३	३२ २८	७ ४५	३ ११	३ ११
पुर्न	पुर्न	श्ले.	अश्वि	पूफा	रोहि	पुर्न	अश्वि	स्वा.
४	२	२	३	३	४	२	४	२
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30 बजे

५ गु.
३ चं. श.
६
४ सू. मं. बु.
२ शु.
७ के.
१ रा.
१०
८
१२
९
११

C राहु अश्वि (४) केतु स्वा. (२) में २५/३७

प्र. श्रावण कृष्ण पक्षफल—श्रावण मास में प्रतिदिन अथवा प्रति सोमवार को **भगवान् शिव-पार्वती** की पूजा बिल्वपत्र, दूध, दही, ताण्डुल, चीनी, पुष्प आदि सहित विधिपूर्वक करने से सर्व प्रकार की कामनाओं की पूर्ति होती है। **कामिका एकादशी** (13 जुला.) को उपवास करके श्रीकृष्ण का तुलसीदल व मंजरी सहित पूजन करें। घी का दीपक प्रज्वलित करके यथाशक्ति दान करे, तो अनन्त फल होता है। इसी मास के प्रत्येक मंगलवार **को मंगलागौरी का व्रत एवं** पूजनादि करने से स्त्रियों को गृहस्थ सुख प्राप्ति एवं उनके सौभाग्य में वृद्धि होती है। **लोक भविष्य**—श्रावण मास में पाँच शनिवारों का समावेश हो रहा है। जिससे कहीं भूकम्प, बादल, विस्फोट, यानादि दुर्घटना अथवा अग्निकाण्ड, बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोपों से भारी जन-धन हानि होने का भय है। भारत-पाक आदि देशों में आतंकवादी, विस्फोटक एवं हिंसक घटनाओं से भारी रक्तपात एवं जन/धन की क्षति होने का भय है। आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में अत्यधिक वृद्धि से लोगों में आक्रोश की भावना व्याप्त होगी। पक्ष के उत्तरार्ध भाग में राहु-केतु के मध्य सभी ग्रहों का संचार होने से **कालसर्प** योग का भी प्रभाव होगा। कहीं सत्ता परिवर्तन, उपद्रव व टकराव पैदा होंगे। **व्यापारिक रूख**—३ जुला. को बुध पुष्य नक्षत्र में आकर चाँदी में मन्दा तथा रूई, कपास, गुड़, चीनी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी का रूख करेगा। ५ जुला. को सूर्य पुनर्वसु में खल-बिनौला, अरण्डी, अलसी, सुपारी, मजीठ, गुग्गल, सोना-चाँदी आदि में तेजी करेगा। १६ ता. को **श्रावण संक्रान्ति** १५ मुहूर्ति है, वायदा बाज़ार में विशेष तेजी के संकेत हैं। रूई, सूत, फल, गुड़, शक्कर, तिल, सरसों, चने, उड़द, मूंग, धान्य, तेज भाव होंगे। ता. १७ को **शनिवारी अमावस** रूई, कपास, पटसन में घटाबढ़ी के बाद तेजी तथा अनाज, गुड़, चीनी, चाँदी व सुवर्ण में तेजीकारक होगी। परन्तु कालसर्प योग के कारण मार्कीट में बहुत अधिक तेजी की आशा न करें।

संक्रान्ति राशिफल—मेष, वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, धन, मकर व कुम्भ राशि वालों को इस संक्रान्ति का फल शुभ एवं लाभप्रद रहेगा, जबकि अन्य राशि वालों को संघर्षपूर्ण फल होगा।

आकाश लक्षण—भारत के उत्तर, पूर्वी, दक्षिण पश्चिम एवं पहाड़ी क्षेत्रों में रुक-रुक कर व्यापक वर्षा के योग हैं। **शकुन**—हरियाली अमा. को बूंदा-बाँदी होना आगामी अच्छी फसल होने के संकेत होंगे।

वि. संवत् २०६१	प्रथम (अधि.) श्रावण शुक्ल पक्ष							शाकः १९२६						तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2004 ई. (ता. 18 से 31 जुलाई तक) सूर्य दक्षिणायने, उत्तर गोलार्द्ध, वर्षा ऋतु					जालन्धर भा. स्टैं. टा.			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	आषा. शुक्ल	जमा मु.	जुलाई	श्रावण	प्रवेश घटी पल	ग्रह लोपदर्शन—शुक्र प्रातः पूर्व में दृश्य, ता. 26 से शनि भी पूर्व में दृश्य मंगल २४ जुला. से अस्त, सायं बुध–गुरू पश्चिम में दृश्य होंगे।	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३४/३५	१	रवि	३२	४५	पुष्य	४४	१८	वज्र	४८	०५	किं	०	२८	२७	२९	18	३	कर्क	**श्रावण अधिक (पुरूषोत्तम) मासारम्भः, चन्द्रदर्शन** मुहू. ३० **A**	३	०१	४७	५०	५	३९	१९	२९
३४/३४	२	चंद्र	३६	३३	श्ले.	४९	३०	सिद्धि	४८	३५	बा	४	३९	२८	जमा	19	४	सिं. ४९/३०	सूर्य पुष्य में ३६/२८, जमादिउल्सानी १ मु., गण्डमूल	३	०२	४५	०९	५	३९	१९	२९
३४/३३	३	मंग	३९	२५	मघा	५३	४८	व्य.	४८	२०	तै	७	५९	२९	२	20	५	सिंह	**बुध मघा १ सिंह राशि में १४/२५,** गण्डमूलादि	३	०३	४२	२८	५	४०	१९	२९
३४/३०	४	बुध	४१	२०	पूफा	५७	०८	वरी	४७	२०	व	१०	१८	३०	३	21	६	सिंह	भद्रा १०/२३ से ४१/२० तक, शुक्र मृगशिर में ३९/५७	३	०४	३९	४७	५	४०	१९	२८
३४/२८	५	गुरु	४२	०८	उफा	५९	२०	परि	४५	२५	ब	११	४४	३१	४	22	७	कं. १२/४५	सायन सूर्य सिंह में 17/20 घंटे मिंट	३	०५	३७	०७	५	४१	१९	२८
३४/२३	६	शुक्र	४१	४३	हस्त	६०	००	शिव	४२	३०	कौ	११	५६	श्रा.	५	23	८	कन्या	**शाकः श्रावण प्रारंभः**	३	०६	३४	२३	५	४२	१९	२७
३४/२०	७	शनि	३९	५८	हस्त चित्रा	० ५९	१८ ५८	सिद्ध	३८	३५	ग	१०	५१	२	६	24	९	तु. ३०/१८	भ. ३९/५८ से, गुरु पू.फा. (४) में ५२/२०, **भौमास्त पश्चिमे १८/४०**	३	०७	३१	४५	५	४२	१९	२६
३४/१५	८	रवि	३६	४५	स्वा.	५८	०८	साध्य	३३	२८	वि	८	२२	३	७	25	१०	तुला	भद्रा ८/२२ तक,	३	०८	२९	०६	५	४३	१९	२५
३४/१३	९	चंद्र	३२	१०	विशा	५४	५५	शुभ	२७	१५	बा	४	२८	४	८	26	११	बृ. ४०/५०	**शन्योदयः पूर्व दिशायां 8/45 घं. मिं.**	३	०९	२६	२४	५	४३	१९	२४
३४/१०	१०	मंग	२६	१०	अनु.	५०	२३	शुक्ल	१९	५०	ग	२६	१०	५	९	27	१२	बृश्चिक	भद्रा ५२/३४ से प्रारम्भ	३	१०	२३	४६	५	४४	१९	२४
३४/०५	११	बुध	१८	५८	ज्ये.	४४	४५	ब्रह्म	११	२५	वि	१८	५८	६	१०	28	१३	ध. ४४/४५	भद्रा १८/५८ तक, **पुरूषोत्तमा एकादशी व्रत, गंडमूलादि**	३	११	२१	०८	५	४५	१९	२३
३४/०३	१२	गुरु	१०	५०	मूला	३८	२०	ऐंद्र वैधृ	२ ५२	१० २५	बा	१०	५०	७	११	29	१४	धनु	**प्रदोष व्रत,** गण्डमूलादि	३	१२	१८	३१	५	४६	१९	२३
३४/००	१३	शुक्र	२	१०	पूषा	३१	३३	विष्क	४२	२५	तै	२	१०	८	१२	30	१५	म ४४/५०	भद्रा ५३/१५ से प्रारम्भ	३	१३	१५	५१	५	४६	१९	२२
००	१४	शुक्र	५३	१५	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३३/५५	१५	शनि	४४	३३	उषा.	२४	४५	प्रीति	३२	२८	वि	१८	५४	९	१३	31	१६	मकर	भद्रा १८/५४ तक, **व्रत पूर्णिमा, शुक्र मिथुन में ४/५०, मघा १ B**	३	१४	१३	१४	५	४७	१९	२१

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 25 जुलाई — शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 31 जुलाई — **A** स. सि. योगः — **B मंगल सिंह में ४८/००**

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	३	४	४	१	२	०	६
०८	०६	२५	०५	२३	२५	२५	१२	१२
२८	३४	४१	२८	२१	३१	०१	५२	५२
३५	१२	५८	४३	१६	२०	०७	४६	४६
५७ १८	८२४ ३६	३७ ५२	६१ ३५	१० ५१	४१ ४३	६ ५९	३ ११	३ ११
पुष्य २	चित्रा ४	श्ले. ३	मघा २	पूफा ४	मृग १	पुन २	अश्वि ४	स्वा २
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

बु. ५ गु.
४ सू. मं.
३ श.
२ शु.
६
७ चं. के.
१ रा.
१०
८
९
११
१२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	३	४	४	१	२	०	६
१४	०३	२९	१०	२४	२९	२५	१२	१२
१२	३८	२९	५३	२७	५५	४६	३३	३३
३४	२२	१४	१२	२६	३९	४०	४०	४०
५७ २२	८९७ ३४	३७ ५४	४२ ३८	११ १६	४७ ६	७ ३१	३ ११	३ ११
पुष्य ४	उषा ३	श्ले. ४	मघा ४	पूफा ४	मृग २	पुन २	अश्वि ४	स्वा. २
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30 बजे

बु. ५ गु.
४ सू. मं.
३ श.
२ शु.
६
७ के.
१ रा.
१० चं.
८
९
११
१२

अधि. श्रावण शुक्ल पक्षफल—इस मास के दोनों पक्षों में संक्रान्ति का अभाव होने से श्रावण अधि (पुरुषोत्तम) मास हुआ है। इसकी व्याप्ति १८ जुला. से १६ अग. तक रहेगी। इस अवधि में विवाह, मुण्डन, देव प्रतिष्ठा, नवीन कार्यों का शुभारम्भ करना वर्जित माना जाता है। अधिमास आरम्भ होने पर प्रातः स्नानादि नित्यकर्म करके विष्णु रूप "**सहस्रांशु**" (हजार किरण वाले, श्री सूर्य नारायण का) पूजन करें। फिर विविध प्रकार के पकवान, घी, फल, मिष्ठान्न, गेहूँ, चावलादि अनाज, वस्त्र और तैंतीस अपूय (पूओं) को कांस्यपात्रों में रखकर दक्षिणा सहित दान करें तथा इस मन्त्रसे प्रार्थना करें—"**विष्णु रूपी सहस्राशुः सर्वपापप्रणाशनः अपूपान्नाप्रदाने मम पापं व्यपोहतु ॥**" मन्त्र से दान करे और पुनः प्राथना करें—"**यस्य हस्ते गदाचक्रे गरूडोयस्यवाहनम् । शंखः करतले यस्य स मे विष्णुः प्रसीदतु**" इस प्रकार मन्त्रपूर्वक दानादि करने से तीर्थ स्थान जैसा उत्तम फल प्राप्त होता है तथा धन-धान्य, स्त्री एवं पारिवारिक सुखों की प्राप्ति होती है। अधि. मास की एकादशी और पूर्णमाशी के व्रतों में भगवान् लक्ष्मी नारायण के मन्दिर में श्री सूक्त के मन्त्र **कूर्माय नमः, सहस्रशीर्षाय नमः** आदि मन्त्र पढ़ते हुए गन्धयुक्त पुष्प चढ़ाने से मनुष्य पर श्री लक्ष्मी जी की कृपा बनी रहती है। **व्यापारिक रुख**—ता. १८ को रविवार के दिन चन्द्रदर्शन होगा। रूई-कपास में घटाबढ़ी के बाद मन्दी हो, सोना, चाँदी, खल-बिनौला में तेजी होगी। ता. २० को बुध मघा एवं सिंह राशि में प्रविष्ट होकर गुरु के साथ मेल करेगा। रूई, कपास, सोना, चाँदी, चावल आदि में तेजी बनेगी। २४ ता. को मंगल पश्चिम में अस्त होने से सोना, ताँबा, गुड़, गेहूँ, चने, अलसी में तेजोकारक होगा। २६ ता. को शनि पूर्व से उदित होकर लोहा, सीसा, उड़द, काली मिर्च, लकड़ी आदि में तेजी करेगा। रूई, तेल, अलसी, विनौले, मूंगफली व अरण्डी में मन्दी होगी। **आकाश लक्षण**—पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में **कालसर्प** योग होने से उपयोगी वर्षा में कमी होगी। **दुर्भिक्षं श्रावणे युग्मे पृथ्वी नाशः प्रजा क्षयः ॥ श्रवणे अधि मास** का फल भी अशुभ ही कहा गया है। कहीं उपयोगी वर्षा की कमी से दुर्भिक्ष एवं प्राकृतिक प्रकोपों से जन, धन एवं सम्पदा की हानि तथा राजनैतिक अस्थिरता पैदा होगी।

वि. संवत् २०६१, द्वितीय (अधि.) श्रावण कृष्ण पक्ष शाकः १९२६

सन् 2004 ई. (ता. 1 से 16 अग. तक)

सूर्य दक्षिणायने, उत्तरगोलार्द्ध, वर्षा ऋतु

ग्रह लोपदर्शन—प्रातः शुक्र–शनि पूर्व से दृश्य, सायं बुध–गुरु पश्चिमी कपाल में दृश्य, मंगल अभी अस्तंगत होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें श्राव. शुक	तारीखें जमा. मु.	तारीखें अगस्त	तारीखें श्रावण	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३३/५३	१	रवि	३६	३०	श्रव	१८	२८	आयु	२३	०३	बा	१०	२९	१०	१४	1	१७	कुं. ४५/४०	द्वितीय अधि श्रावण पक्ष, पंचक शुरु 24/03 घं. मिं., ता. १ A	३	१५	१०	३६	५	४७	१९	२०
३३/५०	२	चंद्र	२९	३३	धनि	१३	०८	सौभा	१४	२३	तै	३	०२	११	१५	2	१८	कुम्भ	भ. ५६/४९ से. सूर्य आश्लेषा में ३३/२५ A अग., तिलक पुण्य तिथि	३	१६	०८	०२	५	४८	१९	१९
३३/४५	३	मंग	२४	०५	शत	९	१०	शोभ	६	५५	वि	२४	०५	१२	१६	3	१९	मी. ५२/२३	भद्रा २४/०५ तक, **श्री गणेश चतुर्थी व्रत,** बुध पूफा में ५७/३३	३	१७	०५	२९	५	४९	१९	१९
३३/४३	४	बुध	२०	३०	पूभा	७	०३	अति सुक	० ५६	५३ ३०	बा	२०	३०	१३	१७	4	२०	मीन		३	१८	०२	५४	५	४९	१९	१८
३३/४०	५	गुरु	१८	५८	उभा	६	५०	धृति	५३	४५	तै	१८	५८	१४	१८	5	२१	मीन	गण्डमूल 8/34 घं. मिं. उप., स. सि. योग: **B** स. सि. योग:	३	१९	००	२२	५	५०	१९	१८
३३/३८	६	शुक्र	१९	३५	रेव	८	५०	शूल	५२	४३	व	१९	३५	१५	१९	6	२२	मे. ८/५०	भ. १९/३५ से ५०/५४ तक, पंचक समाप्त ८/५०, गंडमूल, **B**	३	१९	५७	४९	५	५०	१९	१७
३३/३३	७	शनि	२२	१३	अश्वि	१२	४५	गंड	५३	०५	ब	२२	१३	१६	२०	7	२३	मेष	शनि पुनर्वसु (३) में ९/५३, गण्डमूल 10/57 घंटे तक	३	२०	५५	२२	५	५१	१९	१६
३३/२८	८	रवि	२६	३०	भर	१८	२०	वृद्धि	५४	३५	कौ	२६	३०	१७	२१	8	२४	वृ. ३४/५८	शुक्र आर्द्रा में ७/००, वक्री नैपच्यून श्रव. ३ में (16/30)	३	२१	५२	५४	५	५२	१९	१५
३३/२५	९	चंद्र	३२	०३	कृति	२५	१३	ध्रुव	५६	५०	ग	३२	०३	१८	२२	9	२५	वृष		३	२२	५०	२६	५	५२	१९	१४
३२/२०	१०	मंग	३८	१०	रोहि	३२	४३	व्या.	५९	२३	व	५	०७	१९	२३	10	२६	वृष	भद्रा ५/०७ से ३८/१० तक, बुध वक्री 5/59 घं. मिं.	३	२३	४८	०२	५	५३	१९	१३
३३/१५	११	बुध	४३	०८	मृग	४०	२०	हर्ष	६०	००	ब	१०	३९	२०	२४	11	२७	मि. ६/३०	**पुरूषोत्तमा एकादशी व्रत,** गुरू उ.फा. (१) में २५/५०, स. सि. यो.	३	२४	४५	३८	५	५४	१९	१२
३३/१२	१२	गुरु	५०	१३	आर्द्रा	४७	३५	हर्ष	१	५०	कौ	१६	४१	२१	२५	12	२८	मिथुन		३	२५	४३	१२	५	५४	१९	११
३३/०७	१३	शुक्र	५५	१५	पुर्न	५४	०८	वज्र	३	५३	ग	२२	४४	२२	२६	13	२९	क. ३७/३३	भद्रा ५५/१५ से प्रारंभ, **प्रदोष व्रतं,** स. सि. योग:	३	२६	४०	५०	५	५५	१९	१०
३३/०२	१४	शनि	५९	२३	पुष्य	५९	४५	सिद्धि	५	२३	वि	२७	१९	२३	२७	14	३०	कर्क	भद्रा २७/१९ तक, **C** मघा ४ में ४७/२३	३	२७	३८	२८	५	५५	१९	०८
३२/५७	३०	रवि	६०	००	श्ले.	६०	००	व्य.	६	०३	च	३०	५३	२४	२८	15	३१	कर्क	**अमावस, पितृादि कार्येषु, भारत स्वतंत्रता दिन,** वक्री बुध **C**	३	२८	३६	११	५	५६	१९	०७
३२/५३	३०	चंद्र	२	२३	श्ले.	४	१८	वरी	५	५५	ना	२	२३	२५	२९	16	भाद्र	सिं. ४/१८	**सोमवती अमावस, भाद्रपद संक्रांति** २७/०८, मुहू. ३०, **श्रावण D**	३	२९	३३	५५	५	५७	१९	०६

भा. स्टैं. टा.

D अधिक मास समाप्त, संक्रांति पुण्य 10/24 घं. मिं. उप.

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 8 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	४	४	४	२	२	०	६
२१	२२	०४	१४	२५	०६	२६	१२	१२
५२	४७	३२	४०	५९	३३	४६	०८	०८
०१	२१	४१	४०	१६	०४	०३	१३	१३
५७ ३२	७२१ ३३	३७ ५९	७ ५४	११ ४५	५२ ४३	७ १८	३ ११	३ ११
श्ले.	भर.	मघा	पूफा	पूफा	मृग	पुर्न	अश्वि	स्वा
२	३	२	१	४	४	३	४	२
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

मं. ५ गु. बु.
शु. श. ३
६ ४ सू. २
७ के.
१ चं. रा.
८ १० १२
९ ११

चन्द्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 16 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	४	४	४	२	२	०	६
२९	२८	०९	१३	२७	१३	२७	११	११
३२	५२	३६	१४	३४	५०	४३	४२	४२
५०	३९	५१	१५	४२	१४	२६	४६	४६
५७ ४२	७५३ ००	३८ ४	३४ ४४	१२ ८	५६ ५५	७ ००	३ ११	३ ११
श्ले.	श्ले.	मघा	मघा	उफा	आर्द्रा	पुर्न	अश्वि	स्वा.
४	४	३	४	१	३	३	४	२
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	अ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30 बजे

मं. ५ गु. बु.
शु. ३ श.
६ ४ सू. चं. २
७ के.
१ रा.
८ १० १२
९ ११

अधि. श्रावण कृष्ण पक्षफल—श्रावण अधि. मास अभी १६ अगस्त तक रहेगा। इस पक्ष में भी गत पक्ष की भान्ति मुण्डन, विवाह, देव प्रतिष्ठा, नवीन शुभ कार्यों का आरम्भ करना वर्जित होता है तथा गत पक्ष की भान्ति ही प्रतिदिन सूर्य भगवान् की पूजा तथा गेहूँ, धान्य, वस्त्र, मिष्ठान्न आदि का दान करना तथा पुरूषोत्तमा एकादशी तथा अमावस को व्रत रखकर भगवान् लक्ष्मी नारायण की सुगन्धित पुष्पों द्वारा पूजार्चन करना अत्यन्त पुण्यप्रदायक माना जाता है। **लोक भविष्य**—इस पक्ष में भी अभी कालसर्प योग का प्रभाव चल रहा है। इसके अतिरिक्त पक्ष में **पाँच रविवार** एवं पाँच सोमवार होने से शुभाशुभ दोनों प्रकार के फल घटित होंगे। **यत्र मासे रविवारा जायन्ते पंचसतम्। दुर्भिक्षं छत्रभंग स्यात् दास्ते च महद्भयम्**-अर्थात् जिस मास में पाँच रविवार पड़े, उस मास अनाज की कीमतों में अत्याधिक वृद्धि, कहीं अनाज में कमी, छत्र-भंग, सत्ता परिवर्तन, कहीं उपद्रव एवं हिंसक घटनाएँ अधिक होंगी। पाँच सोमवार होने से धन-धान्य एवं कृषि के उत्पादन में तथा सुख-साधनों में वृद्धि होगी, परन्तु अधिकांश उपभोग्य वस्तुओं का लाभ विशेष वर्ग को ही प्राप्त होगा। पक्ष में **कालसर्प** योग के प्रभावस्वरूप देश की राजनीतिक परिस्थितियों में अस्थिरता रहेगी। महँगाई के कारण सामान्य लोगों में आक्रोश एवं असंतोष व्याप्त रहेगा॥ **व्यापारिक रूख**—द्वितीया को सूर्य आश्लेषा में आने से सोना-चाँदी, रूई, कपास, खल-बिनौला, गेहूँ, चावल, उड़द, चने, गुड़, तिल, तिल-सरसों, खाद्य तेल, मिर्च, पशुचारा, दूध आदि के तेज भाव होंगे। **भाद्रपदी संक्रान्ति** सोमवार होने से थोक मार्कीट की लाईन अचानक बदल सकती है॥ **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में भारत के उत्तरी पश्चिमी एवं मध्यवर्ती पूर्वी क्षेत्रों में व्यापक वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०६१, द्वितीय (शुद्ध) श्रावण शुक्ल पक्ष									शाकः १९२६					तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश	सन् 2004 ई. (ता. 17 से 30 अगस्त तक) सूर्य दक्षिणायने, उत्तर गोलार्द्ध, वर्षा-शरद् ऋतु					जालन्धर था. स्टैं. टा.			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	श्राव. शक	जमा. मु.	अगस्त	भाद्र. प्रवि.	घटी पल	ग्रह लोपदर्शन—मंगल अदृश्य है। बुध भी 17 अग. को पश्चिम में अस्त हो जाएगा। शुक्र, शनि प्रातः पूर्व में, सायं गुरु पश्चिम में दृश्य रहेगा। 30 अग. को बुध पूर्वोदय।	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३२/५०	१	मंग	४	२८	मघा	७	५५	परि	५	०३	ब	४	२८	२६	३०	17	२	सिंह	द्वितीय (शुद्ध) **श्रावण शु. पक्ष प्रा., चन्द्रदर्शन** ३० मुहू., **बुधास्त A**	४	००	३१	३७	५	५७	१९	०५
३२/४५	२	बुध	५	२८	पूफा	१०	३३	शिव	३	२०	कौ	५	२८	२७	रज्ज	18	३	कं. २६।०३	रज्जब १ (मुस्लिम) **A पश्चिमे** ६/५३, गण्डमूल	४	०१	२९	२४	५	५८	१९	०४
३२/४३	३	गुरु	५	३५	उफा	१२	१८	सिद्ध साध्य	० ५७	५५ ४८	ग	५	३५	२८	२	19	४	कन्या	भद्रा ३५/०९ से, **मधुस्रवा** (सिंघारा)—**हरियाली तीज**, दूर्वा **B**	४	०२	२७	०८	५	५८	१९	०३
३२/३७	४	शुक्र	४	४३	हस्त	१३	०३	शुभ	५३	५०	वि	४	४३	२९	३	20	५	तु. ४३।०५	भद्रा ४/४३ तक, **नाग पंचमी व्रत** **B गणपति व्रत**	४	०३	२४	५६	५	५९	१९	०२
३२/३५	५	शनि	२	५८	चित्रा	१२	५८	शुक्ल	४९	१०	बा	२	५८	३०	४	21	६	तुला	**नागपंचमी** (मतान्तरे) देशाचारे वा, **श्री कल्कि जयंती,** मंगल **C**	४	०४	२२	४३	५	५९	१९	०१
३२/३३	६	रवि	०	१०	स्वा.	११	५०	ब्रह्म	४३	४०	तै	०	१०	३१	५	22	७	बृ. ५५।२३	भ. ५६/२८ से, गो. **श्री तुलसीदास जयं.,** शुक्रपुर्न में २०/४८, **D**	४	०५	२०	३२	६	००	१९	०१
००	७	रवि	५६	२८	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	सप्तमी तिथि का क्षय **D** सायन सूर्य कन्या में 24/23, शरद् ऋतु प्रा.	०	०	०	०	०	०	०	०
३२/२७	८	चंद्र	५१	४५	विशा	९	४५	ऐंद्र	३७	२०	वि	२४	१२	भा.	६	23	८	बृश्चिक	भ. २४/०७ तक, **श्री दुर्गाष्टमी, मे. चिंतपूर्णी, चामुण्डा, नैनादेवी,** शक **E**	४	०६	१८	२५	६	०१	१९	००
३२/२०	९	मंग	४६	०८	अनु	६	४३	वैधृ	३०	१५	बा	१८	५७	२	७	24	९	बृश्चिक	गं. मू. प्रातः 8/43 से प्रा. **E** भाद्र प्रा., **दूर्वाष्टमी व्रतं,** स. सि. यो.	४	०७	१६	१७	६	०२	१८	५८
३२/१७	१०	बुध	३९	४३	ज्ये. मूला	२ ५८	४८ १०	विष्क	२२	३३	तै	१२	५६	३	८	25	१०	ध. २।४८	**गण्डमूलादि** **C** पूफा में ५०/१०, स. सि. योगः 11/10 उप.	४	०८	१४	०९	६	०२	१८	५७
३२/१२	११	गुरु	३२	४०	पूषा	५२	५५	प्रीति	१४	१३	व	६	१२	४	९	26	११	धनु	भद्रा ६/१२ से ३२/४० तक, **पवित्रा एका. व्रतम्**	४	०९	१२	०४	६	०३	१८	५६
३२/०७	१२	शुक्र	२५	१५	उषा	४७	२८	आयु सौभा	५ ५६	३० ४३	बा	२५	१५	५	१०	27	१२	म. ६।३३	प्रदोष व्रत, **गुरू उफा (२) कन्या में** ४३/५०,	४	१०	१०	००	६	०४	१८	५५
३२/०५	१३	शनि	१७	५३	श्रव	४२	१३	शोभ	४८	०५	तै	१७	४३	६	११	28	१३	मकर	**F** शुक्ल यजु उपाकर्म	४	११	०७	५६	६	०४	१८	५४
३२/००	१४	रवि	१०	४८	धनि	३७	२३	अति	३९	५३	व	१०	४८	७	१२	29	१४	कुं. ९।४०	भ. १०/४८ से ३७/३९ तक, पंचकारम्भः(9/57 घं.), **व्रत पूर्णिमा F**	४	१२	०५	५५	६	०५	१८	५३
३१/५५	१५	चंद्र	४	३०	शत	३३	३३	सुक	३२	२८	ब	४	३०	८	१३	30	१५	कुम्भ	**श्रावण पूर्णिमा, रक्षा बन्धन पर्व,** सूर्य पूफा में १६/४०, बुध **G**	४	१३	०३	५३	६	०५	१८	५१

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 23 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	४	४	४	२	२	०	६
०६	००	१४	०७	२९	२०	२८	११	११
१७	४६	०३	५३	००	३७	३१	२०	२०
१०	३९	३७	४१	३६	३७	३२	३०	३०
५७ ५०	८३९ ५७	३८ ९	५३ १७	१२ २६	५९ ८८	६ ४१	३ ११	३ ११
मघा २	विशा ४	पूफा १	मघा ३	उफा १	पुन १	पुन ३	अश्वि ४	स्वा २
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

६ | ५ सू. मं. बु. गु. | ४ | ३ शु. श. | ७ के. | ८ चं. | २ | ९ | ११ | १ रा. | १० | १२

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 30 अगस्त **G** पूर्व से उदय ३५/५७, भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा, दर्शन **श्री अमरनाथ गुफा,** ऋषि तर्पण

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	४	४	५	२	२	०	६
१३	११	१८	०२	००	२७	२९	१०	१०
०२	४२	३०	४०	२८	४३	१७	५८	५८
२९	३६	५७	०३	१७	३६	१५	१५	१५
५८ ००	८४८ ४३	३८ १५	२४ १८	१२ ४०	६२ २	६ १९	३ ११	३ ११
मघा ४	शत २	पूफा २	मघा १	उफा २	पुन ३	पुन ३	अश्वि ४	स्वा. २
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ/उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30 बजे

६ गु. | ५ सू. मं. बु. | ४ | ३ शु. श. | ७ के | ८ | २ | ९ | ११ चं. | १ रा. | १० | १२

द्वि. शुद्ध श्रावण शुक्ल पक्षफल—इस पक्ष में **सिंघारा तीज** (१९ अग.) के दिन सुहागिन स्त्रियां अपने पीहर लौटकर हाथों में मेहंदी रचाकर एवं विभिन्न प्रकार के पकवान पकाकर श्रावण के झूले झूलती हुई मलहारें गाती हैं। २३ अग. अष्टमी को ज़िला कांगड़ा में एवं ज़िला ऊना में **माता चिंतपूर्णी का पावन** मेला मनाया जाता है। **श्रावण पूर्णिमा** (३० अग.) को भाई-बहन के पवित्र सम्बन्धों का प्रतीक '**रक्षा बन्धन**' का पर्व मनाया जाता है। इसी दिन **श्रीअमरनाथ** (कश्मीर) में स्थित पवित्र गुफा में **शिवलिंग** के दर्शन करके श्रद्धालु जन कृतार्थ होते हैं। **लोक भविष्य**—पक्ष के आरम्भ में कालसर्प योग बना हुआ है। इसके अतिरिक्त २६ ता. तक सिंह राशि पर **चतुर्ग्रही योग** तथा गुरु अतिचार गति में होगा। फलस्वरूप कहीं बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोपों से खड़ी फसलों तथा धन-सम्पत्ति एवं मनुष्यों की हानि होने के संकेत हैं। इस चतुर्ग्रही योग पर शनि की दृष्टि होने से कहीं उपद्रव एवं हिंसक घटनाएँ होने का भी भय है। केन्द्रीय सरकार को विशेष राजनीतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। विपक्षी पार्टियों के साथ विरोध एवं टकराव के कारण राजनीतिक स्थिति अस्थिर एवं अनिश्चित बनेगी। लोगों में भी असंतोष एवं अशान्ति की भावना बढ़ेगी। **व्यापारिक भविष्य**—पक्षारम्भ में मंगलवार को चन्द्रदर्शन होने से अनाज तथा अन्य वायदा व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का रुख रहेगा। सोना, चाँदी में घटावढ़ी के बाद तेजी होगी। इसी दिन बुधास्त होने से गुड़, सरसों, मूंगफली, खल-बिनौला, काली मिर्च, उड़द आदि में भी तेजी होगी। २२ ता. को शुक्र पुनर्वसु में आने से धान्य, खल-बिनौले, चीनी एवं थोक बाज़ार में शेयरों में तेजी का वातावरण होगा, रूई, कपास आदि में मन्दी रहेगी। २७ ता. रात्रि को गुरू कन्या राशि में रूई, चाँदी व ऊनी वस्त्रों में मन्दी तथा ज्वार, बाजरा, सोयाबीन, गेहूँ, उड़द, चने, तिल, तैल, सरसों, गुड़ व चीनी में तेजी का रुख रखेगा। ता. ३० से सोना, चाँदी, खल-बिनौले, घी, तैलादि तेजी पकड़ेंगे। **आकाश लक्षण**—भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में वर्षा की कमी रहे, परन्तु पूर्वी एवं मध्यक्षेत्रों (बिहार, उड़ीसा आदि) में अति वर्षा से बाढ़ आदि का प्रकोप रहे। **शकुन**—श्रा. शु. ८ को अनुराधा नक्षत्र में वर्षा होना आगामी सुभिक्ष (अच्छी फसल) के संकेत हैं।

वि. संवत् २०६१, भाद्रपद कृष्ण पक्ष शाकः १९२६ — सन् 2004 ई. (ता. 31 अग. से 14 सितं. तक) — जालन्धर

सूर्यदक्षिणायने, उत्तर गोलार्द्ध, शरद् ऋतु

ग्रह लोपदर्शन—प्रातः बुध, शुक्र व शनि पूर्व दिशा में दृश्य, गुरु ६ सितं. से पश्चिमाऽस्त, मंगल अभी अस्त ही रहेगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	भाद्र शक	रज्जब मु.	अगस्त	भाद्र प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ए. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
अवम्	१	चंद्र	५९	१५	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	30	०	००	प्रतिपदा तिथि का क्षय A मार्गी ३०/३५, गं. मू., स. सि. योगः	०	०	०	०	०	०	०	०
३१/५०	२	मंग	५५	२८	पूभा	३०	५५	धृति	२६	०३	तै	२७	२२	९	१४	31	१६	मी. १६/२५		४	१४	०१	५६	६	०६	१८	५०
३१/४५	३	बुध	५३	२३	उभा	२९	५५	शूल	२०	५५	व	२४	२६	१०	१५	सितं.	१७	मीन	भ. २४/२६ से ५३/२३ तक, **शुक्र कर्क में ९/३८, कज्जली तीज**	४	१४	५९	५९	६	०७	१८	४९
३१/४०	४	गुरु	५३	१३	रेव	३०	४३	गंड	१७	१५	ब	२३	१८	११	१६	2	१८	मे. ३०/४३	**श्री गणेश बहुला चतुर्थी व्रत,** पंचक समा. 18/25 घं. मिं., **बुध A**	४	१५	५८	०४	६	०८	१८	४८
३१/३७	५	शुक्र	५४	५८	अश्वि	३३	२५	वृद्धि	१५	०८	कौ	२४	०६	१२	१७	3	१९	मेष	गण्डमूलादि (19/31 स्टै. टा. तक) अगस्त्य उदित 19/25 स्टैं. टा.	४	१६	५६	१३	६	०९	१८	४७
३१/३०	६	शनि	५८	३०	भर	३७	५५	ध्रुव	१४	३०	ग	२६	४४	१३	१८	4	२०	वृ. ५४/२०	भद्रा ५८/३० से, **चन्दन षष्ठी व्रत** (च. उ. व्या.), **हल षष्ठी, B**	४	१७	५४	१९	६	०९	१८	४५
३१/२८	७	रवि	६०	००	कृति	४३	५५	व्या.	१५	०५	वि	२९	१५	१४	१९	5	२१	वृष	भ. ३०/५७ तक, **शनि पुर्न. (४) कर्क में** ५६/४०, शीतला सप्तमी व्रत	४	१८	५२	३१	६	१०	१८	४४
३१/२३	७	चंद्र	३	२३	रोहि	५०	५३	हर्ष	१६	४३	ब	३	२३	१५	२०	6	२२	वृष	**श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत** स्मार्त्ता, रोहिणी व चंद्रोदय व्या., **C**	४	१९	५०	४४	६	११	१८	४३
३१/१८	८	मंग	९	१५	मृग	५८	२३	वज्र	१८	५५	कौ	९	१५	१६	२१	7	२३	मि. २४/३८	**श्री कृष्ण जन्माष्टमी** व्रत वैष्णव., गोकुलाष्टमी	४	२०	४८	५७	६	११	१८	४२
३१/१५	९	बुध	१५	२३	आर्द्रा	६०	००	सिद्धि	२१	१८	ग	१५	२३	१७	२२	8	२४	मिथुन	भद्रा ४८/२१ से प्रा., **श्री गुग्गा नवमी**	४	२१	४७	१४	६	१२	१८	४१
३१/१०	१०	गुरु	२१	१८	आर्द्रा	५	४०	व्य.	२३	२५	वि	२१	१८	१८	२३	9	२५	क. ५५/४५	भद्रा २१/१८ तक, स. सि. योगः	४	२२	४५	३२	६	१२	१८	४०
३१/०७	११	शुक्र	२६	२०	पुर्न	१२	२०	वरी	२४	५३	बा	२६	२०	१९	२४	10	२६	कर्क	**अजा एकादशी व्रतम्** **B** शुक्र पुष्य में १९/३०	४	२३	४३	५३	६	१३	१८	३८
३१/००	१२	शनि	३०	२०	पुष्य	१८	००	परि	२५	३३	तै	३०	२०	२०	२५	11	२७	कर्क	**वत्स द्वादशी,** मंगल उफा. में ४३/२५, पर्युषणपर्वारंभ (जैन)	४	२४	४२	१४	६	१३	१८	३७
३०/५५	१३	रवि	३३	००	श्ले.	२२	२८	शिव	२५	१५	ग	१	४०	२१	२६	12	२८	सिं. २२/२८	भ. ३३/०० से, **प्रदोष व्रत,** गुरु उफा (३) में २३/३०, गंडमूल **D**	४	२५	४०	३७	६	१३	१८	३५
३०/५०	१४	चंद्र	३४	२०	मघा	२५	३३	सिद्ध	२३	४८	वि	३	४०	२२	२७	13	२९	सिंह	भद्रा ३/४० तक, सूर्य उफा १ में ०/५५, गण्डमूलादि	४	२६	३९	०४	६	१४	१८	३४
३०/४५	३०	मंग	३४	१९	पूफा	२७	२३	साध्य	२१	२३	च	४	१९	२३	२८	14	३०	कं. ४२/४०	**कुशाग्रहणी पिठौरी अमावस, ''ॐ हूं फट्'' मंत्रेर्ण कुशोत्पाटनं E**	४	२७	३७	३५	६	१५	१८	३३

गुरु अस्त पश्चिमे 6 सितं.

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 7 सितंबर   भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 14 सितंबर **E** शक्ति पूजा **C** गुरुऽस्तं पश्चि. 7/50, जयंती योगः, स. सि. योगः **D** कैलाश यात्रा

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	४	४	५	३	३	०	६
२०	२४	२३	०३	०२	०६	००	१०	१०
४७	४८	३७	१४	१०	०९	०६	३२	३२
१८	०२	२३	२१	१०	२८	०९	४८	४८
५८ १५	७११ १२	३८ २३	४२ १९	१२ ५०	६४ २९	५ ५०	३ ११	३ ११
पूफा	मृग	पूफा	मघा	उफा	पुष्य	पुर्न	अश्वि	स्वा
३	१	४	१	२	१	४	४	२
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

५ सू. मं. बु.
६ गु.
४ शु. श.
७ के.
३
८
२ चं.
९
११
१ रा.
१०
१२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	४	४	५	३	३	०	६
२७	२०	२८	१०	०३	१३	००	१०	१०
३५	१९	०६	४२	४०	४५	४५	१०	१०
४५	५८	२८	४६	२१	५६	३५	३३	३३
५८ २९	७८३ २४	३८ ३१	८८ १९	१२ ५६	६६ ८	५ २१	३ १०	३ १०
उफा	पूफा	उफा	मघा	उफा	पुष्य	पुर्न	अश्वि	स्वा.
१	३	१	४	३	४	४	४	२
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30 बजे

५ सू. चं. मं. बु.
६ गु.
४ शु. श.
७ के.
१०
८
२
९
११
१ रा.
१०
१२

भाद्रपद कृष्ण पक्षफल—इस पक्ष में चतुर्थी **(बहुला चौथ)** २ सितं. को व्रत रखकर सायंकाल को स्नान करके श्रीगणेश जी का लड्डू सहित पूजन करे और चन्द्रोदय होने पर अर्घ्य देने से अभीष्ट की प्राप्ति होती है। **चन्दन (या चन्द्र ६)** षष्ठी का व्रत रखकर सूर्य व चन्द्रमा की पूजा, व्रत करने से धन, सन्तति एवं सौभाग्य की वृद्धि होती है। **श्री कृष्ण जन्माष्टमी** का **व्रतोत्सव** अर्धरात्रि चन्द्रोदय व्यापिनी एवं रोहिणी नक्षत्र जयन्ती योग होने से **६ सितं., सोमवार** को मनाना प्रशस्त होगा। मंगलवार ७ सितं. को सूर्योदय कालिक अष्टमी मात्र प्रातः 9 बजकर 53 मिनट तक होगी। रात्रि चन्द्रोदय अष्टमी एवं रोहिणी का भी अभाव होगा। इसी दिन मथुरा में गोकुलाष्टमी उदयकालिक अष्टमी में मनाने की परम्परा है। गुग्गा नवमी (८ सितं.) को शिव मन्दिर में शिवपूजन एवं नाग पूजा की जाती है। ता. १४ सितं. को देव-पितृ आदि कार्यों हेतु **''ॐ हूं फट् स्वाहा''** इस मन्त्र से कुशोत्पाटन करके कुशाओं का संग्रह करना चाहिए। **लोक भविष्य**—इस चान्द्र मास में पाँच सोम तथा पाँच मंगलवार होने से शुभाशुभ (मिश्रित) प्रभाव होंगे। पाँच सोमवार पड़ने से समाज में सुख-सुविधाओं के साधनों का विस्तार होगा। गेहूँ, चने, धान्यादि की फसलों का उत्पादन अच्छा होगा। परन्तु पाँच मंगलवार होने से कहीं उपद्रव, जनांदोलन, अग्निकाण्ड, हिंसा एवं विस्फोटक घटनाएं होने के संकेत हैं। मन्त्रीमण्डल एवं सत्ता-परिवर्तन (छत्र-भंग) होने के भी योग हैं। **यत्र मासे महीसूनो जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥** पक्ष में **कालसर्प** योग के कारण एवं अत्यधिक महँगाई से प्रजा में आक्रोश एवं असंतोष व्याप्त होगा। **व्यापारिक रूख**—प्रतिपदा तिथि का क्षय हुआ है। इसी दिन सूर्य पू.फा. में आने से गेहूँ, चावल, चने, घी, तैल, बिनौले-खल, अरण्डी, सरसों, सोना-चाँदी में तेजी होगी, परन्तु शेयरों में मन्दी का रुख होगा। ६ सितं. को शनि कर्क में आने से रूई, तिल, तैल, अरण्डी, सोयाबीन, सरसों, चने, पशुचारा एवं चौपायों में तेजी करेगा। इसी दिन **गुरु अस्त** होकर सोना-चाँदी, कपास व शेयरों में चमक पैदा करेगा। **आकाश लक्षण**—भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों (हि. प्र., जम्मू-कश्मीर) में कहीं रुक-रुक कर खण्ड वर्षा होगी।

वि. संवत् २०६१, **भाद्रपद शुक्ल पक्ष** शाकः १९२६														तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2004 ई. (ता. 15 सितं. से 28 सितं. तक) सूर्य दक्षिणायने, उत्तर-दक्षिण गोलार्द्ध, शरद् ऋतु	जालन्धर भा. स्टैं. टा.							
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	भाद्र शक	रज्जब मु.	सितंबर	भाद्र प्रवि.	प्रवेश घटी पल	ग्रह दर्शन—२० सितं. से बुधास्त, शुक्र व शनि पूर्व में दृश्य, मंगल—गुरु अभी अस्तंगत हैं। **A** 10/17 उप. मंग. कन्या में ५४/५०, शुक्र अश्ले. में ३५/३७	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ह. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३०/४३	१	बुध	३३	१५	उफा	२८	०८	शुभ	१८	०३	किं	३	४७	२४	२९	15	३१	कन्या	भाद्र. शुक्ल पक्षारम्भः, बुध पूफा में ४२/४७	४	२८	३६	०४	६	१५	१८	३२
३०/३८	२	गुरु	३१	१०	हस्त	२७	५०	शुक्ल	१३	५०	बा	२	१३	२५	३०	16	आ.	तु. ५७/२०	चंद्रदर्शन, **सूर्य कन्या** में २६/०३, **आश्विन संक्रां.** ३० मुहू., पुण्य **A**	४	२९	३४	३६	६	१६	१८	३१
३०/३३	३	शुक्र	२८	१५	चित्रा	२६	४३	ब्रह्म	९	००	ग	२८	१५	२६	शबा	17	२	तुला	हरितालिका तीज, **गौरी तीज, कलंक चतुर्थी,** चंद्रदर्शन निषेध	५	००	३३	०९	६	१६	१८	२९
३०/२८	४	शनि	२४	३५	स्वा.	२४	५३	ऐंद्र वैधृ	३ ५७	३० ३०	वि	२४	३५	२७	२	18	३	तुला	भ. २४/३५ तक, **श्रीगणेश सिद्धि विनायक चतुर्थी व्रत,** स. सि. योगः	५	०१	३१	४६	६	१७	१८	२७
३०/२३	५	रवि	२०	२३	विशा	२२	३०	विष्क	५१	०५	बा	२०	२३	२८	३	19	४	वृ. ८/०८	**ऋषि पंचमी,** सम्वत्सरी पर्व (जैन), मेला पात	५	०२	३०	२२	६	१७	१८	२६
३०/१७	६	चंद्र	१५	३५	अनु.	१९	३३	प्रीति	४४	१५	तै	१५	३५	२९	४	20	५	वृश्चिक	सूर्य षष्ठी, **बुधास्त पूर्वस्यां** 5/25 स्टैं. टा., स. सि. योगः	५	०३	२९	०२	६	१८	१८	२५
३०/१०	७	मंग	१०	२८	ज्ये.	१६	१५	आयु	३७	०८	व	१०	२८	३०	५	21	६	ध. १६/१५	भ. १०/२८ से ३७/४१ तक, संतान ७ व्रत, **श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ,** राधाष्टमी	५	०४	२७	४४	६	१८	१८	२३
३०/०३	८	बुध	४	५३	मूला	१२	३३	सौभा	२९	४३	ब	४	५३	३१	६	22	७	धनु	गंडमूलादि 11/21 स्टै. टा. तक, **श्री चंद्र नवमी,** दधीची जयं. **B**	५	०५	२६	२७	६	२०	१८	२१
००	९	बुध	५९	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	नवमी तिथि का क्षय**B** सायन सूर्य तुला में ३९/१५, दक्षिणगोल प्रा.	०	०	०	०	०	०	०	०
३०/००	१०	गुरु	५३	२५	पूषा	८	४३	शोभ	२२	१५	तै	२६	१९	आ.	७	23	८	म. २२/४५	बुध उफा. १ में २५/०८, शाकः आश्विन प्रारंभ	५	०६	२५	११	६	२०	१८	२०
२९/५५	११	शुक्र	४७	४३	उषा	४	४८	अति	१४	४५	व	२०	३४	२	८	24	९	मकर	भ. २०/३४ से ४७/४३ तक, **पद्मा एकादशी व्रत,** स. सि. योग	५	०७	२३	५७	६	२१	१८	१९
२९/५३	१२	शनि	४२	२३	श्रव धनि	१ ५७	०५ ४३	सुक	७	२५	ब	१५	०३	३	९	25	१०	कुं. २९/२०	पंचकारम्भ २९/२०, **वामन जयंती, बुध कन्या** रा. में १४/२०	५	०८	२२	४३	६	२१	१८	१८
२९/५०	१३	रवि	३७	३५	शत	५४	५८	धृति शूल	० ५३	२५ ५५	कौ	९	५९	४	१०	26	११	कुम्भ	प्रदोष व्रतं, सूर्य हस्त में ३९/१८ **C** गुरु उफा (४) में ४९/२३	५	०९	२१	३१	६	२१	१८	१७
२९/४५	१४	चंद्र	३३	३५	पूभा	५३	०८	गंड	४८	१०	ग	५	३५	५	११	27	१२	मी. ३८/२८	भ. ३३/३५ से, **अनन्त चौदश,** मेला छपार व **सोढल जालं., C**	५	१०	२०	२४	६	२२	१८	१६
२९/४३	१५	मंग	३०	४५	उभा	५२	२८	वृद्धि	४३	२०	वि.	२	१५	६	१२	28	१३	मीन	भ. २/१० तक, **प्रौष्ठपदी भाद्र** पूर्णिमा, पूर्णिमा का श्राद्ध, **शुक्र मघा १ D**	५	११	१९	१५	६	२२	१८	१५

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 22 सितं.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	५	४	५	३	३	०	६
०५	०९	०३	२४	०५	२२	०१	०९	०९
२४	५२	१५	०१	२४	४०	२६	४५	४५
२५	१८	०५	३१	०२	३४	१५	०७	०७
५८ ४३	८५४ ००	३८ ४०	१०८ ५०	१२ ५८	६७ ४१	४ ४४	३ ११	३ ११
उफा	मूला	उफा	पूफा	उफा	श्ले.	पुन	अश्वि	स्वा
३	३	२	४	३	२	४	३	१
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

७ के. ५ बु. ६ सू. मं. गु. ४ शु. श. ८ ९ चं. ३ १२ १० २ ११ १ रा.

भौमे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 28 सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	५	५	५	३	३	०	६
११	०४	०७	०४	०६	२९	०१	०९	०९
१७	२४	०७	५९	४१	२९	५३	२६	२६
०७	३५	१९	५१	४९	१९	२३	०३	०३
५८ ५३	८०७ २८	३८ ४६	१०९ ३२	१२ ५७	१२ ५७	६८ ४४	३ ११	३ ११
हस्त	उभा	उफा	उफा	उफा	श्ले.	पुन	अश्वि	स्वा.
१	१	४	३	४	४	४	३	१
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30 बजे

७ के. ५ ६ सू. मं. बु. गु. ४ शु. श. ८ ९ ३ १२ चं. १० २ ११ १ रा.

D सिंह राशि में २४/३७ (16/13 घं. मिं.) स. सि. योगः

भाद्रपद शुक्ल पक्षफल—इस पक्ष की तृतीया को सौभाग्य में वृद्धि एवं अखण्ड सुहाग की कामना से गौरी तृतीया (हरितालिका तीज) का व्रत (१ सितं.) विशेषकर सुहागिन स्त्रियाँ करती हैं। इसी दिन कलंक चतुर्थी (पत्थर चौथ) को चन्द्रदर्शन करने से व्यक्ति को मिथ्या कलंक लगने की सम्भावना होती है। ता. १८ को सिद्धि विनायक श्री गणेश जी का व्रत रखकर लड्डुओं आदि का भोग लगाने का महात्म्य है। इसी दिन श्री गणेश जी का जन्म मध्यान्ह में हुआ था, अतएव मध्यान्ह व्यापिनी तिथि ली जाती है। अनन्त चौदश (२७ सितं.) को रेशम की पीली एवं १४ ग्रन्थि युक्त डोरी सहितं भगवान् श्रीविष्णु की पूजा करने का विधान है। प्रौष्ठपदी पूर्णिमा (२८ सितं.) को ही पूर्णिमा का श्राद्ध रहेगा। **लोक भविष्य**—द्वितीया तिथि को सूर्य कन्या राशि में आकर मंगल-गुरु के साथ मेल करेगा, उन पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। जिससे देश के प्रधान नेता के लिए अशुभ फल घटित होंगे। प्रधानमंत्री के स्वास्थ्य की दृष्टि से यह कालावधि अरिष्टकर होगी। इसके अतिरिक्त भाद्रपद मास में पाँच मंगलवार होने से देश में कहीं उपद्रव एवं हिंसा एवं अग्निकाण्ड की घटनाएँ घटित होंगी। राजनीतिक क्षत्रों में कुछ नए गठजोड़ बनेंगे। सत्ता परिवर्तन के योग बनते हैं। **व्यापारिक रूख**—आश्विन संक्रान्ति १६ सितं. गुरुवार को ३० मुहूर्ति है। कन्या राशि पर सूर्य, मंगल एवं गुरु का सम्बन्ध बनेगा। वायदा बाज़ार एवं थोक मार्कीट में तेजी का वातावरण बनेगा। रूई, कपास, नारियल, सुपारी, मजीठ, खल-बिनौले, लाल वर्ण की वस्तुएँ, सोना, चाँदी आदि में तेजी का रुझान बनेगा। २० ता. को बुध पूर्वास्त होने से गेहूँ, चावल, सोना, ताँबा में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी।

आकाश लक्षण—इस पक्ष के पूर्वार्द्ध में भारत के उत्तर पश्चिमी भागों में खण्ड वर्षा के संकेत हैं। **शकुन**—भा. शु. नवमी तिथि का क्षय होने से आगामी दिनों खाद्यान्न में तेजी सूचक है।

वि. संवत् २०६१, आश्विन कृष्ण पक्ष शाकः १९२६ — सन् 2004 ई. (ता. 29 सितं. से 14 अक्तू. तक) — जालन्धर

सूर्य दक्षिणायने, दक्षिण गोल, शरद् ऋतु — भा. स्टैं. टा.

ग्रह लोपदर्शन—मंगल, बुध अभी अस्त रहेंगे, गुरु 2 अक्तू. को प्रातः पूर्व से उदित, शुक्र–शनि दोनों प्रातः पूर्व में दृश्य होंगे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	अधि. शक	प्रविष्टे	सितंबर	आश्विन	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	विवरण	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ह. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२९/३५	१	बुध	२९	१०	रेव	५३	०८	ध्रुव	३९	३३	कौ	२९	१०	७	१३	29	१४	मे. ५३|०८	**पितृपक्षारम्भ,** प्रतिपदा का श्राद्ध, **पंचक समा.** (27/38 घं.मिं.), गं.मू.	५	१२	१८	१०	६	२३	१८	१३
२९/३०	२	गुरु	२९	०८	अश्वि	५५	२०	व्या	३७	००	ग	२९	०८	८	१४	30	१५	मेष	भ. ५९/५४ से, द्वितीया का श्राद्ध, बुध हस्त में ४२/४७, स. सि. यो.	५	१३	१७	०९	६	२४	१८	१२
२९/२५	३	शुक्र	३०	४०	भर	५९	०५	हर्ष	३५	४०	वि	३०	४०	९	१५	अ.	१६	मेष	भ. ३०/४० तक, **गणेश चतुर्थी व्रत,** तृतीया का श्राद्ध, भरणी श्राद्धपितृ तर्पण	५	१४	१६	०८	६	२५	१८	१०
२९/२०	४	शनि	३३	५३	कृति	६०	००	वज्र	३५	३८	ब	२	१७	१०	१६	2	१७	वृ. १५|१५	मंगल हस्त में २४/३७, महात्मा गांधी जयं. चतुर्थी का श्राद्ध, **गुरु पूर्वोदयः**	५	१५	१५	०८	६	२५	१८	०९
२९/१५	५	रवि	३८	२३	कृति	४	१८	सिद्धि	३६	३३	कौ	६	०८	११	१७	3	१८	वृष	**पंचमी का श्राद्ध,** **गुरु उदय, 2 अक्तूबर**	५	१६	१४	१३	६	२६	१८	०८
२९/१२	६	चंद्र	४३	५८	रोहि	१०	४३	व्य	३८	१८	ग	११	११	१२	१८	4	१९	मि. ४४|१५	भ. ४३/५८ से, षष्ठी का श्राद्ध, स. सि. योगः	५	१७	१३	१८	६	२६	१८	०७
२९/०५	७	मंग	५०	०३	मृग	१७	५३	वरी	४०	२५	वि	१७	०१	१३	१९	5	२०	मिथुन	भ. १७/०१ तक, सप्तमी का श्राद्ध	५	१८	१२	२६	६	२७	१८	०५
२९/०३	८	बुध	५६	०८	आर्द्रा	२५	१८	परि	४२	४०	बा	२३	०६	१४	२०	6	२१	मिथुन	अष्टमी का श्राद्ध, **श्रीमहालक्ष्मी व्रत** चंद्रोदय व्या., काली जयंती	५	१९	११	३५	६	२७	१८	०४
२८/५८	९	गुरु	६०	००	पुर्न	३२	२०	शिव	४४	२५	तै	२८	०४	१५	२१	7	२२	क. १५|३५	नवमी का श्राद्ध, **सौभाग्यवतीनां श्राद्ध,** स. सि. योगः	५	२०	१०	४९	६	२८	१८	०३
२८/५३	९	शुक्र	१	३३	पुष्य	३८	३०	सिद्ध	४५	२८	ग	१	३३	१६	२२	8	२३	कर्क	भ. ३३/४३ से प्रा. **दशमी का श्राद्ध**	५	२१	१०	०५	६	२९	१८	०२
२८/५०	१०	शनि	५	५३	श्ले	४३	२८	साध्य	४५	३०	वि	५	५३	१७	२३	9	२४	सिं. ४३|२८	भ. ५/५३ तक,, **एकादशी का श्राद्ध,** गण्डमूलादि	५	२२	०९	२०	६	२९	१८	०१
२८/४३	११	रवि	८	४५	मघा	४६	५०	शुभ	४४	१८	बा	८	४५	१८	२४	10	२५	सिंह	सूर्य चित्रा में ११/२८, **इन्दिरा एका. व्रत,** संन्यासीनां व द्वादशी का श्राद्ध	५	२३	०८	४१	६	३०	१७	५९
२८/३८	१२	चंद्र	१०	००	पूफा	४८	३८	शुक्ल	४१	४८	तै	१०	००	१९	२५	11	२६	सिंह	**सोम प्रदोष व्रतं, त्रयोदशी का श्राद्ध A पितृविर्सजन,** स. सि.योग.	५	२४	०८	०२	६	३१	१७	५८
२८/३३	१३	मंग	९	३५	उफा	४८	५०	ब्रह्म	३८	००	व	९	३५	२०	२६	12	२७	क. ३|४५	भ. ९/३५ से ३८/३८ तक, शस्त्र विष दुर्घटना आदि से मृतों का श्राद्ध	५	२५	०७	२९	६	३२	१७	५७
२८/२८	१४	बुध	७	४०	हस्त	४७	४०	ऐंद्र	३३	०५	श	७	४०	२१	२७	13	२८	कन्या	चतुर्दशी–**अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध,** गुरु हस्त १ में २२/२३, **A**	५	२६	०६	५५	६	३३	१७	५६
२८/२३	३०	गुरु	४	२५	चित्रा	४५	२०	वैधृ	२७	१०	ना	४	२५	२२	२८	14	२९	तु. १६|३८	**अमा. स्नानादि,** मातामह श्रा., **शरद् नवरात्र शुरु, घटस्थापन B**	५	२७	०६	२२	६	३३	१७	५४

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 6 अक्तूबर — गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 14 अक्तूबर — **B** (10/33 स्टै. टा. उप.) श्री दुर्गापूजारंभ शरद् नवरात्र (देखें पर्व निर्णय पृष्ठ 74)

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	५	५	५	४	३	०	६
१९	१४	१२	१९	०८	०८	०२	०९	०९
०९	३१	१८	१९	२५	४३	२४	००	००
१५	४९	०९	४४	०८	३३	४१	३७	३७
५९ ११	७१३ ५	३८ ५७	१०४ १९	१२ ५१	६९ ५८	३ २८	३ ११	३ ११
हस्त ३	आर्द्रा ३	हस्त १	हस्त ३	उफा ४	मघा ३	पुर्न ४	अश्वि ३	स्वा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी प्रातः 5.30 बजे

६ सू. मं. बु. गु. — ७ के. — ५ शु. — ४ श. — ८ — ३ चं. — ९ — १२ — १० — २ — ११ — १ रा.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	५	६	५	४	३	०	६
२७	२५	१७	०२	१०	१८	०२	०८	०८
०३	३३	३०	५२	०७	०६	४९	३५	३५
४७	५९	३१	५८	२५	५७	५३	११	११
५९ २९	८३४ ४७	३९ ९	९८ २१	१२ ४१	७१ ००	२ ४२	३ ११	३ ११
चित्रा २	चित्रा १	हस्त ३	चित्रा २	हस्त १	पूफा २	पुर्न ४	अश्वि ३	स्वा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30 बजे

६ सू. चं. मं. गु. — ७ बु. के. — ५ शु. — ४ श. — ८ — ३ — ९ — १२ — १० — २ — ११ — १ रा.

आश्विन कृष्ण पक्षफल—श्राद्धों में अपने दिवंगत पूर्वजों की मृत्यु की तिथ्यानुसार, तिल, जौं, चावल, कुशा, गंगाजल, सहित तर्पण एवं ब्राह्मण भोजन, दानादि व गौग्रास देने से पितर संतृप्त रहतेहैं तथा श्राद्धकर्त्ता को आयु, स्वास्थ्य, धन, ज्ञान, स्वर्ग–मोक्षादि सुखों की प्राप्ति होती है–"**आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखानि च। प्रयच्छन्ति तथा राज्यं प्रोता नृणां पितामहाः॥**" जो कोई व्यक्ति जान–बूझकर श्राद्ध नहीं करता, वह पाप का भागी होकर दुःखों से पीड़ित रहता है। दिवंगत की निधन तिथि का ज्ञान न होने पर अमावस 13 अक्तू. को श्राद्धादि कर्म करने चाहिएं। इसी पक्ष की अष्टमी तिथि को जीवितपुत्रिका (**श्री महालक्ष्मी**) व्रत सौभाग्यवती स्त्रियां पुत्र सुख की कामना से करती है। **शरद् नवरात्र का प्रारम्भ** 14 अक्तूबर की प्रातः ८.१९ के बाद (अमा. उपरांत) से होगा, क्योंकि प्रतिपदा तिथि १५ अक्तूबर की शुक्रवार को मात्र ३ पल तक ही व्याप्त है। **लोक भविष्य**—आश्विन मास में पांच बुध एवं पांच बृहस्पतिवार होने से मिश्रित प्रभाव रहेंगे। पाँच बुधवारों के प्रभाव से अनाज आदि की पैदावार में वृद्धि होगी तथा उच्च वर्ग में सुख-सुविधाओं के साधनों का विस्तार होगा। परन्तु पांच बृहस्पतिवार होने से कुछ प्रदेशों में उपयुक्त वर्षा की कमी रहे, तो कहीं अतिवृष्टि से बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से जन व धन–सम्पदा को क्षति पहुंचे। भारत के पश्चिमी क्षेत्रों (काश्मीर, राजस्थान, पंजाब आदि) में कहीं विग्रह, तोड़-फोड़, हिंसा एवं विस्फोट की घटनाएं घटित हों। पक्ष में **कालयोग** के प्रभाव से भी राजनैतिक वातावरण विक्षुब्ध, अस्थिर एवं अशान्तरहे। **व्यापारिक रुख**—30 सितं. (द्वितीया को बुध हस्त में आने से थोक एवं वायदा बाज़ार में खामोशी एवं मन्दी का माहौल रहेगा। ता. ३ को घटा-बढ़ी के बाद पुनः मन्दी रहे। ता. १० को सूर्य चित्रा में आने से सोना, चान्दी, रूई, सूत, गुड़, चीनी, गेहूँ, चने, तिल, तैल, जूट, पटसन,खल-बिनौला में तेजी होगी।

आकाश लक्षण—भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में कहीं छिट-पुट खण्ड वर्षा होगी। **शकुन—आ. कृ. नवमी को** पुष्य नक्षत्र में बूंदा-बांदी हो, तो गेहूँ, चावल, उड़द, व दालों का संग्रह करने से लाभ रहे।

वि: संवत् २०६१, आश्विन शुक्ल पक्ष शाकः १९२६ — सन् 2004 ई. (ता. 15 अक्तू. से 28 अक्तू. तक) — जालन्धर

सूर्य दक्षिणायने, दक्षिण गोल, शरद्–हेमन्त ऋतुः

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	आंग. शक.	रमजान	अक्तूबर	आश्विन	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल
२८/१८	१	शुक्र	०	०३	स्वा	४२	०५	विष्क	२०	२८	ब	०	०३	२३	२९	15	३०	तुला
अवम	२	शुक्र	५४	४८	०	०	०	0	०	०	0	०	०	०	०	०	०	००
२८/१३	३	शनि	४८	५८	विशा	३८	१३	प्रीति	१३	०८	तै	२१	५३	२४	रम	16	कार्ति	बृ. २४।१३
२८/१०	४	रवि	४२	५३	अनु	३४	००	आयु सौभा	५ ५७	२५ ३०	व	१५	५६	२५	२	17	२	बृश्चिक
२८/०५	५	चंद्र	३६	४०	ज्ये	२९	३८	शोभ	४९	३५	ब	९	४७	२६	३	18	३	ध. २९।३८
२८/००	६	मंग.	३०	३५	मूला	२५	२३	अति	४१	४५	कौ	३	३८	२७	४	19	४	धनु
२७/५८	७	बुध	२४	५३	पूषा	२१	२८	सुक	३४	१५	व	२४	५३	२८	५	20	५	म. ३५।३३
२७/५३	८	गुरु	१९	३३	उषा	१७	५५	धृति	२७	०८	ब	१९	३३	२९	६	21	६	मकर
२७/४८	९	शुक्र	१४	५०	श्रव	१४	५८	शूल	२०	२८	कौ	१४	५०	३०	७	22	७	कुं. ४३।४८
२७/४३	१०	शनि	१०	५०	धनि	१२	४३	गंड	१४	२३	ग	१०	५०	का	८	23	८	कुम्भ
२७/४०	११	रवि	७	३८	शत	११	१८	वृद्धि	८	५८	वि	७	३८	२	९	24	९	मी. ५५।४८
२७/३५	१२	चंद्र	५	२०	पूभा	१०	४३	ध्रुव	४	१३	बा	५	२०	३	१०	25	१०	मीन
२७/३०	१३	मंग	४	००	उभा	११	०८	व्या हर्ष	० ५७	१५ १३	तै	४	००	४	११	26	११	मीन
२७/२५	१४	बुध	३	४८	रेव	१२	३८	वज्र	५५	००	व	३	४८	५	१२	27	१२	मे. १२।३८
२७/२३	१५	गुरु	४	४८	अश्वि	१५	१८	सिद्धि	५३	४८	ब	४	४८	६	१३	28	१३	मेष

ग्रह लोपदर्शन–26 अक्तू. से बुध तथा 7 ता. से मंगल उदय होगा, गुरु–शुक्र प्रातः पूर्व में व शनि याम्योत्तर में दृश्य होंगे।

व्रत-पर्व	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
आश्विन प्रतिपदा २ मिनट से भी कम होने से **नवरात्रे १४ अक्तू. A**	५	२८	०५	५४	६	३४	१७	५३
द्वितीया तिथि का क्षय **A से प्रा. होंगे**, श्री अग्रसेन जयंती, चन्द्रदर्शन	०	०	०	०	०	०	०	०
सूर्य तुला में ५४/५७, कार्ति. सक्रांति 30 मुहू. पुण्य सक्रां. अगले **B**	५	२९	०५	२७	६	३५	१७	५२
भ. १५/५६ से ४२/५३ तक **B** दिन, १ रमजान, बुध स्वाती में १६/२५	६	००	०४	५९	६	३५	१७	५१
उपांग ललिता व्रत, गण्डमूलादि **C** सरस्वती विसर्जन, मंगल चित्रा **+**	६	०१	०४	३७	६	३६	१७	५०
सरस्वती आवाहनं (मूले), गण्डमूल. **+** में ५१/२५ स.सि.यो.	६	०२	०४	१५	६	३७	१७	४९
भ. २४/५३ से ५२/१३ तक, **सरस्वती पूजन, दुर्गापूजारंभ**	६	०३	०३	५३	६	३७	१७	४८
दुर्गाष्टमी, महाष्टमी, शुक्र उ.फा. में ८/४५	६	०४	०३	३६	६	३८	१७	३७
पंचकारंभ 24/10 स्टै. टा., **महानवमी, विजयादशमी (दशहरा) C**	६	०५	०१	२१	६	३९	१७	४६
भ. ३९/१४ से प्रा. सूर्य स्वा १ में ३७/०५, **शुक्र कन्या में ५५/४३ D**	६	०६	०१	०७	६	४०	१७	४५
भ. ७/३८ तक, **पापांकुशा एका. व्रत**, बुध विशा १ में ४३/१३	६	०७	००	५२	६	४०	१७	४४
सोमप्रदोष व्रतम् D सायन सूर्य बृश्चिक में 7/19 स्टै. टा. हेमंत	६	०८	०२	४०	६	४१	१७	४३
बुध पश्चिमोदय २/३०, गण्डमूलादि ११/०९ स्टै. टा. उप. स.सि.योग	६	०९	०२	३२	६	४२	१७	४२
भ. ३/४८ से ३४/१८ तक, **व्रत शरद् पूर्णिमा,** कोजागर व्रत, **F**	६	१०	०२	२४	६	४३	१७	४१
शरद् पूर्णिमा स्नानदान, **श्री बाल्मीकि जयं,** कार्तिक स्नान शुरु **E**	६	११	०२	१६	६	४३	१७	४०

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 21 अक्तूबर — गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 28 अक्तू. — **E** ओली समा. (जैन), स. सि. योग. — **F मंगलोदय पूर्वे 24/10**

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	५	६	५	४	३	०	६
०४	०५	२२	१४	११	२६	०३	०८	०८
००	०७	०५	०७	३५	२६	०६	१२	१२
४८	१६	०४	३५	३०	११	३७	५६	५६
५९ ४१	८४३ ४९	३९ १९	९३ ५४	१२ २७	७१ ४४	१ ५८	३ ११	३ ११
चित्रा	उषा	हस्त	स्वा	हस्त	पूफा	पुर्न	अश्वि	स्वा
४	३	४	३	१	४	४	३	१
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

७ सू. बु. के. — ८ — ९ — १० चं. — ११ — १२ — १ रा. — २ — ३ — ४ श. — ५ शु. — ६ मं. गु

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	५	६	५	५	३	०	६
१०	०९	२६	२४	१३	०४	०३	०७	०७
५९	२७	४०	५३	०१	५०	१९	५०	५०
१४	५२	४६	०३	४६	२०	२०	४१	५१
५९ ५४	७५६ ५	३९ ३१	९० २	१२ ९	७२ २५	१ ५	३ १०	३ १०
स्वा	अश्वि	चित्रा	विशा	हस्त	उफा	पुर्न	अश्वि	स्वा
२	३	२	२	१	३	४	३	१
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30 बजे

७ सू. बु. के. — ८ — ९ — १० — ११ — १२ — १ चं. रा. — २ — ३ — ४ श. — ५ — ६ मं. गु. शु.

आश्विन शुक्ल पक्षफल—आश्विन शुक्ल प्रतिपदा १४ अक्तू. से शारदीय **नवरात्रारम्भ** होंगे। प्रतिपदा को घटस्थापन, षोडशोपचार सहित श्री दुर्गापूजन करें। पूजा मन्त्र– **ॐ जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते। आगच्छ वरदे देवी। पूजां गृहाण समुखि नमस्ते शंकरप्रिये॥** नवरात्रों में श्री दुर्गा पूजा एवं कुमारी कन्या पूजन, दानादि का विशेष महत्त्व है। **विजयादशमी** (२२ अक्तू.) को सायंकाले रावणदाह श्री रामचन्द्रजी की पूजा एवं अपराजिता पूजन करना चाहिए। **शरद् पूर्णिमा** २७ अक्तू. की रात्रि को खीर (मेवा–किशमिश युक्त) छिटकती चांदनी में रात भर सुरक्षित रखकर दूसरे दिन सेवन करने से मानसिक एवं अनेक असाध्य रोगों की शान्ति होगी है। **लोक भविष्य**—पक्षारम्भ में सूर्य-केतु की अंशात्मक युति (२५ अक्तू.) को होगी। **कार्तिक संक्रान्ति** शनिवार को होने से सर्व प्रकार के अनाज एवं जनोपयोगी वस्तुओं के मूल्य तेज होंगे। विभिन्न प्रकार की राजनीतिक पार्टियों के मध्य विरोध एवं टकराव पैदा हों। सीमाओं पर युद्ध भय, राजनेताओं में किसी प्रधान नेता की पदच्युति या परिवर्तन हो। **सौरैश्वारे रविसंक्रश्चेद् दुर्भिक्षमायाति च सर्वधान्यम्। पृथ्वी सरोगानृपतेः प्रजासु भवेन्महायुद्ध–भयंतदानीम्॥** लोगों में विचित्र प्रकार के रोगों की बहुलता हो।

व्यापारिक रुख—कार्तिक संक्रान्ति ३० मुहूर्ति शनिवार को होने से गेहूँ, उड़द, चने, काली मिर्च, घृत, खाद्य तेल, मैदा, मक्का, अलसी, सरसों, सोना–चान्दी, लोहा–ताम्र आदि धातुएं तेज भाव होंगी। २१ अक्तूबर को शुक्र उफा. में चावल, चने, गेहूँ, तिल, तैल, में तेजी की चमक बरकरार रखेगा।

संक्रान्ति राशिफल—का. संक्रान्ति मेष, मिथुन, सिंह, तुला, मकर व मीन-राशि वालों को शुभ एवं लाभदायक रहेगी। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में हिमाचल, पंजाब, कश्मीर, असम, आदि प्रदेशों के उत्तरी भागों में खण्ड वर्षा के योग हैं। **शकुन**— शरद् पूर्णिमा को वर्षा की बौछारें पड़ें, तो अनाज एवं करियाना की मार्कीट में एक सप्ताह के भीतर विशेष तेजी होने के संकेत हैं।

वि. संवत् २०६१, कार्तिक कृष्ण पक्ष शाकः १९२६														तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2004 ई. (ता. 29 अक्तू. से 12 नवंबर तक) सूर्य दक्षिणायणे, दक्षिण गोलार्द्ध, हेमन्त ऋतु					जालन्धर भा. स्टैं. टा.			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	कार्ति. प्र.	म. मु	अक्तूबर	कार्ति. प्रवि.	प्रवेश घटी पल	ग्रह लोपदर्शन—प्रातः मंगल, गुरु, शुक्र पूर्व में दृश्य रहेंगे, बुध सायं पश्चिम में दिखेगा, प्रातः शनि याम्योत्तरासन्न रहेगा	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
२७/१८	१	शुक्र	६	५८	भर	१९	०५	व्य	५३	२८	कौ	६	५८	७	१४	29	१४	वृ. ३५/१५	**का. कृष्ण प्रतिपदा,** शनि पुष्य में ३२/४५, गुरु हस्त (२) में २७/१५	६	१२	०२	१३	६	४४	१७	३९
२७/१३	२	शनि	१०	२३	कृति	२४	०५	वरी	५४	००	ग	१०	२३	८	१५	30	१५	वृष	भद्रा ४२/३९ से प्रारम्भ, स. सि. योग.	६	१३	०२	१०	६	४५	१७	३८
२७/०८	३	रवि	१४	५५	रोहि	३०	०८	परि	५५	२०	वि	१४	५५	९	१६	31	१६	वृष	भ. १४/५५ तक, **श्री गणेश करक चतुर्थी व्रत (करवा चौथ) A**	६	१४	०२	११	६	४६	१७	३७
२७/०३	४	चंद्र	२०	२५	मृग	३७	००	शिव	५७	१३	बा	२०	२५	१०	१७	नंव	१७	मि. ३/२८	शुक्र हस्त में १२/५५, **मंगल तुला में** ५९/०८, ता. १ नवं., स. सि. यो.	६	१५	०२	१३	६	४७	१७	३६
२७/००	५	मंग	२६	३३	आर्द्रा	४४	२३	सिद्ध	५९	२५	तै	२६	३३	११	१८	2	१८	मिथुन	**मंगल तुलामें 6/26 स्टै. टा.,** बुध अनु. १ में ३९/२३	६	१६	०२	१५	६	४७	१७	३५
२६/५८	६	बुध	३२	५०	पुर्न	५१	४५	साध्य	६०	००	व	३२	५०	१२	१९	3	१९	क. ३४/५५	भद्रा ३२/५० से प्रा; **स्कन्द षष्ठी**	६	१७	०२	२२	६	४८	१७	३५
२६/५३	७	गुरु	३८	४५	पुष्य	५८	४०	साध्य	१	२८	वि	५	४८	१३	२०	4	२०	कर्क	भद्रा ५/४८ तक, सर्वार्थ सिद्ध योगः सूर्योदय से	६	१८	०२	३०	६	४९	१७	३४
२६/४८	८	शुक्र	४३	४८	श्ले	६०	००	शुभ	३	०८	बा	११	१७	१४	२१	5	२१	कर्क	**व्रत अहोई अष्टमी, राधाष्टमी,** गण्डमूलादि	६	१९	०२	४१	६	५०	१७	३३
२६/४५	९	शनि	४७	३३	श्ले	४	३५	शुक्ल	४	००	तै	१५	४१	१५	२२	6	२२	सिं. ४/३५	सूर्य विशाखा में 5/42 स्टै. टा., गण्डमूलादि **B** स. सि. योग	६	२०	०२	५१	६	५०	१७	३२
२६/४३	१०	रवि	४९	३३	मघा	९	०३	ब्रह्म	३	४५	व	१८	३३	१६	२३	7	२३	सिंह	भ. १८/३३ से ४९/३३ तक, गण्डमूलादि 10/28 स्टैं. टा. तक.	६	२१	०३	०५	६	५१	१७	३२
२६/३८	११	चंद्र	४९	३८	पूफा	११	५०	ऐंद्र वैधृ	२ ५९	०५ ०३	ब	१९	३६	१७	२४	8	२४	कं. २७/१३	**रमा एकादशी व्रत,** कौमुदि महोत्सव प्रा., **शनि वक्री १३/५०**	६	२२	०३	२३	६	५२	१७	३१
२६/३५	१२	मंग	४७	५३	उफा	१२	४८	विष्क	५४	२८	कौ	१८	४६	१८	२५	9	२५	कन्या	**गोवत्स द्वादशी A** वृश्चिके बुध २२/५३, चं.उ. रात्रि 7/45 पर	६	२३	०३	३९	६	५२	१७	३०
२६/३३	१३	बुध	४४	१८	हस्त	११	५३	प्रीति	४८	३०	ग	१६	०६	१९	२६	10	२६	तु. ४०/४८	भ. ४४/१८ से प्रा., **प्रदोष व्रत, धन त्र्योदशी, धनवन्तरी जयं. B**	६	२४	०३	३७	६	५२	१७	२९
२६/३०	१४	गुरु	३९	०५	चित्रा	९	१८	आयु	४१	१३	वि	११	४२	२०	२७	11	२७	तुला	भ. ११/४२ तक, नरक चौदस, श्री हनुमान जयं, काली पूजा, दीपदान	६	२५	०४	२०	६	५३	१७	२९
२६/२५	३०	शुक्र	३२	३८	स्वा	५	१५	सौभा	३२	५८	च	५	५२	२१	२८	12	२८	वृ. ४६/३०	**दीपावली, श्री महालक्ष्मी पूजा,** महावीर निर्वाण, शुक्र चित्रा में **C**	६	२६	०४	४५	६	५४	१७	२८

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 5 नवंबर — शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 12 नवम्बर — **C** ८/४५, मंगल स्वाती में २/३५, ज्ये. १ बुध ११/५०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	६	७	५	५	३	०	६
१८	१६	०१	०६	१४	१४	०३	०७	०७
५९	१६	५७	३८	३७	३१	२४	२५	२५
२१	४८	२५	०६	३३	५९	४०	१६	१६
६० १०	७२६ ४४	३९ ४२	८५ २८	११ ४३	७३ ५	० १९	३ ११	३ ११
स्वा	पुष्य	चित्रा	अनु	हस्त	हस्त	पुष्य	अश्वि	स्वा
४	४	२	१	२	२	१	३	१
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

७ सू. मं. के.; ८ बु.; ६ गु. शु.; ५; ४ चं. श.; ३; २; १ रा.; १२; ११; १०; ९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	६	७	५	५	३	०	६
२६	१७	०६	१६	१५	२३	०३	०७	०७
०१	५४	३५	१९	५८	०५	२४	०३	०३
१५	१२	५७	४४	२०	००	३०	०१	०१
६० २३	९३२ १९	३९ ५५	७९ ९	११ १७	७३ ३३	० २९	३ ११	३ ११
विशा	स्वा	चित्रा	अनु	हस्त	हस्त	पुष्य	अश्वि	स्वा
२	४	४	४	२	४	१	३	१
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा. प्रातः 5.30 बजे

७ सू. चं. म. के.; ८ बु.; ६ गु. शु; ५; ४ श.; ३; २; १ रा; १२; ११; १०; ९

कार्तिक कृष्ण पक्षफल—इस पक्ष में करक चतुर्थी अर्थात करवा चौथ (३१ अक्तू.) का व्रत सुहागिन स्त्रियां पति की मंगल कामना एवं आयु वृद्धि के लिए करती हैं। सायं श्री गणेश जी एवं गौरी की कथा सुनकर चन्द्रमा को अर्घ्य देने के पश्चात् भोजन करती हैं। **अहोई अष्टमी** (5 नवं.) का व्रत, पूजन भी सन्तान व पति की रक्षा हेतु किया जाता है। **10 नव.** त्रयोदशी को **धनवन्तरी** का जन्मोत्सव व औषधदान तथा नवीन बर्तन का क्रय किया जाता है। 12 नवं. को **श्री महालक्ष्मी** का पूजन व **दीपमाला** का शुभ पर्व है। इस रात्रि को किए गए जप, तप, अनुष्ठानादि का अनेक गुणा अधिक फल प्राप्त होता है।

लोक भविष्य—गत मास गुरु शीघ्र अतिचार गति को प्राप्त हो चुका है। इस पक्ष में शनि कर्क राशि में वक्री हो रहा है, जिससे देश में कहीं दुर्भिक्ष (अनाज में कमी), अराजकता, उपयोगी वस्तुओं की कीमतों में अत्याधिक वृद्धि से प्रजा में क्षोभ, रोग एवं अशान्ति रहे। राजनेताओं में परस्पर विवाद, टकराव एवं विरोध पैदा हों। कहीं राजनैतिक गतिरोध पैदा होंगे। **यदा क्रूर ग्रहो वक्री हि अतिचारी सौम्यकः। पीडा व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्षं राज्य विग्रहम्॥ आकाश लक्षण**—पंजाब, जम्मू-कश्मीर, हि. प्र., हरियाणा एवं उत्तरी भारत के पहाड़ी क्षेत्रों में कहीं तेज व कहीं हल्की खण्ड वर्षा होने के योग हैं।

शकुन—पक्ष में पाँच शुक्रवार होने से जनसंख्या में वृद्धि तथा सुख व ऐश्वर्य के साधनों में विस्तार होगा।

भारत के मुख्य नगरों में करवा चौथ *(31 अक्तू.) के दिन का चन्द्रोदय*

नगर	चंद्रोदय	नगर	चन्द्रोदय	नगर	चंद्रोदय	नगर	चन्द्रोदय
अमृतसर	19 43	दिल्ली	19 42	शिमला	19 38	पटियाला	19 43
चण्डीगढ़	19 39	अम्बाला	19 42	हरिद्वार	19 36	बीकानेर	20 02
जम्मू -	19 41	मुम्बई	19 50	लुधियाना	19 42	जयपुर	19 38

वि. संवत् २०६१, कार्तिक शुक्ल पक्ष शाकः १९२६ — सन् 2004 ई. (ता. 13 नवं से 26 नवं. तक) — जालन्धर

सूर्य दक्षिणायणे, दक्षिण गोलार्द्ध, हेमन्त ऋतु — भा. स्टैं. टा.

ग्रह लोपदर्शन—मंगल, गुरु, व शुक्र पूर्व में दृश्य रहेंगे, बुध व शनि पश्चिमी आकाश में दृश्य होंगे।
G भीष्मपंचक समा. मेला पुष्कर, त्रिपुरोत्सव, कार्तिक स्नान समाप्त

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	कार्ति. प्र.	रम. मु.	नवंबर	कार्तिक	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.
२६/२३	१	शनि	२५	२०	विशा अनु	० ५४	१० २३	शोभ	२४	००	बव	२५	२०	२२	२९	13	२९	वृश्चिक	कार्तिक शुक्ल १, **गोवर्धन-अन्नकूट**-बलि पूजन, विश्वकर्मा A	६	२७	०५	०८	६	५४	१७	२८
२६/१८	२	रवि	१७	२८	ज्ये.	४८	१३	अति	१४	३०	कौ	१७	२८	२३	३०	14	३०	ध. ४८/१३	**चंद्रदर्शन १५ मु., भाई दूज** (भ्रातृ २), यम द्वितीया, विश्वकर्मा B	६	२८	०५	३९	६	५६	१७	२७
२६/१३	३	चंद्र	९	२५	मूला	४२	०८	सुक धृति	४ ५५	५५ ३३	गर	९	२५	२४	शव	15	मार्ग	धनु	भ. ३५/३३ से, **सूर्य वृश्चिक** में ५३/२३, **मार्ग संक्रां** ३० मु., गुरु C	६	२९	०६	११	६	५८	१७	२७
२६/०८	४	मंग	१	४०	पूषा	३६	३३	शूल	४६	३५	वि	१	४०	२५	२	16	२	म. ५०/१५	भ. १/४० तक, **ज्ञान पंचमी** A पूजा (पंजाब) B दिवस, गंडमूल	७	००	०६	४१	६	५९	१७	२६
००	५	मंग	५४	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	पंचमी तिथि का क्षय C हस्त ३ में ३९/५५, पुण्य संक्रां. सू.उ. से +	०	०	०	०	०	०	०	०
२६/०३	६	बुध	४८	१०	उषा	३१	४३	गंड	३८	१८	कौ	२१	२०	२६	३	17	३	मकर	शुक्र तुला में ३४/१३, वक्री शनि पुर्न. ४ में ५२/५५, सूर्य षष्ठी	७	०१	०७	१३	७	००	१७	२५
२६/००	७	गुरु	४२	५८	श्रव	२७	५५	वृद्धि	३०	५०	गर	१५	३४	२७	४	18	४	कुं. ५६/२८	भ. ४२/५८ से, **पंचकारम्भः** ५६/२८ (29/36 घं. मिं.)	७	०२	०७	४६	७	०१	१७	२५
२५/५५	८	शुक्र	३९	००	धनि	२५	२०	ध्रुव	२४	२३	वि	१०	५९	२८	५	19	५	कुम्भ	भ. १०/५९ तक, सूर्य अनु. १ में ११/३०, राहु अश्वि. २, केतु D	७	०३	०८	२३	७	०२	१७	२४
२५/५३	९	शनि	३६	२०	शत	२४	००	व्या	१८	५८	बा	७	४०	२९	६	20	६	कुम्भ	**अक्षया नवमी,** कूष्माण्ड ९ D चित्रा ४ में १७/३३, **गोपाष्टमी**	७	०४	०८	५९	७	०३	१७	२४
२५/५१	१०	रवि	३५	०८	पूभा	२४	०५	हर्ष	१४	४०	तै	५	४४	३०	७	21	७	मी. ८/५८	सूर्य सायन धनु में 28/52 घं. मिं., स. सि. योगः 16/41 उप.	७	०५	०९	३४	७	०३	१७	२४
२५/४८	११	चंद्र	३५	०८	उभा	२५	२३	वज्र	११	२०	व	५	०८	मा	८	22	८	मीन	भ. ५/०८ से ३५/०८ तक, **देवप्रबोधिनी एका. व्र.,** चातुर्मास्य E	७	०६	१०	११	७	०४	१७	२३
२५/४५	१२	मंग	३६	२०	रेव	२७	५०	सिद्ध	९	००	ब	५	४४	२	९	23	९	मे. २७/५०	पंच समा. २७/५०, **तुलसी विवाह,** शुक्र स्वा. में 6/29 स्टै. गं.मू.	७	०७	१०	५१	७	०५	१७	२३
२५/४३	१३	बुध	३८	४०	अश्वि	३१	३०	व्य	७	३०	कौ	७	३०	३	१०	24	१०	मेष	**मूला. १ बुध धनु** में ३/५०, प्रदोष व्रत, गं.मू., बैकुण्ठ चौदश F	७	०८	११	३२	७	०६	१७	२३
२५/४०	१४	गुरु	४२	००	भर	३५	५५	वरी	६	५०	ग	१०	२०	४	११	25	११	वृ. ५२/१३	भ. ४२/०० से, **बैकुण्ठ चौदश** निशीथ व्या. + १०/४३ तक अगले दिन	७	०९	१२	१४	७	०७	१७	२३
२५/३८	१५	शुक्र	४६	१५	कृति	४१	३०	परि	६	५३	वि	१४	०८	५	१२	26	१२	वृष	भ. १४/०८ तक, **कार्तिक पूर्णिमा** व्रतादौ, **श्री गुरु नानक जयं.,** G	७	१०	१२	५८	७	०८	१७	२३

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 19 नवम्बर   शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 26 नवं.   E व्रत नियम समा., भीष्मपंचक प्रा.   F अरूणोदय व्याप्ति आगामी दिन

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	९	६	७	५	६	३	०	६
०३	२९	११	२५	१७	०१	०३	०६	०६
०४	५६	१५	००	१५	४१	१८	४०	४०
३२	२८	५०	०४	४३	०१	४८	४६	४६
६० ३३	८२६ ०८	४० ५	६५ ४४	१० ४४	७० ५५	१ २६	३ ११	३ ११
विशा	धनि	स्वा	ज्ये	हस्त	चित्रा	पुन	अश्वि	स्वा
४	२	२	३	३	२	४	३	१
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे
९
मं. ७ शु. के.
८ सू. बु.
१० चं.
६ गु
११
५
२
१२
४ श.
१ रा
३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	६	८	५	६	३	०	६
१०	००	१५	०१	१८	१०	०३	०६	०६
०८	४६	५६	१९	२९	१९	०७	१८	१८
५०	०८	५९	४३	०६	२६	४३	३१	३१
६० ४२	७३१ १४	४० १७	३३ ३८	१० ८	७४ १५	२ १	३ ११	३ ११
अनु	कृति	स्वा	मूला	हस्त	स्वा	पुन	अश्वि	चित्रा
३	२	३	१	३	२	४	२	४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30 बजे
९ बु.
मं. ७ शु. के
८ सू.
१०
६ गु.
११
५
२ चं.
१२
४ श.
१ रा
३

कार्तिक शुक्ल पक्षफल—द्वितीया (१४ नवं) को **भाई दूज** के दिन स्नान, शिव-पार्वती एवं यम पूजनोपरान्त बहन अपने भाई की मंगल कामना हेतु उसे तिलक लगाती है। भाई अपनी बहन को श्रद्धानुसार वस्त्राभूषण आदि का उपहार देता है। **देवप्रबोधिनी एकादशी को श्री विष्णु पूजा, तुलसी विवाह एवं चातुर्मास्य व्रत नियमों का उद्यापन किया जाता है ॥** इसी दिन **भीष्म पंचकारम्भ** होकर कार्तिक पूर्णिमा के दिन समाप्ति होती है।

लोक भविष्य—शनि इस पक्ष में भी वक्री अवस्था में संचार कर रहा है, तथा सौम्य ग्रह शुक्र अतिचार स्थिति में है। फलस्वरूप देश में कहीं अनाज आदि कृषि की कमी एवं दुर्भिक्ष की स्थिति बने, राजनीतिक नेताओं में परस्पर वैर, विरोध एवं टकराव पैदा हों। लोकसभा चुनाव के बाद केन्द्र में राजनैतिक संकट पैदा होने की संभावना के संकेत मिलते हैं—**"यदा क्रूर ग्रहो वक्री शुभोऽतीचारभागतः। युद्धादि भवति दुर्भिक्षं राज्ञां वैरं परस्परम् ॥** सीमाओं पर सैनिक टकराव एवं युद्धादि की भी सम्भावना होगी। **व्यापारिक रुख**—इस पक्ष की द्वितीया को चन्द्रदर्शन रविवार को हुआ है। जिससे गुड़, तेल, पटसन, खल-बिनौला, सरसों, तोरिया, सोना, चांदी में तेजी तथा रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी होगी। ता. 15 को मार्गशीर्ष संक्रांति ३० मुहूर्ति है। सूर्य का बुध से योग होगा। रुई, तांबा, चांदी, सोना, ऊनी वस्त्र, खल-बिनौला, सोयाबीन, तेल में तेजी, लाल रंग की वस्तुओं में कुछ मन्दी का प्रभाव रहेगा। ता. १७ नवं. को शुक्र तुला राशि में गुरु के साथ मेल करेगा। रुई, चांदी, सोना, गुड़, चीनी, चने, चावलों में तथा शेयरों में भी तेजी का रुख होगा। ता. १९ को सूर्य अनुराधा में गेहूँ, जौं, चना, चावलों में तेजी का रुख करेगा। सोना, चांदी में घटाबढ़ी रहेगी। ता. २४ को बुध धनु राशि में आने से रुई, कपास, सोयाबीन, व चांदी में घटाबढ़ी रहेगी। **आकाश लक्षण**—पक्ष के उत्तरार्ध भाग में हि. प्र. व उत्तरी भारत के कुछ क्षेत्रों में बूंदाबांदी व खण्ड वर्षा के योग हैं।

शकुन—का. पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र होने से घी, गेहूँ, चने का संग्रह बाद में बेचना लाभप्रद होगा।

वि. संवत् २०६१, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष शाकः १९२६														तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	सन् 2004 ई. (ता. 27 नवम्बर से 11 दिसं. तक) सूर्य दक्षिणायने, दक्षिण गोलार्द्ध, हेमन्त ऋतु	जालन्धर भा. स्टैं. टा.							
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	मार्गशीर्ष	ग्राह्य मु.	नवंबर	मार्ग. प्र.		ग्रह लोपदर्शन—मंगल, गुरु व शुक्र प्रातः पूर्व में दृश्य होंगे, 4 दिसं. को बुध सायं पश्चिम में अस्त, शनि प्रातः पश्चिमी कपाल में दृश्य होगा।	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
२५/३३	१	शनि	५१	१५	रोहि	४७	२८	शिव	७	३३	बा	१८	४५	६	१३	27	१३	वृष	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षारंभः, स. सि. योगः	७	११	१३	४३	७	०९	१७	२२
२५/३०	२	रवि	५७	००	मृग	५४	१५	सिद्ध	८	४८	तै	२४	०८	७	१४	28	१४	मि. २०।४५		७	१२	१४	३०	७	१०	१७	२२
२५/२९	३	चंद्र	६०	००	आर्द्रा	६०	००	साध्य	१०	३३	व	२८	३०	८	१५	29	१५	मिथुन	भद्रा ३०/०४ से, **A बुध वक्री 17/41 घं. मिं.**, सौभाग्य सुन्दरी व्र.	७	१३	१५	१४	७	१०	१७	२२
२५/२८	३	मंग.	३	०८	आर्द्रा	१	३०	शुभ	१२	३५	वि	३	०८	९	१६	30	१६	क. ५२।०८	भ. ३/०८ तक, **व्रत श्री गणेश चतुर्थी**, चन्द्रोदय रात 20/10, **A**	७	१४	१६	०२	७	११	१७	२२
२५/२५	४	बुध	९	३०	पुर्न	८	५८	शुक्ल	१४	४३	बा	९	३०	१०	१७	दिसं	१७	कर्क	**ता. १ दिसं. प्रारंभ**, मंगल विशाखा १ में ५७/०५	७	१५	१६	५२	७	१२	१७	२२
२५/२३	५	गुरु	१५	४५	पुष्य	१६	१८	ब्रह्म	१६	४३	तै	१५	४५	११	१८	2	१८	कर्क	सूर्य ज्येष्ठा १ में २२/२५, स. सि. योगः	७	१६	१७	४३	७	१३	१७	२२
२५/२२	६	शुक्र	२१	२८	श्ले.	२३	०५	ऐंद्र	१८	२०	व	२१	२८	१२	१९	3	१९	सिं. २३।०५	भ. २१/२८ से ५३/४७ तक, शुक्र विशाखा में ४४/०३, गं. मू.	७	१७	१८	३३	७	१३	१७	२२
२५/२०	७	शनि	२६	०५	मघा	२८	५३	वैधृ	१९	१०	ब	२६	०५	१३	२०	4	२०	सिंह	**बुध पश्चिम में अस्त** 18/10 स्टै. टा., काल भैरवाष्टमी (निशीथ व्या.)	७	१८	१९	२८	७	१४	१७	२२
२५/१८	८	रवि	२९	१३	पूफा	३३	१३	विष्क	१८	५३	कौ	२९	१३	१४	२१	5	२१	क. ४९।००	**काल भैरवाष्टमी** (प्रदोष योगे), गुरू हस्त (४) में १७/१७	७	१९	२०	२०	७	१५	१७	२२
२५/१५	९	चंद्र	३०	३३	उफा	३५	४५	प्रीति	१७	१५	ग	३०	३३	१५	२२	6	२२	कन्या	**वक्री बुध बृश्चिक राशि** में २/१३	७	२०	२१	१६	७	१६	१७	२२
२५/१४	१०	मंग.	२९	५०	हस्त	३६	२३	आयु	१४	०८	व	०	१२	१६	२३	7	२३	कन्या	भद्रा ०/१२ से २९/५० तक, **पार्श्वनाथ जयंती** (जैन)	७	२१	२२	१५	७	१६	१७	२२
२५/१३	११	बुध	२७	०३	चित्रा	३४	५५	सौभा	९	२०	बा	२७	०३	१७	२४	8	२४	तु. ५।५०	**उत्पन्ना एकादशी** व्रत, वैतरणी व्रत	७	२२	२३	१४	७	१७	१७	२२
२५/१०	१२	गुरु	२२	१५	स्वा.	३१	३५	शोभ अति	२ ५५	५८ ०८	तै	२२	१५	१८	२५	9	२५	तुला	**प्रदोष व्रतम्**	७	२३	२४	१५	७	१८	१७	२२
२५/०९	१३	शुक्र	१५	४५	विशा	२६	३५	सुक	४६	०३	व	१५	४५	१९	२६	10	२६	बृ. १२।५५	भद्रा १५/४५ से ४१/५० तक,	७	२४	२५	१६	७	१९	१७	२२
२५/०८	१४	शनि	७	५५	अनु.	२०	१८	धृति	३६	०३	श	७	५५	२०	२७	11	२७	बृश्चिक	**शनैश्चरी अमावस**, स्नानदान, तर्पणादि, **शुक्र बृश्चिक में ४५/५८ B**	७	२५	२६	१८	७	२०	१७	२३
००	३०	शनि	५९	०८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	अमावस का क्षय	०	०	०	०	०	०	०	०

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 5 दिसं.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	६	८	५	६	३	०	६
१९	१८	२२	०१	१९	२१	०२	०५	०५
१५	५०	००	०१	५६	२९	४६	४९	४९
५६	५६	३४	०९	४५	०३	०१	५३	५३
६० ५४	७५३ १०	४० ३३	५४ ६	९ १३	७४ ३५	२ ५५	३ ११	३ ११
ज्ये.	पूफा	विशा	मूला	हस्त	विशा	पुर्न	अश्वि	चित्रा
१	२	१	१	३	१	४	२	४
०	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

९ बु. | मं. ७ शु. के. | ६ गु. | १० | ८ सू. | ११ | ५ चं. | १२ | २ | ४ श. | १ रा. | ३

शनौ चतुर्दश्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 11 दिसं.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	६	७	५	६	३	०	६
२५	१०	२६	२३	२०	२८	०२	०५	०५
२१	२७	०४	४७	५०	५७	२७	३०	३०
३९	५८	१९	४९	२४	०२	१२	४७	४७
६१ १	९०९ १६	४० ४३	८१ १०	८ ३२	७४ ४५	३ २६	३ ११	३ ११
ज्ये.	अनु.	विशा	ज्ये.	हस्त	विशा	पुर्न	अश्वि	चित्रा
३	३	२	३	४	३	४	२	४
०	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. चतुर्दशी, प्रातः 5.30 बजे

९ | मं. ७ शु. के. | ६ गु. | १० | ८ सू. चं. बु. | ११ | ५ | १२ | २ | ४ श. | १ रा. | ३

B देविका स्नान, मेला पुरमण्डल, श्री बालाजी जयन्ती

मार्ग. कृष्ण पक्षफल—इस पक्ष की अष्टमी को **शिव मन्दिर** में जाकर श्री महाकाल **भैरव** के रूप में **भगवान् शंकर** की पूजा, जप व संकीर्तन करने का विशेष माहात्म्य कहा गया है। **उत्पन्ना एका.** (८ दिसं.) का विधिपूर्वक व्रत रखने से सर्व प्रकार के अभीष्टों की सिद्धि होती है। त्रयोदशी से अमावस्या तक जम्मू के निकट **मेला पुरमण्डल** तथा देविका स्नान कुरूक्षेत्र में पुण्य पर्व मनाया जाता है। शनिवार को मार्ग. अमावस होने से हरिद्वार आदि तीर्थों पर विशेष मेला होगा। **लोक भविष्य**—मार्गशीर्ष मास में पाँच शनिवार एवं पाँच रविवार होने से एशिया के कुछ देशों जैसे—भारत, पाकिस्तान, चीन, अफगानिस्तान, नेपाल, श्रीलंका आदि में आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि के कारण लोगों में उपद्रव, रोग, तनाव, शोक एवं हिंसक घटनाएँ अधिक होंगी। केन्द्रिय मन्त्रीमण्डल में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलेंगे। केन्द्रिय मन्त्रिमण्डल में कुछ नए राजनैतिक गठजोड़ उभरकर आएँगे। उड़ीसा, बिहार, राजस्थान आदि प्रदेशों के कुछ क्षेत्रों में अनाज आदि की कमी के कारण अराजकता की सम्भावना होगी—**''शनिवारा यदा पंचजायते रविपंचकम्। महर्घं जायते धान्यं रोग शोकाकुला पृथिवी॥''** **व्यापारिक रुख**—चतुर्थी तिथि (३० नवं.) को बुध धनु राशि में वक्री होने से खल-बिनौले, चीनी, शक्कर, तिल, चाँदी एवं रसदार वस्तुओं में तेजी होगी। परन्तु धान्यादि में मन्दी का रूझान होगा। **''बुधो वक्री यदा स्यात् चेदिक्ष्वादीनां महर्घता। सुभिक्षं सर्वधान्यानि भविष्यति न संशयः।''** २ दिसं. को मंगल विशाखा एवं सूर्य ज्येष्ठा में आने से गेहूँ, गुड़, चने, खल-बिनौले, अलसी, सरसों, रूई आदि में घटा-बढ़ी के बाद तेजी होगी। ११ को अमावस तिथि का क्षय होने से करियाना बाज़ार में अचानक अस्थिरता का वातावरण बनेगा।

आकाश लक्षण—भारत के पश्चिमी भागों के पहाडी एवं उत्तरी क्षेत्रों में कहीं शीत लहरें चलने लगेंगी। कहीं रूककर खण्ड वर्षा होगी।

वि. संवत् २०६१, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष शाकः १९२६ — सन् 2004 ई. (ता. 12 से 26 दिसंबर तक) — जालन्धर

सूर्य दक्षिणा–उत्तरायणे, दक्षिणी गोल, हेमंत–शिशिर ऋतुः — भा. स्टैं. टा.

ग्रह लोपदर्शन—मंगल, गुरू व शुक्र प्रातः पूर्व दिशा में दृश्य, १५ दिसं. से बुध भी पूर्व में दिखाई देगा। शनि पश्चिम में दृश्य होगा

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	मार्ग. शक	श्रावा. मु.	दिसंबर	मार्ग. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ह. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२५/०६	१	रवि	४९	५०	ज्ये.	१३	१०	शूल	२५	२८	किं	२४	२९	२१	२८	12	२८	ध. १३|१०	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षारम्भ, गण्डमूलादि **A** अनु. १ में २६/२०	७	२६	२७	२२	७	२१	१७	२३
२५/०४	२	चंद्र	४०	३०	मूला पूषा	५ ५८	४३ २०	गंड	१४	४०	बा	१५	१०	२२	२९	13	२९	धनु	**चन्द्रदर्शन** ३० मुहू., गण्डमूल 9/38 तक (स्टैण्डर्ड टाईम)	७	२७	२८	२५	७	२१	१७	२३
२५/०३	३	मंग	३१	३३	उषा	५१	३०	वृद्धि ध्रुव	४ ५३	०० ५५	तै	६	०२	२३	जि.	14	३०	म. ११|३३	भद्रा ५७/३२ से, वक्री बुध ज्येष्ठा १ में 5/33 घं. मिं., शुक्र **A**	७	२८	२९	२९	७	२२	१७	२३
२५/०३	४	बुध	२३	३०	श्रव	४५	४३	व्या.	४७	०५	वि	२३	३०	२४	२	15	पौष	मकर	भ. २३/३० तक, **सूर्य मूला १ धनु** में २८/५८, **पौष संक्रांति B**	७	२९	३०	३५	७	२२	१७	२४
२५/०३	५	गुरु	१६	४०	धनि	४१	१८	हर्ष	३६	२८	बा	१६	४०	२५	३	16	२	कुं. १३|१८	**पंचकारम्भ** १३/१८, **मंगल बृश्चिक में १/५८,** श. दि. **C**	८	००	३१	३८	७	२३	१७	२४
२५/०२	६	शुक्र	११	२५	शत	३८	३०	वज्र	२९	३८	तै	११	२५	२६	४	17	३	कुम्भ	चम्पा षष्ठी (महाराष्ट्र) **C** गु. तेग बहादुर, स्कन्द षष्ठी (पंचमी विद्वा)	८	०१	३२	४५	७	२३	१७	२४
२५/०२	७	शनि	७	५८	पूभा	३७	३५	सिद्धि	२४	१५	व	७	५८	२७	५	18	४	मी. २२|३८	भद्रा ७/५८ से ३७/०८ तक, मित्र सप्तमी **E** शक पौष शुरू	८	०२	३३	४९	७	२४	१७	२५
२५/०१	८	रवि	६	१८	उभा	३८	२३	व्य.	२०	१८	ब	६	१८	२८	६	19	५	मीन	श्री दुर्गाष्मी, स. सि. योगः **B** ३० मुहू. बुध पूर्वोदय 8/45 घं. मिं. पुण्य संक्रां. दुपै. 12/33 से,	८	०३	३४	५७	७	२४	१७	२६
२५/००	९	चंद्र	६	३०	रेव	४०	५३	वरी	१७	४३	कौ	६	३०	२९	७	20	६	मे. ४०|५३	**पंचक समाप्त ४०/५३, बुध मार्गी 12/06 घं. मिं.,** गण्डमूलादि	८	०४	३६	०४	७	२५	१७	२६
२५/००	१०	मंग.	८	२०	अश्वि	४४	५०	परि	१६	२३	ग	८	२०	३०	८	21	७	मेष	भ. ३९/५७ से, मंगल अनु. में ३४/५५, बुध ज्ये.में ३१/१३ **D**	८	०५	३७	०९	७	२६	१७	२६
२५/०१	११	बुध	११	३३	भर	४९	५८	शिव	१६	०५	वि	११	३३	पौष	९	22	८	मेष	भ. ११/३३ तक, मोक्षदा एका. व्रत, गीता जयं., मौनी ११ (जैन), **E**	८	०६	३८	१७	७	२६	१७	२७
२५/०१	१२	गुरु	१५	५५	कृति	५६	००	सिद्ध	१६	३५	बा	१५	५५	२	१०	23	९	वृ. ६|२३	**अखण्ड द्वादशी, प्रदोष व्रतम्** **F** (क्रिश्चि.), स. सि. योग	८	०७	३९	२४	७	२७	१७	२७
२५/०२	१३	शुक्र	२१	०५	रोहि	६०	००	साध्य	१७	४३	तै	२१	०५	३	११	24	१०	वृष	**G** भैरव जयं., मेला जोड़ तीन दिवसीय पंजाब	८	०८	४०	२९	७	२७	१७	२८
२५/०२	१४	शनि	२६	४८	रोहि	२	३८	शुभ	१९	१५	व	२६	४८	४	१२	25	११	मि. ३६|०८	भ. २६/४८ से ५९/५१ तक, पिशाचमोचन श्राद्ध, शुक्र ज्ये. में ६/५३, क्रिसमिस डे **F**	८	०९	४१	३६	७	२७	१७	२८
२५/०३	१५	रवि	३२	५३	मृग	९	४०	शुक्ल	२१	०३	ब	३२	५३	५	१३	26	१२	मिथुन	मार्गशीर्ष पूर्णिमा व्रत स्नानदानादौ, श्री दत्तात्रेय जयं., त्रिपुर **G**	८	१०	४२	४३	७	२७	१७	२९

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 19 दिसं. रवौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 26 दिसम्बर **D सायन सूर्य मकर में** 18/12 घं. मिं., सा. सूर्य उत्तरायणे, शिशिर ऋतुः प्रा., स. सि. यो.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	७	७	५	७	३	०	६
०३	०७	०१	१६	२१	०८	०१	०५	०५
३०	१५	३०	३९	५५	५५	५७	०५	०५
०५	१०	५४	४६	१०	३९	२७	२०	२०
६१ ५	७८२ २६	४० ५७	७ ४५	७ ३१	७४ ५५	४ ३	३ ११	३ ११
मूला	उभा	विशा	अनु	हस्त	अनु	पुर्न	अश्वि	चित्रा
२	२	४	४	४	२	४	२	४
०	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

१० — ९ सू. — मं. ८ बु. शु. — ७ के. — ११ — १२ चं. — ६ गु. — ३ — १ रा. — ५ — २ — ४ श.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	७	७	५	७	३	०	६
१०	०३	०६	१८	२२	१७	०१	०४	०४
३७	४६	१८	४८	४४	४०	२७	४३	४३
४४	४४	०८	२६	५१	१८	४८	०५	०५
६१ ८	७१५ ४८	४१ ३	२७ ३८	६ ५७	७४ ५८	४ १८	३ ११	३ ११
मूला	मृग	अनु	ज्ये.	हस्त	ज्ये.	पुर्न	अश्वि	चित्रा
४	४	१	१	४	१	४	२	४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30 बजे

१० — ९ सू. — मं. ८ बु. शु. — ७ के. — ११ — १२ — ६ गु. — ३ चं. — १ रा. — ५ — २ — ४ श.

मार्ग. शुक्ल पक्षफल—इस पक्ष में **मोक्षदा एकादशी** का व्रत (२२ दिसं.) विधिपूर्वक रखने तथा भगवान् विष्णु की पूजा, यथाशक्ति दानादि करने से अनेक मानसिक व कायिक पापों की निवृत्ति तथा पुण्यों की प्राप्ति होती है। इसी दिन **गीता जयन्ती** के उपलक्ष्य में श्री **मद्भगवद्गीता** की सुगन्धित फूलों द्वारा पूजा, स्वाध्याय, मनन व चिन्तन करना चाहिए। २६ दिसं. **मार्ग. पूर्णिमा** का **ब्रह्मा, विष्णु, महेश** के अंश अवतार **श्रीदत्तात्रेय** की बालरूप में पूजा की जाती है। **लोक भविष्य**—मार्गशीर्ष मास में पौष संक्रान्ति का प्रवेश होने से राजनैतिक क्षेत्रों में अस्थिरता एवं अशान्ति होने के संकेत हैं। कहीं अनाज की कमी के कारण दुर्भिक्ष एवं अराजकता व्याप्त हो। **मार्गशीर्षे धनुषि हि यदाऽयाति दिवाकरः। तदा दुर्भिक्षकं ज्ञेयः विपरीत सुखं भवेत्॥** अत्यधिक महँगाई के कारण सामान्य लोगों में सुख की कमी रहेगी। इसके अतिरिक्त मार्ग. मास में पाँच रविवारों का होना देश में कहीं छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन) होने के संकेत हैं—**"यत्र मासे रविवाराः जायन्ते पंचसततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंगश्च वहिण दाहो महर्घता॥"** कहीं उपद्रव एवं अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक प्रकोप घटित हों। **व्यापारिक रूख**—१५ दिसं. को पौष संक्रान्ति ३० मुहूर्ति है। रूई, कपास, सन, सूत, तैल, सोना, चाँदी, सोयाबीन, किशमिश, लौंग घटाबढ़ी के बाद तेज होंगे। इसीदिन बुध पूर्व से उदित होने से वायदा एवं थोक मार्कीट में तेजी रहेगी। ता. २० को **बुध मार्गी** होने से घी, गुड़, चीनी, तैल, एरण्डी, रूई में व शेयरों में मन्दी, परन्तु मूँगफली, खल–बिनौलों एवं पशुचारा में तेजीकारक होगा। ता. २१ को मंगल अनुराधा में आने से रूई, कपास, गेहूँ, लाल मिर्च, गेहूँ, चावल, सोना वा ताँबा में तेजी करेगा। परन्तु २५ दिसं. को शुक्र ज्येष्ठा में आकर सोना, चाँदी, सरसों, तैल, रूई व कपास में मन्दी का रूझान करेगा। **संक्रांति राशिफल**—मार्ग. संक्रांति वृष, सिंह, कन्या, बृश्चिक, धनु व मीन राशि वालों को शुभफलदायक रहेगी। अन्य राशि वालों को मिश्रित प्रदान करेगी।
आकाश लक्षण—पक्ष के उत्तरार्द्ध भाग में तेज हवाओं के साथ कहीं खण्ड वर्षा एवं ओलावृष्टि के योग हैं।

वि. संवत् २०६१, पौष कृष्ण पक्ष शाकः १९२६ — सन् 2004-05 ई. (ता. 27 दिसं. से 10 जन. तक)

सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोलार्द्ध, शिशिर ऋतु

भा. स्टैं. टा.

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	पौष शक	जिल्काद	दिसम्बर	पौष प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रह लोपदर्शन—मंगल, बुध, शुक्र प्रातः पूर्व में दृश्य, गुरु याम्योत्तरासन्न दृश्य होगा, शनि पश्चिम में दृश्य होगा।	रा.	सू. अं.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२५/०३	१	चंद्र	३९	१०	आर्द्रा	१६	५८	ब्रह्म	२३	०५	बा	६	०२	६	१४	27	१३	मिथुन	पौष कृष्ण पक्षारम्भः	८	११	४३	५१	७	२८	१७	२९
२५/०३	२	मंग.	४५	२८	पुर्न	२४	१८	ऐंद्र	२५	०५	तै	१२	१९	७	१५	28	१४	क. ७/२८	सूर्य पू.षा. में २४/१८	८	१२	४५	०१	७	२९	१७	३०
२५/०५	३	बुध	५१	३८	पुष्य	३१	३५	वैधृ	२७	०५	व	१८	३३	८	१६	29	१५	कर्क	भद्रा १८/३३ से ५१/३८ तक,	८	१३	४६	०८	७	२९	१७	३१
२५/०५	४	गुरु	५७	२५	श्ले	३८	३५	विष्क	२८	५०	ब	२४	३२	९	१७	30	१६	सिं. ३८/३५	**श्री गणेश चतुर्थी** व्रत (चं. उ. रात 8/54 पर), गण्डमूलादि	८	१४	४७	१६	७	२९	१७	३१
२५/०६	५	शुक्र	६०	००	मघा	४४	५८	प्रीति	३०	१०	कौ	२८	४३	१०	१८	31	१७	सिंह	गुरू चित्रा (१) में ३६/२०, गण्डमूल, **सन् 2004 ई. समाप्त**	८	१५	४८	२६	७	३०	१७	३२
२५/०७	५	शनि	२	२५	पूफा	५०	२५	आयु	३०	४८	तै	२	२५	११	१९	जन	१८	सिंह	**1 जनवरी सन् 2005 ई. प्रारम्भः**	८	१६	४९	३५	७	३०	१७	३३
२५/०८	६	रवि	६	१८	उफा	५४	३०	सौभा	३०	३०	व	६	१८	१२	२०	2	१९	कं. ६/३०	भद्रा ६/१८ से ३७/३३ तक, स. सि. योग:	८	१७	५०	४७	७	३१	१७	३३
२५/०९	७	चंद्र	८	४८	हस्त	५७	००	शोभ	२९	००	ब	८	४८	१३	२१	3	२०	कन्या		८	१८	५१	५५	७	३१	१७	३४
२५/१०	८	मंग.	९	३०	चित्रा	५७	३५	अति	२६	०३	कौ	९	३०	१४	२२	4	२१	तु. २७/३०	**शुक्र मूले १ धनु में** ४६/१५ (26/01 घं.मिं. स्टै.टा.), रुक्मणि अष्टमी	८	१९	५३	०५	७	३१	१७	३५
२५/१३	९	बुध	८	१३	स्वा.	५६	१३	सुक	२१	३३	ग	८	१३	१५	२३	5	२२	तुला	भ. ३६/३२ से प्रा., **बुध मूले १ धनु में ३०/२५** (19/41 स्टै. टा.)	८	२०	५४	१५	७	३१	१७	३६
२५/१४	१०	गुरु	४	५०	विशा	५२	५३	धृति	१५	२८	वि	४	५०	१६	२४	6	२३	बृ. ३८/५३	भ. ४/५० तक, **सफला एकादशी व्रत** स्मार्त्त, पार्श्वनाथ जयंती	८	२१	५५	२४	७	३१	१७	३७
००	११	गुरु	५९	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	एकादशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२५/१८	१२	शुक्र	५२	३५	अनु.	४७	५०	शूल गंड	७ ५८	५० ५३	कौ	२६	०५	१७	२५	7	२४	बृश्चिक	**सफला एकादशी वैष्णव, त्रिस्पर्शा महाद्वादशी,** बोधनाचार्य A	८	२२	५६	३४	७	३१	१७	३८
२५/१९	१३	शनि	४४	१३	ज्ये.	४१	२३	वृद्धि	४८	५०	ग.	१८	२४	१८	२६	8	२५	ध. ४१/२३	भद्रा ४४/१३ से प्रा., **शनि प्रदोष व्रतम्**	८	२३	५७	४४	७	३१	१७	३८
२५/२०	१४	रवि	३४	५३	मूला	३३	५८	ध्रुव	३८	००	वि	९	३३	१९	२७	9	२६	धनु	भ. ९/३३ तक, मंगल ज्येष्ठा में ५६/५७ (30/18 घं. मिं.)	८	२४	५८	५४	७	३१	१७	३९
२५/२३	३०	चंद्र	२५	०५	पूषा	२६	०३	व्या.	२६	५०	च	२५	०५	२०	२८	10	२७	म. ३९/०३	**सोमवती अमावस,** स्नानदानादौ तीर्थेषु, सूर्य उषा. १ में ३९/१०	८	२६	००	०४	७	३१	१७	४०

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 4 जन.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	७	७	५	७	३	०	६
१९	२२	१२	२८	२३	२८	००	०४	०४
४७	५३	२९	००	३८	५५	४६	१४	१४
५७	४३	३५	१७	११	४९	०३	२६	२६
६१ १०	७९९ ३	४१ २६	७४ ३९	५ ९	७५ ७	४ ४९	३ ११	३ ११
पूषा	हस्त	अनु.	ज्ये.	चित्रा	ज्ये.	पुर्न	अश्वि	चित्रा
२	४	३	४	१	४	४	२	४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

१०
मं. ८ बु. शु.
९ सूर्य
७ के.
११
१२
६ चं. गु.
३
१ रा.
५
२
४ शनि

चन्द्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 10 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	७	८	५	८	३	०	६
२५	१८	१६	०५	२४	०६	००	०३	०३
५४	४२	३८	५०	०६	२६	१६	५५	५५
५६	३०	३७	१८	३४	३८	४८	२१	२१
६१ १०	९२२ २८	४१ ३६	८२ ३५	४ ८	७५ ९	४ ५६	३ १०	३ १०
पूषा	पूषा	अनु	मूला	चित्रा	मूला	पुर्न	अश्वि	चित्रा
४	२	४	२	१	२	४	२	४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30 बजे

१०
९ सू. चं. बु. शु.
८ मं.
७ के.
११
१२
६ गु.
३
१ रा.
५
२
४ श.

A जयंती, स. सि. योग:

पौष कृष्ण पक्षफल—पौष मास में गेहूँ, धान्यादि, अनाज, कम्बलादि गर्म वस्त्र, ईंधन सामग्री, मौसमी फल दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। पौष संक्रान्ति को अनाज से पूरित ताम्र-पात्र (कलश-गड़वा आदि) का गुड़ सहित दान करने से क्लिष्ट रोग की शान्ति होती है। ६ जन. को **सफला एकादशी** का व्रत विधिपूर्वक करने से सर्व प्रकार के पापों का क्षय होता है। इस दिन भगवान् विष्णु की पूजा करने के उपरान्त ब्राह्मणों को भोजन, दक्षिणा आदि का दान करने का विशेष फल होता है। **सोमवती अमावस** (१० जन.) को हरिद्वार आदि तीर्थों पर स्नानदान आदि करने का विशेष माहात्म्य होता है।

लोक भविष्य—पौष मास में पाँच सोम एवं पाँच मंगलवार होने से मिश्रित (शुभाशुभ) फल प्राप्त होंगे। पाँच सोमवारों के प्रभावस्वरूप देश में धान्य आदि शीतकालीन फसलें अच्छी होने के संकेत हैं। परन्तु **पाँच मंगलवार** होने से देश के किसी प्रमुख नेता के लिए अनिष्टकर प्रमाणित होंगे। पाक आदि विरोधी देश के साथ सैनिक टकराव की सम्भावना होगी। केन्द्रिय मन्त्रीमण्डल में अथवा सत्ता परिवर्तन के भी संकेत हैं। कई स्थानों पर हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ भी घटित होंगी—"**यत्र मासे महीसूनो जायन्ते पंचवासराः। रक्तेनपूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥**" आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि से प्रजा में आक्रोश एवं गहन असंतोष व्याप्त रहे। **व्यापारिक रूख**—द्वितीया (२८ दिसं.) को सूर्य पू.षा. में आने से तैल, सरसों, अलसी, खल-बिनौले, गुड़, चीनी, चमड़ा, ऊनी वस्त्र, किशमिश, जवाहरात, सोना व चाँदी में तेजी की चमक बरकरार रहेगी। ३१ दिसं. से गुरु चित्रा नक्षत्र में आने से रूई, कपास, चीनी एवं धान्य आदि में घटाबढ़ी चलेगी। वायदा बाज़ार में कुछ खामोशी का वातावरण रहेगा। ४ जन. को शुक्र मूला नक्षत्र एवं धनु राशि में आने से गेहूँ, जौं, चना आदि अनाज तथा सोना, चाँदी, ताँबा आदि धातुएं एवं शेयरों में तेजी का रूझान होगा—**यदा च धनु राशिस्थो दैत्याचार्यः प्रवर्तते। महर्घं च विजानीयात्सर्व सस्यं विनश्यति॥** ता. ५ को बुध धनु राशि में रूई-कपास में घटाबढ़ी तथा मार्कीट में मन्दीकारक होगा।

आकाश लक्षण—इस पक्ष में पंजाब, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर आदि प्रदेशों में शीत हवाओं के साथ खण्ड वर्षा एवं ओला वृष्टि के योग हैं। **शकुन**—पौष प्रतिपदा को बादल चाल हो, तो आगामी सुभिक्ष के संकेत हैं।

वि. संवत् २०६१, पौष शुक्ल पक्ष, शाकः १९२६														तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2005 ई. (ता. 11 जन. से 25 जन. तक) सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोलार्द्ध, शिशिर ऋतुः	जालन्धर भा. स्टैं. टा.							
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	पौष शक	जिल्काद	जनवरी	पौष प्रवि.	प्रवेश घटी पल	ग्रह लोपदर्शन—मंगल, शुक्र पूर्व में, बुध २४ जन. तक पूर्व में २५ जन. से अस्त, गुरू याम्योत्तर से पश्चिमनत, शनि पूर्व में दृश्य होगा।	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२५/२५	१	मंग.	१५	१८	उषा	१८	०८	हर्ष	१५	४३	ब	१५	१८	२१	२९	11	२८	मकर	पौष शुक्ल पक्षारम्भ, **चन्द्रदर्शनम्** ३० मुहूर्त्ति **A** हरि. हि. प्र., दिल्ली)	८	२७	०१	१४	७	३१	१७	४१
२५/२६	२	बुध	६	०३	श्रव	१०	४८	वज्र सिद्धि	५ ५५	०० ०५	कौ	६	०३	२२	जि.	12	२९	कुं. ३७/२८	**पंचकारम्भः** ३७/२८ (22/30 घं. मिं.), **लोहड़ी पर्व** (पंजाब, **A**	८	२८	०२	२३	७	३१	१७	४२
००	३	बुध	५७	४८	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	तृतीया तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२५/२८	४	गुरु	५०	५८	धनि शत	४ ५९	२८ ४०	व्य.	४६	२०	व	२४	२३	२३	२	13	माघ	कुम्भ	भ. २४/२३ से ५०/४८ तक, **सूर्य मकर** में ५५/२८, **माघ संक्रांति B**	८	२९	०३	३२	७	३१	१७	४३
२५/३३	५	शुक्र	४५	५५	पूभा	५६	४०	वरी	३९	०३	ब	१८	२७	२४	३	14	२	मी. ४२/१५		९	००	०४	३७	७	३०	१७	४३
२५/३५	६	शनि	४२	५५	उभा	५५	४०	परि	३३	२०	कौ	१४	२५	२५	४	15	३	मीन	बुध पूषा में १४/१८, शुक्र पूषा १ में २५/००	९	०१	०५	४४	७	३०	१७	४४
२५/३८	७	रवि	४२	०३	रेव	५६	४८	शिव	२९	१८	ग	१२	२९	२६	५	16	४	मे. ५६/४८	भ. ४२/०३ से, **पंचक समाप्त** ५६/४८, **गु. गोबिंद सिंह** जयं., गं.मू.	९	०२	०६	५१	७	३०	१७	४५
२५/४०	८	चंद	४३	१५	अश्वि	५९	५०	सिद्ध	२६	५३	वि	१२	३९	२७	६	17	५	मेष	भद्रा १२/३९ तक, गण्डमूलादि, श्री दुर्गाष्टमी **D** नक्षत्र में २९/२३	९	०३	०७	५८	७	३०	१७	४६
२५/४५	९	मंग.	४६	१८	भर	६०	००	साध्य	२५	५५	बा	१४	४७	२८	७	18	६	मेष	**C** १०/००, स. सि. योगः, सूर्य अभिजित् से निवृत्त ३७/०५	९	०४	०९	००	७	३०	१७	४७
२५/५०	१०	बुध	५०	५०	भर	४	३५	शुभ	२६	१३	तै	१८	३४	२९	८	19	७	वृ. २१/००	सूर्य सायन कुम्भ में 28/52 स्टै. टा., स. सि. योगः	९	०५	१०	०५	७	२९	१७	४९
२५/५३	११	गुरु	५६	२०	कृति	१०	३८	शुक्ल	२७	२०	व	२३	३५	३०	९	20	८	वृष	भद्रा २३/३५ से ५६/२० तक, **पुत्रदा एकादशी व्रतम्**, सूर्य अभिजित् **D**	९	०६	११	०७	७	२९	१७	५०
२५/५५	१२	शुक्र	६०	००	रोहि	१७	२८	ब्रह्म	२९	०५	ब	२८	१०	मा	१०	21	९	मि. ५१/०८	राहु अश्वि १, केतु चित्रा ३ में २/१५, शाकः माघारम्भः	९	०७	१२	११	७	२९	१७	५१
२५/५८	१२	शनि	२	३५	मृग	२४	५०	ऐंद्र	३१	१०	बा	२	३५	२	११	22	१०	मिथुन	शनि प्रदोष व्रत	९	०८	१३	११	७	२८	१७	५१
२६/००	१३	रवि	८	५८	आर्द्रा	३२	१८	वैधृ	३३	२०	तै	८	५८	३	१२	23	११	मिथुन	सूर्य श्रवण (१) में ४५/०३, नेता जी **सुभाष जयंती**	९	०९	१४	११	७	२८	१७	५२
२६/०३	१४	चंद	१५	२०	पुर्न	३९	४०	विष्क	३५	२३	व	१५	२०	४	१३	24	१२	क. २२/५०	भ. १५/२० से ४८/२५ तक, **व्रत श्री सत्यनारायण**, बुध उषा. में **C**	९	१०	१५	११	७	२८	१७	५३
२६/०५	१५	मंग.	२१	३०	पुष्य	४६	४५	प्रीति	३७	१५	ब	२१	३०	५	१४	25	१३	कर्क	**पौष पूर्णिमा,** माघ स्नानारम्भ, **बुध पूर्व** में अस्त ३०/५०, शाकंभरी जयं.	९	११	१६	०८	७	२८	१७	५३

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 17 जन. भौमे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 25 जनवरी **B** १५ मुहू. पुण्य संक्रां. पर दिने दुपै. १२/०६ स्टै. टा. तक, वक्री शनि मिथुन में १८/४८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	११	७	८	५	८	२	०	६
०३	२९	२१	१५	२४	१५	२९	०३	०३
०२	३७	३०	४६	३१	१२	४२	३३	३३
५३	१९	२५	२६	५१	४६	११	०६	०६
६१ ५	७६२ २६	४१ ४७	८८ १०	२ ५५	७५ १०	४ ५६	३ १०	३ १०
उषा	श्रव	ज्ये.	पूषा	चित्रा	पूषा	पुर्न	अश्वि	चित्रा
२	४	२	१	१	१	३	२	४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

११ | बु. ९ शु. | १२ चं. | १० सू. | ८ मं. | १ रा. | ७ के. | ४ | २ | ६ गु. | ३ श. | ५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	७	८	५	८	२	०	६
११	०६	२७	२७	२४	२५	२९	०३	०३
११	२३	०५	४९	४९	१४	०३	०७	०७
११	४९	३१	३३	५८	०१	१४	४०	४०
६० ५९	७१६ २१	४२ १	९३ ११	१ २६	७५ १०	४ ४६	३ ११	३ ११
श्रव	पुष्य	ज्ये.	उषा	चित्रा	पूषा	पुर्न	अश्वि	चित्रा
१	१	४	१	१	४	३	१	३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ/अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30 बजे

११ | बु. ९ शु. | १२ | १० सू. | ८ मं. | १ रा. | ७ के. | ४ चं. | २ | ६ गु. | ३ श. | ५

पौष शुक्ल पक्षफल—इस पक्ष में माघ संक्रान्ति से एक दिन पूर्व लोहड़ी पर्व (१२ जन.) सारे पंजाब, हि. प्र., दिल्ली, हरियाणा व जम्मू-कश्मीर में मनाया जाता है। **मकर संक्रान्ति** (१३ जन.) को स्नानादि उपरान्त तिलों से हवन, तिलयुक्त वस्तुओं का दान व **भगवान् विष्णु** व सूर्यदेव की उपासना का विधान है। इस दिन तीर्थों पर स्नानदानादि का भी विशेष माहात्म्य होता है। **पुत्रदा एकादशी** (२० जन.) का व्रत विधिपूर्वक करने से **मनोवांछित पुत्र संतान** की प्राप्ति होती है। पौष पूर्णिमा (२५ जन.) से हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, प्रयागादि तीर्थों पर माघ स्नान, दानादि का विशेष माहात्म्य होता है।

लोक भविष्य—पक्ष की चतुर्थी तिथि मकर संक्रान्ति गुरुवार की होने से आगामी काल में अनाजादि की फसल अधिक होगी। लोगों में धर्म-कर्म की ओर भी प्रवृत्ति बढ़े तथा सुख-सुविधाओं के साधनों में विस्तार होगा। परन्तु इसी दिन वक्री शनि पुनः मिथुन राशि में प्रवेश का फल अशुभ होगा। कहीं अनाज की कमी, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक आपदाओं की आशंका होगी। देश के पश्चिमी क्षेत्रों में सैनिक झड़पों एवं युद्ध के समाचार मिलेंगे। **मिथुने च यदा सौरिःदुर्भिक्षं तत्र रौखम्। पश्चिमे दारूणं युद्धं नृपाणां च महद्भयम्॥** देश के नेताओं में परस्पर विद्वेष के कारण राजनीतिक परिस्थितियां अस्थिर होंगी। **व्यापारिक रूख**—१३ जन. को मकर संक्रान्ति १५ मुहूर्त्ति होने से तथा इसी दिन वक्री शनि मिथुन राशि में प्रविष्ट होने से समस्त प्रकार के अनाज, गेहूँ, गुड़, चीनी, चावल, चने, जौं, अलसी, तेल, लोहा आदि तेज होंगे। सोना व चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। इससे पूर्व ११ जन. मंगलवार को चन्द्रदर्शन खल-बिनौला, मूंगफली, तिल, तैल, धान्यादि में तेजीकारक होगा। ता. २५ से बुध धनु राशि में अस्त होने से गेहूँ, खल, बिनौले, रूई, चाँदी व शेयरों में भी घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। परन्तु अधिकांशतः व्यापारियों को बड़ी पूंजी लगाने पर भी लाभ अल्प रहे। **संक्रान्ति राशिफल**—मेष, मिथुन, सिंह, कन्या, बृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन राशि वालों को इस संक्रान्ति का फल शुभ एवं लाभदायक रहेगा। **आकाश लक्षण**—पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में तेज हवाओं के साथ खण्ड वर्षा और शीत लहर चलेगी।

वि. संवत् २०६१, माघ कृष्ण पक्ष शाकः १९२६ — सन् 2005 ई. (ता. 26 जन. से 8 फर. तक) — जालन्धर

सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोलार्द्ध, शिशिर ऋतु — भा. स्टैं. टा.

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	माघ शक	जिल्हेज मु.	जनवरी	माघ प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रह लोपदर्शन—प्रातः मंगल-शुक्र एवं शनि सायं पूर्व में दृश्य, बुधास्त है। गुरू प्रातः पश्चिम कपाल में दृश्य होंगे।	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२६/०८	१	बुध	२७	१३	श्ले.	५३	२८	आयु	३८	४८	कौ	२७	१३	६	१५	26	१४	सिं. ५३/२८	माघ कृष्ण पक्षारंभ, **बुध मकर में १९/००**, शुक्र उषा. में ३/४८. **A**	९	१२	१७	०७	७	२७	१७	५४
२६/१०	२	गुरु	३२	२८	मघा	५९	३५	सौभा	३९	५५	ग	३२	२८	७	१६	27	१५	सिंह	गण्डमूलादि **A** गंडमूलादि, **गणतंत्र दिवस भारत**	९	१३	१८	०५	७	२७	१७	५५
२६/१५	३	शुक्र	३७	०५	पूफा	६०	००	शोभ	४०	३५	व	४	४७	८	१७	28	१६	सिंह	भ. ४/४७ से ३७/०५ तक, **शुक्र मकर राशि में ४३/२८**, जन्म **B**	९	१४	१८	५९	७	२६	१७	५६
२६/१८	४	शनि	४०	४८	पूफा	५	०५	अति	४०	३५	बव	८	५७	९	१८	29	१७	क. २१/१८	**श्री गणेश संकट चौथ व्रत** (चंद्रोदय जालन्धर में 21/39 पर). **C**	९	१५	१९	५५	७	२६	१७	५७
२६/२०	५	रवि	४३	३०	उफा	९	४०	सुक	३९	५०	कौ	१२	०९	१०	१९	30	१८	कन्या	शहीदी दिन महात्मा गाँधी, स. सि. योगः	९	१६	२०	५०	७	२५	१७	५८
२६/२५	६	चंद्र	४४	५०	हस्त	१३	०३	धृति	३८	०३	ग	१४	१०	११	२०	31	१९	तु. ४४/१५	भ. ४४/५० से, **C मंगल मूले १ धनु में ३/५३**	९	१७	२१	४४	७	२५	१७	५९
२६/३०	७	मंग.	४४	३८	चित्रा	१५	०८	शूल	३५	०५	वि	१४	४४	१२	२१	फर	२०	तुला	भ. १४/४४ तक, **जन्म दिन स्वा. विवेकानन्द, पुत्र सप्तमी व्रत, D**	९	१८	२२	३५	७	२४	१८	००
२६/३३	८	बुध	४२	४३	स्वा.	१५	३३	गंड	३०	४८	बा	१३	४१	१३	२२	2	२१	बृ. ५९/४५	गुरू वक्री १/२३ (7/57 स्टै. टा.) **D** बुध श्रवण में ३४/५०	९	१९	२३	२८	७	२४	१८	०१
२६/३५	९	गुरु	३९	०३	विशा	१४	२०	वृद्धि	२५	१०	तै	१०	५३	१४	२३	3	२२	बृश्चिक	सर्वार्थ सिद्ध योगः 13/07 उप.	९	२०	२४	१८	७	२३	१८	०१
२६/३८	१०	शुक्र	३३	४०	अनु.	११	२३	ध्रुव	१८	०८	व	६	२२	१५	२४	4	२३	बृश्चिक	भ. ६/२२ से ३३/४० तक, गण्डमूल 11/56 घं. मिं. से	९	२१	२५	०९	७	२३	१८	०२
२६/४३	११	शनि	२६	५०	ज्ये.	६	५३	व्या.	९	५३	ब	०	१५	१६	२५	5	२४	ध. ६/५३	**षट्तिला एकादशी व्रत,** सूर्य धनि. में ५३/२०, शुक्र श्रवण में **E**	९	२२	२५	५८	७	२२	१८	०३
२६/४८	१२	रवि	१८	५०	मूला पूषा	१ ५४	०५ १८	हर्ष वज्र	० ५०	३५ २८	तै	१८	५०	१७	२६	6	२५	धनु	**प्रदोष व्रत,** गण्डमूल 7/47 तक (स्टै. टा.)	९	२३	२६	४५	७	२१	१८	०४
२६/५३	१३	चंद्र	१०	००	उषा	४७	००	सिद्धि	३९	५५	व	१०	००	१८	२७	7	२६	म. ७/३०	भ. १०/०० से ३५/२४ तक, **मेरू त्रयोदशी** (जैन)	९	२४	२७	३१	७	२०	१८	०५
२६/५८	१४	मंग.	०	४८	श्रव	३९	४३	व्य.	२९	१८	श	०	४८	१९	२८	8	२७	मकर	**भौमवासरी माघ अमा., मौनी अमावस,** स्नानदान, **प्लूटो धनु F**	९	२५	२८	१६	७	१९	१८	०६
००	३०	मंग.	५१	३८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	अमावस का क्षय	०	०	०	०	०	०	०	०

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 2 फरवरी   भौमे चतुर्दश्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 8 फरवरी   **B** दिन लाला लाजपतराय   **E** में ४२/४३, गण्डमूल   **F** राशि में २८/०७ (18/34 घं. मिं.)

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	८	९	५	९	२	०	६
१९	१५	०२	१०	२४	०५	२८	०२	०२
१८	२८	४२	३३	५६	१५	२६	४२	४२
३९	५५	३०	२१	१०	१५	१६	१४	१४
६० ५२	८०९ २३	४२ १५	९८ ३२	० ४	७५ ९	४ २५	३ ११	३ ११
श्रव	स्वा.	मूला	श्रव	चित्रा	उषा	पुन	अश्वि	चित्रा
३	३	१	१	१	३	३	१	३
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

१० सू. बु. शु.
११
९ मं.
१२
८
१ रा.
७ चं. के.
४
२
६ गु.
३ श.
५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	८	९	५	९	२	०	६
२५	१२	०६	२०	२४	१२	२८	०२	०२
२३	०७	५६	३५	५२	४६	००	२३	२३
४०	५९	२८	४९	५०	०७	३८	१०	१०
६० ४६	९१० ३१	४२ २५	१०३ ७	१ १४	७५ ८	४ ३	३ ११	३ ११
धनि	श्रव.	मूला	श्रव	चित्रा	श्रव.	पुन	अश्वि	चित्रा
१	१	३	४	१	१	३	१	३
०	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. चतुर्दशी, प्रातः 5.30 बजे

१० सू. चं. बु. शु.
११
९ मं.
१२
८
१ रा.
७ के.
४
२
६ गु.
३ श.
५

माघ कृष्ण पक्षफल—इस पक्ष की चतुर्थी (२९ जन.) को श्री गणेश संकट चौथ के व्रत का संकल्प "**गणपति प्रीतये संकष्ट चतुर्थी व्रतं करिष्ये**" मन्त्र द्वारा प्रातः स्नानादि के उपरान्त करके रात्रि को श्रीगणेश एवं चन्द्र की लड्डुओं सहित पूजा करके, चन्द्रोदय होने पर "**ॐ सोम् सोमाय नमः**" द्वारा अर्घ्य देने से भगवान् गणेश जी की कृपा से अनेक मानसिक एवं कायिक कष्टों का निवारण हो जाता है। **षट्तिला एकादशी** (५ फर.) को तिल मिश्रित जल से स्नान करके तिलों द्वारा श्री विष्णुपूजा एवं हवन करें। [illegible] तिलों से निर्मित मोदक, बर्फी आदि का दान [illegible] तथा स्वयं उनका सेवन करें तो अनेक पापों का नाश होता है। **भौमवासरी मौनी अमावस** (८ फर.) होने से अत्यन्त पुण्य फलप्रदा रहेगी। इस दिन तीर्थादि पर स्नान दानादि करना विशेष महात्म्य [illegible]। **लोक भविष्य**—माघ मास में पाँच मंगलवार एवं पाँच बुधवार मिश्रित (शुभाशुभ) फल घटित होंगे। गेहूँ, धान्य, दालें, मूंग, हल्दी, दालचीनी, पैट्रोल, दैनिक व्यवहार की वस्तुओं की कीमतों में आशातीत वृद्धि हो। किसी राजनेता का आकस्मिक निधन, मंत्रीमण्डल में परिवर्तन, छत्रभंग अथवा पदच्युति हो—**यत्र मासे महीसूनो जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥**

व्यापारिक रूख—प्रतिपदा को बुध मकर राशि में आने से सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल, लोहा आदि धातुएं तेज भाव होंगी। तृतीया को शुक्र मकर राशि में गेहूँ, जौं, चने, बाजरा, चावल आदि के मूल्य तेज होंगे। कहीं खड़ी फसलों को हानि पहुँचेगी। **मकरे च यदा शुक्रः सर्वसस्य विनाशकृत्। जायतेऽत्र समर्घाणि नाऽत्र कार्या विचारणा॥**

आकाश लक्षण—भारत के उत्तर पश्चिमी भागों में तेज़ हवाओं के साथ खण्ड वर्षा के योग हैं। **शकुन**—अमावस का क्षय अनाज की कीमतों में तेजी की सूचक है।

वि. संवत् २०६१,	माघ शुक्ल पक्ष							शाकः १९२६						तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश	सन् 2005 ई. (ता. 9 फर. से 24 फर. तक) सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोलार्द्ध, शिशिर-बसन्त ऋतु					जालन्धर भा. स्टैं. टा.			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	माघ शक	जिल्हिज	फरवरी	माघ प्रवि.	घटी पल	ग्रह लोपदर्शन—मंगल प्रातः तथा शनि सायं पूर्व दिशा में दृश्य, शुक्र १२ फर. से अस्त, बुध अभी अस्तंगत है, गुरु प्रातः पश्चिम में दृश्य	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२७/०३	१	बुध	४३	०५	धनि	३२	५३	वरी	१८	५८	किं	१५	५२	२०	२९	9	२८	कुं. ६/१३	माघ शुक्ल प्रति, **पंचकारंभः** 9/47 स्टै. टा., बुध धनि. में ३०/४८	९	२६	२८	५८	७	१८	१८	०७
२७/०५	२	गुरु	३५	३०	शत	२७	२०	परि	९	१५	बा	९	१८	२१	३०	10	२९	कुम्भ	चन्द्रदर्शन ३० मु., बाबा लाल जयन्ती	९	२७	२९	४४	७	१८	१८	०८
२७/०७	३	शुक्र	२९	२५	पूभा	२२	२३	शिव सिद्ध	० ५३	३८ १५	तै	२	३८	२२	मो.	11	३०	मी. ८/२०	भ. ५७/१७ से, १ मोहर्रम सन 1426 हिजरी प्रा., **गौरी तृतीया व्रत**	९	२८	३०	२४	७	१७	१८	०८
२७/१३	४	शनि	२५	०८	उभा	१९	३३	साध्य	४७	२८	वि	२५	०८	२३	२	12	फा.	मीन	भ. २५/०८ तक, **सूर्य कुंभ में** २८/३५, **फागु. संक्रां.** ३० मुहू. **A**	९	२९	३१	०४	७	१६	१८	०९
२७/१८	५	रवि	२२	५३	रेव	१८	४५	शुभ	४३	२०	बा	२२	५३	२४	३	13	२	मे. १८/४५	**बुध कुंभ में** ८/२०, **बसंत पंचमी**, श्री ५. सरस्वती जयं., पंचक **B**	१०	००	३१	४३	७	१५	१८	१०
२७/२३	६	चंद्र	२२	४५	अश्वि	२०	००	शुक्ल	४०	५३	तै	२२	४५	२५	४	14	३	मेष	गंडमूलादि	१०	०१	३२	२०	७	१४	१८	११
२७/२८	७	मंग	२४	४३	भर	२३	१८	ब्रह्म	३९	५८	व	२४	४३	२६	५	15	४	वृ. ३९/२३	भद्रा २४/४३ से ५६/३७ तक, **रथ**-आरोग्य-अचला-पुत्र सप्तमी व्रत	१०	०२	३२	५४	७	१३	१८	१२
२७/३३	८	बुध	२८	३०	कृति	२८	२०	ऐंद्र	४०	२०	बव	२८	३०	२७	६	16	५	वृष	**भीष्माष्टमी**, शुक्र धनिष्ठा में २२/१० **B** समा. १८/४५	१०	०३	३३	२८	७	१२	१८	१३
२७/३८	९	गुरु	३३	४०	रोहि	३४	४०	वैधृ	४१	४३	बा	१	०५	२८	७	17	६	वृष	मंगल पूषा में 6/01 स्टै. टा., बुध शत. में ७/०२ स्टै. टा.	१०	०४	३३	५९	७	११	१८	१४
२७/४३	१०	शुक्र	३९	४३	मृग	४१	५३	विष्क	४३	४३	तै	६	४२	२९	८	18	७	मि. ८/१३	सायन सूर्य मीन में 19/02 स्टै. टा., **बसन्त ऋतु प्रारम्भ**	१०	०५	३४	२९	७	१०	१८	१५
२७/४८	११	शनि	४६	१०	आर्द्रा	४९	२५	प्रीति	४५	५८	व	१२	५७	३०	९	19	८	मिथुन	भद्रा १२/५७ से ४६/१० तक, **जया एका. व्रत,** सूर्य शत. १ में ५/०३	१०	०६	३४	५७	७	०९	१८	१६
२७/५३	१२	रवि	५२	३३	पुर्न	५६	५३	आयु	४८	१०	ब	१९	२२	फा.	१०	20	९	क. ४०/०३	**भीष्म द्वादशी**, तिल द्वादशी, शाकः फाल्गुण आरम्भः	१०	०७	३५	२३	७	०८	१८	१७
२७/५५	१३	चंद्र	५८	३०	पुष्य	६०	००	सौभा	५०	०५	कौ	२५	३२	२	११	21	१०	कर्के	**शुक्र कुम्भ राशि में ४२/१३**, स. सि. योगः 5/53 उप.	१०	०८	३५	४७	७	०७	१८	१७
२८/००	१४	मंग	६०	००	पुष्य	४	००	शोभ	५१	३३	ग	२९	१५	३	१२	22	११	कर्के	गण्डमूल विचार 8/42 स्टै. टा. के बाद, स. सि. योगः	१०	०९	३६	०९	७	०६	१८	१८
२८/०५	१४	बुध	३	५०	श्ले.	१०	२५	अति	५२	२५	व	३	५०	४	१३	23	१२	सिं. १०/२५	भ. ३/५० से ३६/०५ तक, **व्रत सत्यनारायण, गण्डमूलादि**	१०	१०	३६	२९	७	०५	१८	१९
२८/०८	१५	गुरु	८	२०	मघा	१६	०५	सुक	५२	४०	बव	८	२०	५	१४	24	१३	सिंह	**माघ पूर्णिमा**, माघ स्नान समा., बुध पू.भा. में ८/५५, **गुरु रविदास जयं.**	१०	११	३६	५०	७	०४	१८	१९

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 16 फर. गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 24 फरवरी **A तिल चतुर्थी, वरद-कुन्द चतुर्थी, शुक्रास्त पूर्वे ३१/१८**

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	८	१०	५	९	२	०	६
०३	०३	१२	०४	२४	२२	२७	०१	०१
२९	२१	३६	४३	३७	४६	३०	५७	५७
११	३९	२९	२४	४४	५८	१७	४३	४३
६० ३४	७३१ ६	४२ ३७	१०९ ३१	२ ४३	७५ ४	३ २८	३ ११	३ ११
धनि	कृति	मूला	धनि	चित्रा	श्रव.	पुर्न	अश्वि	चित्रा
४	३	४	४	१	४	३	१	३
०	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

१२ | १० शु. | ११ सू. बु. | ९ मं. | १ रा. | २ चं. | ८ | ३ श. | ५ | ७ के. | ४ | ६ गु.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	८	१०	५	१०	२	०	६
११	०९	१८	१९	२४	०२	२७	०१	०१
३२	१५	१८	३५	११	४७	०५	३२	३२
५४	२८	०४	४८	०१	११	११	१७	१७
६० १९	७३७ ३२	४२ ४८	११२ ५५	४ ७	७४ ५९	२ ४३	३ ११	३ ११
शत	मघा	पूषा	शत	चित्रा	धनि	पुर्न	अश्वि	चित्रा
२	३	२	४	१	३	३	१	३
०	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30 बजे

१२ | १० | ११ सू. बु. शु. | ९ मं. | १ रा. | २ | ८ | ३ श. | ५ चं. | ७ के. | ४ | ६ गु.

माघ शुक्ल पक्षफल—१२ फर. को फाल्गुण संक्रांति ३० मुहूर्ति है। इसी दिन **तिल चतुर्थी** को **श्री गणेश** जी का व्रत एवं पूजन, तिल, फल व गुड़, लड्डुओं सहित करने का विधान है। **बसन्त पंचमी** (१३ फर.) को भगवान् **श्री विष्णु व सरस्वती** की धूप, दीप, नैवेद्य व गुलाल के साथ पूजा करनी चाहिए तथा पीले एवं मीठे चावलों का भोग लगाने की परम्परा है। **रथ सप्तमी** को सूर्य भगवान् को **'ॐ घृणिः सूर्याय नमः'** इस मन्त्र से अर्घ्य तथा षोडशोपचार सहित पूजन करने से स्वास्थ्य एवं आरोग्यता बनी रहती है। यह व्रत सर्वारिष्ट निवारक है। **माघ पूर्णिमा** को गंगा आदि तीर्थों पर स्नान दानादि करने का विशेष माहात्म्य होगा। **लोक भविष्य**—इस पक्ष में फाल्गुण संक्रान्ति शनिवार के दिन होने से सभी प्रकार अनाज, धान्यादि मंहगे होंगे। लोगों में शोक, असंतोष एवं विचित्र प्रकार के रोगों की बहुलता होगी। लोगों में तनाव एवं विग्रह की प्रवृत्ति अधिक बढ़े। राजनीतिक पार्टियों में भी परस्पर विरोध एवं टकराव अधिक बढ़े—**सौरेश्च वारे रवि संक्रमश्चेद् दुर्भिक्ष मायातिच सर्वधान्यम्। पृथ्वी सरोगनृपतेः प्रजासुभवेन्महायुद्ध भयं तदा नीम्॥** विरोधी देशों के मध्य युद्ध भय होगा। **व्यापारिक रूख**—पक्षारम्भ में बुध धनिष्ठा में आने से धान्य, चावल, गेहूँ, मूंग, उड़द व सुवर्ण में तेजी होगी, परन्तु रूई व चाँदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी होगी। १२ फर. को फागुन संक्रान्ति शनिवार को होने से घी, तैल, गुड़, मूंगफली, गेहूँ, मिर्चों व दालचीनी व तेजी करेगा। ता. १६ को शुक्र धनिष्ठा में चावल, मूंग, मोंठ, उड़द, बाजरा, सोना, चाँदी, रूई व कपास में तेजी करेगा। गेहूँ में कुछ मन्दी रहे। ता. २१ को शुक्र कुम्भ राशि में सूर्य, बुध के साथ योग करेगा। रूई, कपास, गेहूँ, चने, जौं, मूंग, गुड़, चीनी, दूध आदि स्वेत वस्तुओं में मन्दी करेगा। २४ अंश के शुक्र पर रूई में खास तेजीकारक होगा। **फाल्गुन संक्रान्ति**—वृष, मिथुन, सिंह, तुला, बृश्चिक, धन, कुम्भ व मीन राशि वालों को शुभ फलदायक रहेगी। **आकाश लक्षण**—पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में वायु वेग अधिक रहेगा। कहीं हल्की बूंदा-बांदी की भी संभावना है। **शकुन**—बसन्त पंचमी (१३ फर.) को बादल चाल हो, तो सुभिक्ष के संकेत हैं।

वि. संवत् २०६१, फाल्गुन कृष्ण पक्ष शाकः १९२६ — सन् 2005 ई. (ता. 25 फर. से 10 मार्च तक) — जालन्धर

सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोलार्द्ध, बसन्त ऋतु — भा. स्टैं. टा.

ग्रह लोपदर्शन—१ मार्च से बुध पश्चिम से उदित, प्रातः मंगल व शनि सायं पूर्व में दृश्य, गुरु पश्चिम में दृश्य, शुक्र अभी अस्तंगत रहेगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	फाल्गु. शक	मोहर्रम	फरवरी	फाल्गुन	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२८/१३	१	शुक्र	११	५८	पूफा	२०	५५	धृति	५२	१३	कौ	११	५८	६	१५	25	१४	कं. ३६/५८	फाल्गुन कृष्ण पक्षारम्भः	१०	१२	३७	०६	७	०३	१८	२०
२८/१८	२	शनि	१४	४३	उफा	२४	५३	शूल	५१	०३	ग	१४	४३	७	१६	26	१५	कन्या	भद्रा ४५/३६ से प्रारम्भ **A व्रत**, स. सि. योगः	१०	१३	३७	२२	७	०२	१८	२१
२८/२३	३	रवि	१६	२८	हस्त	२७	५३	गंड	४९	०८	वि	१६	२८	८	१७	27	१६	तु. ५८/५८	भ. १६/२८ तक, शुक्र शतभिषा में २/३३, **श्री गणेश चतुर्थी A**	१०	१४	३७	३६	७	०१	१८	२२
२८/२८	४	चंद्र	१७	१०	चित्रा	२९	५३	वृद्धि	४६	२३	बा	१७	१०	९	१८	28	१७	तुला		१०	१५	३७	४९	७	००	१८	२३
२८/३५	५	मंग	१६	५०	स्वा	३०	४८	ध्रुव	४२	४८	तै	१६	५०	१०	१९	मा.	१८	तुला	**बुध मीन में ३१/५५, बुध पश्चिमोदयः** 11/25 स्टै. टा., **B**	१०	१६	३७	५६	६	५८	१८	२४
२८/४०	६	बुध	१५	१५	विशा	३०	३०	व्या.	३८	१३	व	१५	१५	११	२०	2	१९	बृ. १५/४३	भद्रा १५/१५ से ४३/४९ तक, **B** 1 मार्च, 2005 ई.	१०	१७	३८	०२	६	५७	१८	२५
२८/४३	७	गुरु	१२	२३	अनु	२९	००	हर्ष	३२	३३	ब	१२	२३	१२	२१	3	२०	बृश्चिक	बुध उ.भा. १ में २४/०५	१०	१८	३८	१५	६	५६	१८	२५
२८/४५	८	शुक्र	८	१५	ज्ये.	२६	१५	वज्र	२५	५८	कौ	८	१५	१३	२२	4	२१	ध. २६/१५	सूर्य पूभा १ में २१/३८	१०	१९	३८	२१	६	५५	१८	२५
२८/५०	९	शनि	२	५८	मूला	२२	२३	सिद्धि	१८	२८	ग	२	५८	१४	२३	5	२२	धनु	भद्रा २९/४९ से ५६/४० तक, स्वामी दयानन्द जयन्ती	१०	२०	३८	२६	६	५४	१८	२६
अवम्	१०	शनि	५६	४०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	दशमी तिथि का क्षय **C** स. सि. योगः 11/43 उप.	०	०	०	०	०	०	०	०
२८/५८	११	रवि	४९	३५	पूषा	१७	३५	व्य.	१०	१३	बव	२३	०८	१५	२४	6	२३	म. ३१/२०	**विजया एकादशी व्रत**, वक्री गुरु हस्त ४ में २५/३५	१०	२१	३८	२७	६	५३	१८	२७
२९/००	१२	चंद्र	४२	००	उषा	१२	१०	वरी परि	१ ५२	२० ०५	कौ	१५	४८	१६	२५	7	२४	मकर	मंगल उषा. १ में ३७/५०, वक्री शनि पुर्न (२) में २३/०३, **C**	१०	२२	३८	२९	६	५२	१८	२७
२९/०५	१३	मंग	३४	१३	श्रव	६	२०	शिव	४२	४५	ग	८	०७	१७	२६	8	२५	कुं. ३३/२०	भद्रा ३४/१३ से, **भौम प्रदोष व्रत, श्री महाशिवरात्रि व्रतम्**	१०	२३	३८	३०	६	५०	१८	२८
२९/१०	१४	बुध	२६	४०	धनि शत	० ५५	३० ००	सिद्ध	३३	४०	वि	०	२७	१८	२७	9	२६	कुम्भ	भद्रा ०/२७ तक, शुक्र पू.भा. में ४३/४८	१०	२४	३८	२८	६	४९	१८	२९
२९/१३	३०	गुरु	१९	४३	पूभा	५०	२३	साध्य	२५	०८	ना	१९	४३	१९	२८	10	२७	मी. ३६/२८	**फाल्गुण अमावस, स्नान-दानादि**	१०	२५	३८	२५	६	४८	१८	२९

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 4 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	८	११	५	१०	२	०	६
१९	२३	२४	०४	२३	१२	२६	०१	०१
३४	०१	०१	१५	३३	४६	४६	०६	०६
४९	२६	१६	५६	३६	४८	०८	५१	५१
६० ७	८४७ २०	४३ १	१०१ ५४	५ २२	७४ ५५	१ ५६	३ ११	३ ११
शत. ४	ज्ये. २	पूषा ४	उभा १	चित्रा १	शत. २	पुर्न ३	अश्वि १	चित्रा ३
०	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

१२ बु. | ११ सू. शु. | १० | ९ मं. | ८ चं. | ७ के. | ६ गु. | ५ | ४ | ३ श. | २ | १ रा.

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 10 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	८	११	५	१०	२	०	६
२५	२०	२८	१३	२२	२०	२६	००	००
३५	२४	१९	२६	५९	१६	३६	४७	४७
१०	५७	४०	३६	१९	०८	०८	४७	४७
५९ ५८	८६६ १५	४३ ९	७३ ५१	६ ११	७४ ५१	१ २४	३ ११	३ ११
पूभा २	पूभा १	उषा १	उभा ४	हस्त ४	पूभा १	पुर्न २	अश्वि १	चित्रा ३
०	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30 बजे

१२ बु. | ११ सू. चं. शु. | १० | ९ मं. | ८ | ७ के. | ६ गु. | ५ | ४ | ३ श. | २ | १ रा.

फाल्गुण कृष्ण पक्षफल—निशीथ व्यापिनी चतुर्दशी (८ मार्च) को **श्री महाशिवरात्रि** का सर्वकल्याणकार व्रत रखने से **अश्वमेघ यज्ञ** के तुल्य फल प्राप्त होता है। इस दिन काले तिलों सहित स्नानकर व व्रत धारणकर रात्रि में भगवान् शिव शंकर की विधिवत् पूजा करनी चाहिए। पूजा सामग्री में बिल्वपत्र, कनेर, पुष्प, धतूरा रखना चाहिए। पूजा के उपरान्त शिव कथा तथा शिवस्तोत्रादि का पाठ करना चाहिए। दूसरे दिन (अमावस) को मिष्ठान्नादि सहित भोजन एवं दानादि के बाद स्वयं भोजन करना चाहिए।

लोक भविष्य—फाल्गुन मास में पाँच शुक्रवार होने से आगामी अनाज आदि की फसलें अच्छी होंगी। कुछ विशेष वर्ग के लोगों में सुख-सुविधाओं के साधनों में वृद्धि होगी। अधिकांश लोग भोग विलास आदि कार्यों में प्रवृत्त होंगे। जनसंख्या में वृद्धि होगी—**शुक्रस्य पंचवारास्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजावृद्धिं सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते॥** इस पक्ष में शनि-मंगल के मध्य समसप्तक योग होने से उ.प्र., कश्मीर, गुजरात आदि में उपद्रव एवं हिंसक घटनाएँ घठित हों। **व्यापारिक रुख**—तृतीया तिथि (२७ फर.) को शुक्र शतभिषा नक्षत्र में आने से गेहूँ, धान्य, गुड़, घृत, सरसों, रूई, सोना व चाँदी में तेजी होगी। १ मार्च को बुध मीन राशि में प्रविष्ट होगा, उस पर मंगल व गुरु दोनों की दृष्टि रहेगी। गुड़, चीनी, शक्कर में मन्दी का रुख होगा। इसी दिन बुध पश्चिम से उदित होगा। सोना-चाँदी में घटा-बढ़ी ३ मार्च तक रहेगी। ४ मार्च से सूर्य पू.भा. में आने से सोना, चाँदी, गेहूँ,चना, उड़द, ज्वार, बाजरा, गुग्गल, खल-बिनौला में तेजी का रुझान बनेगा। ७ मार्च को मंगल उ.षा. नक्षत्र में घी, धान्य, तैल, सरसों, उड़द, लाल मिर्च एवं रूई-कपास में विशेष तेजी करेगा। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में भारत के उत्तर-पश्चिम भागों तथा पहाड़ी क्षत्रों में बादल-चाल एवं खण्ड वृष्टि-पड़ने के योग हैं। **शकुन**—फाल्गुण कृ. ५ को स्वाती नक्षत्र में बूंदा-बांदी हो, तो आगामी अच्छी फसल के संकेत हैं।

वि. संवत् २०६१, फाल्गुन शुक्ल पक्ष									शाकः १९२६-२७					तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2005 ई. (ता. 11 मार्च से 25 मार्च तक) सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण-उत्तर गोल., बसन्त ऋतु					जालन्धर भा. स्टैं. टा.			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	फाल्गुन शक	मोहर्रम	मार्च	फाल्गुन	प्रवेश घटी पल	ग्रह लोपदर्शन—मंगल प्रातः पूर्व में दृश्य शनि याम्योत्तर वृत्त में गुरु पश्चिम में दृश्य, शुक्र अभी अस्तंगत रहेगा। बुध २२ मार्च से अस्त होगा।	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२९/१८	१	शुक्र	१३	४३	उभा	४६	५८	शुभ	१७	२५	बव	१३	४३	२०	२९	11	२८	मीन	फाल्गुण शुक्ल पक्ष प्रा., **चन्द्रदर्शन** ४५ मु.	१०	२६	३८	२०	६	४७	१८	३०
२९/२३	२	शनि	९	०८	रेव	४५	०५	शुक्ल	१०	५३	कौ	९	०८	२१	सफ	12	२९	मे. ४५।०५	**पंचक समा.** (24/47 घं. मिं.), **मंगल मकर में १६/२३**, बुध **A**	१०	२७	३८	१०	६	४५	१८	३०
२९/२८	३	रवि	६	१०	अश्वि	४४	५८	ब्रह्म	५	३५	गर	६	१०	२२	२	13	३०	मेष	भ. ३५/३७ से. स.सि.यो. **A**रेवती में ४८/२३, श्री रामकृष्ण परमहंस जयं.	१०	२८	३८	०२	६	४४	१८	३१
२९/३०	४	चंद्र	५	०३	भर	४६	४०	ऐंद्र वैधृ	१ ५९	४८ २८	वि	५	०३	२३	३	14	चैत्र	मेष	भ. ५/०३ तक, **सूर्य मीन में २२/१५ चैत्र संक्रां. १५** मुहूर्ति **B**	१०	२९	३७	५०	६	४३	१८	३१
२९/३५	५	मंग.	५	५५	कृति	५०	१८	विष्क	५८	४०	बा	५	५५	२४	४	15	२	वृ. २।२८	याज्ञवल्क्य जयं., स. सि. योग. **B**पुण्य सं. प्रातः 9/13 स्टै. टा. से प्रा.	११	००	३७	३४	६	४१	१८	३१
२९/४०	६	बुध	८	३५	रोहि	५५	३०	प्रीति	५९	०८	तै	८	३५	२५	५	16	३	वृष		११	०१	३७	१९	६	४०	१८	३२
२९/४५	७	गुरु	१२	५०	मृग	६०	००	आयु	६०	००	व	१२	५०	२६	६	17	४	मि. २८।३८	भ. १२/५० से ४५/३४ तक, **शुक्र मीन में** ४५/३०, सूर्य उभा. में ४३/१३	११	०२	३७	०१	६	३९	१८	३३
२९/४८	८	शुक्र	१८	१८	मृग	२	००	आयु	०	३३	ब	१८	१८	२७	७	18	५	मिथुन	अन्नपूर्णा अष्टमी, **होलाष्टक प्रारम्भ**	११	०३	३६	३९	६	३८	१८	३३
२९/५३	९	शनि	२४	२५	आर्द्रा	९	१३	सौभा	२	३५	कौ	२४	२५	२८	८	19	६	क. ५९।४५	**C सूर्य मेष में 18/03 घं. मिं., महाविषुव दिन,** उत्तर गोल प्रा.	११	०४	३६	१६	६	३७	१८	३४
२९/५७	१०	रवि	३०	४३	पुर्न	१६	४३	शोभ	४	५०	ग	३०	४३	२९	९	20	७	कर्क	शुक्र उभा. १ में २७/२७, बुध वक्री 5/48 स्टैं. टा., सायन **C**	११	०५	३५	४९	६	३५	१८	३४
३०/००	११	चंद्र	३६	३०	पुष्य	२३	५०	अति	६	५५	व	३	३७	३०	१०	21	८	कर्क	भद्रा ३/३७ से ३६/३० तक, **आमलकी एकादशी व्रत**	११	०६	३५	२४	६	३५	१८	३५
३०/०५	१२	मंग	४१	३३	श्ले.	३०	२०	सुक	८	३३	ब	९	०२	चैत्र	११	22	९	सिं. ३०।२०	**शाकः चैत्र, संव. 1927 प्रा., शनि मार्गी ८/३५, बुधास्त पश्चिमे**	११	०७	३४	५४	६	३४	१८	३६
३०/१०	१३	बुध	४५	३५	मघा	३५	५३	धृति	९	३०	कौ	१३	३४	२	१२	23	१०	सिंह	**प्रदोष व्रत, गण्डमूलादि**	११	०८	३४	२२	६	३२	१८	३६
३०/१७	१४	गुरु	४८	२३	पूफा	४०	१८	शूल	९	३५	ग	१६	५९	३	१३	24	११	कं. ५६।१०	भ. ४८/२३ से, **राहु रेवती (४) मीने, केतु चित्रा २ कन्या में D**	११	०९	३३	४८	६	३१	१८	३८
३०/२५	१५	शुक्र	५०	००	उपा	४३	३३	गंड	८	४८	वि	१९	१२	४	१४	25	१२	कन्य	भ. १९/१२ तक, **व्रत पूर्णमाशी, होली पर्व,** होलिका दहन **E**	११	१०	३३	१०	६	२९	१८	३९

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 18 मार्च — शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 25 मार्च — **D** २९/५३ स्टै. टा. — **E** प्रदोष काले, **होलाष्टक समाप्त**

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	९	११	५	११	२	०	६
०३	०५	०४	१९	२२	००	२६	००	००
३३	४२	०५	५३	०६	१४	२८	२२	२२
५२	३०	१४	४४	४७	२९	५५	२१	२१
५९ ४०	७१५ १२	४३ १६	१२ २८	७ ००	७४ ४३	० २४	३ ११	३ ११
उभा	मृग	उषा	रेव	हस्त	पूभा	पुर्न	अश्वि	चित्रा
१	४	३	१	४	४	२	१	३
०	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

१ रा. — १२ सू. बु. शु. — ११ — १० मं. — २ — ३ चं. श. — ९ — ४ — ६ गु. — ८ — ५ — ७ के.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	९	११	५	११	२	०	६
१०	००	०९	१८	२१	०८	२६	००	००
३०	१६	०८	३७	१६	५७	२८	००	००
४५	१३	२७	०१	१०	०९	२५	०४	०४
५९ २५	७६३ २७	४३ २३	३७ ४९	७ २९	७४ ३६	० २३	३ ११	३ ११
उभा	उफा	उषा	रेव	हस्त	उफा	पुर्न	अश्वि	चित्रा
३	२	४	१	४	१	२	१	३
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30 बजे

१ रा. — १२ सू. बु. शु. — ११ — १० मं. — २ — ३ श. — ९ — ४ — ६ चं. गु. — ८ — ५ — ७ के.

फाल्गुण शुक्ल पक्षफल—फाल्गुन शुक्लाष्टमी (१८ मार्च) से **होलाष्टक** प्रारम्भ होंगे। इनमें शुभ कार्यों के आरम्भ का निषेध माना जाता है। **आमलकी एकादशी** के दिन आँवले के वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान् विष्णु की भक्ति करनी चाहिए तथा आंवले की टहनी को कलश में स्थापन करके पूजन करना चाहिए। पूजनोपरान्त इस दिन आँवलों सहित भोजन का दान एवं सेवन करना उत्तमोत्तम होता है। **फा० पूर्णिमा** (२५ मार्च) को होली का शुभ उल्लासमय पर्व होगा। सायं भद्रा रहित काल में होलिका दहन होगा। भद्रा दोप. २.११ मिनट तक रहेगी॥ **लोक भविष्य**—द्वितीया तिथि शनिवार को मंगल मकर राशि में प्रविष्ट होकर घृत, तैल, चीनी, शक्कर, रसदार पदार्थ तथा सोना, पीतल, ताँबा एवं शेयरों के भाव तेज होंगे। प्राकृतिक आपदाओं के कारण लोगों में दुख, पीड़ा एवं अराजकता हो। पक्ष में शनि-मंगल के मध्य षडाष्टक योग देश का राजनैतिक वातावरण विक्षुब्ध, अस्थिर एवं अशान्त रहेगा। **मकरे च स्थिते भौमे तैल महर्घता। सुभिक्ष सर्व धान्यानां लोकानां दुःख पीडनम्॥ व्यापारिक रूख**—पक्षारम्भ में चन्द्रदर्शन ४५ मुहूर्ति शुक्रवार को होने से गेहूँ, धान्य, उड़द, तिल, तैल, सरसों, चने, ऊनी वस्त्र एवं ऊन में मन्दी चलेगी। द्वितीया को मंगल मकर राशि में आने से लोहा, पीतल, नारियल, खल-बिनौले, मिर्चें, नारियल तेज भाव होंगे। १४ मार्च सोमवार को **चैत्र संक्रान्ति** १५ मुहूर्त्ति है, जिससे गेहूँ, जौं, चने, ज्वार, बाजरा, तिल, अलसी, सरसों आदि के भावों में घटाबढ़ी रहकर तेजी का माहौल बनेगा। परन्तु तीन दिन के भीतर ही इन वस्तुओं में तथा रूई, कपास में भी मन्दी का रूझान रहेगा। ता. १७ मार्च को सूर्य उ.भा. में तथा शुक्र मीन में जाने से एक सप्ताह के बाद गुड़, चीनी, चावल, शक्कर, गेहूँ, तैलादि में तेजी होगी। मीन राशि के शुक्र में सुख साधनों में विस्तार तथा अनाज आदि की फसल में वृद्धि होगी—**''मीन राशिगते शुक्रे सुभिक्षं प्रचुरं भवेत्।'' संक्रान्ति फल**—चैत्र संक्रान्ति मेष, वृष, कर्क, कन्या, तुला, बृश्चिक व मकर राशि वालों के लिए शुभ एवं लाभदायक होगी। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में तेज हवाओं के साथ कहीं वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०६१, चैत्र कृष्ण पक्ष, शाकः १९२६

सन् 2005 ई. (ता. 26 मार्च से 8 अप्रैल तक)

सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोलार्द्ध, बसन्त ऋतु

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	चैत्रशक	सफरमुह.	मार्च	चैत्र प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रह लोपदर्शन—प्रातः मंगल पूर्व में दृश्य, बुध ५ अप्रै. से दृश्य, गुरु प्रातः पश्चिम में दृश्य, सायं शनि पूर्व से तथा शुक्र अभी अस्तंगत है।	नि. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३०/२८	१	शनि	५०	२३	हस्त	४५	३५	वृद्धि	७	००	बा	२०	१२	५	१५	26	१३	कन्या	चैत्र कृष्ण प्रति., मंगल श्रवण में ८/५३, धुलण्डी, बसन्तोत्सव, **A**	११	११	३२	३३	६	२८	१८	३९
३०/३३	२	रवि	४९	३८	चित्रा	४६	३३	ध्रुव	४	१८	तै	२०	०१	६	१६	27	१४	तु. १६|१३	सन्त **तुकाराम जयं.** वक्री बुध उभा. ४ में 24/39 घं. मिं.	११	१२	३१	५३	६	२७	१८	४०
३०/३५	३	चंद्र	४७	५३	स्वा.	४६	३०	व्या. हर्ष	० ५६	४५ २३	व	१८	४६	७	१७	28	१५	तुला	भ. १८/४६ से ४७/५३ तक, **A** होला मेला आनन्दपुर व पांओंटा सा.	११	१३	३१	१२	६	२६	१८	४०
३०/४२	४	मंग.	४५	१५	विशा	४५	३५	वज्र	५१	२३	ब	१६	३४	८	१८	29	१६	वृ. ३०|५५	**व्रत श्री गणेश चतुर्थी,** भगवान्नारायण जयंती	११	१४	३०	२५	६	२४	१८	४१
३०/४५	५	बुध	४१	४५	अनु.	४३	५०	सिद्धि	४५	४०	कौ	१३	३०	९	१९	30	१७	वृश्चिक	मेला नवचण्डी (मेरठ), स. सि. योगः	११	१५	२९	३९	६	२३	१८	४१
३०/५०	६	गुरु	३७	३०	ज्ये.	४१	२३	व्या.	३९	२३	ग	९	३८	१०	२०	31	१८	ध. ४१|२३	भ. ३७/३० से प्रा., सूर्य रेवती में ११/१८, शुक्र रेवती मे १०/१७, गं.मू.	११	१६	२८	५३	६	२२	१८	४२
३०/५७	७	शुक्र	३२	४०	मूला	३८	२०	वरी	३२	४०	वि	५	०५	११	२१	अप्रै	१९	धनु	भ. ५/०५ तक, **शीतला सप्तमी,** गं.मू., ता. १ अप्रै. 2005 ई. प्रा.	११	१७	२८	०२	६	२०	१८	४३
३१/०२	८	शनि	२७	१८	पूषा	३४	४५	परि	२५	२८	कौ	२७	१८	१२	२२	2	२०	म. ४८|४५	**शीतला अष्टमी**	११	१८	२७	११	६	१९	१८	४४
३१/०५	९	रवि	२१	३३	उषा	३०	४८	शिव	१७	५५	ग	२१	३३	१३	२३	3	२१	मकर	भ. ४८/३३ से, वक्री गुरू हस्त ३ में ५६/२०, स. सि. योगः	११	१९	२६	१९	६	१८	१८	४४
३१/१०	१०	चंद्र	१५	३३	श्रव	२६	३८	सिद्ध	१०	१३	वि	१५	३३	१४	२४	4	२२	कुं. ५४|३०	भ. १५/३३ तक, **पंचकारंभः** 28/05 स्टै. टा., स. सि योगः	११	२०	२५	२५	६	१७	१८	४५
३१/१३	११	मंग	९	३०	धनि	२२	२८	साध्य शुभ	२ ५४	२८ ४८	बा	९	३०	१५	२५	5	२३	कुम्भ	शनि पुनर्वसु ३ में ५२/३५, **पापमोचिनी एका. व्रत, बुध पूर्वोदित B**	११	२१	२४	२७	६	१६	१८	४५
३१/२०	१२	बुध	३	१५	शत	१८	३८	शुक्ल	४७	३०	तै	३	१५	१६	२६	6	२४	कुम्भ	भ. ५८/१० से, **प्रदोष व्रत., वारूणी पर्व** प्रातः 7/42 से **C**	११	२२	२३	२९	६	१४	१८	४६
अवम्	१३	बुध	५८	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	त्रयोदशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३१/२५	१४	गुरु	५३	२५	पूभा	१५	१३	ब्रह्म	४०	४०	वि	२६	०८	१७	२७	7	२५	मी. १|०१	भद्रा २५/४८ तक, **मेला पिहोवा,** तीर्थ (हरियाणा)	११	२३	२२	२९	६	१३	१८	४७
३१/२८	३०	शुक्र	४९	३५	उभा	१२	३३	ऐंद्र	३४	३८	च	२१	३०	१८	२८	8	२६	मीन	**अमावस** स्नानदानादि, वि. सं. २०६१ पूर्ण, स. सि. यो. 11/13 उप.	११	२४	२१	२७	६	१२	१८	४७

B 27/52 घं. मिं. **C** 13/41स्टै. टा. तक

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 2 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	९	११	५	११	२	११	५
१८	१७	१४	१२	२०	१८	२६	२९	२९
२५	५७	५५	२१	१५	५३	३४	३४	३४
११	२७	५९	२९	१४	३२	२९	३९	३९
५९ १०	८५३ ५७	४३ ३०	४६ ४०	७ ४३	७४ २८	१ १५	३ ११	३ ११
रेव	पूषा	श्रव	उभा	हस्त	रेव	पुन	रेव	चित्रा
१	२	२	३	४	१	२	४	२
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 बजे

- १२: सू. बु. शु. रा.
- ११
- १०: मं.
- ९: चं.
- ८
- ७
- ६: गु. के.
- ५
- ४
- ३: श.
- २
- १

शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 8 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	९	११	५	११	२	११	५
२४	१३	१९	०८	१९	२६	२६	२९	२९
१९	२२	१७	३९	२८	२०	४३	१५	१५
४४	०३	०९	१४	५५	११	३६	३४	३४
५८ ५९	८२६ ३०	४३ ३३	२० ३४	७ ४०	७४ २३	१ ५४	३ १०	३ १०
रेव	उभा	श्रव	उभा	हस्त	रेव	पुन	रेव	चित्रा
३	४	३	२	३	३	३	४	२
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अमा., प्रातः 5.30 बजे

- १२: सू. चं. बु. शु. रा.
- ११
- १०: मं.
- ९
- ८
- ७
- ६: गु. के.
- ५
- ४
- ३: श.
- २
- १

चैत्र कृष्ण पक्षफल—चैत्र कृष्ण प्रतिपदा (२६ मार्च) को होला मेला का पर्व पंजाब, हिमाचल प्रदेशों में मनाया जाता है। इस पक्ष में **पापमोचनी एकादशी** व्रत, **वारुणी पर्व** एवं प्रदोष के दिन तीर्थादि स्थल पर स्नान दानादि का विशेष महत्त्व होता है। चतुर्दशी को **पिहोवा (कुरुक्षेत्र)** पर **मेला पृथदक्** बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है। अमा. (८ अप्रैल) को विक्रमी सम्वत् २०६१ की पूर्ति होगी। **लोक भविष्य**—पक्ष के आरम्भ में ही मीन राशि पर सूर्य, बुध, शुक्र, राहु ये चारों ग्रह इकट्ठे होने से देश में कहीं बाढ़, अग्निकाण्ड या भूस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोपों से जन, धन एवं सम्पदा आदि की क्षति होने का भय रहेगा। काश्मीर, असम आदि प्रदेशों में होने का भय रहेगा। काश्मीर, असम आदि प्रदेशों में कहीं उपद्रव, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ अधिक घटित होंगी। **व्यापारिक रूख**—प्रतिपदा को मंगल श्रवण नक्षत्र में आने से रूई-कपास में घटा-बढ़ी रहे, परन्तु गेहूँ, जौं, चने, खल-बिनौले, तिल, सोना-चाँदी में एक सप्ताह के भीतर तेजी हो। ता. ३१ को सूर्य व शुक्र रेवती में आने से अलसी, सरसों, मूंगफली, गेहूँ, चना, चावलों, रूई, कपास, गुड़, चीनी, शक्कर में घटा-बढ़ी के बाद तेजी होगी। ता. ५ अप्रै. को शनि पुनर्वसु (३) में अनाज, रूई, अलसी, सरसों, तिल, तैल में घटा-बढ़ी करेगा। परन्तु इसी दिन बुध पूर्व से उदित होने से गेहूँ चावल, खल-बिनौले, लाख, उड़द, छोटी इलायची में तेजीकारक होगा। चैत्र कृष्ण त्रयोदशी तिथि का क्षय हो जाने से तीन दिन तक रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी तथा चाँदी में तेजी होगी। परन्तु यह मन्दी अस्थिर होगी। **आकाश लक्षण**—पक्ष के उत्तरार्ध में उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में तेज हवाओं के बाद तीव्र बौछारें पड़ने के योग हैं।

शकुन—चैत्र कृष्ण तृतीया को स्वाती नक्षत्र में बूंदा-बांदी हो, तो आगामी भविष्य में सुभिक्ष के संकेत हैं। इतिशुभम्

वि. संवत् 2061, मार्च मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2004 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं मि	जम्मू सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं मि	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं मि	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	मुम्बई सूर्योदय घं मि	मुम्बई सूर्योदय घं. मि.
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	1	10	चंद्र	26	58	आर्द्रा	पूरा	दिन	प्रीति	10	47	मिथुन	मार्च मास प्रारम्भ	7/03	18/22	6/50	18/17	6/53	18/17	7/02	18/40
	2	11	मंग.	28	36	आर्द्रा	7	28	आयु	11	15	क. 27/00	भद्रा 15/47 से 28/36 तक, आमलकी एकादशी व्रत	7/02	18/23	6/49	18/18	6/52	18/17	7/02	18/40
	3	12	बुध	29	36	पुर्न	9	30	सौभा	11	16	कर्क	गोबिन्द द्वादशी	7/01	18/24	6/48	18/18	6/51	18/18	7/01	18/41
	4	13	गुरु	29	55	पुष्य	10	55	शोभ	10	48	कर्क	सूर्य पू.भा. में 9/22, बुध पू.भा. में 8/21, वक्री गुरु पू.फा.(2) में **A**	7/00	18/25	6/47	18/19	6/50	18/19	7/00	18/41
	5	14	शुक्र	29	37	श्ले.	11	41	अति	9	49	सिं. 11/41	भद्रा 29/37 से,	6/58	18/26	6/46	18/20	6/49	18/19	7/00	18/42
	6	15	शनि	28	45	मघा	11	53	सुक / धृति	8 / 30	21 / 28	सिंह	भद्रा 17/11 तक, मंगल कृति. में 20/22, **फाल्गुन पूर्णिमा,** होली पर्व,**B**	6/57	18/27	6/45	18/20	6/47	18/20	6/59	18/42
चैत्र कृष्ण पक्ष	7	1	रवि	27	27	पूफा.	11	33	शूल	28	14	क. 17/23	**शनि मार्गी 22/24,** चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ	6/55	18/28	6/44	18/21	6/46	18/21	6/58	18/42
	8	2	चंद्र	25	49	उफा.	10	49	गंड	25	44	कन्या		6/54	18/29	6/43	18/22	6/45	18/21	6/57	18/43
	9	3	मंग.	23	56	हस्त	9	47	वृद्धि	23	03	तु. 21/10	भद्रा 12/53 से 23/56 तक, **बुध मीन में 12/46**	6/53	18/30	6/42	18/22	6/44	18/22	6/56	18/43
	10	4	बुध	21	55	चित्रा	8	33	ध्रुव	20	14	तुला	श्री गणेश चतुर्थी व्रत	6/52	18/31	6/41	18/23	6/43	18/23	6/55	18/44
	11	5	गुरु	19	48	स्वा / विशा	7 / 29	11 / 48	व्या.	17	22	वृ. 24/09	**मंगल वृ पें 25/11,** बुध उ.भा. में 5/35	6/50	18/32	6/40	18/23	6/41	18/23	6/54	18/44
	12	6	शुक्र	17	41	अनु.	28	24	हर्ष	14	28	वृश्चिक	भद्रा 17/41 से 28/38 तक, शुक्र भर. में 14/10, राहु भर (2) केतु **C**	6/49	18/32	6/38	18/24	6/40	18/24	6/53	18/44
	13	7	शनि	15	34	ज्ये.	27	02	वज्र	11	35	ध. 27/02	शीतला सप्तमी	6/48	18/33	6/37	18/24	6/39	18/25	6/53	18/44
	14	8	रवि	13	31	मूला	25	43	सिद्धि / व्य	8 / 29	44 / 57	धनु	**सूर्य मीन में 9/33, चैत्र संक्रान्ति,** पुण्यकाल प्रातः सूर्योदय से, **D**	6/47	18/33	6/36	18/25	6/38	18/25	6/52	18/44
	15	9	चंद्र	11	31	पूषा	24	30	वरी	27	14	म. 30/14	भद्रा 22/35 से	6/45	18/33	6/35	18/25	6/37	18/26	6/51	18/44
	16	10	मंग.	9	39	उषा.	23	26	परि	24	39	मकर	भद्रा 9/39 तक	6/44	18/34	6/34	18/26	6/35	18/26	6/51	18/44
	17	11 / 12	बुध	7 / 30	56 / 28	श्रव	22	34	शिव	22	14	मकर	सूर्य उ.भा. में 17/51, बुध रेवती में 27/06, **पापमोचनी एकादशी,E**	6/43	18/34	6/33	18/26	6/34	18/27	6/50	18/44
	18	13	गुरु	29	18	धनि	21	58	सिद्ध	20	02	कु. 10/16	भद्रा 29/18 से, **पंचक प्रारम्भ 10/16,** प्रदोष व्रत, वारुणी पर्व	6/42	18/35	6/31	18/27	6/33	18/27	6/49	18/45
	19	14	शुक्र	28	31	शत	21	44	साध्य	18	08	कुम्भ	भद्रा 16/55 तक	6/41	18/36	6/30	18/28	6/32	18/28	6/48	18/45
	20	30	शनि	28	12	पूभा	21	56	शुभ	16	34	मी. 15/53	**शनैश्चरी अमावस,** सायन सूर्य मेष में 12/20, संवत् 2060 पूर्ण **F**	6/40	18/36	6/29	18/28	6/30	18/29	6/47	18/45
चैत्र शुक्ल पक्ष	21	1	रवि	28	26	उभा	22	39	शुक्ल	15	24	मीन	**चैत्र शुक्ल पक्ष व नव संवतारम्भ**	6/39	18/37	6/28	18/29	6/29	18/30	6/46	18/45
	22	2	चंद्र	29	16	रेव	23	56	ब्रह्म	14	41	मे. 23/56	**पंचक समाप्त 23/56,** चन्द्रदर्शन	6/38	18/38	6/27	18/29	6/28	18/30	6/45	18/46
	23	3	मंग.	पू.	दि.	अश्वि	25	47	ऐंद्र	14	26	मेष	मत्स्य जयन्ती, गणगौरी तीज	6/36	18/38	6/26	18/30	6/27	18/31	6/45	18/46
	24	3	बुध	6	41	भर	28	11	वैधृ	14	37	मेष	भद्रा 19/40 से,	6/35	18/39	6/25	18/30	6/26	18/32	6/44	18/46
	25	4	गुरु	8	38	कृति	पू.	दिन	विष्कु	15	11	वृ. 10/51	भद्रा 8/38 तक, श्री लक्ष्मी पंचमी,	6/34	18/40	6/24	18/31	6/24	18/32	6/44	18/47
	26	5	शुक्र	11	00	कृति	6	59	प्रीति	16	02	वृष	**बुध अश्वि (1) मेष में 7/17,** स्कन्द षष्ठी	6/33	18/41	6/23	18/31	6/22	18/33	6/43	18/47
	27	6	शनि	13	34	रोह	10	01	आयु	17	01	मि. 23/33	मंगल रोहि. में 15/47	6/32	18/41	6/22	18/32	6/21	18/34	6/42	18/47
	28	7	रवि	16	07	मृग	13	04	सौभा	17	57	मिथुन	भद्रा 16/07 से 29/16 तक, **शुक्र वृष में 13/50**	6/30	18/42	6/20	18/32	6/20	18/35	6/41	18/48
	29	8	चंद्र	18	24	आर्द्रा	15	53	शोभ	18	40	मिथुन	**श्री दुर्गाष्टमी**	6/28	18/42	6/19	18/33	6/19	18/35	6/40	18/48
	30	9	मंग.	20	11	पुर्न	18	15	अति	19	02	क. 11/43	सूर्य रेवती में 28/37, **श्री रामनवमी, नवरात्रे समाप्त**	6/26	18/43	6/18	18/33	6/18	18/36	6/39	18/48
	31	10	बुध	21	19	पुष्य	20	01	सुक	18	54	कर्क		6/25	18/44	6/17	18/34	6/16	18/36	6/38	18/49

A 19/45, प्रदोष व्रत **B** होलाष्टक समाप्त, होलिका दहन सू.अ. के बाद **C** स्वा. (4) में 19/45 **D** शीतलाष्टमी **E** बुध पश्चिम से उदय 27/42 **F** उत्तर गोलार्द्ध प्रारम्भ

वि. संवत् 2061, अप्रैल मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2004 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं मि	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं मि	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं मि	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं मि	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.
चैत्र शुक्ल पक्ष	1	11	गुरु	21 44	श्ले	21 04	धृति	18 12	सिं. 21/04	भद्रा 9/32 से 21/44 तक, कामदा एकादशी व्रत,	6/24	18/45	6/15	18/35	6/15	18/37	6/36	18/49
	2	12	शुक्र	21 23	मघा	21 24	शूल	16 56	सिंह		6/23	18/45	6/14	18/36	6/14	18/37	6/35	18/49
	3	13	शनि	20 20	पू.फा.	21 02	गंड	15 05	कं. 26/51	श्री महावीर जयंती, शनि प्रदोष व्रत	6/21	18/46	6/13	18/36	6/13	18/38	6/34	18/49
	4	14	रवि	18 41	उ.फा.	20 05	वृद्धि	12 45	कन्या	भद्रा 18/41 से 29/37 तक	6/19	18/47	6/12	18/37	6/12	18/39	6/34	18/49
	5	15	चंद्र	16 33	हस्त	18 39	ध्रुव	9 59	तु. 29/48	चैत्र पूर्णिमा, वैशाख स्नान प्रारम्भ	6/18	18/48	6/11	18/38	6/11	18/40	6/33	18/49
वैशाख कृष्ण पक्ष	6	1	मंग.	14 03	चित्रा	16 52	व्या, हर्ष	6 54, 27 35	तुला	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारंभ, बुध वक्री 25/58	6/17	18/49	6/10	18/38	6/09	18/40	6/32	18/49
	7	2	बुध	11 19	स्वा.	14 53	वज्र	24 10	तुला	भद्रा 21/54 से, शुक्र रोहिणी में 26/04	6/16	18/50	6/09	18/39	6/08	18/41	6/31	18/49
	8	3/4	गुरु	8 29, 29 40	विशा.	12 49	सिद्धि	20 43	वृ. 7/20	भद्रा 8/29 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय जालं. में 22/22 पर)	6/15	18/51	6/08	18/39	6/07	18/42	6/30	18/50
	9	5	शुक्र	26 59	अनु	10 47	व्य.	17 19	वृश्चिक	बुध पश्चिम में अस्त 9/26, गुड फ्राईडे	6/14	18/52	6/07	18/40	6/06	18/42	6/30	18/50
	10	6	शनि	24 30	ज्ये.	8 54	वरी	14 04	ध. 8/54	भद्रा 24/30 से, गण्डमूल विचार	6/12	18/52	6/05	18/40	6/05	18/43	6/29	18/50
	11	7	रवि	22 16	मूला, पूषा	7 14, 29 52	परि	11 01	धनु	भद्रा 11/23 तक, गण्डमूल 7/14 तक	6/11	18/53	6/04	18/41	6/04	18/44	6/29	18/51
	12	8	चंद्र	20 22	उषा	28 50	शिव, सिद्ध	8 13, 29 42	म. 11/34		6/10	18/54	6/03	18/41	6/02	18/45	6/28	18/51
	13	9	मंग.	18 51	श्रव	28 11	साध्य	27 30	मकर	सूर्य अश्वि (1) मेष में 18/02, **वैशाख संक्रान्ति,** वैशाखी, **A**	6/08	18/54	6/02	18/42	6/01	18/45	6/27	18/51
	14	10	बुध	17 44	धनि	27 57	शुभ	25 38	कुं. 16/01	भद्रा 6/18 से 17/44 तक, पंचक शुरु 16/01, अम्बेदकर जयंती	6/07	18/55	6/01	18/43	6/00	18/46	6/26	18/51
	15	11	गुरु	17 03	शत	28 08	शुक्ल	24 06	कुम्भ	वरुथिनी एकादशी व्रत, वल्लभाचार्य जयंती	6/06	18/56	6/00	18/43	5/59	18/46	6/25	18/52
	16	12	शुक्र	16 48	पूभा	28 46	ब्रह्म	22 56	मी. 22/34	प्रदोष व्रत	6/04	18/56	5/59	18/44	5/58	18/47	6/24	18/52
	17	13	शनि	17 01	उभा	29 52	ऐंद्र	22 08	मीन	भद्रा 17/01 से 29/22 तक, मंगल मृग. में 12/51	6/03	18/57	5/58	18/44	5/57	18/47	6/23	18/52
	18	14	रवि	17 43	रेव	पू. दिन	वैधृ	21 41	मीन	गण्डमूल विचार	6/02	18/58	5/57	18/45	5/56	18/48	6/23	18/53
	19	30	चंद्र	18 52	रेव	7 24	विष्क	21 37	मे. 7/24	पंचक समा. 7/24, **सोमवती अमावस,** सायन सूर्य वृष में 23/20, **B**	6/01	18/58	5/56	18/45	5/55	18/49	6/22	18/53
वैशाख शुक्ल पक्ष	20	वै.शु.	मंग.	20 28	अश्वि	9 24	प्रीति	21 53	मेष	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 9/24 तक,	6/00	18/59	5/55	18/46	5/54	18/49	6/21	18/53
	21	2	बुध	22 29	भर	11 48	आयु	22 28	वृ. 18/28	चन्द्रदर्शन, शिवाजी जयन्ती, अगस्त्य अस्त	5/59	19/00	5/54	18/46	5/52	18/50	6/21	18/53
	22	3	गुरु	24 48	कृति	14 33	सौभा	23 17	वृष	**वक्री बुध मीन में 6/22, अक्षया तृतीया,** परशुराम जयंती	5/58	19/00	5/53	18/47	5/51	18/51	6/20	18/54
	23	4	शुक्र	27 19	रोह	17 32	शोभ	24 15	वृष	भद्रा 14/04 से 27/19 तक,	5/57	19/01	5/52	18/48	5/50	18/52	6/19	18/54
	24	5	शनि	29 52	मृग	20 37	अति	25 16	मि. 7/05	आद्य गुरु शंकराचार्य जयंती	5/55	19/02	5/51	18/48	5/49	18/52	6/19	18/54
	25	6	रवि	पू. दि.	आर्द्रा	23 36	सुक	26 11	मिथुन	बुध पूर्व में उदय 14/28,	5/54	19/02	5/50	18/49	5/48	18/53	6/18	18/54
	26	6	चंद्र	8 15	पुर्न	26 17	धृति	26 51	क. 19/39	श्री गंगा जयन्ती	5/53	19/03	5/49	18/49	5/47	18/54	6/17	18/55
	27	7	मंग.	10 15	पुष्य	28 30	शूल	27 08	कर्क	भद्रा 10/15 से 22/59 तक, सूर्य भरणी में 9/47, **मंगल मिथुन में C**	5/52	19/04	5/48	18/50	5/46	18/54	6/17	18/55
	28	8	बुध	11 42	श्ले	पू. दिन	गंड	26 55	कर्क	गण्डमूल विचार	5/51	19/05	5/47	18/50	5/45	18/55	6/16	18/56
	29	9	गुरु	12 27	श्ले	6 04	वृद्धि	26 07	सिं. 6/04	सीता नवमी, गण्डमूल विचार, बगुलामुखी जयन्ती	5/50	19/06	5/46	18/51	5/44	18/55	6/16	18/56
	30	10	शुक्र	12 26	मघा	6 55	ध्रुव	24 43	सिंह	भद्रा 24/03 से, गण्डमूल 6/55 तक, बुध मार्गी 18/32	5/49	19/07	5/45	18/51	5/43	18/56	6/15	18/56

A अर्धकुंभ महापर्व (हरिद्वार), पुण्यकाल संक्रान्ति 11/38 से, **B** ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ **C** 24/13

वि. संवत् 2061, **मई** मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2004 ई.

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	***भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)***	जम्मू सूर्योदय घं मि	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं मि	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं मि	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं मि	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.
वैशा. शुक्ल पक्ष	1	11	शनि	11 39	पू.फा.	7 00	व्या	22 42	कं. 12/54	भद्रा 11/39 तक, मोहिनी एकादशी व्रत, मई मास शुरु	5/48	19/08	5/45	18/53	5/43	18/57	6/15	18/56
	2	12	रवि	10 07	उ.फा. हस्त	6 20 / 28 59	हर्ष	20 06	कन्या	प्रदोष व्रत	5/47	19/08	5/44	18/53	5/42	18/58	6/14	18/56
	3	13/14	चंद्र	7 55 / 29 12	चित्रा	27 06	वज्र	17 01	तु. 16/06	भद्रा 29/12 से, नृसिंह जयन्ती	5/46	19/09	5/46	18/54	5/41	18/58	6/14	18/57
	4	15	मंग.	26 04	स्वा.	24 48	सिद्धि	13 32	तुला	भद्रा 15/38 तक, वैशाख पूर्णिमा, **खग्रास चन्द्रग्रहण, कुम्भ A**	5/45	19/09	5/42	18/54	5/40	18/59	6/13	18/57
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	5	1	बुध	22 41	विशा	22 14	व्य.	9 47	वृ. 16/53	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गुरु मार्गी 8/36,	5/44	19/10	5/41	18/55	5/39	18/59	6/13	18/58
	6	2	गुरु	19 13	अनु	19 34	वरी परि	5 51 / 25 54	बृश्चिक	भद्रा 29/30 से, **शुक्र मिथुन में 25/54**	5/43	19/11	5/41	18/55	5/38	19/00	6/12	18/58
	7	3	शुक्र	15 47	ज्ये.	16 58	शिव	22 02	ध. 16/58	भ. 15/47 तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत (जालं. में चं. उ. 22/27 पर)	5/43	19/11	5/40	18/56	5/38	19/01	6/12	18/58
	8	4	शनि	12 34	मूला	14 34	सिद्ध	18 21	धनु	मंगल आर्द्रा में 12/16, गण्डमूल विचार	5/42	19/12	5/39	18/57	5/37	19/01	6/12	18/59
	9	5	रवि	9 40	पू.षा.	12 30	साध्य	14 59	म. 18/03	बुध मेष (अश्वि (1)) में 7/18,	5/41	19/13	5/38	18/57	5/36	19/02	6/11	18/59
	10	6/7	चंद्र	7 13 / 29 19	उ.षा.	10 54	शुभ	12 00	मकर	भद्रा 7/13 से 18/16 तक,	5/41	19/14	5/38	18/58	5/35	19/03	6/11	18/59
	11	8	मंग.	28 00	श्रव	9 52	शुक्ल	9 28	कुं. 21/34	पंचक प्रारम्भ 21/34, सूर्य कृति में 4/03	5/40	19/15	5/37	18/59	5/34	19/03	6/10	19/01
	12	9	बुध	27 18	धनि	9 25	ब्रह्म	7 27	कुम्भ		5/39	19/16	5/36	18/59	5/33	19/04	6/10	19/01
	13	10	गुरु	27 14	शत	9 35	ऐंद्र वैधृ	5 55 / 28 52	मी. 28/07	भद्रा 15/16 से 27/14 तक,	5/39	19/17	5/36	19/00	5/33	19/05	6/09	19/01
	14	11	शुक्र	27 45	पू.भा.	10 22	विष्क	28 17	मीन	सूर्य वृष में 14/55, **ज्येष्ठ संक्रान्ति,** अपरा एकादशी व्रत, **B**	5/38	19/17	5/35	19/00	5/32	19/05	6/09	19/02
	15	12	शनि	28 48	उ.भा.	11 42	प्रीति	28 07	मीन	गंडमूल 11/42 से	5/37	19/18	5/34	19/01	5/32	19/06	6/09	19/02
	16	13	रवि	पू. दि.	रेव	13 31	आयु	28 18	मे. 13/31	पंचक समाप्त 13/31, प्रदोष व्रत, गण्डमूल	5/36	19/18	5/34	19/01	5/31	19/07	6/09	19/02
	17	13	चंद्र	6 18	अश्वि	15 46	सौभा	28 48	मेष	भद्रा 6/18 से 19/15 तक, गण्डमूल 15/46 तक, **शुक्र वक्री C**	5/36	19/11	5/33	19/02	5/31	19/07	6/09	19/03
	18	14	मंग.	8 11	भर	18 21	शोभ	29 31	वृ. 25/03	वट सावित्री व्रत, अमावस (पितृकार्य हेतु), शनि आर्द्रा (4) में 19/30	5/35	19/20	5/32	19/02	5/30	19/08	6/08	19/03
	19	30	बुध	10 22	कृति	21 12	अति	पू. दिन	वृष	**अमावस** (देवकार्यों, स्नान, दानादि), वट सावित्री पूज, भावुका अमा.	5/35	19/21	5/32	19/03	5/30	19/08	6/08	19/03
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	20	1	गुरु	12 46	रोह	24 12	अति	6 25	वृष	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, सूर्य सायन मिथुन में 22/29	5/34	19/21	5/32	19/03	5/29	19/09	6/07	19/04
	21	2	शुक्र	15 16	मृग	27 16	सुक	7 25	मि. 13/44	रम्भा तृतीया,	5/33	19/22	5/31	19/04	5/29	19/10	6/07	19/04
	22	3	शनि	17 47	आर्द्रा	पू. दिन	धृति	8 27	मिथुन	प्रताप जयन्ती, बुध भर. में 15/18	5/33	19/23	5/31	19/04	5/28	19/11	6/07	19/04
	23	4	रवि	20 10	आर्द्रा	6 17	शूल	9 25	क. 26/26	भद्रा 6/59 से 20/10 तक,	5/32	19/24	5/31	19/05	5/27	19/11	6/06	19/05
	24	5	चंद्र	22 17	पुर्न	9 08	गंड	10 15	कर्क	सूर्य रोहिणी में 24/12,	5/31	19/25	5/30	19/06	5/27	19/12	6/06	19/05
	25	6	मंग.	23 59	पुष्य	11 38	वृद्धि	10 48	कर्क	गण्डमूल 11/38 के बाद,	5/30	19/25	5/30	19/06	5/27	19/12	6/06	19/05
	26	7	बुध	25 08	श्ले	13 41	ध्रुव	10 59	सिं. 13/41	भद्रा 25/08 से, गण्डमूल	5/30	19/25	5/30	19/06	5/26	19/13	6/06	19/06
	27	8	गुरु	25 36	मघा	15 07	व्या.	10 42	सिंह	भद्रा 13/22 तक, धूमावती जयन्ती,	5/30	19/26	5/30	19/07	5/26	19/13	6/06	19/06
	28	9	शुक्र	25 20	पू.फा.	15 52	हर्ष	9 52	कं. 21/55	वक्री शुक्र मृग (2) वृष में 17/11	5/29	19/26	5/29	19/08	5/26	19/14	6/05	19/07
	29	10	शनि	24 18	उ.फा.	15 51	वज्र	8 26	कन्या	मंगल पुर्न में 14/01, **मेला गंगा दशहरा (हरिद्वार)**	5/29	19/27	5/29	19/08	5/25	19/15	6/05	19/07
	30	11	रवि	22 31	हस्त	15 04	सिद्धि व्य.	6 22 / 27 43	तु. 26/25	भद्रा 11/25 से 22/31 तक, निर्जला एकादशी व्रत	5/29	19/28	5/29	19/09	5/25	19/15	6/05	19/08
	31	12	चंद्र	20 03	चित्रा	13 36	वरी	24 32	तुला	बुध कृति में 11/58, वट सावित्री व्रतारम्भ	5/29	19/28	5/28	19/10	5/25	19/16	6/05	19/08

A (सिंहस्थ) महापर्व (उज्जैन), वैशाखस्नान समाप्त **B** पुण्यकाल सं. प्रातः 8/31 से शुरु, भद्रकाली एकादशी (पंजा.) **C** 27/53, नैपच्यून वक्री 17/52

वि. संवत् 2061, जून मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2004 ई.

मास पक्ष	ता.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं मिं	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं मिं	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं मिं	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं मिं	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.
ज्ये. शुक्ल	1	13	मंग.	17 01	स्वा.	11 32	परि	20 54	वृ. 27/40	जून प्रारम्भ, भौम प्रदोष व्रत	5/28	19/29	5/28	19/10	5/24	19/26	6/05	19/08
	2	14	बुध	13 34	विशा	8 59	शिव	16 56	वृश्चिक	भ. 13/34 से 23/42 तक, वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्षे), **बुध A**	5/28	19/29	5/28	19/11	5/24	19/17	6/05	19/09
	3	15	गुरु	9 50	अनु. ज्ये.	6 08 27 08	सिद्ध	12 45	ध. 27/08	ज्येष्ठ पूर्णिमा, कबीर जयंती, गण्डमूल विचार	5/28	19/30	5/28	19/11	5/24	19/17	6/05	19/09
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	4	1/2	शुक्र	5 59 26 13	मूला	24 10	साध्य शुभ	8 30 28 19	धनु	आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारंभ, शुक्र पश्चिम में अस्त 16/29, व. शुक्र **B**	5/28	19/30	5/28	19/11	5/24	19/18	6/05	19/09
	5	3	शनि	22 40	पू.षा.	21 25	शुक्ल	24 22	म. 26/48	भद्रा 12/27 से 22/40 तक **शुक्रास्त पश्चि. 4 जून**	5/28	19/31	5/27	19/12	5/24	19/18	6/05	19/10
	6	4	रवि	19 31	उ.षा.	19 05	ब्रह्म	20 45	मकर	श्री गणेश चतुर्थी व्रत (जालन्धर में चंद्रोदय रात्रि 23/11)	5/28	19/32	5/27	19/12	5/24	19/19	6/05	19/10
	7	5	चंद्र	16 56	श्रव	17 17	ऐंद्र	17 35	कुं. 28/38	सूर्य मृग. में 22/09, बुध पूर्व में अस्त 27/50, बुध रोहि. में 18/54 **C**	5/27	19/32	5/27	19/13	5/23	19/19	6/05	19/10
	8	6	मंग.	15 00	धनि	16 10	वैधृ	15 00	कुम्भ	भद्रा 15/00 से 26/25 तक, गुरु पू.फा. (2) में 5/05	5/27	19/32	5/27	19/13	5/23	19/20	6/05	19/11
	9	7	बुध	13 50	शत	15 48	विष्क	13 00	कुम्भ	वक्री शुक्र रोहि. (4) में 14/42	5/27	19/33	5/27	19/14	5/23	19/20	6/05	19/11
	10	8	गुरु	13 27	पू.भा.	16 12	प्रीति	11 39	मी. 10/01	यूरेनस वक्री 21/19,	5/27	19/33	5/27	19/14	5/23	19/20	6/05	19/11
	11	9	शुक्र	13 50	उ.भा.	17 21	आयु	10 55	मीन	भद्रा 26/22 से **शुक्रोदय पूर्वे 13 जून**	5/26	19/34	5/27	19/15	5/23	19/21	6/05	19/11
	12	10	शनि	14 54	रेव	19 09	सौभा	10 43	मे. 19/09	भद्रा 14/54 तक, पंचक समाप्त 19/09	5/26	19/34	5/27	19/15	5/23	19/21	6/05	19/12
	13	11	रवि	16 33	अश्वि	21 30	शोभ	10 59	मेष	बुध मृग. में 29/24 योगिनी एकादशी व्रत, शुक्र पूर्व में उदय 14/27	5/26	19/34	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/12
	14	12	चंद्र	18 37	भर	24 13	अति	11 37	मेष	सूर्य मिथुन में 21/33, **आषाढ़ संक्रान्ति, मंगल कर्क** में 10/37 **D**	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/12
	15	13	मंग.	20 57	कृति	27 10	सुक	12 28	वृ. 6/56	भद्रा 20/57 से, वक्री शुक्र रोहि. (3) में 5/36, भौम प्रदोष व्रत	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/12
	16	14	बुध	23 26	रोह	पू. दिन	धृति	13 29	वृष	भद्रा 10/12 तक	5/26	19/35	5/27	19/17	5/24	19/23	6/05	19/13
	17	30	गुरु	25 57	रोह	6 15	शूल	14 32	मि. 19/47	आषाढ़ अमावस, **बुध मिथुन में 6/50**	5/27	19/36	5/27	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	18	1	शुक्र	28 23	मृग	9 18	गंड	15 34	मिथुन	आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ	5/27	19/36	5/27	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
	19	2	शनि	पू. दि.	आर्द्रा	12 17	वृद्धि	16 30	मिथुन	मंगल पुष्य में 17/34, चन्द्रदर्शन, रथ यात्रा (पुरी)	5/27	19/36	5/28	19/17	5/24	19/24	6/06	19/13
	20	2	रवि	6 41	पुर्न	15 05	ध्रुव	17 18	क. 8/24	बुध आर्द्रा में 7/43, **शनि पश्चिम में अस्त 14/30,** रथ यात्रा उत्सव	5/27	19/37	5/28	19/18	5/24	19/24	6/06	19/14
	21	3	चंद्र	8 43	पुष्य	17 38	व्या.	17 54	कर्क	भ. 21/35 से, सूर्य आर्द्रा में 21/07, सूर्य सायन कर्क में 6/27 **E**	5/28	19/37	5/28	19/18	5/24	19/24	6/06	19/14
	22	4	मंग.	10 27	श्ले	19 51	हर्ष	18 13	सिं. 19/51	भद्रा 10/27 तक, गण्डमूल	5/28	19/37	5/28	19/18	5/24	19/24	6/07	19/14
	23	5	बुध	11 46	मघा	21 38	वज्र	18 11	सिंह	स्कन्द षष्ठी, गण्डमूल 21/38 तक, वक्री शुक्र रोहि. (2) में 5/19**F**	5/28	19/37	5/28	19/18	5/25	19/24	6/07	19/14
	24	6	गुरु	12 34	पू.फा.	22 52	सिद्धि	17 45	कं. 29/05	विवस्वत सप्तमी (षष्ठी विद्धा)	5/29	19/37	5/29	19/18	5/25	19/24	6/07	19/14
	25	7	शुक्र	12 47	उ.फा	23 30	व्य.	16 50	कन्या	भद्रा 12/47 से 24/33 तक	5/29	19/37	5/29	19/18	5/25	19/25	6/07	19/15
	26	8	शनि	12 19	हस्त	23 28	वरी	15 23	कन्या	बुध पुर्न. में 13/16	5/29	19/38	5/29	19/19	5/25	19/25	6/07	19/15
	27	9	रवि	11 10	चित्रा	22 43	परि	13 21	तु. 11/10	भढली नवमी,	5/30	19/38	5/30	19/19	5/26	19/25	6/07	19/15
	28	10	चंद्र	9 19	स्वा.	21 18	शिव	10 46	तुला	भद्रा 20/04 से,	5/30	19/38	5/30	19/19	5/26	19/25	6/07	19/15
	29	11/12	मंग.	6 49 27 46	विशा	19 18	सिद्ध साध्य	7 40 28 06	वृ. 13/50	भद्रा 6/49 तक, देवशयनी एकादशी व्रत, चातुर्मास व्रतारम्भ	5/30	19/38	5/30	19/19	5/27	19/25	6/08	19/16
	30	13	बुध	24 17	अनु	16 47	शुभ	24 10	वृश्चिक	प्रदोष व्रत, **शुक्र मार्गी 4/48,** बुध पश्चिम में उदय 15/48	5/31	19/38	5/31	19/19	5/27	19/25	6/08	19/16

A वृष में 10/25 **B** मृग (1) में 5/22 **C** पंचक प्रा. 28/38 **D** पुण्य संक्रान्ति दुपै. 15/09 के बाद **E** दक्षिणायन प्रा., वर्षा ऋतु प्रारंभ **F** कुमार षष्ठी, व. प्लूटो ज्ये (3) में 23/20

वि. संवत् 2061, जुलाई मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2004 ई०

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
आ. शु.	1	14	गुरु	20	32	ज्ये.	13	57	शुक्ल	20	00	ध. 13/57	भद्रा 20/32 से, बुध कर्क में 13/47, गण्डमूल	5/31	19/38	5/31	19/19	5/27	19/25	6/09	19/16
	2	15	शुक्र	16	39	मूला	10	55	ब्रह्म	15	44	धनु	भद्रा 6/36 तक, **गुरु पूर्णिमा**, व्यास पूजा, वायु परीक्षा, गंडमूल **A**	5/31	19/38	5/31	19/19	5/28	19/25	6/09	19/16
प्र. श्रावण कृष्ण पक्ष	3	1	शनि	12	51	पूषा उषा	7 29	55 08	ऐंद्र	11	31	म. 13/12	प्र. (शुद्ध) श्रावण कृष्ण पक्ष प्रा., बुध पुष्य में 18/15, अशून्यशयन व्रत	5/32	19/38	5/32	19/19	5/28	19/25	6/10	19/16
	4	2	रवि	9	18	श्रव	26	45	वैधृ विष्क	7 27	30 51	मकर	भद्रा 19/44 से, गुरु पू.फा. (3) में 25/01	5/32	19/38	5/32	19/19	5/29	19/25	6/10	19/16
	5	3/4	चंद्र	6 27	10 39	धनि	24	56	प्रीति	24	40	कुं. 13/45	भद्रा 6/10 तक, पंचक प्रारम्भ 13/45, सूर्य पुर्न. में 20/45, **B**	5/32	19/38	5/33	19/19	5/29	19/25	6/10	19/16
	6	5	मंग	25	52	शत	23	50	आयु	22	05	कुम्भ	नाग पंचमी (राज.)	5/33	19/38	5/33	19/18	5/30	19/25	6/11	19/16
	7	6	बुध	24	54	पू.भा.	23	34	सौभा	20	10	मी. 17/33	भद्रा 24/54 से,	5/33	19/38	5/34	19/18	5/30	19/24	6/11	19/16
	8	7	गुरु	24	48	उ.भा.	24	08	शोभ	18	56	मीन	भद्रा 12/45 तक	5/34	19/38	5/34	19/18	5/31	19/24	6/12	19/16
	9	8	शुक्र	25	32	रेव	25	32	अति	18	22	मे. 25/32	पंचक समाप्त 25/32, गण्डमूल विचार	5/34	19/37	5/34	19/18	5/31	19/24	6/12	19/16
	10	9	शनि	26	59	अश्वि	27	37	सुक	18	24	मेष	मंगल आश्ले. में 21/41, बुध आश्ले. में 26/20, गण्डमूल	5/35	19/37	5/35	19/18	5/32	19/24	6/12	19/16
	11	10	रवि	28	59	भर	पूरा	दिन	धृति	18	55	मेष	भद्रा 15/59 से 28/59 तक, शनि पुर्न (2) 27/39	5/36	19/37	5/35	19/18	5/32	19/23	6/13	19/16
	12	11	चंद्र	पू.	दि.	भर	6	14	शूल	19	45	वृ. 12/57		5/36	19/37	5/36	19/18	5/33	19/23	6/13	19/16
	13	11	मंग	7	21	कृति	9	12	गंड	20	47	वृष	कामिका एकादशी व्रत	5/37	19/36	5/36	19/17	5/33	19/23	6/13	19/15
	14	12	बुध	9	53	रोह	12	17	वृद्धि	21	52	मि. 25/50	प्रदोष व्रत	5/37	19/36	5/37	19/17	5/34	19/23	6/14	19/15
	15	13	गुरु	12	24	मृग	15	22	ध्रुव	22	53	मिथुन	भद्रा 12/24 से 25/35 तक	5/38	19/36	5/37	19/17	5/34	19/22	6/14	19/15
	16	14	शुक्र	14	46	आर्द्रा	18	17	व्या.	23	46	मिथुन	सूर्य पुर्न (4) कर्क में 8/26, **श्रावण संक्रान्ति**, राहु अश्वि (4) केतु **C**	5/38	19/36	5/38	19/16	5/35	19/22	6/14	19/15
	17	30	शनि	16	54	पुर्न	20	58	हर्ष	24	26	क. 14/19	**शनिवारी हरियाली अमावस**	5/39	19/35	5/38	19/16	5/35	19/22	6/14	19/15
प्र. श्रावण (अधि.) शुक्ल पक्ष	18	1	रवि	18	45	पुष्य	23	22	वज्र	24	53	कर्क	प्र. श्रावण (अधिक) शुक्ल पक्ष प्रा., **अधिक** (पुरुषोत्तम, मल) **D**	5/39	19/35	5/38	19/16	5/36	19/21	6/15	19/14
	19	2	चंद्र	20	16	श्ले.	25	27	सिद्धि	25	05	सिं. 25/27	सूर्य पुष्य में 20/14, गण्डमूल	5/40	19/35	5/39	19/15	5/36	19/21	6/15	19/14
	20	3	मंग	21	26	मघा	27	11	व्य.	25	00	सिंह	बुध सिंह में 11/24, गण्डमूलादि	5/40	19/35	5/40	19/15	5/37	19/21	6/15	19/14
	21	4	बुध	22	12	पू.फा.	28	31	वरी	24	36	सिंह	भद्रा 9/49 से 22/12 तक, शुक्र मृग में 21/39	5/41	19/34	5/41	19/14	5/38	19/20	6/16	19/14
	22	5	गुरु	22	32	उ.फा.	29	25	परि	23	51	कं. 10/47	सूर्य सायन सिंह में 17/20	5/42	19/34	5/41	19/14	5/38	19/20	6/16	19/14
	23	6	शुक्र	22	23	हस्त	पूरा	दिन	शिव	22	42	कन्या		5/42	19/33	5/42	19/13	5/39	19/19	6/16	19/13
	24	7	शनि	21	41	हस्त चित्रा	5 29	49 41	सिद्ध	21	08	तु. 17/49	भद्रा 21/41 से, मंगल पश्चिम में अस्त 13/10, गुरु पू.फा. (4) में **E**	5/43	19/32	5/42	19/13	5/40	19/19	6/17	19/13
	25	8	रवि	20	25	स्वा.	28	58	साध्य	19	06	तुला	भद्रा 9/03 तक,	5/44	19/32	5/43	19/12	5/40	19/18	6/17	19/13
	26	9	चंद्र	18	35	विशा	27	41	शुभ	16	37	वृ. 22/03	शनि पूर्व में उदय 8/45	5/45	19/31	5/43	19/12	5/41	19/18	6/17	19/12
	27	10	मंग	16	12	अनु.	25	53	शुक्ल	13	40	वृश्चिक	भद्रा 26/46 से,	5/45	19/30	5/44	19/11	5/41	19/17	6/18	19/12
	28	11	बुध	13	20	ज्ये.	23	39	ब्रह्म	10	19	ध. 23/39	भद्रा 13/20 तक, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत, गण्डमूल	5/46	19/30	5/44	19/11	5/42	19/17	6/18	19/12
	29	12	गुरु	10	06	मूला	21	06	ऐंद्र वैधृ	6 26	38 44	धनु	प्रदोष व्रत, गण्डमूल विचार	5/47	19/29	5/44	19/10	5/43	19/17	6/18	19/11
	30	13/14	शुक्र	6 27	38 04	पू.षा.	18	23	विष्क	22	44	म. 23/42	भद्रा 27/04 से, **F** 7/43, व्रत पूर्णिमा	5/47	19/27	5/45	19/09	5/43	19/16	6/19	19/11
	31	15	शनि	23	36	उ.षा.	15	41	प्रीति	18	46	मकर	भ. 13/20 तक, **मंगल** मघा (1) **सिंह में 24/59**, शुक्र मिथुन में **F**	5/48	19/27	5/46	19/09	5/44	19/15	6/19	19/10

A आषाढ़ी पूर्णिमा, कोकिला व्रत, चातुर्मास्य व्रतनियमादि प्रा., शिव शयनोत्सव **B** श्री गणेश चतु. व्रत **C** स्वा. (2) में 15/53 पुण्यकाल संक्रान्ति उषाकाल से, **D** मासारंभ, चंद्रदर्शन **E** 26/38

वि. संवत् 2061, अगस्त मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2004 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.
द्वितीय (अधि.) श्रावण कृष्ण पक्ष	1	1	रवि	20 23	श्रव	13 10	आयु	15 00	कुं. 24/03	अग. मास प्रारम्भ, पंचक प्रारंभ 24/03, द्वि. अधिक (पुरुषोत्तम) A	5/48	19/25	5/46	19/08	5/44	19/13	6/20	19/10
	2	2	चंद्र	17 37	धनि	11 03	सौभा	11 33	कुम्भ	भद्रा 28/32 से, सूर्य आश्ले. में 19/10	5/49	19/25	5/47	19/07	5/45	19/12	6/20	19/09
	3	3	मंग	15 27	शत	9 29	शोभ	8 35	मी. 26/46	भद्रा 15/27 तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, बुध पू.फा. में 28/50	5/49	19/24	5/47	19/07	5/45	19/11	6/20	19/09
	4	4	बुध	14 01	पू.भा.	8 38	अति सुक	6 10 / 28 25	मीन		5/50	19/23	5/48	19/06	5/46	19/11	6/21	19;08
	5	5	गुरु	13 25	उ.भा.	8 34	धृति	27 20	मीन	गंडमूल 8/34 के बाद,	5/51	19/23	5/49	19/05	5/46	19/10	6/21	19/08
	6	6	शुक्र	13 40	रेव	9 22	शूल	26 55	मे. 9/22	भद्रा 13/40 से 26/12 तक, पंचक समाप्त 9/22, गण्डमूल	5/52	19/22	5/49	19/04	5/47	19/09	6/21	19/07
	7	7	शनि	14 44	अश्वि	10 57	गंड	27 05	मेष	शनि पुर्न (3) में 9/48, गण्डमूल 10/57 तक	5/52	19/21	5/50	19/03	5/48	19/08	6/22	19/07
	8	8	रवि	16 28	भर	13 12	वृद्धि	27 42	वृ. 19/51	शुक्र आर्द्रा में 8/40, वक्री नैपच्यून श्रव. (3) में 16/30	5/53	19/20	5/51	19/02	5/49	19/07	6/22	19/06
	9	9	चंद्र	18 41	कृति	15 57	ध्रुव	28 36	वृष		5/53	19/19	5/51	19/01	5/49	19/06	6/22	19/05
	10	10	मंग	21 09	रोह	18 58	व्या.	29 38	वृष	भद्रा 7/55 से 21/09 तक, **बुध वक्री 5/50**	5/54	19/18	5/52	19/00	5/50	19/05	6/22	19/05
	11	11	बुध	23 09	मृग	22 02	हर्ष	पू. दि.	मि. 8/30	गुरु उ.फा. (1) में 16/14, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत	5/55	19/17	5/52	18/59	5/50	19/04	6/22	19/04
	12	12	गुरु	25 59	आर्द्रा	24 56	हर्ष	6 38	मिथुन		5/56	19/16	5/53	18/58	5/51	19/03	6/23	19/03
	13	13	शुक्र	28 01	पुर्न	27 34	वज्र	7 28	क. 20/56	भद्रा 28/01 से, प्रदोष व्रत	5/57	19/15	5/54	18/58	5/52	19/02	6/23	19/03
	14	14	शनि	29 40	पुष्य	29 49	सिद्धि	8 04	कर्क	भद्रा 16/51 तक,	5/57	19/13	5/54	18/57	5/52	19/02	6/23	19/02
	15	30	रवि	पू. दि.	श्ले	पू. दिन	व्य.	8 21	कर्क	भारत स्वतन्त्रता दिवस, अमावस (पितृकार्य हेतु), व. बुध मघा (4) B	5/58	19/12	5/55	18/56	5/53	19/01	6/23	19/02
	16	30	चंद्र	6 54	श्ले	7 40	वरी	8 19	सिं. 7/40	सूर्य मघा(1) सिंह में 16/48, **भाद्रपद संक्रांति, सोमवती अमा.,** C	5/59	19/11	5/55	18/55	5/53	19/00	6/24	19/01
द्वितीय (शुद्ध) श्रावण शुक्ल पक्ष	17	1	मंग	7 44	मघा	9 07	परि	7 58	सिंह	द्वि. (शुद्ध) श्रावण शुक्ल पक्ष प्रा., चन्द्रदर्शन, गंडमूल, बुध पश्चिम D	5/59	19/10	5/56	18/54	5/54	18/59	6/24	19/01
	18	2	बुध	8 09	पू.फा.	10 11	शिव	7 18	कं. 16/23		6/00	19/09	5/56	18/53	5/55	18/58	6/24	19/00
	19	3	गुरु	8 12	उ.फा.	10 53	सिद्ध साध्य	6 20 / 29 05	कन्या	भ. 20/02 से, मधुस्रवा (सिंघारा) तीज, हरियाली तीज, दूर्वा गणपति व्रत	6/00	19/08	5/57	18/52	5/55	18/56	6/24	19/00
	20	4	शुक्र	7 52	हस्त	11 12	शुभ	27 31	तु. 23/13	भद्रा 7/52 तक, **नाग पंचमी**	6/01	19/06	5/57	18/51	5/56	18/55	6/24	19/00
	21	5	शनि	7 10	चित्रा	11 10	शुक्ल	25 39	तुला	मंगल पू.फा. में 26/03, कल्की जयंती,	6/01	19/05	5/58	18/50	5/56	18/54	6/25	18/59
	22	6/7	रवि	6 04 / 28 35	स्वा.	10 44	ब्रह्म	23 28	बृ. 28/09	भद्रा 28/35, से गो. तुलसीदास जयंती, शुक्र पुर्न. में 14/19, सूर्य E	6/02	19/04	5/58	18/49	5/57	18/53	6/25	18/58
	23	8	चंद्र	26 43	विशा	9 55	ऐंद्र	20 57	बृश्चिक	भद्रा 15/39 तक, **श्री दुर्गाष्टमी,** मेला चिन्तपूर्णी, कांगड़ा, चामुण्डा,F	6/02	19/03	5/59	18/48	5/58	18/52	6/25	18/57
	24	9	मंग	24 29	अनु	8 43	वैधृ	18 08	बृश्चिक		6/03	19/02	5/59	18/47	5/58	18/51	6/25	18/56
	25	10	बुध	21 55	ज्ये. मूला	7 09 / 29 18	विष्क	15 03	ध. 7/09	गण्डमूल विचार	6/04	19/01	5/59	18/46	5/59	18/50	6/26	18/55
	26	11	गुरु	19 07	पू.षा.	27 13	प्रीति	11 44	धनु	भद्रा 8/31 से 19/07 तक, पवित्रा एकादशी व्रत,	6/04	19/00	6/00	18/45	5/59	18/49	6/26	18/54
	27	12	शुक्र	16 10	उ.षा.	25 03	आयु सौभा	8 16 / 28 45	म. 8/41	प्रदोष व्रत, **गुरु कन्या राशि में 23/36** G यजु उपाकर्म	6/05	18/59	6/00	18/44	6/00	18/47	6/26	18/53
	28	13	शनि	13 13	श्रव	22 57	शोभ	25 18	मकर	+ अथर्व-उपाकर्म, प्लूटो मार्गी 25/00	6/06	18/57	6/01	18/43	6/00	18/46	6/27	18/52
	29	14	रवि	10 24	धनि	21 02	अति	22 02	कुं. 9/57	भद्रा 10/24 से 21/09 तक, **व्रत पूर्णिमा**, पंचक प्रारंभ 9/57, शुक्ल G	6/07	18/55	6/01	18/42	6/01	18/45	6/27	18/51
	30	15/1	चंद्र	7 53 / 29 47	शत	19 30	सुक	19 04	कुम्भ	सूर्य पू.फा. में 12/45, श्रावण पूर्णिमा, **रक्षा बन्धन**, ऋषि तर्पण H	6/07	18/54	6/02	18/40	6/02	18/44	6/28	18/50
	31	2	मंग	28 17	पू.भा.	18 28	धृति	16 31	मी. 12/40	H दर्शन श्री अमरनाथ गुफा, भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारंभ, कृष्ण-यजु +	6/08	18/53	6/02	18/39	6/02	18/43	6/28	18/49

A श्रावण कृष्ण पक्ष प्रा., **B** में 24/53 **C** अधिक मास समाप्त, पुण्य संक्रांति 10/24 के बाद **D** में अस्त 8/42 **E** सायन कन्या में 24/23, शरद् ऋतु प्रारम्भ **F** दूर्वाष्टमी व्रत

वि. संवत् 2061, सितम्बर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2004 ई.

मास पक्ष	सितंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	1	3	बुध	27 28	उ.भा.	18 05	शूल	14 29	मीन	भद्रा 15/53 से 27/28 तक, **शुक्र कर्क में 9/58,** कज्जली तीज	6/08	18/52	6/03	18/39	6/03	18/42	6/29	18/48
	2	4	गुरु	27 25	रेव	18 25	गंड	13 02	मे. 18/25	पंचक समाप्त, 18/25, श्री गणेश (बहुला) चतुर्थी व्रत, बुध मार्गी **A**	6/09	18/51	6/04	18/38	6/03	18/41	6/29	18/47
	3	5	शुक्र	28 08	अश्वि	19 31	वृद्धि	12 12	मेष	गण्डमूल 19/31 तक, अगस्त्य उदय + हल षष्ठी	6/10	18/50	6/04	18/36	6/04	18/40	6/29	18/46
	4	6	शनि	29 33	भर	21 19	ध्रुव	11 57	वृ. 27/53	भ. 29/33 से, चन्दन षष्ठी व्रत चं. उ. व्या., शुक्र पुष्य में 13/57,+	6/11	18/49	6/05	18/35	6/04	18/38	6/29	18/45
	5	7	रवि	पूरा दि.	कृति	23 44	व्या.	12 12	वृष	भद्रा 18/32 तक, **शनि पुर्न (4) कर्क में 28/30**	6/11	18/48	6/05	18/34	6/05	18/37	6/29	18/44
	6	7	चंद्र	7 32	रोह	26 32	हर्ष	12 52	वृष	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त, **गुरु पश्चिम में अस्त 7/50**	6/12	18/47	6/06	18/33	6/06	18/35	6/29	18/44
	7	8	मंग	9 53	मृग	29 32	वज्र	13 45	मि. 16/02	श्री कृष्ण जन्माष्टमी वैष्णव,	6/12	18/45	6/06	18/32	6/06	18/34	6/30	18/43
	8	9	बुध	12 21	आर्द्रा	पू. दिन	सिद्धि	14 43	मिथुन	भद्रा 25/32 से, श्री गुग्गा नवमी	6/13	18/43	6/06	18/31	6/07	18/33	6/30	18/43
	9	10	गुरु	14 43	आर्द्रा	8 28	व्य.	15 34	क. 28/30	भद्रा 14/43 तक	6/14	18/42	6/07	18/29	6/07	18/32	6/30	18/42
	10	11	शुक्र	16 45	पुर्न	11 09	वरी	16 10	कर्क	अजा एकादशी व्रत	6/14	18/40	6/07	18/28	6/08	18/30	6/30	18/41
	11	12	शनि	18 21	पुष्य	13 25	परि	16 26	कर्क	मंगल उ.फा. में 23/35, वत्स द्वादशी	6/15	18/38	6/08	18/27	6/08	18/29	6/30	18/40
	12	13	रवि	19 25	श्ले	15 12	शिव	16 19	सिं. 15/12	भद्रा 19/25 से, गुरु उ.फा. (3) में 15/37, प्रदोष व्रत	6/16	18/37	6/08	18/26	6/09	18/28	6/30	18/40
	13	14	चंद्र	19 58	मघा	16 27	सिद्ध	15 45	सिंह	भद्रा 7/42 तक, सूर्य उ.फा. में 6/36, गण्डमूल 16/27 तक	6/16	18/37	6/09	18/25	6/09	18/27	6/30	18/39
	14	अमा	मंग	19 59	पू.फा.	17 12	साध्य	14 48	कं. 23/19	**कुशग्रहणी पिठौरी अमावस**	6/17	18/36	6/09	18/23	6/10	18/25	6/30	18/38
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	15	1	बुध	19 33	उ.फा.	17 30	शुभ	13 28	कन्या	भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारंभ, बुध पू.फा. में 23/22	6/17	18/35	6/10	18/22	6/11	18/24	6/30	18/37
	16	2	गुरु	18 44	हस्त	17 24	शुक्ल	11 48	तु. 29/12	सूर्य कन्या में 16/41, **आश्विन संक्रांति,** मंगल कन्या **में 28/12, B**	6/18	18/33	6/10	18/21	6/11	18/23	6/31	18/36
	17	3	शुक्र	17 34	चित्रा	16 57	ब्रह्म	9 52	तुला	भद्रा 28/51 से, हरितालिका तीज, **कलंक चतुर्थी** (चंद्रदर्शन निषेध **C**	6/18	18/31	6/11	18/20	6/12	18/22	6/31	18/35
	18	4	शनि	16 07	स्वा.	16 14	ऐंद्र वैधृ	7 41 29 17	तुला	भद्रा 16/07 तक, **सिद्धि विनायक व्रत**	6/19	18/30	6/11	18/19	6/12	18/20	6/31	18/34
	19	5	रवि	14 26	विशा	15 17	विष्क	26 43	वृ. 9/32	ऋषि पंचमी	6/20	18/28	6/12	18/17	6/13	18/19	6/31	18/34
	20	6	चंद्र	12 32	अनु	14 07	प्रीति	24 00	वृश्चिक	सूर्य षष्ठी, बुध पूर्व में अस्त 5/25, वक्री यूरेनस शत (1) में 6/18	6/21	18/27	6/12	18/16	6/13	18/18	6/31	18/33
	21	7	मंग	10 29	ज्ये.	12 48	आयु	21 09	ध. 12/48	भद्रा 10/29 से 21/23 तक, सन्तान सप्तमी, महालक्ष्मी व्रतारंभ, राधाष्टमी	6/22	18/26	6/13	18/15	6/14	18/16	6/32	18/32
	22	8/9	बुध	8 17 30 01	मूला	11 21	सौभा	18 13	धनु	दधीची जयंती, श्री चन्द्र जयंती (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव), सूर्य **D**	6/22	18/25	6/13	18/14	6/15	18/15	6/32	18/31
	23	10	गुरु	27 42	पू.षा.	9 49	शोभ	15 14	म. 15/26	बुध उ.फा. में 16/23 **G** 16/13, पूर्णिमा का श्राद्ध	6/23	18/24	6/14	18/13	6/15	18/14	6/32	18/30
	24	11	शुक्र	25 26	उ.षा.	8 16	अति	12 15	मकर	भद्रा 14/34 से 25/26 तक, पदमा एकादशी व्रत **H** पंचक समा. 27/38	6/24	18/23	6/14	18/12	6/16	18/13	6/32	18/29
	25	12	शनि	23 18	श्रव धनि	6 47 29 26	सुक	9 19	कुं. 18/05	पंचक प्रारम्भ 18/05, **बुध कन्या में 12/05,** वामन जयं., श्रवण **E**	6/24	18/21	6/15	18/10	6/16	18/11	6/33	18/28
	26	13	रवि	21 23	शत	28 20	धृति शूल	6 31 27 55	कुम्भ	सूर्य हस्त में 22/04, प्रदोष व्रत **F** उ.फा. (4) में 26/07	6/25	18/20	6/15	18/09	6/17	18/10	6/33	18/27
	27	14	चंद्र	19 48	पू.भा.	27 37	गंड	25 38	मी. 21/45	भ. 19/48 से, अनन्त चौदश, मेला सोढल (जालं.) व मे. छपार गुरु **F**	6/25	18/18	6/16	18/08	6/17	18/09	6/33	18/26
	28	पूर्ण	मंग	18 40	उ.भा.	27 21	वृद्धि	23 42	मीन	भद्रा 7/14 तक, प्रौष्ठपदी भाद्रपद पूर्णिमा, **शुक्र सिंह राशि में G**	6/26	18/16	6/16	18/07	6/18	18/08	6/33	18/25
	29	आ.	बुध	18 03	रेव	27 38	ध्रुव	22 12	मे. 27/28	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रा., श्राद्ध (पितृ) पक्ष प्रा., प्रतिपदा का श्राद्ध, **H**	6/26	18/15	6/17	18/06	6/19	18/06	6/33	18/24
	30	2	गुरु	18 03	अश्वि	28 32	व्या.	21 12	मेष	बुध हस्त में 23/31, द्वितीया का श्राद्ध	6/27	18/14	6/18	18/04	6/19	18/05	6/33	18/23

A 18/33, जालंधर में चं. उ. रात्रि 8/55 पर **B** शुक्र आश्ले. में 20/31 **C** जालंधर में चंद्रास्त रात्रि 8/07 पर, गौरी तृतीया, साम-उपाकर्म **D** सायन तुला में 22/00, दक्षिण गोलार्द्ध प्रारंभ, **E** द्वादशी व्रत

वि. संवत् 2061, अक्तूबर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2004 ई.

मास पक्ष	अक्तूबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.
आश्विन कृष्ण पक्ष	1	3	शुक्र	18 41	भर	30 03	हर्ष	20 41	मेष	भद्रा 6/22 से 18/41 तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, तृतीया का श्राद्ध	6/28	18/12	6/18	18/03	6/20	18/04	6/34	18/23
	2	4	शनि	19 58	कृति	पू. दिन	वज्र	20 40	वृ. 12/31	मंगल हस्त में 16/16, महा. गाँधी जयंती, चतुर्थी का श्राद्ध **गुरु पूर्व +**	6/28	18/10	6/19	18/02	6/20	18/03	6/34	18/22
	3	5	रवि	21 47	कृति	8 09	सिद्धि	21 03	वृष	पंचमी का श्राद्ध **+ में उदय 8/10**	6/29	18/09	6/19	18/00	6/21	18/01	6/34	18/21
	4	6	चंद्र	24 01	रोह	10 43	व्य.	21 45	मि. 24/08	भद्रा 24/01 से, षष्ठी का श्राद्ध	6/30	18/08	6/20	17/59	6/22	18/00	6/34	18/21
	5	7	मंग	26 28	मृग	13 36	वरी	22 37	मिथुन	भद्रा 13/15 तक, सप्तमी का श्राद्ध **गुरु उदय 2 अक्तू.**	6/30	18/07	6/20	17/58	6/22	17/59	6/34	18/20
	6	8	बुध	28 54	आर्द्रा	16 34	परि	23 31	मिथुन	श्री महालक्ष्मी व्रत, चंद्रोदय व्या., अष्टमी का श्राद्ध	6/31	18/06	6/21	17/57	6/23	17/58	6/35	18/19
	7	9	गुरु	पू. दि.	पुर्न	19 24	शिव	24 14	क. 12/42	सौभाग्यवती श्राद्ध, नवमी का श्राद्ध	6/31	18/05	6/21	17/56	6/24	17/56	6/35	18/19
	8	9	शुक्र	7 06	पुष्य	21 53	सिद्ध	24 40	कर्क	भद्रा 19/58 से, दशमी का श्राद्ध	6/32	18/04	6/22	17/55	6/24	17/55	6/35	18/18
	9	10	शनि	8 50	श्ले	23 52	साध्य	24 41	सिं. 23/52	भद्रा 8/50 तक, एकादशी का श्राद्ध, गण्डमूल	6/33	18/03	6/22	17/54	6/25	17/54	6/35	18/17
	10	11	रवि	10 00	मघा	25 14	शुभ	24 13	सिंह	सूर्य चित्रा में 11/05, इन्दिरा एकादशी व्रत, संन्यासीनां व द्वादशी का श्राद्ध	6/33	18/01	6/23	17/52	6/25	17/53	6/35	18/16
	11	12	चंद्र	10 31	पू.फा.	25 58	शुक्ल	23 14	सिंह	सोम प्रदोष व्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध	6/34	18/00	6/23	17/51	6/26	17/52	6/36	18/15
	12	13	मंग	10 22	उ.फा.	26 04	ब्रह्म	21 44	कं. 8/02	भद्रा 10/22 से 22/00 तक, शस्त्र, विषादि से मृत का श्राद्ध	6/35	17/59	6/24	17/50	6/27	17/51	6/36	18/14
	13	14	बुध	9 37	हस्त	25 37	ऐंद्र	19 47	कन्या	चतुर्दशी-अमावस-**सर्वपितृ श्राद्ध,** गुरु हस्त में 15/30	6/36	17/57	6/25	17/49	6/27	17/49	6/36	18/14
	14	30	गुरु	8 19	चित्रा	24 41	वैधृ	17 25	तु. 13/12	मातामह (नाना) का श्राद्ध, श्राद्ध (महालय पक्ष) समा., **शरद A**	6/37	17/55	6/25	17/48	6/28	17/48	6/37	18/13
आश्विन शुक्ल पक्ष	15	1/2	शुक्र	6 35 / 28 29	स्वा.	23 24	विष्क	14 45	तुला	आश्विन शुक्ल पक्ष प्रारंभ, अग्रसेन जयंती, चन्द्रदर्शन	6/38	17/54	6/26	17/47	6/28	17/47	6/37	18/12
	16	3	शनि	26 10	विशा	21 52	प्रीति	11 50	बृ. 16/16	सूर्य तुला में 28/34, **कार्तिक संक्रां.,** बुध स्वा. में 13/09, रमजान **B**	6/38	17/53	6/26	17/46	6/29	17/46	6/37	18/11
	17	4	रवि	23 44	अनु	20 11	आयु सौभा	8 45 / 29 35	बृश्चिक	भद्रा 12/57 से 23/44 तक	6/39	17/52	6/27	17/45	6/30	17/45	6/38	18/10
	18	5	चंद्र	21 16	ज्ये.	18 27	शोभ	26 26	ध. 18/27	उपाङ्ग ललिता व्रत	6/40	17/51	6/28	17/44	6/31	17/44	6/38	18/09
	19	6	मंग	18 51	मूला	16 46	अति	23 19	धनु	सरस्वती आवाहन	6/41	17/50	6/28	17/43	6/32	17/43	6/38	18/08
	20	7	बुध	16 34	पू.षा.	15 12	सुक	20 19	म. 20/50	भद्रा 16/34 से 27/31 तक, सरस्वती पूजन	6/41	17/49	6/29	17/42	6/32	17/42	6/39	18/07
	21	8	गुरु	14 27	उ.षा.	13 48	धृति	17 29	मकर	महाष्टमी, शुक्र उ.फा. में 10/08, श्री दुर्गाष्टमी	6/42	17/48	6/30	17/41	6/33	17/41	6/39	18/06
	22	9	शुक्र	12 35	श्रव	12 38	शूल	14 50	कुं. 24/10	मंगल चित्रा में 27/13, महानवमी, **विजयादशमी** (दशहरा), **C**	6/43	17/47	6/30	17/40	6/34	17/40	6/39	18/06
	23	10	शनि	11 00	धनि	11 45	गंड	12 25	कुम्भ	भद्रा 22/22 से, सूर्य स्वा. में 21/30, शुक्र कन्या में 28/57, सूर्य **D**	6/43	17/46	6/31	17/39	6/34	17/39	6/40	18/05
	24	11	रवि	9 43	शत	11 11	वृद्धि	10 15	मी. 28/59	भद्रा 9/43 तक, बुध विशा. में 24/21, पापांकुशा एकादशी व्रत **E**	6/44	17/45	6/32	17/38	6/35	17/38	6/40	18/05
	25	12	चंद्र	8 49	पू.भा.	10 58	ध्रुव	8 22	मीन	सोम प्रदोष व्रत	6/45	17/44	6/32	17/37	6/36	17/37	6/40	18/04
	26	13	मंग	8 18	उ.भा.	11 09	व्य, हर्ष	6 48 / 29 35	मीन	गंडमूल 11/09 उपरान्त, बुध पश्चिम से उदय 7/42	6/46	17/43	6/33	17/37	6/37	17/36	6/41	18/04
	27	14	बुध	8 14	रेव	11 46	वज्र	28 43	मे. 11/46	भद्रा 8/14 से 20/26 तक, **शरद पूर्णिमा व्रत,** कोजागर व्रत मंगल **F**	6/47	17/42	6/34	17/36	6/37	17/35	6/41	18/04
	28	15	गुरु	8 38	अश्वि	12 50	सिद्धि	28 14	मेष	**शरद् पूर्णिमा दानादिहेतु, बाल्मीकि जयं.,** कार्तिक स्नान प्रा., गं.मू.	6/48	17/41	6/34	17/35	6/38	17/34	6/41	18/03
का. कृ.	29	1	शुक्र	9 31	भर	14 22	व्य.	28 07	वृ. 20/50	कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारंभ, गुरु हस्त (2) में 17/38, शनि पुष्य (1) में 19/50	6/49	17/39	6/35	17/34	6/39	17/33	6/42	18/03
	30	2	शनि	10 54	कृति	16 23	वरी	28 21	वृष	भ. 23/49 से प्रा.	6/50	17/38	6/36	17/33	6/40	17/32	6/42	18/03
	31	3	रवि	12 44	रोह	18 49	परि	28 54	वृष	भद्रा 12/44 तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, **करक चतुर्थी** (करवा चौथ), **G**	6/51	17/38	6/37	17/33	6/41	17/31	6/43	18/02

A नवरात्रे प्रारंभ, घटस्थापन (प्रातः 10/33 के बाद) देखें व्रत पर्व निर्णय **B**(रोज़े) शुरु **C** पंचकारंभ 24/10, सरस्वती विसर्जन, भरत मिलाप **D** सायन बृश्चिक में 7/19, हेमन्त ऋतु प्रारंभ
E नैपच्यून मार्गी 17/29 **F** पूर्व से उदय 6/32 पंचक समा.11/46 **G** जालंधर में चंद्रोदय रात्रि 7/45 पर, बुध बृश्चिक में 15/55

वि. संवत् 2061, नवम्बर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2004 ई.

मास पक्ष	नवम्बर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.
कार्तिक कृष्ण पक्ष	1	4	चंद्र	14 57	मृग	21 35	शिव	29 40	मि. 8/10	नवम्बर मास प्रारम्भ, शुक्र हस्त में 11/57	6/51	17/35	6/38	17/32	6/41	17/30	6/43	18/02
	2	5	मंग	17 24	आर्द्रा	24 32	सिद्ध	30 33	मिथुन	मंगल तुला में 6/26, बुध अनु. में 22/32, प्लूटो ज्ये. (4) में 18/10	6/52	17/34	6/39	17/34	6/42	17/30	6/44	18/01
	3	6	बुध	19 56	पुर्न	27 30	साध्य	पूरा दि.	क. 20/46	भद्रा 19/56 से,	6/53	17/33	6/39	17/33	6/43	17/29	6/44	18/01
	4	7	गुरु	22 19	पुष्य	30 17	साध्य	7 24	कर्क	भद्रा 9/08 तक,	6/54	17/32	6/40	17/32	6/44	17/28	6/45	18/00
	5	8	शुक्र	24 21	श्ले	पू. दिन	शुभ	8 05	कर्क	सूर्य विशा. में 29/42, **व्रत अहोई अष्टमी,** राधाष्टमी, गण्डमूल	6/54	17/31	6/41	17/31	6/45	17/27	6/45	18/00
	6	9	शनि	25 51	श्ले	8 40	शुक्ल	8 26	सिं. 8/40	गण्डमूल	6/55	17/30	6/42	17/30	6/45	17/26	6/45	17/59
	7	10	रवि	26 40	मघा	10 28	ब्रह्म	8 21	सिंह	भद्रा 14/16 से 26/40 तक, गण्डमूल 10/28 तक,	6/56	17/30	6/42	17/30	6/46	17/26	6/46	17/59
	8	11	चंद्र	26 43	पू.फा.	11 36	ऐंद्र वैधृ	7 42 / 30 29	कं. 17/45	**रमा एकादशी व्रत, शनि वक्री 12/24**	6/57	17/29	6/43	17/29	6/47	17/25	6/46	17/58
	9	12	मंग	26 01	उ.फा.	11 59	विष्कु	28 39	कन्या	गोवत्स द्वादशी	6/58	17/28	6/44	17/28	6/48	17/24	6/47	17/58
	10	13	बुध	24 35	हस्त	11 37	प्रीति	26 16	तु. 23/11	भद्रा 24/35 से, प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, धनवन्तरी जयन्ती	6/59	17/28	6/44	17/28	6/49	17/24	6/47	17/58
	11	14	गुरु	22 31	चित्रा	10 36	आयु	23 22	तुला	भ. 11/33 तक, नरक चौदश, यमदीपदानं, श्री हनुमान जयंती, **A**	7/00	17/27	6/45	17/27	6/50	17/23	6/48	17/57
	12	30	शुक्र	19 57	स्वा	9 00	सौभा	20 05	बृ. 25/30	मंगल स्वा. में 7/56, महालक्ष्मी पूजन, **दीपावली,** शुक्र चित्रा में **B**	7/01	17/26	6/46	17/26	6/51	17/22	6/49	17/57
कार्तिक शुक्ल पक्ष	13	1	शनि	17 02	विशा अनु.	6 58 / 28 39	शोभ	16 30	वृश्चिक	कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रा., गोवर्धन पूजा, अन्नकूट, विश्वकर्मा दि. (पं.)	7/02	17/26	6/46	17/26	6/51	17/22	6/49	17/57
	14	2	रवि	13 55	ज्ये.	26 13	अति	12 44	ध. 26/13	चन्द्रदर्शन, **भाई दूज,** यम द्वितीया, विश्वकर्मा पूजा, बाल दिवस, गं.मू.	7/03	17/26	6/47	17/25	6/52	17/21	6/50	17/56
	15	3	चंद्र	10 44	मूला	23 49	सुक धृति	8 56 / 29 11	धनु	भद्रा 21/12 से, **सूर्य वृश्चिक में 28/19, मार्गशीर्ष संक्रांति, C**	7/04	17/25	6/48	17/25	6/53	17/21	6/50	17/56
	16	4/5	मंग	7 39 / 28 47	पू.षा.	21 36	शूल	25 37	म. 27/05	भ. 7/39 तक, पुण्यकाल मार्गशीर्ष सं. प्रातः 10/43 तक, ज्ञान पंचमी	7/05	17/25	6/49	17/24	6/54	17/20	6/51	17/56
	17	6	बुध	26 16	उ.षा.	19 41	गंड	22 19	मकर	शुक्र तुला में 20/41, वक्री शनि पुर्न (4) में 28/10, सूर्य षष्ठी	7/06	17/24	6/50	17/24	6/55	17/20	6/51	17/55
	18	7	गुरु	24 12	श्रव	18 11	वृद्धि	19 21	कुं. 29/36	भद्रा 24/12 से, पंचक प्रारम्भ 29/36	7/07	17/23	6/51	17/23	6/56	17/19	6/52	17/55
	19	8	शुक्र	22 38	धनि	17 10	ध्रुव	16 47	कुम्भ	भद्रा 11/25 तक, सूर्य अनु. में 11/38, राहु अश्वि (2) केतु चित्रा **D**	7/08	17/23	6/51	17/23	6/56	17/19	6/52	17/55
	20	9	शनि	21 35	शत	16 39	व्या.	14 38	कुम्भ	अक्षया नवमी, कूष्माण्ड नवमी	7/09	17/23	6/52	17/22	6/57	17/19	6/53	17/55
	21	10	रवि	21 06	पू.भा.	16 41	हर्ष	12 55	मी. 10/38	सूर्य सायन धनु में 28/52	7/10	17/22	6/53	17/22	6/58	17/18	6/54	17/55
	22	11	चंद्र	21 07	उ.भा.	17 13	वज्र	11 36	मीन	भद्रा 9/07 से 21/07 तक, देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत, भीष्मपंचक **E**	7/11	17/22	6/54	17/22	6/59	17/18	6/54	17/55
	23	12	मंग	21 37	रेव	18 13	सिद्धि	10 41	मे. 18/13	तुलसी विवाह, शुक्र स्वा. में 6/29, पंचक समाप्त 18/13, गण्डमूल	7/12	17/22	6/54	17/21	7/00	17/18	6/55	17/55
	24	13	बुध	22 34	अश्वि	19 40	व्य.	10 06	मेष	**बुध मूला (1) धनु में 8/38,** प्रदोष व्रत, गंडमूल, बैकुण्ठ चौदश	7/13	17/21	6/55	17/21	7/00	17/18	6/55	17/55
	25	14	गुरु	23 55	भर	21 29	वरी	9 51	वृ. 28/00	भ. 23/55 से,	7/14	17/21	6/56	17/21	7/02	17/17	6/56	17/55
	26	15	शुक्र	25 38	कृति	23 40	परि	9 53	वृष	भद्रा 12/47 तक, **कार्तिक पूर्णिमा,** श्री गुरुनानक जयंती, भीष्म **F**	7/15	17/21	6/57	17/20	7/02	17/17	6/56	17/55
मार्ग कृ.	27	1	शनि	27 39	रोह	26 08	शिव	10 10	वृष	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ	7/16	17/20	6/58	17/20	7/03	17/17	6/57	17/55
	28	2	रवि	29 58	मृग	28 52	सिद्ध	10 41	मि. 15/28		7/16	17/20	6/58	17/20	7/04	17/17	6/57	17/55
	29	3	चंद्र	पू. दि.	आर्द्रा	पू. दिन	साध्य	11 23	मिथुन	भद्रा 19/12 से,	7/17	17/20	6/59	17/20	7/05	17/17	6/58	17/55
	30	3	मंग	8 26	आर्द्रा	7 47	शुभ	12 13	कं. 28/02	भद्रा 8/26 तक, बुध वक्री 17/41, श्री गणेश चतुर्थी व्रत (चंद्रोदय **G**	7/18	17/20	7/00	17/20	7/06	17/17	6/59	17/55

A यूरेनस मार्गी 24/43 **B** 10/24, महावीर निर्वाण दिवस, बली पूजा **C** पुण्यकाल संक्रान्ति अगले दिन सूर्योदय से 10/43, गुरु हस्त (3) में 22/56, गण्डमूल **D** (4) में 11/15, गोपाष्टमी **E** प्रारंभ, चातुर्मास व्रतादि समाप्त **F** पंचक समाप्त, मेला पुष्कर, कार्तिक स्नान समाप्त **G** रात्रि 20/10 पर)

वि. संवत् 2061, दिसम्बर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2004 ई.

मास पक्ष	दिसंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	1	4	बुध	11 00	पुर्न	10 47	शुक्ल	13 05	कर्क	**दिसम्बर मास प्रारम्भ**	7/19	17/20	7/00	17/20	7/07	17/16	6/59	17/56
	2	5	गुरु	13 31	पुष्य	13 44	ब्रह्म	13 54	कर्क	सूर्य ज्ये. में 16/01, मंगल विशा. में 6/02	7/19	17/20	7/01	17/20	7/07	17/16	7/00	17/56
	3	6	शुक्र	15 48	श्ले	16 27	ऐंद्र	14 33	सिं. 16/27	भद्रा 15/48 से 28/44 तक, शुक्र विशा. में 24/50, गण्डमूल	7/20	17/20	7/02	17/20	7/08	17/16	7/01	17/56
	4	7	शनि	17 40	मघा	18 47	वैधृ	14 54	सिंह	**बुध पश्चिम** में अस्त 18/10, कालभैरवाष्टमी (निशीथ व्या.)	7/21	17/20	7/02	17/20	7/09	17/16	7/01	17/56
	5	8	रवि	18 56	पू.फा.	20 32	विष्क	14 48	कं. 26/51	गुरु हस्त (4) में 14/10, कालभैरवाष्टमी (प्रदोष योगे)	7/22	17/20	7/03	17/20	7/10	17/16	7/02	17/57
	6	9	चंद्र	19 29	उ.फा.	21 34	प्रीति	14 10	कन्या	**वक्री बुध वृश्चिक में 8/09**	7/23	17/20	7/04	17/20	7/11	17/16	7/03	17/57
	7	10	मंग	19 12	हस्त	21 49	आयु	12 55	कन्या	भद्रा 7/21 से 19/12 तक,	7/23	17/20	7/05	17/20	7/11	17/17	7/03	17/57
	8	11	बुध	18 06	चित्रा	21 15	सौभा	11 01	तु. 9/37	**उत्पन्ना एकादशी व्रत,** वैतरणी व्रत	7/24	17/20	7/06	17/20	7/12	17/17	7/04	17/57
	9	12	गुरु	16 12	स्वा.	19 56	शोभ अति	8 29 / 29 21	तुला	प्रदोष व्रत	7/25	17/20	7/07	17/21	7/13	17/17	7/05	17/58
	10	13	शुक्र	13 37	विशा	17 57	सुक	25 44	वृ. 12/29	भद्रा 13/37 से 24/04 तक,	7/26	17/21	7/07	17/21	7/13	17/17	7/05	17/58
	11	14/30	शनि	10 30 / 30 59	अनु.	15 27	धृति	21 45	वृश्चिक	**शुक्र वृश्चिक में 25/43, शनिवारी अमावस,** देविका स्नान	7/27	17/21	7/08	17/21	7/14	17/17	7/06	17/58
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	12	1	रवि	27 17	ज्ये.	12 37	शूल	17 32	ध. 12/37	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल विचार	7/28	17/21	7/09	17/21	7/15	17/17	7/07	17/59
	13	2	चंद्र	23 33	मूला पूषा	9 38 / 30 41	गंड	13 13	धनु	गण्डमूल 9/38 तक, चन्द्रदर्शन, 30 मुहूर्त्ति	7/28	17/21	7/09	17/21	7/16	17/18	7/07	17/59
	14	3	मंग	19 59	उ.षा.	27 58	वृद्धि ध्रुव	8 58 / 28 56	म. 11/59	भद्रा 30/23 से, वक्री बुध ज्ये. (1) में 5/33, शुक्र अनु. में 17/54	7/29	17/22	7/10	17/22	7/16	17/18	7/08	17/59
	15	4	बुध	16 47	श्रव	25 40	व्या.	25 13	मकर	भद्रा 16/47 तक, सूर्य मूला (1) धनु में 18/57, **पौष संक्रांति, A**	7/30	17/22	7/11	17/22	7/17	17/18	7/08	17/59
	16	5	गुरु	14 03	धनि	23 54	हर्ष	21 58	कुं. 12/42	**मंगल वृश्चिक में 24/10,** पंचक प्रारम्भ 12/42	7/30	17/22	7/12	17/22	7/17	17/19	7/09	18/00
	17	6	शुक्र	11 58	शत	22 48	वज्र	19 15	कुम्भ	चम्पा षष्ठी	7/31	17/23	7/12	17/23	7/18	17/19	7/09	18/00
	18	7	शनि	10 35	पू.भा.	22 26	सिद्धि	17 06	मी. 16/27	भद्रा 10/35 से 22/16 तक, मित्र सप्तमी	7/31	17/23	7/13	17/23	7/19	17/20	7/10	18/01
	19	8	रवि	9 56	उ.भा.	22 46	व्य.	15 32	मीन	वक्री बुध अनु. (4) में 5/10, **श्री दुर्गाष्टमी**	7/32	17/23	7/13	17/23	7/19	17/20	7/10	18/01
	20	9	चंद्र	10 02	रेव	23 47	वरी	14 31	मे. 23/47	**पंचक समाप्त** 23/47, बुध मार्गी 12/06, गण्डमूल	7/32	17/23	7/14	17/24	7/20	17/20	7/11	18/02
	21	10	मंग	10 46	अश्वि	25 22	परि	13 59	मेष	भद्रा 23/25 से, मंगल अनु. में 21/24, बुध ज्ये. में 19/55, सूर्य **B**	7/33	17/24	7/14	17/24	7/20	17/21	7/11	18/02
	22	11	बुध	12 04	भर	27 26	शिव	13 53	मेष	भ. 12/04 तक, **मोक्षदा एकादशी, श्री गीता जयं.,** मौनी एका. (जैन)	7/33	17/24	7/15	17/25	7/21	17/21	7/12	18/03
	23	12	गुरु	13 49	कृति	29 51	सिद्ध	14 05	वृ. 10/00	**प्रदोष व्रत,** अखण्ड द्वादशी	7/34	17/25	7/15	17/26	7/21	17/22	7/12	18/03
	24	13	शुक्र	15 53	रोह	पू. दिन	साध्य	14 32	वृष		7/34	17/26	7/15	17/26	7/22	17/23	7/13	18/04
	25	14	शनि	18 10	रोह	8 30	शुभ	15 09	मि. 21/54	भद्रा 18/10 से, पिशाचमोचन श्राद्ध, शुक्र ज्ये. में 10/12, **क्रिसमिस डे**	7/35	17/26	7/16	17/27	7/22	17/23	7/13	18/04
	26	15	रवि	20 37	मृग	11 20	शुक्ल	15 53	मिथुन	भद्रा 7/24 तक, **मार्गशीर्ष पूर्णिमा,** व्रत पूर्णिमा, श्री दत्तात्रेय जयं.**C**	7/35	17/27	7/16	17/27	7/22	17/24	7/14	18/05
पौष कृष्ण पक्ष	27	1	चंद्र	23 08	आर्द्रा	14 15	ब्रह्म	16 42	मिथुन	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ	7/36	17/27	7/17	17/28	7/23	17/24	7/14	18/05
	28	2	मंग	25 40	पुर्न	17 12	ऐंद्र	17 31	क. 10/28	सूर्य पू.षा. में 21/12	7/36	17/28	7/17	17/29	7/23	17/25	7/14	18/06
	29	3	बुध	28 08	पुष्य	20 07	वैधृ	18 19	कर्क	भद्रा 14/54 से 28/08 तक,	7/36	17/29	7/17	17/29	7/24	17/26	7/15	18/06
	30	4	गुरु	30 27	श्ले	22 55	विष्क	19 01	सिं. 22/55	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, गण्डमूल (चंद्रोदय रात्रि 8/54 पर)	7/37	17/30	7/18	17/30	7/24	17/26	7/15	18/07
	31	5	शुक्र	पू. दि.	मघा	25 29	प्रीति	19 34	सिंह	गुरु चित्रा में 22/02, गण्डमूल 25/29 तक, सन् 2004 ई. समा.	7/37	17/31	7/18	17/31	7/24	17/27	7/15	18/07

A पुण्यकाल संक्रां दुपै. 12/33 से, बुध पूर्व से उदय 8/45, **B** सायन मकर में 18/12, सायन उत्तरायण प्रारम्भ, शिशिर ऋतु प्रारम्भ **C** त्रिपुरभैरव जयंती

वि. संवत् 2061, जनवरी मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2005 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं मि	जम्मू सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं मि	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं मि	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	मुम्बई सूर्योदय घं मि	मुम्बई सूर्यास्त घं. मि.
पौष कृष्ण पक्ष	1	5	शनि	8 28	पू.फा.	27 40	आयु	19 49	सिंह	जनवरी, 2005 ई. प्रारंभ, यूरेनस शत (2) में 13/40	7/37	17/29	7/18	17/31	7/24	17/28	7/16	18/08
	2	6	रवि	10 02	उ.फा.	29 19	सौभा	19 43	कं. 10/07	भद्रा 10/02 से 22/32 तक	7/37	17/30	7/19	17/32	7/25	17/28	7/16	18/09
	3	7	चंद्र	11 02	हस्त	30 19	शोभ	19 07	कन्या	नैपच्यून श्रव. (4) में 13/55	7/37	17/31	7/19	17/32	7/25	17/29	7/16	18/10
	4	8	मंग	11 19	चित्रा	30 33	अति	17 56	तु. 18/31	शुक्र मूले (1) धनु में 26/01, रुक्मणि अष्टमी	7/38	17/32	7/19	17/33	7/25	17/30	7/17	18/10
	5	9	बुध	10 48	स्वा.	30 00	सुक	16 08	तुला	भद्रा 22/08 से प्रारंभ, बुध मूले 1 धनु में 19/41	7/38	17/32	7/19	17/34	7/25	17/31	7/17	18/11
	6	10/ 11	गुरु	9 27 / 31 21	विशा	28 40	धृति	13 42	वृ. 23/04	भद्रा 9/27 तक, सफला एका. व्रत स्मा.	7/38	17/33	7/19	17/35	7/25	17/31	7/17	18/11
	7	12	शुक्र	28 33	अनु	26 39	शूल / गंड	10 39 / 31 04	वृश्चिक	सफला एकादशी वैष्णव	7/38	17/34	7/19	17/36	7/25	17/32	7/17	18/12
	8	13	शनि	25 12	ज्ये.	24 04	वृद्धि	27 03	ध. 24/04	भद्रा 25/12 से, प्रदोष व्रत	7/38	17/36	7/19	17/36	7/25	17/33	7/17	18/12
	9	14	रवि	21 28	मूला	21 06	ध्रुव	22 43	धनु	भद्रा 11/20 तक,	7/39	17/37	7/19	17/37	7/25	17/34	7/17	18/13
	10	30	चंद्र	17 33	पू.षा.	17 56	व्या.	18 15	म. 23/08	सूर्य उ.षा. में 23/11 **सोमवती अमावस,** मंगल ज्ये. में 6/18	7/39	17/38	7/19	17/38	7/25	17/35	7/18	18/14
पौष शुक्ल पक्ष	11	1	मंग	13 38	उ.षा.	14 46	हर्ष	13 48	मकर	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन	7/39	17/38	7/20	17/39	7/25	17/36	7/18	18/14
	12	2/3	बुध	9 56 / 30 38	श्रव	11 50	वज्र / सिद्धि	9 31 / 29 33	कुं. 22/30	लोहड़ी पर्व, पंचक प्रारम्भ 22/30	7/38	17/39	7/20	17/40	7/25	17/36	7/18	18/15
	13	4	गुरु	27 54	धनि / शत	9 18 / 31 23	व्य.	26 03	कुम्भ	भद्रा 17/16 से 27/54 तक, **सूर्य मकर में 29/42, माघ संक्रांति A**	7/38	17/39	7/19	17/40	7/25	17/37	7/19	18/16
	14	5	शुक्र	25 52	पू.भा.	30 10	वरी	23 07	मी. 24/24	पुण्यकाल माघ संक्रां. सू. उ. से 12/05 तक	7/38	17/40	7/19	17/41	7/24	17/38	7/19	18/17
	15	6	शनि	24 40	उ.भा.	29 46	परि	20 50	मीन	बुध पूषा में 13/13, शुक्र पू.षा. में 17/30	7/38	17/42	7/19	17/42	7/24	17/39	7/19	18/17
	16	7	रवि	24 19	रेव	30 13	शिव	19 13	मे. 30/13	भद्रा 24/19 से, पंचक समाप्त 30/13, गुरु गोबिन्द सिंह जयंती **B**	7/37	17/43	7/19	17/43	7/24	17/40	7/19	18/18
	17	8	चंद्र	24 48	अश्वि	31 26	सिद्ध	18 15	मेष	भद्रा 12/34 तक, गण्डमूल	7/37	17/43	7/19	17/44	7/24	17/41	7/19	18/18
	18	9	मंग	26 01	भर	पू. दिन	साध्य	17 52	मेष		7/37	17/44	7/19	17/45	7/24	17/42	7/19	18/19
	19	10	बुध	27 49	भर	9 19	शुभ	17 58	वृ. 15/53	सायन सूर्य कुम्भ में 28/52	7/36	17/45	7/18	17/46	7/23	17/43	7/19	18/20
	20	11	गुरु	30 02	कृति	11 44	शुक्ल	18 25	वृष	भद्रा 16/56 से 30/02 तक, पुत्रदा एका. व्रत, सूर्य अभिजित् नक्षत्र में 19/14	7/36	17/46	7/18	17/47	7/23	17/43	7/19	18/20
	21	12	शुक्र	पू. दि.	रोह	14 28	ब्रह्म	19 07	मि. 27/56	राहु अश्वि (1) केतु चित्रा (3) में 8/23	7/36	17/47	7/18	17/48	7/23	17/44	7/19	18/21
	22	12	शनि	8 30	मृग	17 24	ऐंद्र	19 56	मिथुन	शनि प्रदोष व्रत	7/35	17/48	7/17	17/49	7/23	17/45	7/19	18/22
	23	13	रवि	11 03	आर्द्रा	20 23	वैधृ	20 48	मिथुन	सूर्य श्रवण में 25/29	7/35	17/49	7/17	17/50	7/22	17/46	7/19	18/22
	24	14	चंद्र	13 36	पुर्न	23 20	विष्क	21 37	क. 16/36	भद्रा 13/36 से 26/50 तक, बुध उ.षा. में 11/28, व्रत श्रीसत्यनारायण +	7/35	17/50	7/17	17/50	7/22	17/47	7/19	18/23
	25	15	मंग	16 03	पुष्य	26 09	प्रीति	22 21	कर्क	पौष पूर्णिमा, बुध पूर्व में अस्त 19/48, माघ स्नान प्रारम्भ	7/35	17/51	7/17	17/51	7/22	17/48	7/19	18/23
माघ कृष्ण पक्ष	26	1	बुध	18 20	श्ले	28 50	आयु	22 58	सिं. 28/50	माघ कृष्ण पक्ष प्रारंभ, बुध मकर में 15/03, शुक्र उ.षा. में 8/58, **C**	7/34	17/52	7/16	17/52	7/21	17/49	7/18	18/24
	27	2	गुरु	20 26	मघा	31 17	सौभा	23 25	सिंह	गण्डमूलादि विचार	7/33	17/53	7/16	17/53	7/21	17/50	7/18	18/24
	28	3	शुक्र	22 16	पू.फा.	पू. दिन	शोभ	23 40	सिंह	भद्रा 9/21 से 22/16 तक, **शुक्र मकर में 24/49**	7/32	17/54	7/15	17/53	7/20	17/51	7/18	18/25
	29	4	शनि	23 45	पू.फा.	9 28	अति	23 40	कं. 15/57	**मंगल धनु में 9/03, श्री गणेश संकट चौथ व्रत,** चंद्रोदय 21/39 **D**	7/32	17/55	7/15	17/54	7/20	17/52	7/18	18/25
	30	5	रवि	24 49	उ.फा.	11 17	सुक	23 21	कन्या	शहीदी दिन महात्मा गाँधी	7/31	17/56	7/15	17/55	7/19	17/53	7/18	18/26
	31	6	चंद्र	25 21	हस्त	12 38	धृति	22 38	तु. 25/07	भद्रा 25/21 से,	7/31	17/57	7/15	17/56	7/19	17/54	7/18	18/27

A वक्री शनि पुर्न 3 मिथुन में 15/02, पुण्य संक्रांति अगले दिन **B** (प्राचीन परम्परा अनुसार) **C** गणतन्त्र दिवस भारत **D** स्टै. टाईम (जालन्धर) **+** सूर्य अभिजित् नक्षत्र से निवृत्त 22/18

वि. संवत् 2061, फरवरी मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2005 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं. मि.	जम्मू सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	मुम्बई सूर्योदय घं. मि.	मुम्बई सूर्योदय घं. मि.
माघ कृष्ण पक्ष	1	7	मंग	25	15	चित्रा	13	27	शूल	21	26	तुला	भद्रा 13/18 तक, बुध श्रवण में 21/20, पुत्र सप्तमी व्रत,	7/30	17/57	7/13	17/56	7/19	17/54	7/17	18/28
	2	8	बुध	24	29	स्वा.	13	37	गंड	19	43	तुला	गुरु वक्री 7/57	7/29	17/58	7/13	17/57	7/18	17/55	7/17	18/28
	3	9	गुरु	23	00	विशा.	13	07	वृद्धि	17	27	वृ. 7/18		7/29	17/58	7/12	17/58	7/17	17/56	7/17	18/29
	4	10	शुक्र	20	51	अनु	11	56	ध्रुव	14	38	वृश्चिक	भद्रा 9/56 से 20/51 तक, गण्डमूल 11/56 से	7/28	17/59	7/12	17/59	7/17	17/57	7/16	18/29
	5	11	शनि	18	06	ज्ये.	10	07	व्या.	11	19	ध. 10/07	सूर्य धनि. में 28/42, शुक्र श्रवण में 24/27, षट्तिला एका. व्रत, गं.मू.	7/28	18/00	7/11	18/00	7/16	17/58	7/16	18/30
	6	12	रवि	14	53	मूला पूषा	7 29	47 04	हर्ष वज्र	7 27	35 32	धनु	गण्डमूल 7/47 तक, प्रदोष व्रत	7/27	18/02	7/10	18/00	7/15	17/59	7/16	18/30
	7	13	चंद्र	11	20	उषा.	26	08	सिद्धि	23	18	म. 10/20	भद्रा 11/20 से 21/29 तक, मेरु त्रयोदशी (जैन)	7/26	18/03	7/10	18/01	7/15	17/59	7/15	18/31
	8	14/ 30	मंग	7 27	38 58	श्रव	23	12	व्य.	19	02	मकर	**माघ अमावस**, प्लूटो धनु राशि में 18/34, मौनी अमावस	7/25	18/04	7/09	18/02	7/14	18/00	7/15	18/31
माघ शुक्ल पक्ष	9	मा.	बुध	24	32	धनि	20	27	वरी	14	53	कुं. 9/47	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, बुध धनि. में 19/37, पंचक प्रारंभ 9/47	7/24	18/05	7/08	18/02	7/13	18/01	7/14	18/32
	10	2	गुरु	21	30	शत	18	04	परि	11	00	कुम्भ	चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्त्ती	7/23	18/06	7/08	18/03	7/12	18/02	7/14	18/32
	11	3	शुक्र	19	03	पू.भा.	16	14	शिव सिद्ध	7 28	32 35	मी. 10/37	भद्रा 30/11 से, गौरी तृतीया व्रत, 1 मुहर्रम, 1426 सं. हिजरी प्रा.	7/23	18/07	7/07	18/04	7/12	18/03	7/13	18/33
	12	4	शनि	17	19	उ.भा.	15	05	साध्य	26	15	मीन	भद्रा 17/19 तक, **सूर्य कुम्भ में 18/42, फाल्गुन संक्रांति**, तिल **A**	7/22	18/07	7/06	18/05	7/11	18/04	7/13	18/33
	13	5	रवि	16	24	रेव	14	45	शुभ	24	35	मे. 14/45	बुध कुम्भ में 14/35, **बसन्त पंचमी**, श्री पंचमी, सरस्वती जयंती	7/21	18/08	7/05	18/06	7/10	18/04	7/12	18/34
	14	6	चंद्र	16	20	अश्वि	15	14	शुक्ल	23	35	मेष	गण्डमूल **शुक्रास्त पूर्वे, 12 फरवरी**	7/20	18/09	7/04	18/07	7/09	18/05	7/12	18/34
	15	7	मंग	17	06	भर	16	32	ब्रह्म	23	12	वृ. 22/58	भद्रा 17/06 से 29/51 तक, रथ सप्तमी व्रत, आरोग्य-अचला-**B**	7/19	18/09	7/03	18/08	7/08	18/06	7/11	18/35
	16	8	बुध	18	36	कृति	18	32	ऐंद्र	23	20	वृष	शुक्र धनि. में 16/04, भीष्माष्टमी	7/18	18/10	7/03	18/09	7/08	18/07	7/11	18/35
	17	9	गुरु	20	39	रोह	21	03	वैधृ	23	52	वृष	मंगल पू.षा. में 6/01, बुध शत. में 7/02	7/17	18/11	7/02	18/10	7/07	18/08	7/10	18/36
	18	10	शुक्र	23	03	मृग	23	55	विष्क	24	39	मि. 10/27	सूर्य सायन मीन में 19/02, बसन्त ऋतु प्रारम्भ	7/16	18/12	7/01	18/10	7/06	18/09	7/09	18/36
	19	11	शनि	25	37	आर्द्रा	26	55	प्रीति	25	32	मिथुन	भद्रा 12/20 से 25/37 तक, सूर्य शत. में 9/10, जया एकादशी व्रत	7/15	18/13	7/00	18/11	7/05	18/09	7/09	18/37
	20	12	रवि	28	09	पुर्न	29	53	आयु	26	24	क. 23/09	भीष्म द्वादशी	7/14	18/14	6/59	18/12	7/04	18/10	7/08	18/37
	21	13	चंद्र	30	31	पुष्य	पू.	दिन	सौभा	27	09	कर्क	शुक्र कुंभ रा. में 24/00, सोम प्रदोष व्रत	7/13	18/15	6/58	18/12	7/03	18/11	7/08	18/37
	22	14	मंग	पू.	दि.	पुष्य	8	42	शोभ	27	43	कर्क	गण्डमूल विचार 8/42 के बाद,	7/12	18/16	6/57	18/13	7/02	18/12	7/07	18/38
	23	14	बुध	8	37	श्ले	11	15	अति	28	03	सिं. 11/15	भद्रा 8/37 से 21/31 तक, श्री सत्यनारायण व्रत	7/11	18/17	6/56	18/14	7/01	18/13	7/06	18/38
	24	15	गुरु	10	24	मघा	13	30	सुक	28	08	सिंह	माघ पूर्णिमा, बुध पू.भा. में 10/38, गुरु रविदास जयंती, माघ स्नान समाप्त	7/10	18/17	6/55	18/14	7/00	18/14	7/06	18/38
फा. कृ.	25	1	शुक्र	11	50	पू.फा.	15	25	धृति	27	56	कं. 21/50	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ	7/09	18/18	6/54	18/15	6/59	18/15	7/05	18/39
	26	2	शनि	12	55	उ.फा.	16	59	शूल	27	27	कन्या	भद्रा 25/16 से,	7/07	18/19	6/53	18/16	6/58	18/15	7/04	18/39
	27	3	रवि	13	36	हस्त	18	10	गंड	26	40	कन्या	भद्रा 13/36 तक, शुक्र शत. में 8/02, श्री गणेश चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय **C**	7/06	18/20	6/52	18/17	6/57	18/16	7/03	18/39
	28	4	चंद्र	13	52	चित्रा	18	57	वृद्धि	25	33	तु. 6/36		7/04	18/21	6/51	18/17	6/55	18/16	7/03	18/40

A चतुर्थी, वरद्-कुन्द चतुर्थी, पुण्यकाल सं. दोप. 12/18 से प्रारंभ, शुक्रास्त पूर्वे 19/27 **B** सप्तमी, पुत्र सप्तमी व्रत **C** रात्रि 9/28 पर)

वि. संवत् 2061, मार्च मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2005 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं मि	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं मि	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं मि	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं मि	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	1	5	मंग	13 41	स्वा	19 17	ध्रुव	24 04	तुला	**बुध मीन में 19/44,** बुध पश्चिम में उदय 11/25	7/03	18/22	6/50	18/17	6/53	18/17	7/02	18/40
	2	6	बुध	13 02	विशा	19 09	व्या.	22 13	वृ. 13/13	भद्रा 13/02 से 24/28 तक	7/02	18/23	6/49	18/18	6/52	18/17	7/02	18/40
	3	7	गुरु	11 53	अनु	18 32	हर्ष	19 57	वृश्चिक	बुध उ.भा. में 16/34	7/01	18/24	6/48	18/18	6/51	18/18	7/01	18/41
	4	8	शुक्र	10 13	ज्ये.	17 25	वज्र	17 18	ध. 17/25	सूर्य पू.भा. में 15/34	7/00	18/25	6/47	18/19	6/50	18/19	7/00	18/41
	5	9/10	शनि	8 05 / 29 34	मूला	15 52	सिद्धि	14 17	धनु	भद्रा 18/50 से 29/34 तक, स्वा. दयानन्द जयंती	6/58	18/26	6/46	18/20	6/49	18/19	7/00	18/42
	6	11	रवि	26 42	पू.षा.	13 56	व्य.	10 57	म. 19/24	वक्री गुरु हस्त (4) में 17/07, विजया एकादशी व्रत, यूरेनस शत **A**	6/57	18/27	6/45	18/20	6/47	18/20	6/59	18/42
	7	12	चंद्र	23 39	उ.षा.	11 43	वरी परि	7 23 / 27 41	मकर	मंगल उ.षा. में 22/00, वक्री शनि पुर्न (2) में 16/05	6/55	18/28	6/44	18/21	6/46	18/21	6/58	18/42
	8	13	मंग	20 31	श्रव	9 22	शिव	23 56	कुं. 20/10	भद्रा 20/31 से, **श्री महाशिवरात्रि व्रत,** भौम प्रदोष व्रत	6/54	18/29	6/43	18/22	6/45	18/21	6/57	18/43
	9	14	बुध	17 29	धनि शत	7 01 / 28 49	सिद्ध	20 17	कुम्भ	भद्रा 7/00 तक, शुक्र पू.भा. में 24/20	6/53	18/30	6/42	18/22	6/44	18/22	6/56	18/43
	10	30	गुरु	14 41	पू.भा.	26 57	साध्य	16 51	मी. 21/23	फाल्गुन अमावस, स्नान दानादि	6/52	18/31	6/41	18/23	6/43	18/23	6/55	18/44
फाल्गुण शुक्ल पक्ष	11	1	शुक्र	12 16	उ.भा.	25 34	शुभ	13 45	मीन	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन 45 मुहूर्त्ती	6/50	18/32	6/40	18/23	6/41	18/23	6/54	18/44
	12	2	शनि	10 24	रेव	24 47	शुक्ल	11 06	मे. 24/47	मंगल मकर में 13/18, बुध रेव. में 26/06, पंचक समा. 24/47	6/49	18/32	6/38	18/24	6/40	18/24	6/53	18/44
	13	3	रवि	9 12	अश्वि	24 43	ब्रह	8 58	मेष	भद्रा 20/58 से,	6/48	18/33	6/37	18/24	6/39	18/25	6/53	18/44
	14	4	चंद्र	8 44	भर	25 23	ऐंद्र वैधृ	7 26 / 30 30	मेष	भद्रा 8/44 तक, सूर्य मीन में 15/37, **चैत्र संक्रान्ति,** पुण्यकाल **B**	6/47	18/33	6/36	18/25	6/38	18/25	6/52	18/44
	15	5	मंग	9 03	कृति	26 48	विष्क	30 09	वृ. 7/40		6/45	18/33	6/35	18/25	6/37	18/26	6/51	18/44
	16	6	बुध	10 06	रोह	28 52	प्रीति	30 19	वृष		6/44	18/34	6/34	18/26	6/35	18/26	6/51	18/44
	17	7	गुरु	11 47	मृग	पू. दिन	आयु	पू. दि.	मि. 18/06	भद्रा 11/47 से 24/52 तक, सूर्य उ.भा. 23/56, शुक्र मीन में 24/51	6/43	18/34	6/33	18/26	6/34	18/27	6/50	18/44
	18	8	शुक्र	13 57	मृग	7 26	आयु	6 51	मिथुन	**होलाष्टक प्रारम्भः,** अन्नपूर्णा अष्टमी	6/42	18/35	6/31	18/27	6/33	18/27	6/49	18/45
	19	9	शनि	16 23	आर्द्रा	10 18	सौभा	7 39	मिथुन		6/41	18/36	6/30	18/28	6/32	18/28	6/48	18/45
	20	10	रवि	18 52	पुर्न	13 16	शोभ	8 31	क. 6/31	बुध वक्री 5/48, शुक्र उ.भा. में 17/04, सूर्य सायन मेष में 18/03, **C**	6/40	18/36	6/29	18/28	6/30	18/29	6/47	18/45
	21	11	चंद्र	21 11	पुष्य	16 07	अति	9 21	कर्क	भद्रा 8/02 से 21/11 तक, आमलकी एकादशी व्रत	6/39	18/37	6/28	18/29	6/29	18/30	6/46	18/45
	22	12	मंग	23 11	श्ले	18 42	सुक	9 59	सिं. 18/42	शनि मार्गी 8/35, बुध पश्चिम में अस्त, शक चैत्र संवत् 1927 प्रा.	6/38	18/38	6/27	18/29	6/28	18/30	6/45	18/46
	23	13	बुध	24 46	मघा	20 53	धृति	10 20	सिंह	प्रदोष व्रत	6/36	18/38	6/26	18/30	6/27	18/31	6/45	18/46
	24	14	गुरु	25 52	पू.फा.	22 38	शूल	10 21	कं. 28/59	भद्रा 25/52 से, **राहु रेवती (4) मीन में, केतु चित्रा (2) कन्या D**	6/35	18/39	6/25	18/30	6/26	18/32	6/44	18/46
	25	15	शुक्र	26 29	उ.फा.	23 54	गंड	10 00	कन्या	भद्रा 14/11 तक, फाल्गुन पूर्णिमा, होली पर्व, होलाष्टक समाप्त **E**	6/34	18/40	6/24	18/31	6/24	18/32	6/44	18/47
चैत्र कृष्ण पक्ष	26	1	शनि	26 37	हस्त	24 42	वृद्धि	9 16	कन्या	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारंभ, मंगल श्रवण में 10/01, वसन्तोत्सव, होला **F**	6/33	18/41	6/23	18/31	6/22	18/33	6/43	18/47
	27	2	रवि	26 18	चित्रा	25 04	ध्रुव	8 10	तु. 12/56	वक्री बुध उभा (4) 24/39, सन्त तुकाराम जयन्ती	6/32	18/41	6/22	18/32	6/21	18/34	6/42	18/47
	28	3	चंद्र	25 35	स्वा.	25 02	व्या, हर्ष	6 44 / 28 59	तुला	भद्रा 13/57 से 25/35 तक,	6/30	18/42	6/20	18/32	6/20	18/35	6/41	18/48
	29	4	मंग	24 30	विशा.	24 38	वज्र	26 57	वृ. 18/46	श्री गणेश चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय रात्रि 11/38 पर)	6/28	18/42	6/19	18/33	6/19	18/35	6/40	18/48
	30	5	बुध	23 05	अनु.	23 55	सिद्धि	24 39	वृश्चिक		6/26	18/43	6/18	18/33	6/18	18/36	6/39	18/48
	31	6	गुरु	21 22	ज्ये.	22 55	व्य.	22 07	ध. 22/55	भद्रा 21/22 से, सूर्य रेव. में 10/53, शुक्र रेवती में 10/29	6/25	18/44	6/17	18/34	6/16	18/36	6/38	18/49

A (3) में 7/57 **B** सं. प्रातः 9/13 से प्रारम्भ **C** उत्तर गोलार्द्ध प्रारंभ, महाविषुव दिन **D** में 29/53 **श्व** होलिका दहन (प्रदोष काले) **F** मेला (आनंदपुर व पाओंटा साहिब, पंजाब)

वि. संवत् 2061, अप्रैल मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2005 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.
चैत्र कृष्ण पक्ष	1	7	शुक्र	19 24	मूला	21 40	वरी	19 24	धनु	भद्रा 8/23 तक, शीतला सप्तमी, अप्रैल मास प्रारम्भ	6/24	18/45	6/15	18/35	6/15	18/37	6/36	18/49
	2	8	शनि	17 14	पू.षा.	20 13	परि	16 30	म. 25/49	शीतलाष्टमी	6/23	18/45	6/14	18/36	6/14	18/37	6/35	18/49
	3	9	रवि	14 55	उ.षा.	18 37	शिव	13 28	मकर	भद्रा 25/43 से, वक्री गुरु हस्त (3) में 28/50	6/21	18/46	6/13	18/36	6/13	18/38	6/34	18/49
	4	10	चंद्र	12 30	श्रव	16 56	सिद्ध	10 22	कुं. 28/05	भद्रा 12/30 तक, पंचकारम्भः 28/05 **A** उदित 27/52	6/19	18/47	6/12	18/37	6/12	18/39	6/34	18/49
	5	11	मंग	10 04	धनि	15 15	साध्य शुभ	7 15 28 11	कुम्भ	शनि पुनर्वसु (3) में 27/18, पापमोचिनी एकादशी व्रत, बुध पूर्व से **A**	6/18	18/48	6/11	18/38	6/11	18/40	6/33	18/49
	6	12 13	बुध	7 42 29 30	शत	13 41	शुक्ल	25 14	कुम्भ	भद्रा 29/30 से, प्रदोष व्रत, वारुणी पर्व प्रातः 7/42 से 13/41 तक	6/17	18/49	6/10	18/38	6/09	18/40	6/32	18/49
	7	14	गुरु	27 35	पू.भा.	12 18	ब्रह्म	22 29	मी. 6/37	भद्रा 16/33 तक	6/16	18/50	6/09	18/39	6/08	18/41	6/31	18/49
	8	30	शुक्र	26 02	उ.भा.	11 13	ऐंद्र	20 03	मीन	चैत्र अमावस, **चान्द्र वि. संवत् 2061 पूर्ण,** मंगल श्रव (4) में 29/07	6/15	18/51	6/08	18/39	6/07	18/42	6/30	18/50

फलित ज्योतिष में कुछ प्रसिद्ध योगों का वर्णन

निम्नलिखित योगों में राहु–केतु का समावेश नहीं किया जाता

(1) गोल योग—यदि सूर्यादि सभी ग्रह (राहु–केतु को छोड़ कर) एक ही भाव (राशि) में हों, तो गोल नामक योग होता है। इस योग के फलस्वरूप जातक चंचल बुद्धि, उच्च विद्या में विघ्न, नीति–अनीति का विचार न करने वाला, अपना लक्ष्य सिद्ध करने में कुशल, कठोर व हिंसक कार्यों में रुचि, गुप्त युक्तियों में प्रवीण होता है। ऐसा जातक **गुप्तचर** विभाग, पुलिस अथवा सेना के कार्यों में सफल होता है।

(2) युग योग—यदि जन्मकुंडली में (राहु–केतु को छोड़) सभी सात ग्रह दो भावों (2 राशियों) में ही स्थित हों, तो युग नामक योग बनता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक का जीवन अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाईयों से भरा होता है। ऐसा जातक चंचल स्वभाव वाला, मदिरा, तम्बाकू आदि व्यसनों में प्रवृत्त, धर्म कार्यों से विमुख तथा आर्थिक दृष्टि से परेशान रहने वाला होता है। सन्तान आदि का सुख भी कम ही मिलता है।

(3) शूल योग—किसी जातक की कुंडली में तीन भावों (राशियों) में (राहु–केतु को छोड़कर) ही सातों ग्रह होने से शूल योग बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक साहसी, दयालु, परोपकारी किन्तु कुछ क्रोधी, कठोर एवं तीक्ष्ण स्वभाव का किन्तु कभी आलसी स्वभाव वाला, राजकर्मचारी एवं आर्थिक चिन्ताओं अथवा धन सम्बन्धी कार्यों में व्यस्त रहने वाला होता है। ऐसा जातक विरोधी पक्ष के दिलों में कांटे की भान्ति चुभता रहता है। ऐसा जातक स्वाभिमानी, स्वार्थी, कई बार क्रोधाक्यि में बना बनाया काम बिगाड़ लेने वाला होता है।

(4) केदार योग—यदि कुंडली में चार भावों (राशियों) में ही सातों ग्रह (राहु–केतु को छोड़कर) पड़ें हों तो केदार नाम योग बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक/जातिका सत्यभाषी, परोपकारी, धनवान्, चंचल स्वभाव, ऐश्वर्यवान् उच्च प्रतिष्ठित, बन्धु–बान्धवों का हितकारी, कृषि आदि कार्यों में रुचि, बहुत जनों के लिए उपयोगी अथवा बहुजनोपयोगी वस्तुओं का निर्माण करने वाला एवं सुख–साधनों से सम्पन्न होता है।

सुबाहुनामुपोज्याः कृषबिलाः सत्यवादिनः सुखिताः।
केदारे सम्भूताश्चलस्वभावा धनैः युक्ताः॥ सारावली॥

उदाहरण कुं. केदार योग
जन्म 8 फर., 1964 ई.



उदाहरण—प्रस्तुत जन्मकुण्डली एक क्वालिफाइड मकै. इंजीनियर की है। यह जातक इंजीनियरिंग करने के पश्चात् उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने के लिए शुक्र मध्ये शनि की अन्तर्दशा में विदेश (कैनेडा) गया था। विवाह आदि के पश्चात् विदेश में ही सुन्दर, सुशील स्त्री एवं अच्छी सर्विस में कार्यरत है। इसकी कुंडली में केदार योग पाया जाता है। अर्थात् सभी ग्रह चार राशियों में पड़े हुए हैं। इसके अतिरिक्त कुंडली में सप्तमेश व द्वादशेश शुक्र तथा राशि स्वामी चन्द्र व लाभेश मंगल उच्चस्थ हैं तथ शनि (भाग्येश) एवं कार्येश गुरु स्वराशिगत हैं।

(5) पाश योग—यदि पांच राशियों में ही सूर्यादि सातों ग्रहों की स्थिति हो, तो पाश नामक योग होता है। यहां राहु केतु को नहीं गिनना है। इस योग वाला जातक गृहस्थी एवं व्यवसाय के सम्बन्धों में जकड़े रहने वाला, सदा अपने कार्यों में लीन (व्यस्त) रहने वाला, अधिक वार्तालाप (बातें) करने वाला, सेवादि कार्य करने में कुशल होता है। ऐसा व्यक्ति गुप्तचर, पुलिस, सेना, व्यापारी, सरकारी नौकरी, अध्यापन आदि कार्यों में सफल होता है।

(6) दामिनी योग—यदि कुंडली में छः राशियों में सूर्यादि ग्रहों की स्थिति हो, तो जातक धार्मिक विचारों वाला, परोपकारी, स्वभाव, विद्वान, वाहन, भूमि आदि सुख–साधनों से युक्त, शीलवान, सुशील व धैर्यशील पत्नी से युक्त, धन–धान्य एवं सन्तान आदि सुखों से युक्त होता है।

—ज्योतिष तत्त्व—फलित खण्ड—भाग—दो से उद्धृत

प्रातः साढ़े पाँच (5/30 घं. मिं.) से किसी अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करें

यदि आपको प्रातः साढ़े पाँच बजे के ग्रह स्पष्ट के अतिरिक्त किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों, तो नीचे लिखी तालिका (Table) का प्रयोग करके अभीष्ट समय के ग्रह स्पष्ट प्राप्त कर सकते हैं—मान लीजिए, आपको 5 अप्रैल, 2004 ई. की दोपहर एक (1) बजे का सूर्य स्पष्ट करना है। आगामी पृष्ठों में 5 अप्रैल के सामने सूर्य स्पष्ट 11-21-37-52 राशि-अंशादि लिखे गए हैं। जो कि प्रातः साढ़े पाँच बजे के हैं। हमें दोपहर 1 अर्थात् 13 बजे के सूर्य स्पष्ट चाहिए। तेरह (13) से साढ़े पाँच का अन्तर 7 घंटे 30 मिंट हुआ। इस प्रकार अब 7 घण्टे 30 मिंट की गति 5 अप्रैल में जोड़ दें, तो हमें दोपहर 1 बजे का स्पष्ट प्राप्त हो जाएगा। (6) अप्रै. से 5 अप्रै. का सूर्य स्पष्ट घटा देने से हमें सूर्य की दैनिक गति (59'.03") प्राप्त हुई। इस दै. गति द्वारा नीचे लिखी तालिका में 7 घंटे की गति (17.12) कला तथा 30 मिनट की गति (1.14) कला प्राप्त हुई। इस प्रकार साढ़े सात घण्टे की गति (18'.16) कलादि को 5 अप्रैल के सूर्य स्पष्ट में जमा कर देने पर हमें 5 अप्रैल की दुपै. एक बजे का सूर्य स्पष्ट प्राप्त हो जाएगा॥ ग्रहस्पष्ट करने की अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड) का अध्ययन करें॥

ग्रहों की दैनिक गति के अनुसार प्रति घण्टा मिनटादि की तालिका

दै. गति (24 घंटे)	गति (30 मिं.)	गति (1 घं.)	गति (2 घं.)	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति (8 घं.)
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
3'	0.04	0.07	0.15	0.22	0.30	0.37	0.45	0.52	1.00
5'	0.06	0.12	0.25	0.37	0.50	1.02	1.11	1.27	1.40
7'	0.09	0.17	0.35	0.52	1.10	1.27	1.45	2.02	2.20
9'	0.11	0.22	0.45	1.07	1.30	1.52	2.15	2.37	3.00
11'	0.14	0.27	0.55	1.22	1.50	2.17	2.45	3.12	3.40
13'	0.16	0.32	1.05	1.37	2.10	2.42	3.15	3.47	4.20
15'	0.19	0.37	1.15	1.52	2.30	3.07	3.45	4.22	5.00
17'	0.21	0.42	1.25	2.07	2.50	3.32	4.15	4.57	5.40
19'	0.24	0.47	1.35	2.22	3.10	3.57	4.45	5.32	6.20
21'	0.26	0.52	1.45	2.37	3.30	4.22	5.15	6.07	7.00
23'	0.29	0.57	1.55	2.52	3.50	4.47	5.45	6.42	7.40
25'	0.31	1.02	2.05	3.07	4.10	5.12	6.15	7.17	8.20
27'	0.34	1.07	2.15	3.22	4.30	5.37	6.45	7.52	9.00
29'	0.36	1.12	2.25	3.37	4.50	6.02	7.15	8.27	9.40
31'	0.39	1.17	2.35	3.52	5.10	6.27	7.45	9.02	10.20
33'	0.41	1.22	2.45	4.07	5.30	6.52	8.15	9.37	11.00
35'	0.44	1.27	2.55	4.22	5.50	7.17	8.45	10.12	11.40
37'	0.46	1.32	3.05	4.37	6.10	7.42	9.15	10.47	12.20
39'	0.49	1.37	3.15	4.52	6.30	8.07	9.45	11.22	13.00
41'	0.51	1.42	3.25	5.07	6.50	8.32	10.15	11.57	13.40
43'	0.54	1.47	3.35	5.22	7.10	8.57	10.45	12.32	14.20
45'	0.56	1.52	3.45	5.37	7.30	9.22	11.15	13.07	15.00
47'	0.59	1.57	3.55	5.52	7.50	9.47	11.45	13.42	15.40
49'	1.01	2.02	4.05	6.07	8.10	10.12	12.15	14.17	16.20
51'	1.04	2.07	4.15	6.22	8.30	10.37	12.45	14.52	17.00
53'	1.06	2.12	4.25	6.37	8.50	11.02	13.15	15.27	17.40
55'	1.09	2.17	4.35	6.52	9.10	11.27	13.45	16.02	18.20
57'	1.11	2.22	4.45	7.07	9.30	11.52	14.15	16.37	19.00
58'	1.12	2.25	4.50	7.15	9.40	12.05	14.30	16.55	19.20
59'	1.14	2.27	4.55	7.27	9.50	12.17	14.45	17.12	19.40
60'	1.15	2.30	5.00	7.30	10.00	12.30	15.00	17.30	20.00

दै. गति (24 घंटे)	गति (30 मिं.)	गति (1 घं.)	गति (2 घं.)	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति (8 घं.)
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
61'	1.16	2.32	5.05	7.37	10.10	12.42	15.15	17.47	20.20
63'	1.19	2.37	5.15	7.52	10.30	13.07	15.45	18.22	21.00
65'	1.21	2.42	5.25	8.07	10.50	13.32	16.15	18.57	21.40
67'	1.24	2.47	5.35	8.22	11.10	13.57	16.45	19.25	22.20
69'	1.26	2.52	5.45	8.37	11.30	14.22	17.15	20.07	23.00
71'	1.29	2.57	5.55	8.52	11.50	14.57	17.45	20.42	23.40
73'	1.31	3.02	6.05	9.07	12.10	15.12	18.15	21.17	24.20
75'	1.34	3.07	6.15	9.22	12.30	15.37	18.45	21.52	25.00
77'	1.36	3.12	6.25	9.37	12.50	16.02	19.15	22.27	25.40
79'	1.39	3.17	6.35	9.52	13.10	16.27	19.45	23.02	26.20
81'	1.41	3.22	6.45	10.07	13.30	16.52	20.15	23.37	27.00
83'	1.44	3.27	6.55	10.22	13.50	17.17	20.45	24.12	27.40
85'	1.46	3.32	7.05	10.37	14.10	17.42	21.15	24.47	28.20
87'	1.49	3.37	7.15	10.52	14.30	18.07	21.45	25.22	29.00
89'	1.51	3.42	7.25	11.07	14.50	18.32	22.15	25.57	29.40
90'	1.52	3.45	7.30	11.15	15.00	18.45	22.30	26.15	30.00
92'	1.55	3.50	7.40	11.30	15.20	19.10	23.00	26.50	30.40
94'	1.57	3.55	7.50	11.45	15.40	19.35	23.30	27.25	31.20
96'	2.00	4.00	8.00	12.00	16.00	20.00	24.00	28.00	32.00
98'	2.02	4.05	8.10	12.15	16.20	20.25	24.30	28.35	32.40
99'	2.04	4.07	8.15	12.22	16.30	20.37	24.45	28.52	33.00
100'	2.05	4.10	8.20	12.30	16.40	20.50	25.00	29.10	33.20
102'	2.07	4.15	8.30	12.45	17.00	21.15	25.30	29.45	34.00
104'	2.10	4.20	8.40	13.00	17.20	21.30	26.00	30.20	34.40
106'	2.12	4.25	8.50	13.15	17.40	22.05	26.30	30.55	35.20
108'	2.15	4.30	9.00	13.30	18.00	22.30	27.00	31.30	36.00
110'	2.17	4.35	9.10	13.45	18.20	22.55	27.30	32.05	36.40
112'	2.20	4.40	9.20	14.00	18.40	23.20	28.00	32.40	37.20
114'	2.22	4.45	9.30	14.15	19.00	23.45	28.30	33.15	38.00
116'	2.25	4.50	9.40	14.30	19.20	24.10	29.00	33.50	38.40
118'	2.27	4.55	9.50	14.45	19.40	24.35	29.30	34.25	39.20

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट बजे (भा.स्टैं.टा.) वि. संवत् 2061 (सन् 2004–05 ई.)

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट (1 मार्च से 4 अप्रै. तक) 1 मार्च, 2004 ई. को अयनांश 23°/54'/44'' 1 अप्रैल, 2004 ई. को अयनांश 23°/54'/48''

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रां.	चं. क्रां.	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	मार्च
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
1	10 16 49 51	2 06 59 00	0 23 03 54	10 14 09 41	4 20 28 15	0 00 45 39	2 12 24 56	0 20 36 53	-7 32	+27 11	13 01	2 57	1
2	10 17 50 03	2 19 00 53	0 23 42 22	10 16 01 00	4 20 20 26	0 01 53 13	2 12 24 15	0 20 33 42	-7 10	+27 10	13 55	3 50	2
3	10 18 50 13	3 01 16 08	0 24 20 50	10 17 53 16	4 20 12 36	0 03 00 34	2 12 23 40	0 20 30 31	-6 47	+25 51	14 53	4 38	3
4	10 19 50 21	3 13 48 00	0 24 59 18	10 19 46 29	4 20 04 45	0 04 07 43	2 12 23 12	0 20 27 20	-6 24	+23 13	15 54	5 21	4
5	10 20 50 26	3 26 38 21	0 25 37 45	10 21 40 34	4 19 56 53	0 05 14 38	2 12 22 49	0 20 24 09	-6 00	+19 24	16 56	6 00	5
6	10 21 50 30	4 09 47 34	0 26 16 13	10 23 35 30	4 19 49 03	0 06 21 20	2 12 22 35	0 20 20 58	-5 37	+14 34	17 59	6 35	6
7	10 22 50 32	4 23 14 30	0 26 54 41	10 25 31 13	4 19 41 13	0 07 27 49	2 12 22 27	0 20 17 48	-5 14	+8 56	19 02	7 07	7
8	10 23 50 32	5 06 56 40	0 27 33 08	10 27 27 36	4 19 33 23	0 08 34 03	2 12 22 25	0 20 14 37	-4 50	+2 47	20 05	7 37	8
9	10 24 50 31	5 20 50 28	0 28 11 35	10 29 24 35	4 19 25 36	0 09 40 03	2 12 22 31	0 20 11 26	-4 27	-3 37	21 10	8 08	9
10	10 25 50 28	6 04 53 06	0 28 50 03	11 01 21 59	4 19 17 49	0 10 45 48	2 12 22 43	0 20 08 15	-4 04	-9 55	22 16	8 41	10
11	10 26 50 22	6 19 00 28	0 29 28 30	11 03 19 33	4 19 10 05	0 11 51 18	2 12 23 02	0 20 05 05	-3 40	-15 46	23 24	9 16	11
12	10 27 50 15	7 03 09 58	1 00 06 55	11 05 17 27	4 19 02 23	0 12 56 32	2 12 23 27	0 20 01 54	-3 16	-20 46	-- --	9 56	12
13	10 28 50 07	7 17 19 38	1 00 45 24	11 07 15 07	4 18 54 44	0 14 01 31	2 12 24 00	0 19 58 43	-2 53	-24 35	0 34	10 43	13
14	10 29 49 57	8 01 27 58	1 01 23 51	11 09 12 23	4 18 47 07	0 15 06 14	2 12 24 39	0 19 55 32	-2 29	-26 52	1 43	11 38	14
15	11 00 49 44	8 15 33 43	1 02 02 17	11 11 08 58	4 18 39 34	0 16 10 40	2 12 25 25	0 19 52 22	-2 05	-27 15	2 47	12 40	15
16	11 01 49 31	8 29 35 22	1 02 40 45	11 13 04 33	4 18 32 03	0 17 14 49	2 12 26 16	0 19 49 11	-1 42	-26 11	3 45	13 46	16
17	11 02 49 15	9 13 31 06	1 03 19 11	11 14 58 46	4 18 24 37	0 18 18 41	2 12 27 15	0 19 46 00	-1 18	-23 22	4 35	14 53	17
18	11 03 48 58	9 27 18 41	1 03 57 38	11 16 51 11	4 18 17 17	0 19 22 13	2 12 28 21	0 19 42 49	-0 54	-19 14	5 17	16 00	18
19	11 04 48 39	10 10 55 33	1 04 36 05	11 18 41 25	4 18 09 57	0 20 25 30	2 12 29 33	0 19 39 39	-0 31	-14 09	5 53	17 04	19
20	11 05 48 19	10 24 19 06	1 05 14 32	11 20 29 02	4 18 02 43	0 21 28 27	2 12 30 52	0 19 36 28	-0 07	-8 29	6 25	18 05	20
21	11 06 47 56	11 07 27 21	1 05 52 58	11 22 13 34	4 17 55 36	0 22 31 04	2 12 32 18	0 19 33 17	+0 17	-2 32	6 54	19 04	21
22	11 07 47 32	11 20 19 00	1 06 31 25	11 23 54 32	4 17 48 34	0 23 33 20	2 12 33 50	0 19 30 06	+0 41	+3 24	7 22	20 02	22
23	11 08 47 05	0 02 54 03	1 07 09 51	11 25 31 33	4 17 41 37	0 24 35 16	2 12 35 29	0 19 26 56	+1 04	+9 06	7 50	20 59	23
24	11 09 46 36	0 15 13 35	1 07 48 17	11 27 04 07	4 17 34 47	0 25 36 50	2 12 37 14	0 19 23 45	+1 28	+14 19	8 20	21 57	24
25	11 10 46 05	0 27 19 52	1 08 26 43	11 28 31 50	4 17 28 02	0 26 38 02	2 12 39 06	0 19 20 34	+1 52	+18 54	8 51	22 55	25
26	11 11 45 32	1 09 16 13	1 09 05 07	11 29 54 16	4 17 21 25	0 27 38 51	2 12 41 05	0 19 17 23	+2 15	+22 40	9 26	23 52	26
27	11 12 44 56	1 21 06 42	1 09 43 33	0 01 11 07	4 17 14 53	0 28 39 16	2 12 43 08	0 19 14 13	+2 39	+25 27	10 06	-- --	27
28	11 13 44 18	2 02 56 02	1 10 21 58	0 02 22 02	4 17 08 29	0 29 39 15	2 12 45 19	0 19 11 02	+3 02	+27 06	10 52	0 48	28
29	11 14 43 38	2 14 49 10	1 11 00 22	0 03 26 43	4 17 02 12	1 00 38 50	2 12 47 36	0 19 07 51	+3 26	+27 31	11 43	1 41	29
30	11 15 42 55	2 26 51 12	1 11 38 46	0 04 24 54	4 16 56 03	1 01 37 58	2 12 50 00	0 19 04 40	+3 49	+26 39	12 39	2 31	30
31	11 16 42 10	3 09 06 52	1 12 17 09	0 05 16 24	4 16 50 02	1 02 36 40	2 12 52 29	0 19 01 29	+4 12	+24 30	13 38	3 15	31
अप्रै	11 17 41 23	3 21 40 20	1 12 55 32	0 06 01 03	4 16 44 07	1 03 34 52	2 12 55 06	0 18 58 18	+4 35	+21 08	14 39	3 55	अप्रै
2	11 18 40 34	4 04 34 47	1 13 33 55	0 06 38 40	4 16 38 24	1 04 32 37	2 12 57 48	0 18 55 08	+4 59	+16 40	15 41	4 31	2
3	11 19 39 42	4 17 51 58	1 14 12 15	0 07 09 13	4 16 32 46	1 05 29 50	2 13 00 36	0 18 51 57	+5 21	+11 19	16 44	5 04	3
4	11 20 38 48	5 01 31 47	1 14 50 37	0 07 32 38	4 16 27 17	1 06 26 32	2 13 03 30	0 18 48 47	+5 44	+5 16	17 48	5 35	4

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट (5 अप्रै. से 12 मई 2004 ई. तक)   1 मई, 2004 ई. को अयनांश 23°/54′/51″

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रां.	चं. क्रां.	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	तारीख
अप्रै	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	+अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	अप्रैल
5	11 21 37 52	5 15 32 14	1 15 28 56	0 07 48 58	4 16 21 58	1 07 22 41	2 13 06 30	0 18 45 36	+6 07	-1 12	18 52	6 06	5
6	11 22 36 55	5 29 49 34	1 16 07 16	0 07 58 14	4 16 16 47	1 08 18 19	2 13 09 36	0 18 42 25	+6 30	-7 44	20 00	6 38	6
7	11 23 35 55	6 14 18 31	1 16 45 35	0 08 00 38	4 16 11 44	1 09 13 20	2 13 12 47	0 18 39 15	+6 53	-13 59	21 10	7 13	7
8	11 24 34 53	6 28 53 16	1 17 23 53	0 07 56 21	4 16 06 52	1 10 07 46	2 13 16 05	0 18 36 04	+7 15	-19 29	22 22	7 53	8
9	11 25 33 49	7 13 28 05	1 18 02 11	0 07 45 39	4 16 02 08	1 11 01 36	2 13 19 28	0 18 32 53	+7 37	-23 49	23 34	8 38	9
10	11 26 32 43	7 27 57 48	1 18 40 28	0 07 28 53	4 15 57 34	1 11 54 49	2 13 22 56	0 18 29 43	+8 00	-26 36	-- --	9 31	10
11	11 27 31 36	8 12 18 33	1 19 18 45	0 07 06 31	4 15 53 10	1 12 47 22	2 13 26 30	0 18 26 32	+8 22	-27 36	0 41	10 33	11
12	11 28 30 27	8 26 27 35	1 19 57 02	0 06 39 05	4 15 48 55	1 13 39 15	2 13 30 11	0 18 23 21	+8 44	-26 45	1 42	11 37	12
13	11 29 29 16	9 10 23 15	1 20 35 18	0 06 07 09	4 15 44 51	1 14 30 26	2 13 33 59	0 18 20 11	+9 06	-24 15	2 34	12 45	13
14	0 00 28 04	9 24 04 49	1 21 13 33	0 05 31 25	4 15 40 57	1 15 20 54	2 13 37 48	0 18 17 00	+9 27	-20 24	3 18	13 52	14
15	0 01 26 51	10 07 31 59	1 21 51 49	0 04 52 35	4 15 37 12	1 16 10 37	2 13 41 46	0 18 13 49	+9 49	-15 34	3 55	14 55	15
16	0 02 25 34	10 20 44 52	1 22 30 04	0 04 11 28	4 15 33 38	1 16 59 35	2 13 45 48	0 18 10 39	+10 11	-10 06	4 27	15 56	16
17	0 03 24 16	11 03 43 40	1 23 08 18	0 03 28 52	4 15 30 14	1 17 47 44	2 13 49 55	0 18 07 28	+10 31	-4 16	4 56	16 55	17
18	0 04 22 57	11 16 28 52	1 23 46 32	0 02 45 35	4 15 27 01	1 18 35 03	2 13 54 08	0 18 04 17	+10 52	+1 37	5 24	17 52	18
19	0 05 21 36	11 29 01 02	1 24 24 46	0 02 02 25	4 15 23 59	1 19 21 30	2 13 58 25	0 18 01 07	+11 14	+7 22	5 51	18 49	19
20	0 06 20 13	0 11 21 05	1 25 02 59	0 01 20 11	4 15 21 07	1 20 07 04	2 14 02 49	0 17 57 56	+11 34	+12 45	6 20	19 47	20
21	0 07 18 48	0 23 30 17	1 25 41 12	0 00 39 35	4 15 18 26	1 20 51 42	2 14 07 18	0 17 54 45	+11 54	+17 35	6 50	20 44	21
22	0 08 17 21	1 05 30 26	1 26 19 24	0 00 01 18	4 15 15 55	1 21 35 21	2 14 11 51	0 17 51 35	+12 14	+21 39	7 24	21 42	22
23	0 09 15 52	1 17 23 54	1 26 57 36	11 29 25 57	4 15 13 35	1 22 18 00	2 14 16 30	0 17 48 24	+12 35	+24 46	8 02	22 39	23
24	0 10 14 20	1 29 13 36	1 27 35 47	11 28 54 00	4 15 11 27	1 22 59 36	2 14 21 13	0 17 45 13	+12 55	+26 48	8 46	23 34	24
25	0 11 12 47	2 11 03 02	1 28 13 58	11 28 25 55	4 15 09 29	1 23 40 07	2 14 26 01	0 17 42 03	+13 14	+27 37	9 35	-- --	25
26	0 12 11 11	2 22 56 10	1 28 52 08	11 28 02 02	4 15 07 43	1 24 19 30	2 14 30 54	0 17 38 52	+13 34	+27 10	10 27	0 24	26
27	0 13 09 34	3 04 57 23	1 29 30 17	11 27 42 37	4 15 06 07	1 24 57 41	2 14 35 52	0 17 35 41	+13 54	+25 27	11 25	1 10	27
28	0 14 07 54	3 17 11 11	2 00 08 26	11 27 27 54	4 15 04 43	1 25 34 39	2 14 40 55	0 17 32 31	+14 11	+22 32	12 24	1 52	28
29	0 15 06 13	3 29 42 02	2 00 46 34	11 27 17 57	4 15 03 30	1 26 10 21	2 14 46 01	0 17 29 20	+14 30	+18 32	13 25	2 28	29
30	0 16 04 29	4 12 33 54	2 01 24 42	11 27 12 51	4 15 02 27	1 26 44 41	2 14 51 13	0 17 26 09	+14 49	+13 35	14 26	3 01	30
मई	0 17 02 43	4 25 49 49	2 02 02 49	11 27 12 38	4 15 01 36	1 27 17 40	2 14 56 29	0 17 22 59	+15 07	+7 53	15 28	3 32	मई
2	0 18 00 56	5 09 31 28	2 02 40 55	11 27 17 15	4 15 00 56	1 27 49 13	2 15 01 49	0 17 19 48	+15 25	+1 37	16 31	4 03	2
3	0 18 59 06	5 23 38 24	2 03 19 00	11 27 26 38	4 15 00 27	1 28 19 17	2 15 07 13	0 17 16 37	+15 43	-4 55	17 38	4 34	3
4	0 19 57 15	6 08 07 58	2 03 57 05	11 27 40 43	4 15 00 09	1 28 47 48	2 15 12 42	0 17 13 27	+16 00	-11 23	18 47	5 07	4
5	0 20 55 21	6 22 55 04	2 04 35 09	11 27 59 22	4 15 00 02	1 29 14 43	2 15 18 15	0 17 10 16	+16 17	-17 21	20 00	5 44	5
6	0 21 53 26	7 07 52 37	2 05 13 13	11 28 22 28	4 15 00 06	1 29 39 59	2 15 23 52	0 17 07 05	+16 34	-22 20	21 14	6 28	6
7	0 22 51 30	7 22 52 20	2 05 51 15	11 28 49 52	4 15 00 20	2 00 03 32	2 15 29 33	0 17 03 54	+16 51	-25 51	22 27	7 20	7
8	0 23 49 32	8 07 46 02	2 06 29 18	11 29 21 27	4 15 00 46	2 00 25 19	2 15 35 18	0 17 00 44	+17 07	-27 31	23 33	8 20	8
9	0 24 47 33	8 22 26 34	2 07 07 20	11 29 57 04	4 15 01 23	2 00 45 16	2 15 41 07	0 16 57 33	+17 23	-27 12	-- --	9 27	9
10	0 25 45 31	9 06 48 49	2 07 45 21	0 00 36 32	4 15 02 10	2 01 03 20	2 15 47 00	0 16 54 22	+17 39	-25 04	0 30	10 36	10
11	0 26 43 29	9 20 49 49	2 08 23 22	0 01 19 45	4 15 03 09	2 01 19 29	2 15 52 57	0 16 51 11	+17 55	-21 27	1 18	11 44	11
12	0 27 41 26	10 04 28 46	2 09 01 22	0 02 06 34	4 15 04 18	2 01 33 37	2 15 58 57	0 16 48 01	+18 10	-16 46	1 57	12 49	12

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट (13 मई से 19 जून तक) 1 जून, 2004 ई. को अयनांश 23°/54′/56″

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रां.	चं. क्रां.	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	ता.
मई	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	+अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
13	0 28 39 21	10 17 46 26	2 09 39 22	0 02 56 51	4 15 05 38	2 01 45 42	2 16 05 01	0 16 44 50	+18 25	-11 24	2 30	13 51	13
14	0 29 37 15	11 00 44 45	2 10 17 22	0 03 50 29	4 15 07 09	2 01 55 41	2 16 11 09	0 16 41 39	+18 39	-5 39	2 59	14 50	14
15	1 00 35 08	11 13 26 08	2 10 55 22	0 04 47 20	4 15 08 50	2 02 03 29	2 16 17 21	0 16 38 29	+18 54	+0 12	3 28	15 47	15
16	1 01 33 00	11 25 53 12	2 11 33 21	0 05 47 18	4 15 10 42	2 02 09 05	2 16 23 35	0 16 35 18	+19 08	+5 57	3 55	16 43	16
17	1 02 30 50	0 08 08 31	2 12 11 19	0 06 50 17	4 15 12 45	2 02 12 24	2 16 29 54	0 16 32 07	+19 21	+11 23	4 22	17 39	17
18	1 03 28 39	0 20 14 27	2 12 49 17	0 07 56 11	4 15 14 58	2 02 13 25	2 16 36 15	0 16 28 56	+19 35	+16 20	4 51	18 37	18
19	1 04 26 27	1 02 13 10	2 13 27 15	0 09 04 57	4 15 17 22	2 02 12 05	2 16 42 40	0 16 25 46	+19 48	+20 36	5 24	19 35	19
20	1 05 24 13	1 14 06 39	2 14 05 13	0 10 16 28	4 15 19 56	2 02 08 22	2 16 49 09	0 16 22 35	+20 00	+23 59	6 00	20 32	20
21	1 06 21 58	1 25 56 58	2 14 43 10	0 11 30 42	4 15 22 41	2 02 02 15	2 16 55 40	0 16 19 24	+20 13	+26 20	6 42	21 27	21
22	1 07 19 41	2 07 46 13	2 15 21 07	0 12 47 34	4 15 25 36	2 01 53 41	2 17 02 15	0 16 16 14	+20 25	+27 29	7 29	22 19	22
23	1 08 17 23	2 19 36 51	2 15 59 03	0 14 07 02	4 15 28 41	2 01 42 43	2 17 08 52	0 16 13 03	+20 36	+27 23	8 21	23 07	23
24	1 09 15 04	3 01 31 38	2 16 36 59	0 15 29 04	4 15 31 57	2 01 29 20	2 17 15 33	0 16 09 52	+20 47	+26 01	9 17	23 49	24
25	1 10 12 43	3 13 33 51	2 17 14 55	0 16 53 38	4 15 35 23	2 01 13 32	2 17 22 16	0 16 06 41	+20 58	+23 27	10 14	-- --	25
26	1 11 10 20	3 25 47 03	2 17 52 50	0 18 20 40	4 15 38 58	2 00 55 23	2 17 29 02	0 16 03 31	+21 09	-19 49	11 14	0 26	26
27	1 12 07 56	4 08 15 12	2 18 30 44	0 19 50 10	4 15 42 44	2 00 34 54	2 17 35 51	0 16 00 20	+21 19	+15 16	12 13	1 00	27
28	1 13 05 31	4 21 02 19	2 19 08 38	0 21 22 08	4 15 46 39	2 00 12 10	2 17 42 43	0 15 57 09	+21 29	+9 56	13 12	1 31	28
29	1 14 03 04	5 04 12 02	2 19 46 32	0 22 56 32	4 15 50 44	1 29 47 17	2 17 49 37	0 15 53 59	+21 38	+4 02	14 13	2 00	29
30	1 15 00 36	5 17 47 19	2 20 24 25	0 24 33 21	4 15 54 58	1 29 20 20	2 17 56 34	0 15 50 48	+21 47	-2 16	15 16	2 31	30
31	1 15 58 07	6 01 49 32	2 21 02 17	0 26 12 37	4 15 59 22	1 28 51 27	2 18 03 33	0 15 47 37	+21 56	-8 39	16 23	3 01	31
जून	1 16 55 36	6 16 17 59	2 21 40 09	0 27 54 17	4 16 03 56	1 28 20 47	2 18 10 35	0 15 44 26	+22 04	-14 48	17 33	3 36	जून
2	1 17 53 04	7 01 09 02	2 22 18 01	0 29 38 20	4 16 08 39	1 27 48 30	2 18 17 39	0 15 41 16	+22 12	-20 16	18 47	4 16	2
3	1 18 50 31	7 16 16 16	2 22 55 52	1 01 24 48	4 16 13 31	1 27 14 45	2 18 24 45	0 15 38 05	+22 20	-24 30	20 03	5 04	3
4	1 19 47 57	8 01 30 45	2 23 33 43	1 03 13 38	4 16 18 32	1 26 39 48	2 18 31 53	0 15 34 54	+22 27	-27 00	21 14	6 01	4
5	1 20 45 22	8 16 42 09	2 24 11 33	1 05 04 50	4 16 23 42	1 26 03 49	2 18 39 04	0 15 31 44	+22 34	-27 30	22 18	7 06	5
6	1 21 42 46	9 01 40 43	2 24 49 23	1 06 58 22	4 16 29 01	1 25 27 02	2 18 46 17	0 15 28 33	+22 40	-25 57	23 11	8 18	6
7	1 22 40 09	9 16 18 32	2 25 27 13	1 08 54 10	4 16 34 29	1 24 49 43	2 18 53 32	0 15 25 22	+22 46	-22 41	23 54	9 29	7
8	1 23 37 32	10 00 30 38	2 26 05 02	1 10 52 11	4 16 40 06	1 24 12 05	2 19 00 48	0 15 22 11	+22 51	-18 08	-- --	10 38	8
9	1 24 34 54	10 14 15 05	2 26 42 51	1 12 52 19	4 16 45 52	1 23 34 23	2 19 08 07	0 15 19 01	+22 57	-12 47	0 31	11 43	9
10	1 25 32 16	10 27 32 42	2 27 20 41	1 14 54 30	4 16 51 46	1 22 56 52	2 19 15 28	0 15 15 50	+23 01	-7 00	1 03	12 44	10
11	1 26 29 37	11 10 26 08	2 27 58 30	1 16 58 34	4 16 57 49	1 22 19 46	2 19 22 50	0 15 12 39	+23 06	-1 06	1 31	13 42	11
12	1 27 26 58	11 22 59 11	2 28 36 19	1 19 04 24	4 17 04 00	1 21 43 19	2 19 30 15	0 15 09 29	+23 10	+4 42	1 59	14 38	12
13	1 28 24 19	0 05 16 03	2 29 14 07	1 21 11 48	4 17 10 20	1 21 07 46	2 19 37 41	0 15 06 18	+23 13	+10 13	2 26	15 34	13
14	1 29 21 39	0 17 20 52	2 29 51 56	1 23 20 33	4 17 16 48	1 20 33 18	2 19 45 08	0 15 03 07	+23 16	+15 15	2 55	16 31	14
15	2 00 18 58	0 29 17 25	3 00 29 45	1 25 30 28	4 17 23 24	1 20 00 08	2 19 52 37	0 14 59 56	+23 19	+19 40	3 26	17 28	15
16	2 01 16 17	1 11 08 59	3 01 07 33	1 27 41 15	4 17 30 08	1 19 28 27	2 20 00 08	0 14 56 46	+23 21	+23 15	4 00	18 26	16
17	2 02 13 36	1 22 58 16	3 01 45 22	1 29 52 40	4 17 37 00	1 18 58 24	2 20 07 40	0 14 53 35	+23 23	+25 50	4 41	19 22	17
18	2 03 10 53	2 04 47 31	3 02 23 10	2 02 04 25	4 17 44 01	1 18 30 09	2 20 15 13	0 14 50 24	+23 25	+27 16	5 26	20 15	18
19	2 04 08 11	2 16 38 38	3 03 00 59	2 04 16 15	4 17 51 09	1 18 03 50	2 20 22 48	0 14 47 13	+23 26	+27 27	6 17	21 04	19

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट (20 जून से 27 जुला. तक)   1 जुलाई, 2004 ई. को अयनांश 23°/55′/02″

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रां.	चं. क्रां.	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	ता.
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
20	2 05 05 27	2 28 33 18	3 03 38 47	2 06 27 53	4 17 58 25	1 17 39 34	2 20 30 24	0 14 44 03	+23 26	+26 22	7 11	21 48	20
21	2 06 02 44	3 10 33 22	3 04 16 35	2 08 39 02	4 18 05 48	1 17 17 26	2 20 38 01	0 14 40 52	+23 26	+24 05	8 08	22 27	21
22	2 06 59 59	3 22 40 46	3 04 54 23	2 10 49 28	4 18 13 19	1 16 57 31	2 20 45 39	0 14 37 41	+23 26	+20 42	9 07	23 01	22
23	2 07 57 15	4 04 57 58	3 05 32 11	2 12 58 56	4 18 20 58	1 16 39 52	2 20 53 19	0 14 34 30	+23 26	+16 23	10 05	23 32	23
24	2 08 54 29	4 17 27 44	3 06 09 58	2 15 07 15	4 18 28 44	1 16 24 34	2 21 00 59	0 14 31 20	+23 25	+11 19	11 04	-- --	24
25	2 09 51 44	5 00 13 24	3 06 47 46	2 17 14 12	4 18 36 37	1 16 11 37	2 21 08 40	0 14 28 09	+23 23	+ 5 41	12 03	0 02	25
26	2 10 48 57	5 13 18 16	3 07 25 33	2 19 19 40	4 18 44 37	1 16 01 03	2 21 16 22	0 14 24 58	+23 21	- 0 20	13 02	0 30	26
27	2 11 46 10	5 26 45 38	3 08 03 20	2 21 23 29	4 18 52 44	1 15 52 51	2 21 24 05	0 14 21 47	+23 19	- 6 32	14 05	1 00	27
28	2 12 43 22	6 10 37 54	3 08 41 07	2 23 25 34	4 19 00 58	1 15 47 03	2 21 31 48	0 14 18 37	+23 16	-12 36	15 12	1 31	28
29	2 13 40 34	6 24 55 54	3 09 18 54	2 25 25 48	4 19 09 19	1 15 43 37	2 21 39 32	0 14 15 26	+23 13	-18 13	16 22	2 07	29
30	2 14 37 44	7 09 38 05	3 09 56 41	2 27 24 09	4 19 17 46	1 15 42 32	2 21 47 17	0 14 12 15	+23 10	-22 54	17 36	2 50	30
जुला	2 15 34 56	7 24 39 45	3 10 34 28	2 29 20 31	4 19 26 20	1 15 43 44	2 21 55 02	0 14 09 04	+23 06	-26 08	18 49	3 42	जुला
2	2 16 32 07	8 09 53 08	3 11 12 14	3 01 14 55	4 19 35 01	1 15 47 14	2 22 02 47	0 14 05 54	+23 02	-27 31	19 58	4 44	2
3	2 17 29 17	8 25 08 12	3 11 50 01	3 03 07 18	4 19 43 48	1 15 52 59	2 22 10 33	0 14 02 43	+22 57	-26 48	20 57	5 53	3
4	2 18 26 27	9 10 14 02	3 12 27 47	3 04 57 39	4 19 52 41	1 16 00 55	2 22 18 19	0 13 59 32	+22 52	-24 07	21 47	7 07	4
5	2 19 23 38	9 25 00 59	3 13 05 34	3 06 45 57	4 20 01 41	1 16 11 00	2 22 26 06	0 13 56 21	+22 46	-19 53	22 27	8 20	5
6	2 20 20 49	10 09 22 06	3 13 43 21	3 08 32 13	4 20 10 46	1 16 23 10	2 22 33 53	0 13 53 11	+22 41	-14 36	23 02	9 28	6
7	2 21 18 01	10 23 13 54	3 14 21 08	3 10 16 25	4 20 19 59	1 16 37 21	2 22 41 40	0 13 50 00	+22 34	- 8 45	23 32	10 32	7
8	2 22 15 11	11 06 36 07	3 14 58 55	3 11 58 34	4 20 29 16	1 16 53 30	2 22 49 28	0 13 46 49	+22 28	- 2 41	-- --	11 33	8
9	2 23 12 23	11 19 31 16	3 15 36 42	3 13 38 40	4 20 38 40	1 17 11 34	2 22 57 13	0 13 43 38	+22 21	+ 3 18	0 01	12 31	9
10	2 24 09 37	0 02 03 22	3 16 14 30	3 15 16 42	4 20 48 09	1 17 31 29	2 23 05 01	0 13 40 28	+22 14	+ 8 59	0 28	13 28	10
11	2 25 06 49	0 14 17 19	3 16 52 18	3 16 52 42	4 20 57 45	1 17 53 10	2 23 12 49	0 13 37 17	+22 06	+14 12	0 56	14 26	11
12	2 26 04 03	0 26 18 14	3 17 30 06	3 18 26 37	4 21 07 26	1 18 16 34	2 23 20 36	0 13 34 06	+21 57	+18 47	1 27	15 22	12
13	2 27 01 17	1 08 10 56	3 18 07 54	3 19 58 29	4 21 17 12	1 18 41 38	2 23 28 23	0 13 30 55	+21 49	+22 33	2 01	16 20	13
14	2 27 58 31	1 19 59 46	3 18 45 43	3 21 28 15	4 21 27 04	1 19 08 18	2 23 36 09	0 13 27 45	+21 40	+25 22	2 39	17 16	14
15	2 28 55 45	2 01 48 22	3 19 23 32	3 22 55 55	4 21 37 02	1 19 36 21	2 23 43 56	0 13 24 34	+21 30	+27 04	3 23	18 10	15
16	2 29 53 00	2 13 39 32	3 20 01 21	3 24 21 27	4 21 47 05	1 20 06 12	2 23 51 42	0 13 21 23	+21 21	+27 32	4 12	19 01	16
17	3 00 50 16	2 25 34 25	3 20 39 11	3 25 44 50	4 21 57 13	1 20 37 18	2 23 59 27	0 13 18 12	+21 11	+26 43	5 06	19 47	17
18	3 01 47 31	3 07 37 36	3 21 17 00	3 27 06 01	4 22 07 26	1 21 09 46	2 24 07 12	0 13 15 01	+21 00	+24 40	6 03	20 28	18
19	3 02 44 48	3 19 47 10	3 21 54 51	3 28 24 59	4 22 17 45	1 21 43 34	2 24 14 57	0 13 11 51	+20 49	+21 29	7 01	21 03	19
20	3 03 42 05	4 02 05 14	3 22 32 41	3 29 41 40	4 22 28 08	1 22 18 37	2 24 22 40	0 13 08 40	+20 38	+17 19	8 00	21 35	20
21	3 04 39 23	4 14 32 40	3 23 10 32	4 00 56 01	4 22 38 36	1 22 54 54	2 24 30 23	0 13 05 30	+20 27	+12 23	8 59	22 05	21
22	3 05 36 41	4 27 11 22	3 23 48 23	4 02 07 59	4 22 49 10	1 23 32 21	2 24 38 06	0 13 02 19	+20 15	+ 6 51	9 57	22 33	22
23	3 06 33 58	5 10 02 54	3 24 26 14	4 03 17 27	4 22 59 46	1 24 10 56	2 24 45 47	0 12 59 08	+20 03	+ 0 57	10 56	23 02	23
24	3 07 31 17	5 23 09 38	3 25 04 06	4 04 24 24	4 23 10 29	1 24 50 37	2 24 53 28	0 12 55 57	+19 50	- 5 07	11 56	23 31	24
25	3 08 28 35	6 06 34 12	3 25 41 58	4 05 28 43	4 23 21 16	1 25 31 20	2 25 01 07	0 12 52 46	+19 38	-11 06	12 58	-- --	25
26	3 09 25 53	6 20 18 48	3 26 19 50	4 06 30 18	4 23 32 07	1 26 13 03	2 25 08 46	0 12 49 35	+19 24	-16 43	14 05	0 04	26
27	3 10 23 13	7 04 24 50	3 26 57 42	4 07 29 03	4 23 43 03	1 26 55 46	2 25 16 23	0 12 46 24	+19 11	-21 34	15 16	0 43	27

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट, प्रातः 5 घंटे 30 मिंट (28 जुला. से 3 सितं. तक)   1 अग., 2004 ई. को अयनांश 23°/55′/06″   1 सितं., 2004 ई. को अयनांश 23°/55′/11″

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रां.	चं. क्रां.	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	जुलाई
जुला	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
28	3 11 20 32	7 18 51 59	3 27 35 35	4 08 24 51	4 23 54 03	1 27 39 24	2 25 23 59	0 12 43 13	+18 57	-25 15	16 27	1 28	28
29	3 12 17 53	8 03 37 29	3 28 13 27	4 09 17 35	4 24 05 06	1 28 23 57	2 25 31 34	0 12 40 02	+18 43	-27 18	17 37	2 24	29
30	3 13 15 13	8 18 35 42	3 28 51 21	4 10 07 05	4 24 16 14	1 29 09 23	2 25 39 08	0 12 36 51	+18 29	-27 24	18 40	3 29	30
31	3 14 12 34	9 03 38 22	3 29 29 14	4 10 53 12	4 24 27 26	1 29 55 39	2 25 46 40	0 12 33 40	+18 14	-25 29	19 34	4 41	31
अग	3 15 09 56	9 18 35 56	4 00 07 08	4 11 35 50	4 24 38 42	2 00 42 45	2 25 54 11	0 12 30 29	+17 59	-21 49	20 19	5 54	अग
2	3 16 07 19	10 03 18 58	4 00 45 03	4 12 14 46	4 24 50 02	2 01 30 38	2 26 01 40	0 12 27 18	+17 44	-16 49	20 57	7 06	2
3	3 17 04 44	10 17 39 46	4 01 22 58	4 12 49 51	4 25 01 24	2 02 19 16	2 26 09 08	0 12 24 07	+17 28	-11 00	21 29	8 14	3
4	3 18 02 09	11 01 33 39	4 02 00 53	4 13 20 52	4 25 12 52	2 03 08 40	2 26 16 35	0 12 20 56	+17 12	-4 48	21 59	9 19	4
5	3 18 59 35	11 14 59 03	4 02 38 49	4 13 47 38	4 25 24 22	2 03 58 46	2 26 23 59	0 12 17 45	+16 56	+1 25	22 28	10 19	5
6	3 19 57 02	11 27 57 24	4 03 16 46	4 14 10 00	4 25 35 57	2 04 49 33	2 26 31 22	0 12 14 34	+16 40	+7 23	22 57	11 18	6
7	3 20 54 31	0 10 31 55	4 03 54 43	4 14 27 45	4 25 47 35	2 05 40 59	2 26 38 44	0 12 11 23	+16 23	+12 53	23 27	12 16	7
8	3 21 52 01	0 22 47 21	4 04 32 41	4 14 40 40	4 25 59 16	2 06 33 04	2 26 46 03	0 12 08 13	+16 06	+17 45	-- --	13 14	8
9	3 22 49 33	1 04 48 54	4 05 10 40	4 14 48 34	4 26 11 01	2 07 25 47	2 26 53 21	0 12 05 02	+15 49	+21 48	0 02	14 12	9
10	3 23 47 06	1 16 41 54	4 05 48 39	4 14 51 20	4 26 22 48	2 08 19 04	2 27 00 37	0 12 01 51	+15 32	+24 54	0 37	15 10	10
11	3 24 44 40	1 28 31 20	4 06 26 39	4 14 48 46	4 26 34 40	2 09 12 57	2 27 07 50	0 11 58 40	+15 14	+26 53	1 19	16 05	11
12	3 25 42 14	2 10 21 42	4 07 04 40	4 14 40 47	4 26 46 34	2 10 07 23	2 27 15 02	0 11 55 30	+14 56	+27 40	2 06	16 57	12
13	3 26 39 51	2 22 16 38	4 07 42 42	4 14 27 19	4 26 58 31	2 11 02 20	2 27 22 11	0 11 51 19	+14 38	+27 10	2 59	17 44	13
14	3 27 37 29	3 04 18 58	4 08 20 44	4 14 08 21	4 27 10 32	2 11 57 48	2 27 29 19	0 11 48 08	+14 19	+25 24	3 55	18 27	14
15	3 28 35 09	3 16 30 34	4 08 58 47	4 13 43 57	4 27 22 35	2 12 53 46	2 27 36 24	0 11 45 57	+14 01	+22 26	4 53	19 04	15
16	3 29 32 50	3 28 52 39	4 09 36 51	4 13 14 15	4 27 34 42	2 13 50 14	2 27 43 26	0 11 42 46	+13 42	+18 26	5 53	19 38	16
17	4 00 30 32	4 11 25 39	4 10 14 55	4 12 39 31	4 27 46 50	2 14 47 09	2 27 50 26	0 11 39 35	+13 23	+13 35	6 52	20 08	17
18	4 01 28 16	4 24 09 44	4 10 53 01	4 12 00 05	4 27 59 01	2 15 44 31	2 27 57 24	0 11 36 24	+13 04	+8 05	7 51	20 36	18
19	4 02 26 00	5 07 04 54	4 11 31 07	4 11 16 27	4 28 11 15	2 16 42 19	2 28 04 19	0 11 33 13	+12 44	+2 10	8 51	21 05	19
20	4 03 23 46	5 20 11 28	4 12 09 13	4 10 29 13	4 28 23 32	2 17 40 32	2 28 11 11	0 11 30 02	+12 24	-3 57	9 50	21 34	20
21	4 04 21 33	6 03 29 58	4 12 47 20	4 09 39 06	4 28 35 52	2 18 39 10	2 28 18 01	0 11 26 51	+12 04	-9 59	10 52	22 05	21
22	4 05 19 20	6 17 01 21	4 13 25 28	4 08 46 56	4 28 48 12	2 19 38 12	2 28 24 48	0 11 23 40	+11 44	-15 40	11 57	22 41	22
23	4 06 17 10	7 00 46 39	4 14 03 37	4 07 53 41	4 29 00 36	2 20 37 37	2 28 31 32	0 11 20 30	+11 22	-20 40	13 05	23 23	23
24	4 07 15 00	7 14 46 36	4 14 41 46	4 07 00 24	4 29 13 02	2 21 37 25	2 28 38 13	0 11 17 19	+11 02	-24 36	14 14	-- --	24
25	4 08 12 52	7 29 00 54	4 15 19 56	4 06 08 08	4 29 25 30	2 22 37 35	2 28 44 51	0 11 14 08	+10 41	-27 04	15 22	0 14	25
26	4 09 10 44	8 13 27 47	4 15 58 07	4 05 18 01	4 29 37 59	2 23 38 06	2 28 51 26	0 11 10 58	+10 20	-27 46	16 26	1 13	26
27	4 10 08 38	8 28 03 38	4 16 36 18	4 04 31 08	4 29 50 31	2 24 38 58	2 28 57 58	0 11 07 47	+9 59	-26 33	17 23	2 21	27
28	4 11 06 34	9 12 42 56	4 17 14 31	4 03 48 33	5 00 03 05	2 25 40 11	2 29 04 27	0 11 04 36	+9 38	-23 31	18 11	3 32	28
29	4 12 04 31	9 27 18 43	4 17 52 44	4 03 11 14	5 00 15 40	2 26 41 44	2 29 10 52	0 11 01 26	+9 17	-19 00	18 51	4 44	29
30	4 13 02 29	10 11 42 36	4 18 30 57	4 02 40 03	5 00 28 17	2 27 43 36	2 29 17 15	0 10 58 15	+8 56	-13 27	19 25	5 53	30
31	4 14 00 29	10 25 51 19	4 19 09 12	4 02 15 45	5 00 40 57	2 28 45 48	2 29 23 34	0 10 55 04	+8 34	-7 18	19 57	6 59	31
सितं	4 14 58 30	11 09 37 08	4 19 47 28	4 01 59 00	5 00 53 37	2 29 48 18	2 29 29 49	0 10 51 53	+8 12	-0 56	20 26	8 02	सितं
2	4 15 56 33	11 22 58 52	4 20 25 44	4 01 50 15	5 01 06 19	3 00 51 07	2 29 36 02	0 10 48 42	+7 50	+5 18	20 55	9 03	2
3	4 16 54 39	0 05 56 32	4 21 04 02	4 01 49 51	5 01 19 03	3 01 54 13	2 29 42 10	0 10 45 31	+7 28	+11 08	21 25	10 03	3

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट (4 सितं. से 11 अक्तू. तक) 1 अक्तू. 2004 ई. को अयनांश 23°/55′/15″

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रां.	चं. क्रां.	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	ता.
सितं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.	
4	4 17 52 45	0 18 32 16	4 21 42 21	4 01 58 02	5 01 31 47	3 02 57 37	2 29 48 16	0 10 42 21	+7 06	+16 21	21 57	11 03	4
5	4 18 50 54	1 00 49 39	4 22 20 40	4 02 14 52	5 01 44 34	3 04 01 18	2 29 54 17	0 10 39 10	+6 44	+20 46	22 33	12 02	5
6	4 19 49 05	1 12 53 13	4 22 59 01	4 02 40 21	5 01 57 21	3 05 05 15	3 00 00 15	0 10 35 59	+6 22	+24 15	23 13	13 00	6
7	4 20 47 18	1 24 48 02	4 23 37 23	4 03 14 21	5 02 10 10	3 06 09 28	3 00 06 09	0 10 32 48	+5 59	+26 37	23 59	13 56	7
8	4 21 45 33	2 06 39 14	4 24 15 46	4 03 56 40	5 02 23 00	3 07 13 57	3 00 11 59	0 10 29 37	+5 37	+27 46	-- --	14 50	8
9	4 22 43 51	2 18 31 39	4 24 54 10	4 04 46 57	5 02 35 51	3 08 18 41	3 00 17 45	0 10 26 27	+5 14	+27 38	0 50	15 39	9
10	4 23 42 09	3 00 29 49	4 25 32 36	4 05 44 51	5 02 48 44	3 09 23 40	3 00 23 27	0 10 23 16	+4 52	+26 14	1 45	16 24	10
11	4 24 40 30	3 12 37 28	4 26 11 02	4 06 49 53	5 03 01 37	3 10 28 53	3 00 29 05	0 10 20 05	+4 29	+23 36	2 42	17 02	11
12	4 25 38 53	3 24 57 18	4 26 49 29	4 08 01 35	5 03 14 31	3 11 34 21	3 00 34 39	0 10 16 54	+4 06	+19 52	3 42	17 37	12
13	4 26 37 18	4 07 31 14	4 27 27 58	4 09 19 23	5 03 27 26	3 12 40 02	3 00 40 09	0 10 13 43	+3 43	+15 11	4 42	18 08	13
14	4 27 35 45	4 20 19 58	4 28 06 28	4 10 42 46	5 03 40 21	3 13 45 56	3 00 45 35	0 10 10 33	+3 20	+ 9 46	5 42	18 38	14
15	4 28 34 14	5 03 23 22	4 28 44 59	4 12 11 05	5 03 53 17	3 14 52 04	3 00 50 56	0 10 07 23	+2 57	+ 3 49	6 42	19 07	15
16	4 29 32 44	5 16 40 28	4 29 23 31	4 13 43 47	5 04 06 14	3 15 58 24	3 00 56 12	0 10 04 12	+2 34	- 2 24	7 42	19 36	16
17	5 00 31 17	6 00 09 54	5 00 02 04	4 15 20 18	5 04 19 11	3 17 04 56	3 01 01 24	0 10 01 01	+2 11	- 8 38	8 45	20 07	17
18	5 01 29 51	6 13 50 10	5 00 40 38	4 17 00 04	5 04 32 09	3 18 11 41	3 01 06 32	0 09 57 50	+1 47	-14 32	9 50	20 42	18
19	502 28 27	6 27 39 48	5 01 19 13	4 18 42 32	5 04 45 07	3 19 18 37	3 01 11 35	0 09 54 39	+1 24	-19 48	10 57	21 21	19
20	5 03 27 05	7 11 37 29	5 01 57 49	4 20 27 13	5 04 58 05	3 20 25 45	3 01 16 33	0 09 51 28	+1 01	-24 01	12 06	22 09	20
21	5 04 25 45	7 25 42 08	5 02 36 27	4 22 13 41	5 05 11 04	3 21 33 04	3 01 21 27	0 09 48 18	+0 38	-26 50	13 15	23 06	21
22	5 05 24 25	8 09 52 18	5 03 15 05	4 24 01 31	5 05 24 02	3 22 40 34	3 01 26 15	0 09 45 07	+0 14	-27 57	14 19	-- --	22
23	5 06 23 08	8 24 06 18	5 03 53 45	4 25 50 21	5 05 37 00	3 23 48 15	3 01 30 59	0 09 41 56	- 0 09	-27 13	15 17	0 09	23
24	5 07 21 52	9 08 21 34	5 04 32 25	4 27 39 52	5 05 49 58	3 24 56 08	3 01 35 38	0 09 38 46	- 0 32	-24 43	16 06	1 18	24
25	5 08 20 38	9 22 34 59	5 05 11 07	4 29 29 48	5 06 02 56	3 26 04 10	3 01 40 12	0 09 35 35	- 0 56	-20 42	16 47	2 27	25
26	5 09 19 26	10 06 42 39	5 05 49 50	5 01 19 53	5 06 15 54	3 27 12 22	3 01 44 41	0 09 32 24	- 1 19	-15 33	17 23	3 36	26
27	5 10 18 16	10 20 40 28	5 06 28 34	5 03 09 58	5 06 28 52	3 28 20 46	3 01 49 05	0 09 29 13	- 1 43	- 9 38	17 55	4 43	27
28	5 11 17 07	11 04 24 35	5 07 07 19	5 04 59 51	5 06 41 49	3 29 29 19	3 01 53 23	0 09 26 03	- 2 06	- 3 20	18 25	5 46	28
29	5 12 16 00	11 17 52 03	5 07 46 05	5 06 49 23	5 06 54 46	4 00 38 03	3 01 57 37	0 09 22 52	- 2 29	+2 58	18 53	6 47	29
30	5 13 14 56	0 01 01 02	5 08 24 53	5 08 38 27	5 07 07 43	4 01 46 56	3 02 01 45	0 09 19 41	- 2 53	+9 02	19 23	7 48	30
अक्तू	5 14 13 53	0 13 51 05	5 09 03 42	5 10 27 01	5 07 20 39	4 02 55 59	3 02 05 48	0 09 16 31	- 3 16	+14 35	19 54	8 49	अक्तू
2	5 15 12 53	0 26 23 15	5 09 42 33	5 12 14 57	5 07 33 34	4 04 05 11	3 02 09 45	0 09 13 20	- 3 39	+19 24	20 28	9 48	2
3	5 16 11 55	1 08 39 45	5 10 21 25	5 14 02 14	5 07 46 29	4 05 14 33	3 02 13 38	0 09 10 09	- 4 02	+23 17	21 07	10 48	3
4	5 17 11 00	1 20 43 53	5 11 00 18	5 15 48 48	5 07 59 23	4 06 24 04	3 02 17 24	0 09 06 58	- 4 25	+26 05	21 51	11 46	4
5	5 18 10 06	2 02 39 44	5 11 39 13	5 17 34 39	5 08 12 16	4 07 33 45	3 02 21 05	0 09 03 48	- 4 49	+27 40	22 40	12 41	5
6	5 19 09 15	2 14 31 49	5 12 18 09	5 19 19 44	5 08 25 08	4 08 43 33	3 02 24 41	0 09 00 37	- 5 12	+27 58	23 23	13 32	6
7	5 20 08 26	2 26 24 54	5 12 57 06	5 21 04 03	5 08 37 59	4 09 53 31	3 02 28 09	0 08 57 26	- 5 35	+26 59	-- --	14 18	7
8	5 21 07 40	3 08 23 46	5 13 36 05	5 22 47 35	5 08 50 50	4 11 03 37	3 02 31 34	0 08 54 15	- 5 57	+24 46	0 30	14 59	8
9	5 22 06 55	3 20 32 54	5 14 15 06	5 24 30 22	5 09 03 39	4 12 13 51	3 02 34 52	0 08 51 05	- 6 20	+21 24	1 28	15 35	9
10	5 23 06 13	4 02 56 12	5 14 54 08	5 26 12 22	5 09 16 27	4 13 24 13	3 02 38 04	0 08 47 54	- 6 43	+17 03	2 28	16 08	10
11	5 24 05 33	4 15 36 42	5 15 33 11	5 27 53 38	5 09 29 14	4 14 34 43	3 02 41 10	0 08 44 43	- 7 06	+11 53	3 27	16 38	11

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट (12 अक्टू. से 18 नवं. तक) 1 नवं. 2004 ई. को अयनांश 23°/55′/18″

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रां.	चं. क्रां.	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	अक्टूबर
अक्टू	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
12	5 25 04 56	4 28 36 22	5 16 12 16	5 29 34 08	5 09 41 59	4 15 45 20	3 02 44 11	0 08 41 32	-7 28	+6 04	4 27	17 06	12
13	5 26 04 20	5 11 55 47	5 16 51 23	6 01 13 55	5 09 54 43	4 16 56 05	3 02 47 05	0 08 38 22	-7 51	-0 10	5 28	17 36	13
14	5 27 03 47	5 25 33 59	5 17 30 31	6 02 52 58	5 10 07 25	4 18 06 57	3 02 49 53	0 08 35 11	-8 13	-6 33	6 31	18 06	14
15	5 28 03 16	6 09 28 46	5 18 09 40	6 04 31 19	5 10 20 06	4 19 17 57	3 02 52 35	0 08 32 00	-8 35	-12 45	7 36	18 40	15
16	5 29 02 47	6 23 36 30	5 18 48 50	6 06 08 59	5 10 32 45	4 20 29 03	3 02 55 12	0 08 28 50	-8 57	-18 25	8 45	19 18	16
17	6 00 02 19	7 07 53 28	5 19 28 02	6 07 45 59	5 10 45 22	4 21 40 15	3 02 57 41	0 08 25 39	-9 19	-23 05	9 56	20 05	17
18	6 01 01 54	7 22 14 49	5 20 07 16	6 09 22 20	5 10 57 57	4 22 51 35	3 03 00 05	0 08 22 28	-9 41	-26 23	11 06	21 00	18
19	6 02 01 30	8 06 36 34	5 20 46 31	6 10 58 02	5 11 10 30	4 24 03 00	3 03 02 23	0 08 19 18	-10 03	-27 56	12 13	22 02	19
20	6 03 01 08	8 20 54 59	5 21 25 47	6 12 33 07	5 11 23 01	4 25 14 32	3 03 04 34	0 08 16 07	-10 25	-27 38	13 13	23 09	20
21	6 04 00 48	9 05 07 16	5 22 05 04	6 14 07 35	5 11 35 30	4 26 26 11	3 03 06 37	0 08 12 56	-10 46	-25 31	14 05	-- --	21
22	6 05 00 29	9 19 11 05	5 22 44 23	6 15 41 29	5 11 47 57	4 27 37 55	3 03 08 35	0 08 09 45	-11 07	-21 51	14 47	0 18	22
23	6 06 00 12	10 03 04 49	5 23 23 43	6 17 14 47	5 12 00 22	4 28 49 45	3 03 10 28	0 08 06 35	-11 28	-17 01	15 25	1 27	23
24	6 06 59 57	10 16 47 16	5 24 03 05	6 18 47 32	5 12 12 43	5 00 01 40	3 03 12 13	0 08 03 24	-11 49	-11 23	15 56	2 32	24
25	6 07 59 43	11 00 17 26	5 24 42 28	6 20 19 43	5 12 25 03	5 01 13 42	3 03 13 50	0 08 00 13	-12 10	-5 17	16 25	3 35	25
26	6 08 59 32	11 13 34 33	5 25 21 52	6 21 51 22	5 12 37 20	5 02 25 49	3 03 16 48	0 07 57 03	-12 31	+0 56	16 54	4 36	26
27	6 09 59 22	11 26 38 06	5 26 01 18	6 23 22 28	5 12 49 34	5 03 38 02	3 03 18 07	0 07 53 52	-12 51	+7 02	17 23	5 36	27
28	6 10 59 14	0 09 27 52	5 26 40 46	6 24 53 03	5 13 01 46	5 04 50 20	3 03 19 20	0 07 50 41	-13 11	+12 45	17 53	6 35	28
29	6 11 59 08	0 22 03 57	5 27 20 15	6 26 23 05	5 13 13 55	5 06 02 45	3 03 20 25	0 07 47 31	-13 31	+17 50	18 26	7 35	29
30	6 12 59 03	1 04 27 05	5 27 59 45	6 27 52 36	5 13 26 01	5 07 15 14	3 03 21 25	0 07 44 20	-13 51	+22 05	19 02	8 35	30
31	6 13 59 01	1 16 38 37	5 28 39 18	6 29 21 35	5 13 38 04	5 08 27 49	3 03 22 17	0 07 41 09	-14 10	+25 17	19 45	9 34	31
नवं	6 14 59 01	1 28 40 35	5 29 18 52	7 00 50 02	5 13 50 04	5 09 40 29	3 03 22 18	0 07 37 59	-14 30	+27 18	20 30	10 32	नवं
2	6 15 59 03	2 10 35 43	5 29 58 27	7 02 17 56	5 14 02 01	5 10 53 14	3 03 23 03	0 07 34 48	-14 49	+28 02	21 24	11 25	2
3	6 16 59 07	2 22 27 25	6 00 38 05	7 03 45 15	5 14 13 55	5 12 06 05	3 03 23 42	0 07 31 37	-15 08	+27 29	22 19	12 10	3
4	6 17 59 13	3 04 19 39	6 01 17 44	7 05 11 59	5 14 25 45	5 13 19 00	3 03 24 15	0 07 28 27	-15 26	+25 40	23 16	12 54	4
5	6 18 59 21	3 16 16 48	6 01 57 25	7 06 38 06	5 14 37 33	5 14 31 59	3 03 24 40	0 07 25 16	-15 44	+22 43	-- --	13 32	5
6	6 19 59 31	3 28 23 32	6 02 37 07	7 08 03 34	5 14 49 16	5 15 45 04	3 03 24 59	0 07 22 05	-16 03	+18 45	0 14	14 06	6
7	6 20 59 43	4 10 44 26	6 03 16 51	7 09 28 21	5 15 00 56	5 16 58 13	3 03 25 11	0 07 18 54	-16 20	+13 56	1 12	14 37	7
8	6 21 59 58	4 23 23 46	6 03 56 37	7 10 52 23	5 15 12 33	5 18 11 26	3 03 25 17	0 07 15 44	-16 38	+8 26	2 11	15 05	8
9	6 23 00 14	5 06 25 07	6 04 36 25	7 12 15 37	5 15 24 06	5 19 24 44	3 03 25 15	0 07 12 33	-16 55	+2 25	3 11	15 33	9
10	6 24 00 32	5 19 50 39	6 05 16 14	7 13 37 59	5 15 35 34	5 20 38 05	3 03 25 07	0 07 09 22	-17 12	-3 54	4 11	16 03	10
11	6 25 00 53	6 03 40 54	6 05 56 05	7 14 59 23	5 15 46 59	5 21 51 31	3 03 24 52	0 07 06 12	-17 29	-10 14	5 16	16 35	11
12	6 26 01 15	6 17 54 12	6 06 35 57	7 16 19 44	5 15 58 20	5 23 05 00	3 03 24 30	0 07 03 01	-17 45	-16 13	6 24	17 12	12
13	6 27 01 38	7 02 26 31	6 07 15 52	7 17 38 53	5 16 09 37	5 24 18 33	3 03 24 01	0 06 59 50	-18 01	-21 26	7 35	17 56	13
14	6 28 02 04	7 17 11 34	6 07 55 47	7 18 56 45	5 16 20 49	5 25 32 10	3 03 23 26	0 06 56 39	-18 17	-25 23	8 49	18 49	14
15	6 29 02 31	8 02 01 56	6 08 35 45	7 20 13 09	5 16 31 57	5 26 45 50	3 03 22 43	0 06 53 29	-18 32	-27 37	10 00	19 50	15
16	7 00 02 59	8 16 49 43	6 09 15 44	7 21 27 55	5 16 43 00	5 27 59 33	3 03 21 54	0 06 50 18	-18 47	-27 52	17 05	20 58	16
17	7 01 03 28	9 01 27 54	6 09 55 44	7 22 40 49	5 16 53 59	5 29 13 19	3 03 20 59	0 06 47 07	-19 02	-26 11	12 01	22 09	17
18	7 02 03 59	9 15 51 10	6 10 35 46	7 23 51 38	5 17 04 53	6 00 27 09	3 03 19 57	0 06 43 56	-19 17	-22 48	12 48	23 18	18

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट (19 नवं. से 26 दिसं. तक)   1 दिसं. 2004 ई. को अयनांश 23°/55'/24''

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रां.	चं. क्रां.	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	नवम्बर
नवं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
19	7 03 04 32	9 29 56 28	6 11 15 50	7 25 00 04	5 17 15 43	6 01 41 01	3 03 18 48	0 06 40 46	-19 31	-18 09	13 27	-- --	19
20	7 04 05 05	10 13 42 36	6 11 55 55	7 26 05 49	5 17 26 27	6 02 54 56	3 03 17 32	0 06 37 35	-19 44	-12 39	13 59	0 25	20
21	7 05 05 40	10 27 10 02	6 12 36 01	7 27 08 30	5 17 37 06	6 04 08 54	3 03 16 10	0 06 34 24	-19 58	-6 41	14 29	1 29	21
22	7 06 06 15	11 10 20 10	6 13 16 09	7 28 07 44	5 17 47 41	6 05 22 55	3 03 14 41	0 06 31 14	-20 11	-0 33	14 57	2 29	22
23	7 07 06 52	11 23 14 58	6 13 56 19	7 29 03 02	5 17 58 10	6 06 36 59	3 03 13 06	0 06 28 03	-20 23	+5 30	15 25	3 28	23
24	7 08 07 31	0 05 56 23	6 14 36 31	7 29 53 52	5 18 08 34	6 07 51 05	3 03 11 25	0 06 24 52	-20 36	+11 14	15 55	4 27	24
25	7 09 08 10	0 18 26 15	6 15 16 44	8 00 39 38	5 18 18 53	6 09 05 15	3 03 09 37	0 06 21 41	-20 48	+16 26	16 26	5 26	25
26	7 10 08 50	1 00 46 08	6 15 56 59	8 01 19 43	5 18 29 06	6 10 19 26	3 03 07 43	0 06 18 31	-20 59	+20 54	17 00	6 25	26
27	7 11 09 32	1 12 57 22	6 16 37 16	8 01 53 21	5 18 39 14	6 11 33 41	3 03 05 42	0 06 15 20	-21 10	+24 24	17 40	7 25	27
28	7 12 10 16	1 25 01 13	6 17 17 34	8 02 19 49	5 18 49 16	6 12 47 58	3 03 03 36	0 06 12 09	-21 21	+26 46	18 26	8 22	28
29	7 13 11 00	2 06 59 01	6 17 57 54	8 02 38 19	5 18 59 12	6 14 02 17	3 03 01 23	0 06 08 58	-21 31	+27 53	19 16	9 17	29
30	7 14 11 46	2 18 52 29	6 18 38 16	8 02 47 58	5 19 09 03	6 15 16 39	3 02 59 04	0 06 05 47	-21 41	+27 42	20 10	10 07	30
दिसं	7 15 12 33	3 00 43 43	6 19 18 40	8 02 48 04	5 19 18 47	6 16 31 03	3 02 56 39	0 06 02 36	-21 51	+26 14	21 06	10 52	दिसं
2	7 16 13 22	3 12 35 31	6 19 59 06	8 02 37 51	5 19 28 26	6 17 45 30	3 02 54 09	0 05 59 26	-22 00	+23 37	22 03	11 30	2
3	7 17 14 12	3 24 31 14	6 20 39 33	8 02 16 47	5 19 37 59	6 18 59 59	3 02 51 32	0 05 56 15	-22 08	+19 59	23 01	12 05	3
4	7 18 15 04	4 06 34 52	6 21 20 02	8 01 44 32	5 19 47 25	6 20 14 30	3 02 48 48	0 05 53 04	-22 16	+15 31	23 59	12 35	4
5	7 19 15 56	4 18 50 56	6 22 00 34	8 01 01 09	5 19 56 45	6 21 29 03	3 02 46 01	0 05 49 53	-22 24	+10 21	-- --	13 04	5
6	7 20 16 50	5 01 24 06	6 22 41 07	8 00 07 03	5 20 05 58	6 22 43 38	3 02 43 06	0 05 46 42	-22 32	+4 39	0 55	13 31	6
7	7 21 17 46	5 14 18 59	6 23 21 41	7 29 03 16	5 20 15 05	6 23 58 15	3 02 40 07	0 05 43 31	-22 38	-1 24	1 54	14 00	7
8	7 22 18 43	5 27 39 32	6 24 02 18	7 27 51 09	5 20 24 05	6 25 12 54	3 02 37 01	0 05 40 20	-22 45	-7 36	2 55	14 30	8
9	7 23 19 41	6 11 28 12	6 24 42 56	7 26 32 51	5 20 32 58	6 26 27 35	3 02 33 50	0 05 37 09	-22 51	-13 40	3 59	15 03	9
10	7 24 20 39	6 25 45 14	6 25 23 37	7 25 10 50	5 20 41 45	6 27 42 18	3 02 30 34	0 05 33 58	-22 57	-19 13	5 08	15 43	10
11	7 25 21 39	7 10 27 58	6 26 04 19	7 23 47 49	5 20 50 24	6 28 57 02	3 02 27 12	0 05 30 47	-23 02	-23 47	6 22	16 32	11
12	7 26 22 40	7 25 30 14	6 26 45 02	7 22 26 39	5 20 58 56	7 00 11 47	3 02 23 46	0 05 27 36	-23 06	-26 50	7 36	17 29	12
13	7 27 23 43	8 10 42 57	6 27 25 48	7 21 09 59	5 21 07 21	7 01 26 34	3 02 20 14	0 05 24 25	-23 10	-27 56	8 47	18 38	13
14	7 28 24 45	8 25 55 28	6 28 06 35	7 20 00 08	5 21 15 38	7 02 41 22	3 02 16 38	0 05 21 15	-23 14	-26 56	9 49	19 51	14
15	7 29 25 48	9 10 57 18	6 28 47 23	7 18 58 59	5 21 23 48	7 03 56 12	3 02 12 57	0 05 18 04	-23 17	-23 59	10 42	21 04	15
16	8 00 26 51	9 25 39 58	6 29 28 14	7 18 07 50	5 21 31 51	7 05 11 02	3 02 09 11	0 05 14 53	-23 20	-19 31	11 24	22 14	16
17	8 01 27 56	10 09 58 00	7 00 09 06	7 17 27 28	5 21 39 45	7 06 25 53	3 02 05 21	0 05 11 42	-23 23	-14 04	12 00	23 21	17
18	8 02 29 00	10 23 49 32	7 00 49 59	7 16 58 08	5 21 47 32	7 07 40 46	3 02 01 26	0 05 08 31	-23 25	-8 02	12 32	-- --	18
19	8 03 30 05	11 07 15 10	7 01 30 54	7 16 39 46	5 21 55 10	7 08 55 39	3 01 57 27	0 05 05 20	-23 26	-1 50	13 01	0 24	19
20	8 04 31 10	11 20 17 36	7 02 11 51	7 16 32 01	5 22 02 41	7 10 10 34	3 01 53 24	0 05 02 09	-23 27	+4 17	13 29	1 23	20
21	8 05 32 15	0 03 00 28	7 02 52 50	7 16 34 13	5 22 10 04	7 11 25 29	3 01 49 17	0 04 58 58	-23 27	+10 05	13 57	2 22	21
22	8 06 33 20	0 15 27 45	7 03 33 50	7 16 45 41	5 22 17 18	7 12 40 25	3 01 45 07	0 04 55 48	-23 27	+15 22	14 27	3 20	22
23	8 07 34 27	0 27 43 07	7 04 14 52	7 17 05 36	5 22 24 24	7 13 55 22	3 01 40 52	0 04 52 37	-23 26	+19 57	15 01	4 18	23
24	8 08 35 32	1 09 49 48	7 04 55 55	7 17 33 14	5 22 31 21	7 15 10 20	3 01 36 34	0 04 49 26	-23 26	+23 38	15 39	5 18	24
25	8 09 36 39	1 21 50 20	7 05 37 01	7 18 07 45	5 22 38 11	7 16 25 18	3 01 32 13	0 04 46 15	-23 24	+26 16	16 22	6 15	25
26	8 10 37 44	2 03 46 44	7 06 18 08	7 18 48 26	5 22 44 51	7 17 40 18	3 01 27 48	0 04 43 05	-23 23	+27 41	17 11	7 11	26

दै. निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट [27 दिसं., 04 से 2 फर., 05 तक] 1 जन., 2005 ई. को अयनांश 23°/55′/30″ 1 फर. (05) को अयनांश 23°/55′/35″

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रां.	चं. क्रां.	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	दिसम्बर
दिसं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
27	8 11 38 52	2 15 40 32	7 06 59 17	7 19 34 38	5 22 51 23	7 18 55 18	3 01 23 20	0 04 39 54	-23 19	+27 48	18 04	8 03	27
28	8 12 39 59	2 27 32 58	7 07 40 28	7 20 25 42	5 22 57 46	7 20 10 19	3 01 18 50	0 04 36 43	-23 16	+26 38	19 00	8 49	28
29	8 13 41 06	3 09 25 30	7 08 21 40	7 21 21 07	5 23 04 00	7 21 25 21	3 01 14 16	0 04 33 32	-23 14	+24 17	19 57	9 30	29
30	8 14 42 14	3 21 19 39	7 09 02 55	7 22 20 21	5 23 10 05	7 22 40 24	3 01 09 40	0 04 30 21	-23 10	+20 53	20 54	10 05	30
31	8 15 43 21	4 03 17 38	7 09 44 11	7 23 22 58	5 23 16 01	7 23 55 27	3 01 05 01	0 04 27 10	-23 06	+16 36	21 50	10 37	31
जन	8 16 44 30	4 15 22 11	7 10 25 29	7 24 28 36	5 23 21 47	7 25 10 32	3 01 00 20	0 04 23 59	-23 01	+11 39	22 47	11 05	जन
2	8 17 45 39	4 27 36 55	7 11 06 49	7 25 36 53	5 23 27 25	7 26 25 37	3 00 55 36	0 04 20 48	-22 56	+6 10	23 44	11 32	2
3	8 18 46 47	5 10 05 54	7 11 48 11	7 26 47 32	5 23 32 52	7 27 40 42	3 00 50 51	0 04 17 37	-22 50	+0 21	-- --	11 59	3
4	8 19 47 57	5 22 53 43	7 12 29 35	7 28 00 17	5 23 38 11	7 28 55 49	3 00 46 03	0 04 14 26	-22 44	-5 38	0 41	12 28	4
5	8 20 49 07	6 06 04 46	7 13 11 01	7 29 14 56	5 23 43 20	8 00 01 56	3 00 41 14	0 04 11 16	-22 38	-11 34	1 42	12 58	5
6	8 21 50 16	6 19 42 48	7 13 52 29	8 00 31 15	5 23 48 18	8 01 26 03	3 00 36 23	0 04 08 05	-22 31	-17 10	2 47	13 33	6
7	8 22 51 26	7 03 49 58	7 14 33 58	8 01 49 05	5 23 53 07	8 02 41 11	3 00 31 31	0 04 04 54	-22 23	-22 02	3 55	14 18	7
8	8 23 52 36	7 18 25 40	7 15 15 29	8 03 08 17	5 23 57 46	8 03 56 20	3 00 26 38	0 04 01 43	-22 15	-25 43	5 08	15 08	8
9	8 24 53 46	8 03 25 48	7 15 57 02	8 04 28 44	5 24 02 15	8 05 11 29	3 00 21 43	0 03 58 32	-22 07	-27 42	6 20	16 10	9
10	8 25 54 56	8 18 42 30	7 16 38 37	8 05 50 18	5 24 06 34	8 06 26 38	3 00 16 48	0 03 55 21	-21 59	-27 38	7 27	17 23	10
11	8 26 56 06	9 04 04 58	7 17 20 13	8 07 12 53	5 24 10 42	8 07 41 47	3 00 11 52	0 03 52 11	-21 49	-25 28	8 26	18 38	11
12	8 27 57 15	9 19 20 58	7 18 01 51	8 08 36 26	5 24 14 40	8 08 56 57	3 00 06 55	0 03 49 00	-21 40	-21 28	9 15	19 53	12
13	8 28 58 24	10 04 19 49	7 18 43 31	8 10 00 52	5 24 18 27	8 10 12 07	3 00 01 58	0 03 45 49	-21 30	-16 08	9 56	21 04	13
14	8 29 59 32	10 18 53 17	7 19 25 12	8 11 26 08	5 24 22 04	8 11 27 17	2 29 57 01	0 03 42 39	-21 20	-10 02	10 30	22 11	14
15	9 01 00 39	11 02 57 10	7 20 06 54	8 12 52 10	5 24 25 31	8 12 42 26	2 29 52 04	0 03 39 28	-21 09	-03 36	11 01	23 13	15
16	9 02 01 46	11 16 31 08	7 20 48 39	8 14 18 57	5 24 28 46	8 13 57 36	2 29 47 07	0 03 36 17	-20 58	+2 46	11 30	-- --	16
17	9 03 02 53	11 29 37 19	7 21 30 25	8 15 46 26	5 24 31 51	8 15 12 46	2 29 42 11	0 03 33 06	-20 46	+8 49	11 59	0 14	17
18	9 04 03 58	0 12 19 45	7 22 12 12	8 17 14 36	5 24 34 46	8 16 27 56	2 29 37 15	0 03 29 56	-20 34	+14 19	12 29	1 13	18
19	9 05 05 03	0 24 43 13	7 22 54 01	8 18 43 25	5 24 37 29	8 17 43 05	2 29 32 20	0 03 26 45	-20 22	+19 07	13 02	2 13	19
20	9 06 06 05	1 06 52 43	7 23 35 52	8 20 12 52	5 24 40 01	8 18 58 15	2 29 27 25	0 03 23 34	-20 09	+23 01	13 38	3 12	20
21	9 07 07 09	1 18 52 38	7 24 17 44	8 21 42 58	5 24 42 22	8 20 13 24	2 29 22 32	0 03 20 23	-19 56	+25 53	14 20	4 10	21
22	9 08 08 12	2 00 46 56	7 24 59 38	8 23 13 41	5 24 44 33	8 21 28 34	2 29 17 40	0 03 17 13	-19 42	+27 33	15 07	5 06	22
23	9 09 09 12	2 12 38 46	7 25 41 34	8 24 45 01	5 24 46 32	8 22 43 43	2 29 12 50	0 03 14 02	-19 28	+27 57	15 58	5 59	23
24	9 10 10 12	2 24 30 29	7 26 23 32	8 26 16 58	5 24 48 21	8 23 58 52	2 29 08 01	0 03 10 51	-19 14	+27 04	16 54	6 47	24
25	9 11 11 11	3 06 23 49	7 27 05 31	8 27 49 33	5 24 49 58	8 25 14 01	2 29 03 14	0 03 07 40	-18 59	+24 57	17 51	7 29	25
26	9 12 12 10	3 18 20 10	7 27 47 32	8 29 22 44	5 24 51 24	8 26 29 11	2 28 58 28	0 03 04 29	-18 45	+21 44	18 49	8 06	26
27	9 13 13 08	4 00 20 30	7 28 29 35	9 00 56 34	5 24 52 39	8 27 44 20	2 28 53 45	0 03 01 19	-18 29	+17 35	19 45	8 39	27
28	9 14 14 05	4 12 26 08	7 29 11 40	9 02 31 02	5 24 53 43	8 28 59 29	2 28 49 04	0 02 58 08	-18 14	+12 44	20 42	9 08	28
29	9 15 15 01	4 24 38 37	7 29 53 46	9 04 06 09	5 24 54 35	9 00 14 38	2 28 44 25	0 02 54 57	-17 58	+7 20	21 39	9 35	29
30	9 16 15 58	5 07 00 04	8 00 35 54	9 05 41 55	5 24 55 16	9 01 29 47	2 28 39 48	0 02 51 46	-17 41	+1 35	22 35	10 02	30
31	9 17 16 52	5 19 33 19	8 01 18 04	9 07 18 22	5 24 55 45	9 02 44 57	2 28 35 15	0 02 48 36	-17 25	-4 20	23 33	10 31	31
फर	9 18 17 46	6 02 21 44	8 02 00 16	9 08 55 30	5 24 56 04	9 04 00 06	2 28 30 44	0 02 45 25	-17 08	-10 12	-- --	10 58	फर
2	9 19 18 39	6 15 28 55	8 02 42 30	9 10 33 21	5 24 56 10	9 05 15 15	2 28 26 16	0 02 42 14	-16 51	-15 46	0 35	11 30	2

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट (3 फर. से 12 मार्च तक)   1 मार्च 2005 ई. को अयनांश 23°/55′/39″

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रां.	चं. क्रां.	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	फरवरी
फर.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
3	9 20 19 31	6 28 58 18	8 03 24 45	9 12 11 53	5 24 56 06	9 06 30 24	2 28 21 51	0 02 39 03	-16 33	-20 44	1 39	12 09	3
4	9 21 20 22	7 12 52 27	8 04 07 02	9 13 51 10	5 24 55 50	9 07 45 33	2 28 17 29	0 02 35 53	-16 15	-24 44	2 48	12 54	4
5	9 22 21 14	7 27 12 07	8 04 49 21	9 15 31 10	5 24 55 22	9 09 00 42	2 28 13 11	0 02 32 42	-15 58	-27 18	3 58	13 56	5
6	9 23 22 03	8 11 55 20	8 05 31 42	9 17 11 57	5 24 54 43	9 10 15 50	2 28 08 56	0 02 29 31	-15 39	-28 03	5 06	15 01	6
7	9 24 22 52	8 26 56 46	8 06 14 04	9 18 53 29	5 24 53 52	9 11 30 59	2 28 04 45	0 02 26 21	-15 21	-26 47	6 08	16 08	7
8	9 25 23 40	9 12 07 59	8 06 56 28	9 20 35 49	5 24 52 50	9 12 46 07	2 28 00 38	0 02 23 10	-15 02	-23 33	7 01	17 23	8
9	9 26 24 26	9 27 18 30	8 07 38 53	9 22 18 56	5 24 51 36	9 14 01 15	2 27 56 35	0 02 19 59	-14 43	-18 43	7 46	18 39	9
10	9 27 25 12	10 12 17 33	8 08 21 19	9 24 02 52	5 24 50 11	9 15 16 23	2 27 52 36	0 02 16 48	-14 23	-12 46	8 26	19 52	10
11	9 28 25 55	10 26 56 02	8 09 03 48	9 25 47 36	5 24 48 35	9 16 31 30	2 27 48 41	0 02 13 38	-14 04	-6 13	8 59	20 55	11
12	9 29 26 38	11 11 08 03	8 09 46 17	9 27 33 08	5 24 46 47	9 17 46 37	2 27 44 51	0 02 10 27	-13 44	+0 27	9 28	21 59	12
13	10 00 27 19	11 24 50 58	8 10 28 48	9 29 19 30	5 24 44 48	9 19 01 43	2 27 41 05	0 02 07 16	-13 24	+6 52	9 57	23 01	13
14	10 01 27 58	00 08 05 24	8 11 11 20	10 01 06 41	5 24 42 38	9 20 16 49	2 27 37 24	0 02 04 05	-13 04	+12 47	10 27	-- --	14
15	10 02 28 35	00 20 54 12	8 11 53 44	10 02 54 39	5 24 40 17	9 21 31 53	2 27 33 47	0 02 00 54	-12 43	+17 58	11 00	0 02	15
16	10 03 29 11	1 03 21 39	8 12 36 29	10 04 43 24	5 24 37 44	9 22 46 58	2 27 30 17	0 01 57 43	-12 22	+22 14	11 36	1 02	16
17	10 04 29 45	1 15 32 45	8 13 19 06	10 06 32 55	5 24 35 01	9 24 02 02	2 27 26 49	0 01 54 32	-12 01	+25 26	12 16	2 03	17
18	10 05 30 17	1 27 32 32	8 14 01 44	10 08 23 09	5 24 32 07	9 25 17 05	2 27 23 29	0 01 51 22	-11 40	+27 26	13 02	3 00	18
19	10 06 30 48	2 09 25 45	8 14 44 23	10 10 14 03	5 24 29 02	9 26 32 07	2 27 20 12	0 01 48 11	-11 19	+28 09	13 52	3 54	19
20	10 07 31 16	2 21 16 37	8 15 27 04	10 12 05 34	5 24 25 46	9 27 47 09	2 27 17 01	0 01 45 00	-10 58	+27 34	14 46	4 44	20
21	10 08 31 43	3 03 08 38	8 16 09 47	10 13 57 36	5 24 22 20	9 29 02 11	2 27 13 54	0 01 41 49	-10 36	+25 44	15 43	5 28	21
22	10 09 32 08	3 15 04 31	8 16 52 31	10 15 50 05	5 24 18 44	10 00 17 11	2 27 10 55	0 01 38 39	-10 14	+22 45	16 41	6 06	22
23	10 10 32 31	3 27 06 19	8 17 35 16	10 17 42 51	5 24 14 57	10 01 32 12	2 27 08 00	0 01 35 28	-9 52	+18 47	17 39	6 41	23
24	10 11 32 54	4 09 15 28	8 18 18 04	10 19 35 48	5 24 11 01	10 02 47 11	2 27 05 11	0 01 32 17	-9 30	+14 01	18 36	7 11	24
25	10 12 33 13	4 21 33 00	8 19 00 52	10 21 28 43	5 24 06 54	10 04 02 10	2 27 02 28	0 01 29 06	-9 08	+8 39	19 33	7 39	25
26	10 13 33 31	5 03 59 43	8 19 43 42	10 23 21 24	5 24 02 37	10 05 17 09	2 26 59 50	0 01 25 56	-8 46	+2 52	20 30	8 06	26
27	10 14 33 48	5 16 36 31	8 20 26 34	10 25 13 36	5 23 58 10	10 06 32 07	2 26 57 18	0 01 22 45	-8 23	-3 06	21 28	8 33	27
28	10 15 34 03	5 29 24 32	8 21 09 27	10 27 05 02	5 23 53 34	10 07 47 04	2 26 54 52	0 01 19 34	-8 01	-9 03	22 28	9 01	28
मार्च	10 16 34 16	6 12 25 21	8 21 52 22	10 28 55 23	5 23 48 48	10 09 02 01	2 26 52 32	0 01 16 23	-7 38	-14 44	23 31	9 31	मार्च
2	10 17 34 29	6 25 40 36	8 22 35 19	11 00 44 16	5 23 43 53	10 10 16 57	2 26 50 18	0 01 13 13	-7 15	-19 50	-- --	10 07	2
3	10 18 34 40	7 09 12 10	8 23 18 17	11 02 31 15	5 23 38 49	10 11 31 53	2 26 48 09	0 01 10 02	-6 52	-24 02	0 38	10 49	3
4	10 19 34 49	7 23 01 26	8 24 01 16	11 04 15 56	5 23 33 36	10 12 46 48	2 26 46 08	0 01 06 51	-6 29	-26 56	1 45	11 40	4
5	10 20 34 56	8 07 08 46	8 24 44 17	11 05 57 50	5 23 28 14	10 14 01 43	2 26 44 12	0 01 03 40	-6 06	-28 13	2 52	12 39	5
6	10 21 35 02	8 21 33 02	8 25 27 19	11 07 36 23	5 23 22 43	10 15 16 38	2 26 42 22	0 01 00 30	-5 43	-27 38	3 55	13 47	6
7	10 22 35 07	9 06 10 57	8 26 10 23	11 09 11 06	5 23 17 04	10 16 31 31	2 26 40 39	0 00 57 19	-5 19	-25 09	4 50	14 59	7
8	10 23 35 10	9 20 57 08	8 26 53 27	11 10 41 24	5 23 11 17	10 17 46 24	2 26 39 03	0 00 54 08	-4 56	-20 58	5 36	16 13	8
9	10 24 35 11	10 05 44 27	8 27 36 33	11 12 06 44	5 23 05 22	10 19 01 17	2 26 37 32	0 00 50 57	-4 33	-15 30	6 17	17 23	9
10	10 25 35 10	10 20 24 57	8 28 19 40	11 13 26 36	5 22 59 19	10 20 16 08	2 26 36 08	0 00 47 47	-4 09	-9 10	6 52	18 32	10
11	10 26 35 08	11 04 51 12	8 29 02 49	11 14 40 27	5 22 53 08	10 21 30 59	2 26 34 51	0 00 44 36	-3 46	-2 27	7 23	19 38	11
12	10 27 35 03	11 18 57 22	8 29 45 58	11 15 47 46	5 22 46 51	10 22 45 49	2 26 33 40	0 00 41 25	-3 22	+4 14	7 54	20 42	12

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट (13 मार्च से 15 अप्रै. तक) 1 अप्रैल, 2005 ई. को अयनांश 23°/55′/42″

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रां.	चं. क्रां.	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	ता.
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
13	10 28 34 57	0 02 39 48	9 00 29 08	11 16 48 09	5 22 40 26	10 24 00 38	2 26 32 36	0 00 38 14	-2 58	+10 34	8 24	21 46	13
14	10 29 34 48	0 15 57 24	9 01 12 19	11 17 41 10	5 22 33 55	10 25 15 26	2 26 31 39	0 00 35 04	-2 35	+16 13	8 56	22 48	14
15	11 00 34 37	0 28 51 10	9 01 55 32	11 18 26 29	5 22 27 17	10 26 30 14	2 26 30 48	0 00 31 53	-2 11	+20 59	9 31	23 50	15
16	11 01 34 24	1 11 23 54	9 02 38 45	11 19 03 47	5 22 20 32	10 27 45 00	2 26 30 04	0 00 28 42	-1 47	+24 39	10 10	-- --	16
17	11 02 34 09	1 23 39 30	9 03 21 59	11 19 32 55	5 22 13 43	10 28 59 45	2 26 29 26	0 00 25 31	-1 24	+27 06	10 55	0 50	17
18	11 03 33 52	2 05 42 30	9 04 05 14	11 19 53 44	5 22 06 47	11 00 14 29	2 26 28 55	0 00 22 21	-1 00	+28 15	11 44	1 46	18
19	1104 33 32	2 17 37 42	9 04 48 30	11 20 06 12	5 21 59 47	11 01 29 12	2 26 28 31	0 00 19 10	-0 36	+28 03	12 37	2 38	19
20	11 05 33 10	2 29 29 48	9 05 31 47	11 20 10 21	5 21 52 41	11 02 43 55	2 26 28 13	0 00 15 59	-0 12	+26 34	13 33	3 25	20
21	11 06 32 45	3 11 23 12	9 06 15 05	11 20 06 26	5 21 45 31	11 03 58 36	2 26 28 02	0 00 12 48	+0 11	+23 54	14 31	4 06	21
22	11 07 32 17	3 23 21 43	9 06 58 24	11 19 54 39	5 21 38 17	11 05 13 16	2 26 27 58	0 00 09 37	+0 35	+20 12	15 29	4 41	22
23	11 08 31 50	4 05 28 35	9 07 41 44	11 19 35 27	5 21 30 58	11 06 27 55	2 26 28 01	0 00 06 26	+0 59	+15 38	16 27	5 12	23
24	11 09 31 19	4 17 46 12	9 08 25 05	11 19 09 20	5 21 23 36	11 07 42 33	2 26 28 10	0 00 03 15	+1 22	+10 22	17 24	5 41	24
25	11 10 30 45	5 00 16 13	9 09 08 27	11 18 37 01	5 21 16 10	11 08 57 09	2 26 28 25	0 00 00 04	+1 46	+4 37	18 22	6 08	25
26	11 11 30 10	5 12 59 40	9 09 51 50	11 17 59 12	5 21 08 41	11 10 11 45	2 26 28 48	11 29 56 53	+2 09	-1 25	19 20	6 36	26
27	11 12 29 33	5 25 56 42	9 10 35 14	11 17 16 47	5 21 01 09	11 11 26 20	2 26 29 17	11 29 53 43	+2 33	-7 31	20 20	7 03.	27
28	11 13 28 54	6 09 07 12	9 11 18 40	11 16 30 42	5 20 53 34	11 12 40 55	2 26 29 52	11 29 50 33	+2 56	-13 25	21 24	7 33	28
29	11 14 28 12	6 22 30 38	9 12 02 06	11 15 41 59	5 20 45 58	11 13 55 28	2 26 30 35	11 29 47 22	+3 20	-18 47	22 31	8 08	29
30	11 15 27 29	7 06 06 19	9 12 45 33	11 14 51 41	5 20 38 19	11 15 10 00	2 26 31 23	11 29 44 12	+3 43	-23 17	23 38	8 47	30
31	11 16 26 45	7 19 53 23	9 13 29 00	11 14 00 49	5 20 30 39	11 16 24 31	2 26 32 19	11 29 41 01	+4 06	-26 32	-- --	9 36	31
अप्रै	11 17 25 59	8 03 50 51	9 14 12 29	11 13 10 26	5 20 22 57	11 17 39 02	2 26 33 21	11 29 37 50	+4 30	-28 12	0 46	10 32	अप्रै
2	11 18 25 11	8 17 57 27	9 14 55 59	11 12 21 29	5 20 15 14	11 18 53 32	2 26 34 29	11 29 34 39	+4 53	-28 04	1 49	11 38	2
3	11 19 24 21	9 02 11 24	9 15 39 29	11 11 34 49	5 20 07 31	11 20 08 00	2 26 35 44	11 29 31 28	+5 16	-26 06	2 45	12 46	3
4	11 20 23 29	9 16 30 13	9 16 23 00	11 10 51 15	5 19 59 47	11 21 22 28	2 26 37 06	11 29 28 17	+5 39	-22 28	3 33	13 57	4
5	11 21 22 36	10 00 50 43	9 17 06 32	11 10 11 25	5 19 52 03	11 22 36 55	2 26 38 34	11 29 25 07	+6 02	-17 29	4 14	15 06	5
6	11 22 21 41	10 15 09 05	9 17 50 04	11 09 35 52	5 19 44 20	11 23 51 22	2 26 40 08	11 29 21 56	+6 24	-11 33	4 49	16 14	6
7	11 23 20 43	10 29 20 56	9 18 33 36	11 09 05 02	5 19 36 37	11 25 05 47	2 26 41 49	11 29 18 45	+6 47	-5 04	5 21	17 20	7
8	11 24 19 44	11 13 22 03	9 19 17 09	11 08 39 14	5 19 28 55	11 26 20 11	2 26 43 36	11 29 15 34	+7 10	+1 36	5 51	18 23	8
9	11 25 18 43	11 27 08 33	9 20 00 42	11 08 18 40	5 19 21 15	11 27 34 34	2 26 45 30	11 29 12 24	+7 32	+8 04	6 21	19 27	9
10	11 26 17 40	0 10 37 42	9 20 44 15	11 08 03 28	5 19 13 36	11 28 48 56	2 26 47 30	11 29 09 13	+7 54	+14 03	6 53	20 30	10
11	11 27 16 35	0 23 47 53	9 21 27 49	11 07 53 40	5 19 05 59	0 00 03 17	2 26 49 37	11 29 06 02	+8 16	+19 16	7 26	21 33	11
12	11 28 15 28	1 06 38 56	9 22 11 22	11 07 49 18	5 18 58 25	0 01 17 37	2 26 51 50	11 29 02 51	+8 38	+23 27	8 06	22 35	12
13	11 29 14 19	1 19 11 58	9 22 54 56	11 07 50 13	5 18 50 53	0 02 31 56	2 26 54 10	11 28 59 40	+9 00	+26 25	8 47	23 34	13
14	0 00 13 07	2 01 29 26	9 23 38 30	11 07 56 21	5 18 43 25	0 03 46 13	2 26 56 34	11 28 56 30	+9 22	+28 03	9 34	-- --	14
15	0 01 11 54	2 13 34 40	9 24 22 03	11 08 07 33	5 18 35 59	0 05 00 30	2 26 59 05	11 28 53 19	+9 44	+28 19	10 27	0 30	15

यूरेनस, नैपचून एवं प्लूटों ग्रहों का निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे भा. स्टै. टा. वि. २०६१ (2004–05 ई.)

ता.	यूरेनस	नैपचून	प्लूटो
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
१९	१० १० १९ ५१	९ २० ३३	७ २८ १९
२२	१० १० २९ २५	९ २० ३८	७ २८ २०
२५	१० १० ३८ ४९	९ २० ४३	७ २८ २०
२८	१० १० ४८ ००	९ २० ४८	७ २८ २०
३१	१० १० ५६ ५८	९ २० ५३	७ २८ १९
अप्रै.	१० १० ५९ ५५	९ २० ५४	७ २८ १९
४	१० ११ ०८ ३४	९ २० ५८	७ २८ १८
७	१० ११ १६ ५८	९ २१ ०२	७ २८ १७
१०	१० ११ २५ ०७	९ २१ ०६	७ २८ १६
१३	१० ११ ३२ ५८	९ २१ ०९	७ २८ १४
१६	१० ११ ४० ३२	९ २१ १३	७ २८ १२
१९	१० ११ ४७ ४६	९ २१ १६	७ २८ १०
२२	१० ११ ५४ ४१	९ २१ १८	७ २८ ०७
२५	१० १२ ०१ १६	९ २१ २०	७ २८ ०४
२८	१० १२ ०७ २९	९ २१ २३	७ २८ ०१
मई	१० १२ १३ २१	९ २१ २४	७ २७ ५८
४	१० १२ १८ ५०	९ २१ २६	७ २७ ५५
७	१० १२ २३ ५७	९ २१ २७	७ २७ ५१
१०	१० १२ २८ ४०	९ २१ २८	७ २७ ४८
१३	१० १२ ३२ ५९	९ २१ २८	७ २७ ४४
१६	१० १२ ३६ ५४	९ २१ २९	७ २७ ४०
१९	१० १२ ४० २३	९ २१ २९	७ २७ ३५
२२	१० १२ ४३ २७	९ २१ २८	७ २७ ३१
२५	१० १२ ४६ ०५	९ २१ २८	७ २७ २७
२८	१० १२ ४८ १७	९ २१ २७	७ २७ २२
३१	१० १२ ५० ०३	९ २१ २६	७ २७ १७
जून	१० १२ ५० ३२	९ २१ २५	७ २७ १६
४	१० १२ ५१ ४४	९ २१ २४	७ २७ ११
७	१० १२ ५२ २९	९ २१ २२	७ २७ ०६
१०	१० १२ ५२ ४७	९ २१ २०	७ २७ ०२
१३	१० १२ ५२ ४०	९ २१ १८	७ २६ ५७
१६	१० १२ ५२ ०६	९ २१ १५	७ २६ ५२
१९	१० १२ ५१ ०७	९ २१ १२	७ २६ ४७
२२	१० १२ ४९ ४१	९ २१ ०९	७ २६ ४३

ता.	यूरेनस	नैपचून	प्लूटो
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
२५	१० १२ ४७ ५०	९ २१ ०६	७ २६ ३८
२८	१० १२ ४५ ३४	९ २१ ०३	७ २६ ३३
जुला.	१० १२ ४२ ५४	९ २० ५९	७ २६ २९
४	१० १२ ३९ ५१	९ २० ५५	७ २६ २५
७	१० १२ ३६ २६	९ २० ५१	७ २६ २०
१०	१० १२ ३२ ३८	९ २० ४७	७ २६ १६
१३	१० १२ २८ २७	९ २० ४३	७ २६ १२
१६	१० १२ २३ ५७	९ २० ३८	७ २६ ०८
१९	१० १२ १९ ०७	९ २० ३४	७ २६ ०५
२२	१० १२ १३ ५७	९ २० २९	७ २६ ०१
२५	१० १२ ०८ ३०	९ २० २४	७ २५ ५८
२८	१० १२ ०२ ४८	९ २० १९	७ २५ ५५
३१	१० ११ ५६ ५०	९ २० १५	७ २५ ५२
अग.	१० ११ ५४ ४८	९ २० १३	७ २५ ५१
४	१० ११ ४८ ३२	९ २० ०८	७ २५ ४९
७	१० ११ ४२ ०४	९ २० ०३	७ २५ ४६
१०	१० ११ ३५ २५	९ १९ ५८	७ २५ ४४
१३	१० ११ २८ ३७	९ १९ ५३	७ २५ ४२
१६	१० ११ २१ ४१	९ १९ ४८	७ २५ ४१
१९	१० ११ १४ ३८	९ १९ ४४	७ २५ ४०
२२	१० ११ ०७ ३१	९ १९ ३९	७ २५ ३९
२५	१० ११ ०० २२	९ १९ ३४	७ २५ ३८
२८	१० १० ५३ ११	९ १९ ३०	७ २५ ३७
३१	१० १० ४६ ००	९ १९ २५	७ २५ ३७
सितं.	१० १० ४३ ३६	९ १९ २४	७ २५ ३७
४	१० १० ३६ २८	९ १९ २०	७ २५ ३८
७	१० १० २९ २३	९ १९ १६	७ २५ ३८
१०	१० १० ४२ २४	९ १९ १२	७ २५ ३९
१३	१० १० १५ ३१	९ १९ ०८	७ २५ ४०
१६	१० १० ०८ ४७	९ १९ ०४	७ २५ ४२
१९	१० १० ०२ १४	९ १९ ०१	७ २५ ४३
२२	१० ०९ ५५ ५२	९ १८ ५८	७ २५ ४५
२५	१० ०९ ४९ ४४	९ १८ ५५	७ २५ ४८
२८	१० ०९ ४३ ५०	९ १८ ५३	७ २५ ५०
अक्तू.	१० ०९ ३८ ११	९ १८ ५०	७ २५ ५३

ता.	यूरेनस	नैपचून	प्लूटो
अक्तू	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
४	१० ०९ ३२ ५०	९ १८ ४८	७ २५ ५६
७	१० ०९ २७ ४७	९ १८ ४६	७ २५ ५९
१०	१० ०९ २३ ०३	९ १८ ४५	७ २६ ०३
१३	१० ०९ १८ ४१	९ १८ ४३	७ २६ ०७
१६	१० ०९ १४ ४०	९ १८ ४२	७ २६ ११
१९	१० ०९ ११ ०१	९ १८ ४२	७ २६ १६
२२	१० ०९ ०७ ४८	९ १८ ४१	७ २६ २०
२५	१० ०९ ०४ ५७	९ १८ ४१	७ २६ २५
२८	१० ०९ ०२ ३२	९ १८ ४१	७ २६ ३०
३१	१० ०९ ०० ३२	९ १८ ४२	७ २६ ३५
नवं.	१० ०८ ५९ ५९	९ १८ ४२	७ २६ ३७
४	१० ०८ ५८ ३४	९ १८ ४३	७ २६ ४३
७	१० ०८ ५७ ३६	९ १८ ४४	७ २६ ४८
१०	१० ०८ ५७ ०६	९ १८ ४६	७ २६ ५४
१३	१० ०८ ५७ ०२	९ १८ ४८	७ २७ ००
१६	१० ०८ ५७ २७	९ १८ ५०	७ २७ ०६
१९	१० ०८ ५८ २०	९ १८ ५२	७ २७ १२
२२	१० ०८ ५९ ३९	९ १८ ५५	७ २७ १९
२५	१० ०९ ०१ २७	९ १८ ५८	७ २७ २५
२८	१० ०९ ०३ ४२	९ १९ ०१	७ २७ ३२
दिसं.	१० ०९ ०६ २५	९ १९ ०५	७ २७ ३८
४	१० ०९ ०९ ३४	९ १९ ०७	७ २७ ४५
७	१० ०९ १३ १०	९ १९ १३	७ २७ ५२
१०	१० ०९ १७ ११	९ १९ १७	७ २७ ५९
१३	१० ०९ २१ ३९	९ १९ २१	७ २८ ०५
१६	१० ०९ २६ ३३	९ १९ २६	७ २८ १२
१९	१० ०९ ३१ ५१	९ १९ ३१	७ २८ १९
२२	१० ०९ ३७ ३२	९ १९ ३७	७ २८ २६
२५	१० ०९ ४३ ३७	९ १९ ४२	७ २८ ३२
२८	१० ०९ ५० ०३	९ १९ ४८	७ २८ ३९
३१	१० ०९ ५६ ५२	९ १९ ५३	७ २८ ४६
जन. २००५	१० ०९ ५९ १२	९ १९ ५५	७ २८ ४८
४	१० १० ०६ २८	९ २० ०१	७ २८ ५४

ता.	यूरेनस	नैपचून	प्लूटो
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
७	१० १० १४ ०४	९ २० ०७	७ २९ ०१
१०	१० १० २१ ५८	९ २० १४	७ २९ ०७
१३	१० १० ३० ०९	९ २० २०	७ २९ १३
१६	१० १० ३८ ३७	९ २० २७	७ २९ १९
१९	१० १० ४७ २०	९ २० ३३	७ २९ २५
२२	१० १० ५६ १८	९ २० ४०	७ २९ ३१
२५	१० ११ ०५ २८	९ २० ४७	७ २९ ३६
२८	१० ११ १४ ५०	९ २० ५३	७ २९ ४१
३१	१० ११ २४ २४	९ २१ ००	७ २९ ४७
फर.	१० ११ २७ ३८	९ २१ ०३	७ २९ ४८
४	१० ११ ५७ २५	९ २१ ०९	७ २९ ५३
७	१० ११ ४७ २०	९ २१ १६	७ २९ ५८
१०	१० ११ ५७ २३	९ २१ २३	८ ०० ०३
१३	१० १२ ०७ ३१	९ २१ ३०	८ ०० ०६
१६	१० १२ १७ ४५	९ २१ ३७	८ ०० १०
१९	१० १२ २८ ०२	९ २१ ४३	८ ०० १४
२२	१० १२ ३८ २१	९ २१ ५०	८ ०० १७
२५	१० १२ ४८ ४१	९ २१ ५६	८ ०० २०
२८	१० १२ ५९ ०२	९ २२ ०३	८ ०० २३
मार्च	१० १३ ०२ २८	९ २२ ०५	८ ०० २४
४	१० १३ १२ ४८	९ २२ ११	८ ०० २६
७	१० १३ २३ ०४	९ २२ १७	८ ०० २८
१०	१० १३ ३३ १७	९ २२ २३	८ ०० ३०
१३	१० १३ ४३ २५	९ २२ २९	८ ०० ३२
१६	१० १३ ५३ २८	९ २२ ३५	८ ०० ३३
१९	१० १४ ०३ २२	९ २२ ४०	८ ०० ३४
२२	१० १४ १३ ०९	९ २२ ४६	८ ०० ३५
२५	१० १४ २२ ४५	९ २२ ५१	८ ०० ३५
२८	१० १४ ३२ ११	९ २२ ५६	८ ०० ३५
३१	१० १४ ४१ २७	९ २३ ०१	८ ०० ३५
अप्रै.	१० १४ ४४ २९	९ २३ ०२	८ ०० ३५
४	१० १४ ५३ २८	९ २३ ०६	८ ०० ३४
७	१० १५ ०२ १३	९ २३ ११	८ ०० ३३

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् 2061 (सन् 2004–05 ई.)

आगे लिखे चन्द्र प्रवेश का समय घण्टों-मिंटों में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार दिया जा रहा है। रात्रि बारह (12) बजे के बाद के समय को आगामी तारीख के रूप में दर्शाया गया है, अर्थात् भारतीय रेलवे समय सारिणी के अनुसार रात्रि बारह बजे को (0) घण्टा से संकेत देकर, आगामी दिवस की तारीख का आरम्भ किया गया है। आगामी पृष्ठों पर दिया गया **चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का प्रारम्भ काल है, न कि समाप्ति काल ॥** इस सारिणी के प्रयोग से किसी जातक के जन्म समय (घण्टा-मिनटों में) के आधार पर शीघ्र ही जातक का जन्म नक्षत्र एवं उसका चरण आदि जान सकते हैं। प्राचीन परिपाटी के अनुसार घड़ी/पलों भयात-भभोग की प्रक्रिया से निकालने की आवश्यकता नहीं होगी। उदाहरण स्वरूप मान लीजिए, हमें 27 मार्च, 2004 ई० को मृगशिर नक्षत्र चरण एवं चन्द्र राशि (मिथुन) प्रवेश काल जानना है, तो 27/28 मार्च के सामने देखा तो रात्रि 23 बजकर (अर्थात् 11 बजकर) 33 मिनट से मृगशिर का तृतीय चरण एवं चंद्र का मिथुन राशि प्रवेश काल घं. मिं. होगा। इसी आधार पर दशा अन्तरदशा का भोग्य काल जान सकते हैं। अधिक जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से प्रकाशित **ज्योतिष तत्त्व** फलित (द्वितीय भाग) का अध्ययन करें। ध्यान रहे, जहाँ तारीख वाले कालम में दो तारीखें लिखी गई है, वहाँ उस नक्षत्र का प्रारम्भिक चरण पहली तारीख में और शेष चरण दूसरी तारीख में प्रारम्भ हुआ समझें॥ धन्यवाद।

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
मार्च 2004	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1/2	आर्द्रा	4 53	11 32	18 11	0 50
2/3	पुर्न	7 28	13 58	20 29	2 59
3/4	पुष्य	9 30	15 51	22 13	4 34
4/5	अश्लेषा	10 55	17 06	23 18	5 30
5/6	मघा	11 41	17 44	23 47	5 50
6/7	पूफा	11 53	17 48	23 43	5 38
7/8	उफा	11 33	17 22	23 11	5 00
8/9	हस्त	10 49	16 33	22 18	4 03
9/10	चित्रा	9 47	15 28	21 10	2 51
10/11	स्वाती	8 33	14 12	19 51	1 31
11/12	विशाखा	7 11	12 50	18·30	0 09
12	अनु	5 48	11 27	17 06	22 45
13	ज्येष्ठा	4 24	10 03	15 43	21 22
14	मूला	3 02	8 42	14 23	20 03
15	पूषा	1 43	7 25	13 07	18 49
16	उषा	0 30	6 14	11 58	17 42
16/17	श्रवण	23 36	5 13	11 00	16 47
17/18	धनिष्ठा	22 34	4 25	10 16	16 07
18/19	शत	21 58	3 54	9 51	15 48
19/20	पूभा	21 44	3 47	9 50	15 53
20/21	उभा	21 56	4 07	10 18	16 28
21/22	रेवती	22 39	4 58	11 17	17 37
22/23	अश्वि	23 56	6 24	12 52	19 20
24	भरणी	1 47	8 23	14 59	21 35
25/26	कृतिका	4 11	10 51	17 34	0 17
26/27	रोहिणी	6 59	13 45	20 31	3 17
27/28	मृग	10 01	16 47	23 33	6 18
28/29	आर्द्रा	13 04	19 46	2 28	9 11
29/30	पुर्न	15 53	22 29	5 05	11 43
30/31	पुष्य	18 15	0 42	7 09	13 35

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
अप्रै. 2004	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
मार्च31/1	अश्लेषा	20 01	2 17	8 33	14 48
1/2	मघा	21 04	3 09	9 14	15 19
2/3	पूफा	21 24	3 19	9 13	15 08
3/4	उफा	21 02	2 51	8 36	14 20
4/5	हस्त	20 05	1 44	7 22	13 00
5/6	चित्रा	18 39	0 13	5 48	11 21
6/7	स्वाती	16 52	22 22	3 53	9 23
7/8	विशाखा	14 53	20 22	1 51	7 20
8/9	अनु	12 49	18 18	23 48	5 18
9/10	ज्येष्ठा	10 47	16 19	21 50	3 22
10/11	मूला	8 54	14 29	20 04	1 39
11/12	पूषा	7 14	12 53	18 33	0 13
12/13	उषा	5 52	11 34	17 20	23 05
13/14	श्रवण	4 50	10 40	16 31	22 21
14/15	धनिष्ठा	4 11	10 06	16 01	21 59
15/16	शत	3 57	10 00	16 02	22 05
16/17	पूभा	4 08	10 17	16 26	22 34
17/18	उभा	4 46	11 02	17 19	23 36
18/19	रेवती	5 52	12 15	18 38	1 01
19/20	अश्वि.	7 24	13 54	20 24	2 54
20/21	भरणी	9 24	16 00	22 36	5 12
21/22	कृतिका	11 48	18 28	1 11	7 52
22/23	रोहिणी	14 33	21 18	4 02	10 47
23/24	मृग	17 32	0 18	7 05	13 51
24/25	आर्द्रा	20 37	3 22	10 07	16 51
25/26	पुर्न	23 36	6 16	12 57	19 39
27	पुष्य	2 17	8 50	15 23	21 57
28/29	अश्ले	4 30	10 53	17 17	23 41
29/30	मघा	6 04	12 17	18 30	0 42
30/1 मई	पूफा	6 55	12 56	18 58	0 59

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
मई 2004	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1/2	उफा	7 00	12 54	18 42	0 32
2	हस्त	6 20	12 00	17 39	23 19
3	चित्रा	4 59	10 33	16 06	21 37
4	स्वाती	3 06	8 32	13 57	19 22
5	विशाखा	0 48	6 10	11 31	16 53
5/6	अनु	22 14	3 34	8 54	14 14
6/7	ज्येष्ठा	19 34	0 55	6 16	11 37
7/8	मूला	16 58	22 22	3 46	9 10
8/9	पूषा	14 34	20 00	1 30	7 00
9/10	उषा	12 30	18 03	23 40	5 17
10/11	श्रवण	10 54	16 39	22 23	4 08
11/12	धनिष्ठा	9 52	15 42	21 34	3 29
12/13	शत	9 25	15 27	21 30	3 32
13/14	पूभा	9 35	15 46	21 56	4 07
14/15	उभा	10 22	16 42	23 02	5 22
15/16	रेवती	11 42	18 09	0 37	7 04
16/17	अश्वि	13 31	20 05	2 38	9 12
17/18	भरणी	15 46	22 25	5 03	11 42
18/19	कृतिका	18 21	1 03	7 46	14 29
19/20	रोहिणी	21 12	3 57	10 42	17 27
21	मृग	0 12	6 58	13 44	20 30
22	आर्द्रा	3 16	10 01	16 47	23 32
23/24	पुर्न	6 17	13 00	19 43	2 26
24/25	पुष्य	9 08	15 45	22 23	5 01
25/26	अश्ले	11 38	18 09	0 40	7 10
26/27	मघा	13 41	20 02	2 24	8 46
27/28	पूफा	15 07	21 18	3 30	9 41
28/29	उफा	15 52	21 55	3 54	9 54
29/30	हस्त	15 51	21 39	3 28	9 16
30/31	चित्रा	15 04	20 42	2 25	7 58
31 मई/जून	स्वा.	13 36	19 05	0 34	6 03

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
जून 2004 ई.	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1/2	विशाखा	11 32	16 54	22 18	3 40
2/3	अनु	8 59	14 16	19 34	0 51
3	ज्येष्ठा	6 08	11 23	16 38	21 53
4	मूला	3 08	8 23	13 39	18 54
5	पूषा	0 10	5 29	10 48	16 06
5/6	उषा	21 25	2 48	8 14	13 40
6/7	श्रवण	19 05	0 38	6 11	11 44
7/8	धनिष्ठा	17 17	22 58	4 38	10 25
8/9	शत	16 10	22 04	3 59	9 52
9/10	पूभा	15 48	21 50	3 57	10 01
10/11	उभा	16 12	22 29	4 47	11 04
11/12	रेवती	17 21	23 48	6 15	12 42
12/13	अश्वि	19 09	1 44	8 20	14 55
13/14	भरणी	21 30	4 11	10 52	17 33
15	कृतिका	0 13	6 56	13 42	20 26
16/17	रोहिणी	3 10	9 56	16 43	23 29
17/18	मृग	6 15	13 01	19 47	2 32
18/19	आर्द्रा	9 18	16 03	22 47	5 32
19/20	पुर्न	12 17	18 59	1 41	8 24
20/21	पुष्य	15 05	21 43	4 22	11 00
21/22	अश्लेषा	17 38	0 11	6 44	13 18
22/23	मघा	19 51	2 18	8 44	15 11
23/24	पूफा	21 38	3 57	10 15	16 33
24/25	उफा	22 52	5 05	11 14	17 24
25/26	हस्त	23 30	5 29	11 29	17 29
26/27	चित्रा	23 28	5 17	11 00	16 58
27/28	स्वा	22 43	4 22	10 01	15 39
28/29	विशाखा	21 18	2 48	8 20	13 50
29/30	अनु	19 18	0 40	6 02	11 25
जून 30/जुला.	ज्ये.	16 47	22 04	3 22	8 39

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
जुलाई 2004 ई.	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1/2	मूला	13 57	19 11	0 26	5 41
2/3	पूषा	10 55	16 10	21 25	2 40
3	उषा	7 55	13 12	18 32	23 50
4	श्रवण	5 08	10 32	15 57	21 21
5	धनिष्ठा	2 45	8 14	13 45	19 20
6	शत	0 56	6 39	12 23	18 06
6/7	पूभा	23 50	5 43	11 38	17 33
7/8	उभा	23 34	5 43	11 51	18 00
9	रेवती	0 08	6 29	12 50	19 11
10	अश्वि	1 32	8 03	14 35	21 06
11/12	भरणी	3 37	10 16	16 56	23 35
12/13	कृतिका	6 14	12 57	19 42	2 28
13/14	रोहिणी	9 12	15 58	22 45	5 31
14/15	मृग	12 17	19 03	1 50	8 36
15/16	आर्द्रा	15 22	22 06	4 50	11 33
16/17	पुर्न	18 17	0 57	7 38	14 19
17/18	पुष्य	20 58	3 34	10 10	16 46
18/19	अश्ले.	23 22	5 53	12 24	18 56
20	मघा	1 27	7 53	14 19	20 45
21	पूफा	3 11	9 31	15 51	22 11
22	उफा	4 31	10 47	17 00	23 13
23	हस्त	5 25	11 31	17 37	23 43
24	चित्रा	5 49	11 49	17 49	23 46
25	स्वाती	5 41	11 30	17 20	23 09
26	विशाखा	4 58	10 40	16 21	22 03
27	अनु	3 41	9 14	14 47	20 20
28	ज्येष्ठा	1 53	13 19	0 46	12 13
28/29	मूला	23 29	5 01	10 23	15 44
29/30	पूषा	21 06	2 25	7 45	13 04
30/31	उषा	18 23	23 42	5 02	10 21
31 जुला/अग.	श्रवण	15 41	21 03	2 26	7 48

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
अगस्त 2004 ई.	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1/2	धनि	13 10	18 35	00 03	5 33
2/3	शत	11 03	16 39	22 16	3 53
3/4	पूभा	9 29	15 13	21 00	2 46
4/5	उभा	8 38	14 37	20 36	2 35
5/6	रेवती	8 34	14 46	20 58	3 10
6/7	अश्वि.	9 22	15 46	22 10	4 34
7/8	भरणी	10 57	17 31	0 05	6 38
8/9	कृतिका	13 12	19 51	2 33	9 15
9/10	रोहिणी	15 57	22 42	5 28	12 13
10/11	मृग	18 58	1 44	8 30	15 16
11/12	आर्द्रा	22 02	4 45	11 29	18 13
13	पुर्न	0 56	7 35	14 15	20 56
14	पुष्य	3 34	10 08	16 42	23 15
15/16	अश्ले	5 49	12 17	18 45	1 12
16/17	मघा	7 40	14 02	20 24	2 45
17/18	पूफा	9 07	15 23	21 39	3 55
18/19	उफा	10 11	16 23	22 33	4 43
19/20	हस्त	10 53	16 58	23 03	5 07
20/21	चित्रा	11 12	17 11	23 13	5 12
21/22	स्वाती	11 10	17 03	22 57	4 51
22/23	विशाखा	10 44	16 32	22 21	4 09
23/24	अनु	9 55	15 37	21 19	3 01
24/25	ज्येष्ठा	8 43	14 19	19 56	1 33
25	मूला	7 09	12 41	18 14	23 46
26	पूषा	5 18	10 47	16 16	21 44
27	उषा	3 13	8 41	14 09	19 36
28	श्रव	1 03	12 32	0 01	11 29
28/29	धनि	22 57	4 26	9 57	15 30
29/30	शत	21 02	2 39	8 16	13 53
30/31	पूभा	19 30	1 12	6 56	12 40
31/1 सितं.	उभा	18 28	0 22	6 16	12 11

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
सितम्बर 2004 ई.	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1/2	रेवती	18 05	0 10	6 15	12 20
2/3	अश्विनी	18 25	0 42	6 58	13 15
3/4	भरणी	19 31	1 58	8 25	14 52
4/5	कृतिका	21 19	3 53	10 30	17 07
5/6	रोहिणी	23 44	6 26	13 08	19 50
7	मृग	2 32	9 17	16 02	22 47
8/9	आर्द्रा	5 32	12 16	19 00	1 44
9/10	पुर्न	8 28	15 08	21 49	4 30
10/11	पुष्य	11 09	17 43	0 17	6 51
11/12	अश्ले	13 25	19 52	2 18	8 45
12/13	मघा	15 12	21 31	3 50	10 08
13/14	पूफा	16 27	22 38	4 49	11 01
14/15	उफा	17 12	23 19	5 23	11 27
15/16	हस्त	17 30	23 29	5 27	11 26
16/17	चित्रा	17 24	23 17	5 12	11 04
17/18	स्वाती	16 57	22 46	4 36	10 25
18/19	विशाखा	16 14	22 00	3 45	9 32
19/20	अनु	15 17	21 00	2 42	8 25
20/21	ज्येष्ठा	14 07	19 47	1 28	7 08
21/22	मूला	12 48	18 26	0 05	5 43
22/23	पूषा	11 21	16 58	22 35	4 12
23/24	उषा	9 49	15 26	21 02	2 39
24/25	श्रवण	8 16	13 51	19 27	1 02
25	धनिष्ठा	6 47	12 26	18 05	23 45
26	शत	5 26	11 09	16 53	22 37
27	पूभा	4 20	10 08	15 57	21 45
28	उभा	3 37	9 33	15 29	21 25
29	रेवती	3 21	9 25	15 30	21 34
30	अश्विनी	3 38	9 51	16 05	22 19

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
अक्तूबर 2004 ई.	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	भरणी	4 32	10 55	17 17	23 40
2/3	कृतिका	6 03	12 31	19 04	1 37
3/4	रोहिणी	8 09	14 47	21 26	4 04
4/5	मृग	10 43	17 25	0 08	6 52
5/6	आर्द्रा	13 36	20 20	3 05	9 50
6/7	पुर्न	16 34	23 16	5 59	12 42
7/8	पुष्य	19 24	2 01	8 39	15 16
8/9	अश्लेषा	21 53	4 23	10 53	17 22
9/10	मघा	23 52	6 13	12 34	18 54
11	पूफा	1 14	7 25	13 36	19 47
12	उफा	1 58	8 02	14 04	20 04
13	हस्त	2 04	7 57	13 51	19 44
14	चित्रा	1 37	7 25	13 12	18 56
15	स्वाती	0 41	6 22	12 02	17 43
15/16	विशा	23 24	5 01	10 38	16 16
16/17	अनु	21 52	3 27	9 01	14 36
17/18	ज्येष्ठा	20 11	1 45	7 19	12 53
18/19	मूला	18 27	0 02	5 37	11 11
19/20	पूषा	16 46	22 22	3 59	9 36
20/21	उषा	15 12	20 50	2 30	8 09
21/22	श्रवण	13 48	19 30	1 13	6 56
22/23	धनिष्ठा	12 38	18 24	0 10	5 58
23/24	शत	11 45	17 36	23 28	5 20
24/25	पूभा	11 11	17 07	23 03	4 59
25/26	उभा	10 58	17 01	23 03	5 06
26/27	रेवती	11 09	17 18	23 27	5 37
27/28	अश्विनी	11 46	18 02	0 18	6 34
28/29	भरणी	12 50	19 13	1 36	7 59
29/30	कृतिका	14 22	20 50	3 22	9 53
30/31	रोहिणी	16 23	23 00	5 36	12 12
31/1 नवं.	मृग	18 49	1 29	8 10	14 53

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
नवम्बर 2004 ई.	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1/2	आर्द्रा	21 35	4 49	11 04	17 48
3	पुर्न	0 32	7 17	14 01	20 46
4	पुष्य	3 30	10 12	16 54	23 35
5	अश्लेषा	6 17	12 53	19 29	2 04
6/7	मघा	8 40	15 07	21 34	4 01
7/8	पूफा	10 28	16 45	23 02	5 19
8/9	उफा	11 36	17 45	23 49	5 54
9/10	हस्त	11 59	17 53	23 48	5 43
10/11	चित्रा	11 37	17 25	23 11	4 54
11/12	स्वाती	10 36	16 12	21 48	3 24
12/13	विशाखा	9 00	14 29	19 59	1 30
13	अनु	6 58	12 23	17 49	23 14
14	ज्येष्ठा	4 39	10 02	15 26	20 50
15	मूला	2 13	7 37	13 01	18 25
15/16	पूषा	23 49	5 16	10 42	16 09
16/17	उषा	21 36	3 05	8 38	14 10
17/18	श्रवण	19 41	1 18	6 56	12 34
18/19	धनिष्ठा	18 11	23 53	5 36	11 24
19/20	शत	17 10	23 02	4 55	10 47
20/21	पूभा	16 39	22 40	4 38	10 38
21/22	उभा	16 41	22 49	4 57	11 05
22/23	रेवती	17 13	23 28	5 43	11 58
23/24	अश्विनी	18 13	0 35	6 57	13 18
24/25	भरणी	19 40	1 52	8 05	14 17
25/26	कृतिका	21 29	4 00	10 33	17 07
26/27	रोहिणी	23 40	6 17	12 54	19 31
28	मृग	2 08	8 48	15 28	22 11
29/30	आर्द्रा	4 52	11 36	18 20	1 03
30/1 दिसं.	पुर्न	7 47	14 32	21 17	4 02

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
दिसम्बर 2004 ई.	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1/2	पुष्य	10 47	17 31	0 16	7 00
2/3	अश्लेषा	13 44	20 25	3 05	9 46
3/4	मघा	16 27	23 02	5 37	12 12
4/5	पूफा	18 47	1 13	7 39	14 06
5/6	उफा	20 32	2 51	9 06	15 20
6/7	हस्त	21 34	3 38	9 42	15 45
7/8	चित्रा	21 49	3 43	9 37	15 26
8/9	स्वाती	21 15	2 55	8 36	14 16
9/10	विशाखा	19 56	1 26	6 58	12 29
10/11	अनु	17 57	23 19	4 42	10 05
11/12	ज्येष्ठा	15 27	20 44	2 02	7 20
12/13	मूला	12 37	17 52	23 08	4 23
13/14	पूषा	9 38	14 54	20 09	1 25
14	उषा	6 41	11 59	17 20	22 39
15	श्रवण	3 58	9 23	14 49	20 15
16	धनिष्ठा	1 40	7 10	12 42	18 18
16/17	शत	23 54	5 37	11 21	17 05
17/18	पूभा	22 48	4 41	10 35	16 27
18/19	उभा	22 26	4 31	10 36	16 41
19/20	रेवती	22 46	5 01	11 17	17 32
20/21	अश्विनी	23 47	6 11	12 34	18 58
22	भरणी	1 22	7 53	14 24	20 55
23	कृतिका	3 26	10 00	16 38	23 15
24/25	रोहिणी	5 51	12 31	19 10	1 50
25/26	मृग	8 30	15 12	21 54	4 38
26/27	आर्द्रा	11 20	18 04	0 47	7 31
27/28	पुर्न	14 15	20 59	3 44	10 28
28/29	पुष्य	17 12	23 56	6 39	13 23
29/30	अश्लेषा	20 07	2 49	9 31	16 13
30/31	मघा	22 55	5 34	12 12	18 51

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
जनवरी 2005 ई.	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	पूफा	1 29	8 02	14 34	21 07
2	उफा	3 40	10 07	16 29	22 54
3/4	हस्त	5 19	11 34	17 49	0 04
4/5	चित्रा	6 19	12 27	18 31	0 34
5/6	स्वाती	6 33	12 25	18 16	0 08
6	विशाखा	6 00	11 41	17 22	23 04
7	अनु	4 40	10 10	15 40	21 10
8	ज्येष्ठा	2 39	8 00	13 22	18 43
9	मूला	0 04	5 20	10 35	15 51
9/10	पूषा	21 06	2 18	7 31	12 44
10/11	उषा	17 56	23 08	4 21	9 34
11/12	श्रवण	14 46	20 02	1 18	6 34
12/13	धनिष्ठा	11 50	17 10	22 30	3 54
13/14	शत	9 18	14 49	20 21	1 52
14/15	पूभा	7 23	13 04	18 44	0 24
15	उभा	6 10	12 04	17 58	23 52
16/17	रेवती	5 46	11 53	17 59	0 06
17/18	अश्विनी	6 13	12 31	18 50	1 08
18/19	भरणी	7 26	13 54	20 23	2 51
19/20	कृतिका	9 19	15 53	22 30	5 07
20/21	रोहिणी	11 44	18 25	1 06	7 47
21/22	मृग	14 28	21 12	3 56	10 40
22/23	आर्द्रा	17 24	0 29	6 54	13 38
23/24	पुर्न	20 23	3 07	9 52	16 36
24/25	पुष्य	23 20	6 02	12 45	19 27
26	अश्लेषा	2 09	8 49	15 30	22 10
27/28	मघा	4 50	11 27	18 04	0 40
28/29	पूफा	7 17	13 50	20 23	2 55
29/30	उफा	9 28	15 57	22 24	4 50
30/31	हस्त	11 17	17 37	23 58	6 18
31/1 फर.	चित्रा	12 38	18 52	1 07	7 18

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
फरवरी 2005 ई.	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1/2	स्वाती	13 27	19 29	1 32	7 35
2/3	विशाखा	13 37	19 29	1 24	7 18
3/4	अनु	13 07	18 49	0 32	6 14
4/5	ज्येष्ठा	11 56	17 29	23 01	4 34
5/6	मूला	10 7	15 32	20 57	2 22
6	पूषा	7 47	13 06	18 26	23 45
7	उषा	5 04	10 20	15 36	20 52
8	श्रवण	2 08	7 24	12 40	17 56
8/9	धनिष्ठा	23 12	4 30	9 47	15 07
9/10	शत	20 27	1 51	7 16	12 40
10/11	पूभा	18 04	23 34	5 05	10 37
11/12	उभा	16 14	21 57	3 39	9 22
12/13	रेवती	15 05	21 00	2 55	8 50
13/14	अश्विनी	14 45	20 52	3 00	9 08
14/15	भरणी	15 14	21 33	3 53	10 13
15/16	कृतिका	16 32	22 58	5 30	12 00
16/17	रोहिणी	18 32	1 10	7 47	14 25
17/18	मृग	21 03	3 46	10 29	17 11
18/19	आर्द्रा	23 55	6 40	13 25	20 10
20	पुर्न	2 55	9 39	16 24	23 09
21/22	पुष्य	5 53	12 35	19 18	2 00
22/23	अश्ले.	8 42	15 20	21 59	4 37
23/24	मघा	11 15	17 49	0 22	6 56
24/25	पूफा	13 30	19 59	2 28	8 56
25/26	उफा	15 25	21 50	4 13	10 37
26/27	हस्त	16 59	23 17	5 34	11 52
27/28	चित्रा	18 10	0 23	6 36	12 47
28/1 मार्च	स्वाती	18 57	1 02	7 07	13 12

चन्द्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4
मार्च–अप्रै. 2005 ई.	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1/2	विशाखा	19 17	1 15	7 14	13 13
2/3	अनु	19 09	1 00	6 50	12 41
3/4	ज्येष्ठा	18 32	0 15	5 59	11 42
4/5	मूला	17 25	23 02	4 38	10 15
5/6	पूषा	15 52	21 23	2 54	8 25
6/7	उषा	13 56	19 24	0 50	6 16
7/8	श्रवण	11 43	17 08	22 32	3 57
8/9	धनिष्ठा	9 22	14 47	20 10	1 37
9	शत	7 01	12 28	17 55	23 22
10	पूभा	4 49	10 21	15 32	21 23
11	उभा	2 57	8 36	14 16	19 55
12	रेवती	1 34	7 22	13 11	18 59
13	अश्वि.	0 47	6 46	12 45	18 44
14	भरणी	0 43	6 53	13 03	19 13
15	कृतिका	1 23	7 40	14 03	20 26
16	रोहिणी	2 48	9 19	15 50	22 21
17/18	मृग	4 52	11 30	18 06	0 46
18/19	आर्द्रा	7 26	14 09	20 52	3 35
19/20	पुर्न	10 18	17 02	23 47	6 31
20/21	पुष्य	13 16	19 59	2 41	9 24
21/22	अश्लेषा	16 07	22 46	5 24	12 03
22/23	मघा	18 42	1 15	7 47	14 20
23/24	पूफा	20 53	3 19	9 46	16 12
24/25	उफा	22 38	4 59	11 17	17 35
25/26	हस्त	23 54	6 06	12 18	18 30
27	चित्रा	0 42	6 48	12 56	18 58
28	स्वाती	1 04	7 03	13 03	19 02
29	विशाखा	1 02	6 56	12 52	18 46
30	अनु	0 38	6 27	12 17	18 06
30/31	ज्येष्ठा	23 55	5 40	11 25	17 10
31/1 अप्रै.	मूला	22 55	4 36	10 18	15 59
1/2	पूषा	21 40	3 13	8 57	14 35
2/3	उषा	20 13	1 49	7 25	13 01
3/4	श्रवण	18 37	0 12	5 46	11 21
4/5	धनिष्ठा	16 56	22 31	4 05	9 40
5/6	शत	15 15	20 51	2 28	8 05
6/7	पूभा	13 41	19 20	0 59	6 37
7/8	उभा	12 18	18 02	23 45	5 29

संवत् २०६१ के प्रारंभ में सिंहस्थ गुरु विचार

...तिष के **मुहूर्त्त ग्रन्थों** (मुहूर्त्त चिन्तामणि, मुहूर्त्त मार्त्तण्ड आदि) के अनुसार सिंह राशि के नवांश (पू.फा. के प्रथम चरण) को छोड़कर सिंह राशि के शेष अंशों में बृहस्पति के रहते विवाह करने का निषेध नहीं माना गया है। गोदावरी नदी के उत्तर किनारे से लेकर गंगा के दक्षिण, मध्य प्रान्त, राजस्थान के तटों तक के प्रदेशों में सिंह राशि के गुरु संचार (विशेषकर मघा के चार चरण एवं पू.फा. का प्रथम चरण) कालीन को विशेष रुप से त्याज्य माना गया है। तृतीय परिहार में मेष राशि का सूर्य हो, तो सिंहस्थ गुरु का दोष नहीं होता। ऐसा मुहूर्त्त चिन्तामणि का मत है–

मघादि पंच पादेषु गुरु सर्वत्र निन्दितः। गंगागोदान्तरं हित्वा शेषांङ्घ्रिषु न दोषकृत्॥
मेषेऽर्के सन् व्रतोद्वाहो गंगा गोदान्तरेऽपि च। सर्वः सिंह गुरु वर्ज्यः कलिंगे गौडगुर्जरे॥

–अर्थात् मघा से पू.फा. तक के पांच चरण कालीन गुरु सब स्थानों पर निन्दनीय है, शेष चरणों में (अर्थात् पू.फा. के तीन चरण एवं उ.फा. का प्रथम चरण) गंगा और गोदावरी के मध्य बसे हुए प्रदेशों को छोड़कर अन्य प्रदेशों में यह दोषकारक नहीं है॥ तथा यदि सूर्य मेष में (वैशाख मास) हो और गुरु सिंह में हो, तो अन्य सभी प्रदेशों के साथ, गंगा और गोदावरी के मध्यवर्ती प्रदेशों में भी यज्ञोपवीत, मुण्डन, विवाह आदि कृत्य करने शुभ होंगे तथा कलिंग देश (राजमहेन्द्री, विजगापट्टम), गौड़ (बंगाल से बर्दवान तक) और गुर्जर (गुजरात) प्रदेशों में गुरु सम्पूर्ण सिंह राशिस्थ कालीन वर्जित रहेगा।

ज्योतिर्निबन्धानुसार भी वैशाख मास (मेष के सूर्य) में विवाह आदि शुभ कार्य किए जा सकते हैं–

मंगलानीह कुर्वीत सिंहस्थो वाक्पतिर्यदा। भानौ मेषगते सम्यगित्याहुः शौनकादयः॥ ज्योतिनिबंध

उपरोक्त शास्त्रादि वचनों को ध्यान में रखते हुए ही हमने गत संवत् (२०६०) की पंचाँग में सिंहस्थ गुरु के नवांश काल ३० सितं. से १७ अक्तू. के मध्य) –अर्थात् पू.फा. नक्षत्रकालीन विवाह आदि शुभ मुहूर्त्त नहीं लगाए गए थे। **आगामी वर्ष (2004 ई.)** में भी **गुरु वक्री अवस्था में 1 अप्रैल से 7 जून के बीच पू.फा. के प्रथम चरण अर्थात् सिंह के नवांशक में रहेगा।** परन्तु उपरोक्त शास्त्र वचनों के अनुसार **मेष के सूर्य संचार** (वैशाख मास) काल (13 अप्रैल से 13 मई के मध्य) में विवाह, व्रतबन्ध आदि शुभ कृत्य समायोजित किए जा सकेंगे, लेकिन **14 मई से 7 जून के बीच विवाह आदि शुभ कार्य वर्जित रहेंगे।** तदनुसार ज्येष्ठ मास में विवाहादि शुभ कृत्यों का निषेध रहेगा।

स्त्री जातक विचार

आजकल परिवर्तित परिस्थितियों में लड़कियां भी पुरुषों के समान उच्च विद्या प्राप्त करके लगभग प्रत्येक क्षेत्र में उच्च पद की नौकरी अथवा व्यवसाय करते हुए अपने परिवार एवं समाज में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इस प्रकार परिवारिक एवं आर्थिक, दोनों क्षेत्रों में अपना उत्तरदायित्व सफलतापूर्वक निभा रही हैं। इसलिए स्त्री सम्बन्धित ज्योतिष के अनेक प्राचीन योगों को आधुनिक सन्दर्भ में विश्लेषण करके वर्णित करने की विशेष आवश्यकता है। आगे स्त्री जातक सम्बन्धी कुछ विशेष योग दिए जाते हैं। ध्यान रहे, स्त्रियों सम्बन्धी फलादेश जन्म लग्न के अतिरिक्त चन्द्रमा को भी लग्न मानकर करना चाहिए।

कन्या के विवाह में विलम्ब योग–(क) द्वितीय (कुटुम्ब) भाव तथा सप्तम भाव में सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह पड़े हों, तो कन्या के विवाह में विलम्ब एवं विघ्न होते हैं।

(ख) सप्तमेश अष्टम में हो एवं अष्टमेश सप्तम में होकर दोनों में राशि परिवर्तन हो, तो भी विवाह कार्य में अनावश्यक विलम्ब होते हैं।

(ग) चन्द्रमा या राहु सप्तम भाव में हो तथा सप्तमेश ग्रह शुक्र का सम्बन्ध दुःस्थानों (6, 8, 12वें) में हो, तो विवाह में विलम्ब होते हैं।

(घ) सप्तम, अष्टम एवं द्वितीय भावों में पापग्रह पड़ें हों तथा अष्टमेश पंचम भाव में हो, तो भी वैवाहिक सुख में विलम्ब होते हैं। अगले वर्ष पंचांग में इस सम्बन्ध में विशेष लेख दिया जाएगा।

शुभ विवाह मुहूर्त वि. संवत् २०६१ (सं. २००४–०५ ई.)

समय शुद्धि विचार–

✸ **ग्रहण शूल**–4 मई को खग्रास चंद्रग्रहण स्वाती नक्षत्र में लगने से ग्रहण का दिन तथा एक दिन पूर्व एवं तीन दिन पश्चात् के विवाहादि शुभ कार्यों में वर्जित रहेंगे। इसके अतिरिक्त ग्रहण नक्षत्र भी छः मास तक शुभ कार्यों में निषिद्ध माना जाता है।

✸ **गुरु सिंहस्थ विचार**–सिंहस्थ गुरु में सिंह-नवांश का काल विशेषतः त्याज्य माना गया है। परन्तु मेषार्क (वैशाख मास) में सिंहस्थ नवांश काल भी शास्त्रकारों ने दोषकारक नहीं माना गया है, समीक्षा के लिए देखें पृष्ठ नं. **134**

✸ **शुक्रास्त**–4 जून से 12 जून के मध्य शुक्रास्त रहेगा तथा 1 से 3 तक शुक्र वार्धक्य दोष एवं 13 जून से 15 जून तक शुक्र बाल्यत्व दोष रहेगा।

✸ **श्रावण अधि मास**–18 जुलाई से 16 अग. तक **श्रावण अधिक मास** होने से इस काल में भी विवाह आदि शुभ कार्य वर्जित रहेंगे।

✸ **गुरु अस्तोदय**–6 सितंबर से 2 अक्तू. तक गुरु पश्चिमास्त रहेगा तथा 3 सितं. से 5 सितं. तक वार्धक्य एवं 3 अक्तू. से 5 अक्तू. तक बाल्यत्व दोष रहेगा।

✸ **श्राद्ध पक्ष**–29 सितं. से 13 अक्तू. तक श्राद्ध रहेंगे। इन दिनों भी विवाहादि शुभ कृत्यों का शुभारम्भ नहीं किया जाता।

✸ **कार्तिक मास**–16 अक्तू से 14 नवं. के मध्य कार्तिक मास मध्य केवल पहाड़ी क्षेत्रों में विवाह आदि शुभ कृत्य किए जाते हैं।

✸ **ग्रस्त. ग्रहण विचार**–28 अक्तू. को भारत के सुदूर उत्तर-पश्चिमी भागों में जहाँ ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण दिखाई देगा (देखें ग्रहण विवरण) वहाँ इस समयावधि में ग्रहण शूल का विचार 26 से 30 अक्तू. तक होगा। अतः श्रीनगर, राजौरी आदि क्षेत्रों में इस समयावधि में विवाह वर्जित रहेंगे।

जिन स्थलों पर ग्रहण दिखाई नहीं देगा, वहाँ पर इसके सूतक, शूल पर्व आदि का विचार नहीं रहेगा।

✸ **भीष्म पंचक**–22 नवं. से 26 नवं. तक भीष्म पंचक रहेंगे। परम्परानुसार कुछ क्षेत्रों में इन दिनों शुभ कार्य वर्जित माने जाते हैं, जबकि कुछ विद्वानों के अनुसार यह कालावधि प्रशस्त मानी जाती है।

✸ **पौष मास**–15 दिसं.से 12 जन. (2005 ई.) तक पौष मास रहेगा।

✸ **शुक्रास्त**–12 फर. (2005 ई.) फाल्गुण मास से सम्वत् के अन्त (8 अप्रैल, 2005 ई.) तक अवधि में शुक्र पूर्व में अस्त होने से इस अवधि में विवाह आदि शुभ कृत्य वर्जित रहेंगे।

नीचे विवाह मुहूर्तों में लता (१), पात (२), युति (३), वेध (४), जामित्र (५), मृत्युवाण (६), एकार्गल (७), उपग्रह (८), क्रान्ति साम्य (९), दग्धा तिथि (१०)–इस क्रमानुसार दस गुण दोषों की गणना की गई हैं। सीधी रेखा (।) दोषाभाव अर्थात् गुण की सूचक है जबकि आड़ी रेखा (S) दोष की सूचक है। मूहूर्तों में क्रूर ग्रह की युति, वेध, मृत्युबाण, क्रान्तिसाम्य, भद्रादि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। परन्तु जहाँ पर इन दोषों के शास्त्र सम्मत परिहार वाक्य मिल जाते हैं। वहाँ सम्बद्ध ग्रह की पूजा दानादि के पश्चात् विवाह मुहूर्त को शुभ एवं ग्राह्य मान लिया गया है। मुहूर्तों में सूक्ष्म क्रान्ति-साम्य गणित प्रक्रिया ग्रहण की गई है।

विवाह मुहूर्तों में लग्न विवरण में १ को मेष, २ को वृष, ३ को मिथुन, ४ को कर्क, ५ को सिंह, ६ को कन्या, ७ को तुला, ८ को वृश्चिक, ९ को धनु, १० को मकर, ११ को कुम्भ तथा १२ की संख्या को **मीन लग्न** राशि जानें॥

✯ वैशाख मासे ✯ (अप्रैल–मई) विवाह मुहूर्त सन् २००४ ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रेज़ी	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्र राशि	लतादि दश गुण-दोष	शुद्ध विवाह लग्न, ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (घं. मिं. में)
वैशा. शुक्ल ३, गुरु	22 अप्रैल	१० वैशाख	रोहिणी	वृष	। । S शु. । । । । । । ।	दिन लग्न ५ (बुध दान) सिंह लग्न 14.33 उप., गोधूलि, रात्रि ल. ११ (कुम्भे गुरु दान), गणितेन शुक्र युत्यभावः
वैशा. शुक्ल ४, शुक्र	23 अप्रैल	११ वैशाख	रोहिणी	वृष	। । S शु. । । । । । । ।	दिन लग्न ४ (मं.-शं. का दान), ५ (बु. दा.), गणितेन शुक्र युतिऽभावः
वैशा. शुक्ल ९/१०, गुरु	29 अप्रैल	१७ वैशाख	मघा	सिंह	S रा. । । । । S चौ. S । S ।	दिन लग्न २-४ (मं. श. दान), रा. ल. ११ (चं., गु. दान) दिन लग्ने क्रां. साम्यऽभावः रात कुम्भ लग्न में 24/57 तक क्रांतिसाम्य दोष है।
वैशा. शुक्ल १०, शुक्र	30 अप्रैल	१८ वैशाख	मघा	सिंह	S रा. । । । । । S । S ।	दिन लग्न २ (गणितेन क्रांतिसाम्याभावः)
वैशा. शुक्ल ११, शनि	1 मई	१९ वैशाख	उ.फा.	कन्या	। । । S बु. । S रो. S व्या. । । ।	दि. ल. ४ (प्रातः 11/39 उप.), ५ (बु. दा.), गोधू. (रा. ल. १२ (चं. दा.)
वैशा. शुक्ल १२, रवि	2 मई	२० वैशाख	हस्त	कन्या	S सू. S हर्ष । । । । । । । ।	दि. लग्न २, ४ (मं.-शं. का दान), ५ गोधू., रात्रि लग्न १२ (चंद्र दान)
ज्येष्ठ कृष्ण ४, शनि	8 मई	२६ वैशाख	मूला	धनु	। । । । S शु. S चौ. । S । ।	दिवा लग्न ५ (बुध दान) सिंह लग्न दुपै. 2.34 स्टैं. टा. तक
ज्ये. कृष्ण ५/६, रवि	9 मई	२७ वैशाख	उ.षा.	धनु/मक.	। S सा. । S शु. । । । । । S	दिवा लग्न ५, गोधूलि, रात्रि लग्न ११ (कुम्भे चंद्र-गुरु का दान) शुक्र पाद वेधाभाव, लग्न काले गुरु केन्द्रस्थ होने से दग्धातिः परिहार
ज्ये. कृष्ण ६/७, चंद्र	10 मई	२८ वैशाख	उ.षा.	मकर	। S । S शु. । । । । । S	दिवा लग्न २ (प्रातः 7.12 तक, भद्रापूर्वे), शुक्र पाद वेधाभावः

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रेज़ी	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्र राशि	लतादि दश गुण-दोष	शुद्ध विवाह लग्न, ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (घं. मिं. में)
ज्ये. कृष्ण ७, चन्द्र	10 मई	२८ वैशाख	श्रवण	मकर	S बु. I I I I S रो. I I I I	रात्रि लग्न ११ (कुम्भे चन्द्र-गुरु दान)
ज्ये. कृष्ण ८, मंगल	11 मई	२९ वैशाख	श्रवण	मकर	S बु. I I I I I S I I I	दिवा लग्न २ (वृषे, मंगल शनि का दान)
ज्ये. कृष्ण ८, मंगल	11 मई	२९ वैशाख	धनिष्ठा	मक./कुंभ	I I I I I I I I I I	दिवा लग्न ४ (चन्द्र-शनि दान), गोधूली, रात्रौ लग्नऽभावः
ज्ये. कृष्ण ९, बुध	12 मई	३० वैशाख	धनिष्ठा	कुम्भ	I I I I I I I I I I	दिवा लग्न २ (वृषे मंगल, शनि का दान)

14 मई से 7 जून तक गुरु सिंह के नवांश (पूफा. प्रथम चरण) में तथा तदुपरांत 4 जून से 12 जून तक शुक्रास्त होने से ज्येष्ठ मास में विवाहादि शुभ कार्य त्याज्य रहेंगे॥
ध्यान रहे–ज्येष्ठ मास में गुरु अधिकांशतः सिंह के नवांश में होने से इस मास में विवाहादि शुभ कार्यों का आयोजन निषिद्ध एवं त्याज्य रहेगा।

☆ आषाढ़ मासे ☆ (जून–जुलाई) सन् २००४ ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रेज़ी	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्र राशि	लतादि दश गुण-दोष	शुद्ध विवाह लग्न, ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (घं. मिं. में)
आषा. शुक्ल ४, मंगल	22 जून	९ आषाढ़	मघा	सिंह	S मं. I I I I I S I I I	रात्रि लग्न ११ (चन्द्र-गुरु दान), २ (वृष)
आषा. शुक्ल ५, बुध	23 जून	१० आषाढ़	मघा	सिंह	S मं. I I I I S रो. S I I I	दिवा लग्न ६ (चन्द्र दान), ८ (शुक्र दान), गोधूली
आषा. शुक्ल ६, गुरौ	24 जून	११ आषाढ़	उ.फा.	सिंह	I S I I I I S I I I	रात्रि लग्न ११ (चन्द्र-गुरु दान), २ (सूर्य का दान)
आषा. शु. ७/८, शुक्र	25 जून	१२ आषाढ़	हस्त	कन्या	I I I I I I I I I S	रात्रि लग्न २ (वृषे सूर्य, शनि का दान)
आषा. शुक्ल ८, शनि	26 जून	१३ आषाढ़	हस्त	कन्या	I I I I I S अ. I I I S	दिवा लग्न ५ (मंगल दान), ८ (शु. बु. का दान), रात्रि लग्न अभाव
आषा. शुक्ल ९, शनि	26 जून	१३ आषाढ़	चित्रा	कन्या	S श. I I I I I S I I I	रात्रि लग्न २, (सूर्य, शनि दान)
आषा. शुक्ल ९, रवि	27 जून	१४ आषाढ़	चित्रा	कन्ये/तुला	S श. I I I I I S परि. I I I	दि. ल. ५ (मं. दा.), ६, रा. ल. ११ (कुम्भ लग्न रात 10.43 तक)
शु. श्रावण कृष्ण १, शनि	3 जुलाई	२० आषाढ़	उ.षा.	धनु/मकर	I I I I S श. I I I S I	दिवा लग्न ५ (मंगल दान), ६, रात्रि लग्न ११ (चंद्र दान), २ (वृष ल. रात 29.08 तक) गणितेन क्रां साम्यऽभाव
शु. श्रावण कृष्ण २, रवि	4 जुलाई	२१ आषाढ़	श्रवण	मकर	I I I I S मं. I S I I I	दिवा लग्न ६, ८ (बृश्चिके शुक्र सप्तम पूज्य दानं च.), रात्रि 19.30 के उपरांत मृत्य बाणदोषः
शु. श्रा. कृष्ण ३, चंद्र	5 जुलाई	२२ आषाढ़	धनिष्ठा	मकर/कुं	I I I I I I S S I I	दिवा लग्न ६, ८ (बृश्चिके शुक्र सप्तम पूज्य व दान)
शु. श्रा. कृष्ण ६, बुधे	7 जुलाई	२४ आषाढ़	उ. भा.	मीन	I I I I I I S I I I	रात्रि लग्न २ (रात्रौ भद्रा स्वर्गलोकेन शुभ फलप्रदा)
शु. श्रा. कृष्ण ७, गुरु	8 जुलाई	२५ आषाढ़	उ. भा.	मीन	I I I I I I S I I I	दिवा लग्न ६ (कन्या लग्न दुपै. 12.45 उप.), ८ (शुक्र दान व पूजा), गोधूलि, रात्रि लग्न 11 (कुम्भे गुरु दान)
शु. श्रा. कृष्ण ७, गुरु	8 जुलाई	२५ आषाढ़	रेवती	मीन	S शु. I I I I I I I I S	रा. लग्न २ (वृष लग्ने, गुरु कैन्द्रगते तिथि दोषः परिहारः, चन्द्र दान)
शु. श्रा. कृष्ण ८, शुक्र	9 जुलाई	२६ आषाढ़	रेवती	मीन	S शु. I I I I S अ. I I S	दिवा लग्न ६ (चन्द्र दान), गोधूलि, रात्रि लग्न ११ (गुरु दान)
शु. श्रा. कृ. ८/९, शुक्र	9 जुलाई	२६ आषाढ़	अश्विनी	मेष	I I I S गु. I S चौ. S S I I	रात्रि लग्न २ (वृषे चन्द्र दान), पादेन गुरु वेधाभावः
शु. श्रा. कृष्ण ९, शनि	10 जुलाई	२७ आषाढ़	अश्विनी	मेष	I I I S गु. I S चौ. S S I I	दिवा लग्न ५, रात्रि लग्न ११ (गुरु दान), २ (चन्द्र दान) वृष लग्न ११ जुलाई की प्रातः 3.37 तक), पादेन गुरु वेधाभावः

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रेज़ी	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्र राशि	लतादि दश गुण-दोष	शुद्ध विवाह लग्न, ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (घं. मिं. में)
शु. श्रा. कृ. ११/१२ मंग.	13 जुलाई	३० आषाढ़	रोहिणी	वृष	। S S शु. । । । । S । ।	दिवा लग्न ५ (प्रातः 9.12 के बाद), ६, रात्रि लग्न ११ (गुरु दान), २ (वृष) (पादेन शुक्र युत्यभावः)

18 जुलाई (३ श्रावण) से 16 अगस्त (प्रवि ९ भाद्र) तक श्रावण अधिक मास रहेगा।

✯ भाद्रपद मासे ✯ (अगस्त–सितम्बर) सन् 2004 ई.

शुद्ध श्रा. शुक्ल २/३, बुधे	18 अगस्त	३ भाद्र.	उ.फा.	सिंह/क.	S मं. । S गु. । । S अ. । । । ।	दि. ल. ६ (प्रातः 10.11 उप.), रा. ल. २, ४ (श. दा.) पादेन गुरु युत्यभावः
शु. श्रा. शुक्ल ४, गुरौ	19 अगस्त	४ भाद्र.	हस्त	कन्या	। । । । । । । । । ।	रा. ल. २, ४ (शनि का दान), भद्रा पाताल लोके शुभ फलप्रदा.
शु. श्रा. शुक्ल ५, शुक्र	20 अगस्त	५ भाद्र.	चित्रा	कं/तुला	S श. । । । । । S S । ।	रात्रि लग्न ४ (शनि का दान)
शु. श्रा. शु. ५/६, शनि	21 अगस्त	६ भाद्र.	चित्रा	तुला	S श. । । । । । S S । ।	दिवा लग्न ६ (मंगल का दान)
शु. श्रा. शुक्ल ८, चंद्र	23 अगस्त	८ भाद्र.	अनु	बृश्चिक	S गु. । । । । । । S । ।	रात्रि लग्न २ (चन्द्र दान), ४ (शुक्र-शनि का दान)
शु. श्रा. शुक्ल ९, मंगल	24 अगस्त	९ भाद्र.	अनु.	बृश्चिक	S गु. । । । । । । S । ।	दिवा लग्न ६ (मंगल का दान) कन्या लग्न प्रातः 8.43 तक
शु. श्रा. शुक्ल १०, बुध	25 अगस्त	१० भाद्र.	मूला	धनु	। । । S शु. । । । S वि. । S	दि. लग्न ६ (मंगल का दान), रात्रौ लग्नSभावः, (पादेन शुक्र वेधSभावः)
शु.श्रा. शु.१२/१३, शुक्र	27 अगस्त	१२ भाद्र.	उ. षा.	मकर	S सू. । । । S शु. श. S । । । ।	रा. ल. २ रा. 25.03 तक (मृ. बाण दोष दुपै. 2.30 तक, रा. मृ. बाण दोषSभावः
शु. श्रा. शुक्ल १४, शनि	28 अगस्त	१३ भाद्र.	धनि	मकर	। । । । । । S S । ।	रात्रि लग्न २, ४ (कर्क लग्ने चन्द्र, शनि का दान)
शु. श्रा. शुक्ल १४, रवि	29 अगस्त	१४ भाद्र.	धनि	कुम्भ	। । । । । । S S । ।	रात्रि लग्न १२ (चन्द्र-गुरु का दान), भौमाष्टमSस्तं गते परिहारः
भाद्र. कृष्ण ३, बुध	1 सितं.	१७ भाद्र.	रेवती	मीन	। S गं. । । । S । । । ।	रात्रि लग्न ४ (शनि दान, कर्क लग्न अर्द्ध रात्रि 3.28 बाद), भद्रोत्तरे
भाद्र. कृष्ण ४, गुरु	2 सितं.	१८ भाद्र	रेवती	मीन	। S गं. । । । । । । । ।	दि. ल. ६ (चं.-दा.), ८ (बृश्चिक ल. 13/17 तक, तदुपरान्त क्रान्ति साम्यदोष)

3 सितं. से गुरु वार्धक्य दोष. प्रारम्भ (६ सितम्बर से 2 अक्तूबर तक गुरु अस्तंगत रहेगा।)

✯ कार्तिक मासे ✯ (अक्तूबर–नवम्बर) सन् २००४ ई. (केवल पहाड़ी क्षेत्रों में ग्राह्य)

आश्विन शुक्ल ४, रवि	17 अक्तू.	२ कार्ति.	अनुरा.	बृश्चिक	। । । । । । । । । ।	दिवा लग्न ९ (चन्द्र दान), धनु लग्न दुपै. 12.56 तक-भद्रापूर्वे
आश्विन शु. ७/८, बुधे	20 अक्तू.	५ कार्ति.	उ. षा.	मकर	। । । । S श. । । S । ।	रात्रि लग्न २, (आवश्यके-पाताले भद्रा शुभ फलप्रदा.)
आश्विन शुक्ल ८, गुरु	21 अक्तू.	६ कार्ति.	उ. षा.	मकर	। । । । S श. । । S । ।	दिवा लग्न ८, ९ (बृश्चिक व धनु)
आश्विन शुक्ल८/९, गुरु	21 अक्तू.	६ कार्ति.	श्रवण	मकर	। । । । । । । । । ।	रात्रि लग्न २ (वृषे सूर्य दान)
आश्विन शुक्ल ९, शुक्रे	22 अक्तू.	७ कार्ति.	धनि	मक/कुंभ	। । । । । । S गं. S S ।	रा. ल. २ (सू. दा.), ५ (चं. दा.), गणितेन क्रां. साम्याभावः, स्वयं सिद्ध मुहूर्त
आश्विन शुक्ल१०, शनि	23 अक्तू.	८ कार्ति.	धनि.	कुम्भ	। S गं. । । । S S S S ।	दि. ल. ८, ९ (धनु लग्न दुपै. 11.45 तक) क्रान्ति साम्य रात को है।
आश्विन शुक्ल१३, चन्द्र	25 अक्तू.	१० कार्ति.	उ. भा.	मीन	Sसू. । । Sगु. Sशु. SS व्या. । । ।	दि. ल. ९ (10.58 के बाद), गोधूलि, रा. ल. 2 पादेन गुरु वेधाभावः
आश्विन शुक्ल१३, मंगल	26 अक्तू.	११ कीर्ति.	उ.भा.	मीन	Sसू. । Sगु. Sशु. । S व्या. । । ।	दि. ल. ८, ९ (धनु ल. प्रातः 11.09 तक) पादेन गुरु वेधाभावः

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रेज़ी	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्र राशि	लतादि दश गुण-दोष	शुद्ध विवाह लग्न, ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (घं. मिं. में)
आश्वि शु. १३/१४, मंग.	26 अक्तू.	११ कार्ति.	रेवती	मीन	I S हर्ष I S शु. S गु. I I I I I	दि. ल. ९, गोधूली, रा. ल. २ (सूर्य दान), 3, पादेन शुक्रवेध अभाव
कार्तिक कृ. २/३, शनि	30 अक्तू.	१५ कार्ति.	रोहिणी	वृष	I I I I I I S वरि. I I I	रात्रि ल. ३ (चं. दान), ५ (शनि दान) (ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण देखें समय शुद्धि)
कार्ति. कृष्ण ३, रवि	31 अक्तू.	१६ कार्ति.	रोहिणी	वृष	I I I I I I I I I I	दिवा लग्न ८, (चन्द्र दान), गोधूलि च.
कार्ति. कृ. ३/४, रवि	31 अक्तू.	१६ कार्ति.	मृगशिर	वृष	I I I I I I S परि. S I I	रात्रि लग्न ३ (चन्द्र दान), गोधूलि, ५ (शनि का दान)
कार्ति. कृष्ण ४; चन्द्र	1 नवं.	१७ कार्ति.	मृगशिर	मिथुन	I I I I I S रो. S S I I	दि. ल. ९ (चंद्र दा.), गोधू., रा. ल. २ (बु. ७वें पू.), ५ (शनि दान)
कार्ति. कृष्ण ९, शनि	6 नवं.	२२ कार्ति.	मघा	सिंह	I I I I I S अ. S S I I	दिवा लग्न ८ (प्रातः 8.40 उप.), ९, रा. ल. २ (बु. ७वें दान व पू.), ६
कार्ति. कृष्ण १०, रवि	7 नवं.	२३ कार्ति.	मघा	सिंह	I I I I I I S S I I	दिवा लग्न ८ (मंगल दान), ९ (धनु लग्न प्रातः 10.28 तक)
कार्ति. कृष्ण ११, चंद्रे	8 नवं.	२४ कार्ति.	उ.फा.	सिं./कं.	I S वै. I I I I S S I I	दिवा लग्न ९ (प्रातः 11.36 उप.), रात्रि लग्न २ (बु. पू.), ५
कार्ति. कृष्ण १२, मंगल	9 नवं.	२५ कार्ति.	उ.फा.	कन्या	I S I I I I S वि. S I S	दिवा लग्न ८ (मंगल दान), ९ (बुध दान), दग्धा तिथि परिहार
कार्ति. कृष्ण १२, मंग.	9 नवं.	२५ कार्ति.	हस्त	कन्या	I I S गु. शु. I I S चो. I S I S	रात्रि ल. २ (बुध पूज्य व दान), ५ सिंह लग्न रात 2.00 बजे तक) चन्द्र दान, पादेन गुरू-शुक्र युत्याभावः, वृषे तिथि दोष परिहारः
कार्तिक शुक्ल १, शनि	13 नवं.	२९ कार्ति.	अनु.	बृश्चिक	I I I I I I I I I I	दि. ल. ९ (चं. दा.), रा. २ (च. बु. दा.), ५, ६ (कन्या ल. 14 नवं. की प्रातः 4.40 तक) (14 नवं. की प्रातः 4.45 बाद मृ. वा. दोष) क्षीण चंद्र अत्यावश्यके

☆ मार्गशीर्ष मासे ☆ (नवम्बर–दिसम्बर) सन् २००४ ई०

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रेज़ी	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्र राशि	लतादि दश गुण-दोष	शुद्ध विवाह लग्न, ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (घं. मिं. में)
कार्तिक शुक्ल ६, बुध	17 नवं.	३ मार्ग.	श्रवण	मकर	I S गं. I I S श. S अ. I S I I	रात्रि लग्न ६ (कन्या में मंगल-केतु का दान)
कार्ति. शुक्ल ७, गुरु	18 नवं.	४ मार्ग.	श्रवण	मकर	I S I I I S अ. I S I I	दिवा लग्न ९, गोधूली च.
कार्ति. शुक्ल ७, गुरु	18 नवं.	४ मार्ग.	धनि.	मकर	I I I I I I S I I I	रात्रि लग्न ६ (कन्या लग्ने भद्रा पातालगते शुभदा)
कार्ति. शुक्ल १०, रवि	21 नवं.	७ मार्ग.	उ. भा.	मीन	I I I S गु. I S चौ. S वज्र S I S	रात्रि लग्न ६ (मंगल दान), पादेन गुरू वेधाभावः, कन्या लग्ने गुरु केन्द्रे एवं तिथि दोषः परिहारः
कार्ति. शुक्ल ११, चंद्रे	22 नवं.	८ मार्ग.	उ. भा.	मीन	I I I S गु. I S चौ. S व.S I I	दि. ल. ९ (प्रातः 9.06 तक भद्रा पूर्वे), पादेन गुरू वेधाभाव, भीष्म पं. विचार
कार्ति. शुक्ल ११, चंद्रे	22 नवं.	८ मार्ग.	रेवती	मीन	I I I I S गु. I I I I I	रात्रि लग्न ६ (चन्द्र का दान), कुछ क्षेत्रों में भीष्म पंचक विचार
कार्ति. शुक्ल १२, मंग.	23 नवं.	९ मार्ग.	रेवती	मीन	I I I I S गु. I I I I I	दि. ल. ९ (सू. बु. का दान), ११ (गुरु ८वें पूज्य व दान), भीष्म पंचक विचार
कार्ति. शु. १५/१, शुक्रे	26 नवं.	१२ मार्ग.	रोहि.	वृष	I I I I S सू. S अ. I S I I	रा. ल. ५ (रात 11.40 के बाद), ६ (मं. दा.) कन्या लग्ने भी. पंचक अभाव
मार्गशीर्ष कृष्ण १, शनि	27 नवं.	१३ मार्ग.	रोहि.	वृष	I I I I S सू. S अ. I S I I	दिवा लग्न ११ (गुरू अष्टम पूज्यव दानं), गोधू., रा. ल. ५ (शनि का दान), ६ (रात 2.08 तक) (कुम्भ लग्न आवश्यके)
मार्ग. कृष्ण १, शनि	27 नवं.	13 मार्ग.	मृग	वृष	I I I I I I S I I I	रात्रि लग्न ६, (मंगल का दान)
मार्ग. कृष्ण २, रवि	28 नवं.	१४ मार्ग.	मृग	वृष/मिथु.	I I I I I I S I I I	दि. ल. ११ (गुरु अष्टम पू. दान व-आवश्यकत्वेन), गोधू., रा. ल. ५, ६
मार्ग. कृष्ण ७, शनि	4 दिसं.	२० मार्ग.	मघा	सिंह	I S वै. I I I I S I I I	दिवा लग्न ९, गोधूलि च. (धनु लग्ने सूर्य दान)

पक्ष	तिथि वार	ता. अंग्रेज़ी	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्र राशि	लतादि दश गुण-दोष	शुद्ध विवाह लग्न, ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (घं. मिं. में)
मार्ग. कृष्ण	८, रवि	5 दिसं.	२१ मार्ग.	उ. फा.	सिंह/कं.	S शु. I I I I S अ. S S I I	रात्रि लग्न ६ (कन्या लग्न रात 2.50 तक)
मार्ग कृष्ण	९, चंद्र	6 दिसं.	२२ मार्ग.	उ. फा.	कन्या	S शु. I I I I S अ. S S I I	दिवा लग्न ९, गोधूलि च. (धनु लग्ने सूर्य दान), रात्रि लग्न ३
मार्ग कृष्ण	९, चंद्र	6 दिसं.	२२ मार्ग.	हस्त	कन्या	I I S गु. I I I I S I S	रात्रि लग्न ५ (शुक्र दान) गणितेन गुरू पाद युत्यंभाव,(चन्द्र का दान)
मार्ग. कृष्ण	१०, मंग.	7 दिसं.	२३ मार्ग.	चित्रा	कन्या	S श. I S के. I I I S S I I	रा ल. ५ (शु. दा.) (चन्द्र मित्र क्षेत्रे केतु युति का परिहारः) आवश्यके
मार्ग. कृष्ण	१२, बुध	8 दिसं.	२४ मार्ग.	स्वाती	तुला	I I I I S रा. I I S I I	रात्रि लग्न ५ (शुक्र दान), ६ (बुध, सूर्य का दान)
मार्ग. कृष्ण	१२, गुरु	9 दिसं.	२५ मार्ग.	स्वाती	तुला	I I I I S रा. I I I S I I	दिवा लग्न ९ (धनु लग्ने सूर्य-बुध का दान)

★ माघ मासे ★ (जनवरी-फरवरी) सन् 2005 ई.

पक्ष	तिथि वार	ता. अंग्रेज़ी	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्र राशि	लतादि दश गुण-दोष	शुद्ध विवाह लग्न, ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (घं. मिं. में)
पौष शुक्ल	६, शनि	15 जन.	३ माघ	उ. भा.	मीन	I I I I I S S परि. I I I	रा. ल. ६ (चं. का दान), ९ (मं. का दान), दि. लग्ने मृत्युबाण दोष धनु लग्न 16 जन. की प्रातः 5/46 तक, (मृत्युबाण सायं 17.30 तक)
पौष शुक्ल	६/७, शनि	15 जन.	३ माघ	रेवती	मीन	I I I I I S I S I I	रात्रि लग्न ९ (धनु लग्ने मंगल का दान)
पौष शुक्ल	७, रवि	16 जन.	४ माघ	रेवती	मीन	I I I I I S अ. I S I I	दि. ल. ११ (गुरू ८वें पूज्यः), १२ (चंद्र लग्ने गु. दृष्ट्या शुभः) गोधूलि, रात्रि लग्न ६ (चन्द्र दान) कन्या लग्न रात 12.18 तक, भद्रा पूर्वे
पौष शुक्ल	११, गुरु	20 जन.	८ माघ	रोहि.	वृष	I I I I I I I I S I	रा. ल. ६, वृष राशौ भद्रा स्वर्गे शुभफलदा (गणितेन क्रां. साम्यभावः)
पौष शुक्ल	१२, शुक्र	21 जन.	९ माघ	रोहि.	वृष	I I I I I I I I S I	दि. ल. १२ (मीने गुरू का दान), गणितेन क्रां. साम्यऽभावः
माघ कृष्ण	४, शनि	29 जन.	१७ माघ	उ. फा.	कन्या	I I I I I I S अ. S I I	लग्न गोधूलि, रात्रि ल. ८ (शुक्र का दान)
माघ कृष्ण	५, रवि	30 जन.	१८ माघ	उ. फा.	कन्या	I I I I I I I S I I	दिवा लग्न १२ (चन्द्र-गुरू का दान)
माघ कृष्ण	५, रवि	30 जन.	१८ माघ	हस्त	कन्या	I I I I I S रो. S S I I	लग्न गोधूली रात्रि लग्न ८ बृश्चिके शुक्र का दान)
माघ कृष्ण	६, चंद्र	31 जन.	१९ माघ	हस्त	कन्या	I I I I I S S S I I	दिवा लग्न १२ (चन्द्र-गुरु का दान)
माघ कृष्ण	६, चंद्र	31 जन.	१९ माघ	चित्रा	कं./तुला	S श. I S के. I I I I I I	ल. गोधूलि, रात्रि ल. ६ (लग्ने चन्द्र, पूजा व दान), ८ (बृश्चिक) (कन्या/तुला राशौ भद्रा पातालगते शुभा, चन्द्र व शुक्र दान
माघ कृष्ण	९, गुरु	3 फर.	२२ माघ	अनु.	बृश्चिक	S शु. I I I I I S S I I	लग्न गोधूली, रात्रि लग्न ६ (चन्द्र-मंगल का दान)
माघ कृष्ण	१०, शुक्र	4 फर.	२३ माघ	अनु.	बृश्चिक	S शु. I I I I I S S I I	दिवा लग्न १२ (चन्द्र-शनि का दान)

नोट—९ फरवरी से शुक्र वार्धक्यारम्भ तथा 12 फर. से सम्वत् के अन्त तक शुक्र अस्तंगत रहेगा।

वि. सम्वत् २०६२ में गुरु-शुक्रास्त काल—गुरु लगभग 5 अक्तूबर से 2 नवम्बर, 2005 ई. तक तथा शुक्र पहले लगभग 26 अप्रै., 05 ई. को पश्चिम से उदय होगा, पुनः लगभग 9 जनवरी से 15 जनवरी 2006 ई. तक अस्तंगत रहेगा।

त्रिबल शुद्धि पर आधारित

वर-कन्या की राशि के अनुसार शुभ विवाह-मुहूर्त्त संवत् २०६१ वि. (सन् 2004-05 ई.)

नीचे वर–कन्या की जन्म अथवा प्रसिद्ध नाम राशि के अनुसार (**त्रिबल शुद्धि**–सूर्य, चन्द्र एवं गुरु पर आधारित) विवाह मुहूर्त्तों के शुभ मास एवं तारीखें दी जा रही हैं। कुण्डली मिलान के पश्चात् यदि आपको वर–कन्या के विवाह हेतु शुभ मास एवं उपयुक्त तारीखें जाननी हों तो **वर की राशि** तथा कन्या की राशि में जो मास, तारीखें समान होंगी, वहीं तारीखें दोनों के विवाह में शुभ एवं ग्राह्य होंगी। विवाह लग्न में और अधिक शुद्धता एवं सूक्ष्मता के लिए, गत पृष्ठों में दिए गए (गुण–दोषों सहित) मुहूर्त्तों में से न्यूनतम दोष **वाले शुभ मुहूर्त्त (किसी विद्वान पण्डित जी के परामर्शानुसार) का चयन करें। उदाहरणार्थ**–मान लो, आपको वैशाख (अप्रैल) मास २००४ ई. में रात्रिकालीन **मेष राशि के लड़के** और **मीन राशि की कन्या** का विवाह मुहूर्त्त जानना है तो हमने पाया कि मेष राशि (लड़के) तथा मीन राशि की कन्या के मुहूर्त्तों में २२ अप्रैल को समानता पाई जाती है। इस प्रकार वर–कन्या के विवाह हेतु २२ अप्रैल का मुहूर्त्त शुभ होगा। **कार्तिक** मास के मुहूर्त्त केवल पर्वतीय (पहाड़ी) क्षेत्रों में ही ग्राह्य माने जाते हैं। ध्यान रहे ! **विवाह के मास का निर्धारण** प्रधानतः लड़के (वर) की राश्यनुसार ही किया जाता है। **कन्या** की राशि से गुरु बल तथा दोनों में चन्द्र बल विशेष विचारणीय होता है। विवाह समय में अशुभ ग्रहों का यथाशक्ति दान व पूजा करवा लेनी चाहिए।

वर (लड़का)	वर-कन्या को शुभ एवं पूज्य मासादि	कन्या (लड़की)
मेष राशि–**अप्रैल** की २२, २३, २९, ३०, **मई** की १, २, ८, ९ १० ११, १२, **जून** की २२, २३, २४, २५, २६, २७, **जुलाई** की ३, ४, ५, ७–८–९–१० (चं.दा.), १३, **अगस्त** की १८, १९, २०, २१, २५, २७, २८, २९, **सितम्बर** की १–२ (चं.दा.) [**कार्तिक मासे अक्तू.** की २०, २१, २२, २३, २५–२६ (चं.दा.), ३०, ३१, **नवं.** की १, ६, ७, ८, ९] **सन् २००५ ई.** में **जनवरी** की १५–१६ (चं.दा.), २०, २१, २९, ३०, ३१ शुभ रहेंगी।	मेष के वर को आषाढ़, आश्विन, माघ व फागुन मास शुभ तथा वैशा. ज्ये., भाद्र व कार्तिक मासों में सूर्य का दान, पूजादिकरणीय हैं। श्रावण और मार्गशीष त्याज्य हैं। मेष की कन्या को २७ अग. से वर्षान्त तक गुरू पूज्य रहेगा।	**मेष राशि**–**अप्रैल** की २२, २३, २९, ३०, **मई** की १, २, ८, ९, १०, ११, १२, **जून** की २२, २३, २४, २५, २६, २७, **जुला.** की ३, ४, ५, ७–८–९–१० (चं.दा.), १३, **अग.** की १८, १९, २०, २१, २५, २७ २८, २९, **सितं.** की १–२ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की २०, २१, २२, २३, २५–२६ (चं.दा.), ३०, ३१, **नवं.** की १, ६, ७, ८, ९] **नवं.** की १७, १८ २१, २२–२३ (चं.दा.), २६, २७, २८, **दिसं.** की ४, ५, ६, ७, ८, ९, **सन् २००५ ई.** में **जन.** की १५–१६, २०, २१, २९, ३०, ३१ शुभ रहेंगी।
वृष राशि–**जून** की २२, २३, २४, २५–२६–२७ (चं.दा.), **जुलाई** की ३ (१३/१२ के बाद), ४, ५, ७, ८, ९, १०, १३ (चं.दा.) [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १७, २०, २१, २२, २३, २५, २६, ३०–३१ (चं.दा.), **नवं.** की १, ६, ७, ८–९ (चं.दा.), १३] **नवं.** की १७, १८, २१, २२, २३, २६–२७ (चं.दा.), २८, **दिसं.** की ४, ५–६–७ (चं.दा.), ८, ९, **सन् २००५ ई.** में **जनवरी** की १५, १६, २०–२१–२९–३०–३१ (चं.दा.), **फरवरी** की ३, ४, शुभ रहेंगी।	वृष के वर को श्रावण, कार्ति. फागु. मास शुभ तथा ज्ये., आषा., आश्वि. मार्ग. एवं माघ मासों में सूर्य पूजा रहेगी। वैशाख व भाद्र. मास त्जाज्य होंगे। वृष राशि की कन्या को २६ अग. तक गुरू विशेष रूप से पूज्य रहेगा।	**वृष राशि**–**अप्रैल** की २२–२३ (चं.दा.), २९, ३०, **मई** की १–२ (चं.दा.), ८ ९ (१८/०३ बाद), १०, ११, १२, **जून** की २२, २३, २४, २५–२६–२७, **जुला.** की ३ (१३/१२ बाद), ४, ५, ७, ८, ९, १०, १३ (चं. दा.), **अग.** की १८–१९–२० (चं.दा.), २१, २३, २४, २७, २८, २९, **सितं.** की १, २ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १७, २०, २१, २२, २३, २५, २६, ३०–३१, **नवं.** की १, ६, ७, ८–९, १३] **नवं.** की १७, १८, २१, २२, २३, २६–२७ (चं. दा.), २८, **दिसं.** की ४, ५–६–७ (चं.दा.), ८, ९, **सन् २००५ ई.** में **जन.** की १५, १६, २०–२१–२९–३०–३१, **फर.** की ३, ४ शुभ रहेंगी।
मिथुन राशि–**अप्रैल** की २२–२३ (चं.दा.), २९, ३०, **मई** की १–२ (चं.दा.), ८, ९ (18/02 तक), १२, **जून** की २२, २३, २४, २५–२६–२७ (चं.दा.), **जुला.** की ३ (13/11 तक), ५ (13/45 के बाद), ७, ८, ९, १०, १३ (चं.दा.), **अग.** की १८–१९–२० (चं.दा.), २१, २३, २४, २५, २९, **सितं.** की १, २ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १७, २२ (24/10 के बाद), २३, २५, २६, ३०–३१ (चं.दा.), **नवं.** की १, ६, ७, ८–९ (चं.दा.), १३] **नवं.** की २१, २२, २३, २६–२७–२८ (चं.दा.), **दिसम्बर** की ४–५–६–७ (चं.दा.), ८, ९ तारीखें शुभ होंगी।	मिथुन के वर को वैशा., भाद्र., मार्ग. में विवाह शुभ, आषा. श्राव., कार्ति. व फागु. में सूर्य पूजा ज्ये. आश्वि. व माघ मास त्याज्य हैं। मिथुन की कन्या को २७ अग. के बाद गुरू विशेषतः पूज्य होगा।	**मिथुन राशि**–**अप्रैल** की २२–२३ (चं.दा.), २९, ३०, **मई** की १–२ (चं.दा.), ८, ९ (१८/०२ तक), १२, **जून** की २२, २३, २४, २५–२६–२७ (चं.दा.), **जुला.** की ३ (१३/११ तक), ५ (१३/४५ के बाद), ७, ८, ९, १०, १३ (चं.दा.), **अग.** की १८–१९–२० (चं.दा.), २१, २३, २४, २५, २९, **सितं.** की १, २ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १७, २२ (24/10 बाद), २३, २५, २६, ३०–३१ (चं.दा.), **नवं.** की १, ६, ७, ८–९, १३] **नवं.** की २१, २२, २३, २६–२७–२८ (चं.दा.), **दिसं.** की ४, ५–६–७ (चं.दा.), ८, ९, **सन् २००५ ई.** में **जन.** की १५, १६, २०–२१, २९–३०–३१ (चं.दा.), **फर.** की तारीखें ३, ४ शुभ हैं।

वर (लड़का)	वर-कन्या को शुभ एवं पूज्य मासादि	कन्या (लड़की)
कर्क राशि—अप्रैल की २२, २३, २९, ३०, **मई** की १, २, ८, ९, १०, ११ (दि.ल.), **अगस्त** की १८, १९, २०–२१ (चं.दा.), २३, २४, २५, २७, २८, **सितम्वर** की १, २, **नवम्बर** की १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७, २८ (चं.दा.), **दिसं.** की ४, ५, ६, ७, ८–९ (चं.दा.), **सन् २००५ ई. में जन.** की १५, १६, २०, २१, २९, ३०, ३१ (चं.दा.), **फरवरी** की ३, ४ शुभ रहेंगी।	कर्क के वर को वैशा., ज्ये., आश्विन मास शुभ, श्राव. भाद्र., मार्ग. व माघ मासों में सूर्य पूजा आषा., कार्ति. व फागु. मास त्याज्य होंगे। कर्क की कन्या को २७ अग. के बाद गुरू सामान्य रूप से पूज्य होगा।	**कर्क राशि**—अप्रैल की २२, २३, २९, ३० **मई** की १, २, ८, ९, १०, ११ (दि.ल.), **जून** की २२, २३, २४, २५, २६, २७ (चं.दा.), **जुला.** की ३, ४, ५ (कन्या लग्न), ७, ८, ९, १०, १३, **अग.** की १८, १९, २०–२१ (चं.दा.), २३, २४, २५, २७, २८, **सितं.** की १, २ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १७, २०, २१, २२ (रा.ल. वृष], २५, २६, ३०, ३१, **नवं.** की १ (चं.दा.), ६, ७, ८, ९, १३] **नवं.** की १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७, २८ (चं.दा.), **दिसं.** की ४, ५, ६, ७, ८–९ (चं.दा.), **सन् २००५ ई. में जन.** की १५, १६, २०, २१, २९, ३०, ३१ (चं.दा.), **फर.** की ३, ४ शुभ रहेंगी।
सिंह राशि—अप्रैल की २२, २३, २९, ३०, **मई** की १, २, ८, ९, १०, ११, १२, **जून** की २२, २३, २४, २५, २६, २७, **जुलाई** की ३, ४, ५, ९ (रा.ल. वृष), १०, १३, **अग.** की १८, १९, २०, २१, २३–२४ (चं.दा.), २५, २७, २८, २९ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १७ (चं.दा.), २०, २१, २२, २३, ३०, ३१, **नवं.** की १, ६, ७, ८, ९, १३ (चं.दा.)] **सन् २००५ ई. में जन.** की २०, २१, २९, ३०, ३१, **फर.** की ३–४ (चं.दा.) शुभ होंगी।	सिंह के वर को ज्ये., आषा., कार्ति. व माघ मास शुभ, वैशा. भाद्र, आश्वि. व फागु. में सूर्य पूजा तथा श्रावण, मार्ग. मास त्याज्य होंगे। सिंह राशि की कन्या को २६ अग. तक गुरू की साधारण पूजा तत्पश्चात् शुभ होगा।	**सिंह राशि**—अप्रैल की २२, २३, २९, ३० **मई** की १, २, ८, ९, १०, ११, १२, **जून** की २२, २३, २४, २५, २६, २७, **जुला.** की ३, ४, ५, ९ (रा.ल. वृष), १०, १३, **अग.** की १८, १९, २०, २१, २३–२४, २५, २७, २८, २९ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १७ (चं.दा.), २०, २१, २२, २३, ३०, ३१, **नवं.** की १, ६, ७, ८, ९, १३ (चं.दा.)] **नवं.** की १७, १८, २६, २७, २८, **दिसं.** की ४, ५, ६, ७, ८, ९, **सन् २००५ ई. में जन.** की २०, २१, २९, ३०, ३१, **फर.** की ३–४ (चं.दा.) शुभ होंगी।
कन्या राशि—जून की २२–२३–२४ (चं.दा.), २५, २६, २७, **जुला.** की ३ (चं.दा.), ४, ५, ७, ८, ९ (रा. २५/३१ तक), १३ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १७, २०, २१, २२, २३, २५, २६, ३०, ३१, **नवं.** की १, ६–७–८ (चं.दा.), ९, १३] **नवं.** की १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७, २८, **दिसं.** की ४–५ (चं.दा.), ६, ७, ८, ९, **सन् २००५ ई. में जन.** की १५, १६, २०, २१, २९, ३०, ३१, **फर.** की ३, ४ शुभ होंगी।	कन्या राशि के वर को आषा., श्राव., मार्ग. व फागु. मास शुभ, ज्ये. आश्वि., कार्ति. व माघ में सूर्य पूजा तथा वैशा., भाद्र. त्याज्य होंगे। कन्या राशि की लड़की को २६ अग. विशेषतः पूज्य, उसके बाद साधारणतः पूज्य रहेगा।	**कन्या राशि**—अप्रैल की २२, २३, २९–३० (चं.दा.), **मई** की १, २, ८–९ (चं.दा.), १०, ११, १२, **जून** की २२–२३–२४ (चं.दा.), २५, २६, २७, **जुला.** की ३ (चं.दा.), ४, ५, ७, ८, ९ (रा. 25/31 तक), १३, **अग.** की १८ (चं.दा.), १९, २०, २१, २३, २४, २५ (चं.दा.), २७, २८, २९, **सितं.** की १, २ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १७, २०, २१, २२, २३, २५, २६, ३०, ३१, **नवं.** की १, ६–७–८ (चं.दा.), ९, १३] **नवं.** की १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७, २८, **दिसं.** की ४–५ (चं.दा.), ६, ७, ८, ९, **सन् २००५ ई. में जन.** की १५, १६, २०, २१, २९, ३०, ३१, **फर.** की ३, ४ शुभ होंगी।
तुला राशि—अप्रैल की २९, ३०, **मई** की १–२ (चं.दा.), ८, ९–१०–११ (चं.दा.), १२, **जून** की २२, २३, २४ २५–२६–२७ (चं.दा.), **जुला.** की ३–४–५ (चं.दा.), ७, ८, ९, १०, **अग.** की १८–१९–२० (चं.दा.), २१, २३, २४, २५, २७–२८ (चं.दा.), २९, **सितं.** की १, २ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १७, २०–२१–२२ (चं.दा.), २३, २५, २६, **नवं.** की १, ६, ७, ८–९ (चं.दा.), १३] **नवं.** की १७–१८ (चं.दा.), २१, २२, २३, २८ (रात्रि लग्न), **दिसं.** की ४, ५–६–७ (चं.दा.), ८, ९ शुभ होंगी।	तुला राशि के वर को वैशा., आषा., कार्ति., मार्ग. व फागु. में सूय पूजा, श्राव., भादों–शुभ तथा ज्ये., आश्विन, माघ मास त्याज्य होंगे। तुला की कन्या को २७ अग. के बाद गुरू विशेष रूप से पूज्य रहेगा।	**तुला राशि**—अप्रैल की २९, ३०, **मई** की १–२ (चं.दा.), ८, ९–१०–११ (चं.दा.), १२, **जून** की २२, २३, २४, २५–२६–२७ (चं.दा.), **जुला.** की ३–४–५, ७, ८, ९, १०, **अग.** की १८–१९–२० (चं.दा.), २१, २३, २४, २५, २७–२८ (चं.दा.), २९, **सितं.** की १, २ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १७, २०–२१–२२ (चं.दा.), २३, २५, २६, **नवं.** की १, ६, ७, ८–९, १३] **नवं.** की १७–१८ (चं.दा.), २१, २२, २३, २८ (15/28 के बाद), **दिसं.** की ४, ५–६–७ (चं.दा.), ८, ९, **सन् २००५ ई. में जन.** की १५, १६, २९–३०–३१ (चं.दा.), **फर.** की ३, ४ शुभ रहेंगी।
बृश्चिक राशि—अप्रैल. की २२, २३, २९, ३०, **मई** की १, २, ८, ९, १०, ११–१२ (चं.दा.), **अग.** की १८, १९, २०–२१ (चं.दा.), २३, २४, २५, २७, २८, २९ (चं.दा.), **सितं.** की १,२, **नवं.** की १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७, २८ (दि.ल.), **दिसं.** की ४, ५, ६, ७, ८–९ (चं.दा.), **सन् २००५ ई. में जन.** की १५, १६, २०, २१, २९, ३०, ३१ (चं.दा.), **फर.** की ३, ४, शुभ रहेंगी।	बृश्चिक राशि के वर को वैशा., भाद्र., आश्विनं, माघ मास शुभ, ज्ये. श्राव., मार्ग. मास पूज्य तथा आषा., कार्तिक व फागु. मास त्याज्य होंगे। बृश्चिक की कन्या को २६ तक गुरू साधारण तथा २७ अग. से विशेष रूप से पूज्य रहेगा।	**बृश्चिक राशि**—अप्रै. की २२, २३, २९, ३०, **मई** की १, २, ८, ९, १०, ११–१२, **जून** की २२, २३, २४, २५, २६, २७ (चं. दा.), **जुला.** की ३,४ ५ (चं. दा.), ७, ८, ९, १०, १३, **अग.** की १८, १९, २०–२१, २३, २४, २५, २७, २८, २९ (चं. दा.), **सितं.** की १, २, [कार्तिक मासे अक्तू. की १७, २०, २१, २२–२३ (चं. दा.), २५, २६, ३०, ३१, **नवं.** की ६, ७, ८, ९, १३] **नवं.** की १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७, २८ (दि. ल.), **दिसं.** की ४, ५, ६, ७, ८–९ (चं. दा.), **सन् 2005 ई. में जन.** की १५, १६, २०, २१, २९, ३०, ३१, **फर.** की ३, ४ शुभ होंगी।

वर (लड़का)	वर-कन्या को शुभ एवं पूज्य मासादि	कन्या (लड़की)
धनु राशि—अप्रैल की २२, २३, २९, ३०, **मई** की १, २, ८, ९, १०, ११, १२, **जून** की २२, २३, २४, २५, २६, २७, **जुला.** की ३, ४, ५, ७-८-९ (चं.दा.), १०, १३, **अग.** की १८, १९, २०, २१, २३-२४ (चं.दा.), २५, २७, २८, २९, **सितं.** की १-२ (चं.दा.) [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १७ (चं.दा.), २०, २१, २२, २३, २५-२६ (चं.दा.), ३०, ३१, **नवं.** की १, ६, ७, ८, ९, १३ (चं.दा.)] **सन् २००५ ई.** में **जन.** की १५-१६ (चं.दा.), २०, २१, २९, ३०, ३१, **फर.** की ३-४ (चं.दा.) शुभ रहेंगी।	धनु राशि के वर को ज्येष्ठ, आश्वि. कार्ति., फागु. मास शुभ, वैशा., आषा., भाद्र., माघ मासों में सूर्य पूजा तथा श्रा., मार्ग. मास त्याज्य होंगे। धनु की कन्या को अग. २७ के बाद गुरू साधारण रूप से पूज्य होगा।	**धनु राशि—अप्रैल** की २२, २३, २९, ३०, **मई** की १, २, ८, ९, १०, ११, १२, **जून** की २२, २३, २४, २५, २६, २७, **जुला.** की ३, ४, ५, ७-८-९ (चं.दा.), १०, १३, **अग.** की १८, १९, २०, २१, २३-२४ (चं.दा.), २५, २७, २८, २९, **सितं.** की १-२ (चं.दा.) [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १७ (चं.दा.), २०, २१, २२, २३, २५-२६, ३०, ३१, **नवं.** की १, ६, ७, ८, ९, १३ (चं.दा.)] **नवं.** की १७, १८, २१-२२-२३ (चं.दा.), २६, २७, २८, **दिसं.** की ४, ५, ६, ७, ८, ९, **सन् २००५ ई.** में **जन.** की १५-१६ (चं.दा.), २०, २१, २९, ३०, ३१ **फर.** की ३-४ (चं.दा.) शुभ रहेंगी।
मकर राशि—जून की २५, २६, २७, **जुला.** की ३, ४, ५, ७, ८, ९-१० (चं.दा.), १३ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १७, २०, २१, २२, २३, २५, २६, ३०, ३१ **नवं.** की १, ८ (रा.ल.), ९, १३] **मार्ग.** में **नवं.** की १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७, २८, **दिसं.** की ६, ७, ८, ९, **सन् २००५ ई.** में **जन.** की १५, १६, २०, २१, २९, ३०, ३१, **फर.** की ३, ४, शुभ होंगी।	मकर राशि को आषा. कार्ति. मार्ग. मास शुभ, ज्ये., श्राव. आश्वि., माघ व फागु. मासों में सूर्य पूजा तथा वैशा., भाद्र. मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को २६ अग. तक गुरू विशेषतया पूज्य रहेगा।	**मकर राशि—अप्रै.** की २२, २३, **मई** की १, २, ८-९ (चं.दा.), १०, ११, १२, **जून** की २५, २६, २७, **जुला.** की ३, ४, ५, ७, ८, ९-१० (चं.दा.), १३ **अग.** की १८ (16/23 के बाद), १९, २०, २१, २३, २४, २५ (चं.दा.), २७, २८, २९, **सितं.** की १, २ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १७, २०, २१, २२, २३, २५, २६, ३०, ३१, **नवं.** की १, ८ (रा.ल.), ९, १३] **मार्ग.** में **नवं.** की १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७, २८ **दिसं.** की ६, ७, ८, ९, **सन् २००५ ई.** में **जन.** की १५, १६, २०, २१, २९, ३०, ३१, **फर.** की ३, ४ शुभ होंगी।
कुम्भ राशि—अप्रै. की २२-२३ (चं.दा.), २९, ३०, **मई** की ८, ९-१०-११ (चं.दा.), १२, **जून** की २२, २३, २४, २७ (११/१० के बाद), **जुला.** की ३-४-५ (चं.दा.), ७, ८, ९, १०, १३ (चं.दा.), **अग.** की १८ (दि.ल. ६), २० (रा.ल.), २१, २३, २४, २५, २७-२८ (चं.दा.), २९, **सितं.** की १,२ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १७, २०-२१-२२ (चं.दा.), २३, २५, २६, ३०, ३१, **नवं.** की १, ६, ७, ८ (दि.ल.), १३] **मार्ग में नवं.** की १७-१८ (चं.दा.), २१, २२, २३, २६-२७-२८ (चं.दा.), **दिसं.** की ४, ५ (२६/५० तक), ८, ९ शुभ होंगी।	कुम्भ राशि के वर को विवाह में वैशा., मार्ग. श्राव. मास शुभ तथा आषा., भाद्र., कार्तिक व फागु. मासों में सूर्य की पूजा व दान रहेगा। ज्ये., आश्वि. माघ मास त्याज्य हैं। कुम्भ राशि की कन्या को २७ अग. के बाद गुरू विशेष रूप से पूज्य रहेगा।	**कुम्भ राशि—अप्रै.** की २२-२३ (चं.दा.), २९, ३०, **मई** की ८, ९-१०-११ (चं.दा.), १२, **जून** की २२, २३, २४, २७ (11/10 के बाद), **जुला.** की ३-४-५, ७, ८, ९, १०, १३ (चं.दा.), **अग.** की १८ (दि.ल. ६) २० (रा.ल.), २१, २३, २४, २५, २७-२८, २९, **सितं.** की १, २ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १७, २०-२१-२२ (चं.दा.), २३, २५, २६, ३०, ३१, **नवं.** की १, ६, ७, ८ (दि.ल.), १३] **नवं.** की १७-१८, २१, २२, २३, २६-२७-२८ (चं.दा.), **दिसं.** की ४, ५ (२६/५० तक), ८, ९, **सन् २००५ ई.** में **जन.** की १५, १६, २०-२१ (चं.दा.), ३१ (२५/०७ के बाद), **फर.** की ३, ४ शुभ होंगी।
मीन राशि—अप्रैल की २२, २३, २९, ३०, **मई** की १, २, ८, ९, १०, ११-१२ (चं.दा.), **अग.** की १८, १९, २३, २४, २५, २७, २८, २९ (चं.दा.), **सितं.** की १, २, **नवं.** की १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७, २८ (चं.दा.), **दिसं.** की ४, ५, ६, ७, २००५ ई. में **जन.** की १५, १६, २०, २१, २९, ३०, ३१ (दि. ल.), **फर.** को ३, ४ शुभ होंगी।	मीन के वर को ज्ये., भाद्र. व माघ मास शुभ, वैशा. श्राव., आश्विन व मार्ग मास पूज्य तथा आषाढ़, कार्तिक एवं फागुन मास त्याज्य होंगे। मीन राशि की कन्या को २६ अग. तक गुरू साधारण रूप से पूज्य रहेगा।	**मीन राशि—अप्रैल** की २२, २३, २९, ३०, **मई** की १, २, ८, ९, १०, ११-१२, **जून** की २२, २३, २४, २५, २६, २७ (11/09 तक), **जुला.** की ३, ४, ५ (चं.दा.), **जुला.** की ३, ४, ५ (चं.दा.), ७, ८, ९, १०, १३, **अग.** की १८, १९, २३, २४, २५, २७, २८, २९, **सितं.** की १, २ [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १७, २०, २१, २२-२३ (चं.दा.), २५, २६, ३०, ३१, **नवं.** की १ (चं.दा.), ६, ७, ८, ९, १३] **नवं.** की १७, १८, २१, २२, २३, २६, २७, २८, **दिसं.** की ४, ५, ६, ७, **सन् २००५ ई.** में **जन.** की १५, १६, २०, २१, २९, ३०, ३१ (दि. ल.), **फर.** की ३, ४ शुभ होंगी।

मुण्डन संस्कार मुहूर्त सं. २००४–०५ ई.

बालक की आयु के विषम वर्षों में, उत्तरायण मासों में तथा बालक की जन्म राशि से अष्टमस्थ राशि/लग्न को छोड़कर, ज्येष्ठ मास में बड़े (ज्येष्ठ) लड़के का मुण्डन करना शुभ नहीं। यदि बालक की माता गर्भवती हो, तो भी मुण्डन कार्य न करें। मुण्डन के समय, बालक को बढ़िया वस्त्राभूषणों से विभूषित नहीं करना चाहिए। कुल परम्परानुसार कुछ लोग नवरात्रों में अथवा अक्षय तीज आदि स्वयं सिद्ध मुहूर्तों में सिद्ध शक्ति पीठों में, देवी (माता) के मन्दिर में या तीर्थ स्थलों पर बिना मुहूर्त्त के भी मुण्डन आदि कर्म करवा लेते हैं।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वै. कृ. ११, गुरु	15 अप्रै.	३ वैशा.	शत	मुहूर्त्त अभिजित
वै. शु. ३, गुरु	22 अप्रै.	१० वैशा.	रोहिणी	मुहूर्त्त दुपै. 14/33 के बाद स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त
वै. शु. ६, चन्द्रे	26 अप्रै.	१४ वैशा.	पुनर्वसु	लग्न २, अभिजित
ज्ये. कृ. २, गुरु	6 मई	२४ वैशा.	अनु	प्रात: 8/04 तक, अभि. (राहु वेध दान व पू. अत्यावश्यके)
ज्ये.कृ.६/७, चंद्र	10 मई	२८ वैशा.	श्रवण	मु. प्रात: 7/12 तक, अभि. (अभि. में भद्रा का परिहार है)
ज्ये. कृ. ९, बुध	12 मई	३० वैशा.	धनि.	मु. 7/40 तक तदुपरांत सिंह ल. (12/18 से 14/39 तक)
आ. शु. १, शुक्र	18 जून	५ आषा.	मृग.	मुहूर्त्त प्रात: 9/18 तक घं.मिं.
(सन् 2005 ई. में)				
पौष शु. ७, रवि	16 जन.	४ माघ	रेवती	कुंभ ल. प्रात: 9/15 से 10.29 गुरु दान व पूजा, विप्राणां
पौष शु. ८, चन्द्र	17 जन.	५ माघ	अश्वि	ल. कुंभ (प्रा. 9 से 10/25), अभि. (राहु का दा. व पू.)
माघ कृ. ६, चन्द्र	31 जन.	१९ माघ	हस्त	लग्न मीन (प्रात: 9/30 से 10/52 तक) (चंद्र-गुरु का दान, अभिजित)
माघ कृ. ८, बुध	2 फर.	२१ माघ	स्वाती	लग्न कुंभ (प्रात: 7/57 से 9/22 तक) (गुरु की पूजा व दान)
मा. कृ.१०, शुक्र	4 फर.	२३ माघ	अनु	मु. 9/56 तक, भद्रा पूर्वे

गृहारम्भ में शुभाशुभ जानने हेतु ''सूर्यभात् वृष चक्र''

भाग	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ठ	सप्तम	अष्टम
बैल के अंग	शिर	अग्र-पाद	पृष्ठ-पाद	पृष्ठ	दक्ष-कुक्षि	पुच्छ	वाम-कुक्षि	मुख
नक्षत्र	३	४	४	३	४	३	४	३
फल	अग्नि दाह	शून्य	स्थिर	श्री लाभ	धन लाभ	स्वामी हानि	दरिद्रता	कष्ट दुख

विधि—बैल की आकृति बनाकर उसे आठ भागों में बांटे। सूर्य अधीष्ठित नक्षत्र से आरम्भ करके प्रत्येक भाग में उपरोक्त क्रमानुसार नक्षत्रों की स्थापना करके फल ज्ञात करें। जैसे—गृह निर्माण के समय सूर्य मघा नक्षत्र में हो, तो मघा, पूफा, उफा—यह ३ नक्षत्र प्रथम भाग (शिर्) पर आएंगे। इसी क्रम से अन्य सभी २७ नक्षत्रों की स्थापना करें। फिर चक्र में लिखे फलानुसार मुहूर्त्त का निर्णय करें। यदि प्रथम भाग में गृहारम्भ का सूर्य नक्षत्र पड़े तो अग्नि भय, यदि पंचम भाग में पड़े तो धन लाभ होगा।

नींव रखना एवं गृहारम्भ मुहूर्त्त सं. २०६१

शिलान्यास (नींव) एवं गृह निर्माण आरम्भ आदि मुहूर्तों में गृहस्वामी की राशि अनुकूलता देखकर, निम्न शुभ मुहूर्त्त में किसी विद्वान् ब्राह्मण द्वारा **वास्तु पूजन**, नवग्रह शान्ति, हवन, कन्या पूजन-ब्राह्मण भोजन, दानादि कृत्य करवाने के पश्चात् नींव, गृहारम्भ एवं गृह प्रवेशादि करना चाहिए। सभी मुहूर्त्त वृष चक्रानुसार विचारणीय रहेंगे।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वै. शु. ३, गुरु	22 अप्रै.	१० वैशा.	रोहिणी	दुपै. 2/33 उप., स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त (आवश्यकता में)
वै. शु. ५, शनि	24 अप्रै.	१२ वैशा.	मृग.	दिने 6/58 से 8/52 तक
वै. शु. ६, चन्द्रे	26 अप्रै.	१४ वैशा.	पुर्न.	दिने वृष व सिंह लग्न, अभिजित
वै. शु. ११, रवि	1 मई	१९ वैशा.	उफा.	मु. 11/39 के बाद भद्रोत्तरे, अभि.
ज्ये. कृ. ६, चंद्र	10 मई	२८ वैशा.	उषा.	दि. मु. 7/12 तक, भद्रापूर्वे
आ. शु. ८, शनि	26 जून	१३ आषा.	हस्त	सिंह (प्रा. 9/22 से 11/41 तक)
शु.श्रा.शु. ३, बुधे	18 अग.	३ भाद्र.	उ.फा.	मुहूर्त्त प्रात: 10/11 उप.
शु.श्रा.शु. ३, गुरु	19 अग.	४ भाद्र.	उ.फा.	मुहूर्त्त 10/53 तक
शु.श्रा.शु. ५/६, शनि	21 अग.	६ भाद्र.	चित्रा	दिने लग्न ६ (प्रात: 8/03 से 10/20 तक)
शु.श्रा.शु. ८, चंद्र	23 अग.	8 भाद्र.	अनु	मु. 9/55 उप., भद्रा स्वर्गेशुभा

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
शु.श्रा.शु.१५, चंद्रे	30 अग.	१५ भाद्र	शत.	ल. ८ (दुपै. 12/07 से 14/27 तक) अभि. च.)
का. शु. ७, गुरु	18 नवं.	४ मार्ग.	श्रवण	दिने 9/12 से 11/15 तक
का. शु. ११, चंद्रे	22 नवं.	८ मार्ग.	उ.भा.	दिने 9/06 तक
मार्ग कृ. १, शनि	27 नवं.	१३ मार्ग.	रोहिणी	दि. मु. 12/21 से 13/46 तक, अभिजित च.
मा. कृ. ५, बुध	1 दिसं.	१७ मार्ग.	पुष्य	मु. 10/47 के बाद मं. के. दान
मा. कृ. ५, गुरु	2 दिसं.	१८ मार्ग.	पुष्य	अभिजित, गुरु पुष्य योगे
मा. कृ. १२, गुरु	9 दिसं.	२५ मार्ग.	स्वाती	ल. ९ (धनु 7/49 से 9/52 तक)
(सन् 2005 ई. में)				
पौ.शु. ११, गुरु	20 जन.	८ माघ	रोहिणी	अभिजित मुहूर्त्त
माघ कृ. ६, चंद्र	31 जन.	१९ माघ	हस्त	दि. ल. १२ (चं., गु. दा.) (प्रात: 9/30 से 10/52 तक) अभि.
मा. कृ. १०, शुक्र	4 फर.	२३ माघ	अनु	मीन ल. (प्रा. 9/15 से 10/35 तक), अभि. (मीने चं.-गु. का दान)

गृह-निर्माण में महत्त्वपूर्ण

1. ईंट, लोहा, पत्थर, मिट्टी और लकड़ी—ये नये मकान में नये ही लगाने चाहिए।

2. ग्राह्य वृक्ष—अशोक, महुआ, साखू, असना, चन्दन, देवदारु, शीशम, श्रीपर्णी, तिन्दुकी, कटहल, खदिर, अर्जुन, शाल और शमी—इन वृक्षों की लकड़ी शुभ फल देने वाली है।

3. **पत्थर का प्रयोग**—वर्तमान में घरों में पत्थर का प्रयोग अधिक किया जाने लगा है ; परन्तु वास्तुशास्त्र में इसका प्रयोग निषिद्ध है। उदाहरणार्थ—

पाषाणतः सौख्यकरा नृपाणां धनक्षयं सोऽपि करोति गेहे॥

'पाषाण-पट्ट (पत्थर के पटरे) राजाओं के महल में सुखदायी होते हैं, पर दूसरे के घर में धनका नाश करते हैं।'

प्रासादे च मठे नरेन्द्रभवने शैलः शुभो नो गृहे।
तस्मिन् भित्तिषु बाह्यकासु शुभदः प्राग्भूमिकुम्भ्यां तथा॥

'मन्दिर, राजमहल और मठ में पत्थर शुभदायक है, पर साधारण घर में पत्थर शुभ नहीं है। परन्तु दीवार से बाहर लगाने में हानि नहीं।'

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त संवत् २०६१

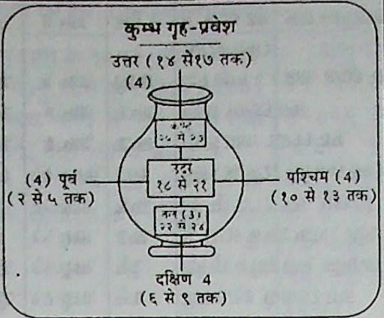
नवीन गृह प्रवेश में किसी सुयोग्य पण्डित जी द्वारा पूर्वतः सुनिश्चित किए गए मुहूर्त्त दिवस पर किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा **वास्तु शान्ति**, नवग्रह-पूजन-शान्ति, स्वस्ती वाचन एवं पंचदेव पूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों को यथाशक्ति भोजन-दानादि एवं कन्यापूजन

पूर्वक सवत्सा गाय, जलपूर्ण कलश तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं मंगल गान सहित नव गृह में प्रवेश करना चाहिए। सिद्धान्तानुसार भूमिशयन प्रविष्टों का विचार गृह निर्माण मुहूर्त्तों में ही करना चाहिए। कुछ ग्रंथकारों ने नव्य गृह प्रवेश में रविवार तथा मार्गशीर्ष मास को भी ग्राह्य माना है। देखें मु. पारिजात॥ अत: आवश्यक परिस्थितिवश मार्गशीर्ष मास भी ग्राह्य किया जा सकता है।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. शु. ३,गुरु	22 अप्रै.	१० वैशा.	रोहिणी	दुपै. 2/33 बाद. स्वयं सिद्ध
वै. शु. ५, शनि	24 अप्रै.	१२ वैशा.	मृग.	मुहूर्त 6/58 से 8/52 तक
वै. शु. ६, चन्द्र	26 अप्रै.	१४ वैशा.	पुर्न.	दि. ल. वृष व सिंह, अभि.
वै. शु. ११, शनि	1 मई	१९ वैशा.	उ.फा.	मु ११/३९ के बाद, भद्रोत्तरे अभि.
वै. शु. १२, रवि	2 मई	२० वैशा.	हस्त	दि. ल. २, ५, अभि., आवश्यके
ज्ये.कृ.६/७, चंद्र	10 मई	२८ वैशा.	उषा.	मु. प्रात: 7/12 तक भद्रापूर्वे
ज्ये. कृ. ९, बुधे	12 मई	३० वैशा.	धनि.	मु. प्रा. 5/46 से 7/41 तक
का. शु. ७, गुरु	18 नवं.	४ मार्ग.	श्रवण	दि. ल. ९, अभिजित्
का. शु. ८, शुक्र	19 नवं.	५ मार्ग.	धनि.	मु. 11/25 के बाद, अभि.
का. शु. ११,चंद्र	22 नवं.	८ मार्ग.	रेव.	मु. प्रा. 9/06 तक भीष्म पं. वि.
मार्ग.कृ. १, शनि	27 नवं.	१३ मार्ग.	मृग.	दिने मुहूर्त्त अभिजित्
मा. कृ. ५, गुरु	2 दिसं.	१८ मार्ग.	पुष्य	अभिजित, गुरु पुष्य योगे
मा.कृ. १२, गुरु	9 दिसं.	२५ मार्ग.	स्वा.	मुहू. 7/49 से 9/50 तक
	(सन् 2005 ई. में)			
पौ. शु. ११,गुरु	20 जन.	८ माघ	रोहिणी	मु. 11/44 उप., अभिजित
पौ. शु. १२,शुक्र	21 जन.	९ माघ	रोहिणी	दिने ल. मीन, गुरु का दान
माघ कृ. ५, रवि	30 जन.	१८ माघ	उ.फा.	ल. मीन (चं गु. दान), आवश्यके
मा. कृ. ६, चन्द्र	31 जन.	१९ माघ	हस्त	ल. मीन (चं. गु. का दान)
मा. कृ. ८, बुध	2 फर.	२१ माघ	स्वा.	मु. ल. मीन प्रा. 10/20 के बाद, अभि., २ (वृष ल. दुपै. 14/10 तक)
मा.कृ. १०, शुक्र	4 फर.	२३ माघ	अनु.	दिने लग्न १२ (चंद्र दान)

'गृह प्रवेश में कलश वास्तु चक्र'

नव गृह प्रवेश सम्बन्धी मुहूर्त्तों में और अधिक सूक्ष्मता प्राप्ति के लिए कलश-वास्तु चक्र का प्रयोग किया जाता है। किसी काल्पनिक कलश को आठ विभागों में बाँट लें। मुहूर्त काल में सूर्याधीष्ठित नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र (मुहूर्त्त वाला नक्षत्र) तक यथाक्रम नक्षत्र रखें। घट चित्र रेखांकित किया गया है। सूर्य नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र १ (समान) होने पर मुख पर स्थापित करें। सूर्य के नक्षत्र से आगे गिनने पर दो से पाँच अर्थात् आगे के चार नक्षत्र पूर्व दिशा में रखें, इसी प्रकार ६ से ९ तक चार नक्षत्र कलश के दक्षिण में रखें, फिर दस से तेरह तक चार नक्षत्र पश्चिम में रखें, फिर १४ से १७ तक चार नक्षत्र उत्तर में रखें तथा १८ से २१ तक चार नक्षत्र कलश के उदर में रखें, फिर २२ से २४ तक तीन नक्षत्र कलश के तल में रखें तथा शेष २५ से २७ तीन नक्षत्र कलश के कण्ठ में रखें। इसके बाद गृह प्रवेश का फल निम्न प्रकार जानें—



गृह-प्रवेश में नक्षत्र फल	फल
१. यदि मुख का नक्षत्र ही प्रवेश नक्षत्र हो	अग्नि से भय होता है।
२. पूर्व के चार नक्षत्रों में भवन	उजाड़ होने का भय होता है।
३. दक्षिण के चार नक्षत्रों में	धन लाभ होता है।
४. पश्चिम के चार नक्षत्रों में	धन-वैभव प्राप्त होता है।
५. उत्तर के चार नक्षत्रों में	कलह-क्लेश रहता है।
६. उदर के चार नक्षत्रों में	विनाश का भय रहता है।
७. तल के तीन नक्षत्रों में	स्थिरता (स्थायी वास) आती है।
८. कण्ठ के तीन नक्षत्रों में	गृहस्वामी की चिरायु हो।

पुरातन (जीर्ण) गृह प्रवेश मुहूर्त्त २०६१

पुरातन (पुराणे) गृह प्रवेश हेतु ऊपर दिए गए नूतन गृह मुहूर्त्तों के अतिरिक्त नीचे लिखे मुहूर्त्त भी ग्रहणीय होंगे। अस्थाई तौर पर किराये आदि के मकान में प्रवेश के लिए निम्नलिखित मुहूर्त्त ग्राह्य होंगे।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
आषा.शु. १,शुक्र	18 जून	५ आषा.	मृग.	मुहूर्त्त 9/18 तक
आ. शु. २/३, रवि	20 जून	७ आषा.	पुर्न	प्रात: 9/45 से 12/05 तक
शु.श्रा.शु. २/३, बुध	18 अग.	३ भाद्र.	उफा.	प्रात: 10/11 के बाद, अभि.
श्रा. शु. ३, गुरु	19 अग.	४ भाद्र.	उफा.	मुहूर्त्त प्रात: 8/12 तक
श्रा. शु. ५, शुक्र	20 अग.	५ भाद्र.	हस्त	मु. प्रात: 7/52 के बाद, अभि.
श्रा.शु. ५/६, शनि	21 अग.	६ भाद्र.	चित्रा	मु. प्रात: 8/02 से 10/20 तक
श्रा.शु. १२, शुक्र	27 अग.	१२ भाद्र.	उ.षा.	मु. दुपै. 2/30 के बाद
श्रा. शु. १५, चंद्र	30 अग.	१५ भाद्र.	शत.	मु. 7/26 से 9/45 तक, चं.दा.
भा. कृ. ४, गुरु	2 सितं.	१८ भाद्र.	रेव.	दिवा लग्न ६, ८, अभिजित्
भा. कृ. ७, बुध	20 अक्टू.	५ कार्ति.	उ.षा.	दुपै. 15/12 से 16/30 तक
भा. कृ. ८, गुरु	21 अक्टू.	६ कार्ति.	उ.षा.	दि. मुहूर्त्त ८, ९, अभिजित्
आश्वि शु. १०, शनि	23 अक्टू.	८ कार्ति.	धनि.	दि. मुहूर्त्त ८, ९, अभिजित्
आ.शु. १३, चंद्र	25 अक्टू.	१० कार्ति.	उ.भा.	दि.ल. ८,९ (धनु प्रा. 11/09 तक)
कार्ति.कृ. ४,चंद्र	1 नवं.	१७ कार्ति.	मृग.	दि. ल. ९ (धनु), चं. दा.
का. कृ. ६, बुधे	3 नवं.	१९ कार्ति.	पुर्न	९ (चंद्र दानं), अभिजित्
का. कृ. ७,गुरु	4 नवं.	२० कार्ति.	पुष्य	प्रात: 9/08 तक (भद्रा पूर्वे अभिजित, गुरु पुष्य योग:
का.कृ. ११, चंद्र	8 नवं.	२४ कार्ति.	हस्त	ल. ९, प्रात: 11/36 के बाद
का. शु. १, शनि	13 नवं.	२९ कार्ति.	अनु.	दिवा लग्न ९ (चन्द्र दान)

विपणि (दुकान आदि व्यवसाय) शुरू करने के मुहूर्त्त-२०६१

विपणि (दुकान) अथवा मध्यम स्तरीय कारोबार शुरु करने के मुहूर्त्त सभी प्रकार के व्यवसाय को प्रारम्भ करने में ग्राह्य होंगे। व्यवसाय प्रारम्भ करने से पूर्व मुहूर्त वाले दिन दुकानादि का स्वामी अपने कार्यालय में किसी विद्वान् ब्राह्मण द्वारा श्री गणपति सहित पंचदेव पूजा, नवग्रह पूजन, कलशस्थापनादि के पश्चात् ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दानादि करना चाहिए। व्यवसाय कर्त्ता के राशि स्वामी तथा दशाऽन्तर्दशा स्वामी की भी पूजा व दान आदि करें।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वै. कृ. १२,शुक्र	16 अप्रै.	४ वैशा.	पू.भा.	मु. अभि., सिंह लग्नं च.
वै. शु. ३, गुरु	22 अप्रै.	१० वैशा.	रोहिणी	दुपै. 2/33 उप. स्वयं सिद्ध मु.
वै. शु. ५, शनि.	24 अप्रै.	१२ वैशा.	मृग	प्रा. 6/58 से 8/52 तक, अभि.
वै. शु. ६, चंद्र	26 अप्रै.	१४ वैशा.	पुर्न	लग्न २, ५ एवं अभिजित्
वै. शु. ११, शनि	1 मई	१९ वैशा.	उ.फा.	मु. 11/39 के बाद, भद्रोत्तरे, अभि.
वै. शु. १२, रवि	2 मई	२० वैशा.	हस्त	ल. दिन २, ४, अभिजित्
ज्ये. कृ. ५, शनि	8 मई	२६ वैशा.	मूला	मु. दुपै. 12/34 के बाद
ज्ये. कृ. ५, रवि	9 मई	२७ वैशा.	उ.षा.	दिन लग्न सिंह
ज्ये. कृ. ६, चंद्र	10 मई	२८ वैशा.	उ.षा.	मु. प्रा. 7/12 तक, भद्रापूर्वे
आ. शु. १, शुक्रे	18 जून	५ आषा.	मृग	प्रा. 9/18 तक, चं. पू. व दा.
आ. शु. ८, शनि	26 जून	१३ आषा.	हस्त	लग्न सिंह, अभिजित्
आ. शु. १०,रवि	27 जून	१४ आषा.	चित्रा	ल. सिंह (11/10 बाद), अभि.
शु.श्रा.कृ. १,शनि	3 जुला.	२० आषा.	उ.षा.	लग्न सिंह, कन्या, अभि.

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
शु.श्रा.कृ. २.रवि	4 जुला.	२१ आषा.	श्रवण	लग्न कन्या, वृश्चिक अभि.
शु.श्रा.कृ. ३.चंद्र	5 जुला.	२२ आषा.	धनि.	लग्न ६, ८ (शुक्र दान)
शु.श्रा.कृ. ६.बुध	7 जुला.	२४ आषा.	पूभा	ल. सिंह (चं. दा.), अभि.
शु.श्रा.कृ. ७.गुरु	8 जुला.	२५ आषा.	उ.भा.	अभि., ल. कन्या (12/45 उप.)
शु.श्रा.कृ. ८.शुक्र	9 जुला.	२६ आषा.	रेव.	अभिजित, कन्या
शु.श्रा.शु. २.बुध	18 अग.	३ भाद्र.	उफा.	मु. प्रा. 10/11 उपरांत, अभि.
श्रा. शु. ३, गुरु	19 अग.	४ भाद्र.	उफा.	मु. प्रातः 8/12 तक, अभि.
श्रा. शु. ८, शनि	21 अग.	६ भाद्र.	चित्रा	लग्न कन्या, अभिजित्
श्रा. शु. १०.बुध	25 अग.	१० भाद्र.	मूला	ल. कन्या (मं. दा.), अभि.

कार्तिक में सूर्य की पूजा व दान आदि करना प्रशस्त होगा।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
आश्वि शु. ८,गुरु	21 अक्तू.	६ कार्ति.	उ.षा.	ल. वृश्चिक, धनु, अभि.
आ.शु. १०, शनि	23 अक्तू.	८ कार्ति.	धनि.	वृश्चि. व धनु (11/45 तक)
आ. शु. १३,चंद्र	25 अक्तू.	१० कार्ति.	उ.भा.	८ व ९, (धनु 11/09 तक)
का. कृ. ३, रवि	31 अक्तू.	१६ कार्ति.	रोहिणी	वृश्चि. (चं. दा.), अभिजित्
का. कृ. ५, चंद्र	1 नवं.	१७ कार्ति.	मृग	मुहूर्त्त दुपै. 2/57 उपरांत
का. कृ. ६, बुधे	3 नवं.	१९ कार्ति.	पुर्न.	लग्न धनु (चंद्र दान), अभि.
का. कृ. ७,गुरु	4 नवं.	२० कार्ति.	पुष्य	वृश्चिक लग्न (प्रातः 9/08 तक, भद्रा. पू.), अभि.
का. कृ. ११,चंद्र	8 नवं.	२४ कार्ति.	हस्त	दुपै. 11/36 के बाद
का. शु. १, शनि	13 नवं.	२९ कार्ति.	अनु.	लग्न धनु (चन्द्र दान)
का. शु. ७, गुरु	18 नवं.	४ मार्ग.	श्रवण	लग्न धनु, अभिजित्
का. शु. ८, शुक्र	19 नवं.	५ मार्ग.	धनि.	दुपै. 11/25 के बाद, भद्रा के बाद, अभिजित्
का. शु. ११,चंद्र	22 नवं.	८ मार्ग.	रेवती	मुहूर्त्त प्रातः 9/06 तक
मार्ग कृ. १, शनि	27 नवं.	१३ मार्ग.	मृग	अभिजित्
मा. कृ. ५, गुरु	2 दिसं.	१८ मार्ग.	पुष्य	अभिजित् (गुरु पुष्य योगे)
मा. कृ. १२,गुरु	9 दिसं.	२५ मार्ग.	स्वा.	प्रातः 7/49 से 9/50 तक

(सन् 2005 ई. में)

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
पौष शु. ७, रवि	16 जन.	४ माघ	रेव.	लग्न ९, गुरु दान
पौ. शु. ११,गुरु	20 जन.	८ माघ	रोह.	मु. 11/44 उप., अभिजित्
पौ. शु. १२,शुक्र	21 जन.	९ माघ	रोह.	मीन (गुरु का दान)
माघ कृ. ५, रवि	30 जन.	१८ माघ	उ.फा.	मीन चन्द्र-गुरु दान
मा. कृ. ६, चंद्र	31 जन.	१९ माघ	हस्त	मीन (चंद्र-गुरु दान)
मा. कृ. ८, बुध	2 फर.	२१ माघ	स्वा.	मीन 10/20 के बाद, अभि., २
मा.कृ. १०, शुक्रे	4 फर.	२३ माघ	अनु.	दि. ल. मीन (चं. दा.), अभि.

द्विरागमन (मुकलावा) मुहूर्त्त सं. २०६१

विवाह उपरांत पिता के गृह में आकर दूसरी बार पुनः पति के गृह में जाने को द्विरागमन (मुकलावा) कहते हैं। विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर ही द्विरागमन हो, तो निर्धारित मुहूर्त्तों के बिना भी वधू प्रवेश या द्विरागमन करवाना शुभ होता है। यद्यपि १६ दिन के भीतर भी द्विरागमन हो, तो भी अमावस, रिक्ता तिथि अथवा शूल, वार आदि अशुभ योग का विचार कर लेना चाहिए। इसके अतिरिक्त, नवविवाहिता स्त्री को विवाह के बाद द्विरागमन अथवा यात्रा में सम्मुख शुक्र एवं दक्षिण शुक्र का भी विचार किया जाता है—अर्थात् शुक्र जिस दिशा (पूर्व या पश्चिम) में उदित होता हो, उस दिशा में शुक्र सम्मुख तथा उससे दाहिनी ओर की दिशा दक्षिणस्थ दिशा मानी जाएगी।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वै. कृ. ११,गुरु	15 अप्रै.	२ वैशा.	शत.	दिन लग्न ५ (दुपै. 2/05 से 4/24 तक)
वै. शु. ३, गुरु	22 अप्रै.	१० वैशा.	रोह.	दुपै. 2/33 के बाद
वै. शु. ६, चन्द्र	26 अप्रै.	१४ वैशा.	पुर्न.	लग्न वृष, सिंह., अभिजित्
वै. शु. १३,चन्द्र	3 मई	२१ वैशा.	चित्रा	लग्न वृष, सिंह
ज्ये. कृ. ६,चन्द्र	10 मई	२८ वैशा.	उषा.	दि. मु. 7/12 तक, भद्रा पूर्वे
ज्ये. कृ. ९, बुध	12 मई	३० वैशा.	धनि.	प्रातः 5/46 से 7/41 तक
का. शु. ७, गुरु	18 नवं.	४ मार्ग.	श्रवण	दि. ल. 9/12 से 11/15 तक
का. शु. ८, शुक्र	19 नवं.	५ मार्ग.	धनि.	दुपै. 11/25 उप. भद्रा के बाद अभि.
का. शु. ११,चंद्र	22 नवं.	८ मार्ग.	उ.भा.	मुहू. प्रातः 9/06 तक
मार्ग. कृ. ५,बुध	1 दिसं.	१७ मार्ग.	पुष्य	मु. 10/47 के बाद (मीन लग्न मं.-के. दान)
मा. कृ. ५, गुरु	2 दिसं.	१८ मार्ग.	पुष्य	मु. अभि., गुरु-पुष्य योग
मा. कृ. ११,बुधे	8 दिसं.	२४ मार्ग.	चित्रा	ल. धनु (7/52 से 9/55 तक)
मा. कृ. १२,गुरु	9 दिसं.	२५ मार्ग.	स्वा.	ल. धनु (7/49 से 9/52 तक)

फाल्गुण में शुक्रास्त होने से मुकलावा (द्विरागमन) मुहूर्तों का अभाव रहेगा।

उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्त सं. २०६१

मुहूर्त्त ग्रंथों के मतानुसार ब्राह्मण बालक के गर्भधारण या जन्म-दिन से पंचम या अष्टम वर्ष में, क्षत्रिय का छटे या एकादश (११वें) वर्ष में एवं वैश्यों का आठवें या बारहवें वर्ष में उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार श्रेष्ठ कहा गया है। उपर्युक्त काल के द्विगुणित काल अर्थात् सोलहवें वर्षादि में ब्राह्मण का, २२वें वर्ष क्षत्रिय का और २४वें वर्ष वैश्य का यज्ञोपवीत मध्यम कहा गया है।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. शु. ५, रवि	25 अप्रै.	१३ वैशा.	आर्द्रा	आर्द्रायां शनि युति दोषः
वै. शु. ६, चन्द्रे	26 अप्रै.	१४ वैशा.	पुर्न.	लग्न अभि., कर्क, सिंह
वै. शु. ८, बुधे	28 अप्रै.	१६ वैशा.	आश्ले.	ल. मु. २.५ (वृष, सिंह), अभि.
वै. शु. १२, रवि	2 मई	२० वैशा.	हस्त	लग्न मु. २, ४, अभिजित्
ज्ये. कृ. ५, रवि	9 मई	२७ वैशा.	उ.षा.	२ (चं. ८वें पू., गु. केन्द्र प्रशस्त)
आ. शु. ६, गुरु	24 जून	११ आषा.	पू.षा.	मु. ल. ५ (चं. दा.), अभि.
आ. शु. ७, शुक्रे	25 जून	१२ आषा.	उ.फा.	मुहूर्त्त लग्न ५, अभिजित्

(सन् 2005 ई. में)

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
पौष शु. ५, शुक्र	14 जन.	२ माघ	पू.भा.	लग्न १२ (चंद्र दान), अभि.
पौ. शु. ७, रवि	16 जन.	४ माघ	रेवती	ल.१२ (चं. गु. दृष्ट्या शुभः)
पौ. शु. ११,गुरु	20 जन.	८ माघ	रोहिणी	मु. 11/44 उप., अभि.
पौ. शु. १२,शुक्र	21 जन.	९ माघ	रोहि.	ल. १२ (गु. दा.), अभि.
मा. कृ. ३, शुक्रे	28 जन.	१६ माघ	पू.फा.	ल. ११ (चं. पूज्य दा. वा), अभि.
मा. कृ. ५, रवि	30 जन.	१८ माघ	उफा/हस्त	ल. मीन (चं. गु. दा.), अभि.

सं. २०६१ में सर्वदेव प्रतिष्ठा (मूर्ति स्थापना) मुहूर्त्त

निम्न सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना, जलाशय, तालाब, बावड़ी, कुआं आदि के निर्माण हेतु भी ग्रहणीय होंगे। प्रायः सात्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना में उत्तरायण मास विशेष प्रशस्त माने जाते हैं। उत्तरायण में मुहूर्त्तों के अतिरिक्त भगवान् विष्णु की मूर्त्ति स्थापना में वामन जयन्ती, मत्स्य जयंती, अक्षया तृतीया, श्री कृष्ण मन्दिर की प्रतिष्ठा हेतु कृष्ण जन्माष्टमी, मार्गशीर्ष मास भी विशेष प्रशस्त है।

इसी भान्ति **श्री गणेश की मूर्त्ति** की स्थापना में उभा., रेवती नक्षत्र, मंगलवार, गणेश चतुर्थी विशेषकर भाद्रपद कृष्ण एवं शुक्ल चतुर्थी तिथि विशेषतः शुभ मानी जाती हैं।

श्री राम की मूर्त्ति स्थापना में उत्तरायण मासों के अतिरिक्त, अक्षया तृतीया, रामनवमी, विजयादशमी, दीपावली आदि विशेष शुभ है। श्री विष्णु प्रतिमा में माघ मास वर्जित माना जाता है।

श्री **शिव मूर्त्ति**, शिवलिंग की प्रतिष्ठा में श्रावण एवं फाल्गुण मास की चतुर्दशी (शिवरात्री) तथा अन्य त्र्योदशी तिथियां विशेषतया प्रशस्त है।

श्री दुर्गा माता, श्री महालक्ष्मी, सरस्वती, गौरी एवं काली माता की भी प्रतिष्ठा में दक्षिणायण (गुर्वास्तादि रहित) मास में नवरात्रे, शुक्ला तीज, अष्टमी/नवमी तिथि, मूला नक्षत्र, दीवाली एवं बसन्त पंचमी विशेष शुभ माने जाते हैं।

श्री हनुमान जी की मूर्ति स्थापना में चैत्र शु. पूर्णिमा, कार्तिक कृष्ण चौदश, मंगल, रविवार एवं आर्द्रा नक्षत्र विशेष शुभ माने जाते हैं।

श्री शनि देव एवं भैरव आदि तामसिक देवों की मूर्ति स्थापना में कृष्ण पक्ष की त्र्योदशी तिथियाँ, भावुका अमा., अनुराधा, पुष्य एवं उ.भा., शत. नक्षत्र, शनिवार विशेष प्रशस्त माने जाते हैं।

आगे वाले मुहूर्त श्री कृष्ण, श्री राम, शिव, श्री गणेश आदि सभी सात्त्विक देवों की प्रतिष्ठा हेतु ग्राह्य रहेंगे।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा.कृ.११,गुरु	15 अप्रै.	२ वैशा.	शत.	अभिजित, सिंह
वै. शु. ३, गुरु	22 अप्रै.	१० वैशा.	रोह.	दुपै. 2/33 के बाद
वै. शु. ४, शुक्र	23 अप्रै.	११ वैशा.	रोह.	श्री गणेश
वै. शु. ५, शनि	24 अप्रै.	१२ वैशा.	मृग.	6/58 से 8/52 तक
वै. शु. ६, चन्द्र	26 अप्रै.	१४ वैशा.	पुर्न	लग्न २, ५, अभिजित्
वै. शु. ११, शनि	1 मई	१९ वैशा.	उ.फा.	मु. 11/39 के बाद, अभि.
वै. शु. १२, रवि	2 मई	२० वैशा.	हस्त	लग्न २, ५, अभिजित
ज्ये.कृ. ५/६, रवि	9 मई	२७ वैशा.	उ.षा.	अभि. (12/10 उप.), आवश्यकत्वेन
ज्ये. कृ. ६, चन्द्र	10 मई	२८ वैशा.	उ.षा.	प्रात: 7/12 तक,
आषा.शु. १,शुक्रे	18 जून	५ आषा.	मृग.	प्रात: 9/18 तक
आषा.शु. २/३, रवि	20 जून	७ आषा.	पुर्न.	प्रात: 9/45 से 12/05 तक (शनि युत्या, शनि पूज्य (आवश्यके)
आ. शु. ३, चंद्रे	21 जून	८ आषा.	पुष्य	ल. ५, अभि., भौम युति भौम युत्यां भौम पूज्यं दानं
(सन् 2005 ई. में)				
पौष शु. ७, रवि	16 जन.	४ माघ	रेवती	लग्न ९, गु. दा., अभिजित्
पौ. शु. ११,गुरु	20 जन.	८ माघ	रोह.	मु. 11/44 उप., अभि.
पौ. शु. १२,शुक्र	21 जन.	९ माघ	रोह.	मीन (गुरु दान), अभि.
माघ कृ. ५, रवि	30 जन.	१८ माघ	उ.फा.	मीन, (चंद्र, गुरु दान)
मा. कृ. ६, चंद्र	31 जन.	१९ माघ	हस्त	मीन (चंद्र गुरु दान)
मा. कृ. ८, बुध	2 फर.	२१ माघ	स्वा.	मीन 10/20 के बाद, अभि., २
मा. कृ. १०,शुक्र	4 फर.	२३ माघ	अनु.	मीन (चंद्र दान), अभि.

श्री गणेश जी की मूर्ति स्थापना में २ सितं. (रेवती नक्षत्र), १८ सितं. (स्वाती), १ अक्टू. (मृगशिर) तथा २१ जन. (०५ ई०) को उ.फा. नक्षत्र (श्री गणेश संकट चतुर्थी) के दिन विशेषतया ग्राह्य रहेंगे॥

"औषधि तैयार करने के लिए शुभ मुहूर्त्त"

नीचे लिखे हुए नक्षत्र, वार, योग औषधि तैयार करने के लिए शुभ माने गये हैं—

नक्षत्र—अश्विनी, मृग, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूला, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा व रेवती।

वार—रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार।

अमृतसिद्ध योग पर रस क्रिया—अवलेह, आसव आदि तैयार करना चाहिए।

सर्वार्थसिद्ध योग पर चूर्ण आदि तैयार करना शुभ है।

अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, नक्षत्र, रविवार या बुधवार के दिन तेल, घृत, गोली, पाक, वटी आदि तैयार करना शुभ माना गया है।

आप्रेशन, चीड़-फाड़ के लिए लिखे हुए नक्षत्र, रविवार, मंगलवार व गुरुवार के दिन शुभ माने गये हैं।

कुछ विद्वानों का यह मत है कि लग्न भाव से वैद्य, द्वितीय भाव से औषधि और सप्तम भाव से व्याधि का विचार करना उत्तम समझा गया है। अतः यह तीनों भाव यदि शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो रोग का नाश होता है।

विशिष्ट औषधि उपचार आरम्भ के लिए—मृग, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूला, श्रवण, अश्विनी, धनिष्ठा व शतभिषा नक्षत्र तथा रवि, सोम, बुध, गुरु व शुक्रवार व रिक्ता -अमा. रहित तिथि को औषधि आरम्भ करने से रोगी को अवश्य लाभ होगा।

औषधि लेते समय तीन बार नीचे लिखे हुए मन्त्र को कहकर औषधि लेना यह प्राचीन पद्धति है, जिसके बल पर रोगी को लाभ होना निश्चित है।

"अच्युतानन्तगोविन्द नामोच्चारणभेषजात्। नश्यन्तु सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥"

औषधि सेवन करने के लिए ३-६-९-१२ राशि के लग्न होना आवश्यक है। परन्तु लग्न में चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र में से कोई भी एक ग्रह का होना और ७-८-१२ भाव में कोई भी ग्रह का न होना व जन्म नक्षत्र वर्ज्य करना भी आवश्यक है।

स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, अक्षया तृतीया, विजयादशमी, दीपावली (दीप ज्वलित कालिक स्वयं सिद्ध अणपुच्छ) मुहूर्त कहलाते हैं। आवश्यक परिस्थितिवश गृहारंभादि मुहूर्त्तों में कोई मुहूर्त्त न बन पड़े तो इन स्वयं सिद्ध मुहूर्त्तों में से शुभ कार्य का सम्पादन कर सकते हैं।

नामकरण संस्कार मुहूर्त्त
(अन्न प्राशन मुहूर्त्त भी ग्राह्य)

अपनी कुल परम्परा अनुसार सूतक समाप्ति के पश्चात् जन्मदिन से १०, ११, १२, १३, १६, १९ या २२वें दिन यह शुभ संस्कार करना चाहिए। मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व के विकास में उसकी प्रसिद्ध नाम राशि का विशेष महत्त्व होता है। व्यापार, व्यवहार सर्विस, संकल्पपूर्वक दान दीक्षा-मंत्र-सिद्धि आदि कार्यों में नाम की ही प्रधानता रहती है। नामकरण संस्कार अपने कुल के वृद्ध व्यक्ति, महात्मा, गुरु, पण्डित, ज्योतिषी, पिता या कुल पुरोहित जी से परामर्श के पश्चात् करना शुभ रहता है। मतान्तर से ब्राह्मण बालक/बालिका का १०वें या १२वें दिन, क्षत्रिय का ११वें या १२वें दिन, वैश्य का १६ या २०वें दिन नामकरण करना चाहिए।

विवाहादि शुभ कार्यों में विशेष दोषपूर्ण एवं त्याज्य मुहूर्त्त संवत् २०६१

नीचे वि. संवत् २०६१ में उन विशेष दोषपूर्ण एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्तों का विवरण दिया जा रहा है, जिनके अन्तर्गत विवाह नक्षत्र होते हुए भी उनको शुद्ध विवाह मुहूर्तों में सम्मिलित नहीं किया गया। जिज्ञासु पाठकों की शंका समाधान के लिए आगे कुछ अशुद्ध एवं त्याज्य विवाह मुहूर्तों का विवरण लिख रहें हैं जिनका मुख्यत: कोई शास्त्रीय परिहार नहीं मिलता है।—पं. पन्ना लाल

ता. मास	वार	वि. नक्षत्र	दोष विवरण
14 अप्रै.	बुध	धनि.	मृत्युबाण दोष
17 अप्रै.	शनि	उ.भा.	कृष्ण त्र्योदशी दोष
23 अप्रै.	शुक्र	मृग	मंगल की युति, मृत्युबाण
24 अप्रै.	शनि	मृग	मंग-शुक्र युति, मृ.बाण
3 मई	चन्द्र	चित्रा	ग्रहण पूर्व दिन वर्ज्य
3 मई	चन्द्र	स्वा.	ग्रहण पूर्वदि., केतु युति
4 मई	मंगल	स्वा.	ग्रहण शूल नक्षत्र
5 मई	बुध	अनु.	ग्रहण शूल दिन
6 मई	गुरु	अनु.	ग्रहण शूल
7 मई	शुक्र	मूला	ग्रहण शूल

14 मई से 7 जून तक गुरु सिंह के नवांश में
1 जून से 3 जून तक शुक्र वार्धक्य दोष
4 जून से 12 जून के मध्य शुक्रांस्त
13 से 15 जून के मध्य शुक्र बाल्यत्व

18 जून	शुक्र	मृग	क्षीण चंद्र, लग्नऽभाव:
20 जून	रवि	पुन	शनि की युति
21 जून	चन्द्र	पुष्य	मंगल की युति
25 जून	शुक्र	उ.फा.	मृत्युबाण दोष
27 जून	रवि	स्वा.	केतु-युति, ग्रहण शू.
28 जून	चन्द्र	स्वा.	केतु-युति, ग्रहणशूल
29 जून	मंगल	अनु.	राहु का वेध
30 जून	बुध	अनु.	राहु का वेध
1 जुला.	गुरु	मूला	शनि का वेध
2 जुला.	शुक्र	मूला	शनि का वेध
4 जुला.	रवि	धनि.	रात्रि 19/30 के बाद मृत्युबाण
14 जुला.	बुध	रोह.	दिवसे मृत्युबाण दोष
15 जुला.	गुरु	मृग.	कृष्ण त्र्यो., मासान्त

ता. मास	वार	वि. नक्षत्र	दोष विवरण
***18 जुला. से 16 अग. तक श्रावण अधि मास**			
17 अग.	मंगल	मघा	क्षीण चन्द्र, मृत्युबाण
19 अग.	गुरु	उफा.	लग्नऽभाव:
20 अग.	शुक्र	हस्त	लग्नऽभाव:
21 अग.	शनि	स्वा.	केतु की युति, ग्रहण शू.
22 अग.	रवि	स्वा.	केतु-युति, ग्रहणशूल
26 अग.	गुरु	उ.षा.	रात्रि लग्ने मृत्युबाण दोष
27 अग.	शुक्र	श्रवण	सूर्य का वेध
28 अग.	शनि	श्रवण	सूर्य का वेध
31 अग.	मंगल	उ.भा.	शूल योगे भुजंगपात
1 सितं.	बुध	उ.भा.	शूल योगे भुजंगपात
2 सितं.	गुरु	अश्वि.	राहु की युति क्रान्ति साम्य (13/17 से 17/16 तक)
3 सितं.	शुक्र	अश्वि.	राहु की युति

6 सितं. से 2 अक्तू. तक गुरु अस्त
3 अक्तू. से 5 अक्तू. गुरु बाल्यत्व
29 सितं. से 13 अक्तू. तक श्राद्ध

15 अक्तू.	शुक्र	स्वा.	मासान्त
16 अक्तू.	शनि	अनु.	संक्रान्ति दोष
18 अक्तू.	चन्द्र	मूला	शनि का वेध
19 अक्तू.	मंगल	मूला	शनि का वेध
22 अक्तू.	शुक्र	श्रवण	शूल योगे भुजंगपात
27 अक्तू.	बुध	रेव.	भद्रा दोष व्याप्त
27 अक्तू.	बुध	अश्वि	राहु की युति
28 अक्तू.	गुरु	अश्वि	राहु की युति
14 नवं.	रवि	मूला	मासान्त
15 नवं.	चन्द्र	मूला	संक्रान्ति दोष.
16 नवं.	मंगल	उ.षा.	भुजंगपात

ता. मास	वार	वि. नक्षत्र	दोष विवरण
17 नवं.	बुध	उ.षा.	मृत्युबाण दोष.
19 नवं.	शुक्र	धनि.	भद्रा दोष व्याप्त.
23 नवं.	मंगल	अश्वि.	राहु की युति
3 दिसं.	गुरु	मघा	भद्रा दोष व्याप्त
8 दिसं.	बुध	चित्रा	केतु-युति दोष:
14 दिसं.	मंगल	उ.षा.	मासान्त
15 दिसं. से 12 जन. 2005 ई. तक पौष मास			
15 जन.	शनि	उ.भा.	दिने मृत्युबाण दोष:
17 जन.	चन्द्र	अश्वि.	राहु-युति, भद्रा.
21 जन.	शुक्र	मृग	सूर्य का वेध
22 जन.	शनि	मृग	सूर्य का वेध.
26 जन.	बुध	मघा	सूर्य का वेध
27 जन.	गुरु	मघा	सूर्य का वेध
1 फर.	मंगल	चित्रा	केतु-युति, भुजंगपात
1 फर.	मंगल	स्वा.	भुजंगपात, मृत्युबाण
2 फर.	बुध	स्वा.	मृत्युबाण
5 फर.	शनि	मूला	भौम युति, शनि वेध
6 फर.	रवि	मूला	भौम युति, शनि वेध
7 फर.	चन्द्र	उ.षा.	कृष्ण त्र्योदशी

9 फर. से 11 फर. तक शुक्र वार्धक्य
12 फर. 05 से संवत् के अन्त तक शुक्र पूर्व में अस्तंगत रहेगा॥

अभिजित और गोधूली लग्न

सूर्योदय काल में जो लग्न रहता है, उससे चतुर्थ लग्न का नाम अभिजित् है और सूर्योदय कालिक लग्न से सातवाँ गोधूलि लग्न कहलाता है। ये दोनों विवाह में पुत्र-पौत्र की वृद्धि करने वाले होते हैं॥ नारद ॥

अभिजित मुहूर्त्त

श्री नारदानुसार अभिजित मुहूर्त्त काल में क्रियमाण सभी कर्म प्रायः सफल होते है। भगवान् विष्णु के सुदर्शन चक्र की भान्ति अभिजित् मुहूर्त्त सब दोषों को नाश कर देता है–

दिनमध्यगते सूर्ये मुहूर्त्ते हि अभिजित् प्रभुः।
चक्रमादाय गोविन्दः सर्वान्दोषान्निकृन्तति॥

दिनमान के अर्ध भाग में स्थानीय सूर्योदय जमा कर देने से अभिजित् मुहूर्त्त का मध्य भाग निकल आता है। 'नारद पुराण' के अनुसार अभिजित् के मध्याह्न काल से १ घटी अर्थात् २४ मिनट पूर्व और मध्याह्न से २४ मिनट पश्चात् तक के समय को अभिजित् काल कहा जाता है।

ध्यान रहे, बुधवार के दिन अभिजित मुहूर्त्त नहीं ग्रहण करना चाहिए॥

उदाहरण—मान लो, आपने २८ नवम्बर को अभिजित मुहूर्त्त का समय जानना है, तो उस दिन के दिनमान (२५/३० घटी पल) का अर्धभाग १२ घड़ी, ४५ पल होंगे। इस अर्ध भाग के ५ घंटे, ६ मिंट बनते हैं। इनको उस दिन में जालन्धर के सूर्योदय ७/१० घं. मिं. में जमा कर देने से दुपै. १२ बजकर १६ मिंट पर अभिजित मुहूर्त्त का मध्यकाल होगा। इससे २४ मिंट पूर्व अर्थात् ११/५२ घं. मिं. से अभिजित का प्रारंभ काल तथा (१२/१६ + ००/२४ मिंट = १२ घं. ४० मिंट पर अभिजित का समाप्ति काल (घंटा मिंट) होगा।

विवाहादि शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि विचार

विवाह, मुण्डन, गृहारम्भादि शुभ कार्यों में मास, तिथि, नक्षत्र, योगादि की शुद्धि के साथ विवाह लग्न की शुद्धि को विशेष महत्त्व एवं प्रधानता दी गई है। तिथि को शरीर, चन्द्रमा को मन, योग-नक्षत्रों आदि को शरीर के अंग तथा लग्न को आत्मा माना गया है। यथा-

तिथिः शरीरं मन इन्दुवीर्यं विलग्नमात्माऽवयवास्तु-भाद्याः —ज्योर्तिनिबंध

लग्न बल के बिना जो कुछ भी शुभ कार्य किया जाता है, उसका फल वैसे ही व्यर्थ हो जाता है, जैसे ग्रीष्मकाल में बिना जल के नदी।

लग्नवीर्यं विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरिता यथा॥ —ज्योति. विदरणे

सभी शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि का विशेष महत्त्व है।

विवाह लग्न का निश्चय करना हो, तो त्रिदिक्रम-संहितानुसार, लग्न स्थान में चन्द्र तथा सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह न हों, लग्न से छठे स्थान में शुक्र, चन्द्र, व लग्नेश न हो तथा आठवें स्थान में चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व लग्नेश नहीं होने चाहिएं तथा सप्तम स्थान में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए। **सातवें चन्द्र** और गुरु समफल करते हैं। अर्थात् चन्द्र, गुरु का दानादि करने से शान्ति हो जाती है।

विवाह लग्न में अशुभ एवं पूज्य ग्रह

× × | चंद्र | शनि
शुक्र | विवाह सभी पाप ग्रह | × ×
राहु | मंगल
× × | सभी ग्रह [चं.-गु.] (परिहार) | × ×
लग्नेश शुक्र, चंद्र | चं. मं. लग्नेश शुभ ग्रह

"त्याज्या लग्नेऽब्दयो मंदः षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः।
रन्ध्रे-चन्द्रादयः पंच, सर्वेऽब्जगुरु समौ॥"

परिहारस्वरूप १२वें शनि, तीसरे शुक्र, चतुर्थ में राहु, दशम भाव में मंगल का दोष यथोचित दानादि करने से शान्ति हो जाती है। 'पंचांगदिवाकर' में लगाए गए लग्न मुहूर्तों में इन तीनों भावों में शनि, शुक्र व मंगल ग्रहों की स्थिति हो वहां उचित दानादि करवा लें।

आगे षष्ठाष्टम एवं द्वादश चन्द्र, शुक्र, अष्टम भौम, लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ चन्द्र गुरु आदि के अपवाद (परिहार) लिखे गए हैं।

विवाह में ग्राह्य शुभ लग्न—मुहूर्त ग्रन्थों के अनुसार विवाह लग्न काल में ३, ६, ८, ११वें सूर्य तथा इन्हीं स्थानों (३, ६, ११) में राहु, केतु और शनि भी शुभ होते हैं। ३, ६ और ११वें **मंगल**, २, ३, ११वें **चंद्रमा**, ३, ६, ७ शुभ और ८वें स्थानों को छोड़कर अन्य भावों में स्थित **शुक्र** शुभ होता है। ग्यारहवें भाव में सूर्य तथा केन्द्र त्रिकोण में गुरु लग्नगत अनेक दोषों का परिहार करते हैं—

लग्ने वर्गोत्तमे वेन्दौ द्यूनाथे लाभगेऽथवा।
केन्द्र कोणे गुरौ दोषा नश्यन्ति सकलाऽपि॥ मु. गणपति॥

विवाह लग्न सम्बन्धी परिहार वाक्य

जन्म राशि से अष्टमस्थ लग्न—वर कन्या की जन्म राशि या लग्न से चतुर्थ, अष्टम तथा बारहवी राशिस्थ लग्न अशुभ कहे गए हैं। यथोक्तम्—

सुखघ्नं तुर्यमुद्वाहे द्वादश वित्तनाश कृत्। जन्म भात् जन्म लग्नाच्च मृत्युदंलग्नमष्टमम्॥

परन्तु परिहार स्वरूप जन्म राशि या लग्न राशि का स्वामी तथा विवाह लग्न का **स्वामी ग्रह समान** हो, अथवा **मित्र क्षेत्री** हो, अथवा अष्टमस्थ लग्न राशि का **स्वामी**, **केन्द्र** स्थित हो अथवा गुर्वादि शुभ ग्रह से वीक्षित हो तो अष्टम लग्न का दोष दूर होता है।

कर्तृरि दोष—लग्न में पापी ग्रह मार्गी होकर १२ भाव में तथा क्रूर (पापी) ग्रह वक्री गत होकर दूसरे भाव में हो, तो कर्तृरि **दोष** होता है। यह योग दारिद्रय, शोक व मृत्यु तुल्य कष्टकारी होता है।

परिहार—कर्तृरि दोष कारक ग्रह **नीच**, शत्रु क्षेत्री, अथवा अस्तगत हो, तो इस दोष का परिहार हो जाता है। इसके अतिरिक्त गुरु, शुक्र, बुध इनमें से कोई शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में अथवा २रे या १२वें भावस्थ गुरु हो तो भी कृर्तरि दोष निवार्य हो जाता है।

अष्टम भौम का परिहार—मंगल अस्तंगत, नीच राशि का (कर्क) या शत्रु राशि (मिथुन एवं कन्या) का होकर अष्टम स्थान में हो, तो दोषकारक नहीं, परन्तु लग्नेश होकर अष्टमगत नहीं होना चाहिए। **अस्तगे नीचगे भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।**
कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते॥ कश्यप॥

छठे, बारहवें चन्द्र का परिहार—नीच राशि, शत्रु राशि या नीच-राशिगत चन्द्रमा ६ या १२वें स्थानस्थ होना दोषपूर्ण नहीं माना गया। जैसे-बृश्चिक, मिथुन, कन्या राशि ३, ६

नीचराशिगते चन्द्रे नीचांशगतेऽपि वा, चन्द्रे षष्ठारि-रिः फस्थे दोषो नास्ति न संशयः।

परन्तु लग्नेश होकर चन्द्र षष्ठाष्टम नहीं होना चाहिए।

लग्नस्थ चन्द्र का परिहार—"कर्किगोस्थः पूर्णो विधुस्तनौ"

व्रतबन्धोक्त अनुसार वृष, कर्क एवं पूर्ण चन्द्रमा या शुभग्रह से दृष्ट हो लग्न में दोषकारक नहीं होता। मु. मार्त्तंड

षष्ठाष्टमस्थ शुक्रापवाद—नीच एवं शत्रु राशिगत शुक्र छठे, आठवें हो तो दोषकारक नहीं परन्तु लग्नेश होकर इन भावों में न हो। जैसे—

नीच राशिगते शुक्रे शत्रु क्षेत्रगतेऽपि वा।
भृगु षट्कोत्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः॥ मु. चिं. पीयूषधारा

सप्तम भावस्थ चन्द्र-गुरु—सप्तम भाव में यद्यपि सभी ग्रह वर्जित कहे हैं, परन्तु चन्द्र गुरु का परिहार है। **"चन्द्र चान्द्री शुक्रजीवा यामित्रे शुभकारकाः।"**

'मुहूर्त्तगणपति' अनुसार विवाहादि शुभ कार्य के लग्न में, केन्द्र-त्रिकोण में **गुरु**, **शुक्र** एवं **बुध** एवं ग्यारहवें भाव में चन्द्र या सूर्य अथवा सप्तमेश हो, तो अनेक दोषों का नाश हो जाता है।

वेध दोष परिहार—पंचशलाका चक्रानुसार विवाह नक्षत्र का क्रूर ग्रह द्वारा वेध हो जाने पर विवाहित नक्षत्र सर्वथा त्याज्य माना जाता है। परन्तु गुरु, बुध आदि सौम्य ग्रहों का चरण वेध (१ एवं ४थे चरण के मध्य तथा २ रे व ३ रे चरण ही अशुभ माना है।—**ज्योतिनिबन्ध**

युतिदोष परिहार—पाप एवं क्रूर ग्रह की युति त्याज्य मानी जाती है। परन्तु यदि चन्द्रमा उच्चस्थ, स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री (वृष, कर्क, मिथुन, सिंह एवं कन्या) राशि का हो तो युतिदोष अविचारणीय होता है।

दग्धा तिथि परिहार—विवाह लग्न समय केन्द्र–त्रिकोण गत गुरु हो एवं एकादश (११वां) भाव शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो दग्धातिथि का दोष नहीं रहता। —मु० गणपति

पंचांगदिवाकर में शुभ विवाह मुहूर्तों में जहाँ कहीं अशुभ योग का स्पर्श हुआ है, वहां पर सम्बन्धित देवता, ग्रहादि का दान व पूजा का उल्लेख कर दिया गया है।

भद्रा का शुभाशुभ विचार

भद्राकाल में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, रक्षा बन्धन आदि मांगलिक कृत्यों का निषेध माना जाता है, परन्तु भद्रा काल में शत्रु का उच्चाटन करना, स्त्री प्रसंग में, यज्ञ करना, स्नान करना, अस्त्र–शस्त्र का प्रयोग, आप्रेशन करना, मुकद्दमा करना, अग्नि लगाना, किसी वस्तु को काटना, भैंस, घोड़ा, ऊँट सम्बन्धी कर्म प्रशस्त माने जाते हैं।

भद्रा परिहार विचार—सामान्य परिस्थितियों में विवाह आदि शुभ मुहूर्तों में भद्रा का त्याग ही करना चाहिए, परन्तु अत्याधिक परिस्थितिवश भूलोक की भद्रा, अथवा भद्रा मुख, कण्ठ एवं हृदयगत भद्रा को छोड़कर भद्रा पुच्छ में शुभ कृत्य किए जा सकते हैं।

कार्येत्वाश्यके विष्टेर्मुख, कण्ठहृदि मात्रं परित्येत्।

भविष्य पुराणानुसार—भद्रा की **पाँच घड़ी** मुख में, दो घड़ी **कण्ठ में, ११ घड़ी हृदय में,** चार घड़ी नाभि में, पाँच घड़ी कटि में और तीन घड़ी पुच्छ में स्थित रहती है। जब भद्रा मुख में रहती है, तब कार्य का नाश होता है, कण्ठ में धन का नाश, हृदय में प्राणों का भय, नाभि में कलह, कटि में अर्थभंश होता है, पर पुच्छ में निश्चित रूप में विजय एवं कार्य सिद्धि हो जाती है—

मुखेतु घटिकाः पंच द्वे कण्ठे तु सदा स्थिते। हृदि चैकादश प्रोक्ताश्चतस्रो नाभिमण्डले॥
कट्यां पंचैव विज्ञेयातिस्त्राः पुच्छे जयावहाः। मुखे कार्य विनाशाय ग्रीवायां धननाशिनी॥

एक अन्य मतानुसार अत्यावश्यक स्थिति में रात्रि में तिथि के पूर्वार्द्ध की भद्रा, दिन में परार्ध की भद्रा ग्रहण कर सकते हैं।

तिथेः पूर्वार्धजा रात्रौ दिने भद्रा परार्धजा। भद्रा दोषो न तत्र स्यात् कार्येऽत्यावश्यके सति॥

भद्रा दोष निवारण के उपाय—भविष्य पुराणानुसार जिस दिन भद्रा हो और परमावश्यक परिस्थितिवश कोई शुभ कार्य करना ही पड़े तो उस दिन उपवास करना चाहिए तथा एक भुक्त रहना चाहिए। प्रातः स्नानादि के उपरान्त देव, पितरि आदि तर्पण के बाद कुशाओं की भद्रा की मूर्त्ति बनाए और पुष्प, धूप, दीप, गन्ध, नैवेद्य आदि से उसकी पूजा करें, फिर भद्रा के बारह नामों से हवन में १०८ आहुतियाँ देने के पश्चात् तिल और खीरादि सहित ब्राह्मण को भोजन कराकर स्वयं भी मौन होकर तिल मिश्रित कृशरान्न का अल्प भोजन करना चाहिए। फिर पूजन के अन्त में इस प्रकार मंत्र द्वारा प्रार्थना करते हुए कल्पित भद्राकुश को लोहे की पतरी पर स्थापित कर काले वस्त्र का टुकड़ा, पुष्प, गन्ध आदि से पूजित कर प्रार्थना करें—

छाया सूर्य सुते देवि विष्टिरिष्टार्थदायिनी। पूजितासि यथाशक्त्या भद्रे भद्रप्रदा भव॥

फिर तिल, तैल, सवत्सा काली गाय, काला कम्बल और यथाशक्ति दक्षिणा के साथ ब्राह्मण का सत्कार करे। भद्रा मूर्त्ति को बहते पानी में विसर्जित कर देना चाहिए। इस प्रकार विधिपूर्वक जो भी व्यक्ति भद्रा व्रत और व्रत का उद्यापन करता है, उसके किसी भी कार्य में विघ्न नहीं पड़ते। भद्रा व्रत करने वाले व्यक्ति को प्रेय, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी तथा ग्रह आदि कष्ट नहीं देते।

भद्रा के बारह नाम—(१) धान्या, (२) दधि मुखी, (३) भद्रा, (४) महामारी, (५) खरानना, (६) कालरात्रि, (७) महारूद्रा, (८) विष्टि, (९) कुलपुत्रिका, (१०) भैरवी, (११) महाकाली, (१२) असुरक्षयकरी॥

उपरोक्त विधि से १०८ बार आहुतियां देने के अतिरिक्त, जो व्यक्ति प्रातःकाल उठकर भद्रा के १२ नामों का श्रद्धापूर्वक स्मरण करता है, उसे किसी व्याधि का भय नहीं होता। रोगी रोगमुक्त हो जाता है। सभी ग्रह अनुकूल फल देते हैं। उसके कार्यों में विघ्न नहीं होते। यथा—

द्वादशैव तु नामानि प्रातरूत्थाय यः पठेत्। न च व्याधिर्भवेत् तस्य रोगी रोगात् प्रमुच्यते।
ग्रहाः सर्वेऽनुकूलाः स्युर्न च विघ्नादि जायते। रणे राजकुले द्यूते सर्वत्र विजयी भवेत्॥

भद्रा परिहार

कुछ आवश्यक स्थितियों में भद्रा दोष का परिहार हो जाता है। यथा—

तिथि पूर्वार्धजा भद्रा दिवा भद्रा प्रकीर्तिता। तिथिरुत्तरजा भद्रा रात्रिभद्रेति कव्यते॥
दिवा भद्रा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिवा। तदाविष्टिकृतो–दोषो न, भवेत्सर्व सौख्यदः॥

अर्थात् तिथि के पूर्वार्द्ध भाग में प्रारम्भ भद्रा अर्थात् तिथि दिवस के पूर्वार्ध भाग में प्रारम्भ भद्रायादि तिथ्यन्त में रात्रिव्यापिनी हो जाए, तो दोषकारक न होकर सुखदायिनी हो जाती है।

(ii) **पीयूषधारानुसार—दिन की भद्रा रात्रि को और रात्रि की भद्रा दिन को आ जाए, तो भद्रा दोषरहित हो जाती है।**

रात्रिभद्रा यदहि स्याद् दिवा भद्रा यदा निशि। न तत्र भद्रादोषः, सा भद्रा–भद्र दायिनी॥
—पीयूषधारा

(iii) ''दिवा परार्द्धजा विष्टिः, पूर्वार्द्धोत्था निशि।
तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम्॥''

उत्तरार्ध की भद्रा दिन में, तथा पूर्वार्द्ध की रात्रि में शुभ होती है।

भद्रा लोक वास

मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक का चन्द्रमा होने से भद्रा **स्वर्ग लोक** में, कन्या, तुला, धनु, मकर का चन्द्रमा होने से **पातल** में, कर्क, सिंह, कुम्भ व मीन राशि के चन्द्रमा में भद्रा **मर्त्यलोक** (भू

लोक) में–अर्थात् **सम्मुख रहती है।** जब भद्रा भू–लोक में (सम्मुख) रहती है, अशुभफल दायिनी एवं वर्जित मानी जाती है, अन्य लोकों में हो, तो शुभ है–

लोकवास	स्वर्ग	पाताल	भू–लोक
चन्द्रराशि	१, २, ३, ८	६, ७, ९, १०	४, ५, ११, १२
भद्रा–मुख	ऊर्ध्वमुखी	अधोमुख	सम्मुख

मर्त्यलोकस्थ (४, ५, ११, १२) राशियों में स्थित **चन्द्रकालीन** भद्रा दिन में उत्तरार्ध वाली रात्रि में शुभ होगी।

(iv) शुक्ल पक्ष की भद्रा का नाम **बृश्चिकी** है। कृष्ण पक्ष की भद्रा का नाम **सर्पिणी** है। **मतान्तर से**, दिन की **भद्रा सर्पिणी**, रात्रि की भद्रा **बृश्चिकी** है। बिच्छू का विष डंक में तथा सर्प का विष मुख में होने के कारण **बृश्चिकी** भद्रा की पुच्छ और **सर्पिणी** भद्रा का मुख विशेषतः त्याज्य है।

(v) भद्रा दोष, मंगल–शनिवार जनित दोष, व्यतीपात, अष्टम भावस्थ एवं जन्म नक्षत्र दोष, मध्यान्ह के पश्चात् शुभकारक मानी जाती है।

गोधूलि काल

विवाह मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों की शुद्धि उपरान्त यदि अभिवांछित मुहूर्त्त में शुद्ध विवाह–लग्न न निकलता हो, तो मुहूर्त्त ग्रन्थाचार्यों ने गोधूलि का लग्न ग्रहण करने की सम्मति प्रदान की है।

गोधूलि काल–जब सूर्यास्त न हुआ हो (अर्थात् सूर्यास्त होने वाला हो) और गाय आदि चौपाय अपने–अपने गृहों को लौटते हुए अपने खुरों से पथ की धूलि को आकाश में उड़ाकर जाने लगें, तो उस काल को मुहूर्त्तकारों ने **गोधूलि काल** का नाम प्रदान करते हुए, इसे विवाहादि सब मांगलिक कार्यों में प्रशस्त कहा है। यह लग्न, मुहूर्त्त, अष्टम, जामित्रादि दोषों को नष्ट प्राय कर देता है।

नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्र दोषो,
गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्व कार्येषु शस्ता॥ –मु० चिन्तामणि

जब कोई अन्य शुभ लग्न न बनता हो, और कन्या विवाह योग्य हो गई हो तो गोधूलि में विवाह शुभ होता है। **ज्योतिनिर्बन्धानुसार**–

लग्न शुद्धिर्यदा न स्याद् यौवने समुपास्थिते, तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥

गोधूलि लग्न काल के सम्बन्ध में विद्वानों ने मतान्तर पाए जाते हैं–

(i) पीयूषधारा के मतानुसार सूर्य के अर्ध–अस्त होने के अनन्तर **२ घड़ी (४८ मिनट)** का **समय गोधूलि काल है।**

(ii) मु० गणपति के अनुसार सूर्यार्ध बिम्ब के अस्त हो जाने के पूर्व एवं पश्चात् १५–१५ पल अर्थात् १२ मिनट का मध्यान्तर गोधूलि संज्ञक है।

(iii) आचार्य नारदानुसार सूर्योदय से सप्तम लग्न गोधूलि लग्न काल होता है।

चतुर्थमभिजित लग्नमुदयार्क्षातु सप्तमम्॥ –नारद

कार्य-सिद्धि के लिए मुहूर्त्तों में श्रद्धाभाव आवश्यक

आदि काल से ही प्रत्येक मनुष्य बाल्यकाल से लेकर वृद्धावस्था तक सुख प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है। मनुष्य के क्रिया–कलापों को सुव्यवस्थित रूप देने के लिए तथा उसकी मनस्चेष्टाओं को सफलता प्रदान के लिए हमारे मनीषियों ने मुहूर्त्त शास्त्र का प्रणयन किया था। तिथि, वार, नक्षत्रादि से जनित मुहूर्त्त विद्या भी भारतीय ज्योतिष एवं काल गणना का प्रारम्भिक रूप कहा जा सकता है। किसी भी धार्मिक एवं शुभ कार्य को आरम्भ करने से पूर्व उसके मुहूर्त्त सम्बन्धी जानकारी आवश्यक समझी जाती थी। मनुष्य मात्र की कल्याण भावना से प्रेरित होकर ही भारतीय आचार्यों ने मुहूर्त्त शास्त्र का सूत्रपात किया था। गृहस्थों के गर्भाधान, जन्म–दिन, मुण्डन, विवाह, मृतक आदि संस्कार तथा संन्यासियों के द्वारा किए गए यज्ञ, तपादि अनुष्ठान–सभी में मुहूर्त्तों का सम्बन्ध अवश्य होता था। शुभ मुहूर्त्तों के बिना गृहस्थ एवं श्रुति–स्मृति आदि शास्त्र परायण लोगों के कार्य सिद्ध हुए नहीं माने जाते थे–

वेदस्य निर्मलं चक्षु ज्योतिः शास्त्रमकलमषम्। विनैतदखिलं श्रौतं स्मार्तं कर्माणि न सिद्धयान्ति॥

प्राचीन धर्म परायण लोगों को **मुहूर्त्त शास्त्र** में पूर्ण श्रद्धा होने के कारण ही उनके द्वारा शुभ मुहूर्त्तों में आयोजित विवाह, पुत्रयेष्ठि आदि यज्ञ–अनुष्ठान आदि सफल होते थे। आजकल सर्वत्र देखने को आता है कि लोग बहुत से धार्मिक एवं अन्य काम्य कर्मों का प्रारम्भ सुनिश्चित मुहूर्त्त पर नहीं करते। **उदाहरण स्वरूप विवाह–मुहूर्त्त** ही लीजिए। कुछ लोग लड़के–लड़की की जन्मपत्रियों एवं नक्षत्रों का मिलान तो भली प्रकार करवा लेते हैं, परन्तु विवाह आदि शुभ कार्य सुनिश्चित मुहूर्त्त पर नहीं करते। फलस्वरूप दुर्भाग्यवश कई बार जन्मपत्री मिलान के बावजूद विवाह सम्बन्ध असफल होते देखे गए। तलाक तक की भी नौबत आ जाती है। इसका दोषारोपण टेवे/जन्मपत्री मिलान करने वाले पण्डित जी को भी सहन करना पड़ता है। उन्हें यह कहते सुना जा सकता है कि हमने तो फलां–फलां पण्डित जी से कुण्डली मिलान कराया था, जो गलत हुआ। वास्तव में आजकल की मनोवृत्ति अनुसार प्रत्येक मनुष्य अपने दुख का कारण दूसरों में आरोपित करना चाहता है, अपने निजी व्यवहार को नहीं देखना चाहता। विवाह, गृहप्रवेश, मुण्डन आदि शुभ मुहूर्त्त तभी सार्थक एवं फलीभूत हो सकते हैं, जबकि मुहूर्त्त ग्रहण करने वाले व्यक्ति को उनके प्रति पूरी श्रद्धा एवं विश्वास भी हो। क्योंकि बिना श्रद्धा के किया हुआ हवन आदि कर्म, दिया हुआ दान, किया हुआ तप और जो भी किया हुआ कर्म है, वह असत् रूप है, ऐसा कर्म न तो इस लोक में और न परलोक में ही लाभप्रद एवं कल्याणकारी होता है–

अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत्।
असत् इति उच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्यं नो दूह ॥ श्री मद्भगवत्गीता अध्याय १७।२८।

विवाह आदि शुभ कार्यों को सुनिश्चित एवं निर्धारित लग्न में करने के प्रयास करने चाहिएँ–

लग्नं कोटि गुणं विद्याद् ग्रहवीर्य समन्वितम्।
तस्मात्सर्वेषु कार्येषु लग्न वीर्यं विलोकयेत्॥

इसी कारण लग्न को सभी मुहूर्त्तों की आत्मा कहा गया है–

तिथिः शरीरं मन इन्दुवीर्यं विलग्नमात्माऽवयवास्तु माद्याः॥ ज्योतिनिबंध

विवाहादि शुभ कार्यों में शास्त्रीय विचार

विवाह में जन्म मास, नक्षत्रादि का विचार—

आद्य गर्भ, अर्थात् बड़े लड़के या बड़ी लड़की का विवाह जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म लग्न में न करें। "**आद्य गर्भ सुत कन्ययो र्द्वयो जन्म मास भतिथौ कर ग्रहः। नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद् द्वितीय जनुषोः सुतप्रदः॥ मु. चिंतामणि॥**"

परन्तु ज्येष्ठ पुत्र के बाद उत्पन्न पुत्र या कन्या का विवाह जन्म मास, नक्षत्रादि में करना प्रशस्त है। ज्येष्ठ पुत्र-कन्या के अतिरिक्त अन्य स्थितियों में जन्म-मास, जन्म राशि, नक्षत्र एवं जन्म लग्न विशेष शुभ माना है।

जन्ममासे च पुत्राढया धनाढया च धनोदये। जन्म मे जन्मराशौ च कन्या हि ध्रुव सन्तति॥

ज्येष्ठ मास में विवाह का विचार

ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ पुत्र और ज्येष्ठ कन्या यह तीन ज्येष्ठ विवाह संस्कार में विशेषतया वर्जित माने जाते हैं। परन्तु यदि दो ज्येष्ठ वर्तमान हों अर्थात् लड़का-लड़की दोनों ज्येष्ठ (बड़े) हों, परन्तु महीना ज्येष्ठ के अतिरिक्त हो अथवा लड़का-लड़की में से एक ज्येष्ठ हो और दूसरा अनुज हो, तो ज्येष्ठ मास में भी विवाह करना सामान्य एवं मध्यम फल होता है—

द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोत्तत्रवेक ज्येष्ठः शुभावहः।
ज्येष्ठ त्रयं न कर्वीत् विवाहे सर्वसम्मतम् —वाराहमिहिर॥

तथापि आवश्यक परिस्थितिवश ज्येष्ठ मास में कृतिका से सूर्य निकल जाने पर सूर्य दानादि करके विवाह करने में कोई हानि नहीं। **मुनि भारद्वाज** के मतानुसार ज्येष्ठ के महीने की भान्ति मार्गशीर्ष मास में भी अग्रज लड़का-लड़की एवं मार्ग मास-तीनों का यथासम्भव त्याग करें।

(३) सगे भाई-बहन के विवाह छः मास के भीतर नहीं करने चाहिएं। यदि इस बीच संवत् परिवर्तन हो जाए, तो कोई दोष नहीं **(मु. मार्तण्ड)**। पुत्र के विवाह के उपरान्त अपनी कन्या का विवाह ६ महीने तक न करें। इसी तरह विवाह के बाद ६ महीने तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य न करें। **(नारद)**, परन्तु कन्या-विवाह के पश्चात् पुत्र विवाह ६ मास के भीतर शुभ है। दो सगे भाईयों का विवाह दो सगी बहनों से न करें अथवा एक वर के साथ दो सगी बहनों का विवाह न करें **(वसिष्ठ)** तथा जिस वर को अपनी कन्या देवे, उसकी बहन के साथ अपने लड़के का विवाह न करे **(नारदः)**।

दो सगे भाईयों या दो सगी बहनों का एक संस्कार ६ महीने के भीतर करना सम्भव है **(वृन्द्धमनुः)**। दो सहोदर (भाई-बहन) के संस्कार आवश्यक स्थिति उत्पन्न होने पर नदी, पर्वत, स्थान एवं पुरोहित भेद (भिन्न) से एक ही दिन अथवा ६ महीने के भीतर शुभ होंगे **(शार्गधर)** जुड़वें भाई-बहन के मांगलिक कार्य एक ही मण्डप में भी शुभ हैं। विवाहादि मंगल कार्य से ६ मास तक लघु मंगल कार्य न करें। यह ६ महीने का निषेध केवल तीन पीढ़ि तक के मनुष्यों के लिए कहा है।

मंगल संस्कार से ६ महीने तक पितृकर्म, श्राद्धादि न करें। वाग्दान अर्थात् विवाह सम्बन्ध का निश्चय हो जाने के बाद वर-कन्या के कुल में माता-पिता भाई आदि निकटस्थ बन्धु की दुःखद मृत्यु हो जाने पर एक वर्ष के पश्चात् विवाह आदि शुभ कार्य करना चाहिए (निर्णय सिंधु) परन्तु **अपवाद स्वरूप** संकट काल में अथवा अत्यावश्यक परिस्थितिवश एक मास के बाद अथवा सूतक निवृत्ति के बाद जप, पाठ, होम शान्ति एवं यथाशक्ति द्रव्य, वस्त्र, गोदानादि के बाद शुभ कार्य ग्राह्य होंगे—

प्रतिकूलेऽपि कर्त्तव्यो विवाहो मासमन्तरात्।
शान्ति विधाय गां दत्वा वाग्दानादि चरेत् पुनः॥

जन्म नक्षत्र—जातक का जन्म नक्षत्र अन्न प्राशन, उपनयन, मुंडन (चूड़ाकरण), राज्याभिषेक, जन्मदिनादि कृत्यों में प्रशस्त माना गया है, परन्तु यात्रा, सीमान्तोन्नयन तथा विवाहादि कार्यों में जन्म नक्षत्र अनिष्टकर होता है—

बालान्नभुक्तौ व्रतबन्धनेऽपि राज्याभिषेके खलुजन्मधिण्यम्।
शुभं तु अनिष्टं सततं विवाह सीमन्त यात्रादिषु मंगलेषु॥ —वसिष्ठ

जन्म मास अग्रज (बड़े) लड़के या लड़की का विवाह **जन्म नक्षत्र** एवं **जन्म मास** में करने का निर्विवादेन निषेध माना गया है—

न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा। आद्य गर्भ सुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः॥ —नारद

परन्तु अनुज लड़के या लड़की का विवाह **जन्म मास** में ग्रहणीय माना गया है—

विबुधैः प्रशस्यते चेत् द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः —मुहूर्त चिंतामणि

वर—वरण एवं सगाई मुहूर्त्त

वर-कन्या की जन्मपत्रियों में परस्पर सम्यक् मिलान हो जाने के पश्चात् दोनों के माता-पिता विवाह के संकल्प (वाग्दान) को सम्पुष्ट करने के लिए वर-कन्या का वरण (सगाई) करते हैं। इसके लिए निम्नलिखित शुभ मुहूर्त्त में कन्या का भाई, कुल पुरोहित (ब्राह्मण) एवं परिवार के सन्निकट सगे सम्बन्धियों के साथ यज्ञोपवीत, नारियल, साबित सुपारी, हल्दी, अक्षत, छुहारे, गुड़, वस्त्र, अंगूठी, मिष्टान्न, फल, फूलादि अर्पण करके वर का शास्त्र प्रशस्त मांगलिक मन्त्रों के साथ वरण करें। (पूर्ण विधि जानने के लिए हमारी नवीन प्रकाशित '**विवाह पद्धति**' का अवलोकन करें।

विवाह में प्रतिपादित शुभ मासों **वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मासों** में, रिक्ता (४, ९, १४) तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में (विशेषकर शुक्ल पक्ष प्रशस्त है), चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्रवारों में तथा कृतिका, रोहिणी, तीनों पूर्वा, मृग, हस्त, श्रवण, चित्रा नक्षत्रों में शुभ लग्न कालीन वर का वरण करें।

कन्या वरण मुहूर्त्त—

उपरोक्त शुभ मासों, तिथियों में तथा कृतिका, तीनों पूर्वा, उत्तराषाढ़ा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा अनुराधादि विवाहोक्त नक्षत्रों में सुपारी, नारियल, मौसमी फल, सुगन्धित द्रव्य, वस्त्र, आभूषण मिष्टान्न, फल, फूलों आदि के साथ वर परिवार के किसी श्रेष्ठ अग्रज अथवा वृद्धजन के कर कमलों के द्वारा कन्या का विधिवत् वरण करें।

विवाह मुहूर्त्त विचार

विवाह संस्कार में **कुछ मुहूर्त्त ग्रन्थों में वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़** (आ. शुक्ला दशमी तक) **मार्गशीर्ष, माघ व फाल्गुन** मासों में **विवाह प्रशस्त** कहे हैं। परन्तु कुछ आचार्यों ने **चैत्र व पौष** इन दो सौर मासों को त्याग कर शेष १० मासों को **विवाहादि** शुभ कार्यों को प्रशस्त माना है। इसी कारण **पंजाब, दिल्ली, हिमाचल, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर** आदि प्रदेशों में अति प्राचीन काल से **श्रावण, भादों, आश्विन** मासों में भी विवाह की प्रथा चली आती है। कुछ **पर्वतीय प्रदेशों** में कार्तिक महीने भी विवाह होते हैं। कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल की प्रतिपदा तक की तिथियों को छोड़कर शेष तिथियों में, रविवार, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र शुभ वारों में, मंगल व शनिवार मध्यम कहे हैं। रोह, मृग, मघा, उत्तरा ३ (तीनों), हस्त, स्वा., अनु., मूला, रेव तथा कात्यायनोक्त अश्वि., चित्रा, श्रव., धनि., सहित १५ नक्षत्रों में, वर का सूर्य व चन्द्रमा का बल देखकर विषम वर्षों में तथा कन्या का चन्द्र व गुरु बल देखकर सम वर्षों में विवाह करना शुभ माना गया है। कन्या की आयु यदि १६ वर्ष से अधिक हो, तो **गुरु का बल** देखना आवश्यक नहीं **(वसिष्ठः)**

लता दोष

सूर्य:	चन्द्र:	भौम:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	राहु:
१२	७	३	२२	६	२४	८	९
धन हानि	अशुभ	मृत्यु	अशुभ	बंधु-नाश	कार्य-नाश	कुल-क्षय	मरण

जैसे सूर्य स्थित नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र यदि १२वां हो तो सूर्य की लता एवं पूर्ण चन्द्र के दिन नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र ७वां हो तो चन्द्रमा की लता जाने।

(पात-दोष कुरु, जांगल, कलिंग बंग और मगध में अतिनिन्दित है।)

अश्वि	भर	कृति	रोहि	मृग	आर्द्रा	पुर्न	विशा	अनु.	ज्येष्ठा	उषा	श्रव	धनि	शत	पूभा
मघा	हस्त	स्वा	मूला	मघा	रोह	रोहि	उफा	उषा	मृग	उषा	स्वा.	मृग	रोहि	उफा
अनु	उफा	उफा	००	हस्त	मृग	उषा	उषा	००	मघा	अनु.	००	स्वा.	हस्त	हस्त
रेव	उभा	००	००	मृग	उफा	००	००	००	मूला	००	००	मूला	उषा	अनु
००	००	००	००	००	अनु.	००	००	००	रेव	००	००	रेव	उभा	००

ऊपर के नक्षत्रों में सूर्य हो तो नीचे के नक्षत्रों को पात दोष लगता है, हर्षण, वैधृति साध्य, व्यतिपात, शूल—इन योगों के अन्त में विवाह का नक्षत्र हो तो भी पात दोष लगता है।

युति-दोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो और उसी नक्षत्र पर यदि शुभ व पाप ग्रह हो तो युति दोष होता है, अथवा चंद्रमा की राशि में कोई ग्रह हो तो युति दोष होता है। क्रूर ग्रहों की युति विशेष करके वर्जित है। यह गौड़ देश में अतिनिन्दित है।

वेध दोष

रोहि	मृग	मघा	उफा	हस्त	स्वा	अनु	मूला	उषा	उभा	रेव
अभि	उषा	श्रव	रेव	उभा	शत	भर	पुन	मृग	हस्त	उफा

ऊपर के नक्षत्रों में से विवाह का नक्षत्र हो और उसके नीचे के नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का वेध होता है। यह क्रूर ग्रहों के वेध विशेषतया वर्जित माना गया है।

विवाह नक्षत्र से सातवें ग्रह हो तो जामित्र

रोहि	मृग	मघा	उफा	हस्त	स्वा	अनु	मूला	उषा	उभा	रेव
अभि	ज्ये.	धनि	पूभा	उभा	अश्वि	कृर्ति	मृग	पुन	उफा	हस्त

ऊपर के नक्षत्रों में विवाह का नक्षत्र हो और नीचे के नक्षत्रों पर कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का जार्मित्र दोष होता है सो पाप ग्रह का जार्मित्र विवाह में वर्जित कहा है यह यमुना प्रांत में अतिनिंद्य है।

बुध पञ्चक दोष

रोगपं	अग्निपं	राजपं	चौरपंचक	मृत्युपं	वाण
८।१७ २६	२।११ २०।२९	४ १३।२२	६।१५ २४	१।१० १९।२८	सूर्यांश
व्रते रवौ रात्रौ	गृहकार्ये भौमे दिवा	सेवाया शनौ दिवां	यातरा भौमे रात्रौ	विवाह बुधे संध्याया	कार्येषु वारे समये

एकार्गल दोष

वि.	अति	शू	गं	व्य	व	वै	यो

सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिज़ित सहित गणना करने से यदि विषम हो और इन विरुद्ध योगों में से कोई भी योग हो तो एकार्गल दोष होता है। यह काश्मीर में विशेष वर्जित है।

उप ग्रह दोष

सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २२वें, २३वें, २४वें, २५वें, नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

क्रान्ति साम्य दोष

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला	सूर्य	चन्द्र
सिंह	मकर	धन	वृश्चि.	मीन	कुम्भ	चन्द्र	सूर्य

ऊपर व नीचे की राशि पर सूर्य व चन्द्रमा हो तो क्रान्ति-साम्य दोष हो जाने से विवाह में सर्वदा वर्जित है।

*वैशा., आषा., भाद्र., कार्ति., पौष., फा. मासों में शुक्ल पक्षीय तिथियां तथा ज्ये., श्रा., अश्वि., मार्ग व माघ में कृ. पक्षीया तिथियां ही वर्जित है।

दग्धा तिथि दोष

वैशा	ज्येष्ठ	आषाढ़	मार्ग	कार्ति	पौष	मास
श्रावण	फाल्गुन	आश्विन	भाद्र	माघ	चैत्र	मास
६	४	८	१०	१२	२	तिथि

इन २ मासों में से २ तिथियां दग्ध होती है सो विवाह में वर्जित कहीं हैं, मध्य देश में त्याज्य है। कुछ विद्वानों अनुसार*

भूमि खरीदने (क्रय) का मुहूर्त्त

वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (प्रवि. ७ तक) मार्गशीर्ष, माघ और फाल्गुन मास भूमि क्रय के लिए उत्तम कहे गए हैं।

शुभ तिथियाँ—प्रतिपदा (कृष्ण-पक्षे), कृष्ण तथा शुक्ल पक्षे २, ५, ६, १०, ११, १५ तिथियां।

शुभ नक्षत्र—मृगशिर, पुनर्वसु, अश्लेषा, मघा, विशाखा, अनुराधा, तीनों पूर्वा, मूला, रेवती, शतभिषा एवं स्वाती नक्षत्र।

शुभवार—सोमवार, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार।

लत्तादि दोषाणां परिहारवाक्यानि-लत्ता मालवके (उज्जैनादि) देशे पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र बांगर) जांगले (फिरोजपुर इत्यादि)। एकार्गले व काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्॥ उपग्रहर्क्षे कुरु वाल्हिकेषु (आगरा आदि) कलिंगवंगेषु (जगन्नाथपुरी, बंगाल, अयोध्या च पातिते भम्॥ सौराष्ट्र (कठियावाड़) शाल्वे: लताभं त्यजेत् विद्धकिल सर्वदेशे युतिदोषो भवेद गौड़े (बंगाल) जार्मित्रस्य च यामुने (यमुना के प्रांत)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे तिथयो मध्यदेशें विवर्जित:। युतिपरिहार-स्वक्षस्थ: स्वोच्चगश्चंद्रो पित्रक्षेत्रगतोपिवा। गुरुश्च स्वीयवर्गस्थो वली केन्द्रगतो विधु:। लत्तापांप उपग्रह परिहार:-वनसंख्यं चरणे खेट स्तत्संख्यं चरणं त्यजेत्। लत्तोपग्रहदानेषु त्याज्या नैवाऽघ्रय परे॥ परिहार-लत्तोपग्रहजामित्रयांतैकार्गलकर्त्तरी। एते दोषा विंनश्यंति लग्नेऽकें दुर्बलान्विते॥

भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्त्व

(मुख्य-मुख्य मुहूर्तों का निर्णय स्वंय करें)

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। प्राचीन ऋषियों ने गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि कर्म तक **षोडश-संस्कारों** के महत्त्व को एकमत से स्वीकार किया है। मनुष्य जन्म से अबोध होता है, परन्तु संस्कारों से मनुष्य के आन्तरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का निखार व परिष्कार होता है। जैसे, शास्त्र में कहा गया है—

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।
वेद पाठात् भवेद् विप्रः, ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः॥

अतएव सुख, समृद्धि एवं कल्याण चाहने वाले प्रत्येक वर्ण के गृहस्थी मनुष्य को भारतीय परम्परा एवं संस्कृति का अनुगमन करते हुए गर्भाधान, पुंसवन, नामकरणादि संस्कारों को धारण करना चाहिए। शास्त्र विधि अनुसार बच्चे के संस्कार करने से बालक/कन्या मेधावी, स्वास्थ्य धनी, यशस्वी एवं दीर्घायु होता है॥

षोडश संस्कार इस प्रकार से हैं—

(१) **गर्भाधान** (२) **पुंसवन** (३) **सीमन्तोन्नयन** (४) **जातकर्म** (५) **नामकरण** (६) **निष्क्रमण** (७) **अन्न प्राशन** (८) **चूडाकरण** (मुण्डन), (९) **यज्ञोपवीत** (१०) से (१३) **तक चतुर्वेदीय व्रत**, (१४) **समानवर्त्तन** (१५) **विवाह** (१६) **अन्त्येष्टि।**

☞ **(१) गर्भाधान संस्कार**—यह प्रथम संस्कार है, जो स्त्री के ऋतु (रजस्वला) स्नान के पश्चात् किया जाता है। भार्या के स्त्री धर्म (रजोदर्शन) में होने के १६ दिन तक वह गर्भ-धारण के योग्य रहती है। **रजोदर्शन** के दिन ६, ८, १०, १२, १४, १६वें दिनों में क्रियमाण गर्भाधान पुत्रदायक तथा विषम दिनों (५, ७, ९, ११, १३, १५) में कन्या-प्रद होता है। उपरोक्त दिनों में भी शुद्ध मुहूर्त्त दिनों का विचार किया जाता है।

(१) गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभतिथियां—◐ (कृष्ण) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल)

शुभ वार—सोम, बुध गुरु एवं शुक्रवार

शुभ नक्षत्र—रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, पुन, पुष्य, स्वा, अनु, श्रव, धनिष्ठा व शतभिषा।

शुभ लग्न—लग्न, केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों एवं लग्न को सूर्य, मंगल, और गुरु देखते हों, तो गर्भाधान से पुत्रोत्पत्ति की संभावना होती है। इसके अतिरिक्त **पुत्रार्थी** विषम लग्न राशि एवं विषम नवांशगत लग्न में तथा कन्याकांक्षी सम लग्न राशि में स्त्री संग करें।

गर्भ-धारण के दिन स्त्री-पुरुष दोनों का चन्द्र-बल प्राप्त होना शुभ होता है।

गर्भाधान के लिए त्याज्य काल—रजोदर्शन से प्रथम चार रात्रि को छोड़कर, रिक्ता तिथि, जन्म नक्षत्र, मघा-अश्ले आदि तीनों गण्डांत, मूला, भरणी, अश्विनी, रेवती नक्षत्र, ग्रहण का दिन, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, वैधृति, परिघ का पूर्वार्ध, संक्रान्ति, व्यतीपात, ग्रहण, सन्ध्या, दिन का समय, जन्म राशि से अष्टम लग्न, दीवाली, दशहरा, नवरात्र आदि पर्व दिनों को स्त्री संसर्ग में त्याग करना चाहिए।

गर्भ मासों के अधिपति

गर्भाधान से लेकर नव एवं दस मास तक भिन्न-भिन्न ग्रह अधिपति होते हैं। अरिष्टभय की स्थिति में उसी मास से सम्बन्धित ग्रह की पूजा-दानादि करना चाहिए।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्र	शनि	बुध	आधानकालिक लग्नेश	चंद्र	सूर्य

☞ **(२) पुंसवन संस्कार मुहूर्त्त**—यह संस्कार गर्भधारण से तीसरे मास में किया जाता है। इस मास का स्वामी गुरु है। इस दिन श्री विष्णु पूजा करना शुभ होता है। इस संस्कार के शुभ मुहूर्त्त इस प्रकार से हैं।

शुभवार—रवि, चंद्र, मंग, बुध, गुरु व शुक्र। **मंगल** व **बुध वारों** में मं. बु. उदित होने चाहिएं।

शुभ तिथियां—१ (कृ) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल)।

शुभ नक्षत्र—रोहणी, मृग, पुन. पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, अनु एवं रेवती नक्षत्र। विद्ध नक्षत्र त्याज्य हैं।

☞ **(३) सीमन्त संस्कार**—यह तृतीय संस्कार है, जो गर्भ धारण से ६, ८ वें मास, जब मास-स्वामी बली हो। **शुभवार**—रवि, मंगल, एवं गुरु।

शुभ तिथियां—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ला)।

नक्षत्र—मृग, पुन, पुष्य, हस्त, मूला, श्रवणः

लग्न—१, ३, ५, ७, ९ आदि विषम लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हों॥

(३)(क) श्री विष्णु पूजा मुहूर्त्त—यह पूजा गर्भाधान से आठवें मास गर्भरक्षा के उद्देश्य से की जाती है। इसमें शंख चक्र-गदा-पद्मधारी भगवान विष्णु की यथाशक्ति, सुवर्णमयी प्रतिमा बनवाकर षोडशोपचार से पूजा करके परिधान सहित, प्रतिमा को ब्राह्मण को दान करें।

शुभ तिथियां—२, ७, १२

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र—रोहिणी, पुष्य और श्रवण।

☞ **(४) जातकर्म संस्कार**—कुछ शास्त्रकार प्रसव के समय नालछेदन के पूर्व ही इस संस्कार को कार्यान्वित करने की आज्ञा दी है। परन्तु आजकल नरघटी अथवा १६ घटी तक कर लेना चाहिए।

कुछ लोग परम्परानुसार **११वें** अथवा **१२वें** दिन कर लेते हैं।

शुभ तिथियां—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शु.) शुभ वार = च., बु., गु., शु.

नक्षत्र—अश्वि. रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रव., धनि, शत, रेव।

☞ **मेधा-जनन संस्कार**—जात कर्म के साथ ही इस कृत्य का निष्पादन करना चाहिए। बालक/बालिका मेधावी, कीर्तिमान एवं सौभाग्यशाली हो, इसके लिए दाएं हाथ की अनामिका अंगुली से शहद एवं गोधृत चार बार बच्चे को चटाएँ। चारों बार क्रमशः ''ॐ भूस्त्वपि धधामि।'' ॐ भुस्त्वपि दधामि।'' तथा ॐ **भूर्भुवस्वः सर्वत्वपि दधामि। मंत्रों का उच्चारण करें।** इसके साथ ही कुछ घृत-मिश्रित गुड़ भी बालक के तालु में लगा देना शुभ होता है। जिससे बच्चे को स्तनपान के पूर्व ही कुछ चूसने की आदत हो जाए। (अंगुली के अतिरिक्त सुवर्ण या चांदी के चम्मच का भी प्रयोग कर सकते हैं।

☞ **स्तनपान का मुहूर्त्त**—जन्मान्तर ५वें या ७वें किसी दिन नीचे लिखे भद्रा, व्यति, वैधृति, व्याघात आदि योगों को छोड़कर निम्न शुभ मुहूर्त्त माता संतान को प्रथम बार स्तनपान कराए।

शुभ तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.), १५,

शुभ नक्षत्र—रोह., मृग. ,पुन, पुष्य, उत्तरा ३ हस्त, चित्रा, अनु, श्रव. धनि, व रेवती॥

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र।

शुभ लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ राशि लग्न।

सूतिका पथ्य में भी उपरोक्त मुहूर्त्त ग्राह्य है।

☞ **षष्ठी पूजन**—जन्म से पांचवें दिन, जीवन्ती देवी का पूजन करना चाहिए। **इसी प्रकार छेठे दिन** रात्रि में **षष्ठी पूजन, कात्यायनी देवी'** का आनन्द मंगल व गीत वाद्य के साथ पजन

करना चाहिए। जीवन्ती एवं षष्ठी पूजा में सूतक की दोष आपत्ति नहीं होती। देशाचारानुसार कोई २१वें या ३१वें दिन की षष्ठी पूजन करते हैं।

☞प्रसूता स्नान मुहूर्त—सूतिका स्नान बच्चे के जन्मदिन से एक सप्ताह के बाद करना चाहिए।

शुभ तिथियां—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५।

शुभ वार—रवि, मंगल, गुरू, शुभ हैं। सोम एवं शुक्रवार मध्यम हैं।

शुभ नक्षत्र—आश्वि, रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वा., अनु, रेव।

शुभ लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ सौम्य ग्रह से युत या दृष्ट।

☞नामकरण संस्कार—यद्यपि प्रत्येक मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व पर उसके परिवेश एवं परिस्थितियों का विशेष प्रभाव होता है। परन्तु ज्योतिष आचार्यों के अनुसार मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में उसके प्रसिद्ध नाम का भी विशेष महत्त्व होता है—

''नामाखिलस्य व्यवहार हेतुः, शुभावहं कर्मसु भाग्य हेतुः।
नाम्नैव कीर्तिं लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म॥''

गृहारम्भ—प्रवेश, युद्ध व्यापार, व्यावहारिक कार्य, दान, मन्त्र-सिद्धि, भाग्य, पुनर्विवाह, रोगोत्पत्ति तथा स्वामी-सेवक के पारस्परिक कृत्यों में नाम राशि वांछनीय है।

☞नामकरण—सूतक-समाप्ति पर देशानुसार १०, ११, १२, १३, १६, १९, २२वें दिन संस्कार करना चाहिए। एक अन्य मतानुसार ब्राह्मण को १० या १२वें दिन, क्षत्रिय को ११ या १२ वें दिन वैश्य को १६ या २०वें दिन नामकरण संस्कार करना चाहिए। नामकरण पिता-पितामह या कुल के वृद्ध व्यक्ति के द्वारा स्वास्ती वाचन मन्त्रों सहित (विद्वान ज्योतिषी से कुण्डली परामर्श के बाद) उच्चारित करवाना चाहिए।

शुभ तिथियाँ—१ (कृष्ण), २,३,७,१०,११,१२,१३ (शुक्ल)।

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।

शुभ लग्न—१,४,६,७,९,१२ लग्न शुभ ग्रह युत या दृष्ट हों। भद्रा, ग्रहण, श्राद्ध दिन, दुष्ट योग, संक्रान्ति आदि रहित काल में, सुयोग्य ज्योतिषी से प्रथम नामाक्षर पूछ कर कानों को मधुर लगने वाले अक्षर, महापुरुषों के नाम सदृश अथवा शुभ सार्थक शब्दों वाला नाम रखना कल्याणकारी रहता है।

बालक के दाँत निकलने का फल

यदि पहले मास में बालक के दाँत निकल आएं तो स्वयं अपनी आयु के लिए अरिष्टकारक, दूसरे मास में भाई को, तीसरे मास में बहिन को, चौथे मास में माता को, पाँचवें मास में बड़े भाई के लिए विशेष कष्टकारी होता है, **छटे मास में दाँत निकलें** तो अत्यन्त सुख, सातवें मास में पिता से सुख, आठवें मास में देह की पुष्टता, नवें मास में लक्ष्मी की प्राप्ति, दसवें मास में सौख्य प्राप्ति, ११वें निकलें तो **अति सौख्य**, १२वें मांस में निकलें तो विपुल धन-प्राप्ति होती है। यदि गर्भ से ही दाँतों सहित उत्पन्न हुआ हो वह माता-पिता के सुख से विहीन अथवा ऊपर की पंक्ति के दाँत पहलें निकले तो भी माता-पिता तथा नानके पक्ष के लिए हानिकारक माना जाता है। यदि उपरोक्त अशुभ मासों में बालक को दन्तोत्पत्ति की संभावना हो तो मृत्युञ्जय का जाप, ग्रह शान्ति एवं उचित दान आदि करने से अशुभत्व का निवारण तथा अरिष्ट की शान्ति हो जाती है।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	स्वयं को अरिष्ट	भ्रातृ कष्ट	बहिन को कष्ट	मातृ कष्ट	ज्येष्ठ भ्रातृ कष्ट	सुख	पिता से सुख	देह सुख	धन प्राप्ति	सौख्य प्राप्ति	अति सौख्य	विपुल धन

☞झूला आरोहन मुहूर्त—बालक के जन्मदिन से १०, १२, १६, २२ एवं ३२वें दिन बालक को आराम देह झूले में सुलाना चाहिए। झूले में डालने से पूर्व शुभ तिथि, वार, नक्षत्र, योगादि का विचार कर लेना चाहिए। झूले में माता या दादा, दादी के द्वारा, भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए बच्चे का सिर पूर्व की ओर रखकर शिशु को सुलाना चाहिए।

शुभ तिथियां—१ (कृ), २,३,५,७,१०,११,१३ (शुक्ल) व पूर्णिमा।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि, रोहिणी, मृग, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा तथा अनुराधा।

☞निष्क्रमण मुहूर्त—जन्म से ३,४ मासों में निम्नलिखित शुभ योगों में बालक को प्रथम बार घर से बाहर निकालना हितकर होता है। शीघ्रता में आवश्यक हो तो जन्म से १२वें दिन भी निष्क्रमण लिखा गया है।

शुभ तिथियां—१ (कृ) २,३,४,७,१०,११,१२ (शु.) एवं १५।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु तथा शुक्र।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, अनु, श्रव, धनि।

शुभ लग्न—२,३,४,५,६,७,९,१०,११ राशि लग्न।

माता, दादी आदि आत्मीयजन बालक को स्नानादि करवा कर वस्त्रादि से अलंकृत करें तथा पुण्याहवाचन, शंख और मंगल मंत्रों एवं गीत-वाद्य सहित ध्वनि के साथ उसे प्रथम देवालय (मन्दिर) में ले जावें। वहाँ देव पूजा व अर्चना करके आत्मीयजन शुभाशीष दें तथा मन्दिर की परिक्रमा करके स्वगृह लौट कर बच्चे को ननिहाल या मौसी के घर ले जावे। पुनः गृहागमन के समय दीर्घायु संज्ञक आशीर्वचनों से बालक का अभिनन्दन करें। पुनश्च, निष्क्रमण तृतीय मास में हो, तो बालक को सूर्य-दर्शन तथा चतुर्थ मास में हो तो चन्द्र-दर्शन करवाना चाहिए।

☞भूम्युपवेशन-मुहूर्त—जन्म से पंचम मास में मंगल के बलान्वित होने पर बालक को प्रथम बार भूमि पर विराजमान (बिठाने) के लिए विचारणीय मुहूर्त—

शुभ तिथियां—१ (कृ) 2,३,४,७,१०,११,१३ (शु.) तथा पूर्णिमा।

शुभ वार—चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उतरा, हस्त, अनु, ज्ये, अभिजित।

शुभ लग्न—२,५,८,११ राशि लग्न।

विशेष—पृथ्वी, अनन्त, कूर्म और वाराह एवं भगवान् विष्णु देवों की पूजा करके त्रिसूत्र बांधकर करधनी सहित बालक को शुद्ध भूमि पर निम्न मन्त्रपूर्वक बिठावे।

रक्षेनं वसुधे देवि सदा सर्वगत् शिशुम्।
आयुः प्रमाणं निखिलं निक्षिपस्व हरिप्रिये॥ —ब्रह्मपुराणे

तदुपरान्त पूजन आरती आदि करके उसी भूमि पर ब्राह्मण भोजनादि करावें।

☞जीविका परीक्षा—'भूम्युपवशन' के अवसर पर बालक के सामने हानि रहित अस्त्र-शस्त्र, पुस्तकें, लेखनी (Pen-Pencil), वस्त्र, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहादि धातुएँ, मशीनें मोटर, पंखा-रेडियों, टी. वी. आदि खिलौने, विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेज़ी, संस्कृतादि साहित्य आदि वस्तुएँ रखें। इन वस्तुओं में से जिस वस्तु को बालक सहज रूप में सर्वप्रथम स्पर्श करें, वही उसकी भावी आजीविका होगी। ऐसा अनुमान लगाना चाहिए। कुल परम्परा अनुसार, कहीं-कहीं यह क्रिया अन्नप्राशन के साथ भी कर लेते हैं।

☞अन्न-प्राशन का मुहूर्त—जन्म से सौर मास ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र को तथा ५,७,९ या ११वें मास पुत्री को उसकी पाचन शक्ति उपयुक्त होने पर प्रथम बार बच्चे को अन्न प्राशन कराना **अन्न प्राशन** में शुक्ल पक्ष विशेष प्रशस्त माना गया है। यद्यपि कृष्ण पक्ष की १,३,५,७,१० तिथियाँ भी ग्राह्य हैं। सोमवार, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार शुभ हैं।

नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभिजित श्रव, धनि, रेवती तथा जन्म-नक्षत्र 'सप्तशलाका चक्र' द्वारा क्रूर ग्रह विद्ध नक्षत्र त्याज्य होगा। जन्म राशि से ६, ८वें लग्न को छोड़कर २,३,४,५,६,७,९,१०,११ की राशि का लग्न जबकि लग्न से १,४,७वें शुभ ग्रह हों तथा लग्न शुभ ग्रहों द्वार दृष्ट हो।

विशेष—अन्न प्राशन दिन के पूर्वार्द्ध भाग में बालक की राशि का चन्द्रबल देखकर भद्रा रहित काल एवं उपरोक्त शुभ दिन को सूर्य, ब्रह्म, विष्णु, महेश तथा दिक्पतियों की पूजा करके माता स्वलंकृत बालक को अपनी गोद में बिठाकर ईश्वर-स्मरण करते हुए उसे मधु, घृत, दही, खीर का भोजन सर्व प्रथम कराएँ।

☞ **कर्ण वेध का मुहूर्त्त**—बालक के जन्म से १२, १६वें दिन, या ६,७,८वें मास में अथवा ३,५वें वर्ष बालक का कर्ण छेदन प्रशस्त माना जाता है।

ग्राह्य मास—चैत्र, (का. शु. ११ के बाद), पौष तथा फाल्गुन।

तिथियां—४,९,१४ (रिक्ता तिथियां छोड़कर)।

वार—चं, बु., गु., शु, वारों में अश्वि, मृग, आ. पुन, पुष्य हस्त, चित्रा, अनु, अभि, श्रव, धनि, रेव, विद्ध तथा जन्म नक्षत्र भी त्याज्य।

शुभ लग्न—२,३,४,६,७,९,१२।

विशेष—बोलक को पूर्वाभिमुख बिठाकर हाथ में कुछ मिष्ठान्न दें तथा पुत्र के बाएं कान को तथा पुत्री के दाएं कान को सुवर्ण या चाँदी की शलाका से सौभाग्यवती स्त्री या कुशल स्वर्णकार से कर्ण विधवाना चाहिए।

☞ **कन्या की नासिका छेदन**—हेतु उपरोक्त कर्ण वेध मुहूर्त्त के मासों में ही कन्या का नामक विंधवाया जाता है। शुक्ल तिथियाँ प्रस्तहैं—२, ३ ५, ७, १०, ११, १२, १३, १४।

जन्म दिन कृत्य

सामान्यतः लोग अंग्रेज़ी तारीख अनुसार ही जन्मदिन कृत्य कर लेते हैं। परन्तु इसमें कई बार भूल होने की सम्भावना रहती है। सिद्धान्तः एक सौर वर्ष उपरान्त जिस दिन जन्मेष्ट एवं जन्मदिन के समान ही स्पष्ट सूर्य के राशि, अंश, कलादि की जब पुनरावृत्ति आ जाए, उसी दिन को जन्मदिन का नववर्ष प्रवेश माना जाएगा। यदि इतनी सूक्ष्मता का पता न चल पाए तो देशी प्रविष्टों के अनुसार जन्म दिन के वर्ष का निर्धारण किया जाए तो शुद्धता के अधिक पास रहेंगे। यदि किसी सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा वार्षिक जन्मदिन का निर्णय (गणितानुसार) करवा लें तो और अधिक उचित होगा।

जन्मदिन के शुभ अवसर पर प्रातः उठकर गंगा जल सहित शुद्ध पवित्र जल से बालकको स्नानादि के पश्चात् सुन्दर वस्त्र धारण करवा कर पूर्वाभिमुख होकर माता पिता उसे गोदी में बिठाकर किसी सुयोग्य पण्डित जी द्वारा पंचदेव पूजन, नवग्रह पूजन एवं संकल्पपूर्वक छाया दान सहित जन्मदिन पूजन करवाना चाहिए। पूजनोपरांत ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दानादि करें।

विशेषकर वर्षफल में स्थित अशुभ ग्रहों के दान, जपादि करवाने से बच्चों को आरोग्यता एवं माता-पिता को सुख-शान्ति बनी रहती है। जन्मदिन पर तिल स्नान, तिलों से भरी क्षीरादि एवं वस्त्र अनाजादि का दान एवं स्वयं भी क्षीर सेवन शुभ होता है।

पूजनोपरान्त श्री मार्कण्डेय, कश्यप, भारद्वाज, गौतम, परशुराम, वशिष्ठादि दीर्घजीवी ऋषियों का ध्यान (स्मरण) करते हुए उसके माता-पिता, वृद्ध जन व ब्राह्मणादि बालक को स्वास्थ्य एवं दीर्घायु का शुभाशीष दें।

☞ मुण्डन (चूड़ाकर्म) संस्कार मुहूर्त्त

जन्म या गर्भाधान में १, ३, ४, ७ इत्यादि विषम वर्षों के कुलाचार के अनुसार उत्तरायणगत सूर्य में बालक का चौलकर्म (मुण्डन) संस्कार पूर्वान्ह काल में करना चाहिए।

चैत्र मास को छोड़कर अन्य उत्तरायण के मासों में —वैशा, ज्ये. आषा. (२० जून तक), माघ, फाल्गुन, २, ३, ४, ५, ६, ७, १०, ११, १३ (शु०) २५ तिथियों में, संक्रान्ति आदि पर्व दिनों को छोड़कर, चन्द्र, स्वा, ज्ये. श्रव, अभि., धनि. और शतभिषा नक्षत्रों में मुण्डन कार्य शुभ है।

बालक का जन्म मास त्याज्य है। परन्तु जन्म नक्षत्र या जन्म राशि शुभ है। तथा जन्म राशि या जन्म लग्न से अष्टम लग्न न हो। बालक की माता रजस्वला या गर्भवती हो, तो मुण्डन कार्य न करावें परन्तु यदि गर्भ ५ मास से अधिक का हो तो या बालक की आयु ५ वर्ष से अधिक हो, तो दोष नहीं।

ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में शुभ नहीं।

विशेष—ज्योर्तिनिबन्धानुसार आवश्यक परिस्थितिवश ब्राह्मणों को रविवार, क्षत्रियों को मंगलवार, अन्य जाति वालों को शनिवार भी ग्राह्य होंगे।

☞ **क्षौर (हजामत) कर्म मुहूर्त्त**—मुण्डन के लिए जो तिथियां, नक्षत्र और वार शुभ बतलाए गए हैं, वे ही क्षौर (हजामत) के लिए शुभ हैं। मंगल, शनि, व रवि वारों में क्षौर से पुनः ९वां दिन, रिक्ता तिथियों और विशेष ग्राम (नगर) में जाने के दिन, स्नान करने के बाद, शरीर में उब्टन लगाने के बाद और भोजन कर लेने के बाद अपना कल्याण चाहने वाले वाले क्षौर कर्म (हजामत) न करावें॥

विशेष—यज्ञ में, विवाह, मृतक कर्म में कारागार (जेल) से छूटने पर, राजा और ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौर कर्म निषेध करादि में भी करा लेना शुभद होता है।

विवाह में तैलादि चढ़ाने का मुहूर्त्त

वर कन्या जिसको विवाह से पूर्व तैल चढ़ाना हो, उसका चन्द्र बल देख लेना चाहिए। तैलादि मंगल कार्य हेतु, मेषादि राशि वालों के लिए चक्र में निर्दिष्ट संख्या दिन पूर्व करना चाहिए। उदाहरणार्थ मिथुन राशि वाले वर-कन्या को विवाह से ५ दिन पूर्व तेल चढ़ाना चाहिए। इनमें विवाह का दिन गिनती में न करें।

राशि	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
दिन	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कार

यह नवम संस्कार उपनयन, व्रतबन्ध, मौञ्जिबन्ध, जनेऊ आदि नामों से प्रचलित है। प्राचीन काल से मातृ गर्भ से बालक का प्रथम जन्म परन्तु उपनयन (व्रतबन्ध) से सुसंस्कृत होने पर बालक द्विजन्मा या द्विज कहलाने का अधिकारी बनता है। ऐसे महत्त्वपूर्ण संस्कार को शास्त्र सम्मत काल में विधिवत् सम्पादित करना चाहिए।

सौरवर्ष प्रमाणानुसार **ब्राह्मण** बालक के गर्भधारण या जन्म दिन से पंचम या अष्टम वर्ष में, **क्षत्रिय** का षष्ठ या एकादश वर्ष में तथा **वैश्य** का अष्टम या द्वादश वर्ष में यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहिए। इस संस्कार के लिए शुभ मास, तिथि आदि का चयन इस प्रकार से करना चाहिए—

शुभ मास—चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (देवशयन एकादशी से पूर्व), माघ तथा फाल्गुन मास ग्राह्य)

विशेष—ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ पुत्र के लिए त्याज्य माना गया है। इसके अतिरिक्त आषाढ़ मास का प्रयोग केवल क्षत्रिय एवं वैश्य जाति वालों के लिए ग्राह्य माना जाता है। कुछ विद्वानों के अनुसार यज्ञोपवीत संस्कार में जन्म मास भी त्याज्य होता है, परन्तु राजमार्तण्ड अनुसार जन्म दिन से दस दिन छोड़कर अन्य शुभ दिनों में संस्कार करना दोषपूर्ण नहीं होता।

शुभ पक्ष—शुक्ल पक्ष उत्तम और कृष्ण पक्ष मध्यम फलदायक होता है।

शुभ तिथियां—कृष्ण पक्ष की १, २, ३, ५, ७

शुक्ल पक्ष में— २, ३, ५, ७, १०, ११ व १२

चैत्र वैशाख की शुक्ला, माघ शुक्ल की सप्तमी तथा फाल्गुन की शुक्ला तृतीया उपनयन में विशेष तौर पर ग्राह्य मानी गई हैं।

शुभवार—चन्द, बुध, गुरू एवं शुक्र यदि बुध अस्त या पापाकांत हो, तो बुधवार भी त्याज्य रहेगा।

शुभ नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, पुर्न, पुष्य, आश्ले. , तीनों पूर्वा, तीनों उतरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूला, अनु, श्रवण, धनि एवं शतभिषा।

उपनयनादि शुभ कृत्य मध्यान्हे से पूर्व प्रातःकाल में ही करना प्रशस्त माना गया है।

आवश्यक मुहूर्त्त विचार

नाम मुहूर्त्त	शुभ ग्राह्य तिथियां	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
बच्चे का नाम रखना	१ (कृष्ण), तथा दोनों पक्ष की २, ३, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) तिथियाँ॥	सूतकान्त (सप्ताह के बाद) १०, १२, १३, १६ आदि दिनों में एवं चंद्र, बुध, गुरु एवं शुक्र वारों में॥	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।
बच्चे को स्कूल डालना (विद्यारम्भ)	२,३,५,७,१०,११,१२, १३ (शु.), १४, बुध एवं पूर्णिमा तिथि	उत्तरायण मासों में (२१ दिसं. से २० जून तक) ५वें ७वें वर्ष, रवि, चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र वार।	अश्वि, मृग, रोह, पुन, पुष्य, श्ले, पूर्वा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, श्रव, धनि, शत, उत्तरा—तीनों।
मुंडन संस्कार	१ (कृष्ण), २,३,५,६,७, १०, ११, १३ (शुक्ल, १५ शुभ तिथियाँ।	जन्म से १, ३, ५ इत्यादि वर्षों में, वैशा, ज्ये., आषा. (२० जून तक), माघ, फागु. (उत्तरायणे), चं. बु. गु. शु.।	अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्ये., श्रव, धनि, शत, रेव एवं जन्म नक्षत्र ग्राह्य॥
दुकान/बही खाता शुरु करना	१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १० १२, १३ (शुक्ल) तिथियां।	रवि, चंद्र, बुध, वीर, शुक्र, शनि। वैशा, ज्ये, आषा, श्रा, भा., मार्ग, माघ, फा।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-३, हस्त, चित्रा, अनु, मूल, श्रव, धनि, पूभा, रेवती।
नौकरी करना	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११ १२, १५ तिथियां।	रवि, चन्द्र, बुध, वीर, शुक्र, उत्तरायण महीने प्रशस्त हैं।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, अनु, ज्ये, श्रव-रेव।
स्कूटर, कारादि सवारी खरीदना	१ (कृ.), २,३,५,६,७,१० ११, १२, १३ (शु.), १५।	चंद्र, बुध, गुरु व शुक्रवारों में।	अश्वि, उत्तरा-३, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-३, पूर्वा-३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, धनि, रेवती।
गृहारम्भ (मकान बनाना)	१ (कृ), २,३,५,६,७,१०, ११, १२, १३ (शु.)व १५।	चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र, शनि, वैशा, ज्ये, श्रव, भादर, माघ, फागु. प्रशस्त हैं।	रोह, मृग, जुन, पुष्य, उत्तरी, ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, धनि, शत, रेव।
शिलान्यास (नींव खोदना)	गृहारम्भ वाली तिथियां ग्राह्य।	गृहारम्भ वाले वार एवं मास ग्राह्य। सुप्त भूमि के प्रविष्टे (१,५,७,९,१०,२१,२४ त्याज्य)	उपरोक्त नक्षत्रों के अतिरिक्त अश्विनी व श्रवण नक्षत्र सुप्त भूमि के प्रविष्ट।
नए घर में प्रवेश	१ (कृ), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) १५ तिथियां।	वैशा, ज्ये, मार्ग, माघ एवं फाल्गु.॥ पुराने गृह में श्राव, भाद्र भी ग्राह्य, चंद्र, बुध, शुक्र व शनि।	अश्वि, रोह, मृग, उत्तरा, ३, हस्त, चित्रा, स्वा, पुष्य, अनु, धनि, रेव।

नाम मुहूर्त्त	शुभ ग्राह्य तिथियां	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
सगाई मुहूर्त्त	१ (कृ), २,३,५,७,८,१०, ११, १२, १३ (शु.), १५ शुभ तिथियां॥	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा, ज्ये, आ, श्रा, भा., आश्वि, मार्ग, माघ, फागु.।	अश्वि, कृति, रोह, मृग, मघा, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु, मू, श्रव, धनि, रेवती।
विवाह मुहूर्त्त	१ (कृ.),२,३,५,७,८,९,१० ११, १२, १३ (शुक्ल), १५।	वै., ज्ये, आषा, श्रा., भा, अश्वि, मार्ग, माघ, फागु. तथा कार्तिक (पर्वतीये केवल)। रवि, चंद्र बुध, गुरु, शुक्र प्रशस्त। मं. श. (मध्यम)।	रोह, मृग, मघा, उत्तरा ३ (तीनों), हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूला, रेव।
मुहूर्त्त मुकलावा	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११ १२, १३ (शुक्ल) १५ तिथियां।	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा., मार्ग, माघ व फाल्गुन मास।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु., मूल, श्रव, धनि, रेव।
बीज बोना (हल चलाना)	१ (कृ) २, ३, ५, ७, १० ११, १२, १३ (शु.) १५ तिथियां।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, मघा, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, विशा, अनु, मूला, रेवती।
अनाज संग्रह (भरने का मुहूर्त्त)	२, ३, ५, ७, ८, ११, १२, १३, (शुक्ल), १५।	चन्द्र, बुध, गुरु व शुक्र।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूल, श्रव, धनि, शत, रेवती।
आप्रेशन कराने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ६, ७, १०, १२, १३	रवि, मंगल, गुरु	अश्वि, रोहि, मृग, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभि, श्रव
मन्त्र सिद्ध करने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५ तिथि।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र वारों में।	अश्वि, मृग, उफा, हस्त, श्रवण, विशाखा।
भूमि खरीदने का मुहूर्त्त	१ (कृष्ण) तथा ५, ६, १०, ११, १५।	मंगल, गुरु, शुक्र।	मृग, पुन, श्ले, मघा, विशाखा, अनु, पूर्वा ३, मूला, रेवती।
मुकद्दमा दायर करना	३, ५, ८, १०, १३ (शुक्ल) १५, चंद्र व मंग. दोनों बलान्वित होने चाहिएं।	रवि, मंग, बुध, गुरु, वार प्रशस्त हैं।	भर, आर्द्रा, श्ले, मघा, पूर्वा-३, ज्ये., मूला, नक्षत्र।
पशु खरीदने का मुहूर्त्त	१ (कृ) २,३,५,६,७,८,१०, ११,१२,१३ (शुक्ल) १५।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु शनि।	अश्वि, पुन, पुष्य, हस्त, विशा, ज्ये, धनि, शत, रेवती।
औषधि सेवन का मुहूर्त्त	१, (कृ), २, ३, ५, ७, १० ११, १२, १३ (शु.)।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, जन्म नक्षत्र त्याज्य हैं।	अश्वि, मृग, पुष्य, चित्रा, पुर्न, हस्त, अनु, स्वा, अभि, श्रवण, धनिष्ठा हैं।

आपको किस दिन क्या कार्य करना शुभ है ?

नाम वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	वीरवार	शुक्रवार	शनिवार
यात्रा में शुभ ग्राह्य-दिशाएँ	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षिण पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण वायव्य (उत्तर-पश्चिम)	दक्षिण-पूर्व आग्नेय (दक्षिण-पूर्व)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)	पूर्व, उत्तर ईशान (उत्तर-पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)
यात्रा में त्याज्य (दिशाशूले)	पश्चिम, वायव्य (उ. पश्चि. कोण)	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षि.-पश्चि.)	उत्तर, पश्चिम वायव्य (उत्तर पश्चि.)	उत्तर, पश्चिम ईशान (पूर्व-उत्तर)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षि. पश्चि.)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य कोण (द. पश्चि.)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)
विद्या एवं शिक्षा सम्बन्धी	विज्ञान, इंजीनियरिंग, सेना, उद्योग, बिजली, मैडिकल, एवं प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी।	लेखनादि कार्य, मैडीकल शिक्षा, सौंदर्य प्रसाधन, औषधि निर्माण व योजना सम्बन्धी।	बिजली (इलैक्ट्रानिक), सर्जरी की शिक्षा, शस्त्र विद्या सीखना, अग्नि, स्पोर्टस, भूगर्भ विज्ञान, दंत चिकित्सा आदि।	गणित, लेखनादि, बौद्धिक कार्य, बैंक वकालत, तकनीकि हुनर, ज्योतिष, विज्ञान, वाहनादि चलाना सीखना।	दर्शन-शास्त्र, धर्म मंत्र ज्योतिष, वकालत, उच्च पद प्रशासनिक शिक्षा वैद्यक आदि।	नृत्य, वाद्य, गायन, कला, संगीत, ऐक्टिंग, गीत-काव्य, रचना, स्त्रियों एवं सौंदर्य सम्बन्धी शिक्षा।	तकनीकी शिल्प, कला, मशीनरी सम्बन्धी ज्ञान (Engineering) अंग्रेजी, उर्दू, फारसी का ज्ञान शुरु करना।
व्यापार सम्बन्धी कार्य	राज्य प्रशासनिक कार्य सेनाधिकारी, ज्यूलर्ज, औषधि, शस्त्र, अग्नि, अनाज, सोना, तांबा, चाँदी, गाय, बैलादि का क्रय-विक्रय, मैडीकल, इलैक्ट्रीकल, मंत्रानुष्ठान यज्ञादि।	कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी डेयरी, फार्म, औषधि, सोडादि तरल पदार्थ, शंख, मोती, स्त्री, धन सम्पदा, सौंदर्य प्रसाधन, सुगन्धि (Perfumes) सम्बन्धी वस्तुओं का क्रय-विक्रय, विदेशी पत्राचार आदि।	शक्ति, अग्नि एवं बिजली से सम्बिन्धत कार्य, बेकरी electronics, स्पोर्टस Goods, सोना, तांबा, मूंगा, पीतलादि का क्रय भूमि, सर्जरी एवं रक्षा सामग्री, सन्धि विच्छेद आदि कार्य।	कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय-विक्रय, शेयरों का क्रय, पुस्तक, लेखन प्रशासन, लेखाकार्य (Accounts) शिक्षण, वकालत, शिल्प, एवं सम्पादन कार्य, वाहन क्रय-विक्रय।	धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, उच्च शिक्षा के कार्य, आभूषण, औषधि, लकड़ी, भूमि, वाहनादि का लेन-देन, विदेश गमनादि कार्य।	संगीत, सिनेमा, विदेश बारे, टैलीविजन, स्त्रियों, एवं श्रृंगारिक वस्तुओं से संबन्धित कार्य, रूई, कपड़ा बैंकिंग, चाँदी, जवाहरात, रसायन, शराब, सोडा, सुगन्धित द्रव्य, वाहनादि क्रय-विक्र, खुशबूदार वस्तु।	मशीनरी, लोहा, लकड़ी चमड़ा, सीमेंट, तेल, पैट्रोल, पत्थर, भूमि, ठेकेदारी, शस्त्रों का क्रय-विक्रय, अन्वेषण एवं आप्रेशण कार्य, अधीनस्थ कर्मचारी, वाहनादि प्रयोग विदेश-यात्रादि कार्य।

नाम वार	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि
नवीन वस्त्र धारण करना	शुभ है	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अति शुभ	अशुभ
नवीनं आभूषण धारण	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
तेल लगाना	अशुभ	शुभ	अशुभ	विशेष शुभ	अशुभ	शुभ	विशेष शुभ
हजामत करना	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम
नया जूता पहनना	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम
मुकद्दमा करना	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ

अनुष्ठान आरम्भ करने का मुहूर्त

मास—वैशाख, श्रावण, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ फाल्गुन।

तिथि (शुक्ला)—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३।

वार—सू. गु. शु. (सोम मध्यम)।

नक्षत्र—अशिव. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा. ३. ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे।

लग्न—शिव की आराधना १, ४, ७, १० लग्नों में एवं विष्णु की २, ५, ८, ११ लग्नों में तथा देवी की ३, ६, ९, १२ लग्नों में कर्त्तव्य है।

अन्य देवताओं के अनुष्ठान में वह राशि लग्न ग्रहण करें, जब ३, ६, ११वें क्रूर ग्रह १, २, ४, ५, ७, ९, १०वें सौम्य ग्रह तथा ८, १२वें प्रहाभाव।

विशेष—आराध्य देवताओं के मास, तिथि, वार, नक्षत्र विशेष शुभ है। पुनश्च, गुरु-शुक्रास्त, बलहीन चन्द्र तथा कुयोग परित्याज्य हैं।

यात्रादि मुहूर्त्त विचार

किसी कार्य के उद्देश्य से देशान्तर गमन को यात्रा कहते हैं। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा और २, ३, ५, ७, १०, ११, १३—इन तिथियों में अश्वि., मृग. पुर्न, पुष्य, अनु, हस्त, श्रव., धनि, रेव.—इन नक्षत्रों में तथा चौर, वाण, भद्रा, वैधृति, व्यतियात और मासांत दिनादि दोष रहित समय में यात्रा करें। यात्रा करने से पूर्व क्रोध और मैथुन कर्म का त्याग करना चाहिए।

दिशाशूल

सोमवार, शनिवार को पूर्व, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम, मंगलवार, बुधवार को उत्तर तथा गुरुवार को दक्षिण दिशा का दिशाशूल होता है, अतः उक्त वारों को उस दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिए। अत्यावश्यक होने पर रविवार को पान और घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर या दूध पीकर, मंगलवार को गुड़ खाकर, बुधवार को धनिया या तिल खाकर, गुरुवार को दही खाकर, शुक्रवार को दूध पीकर और शनिवार को अदरक या उड़द खाकर प्रस्थान किया जा सकता है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाँव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, यात्रा सफल होगी।

चन्द्रवास ज्ञान चक्र

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

चन्द्रवास विचार

जाने वाली दिशा में चन्द्रमा का वास सम्मुख और दाहिनी ओर को हो तो धन का लाभ और सुख होता है। यदि पीठ की ओर अथवा बाईं तरफ चन्द्रवास हो तो कष्ट और धन की हानि होती है।

सम्मुख चन्दमा का विशेष फल

करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष, संक्रान्ति दोष, अशुभतिथिदोष, कुलिक दोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु-केतु के दोष को सम्मुख चन्द्रमा दूर करता है।

'यात्रा के समय शुभ शकुन'

यात्रा के समय श्वेत पुष्पों का दर्शन श्रेष्ठ माना गया है। भरे हुए घड़े का दिखाई देना तो बहुत ही उत्तम है। दूर का कोलाहल, अकेला वृद्ध पुरुष, पशुओं में बकरे, गौ, घोड़े तथा हाथी, देवप्रतिमा, प्रज्वलित अग्नि, दूर्वा, ताज़ा गोबर, सोना, चांदी, रत्न, बच, सरसों आदि औषधियां, मूँग, छाता, पीढ़ा, राजचिह्न, जिसके पास कोई रोता न हो ऐसा शव, फल, घी, दही, दूध, अक्षत, दर्पण, मधु, शंख, ईख, शुभ सूचक वचन, भक्त पुरुषों का गाना-बजाना, मेघ की गम्भीर गर्जना, बिजली की चमक तथा मन का सन्तोष—ये सब शुभ शकुन हैं। 'चले आओ'—यह शब्द यदि सामने की ओर से सुनाई पड़े तो उत्तम है। 'जाओ'—यह शब्द यदि पीछे की ओर से हो तो उत्तम है।

क्षौरकर्म (हजामत) के लिए शुभाशुभ दिन

गर्गादि आचार्यों के अनुसार रविवार, मंगलवार एवं शनिवार को क्षौर (हजामत) कर्म करवाने से आयु का क्षय होता है। **सोमवार, बुधवार, गुरुवार** और **शुक्रवार** को क्षौर कर्म (हजामत) करवाना शुभ होता है। मतान्तर से एक पुत्र सन्तान वाले गृहस्थी को सोमवार के दिन, तथा विद्या एवं धनाकांक्षी गृहस्थी को गुरुवार के दिन क्षौर नहीं करवाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त पर्व वाले दिन, जन्मदिन, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी (१४) आदि रिक्ता तिथियों में, व्रत के दिन, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, श्राद्ध के दिन, भद्रा और व्यातिपात योग में तथा भोजन करने के बाद, देश-प्रदेश जाने के समय में शुभाकांक्षी और कर्म न करावें।

तैलाभ्यंग—अर्थात् तैल मालिश करना

रविवार, मंगलवार, गुरुवार तथा शुक्रवार को तैल लगाना शुभ नहीं माना जाता है। **निर्णय सिन्धु** के अनुसार रविवार तैल लगाने से ताप, मंगलवार को आयु क्षीणता, गुरुवार से धन-हानि, शुक्रवार को तैल लगाने से दुःख होता है। सोमवार, बुधवार तथा शनिवारों को तैल लगाना शुभ होता है।

निषिद्ध वारों में तैल लगाना हो, तो रविवार को पुष्प, गुरुवार को दूर्वा, मंगल को मिट्टी, और शुक्रवार को गोबर तेल में डालकर लगाने से दोष नहीं होता। गन्धयुक्त (सुगन्धित) तेल एवं प्रतिदिन तेल लगाने वालों को भी दोष नहीं लगता—(**नित्यं—अभ्यङ्गके चैव वासिते नैव दूषणम्॥**)

अथ अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जनना शौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भास्त्रावादि अशौच-व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवें, छटे मास में 'गर्भपात' और इसके उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर, किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पितादि सपिण्डों को ३ दिन का 'सूतक' होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने २ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है, जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हों, तो, २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से एक मास तक धर्मकार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

मृतोत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाये तो माता को १० दिन तक सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये तो पितादि सपिण्डों का पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं होता।

मृताशौच-व्यवस्था

नामकरण अर्थात् १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दाँत आने से पहिले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक, अर्थात् मुंडन संस्कार न हुए बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिनं सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है और ३ वर्ष में मुण्डन संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या शौच-व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाए व प्रसूता हो तो माता-पिता सहोदर, भाईयों को तीन दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है।

मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना की ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १॥ दिन का पातक होता है।

सास-ससुर तथा जामातृ पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जाये तो जामित्र पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जामाई के मरने पर १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय-विचार

भूआ मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी की मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो तीन दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १ दिन का पातक होता है। और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का।

राहु कालम्

शुभ कार्यों में विशेषतया त्याज्य

दक्षिण भारत में राहु-कालम का विशेष प्रचलन है। विशेष वार प्रतिदिन डेढ़ घण्टे के लिए यह अनिष्ट समय होता है। जिसे शुभ कार्यारम्भ में यथासम्भव टाल देना चाहिए। दक्षिणी भारत में **राहु कालम** का विशेष विचार किया जाता है।

सोमवार—प्रात: ७/३० से प्रात: ९ बजे तक
मंगलवार—अपरान्ह ३/०० से ४/३० बजे तक
बुधवार—दोपहर १२/०० से १/३० बजे तक
बृहस्पतिवार—दोपहर १/३० से ३/०० बजे तक
शुक्रवार—प्रात: १०/३० से दुपै. १२ बजे तक
शनिवार—प्रात: ९/०० से प्रात: १०/३० बजे तक
रविवार—सायं ४/३० से सायं ६/०० बजे तक

स्त्री जातक विचार

- यदि कन्या की जन्म कुण्डली में सप्तमेश ग्रह के साथ शनि स्थित हो, तो ऐसी कन्या का विवाह बड़ी आयु में होता है।
- यदि सूर्य, मंगल, बुध लग्न में हो और गुरु द्वादश भाव में स्थित हों, तो भी उस कन्या का विवाह दीर्घकाल में ही होता है।
- जिस स्त्री के जन्म काल में सप्तम भाव में शुभ-अशुभ—दोनों प्रकार के ग्रह होते हैं, उसके दो विवाहों के योग बनते हैं।
- यदि किसी स्त्री के सप्तम भाव में सूर्य हो अथवा अन्य कोई पाप ग्रह ७वें भाव में स्थित हो, तो ऐसी स्त्री को वैवाहिक—सुख कम मिलता है।
- यदि सप्तम भाव में बुध तथा शनि की युति हों, तो ऐसी स्त्री का पति नपुंसक होता है।
- आठवें भाव में बुध गया हो ऐसी स्त्री काक—बन्ध्या होती है अर्थात् एक बार सन्तान होकर पुन: सन्तान होने में बाधा होती है।

विष कन्या योग

- शनिवार, आश्लेषा नक्षत्र और द्वितीया तिथि—में तीनों जिस दिन मिलें उस दिन जन्मी कन्या विष कन्या होती हैं।
- मंगलवार, विशाखा नक्षत्र और द्वादशी तिथि—ये तीनों जिस दिन मिलें, उस दिन जन्मी कन्या विष कन्या होती हैं।
- यदि पंचम भाव में धन अथवा मीन राशि हो तथा गुरु पंचम भाव में स्थित हो अथवा पंचम भाव पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो, तो ऐसे योग वाली स्त्री को उपाय से सन्तान होती है।

माला योग

- यदि कुं. में बुध, गुरु और शुक्र ४, ७, १०वें स्थानों में स्थित हों, और शेष ग्रह इनमें भिन्न भावों में पड़ें हों, तो माला योग होता है। इस योग के होने से जातक धनवान् वस्त्राभूषणों से युक्त, एक से अधिक स्त्रियों से प्रेम सम्बन्ध रखने वाला, एवं उच्च अधिकारी होता है। चुनाव, कम्पीटीशन आदि में प्राय: सफल रहता है।

शकट योग

- जन्म कुण्डली में यदि लग्न और सप्तम भाव में समस्त ग्रह पड़े हों तो शकट योग होता है। इस योग वाला व्यक्ति स्वार्थी, चतुर, रोगी, दुष्ट, अल्प-विद्या, ड्राईवरी एवं संचालनादि कार्यों में सफल होता है। धन की उसे प्राय: कमी रहती है। बन्धुओं का सुख भी नहीं होता।

अथ प्रसूति लग्नादि का विचार

मेष—बालक के जन्म समय मेष लग्न हो तो घर के पूर्व की ओर प्रसूतिका की शय्या, दो उपसूतिकाएँ अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य में जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका की संख्या जानें, मुख की कांति लाल वर्ण की, माता का मुख पूर्व की ओर, बालक की प्रकृति पित्तकारक, चंचल एवं साहसी होगी। माता के वस्त्र लाल वर्ण के तथा उसने पहले मीठा भोजन किया हो। जन्म के बाद बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। मकान पुराना होगा। आयु के २, ४, ११, १६, २९वें साल विशेष कष्ट रहे।

वृष—बालक के जन्म समय वृष लग्न हो, तो बालक गौरपूर्ण सुन्दर रूप, द्वार एवं माता का शिर दक्षिण की ओर, रक्त-पित्त प्रकृति, माता ने श्वेत वस्त्र और चाँदी के आभूषण पहने हों, पहले शाकादि का भोजन किया हो। पाँव से प्रसवोत्पन्न, ३ या ४ उपसूतिकाएँ हों। आयु के १, १३, १८, ३३, ४३, ५८वें वर्ष में विशेष कष्ट हो।

मिथुन—बालक का चंचल स्वभाव, वात-श्लेष्म (वायु बलगम) प्रकृति, उपसूतिकाएँ (स्त्रियाँ) ३ या ५, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्तनों में दूध कम उतरा हो, माता ने पहले नमकीन विचित्र (मिश्रित) भोजन किया हो, वस्त्र हरा पुराना, गृह का द्वार पश्चिम की ओर हो, शिराभिमुख प्रसव हुआ हो, बालक ने दीर्घ स्वर में रूदन किया हो। आयु के २, ४, १०, १३, ३८, ४८वें साल कष्ट रहे।

कर्क—गौर वर्ण, कोमल पर पुष्ट शरीर, चंचल नेत्र, वात-श्लेष्म प्रकृति, कद लम्बा व गोल, सुन्दर मुख, माता का मुख उत्तर की ओर, प्रसव से पूर्व माता ने मीठा-शीतल थोड़ा भोजन किया हो, तथा पुराने वस्त्र पहिने हो, माता के दाहिने अंग पर लहसन का निशान हो, प्रसव से पूर्व माता ने श्वेत व गुलाबी वस्त्र व चाँदी के आभूषण पहिने हों। प्रसवोपरान्त बालक कुछ देर से रोया हो। वह जलीय (liquids) का शौकीन हो। आयु के १, ५, २५, ३९, ४८, ६२वें वर्ष कष्ट।

सिंह—जन्म समय सिंह लग्न हो, तो माता का मुख पूर्व किन्तु गृहद्वार दक्षिण की ओर, उसने रक्त वस्त्र एवं सुवर्ण आभूषण पहने हों, प्रसव पूर्व उसने खट्टा व कसैला भोजन किया हो। जन्म समय ३ या ५ स्त्रियाँ, नया मकान, बालक की पीठ पर चिन्ह हो और वह दीर्घ स्वर में रोया हो। आयु के ३, ५, १२, २८, ३६, ४९वें वर्ष कष्ट रहे।

कन्या—इस लग्न का स्वामी बुध है। जन्म समय बालक के सुन्दर नेत्र, गौर वर्ण, अल्प बाल, गोल चेहरा, सौम्य पांव, चंचल वृत्ति, कण्ठ व जंघा में चिह्न हो। माता का मुख दक्षिण की ओर, स्त्रियां ४ या ५, माता लाल एवं प्राचीन वस्त्र, कसैला सहित भोजन, पिता घर से बाहर, बालक अल्प शब्द से रोया हो। आयु के २, ४, १५, २३, २५, ३५, ४५, ५६वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

तुला—गौरवर्ण, कुछ लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बड़ी नाक, थोड़े बाल, चंचल, तीक्ष्ण बुद्धि, दुबला कृश शरीर, माता का मुख पश्चिम की ओर, कषाय भोजन किया हो तथा पुराने वस्त्र धारण किए हों, बालक-बालिका दीर्घ शब्द में रोए। आयु के ३, ६, ८, १५, २७, ३१वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

वृश्चिक—ऊँचा मस्तक, सौम्य प्रकृति, पुष्ट शरीर, ताम्रवर्ण भूरे नेत्र, शीर्षोदय, तेज़ स्वभाव, केश लम्बे, स्त्रियाँ २ या ३, गृह का द्वार उत्तर की ओर, बालक की पीठ पर चिन्ह, माता ने लाल वस्त्र पहनें हों, बालक देर से रोया हो। आयु के २,६,११,२७,५८वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

धनु—रंग गोरा, ऊँचा मस्तक, बड़े नेत्र, माता का मुख पूर्व की ओर, पीले वस्त्र सहित चित्रित वस्त्र एवं पकवान भोजन किया हो, बालक की छाती पर चिन्ह, माता का मुख उत्तर-पूर्व की ओर होगा तथा जन्म समय १ या ५ स्त्रियां, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। वर्ष के १, ३, १०, १८, २१, ३७, ४२वें वर्ष विशेष कष्टकारी होंगे।

मकर—जन्म समय कृश शरीर, पिंगल वर्ण, बहुत केश, ऊँचा मस्तक एवं ऊँची नाक, वात-विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना काला, नीला वस्त्र धारण किया हो, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियां ३ या ४ हों, सूतिका गृह प्राचीन एवं गृह द्वार उत्तर की ओर, जन्म के बाद बालक ने थोड़ा रोया हो। आयु के ३, ५, १३, २७, ३३, ५७वें वर्ष में विशेष कष्ट रहें। जातक पर शनि का विशेष प्रभाव रहे।

कुम्भ—जन्म समय कुम्भ लग्न हो, तो बालक-बालिका का चौड़ा मस्तक, कुछ मोटे होंठ, वात-पित्त प्रकृति, श्वेत-श्याम वर्ण, धूम्रवर्ण वस्त्र, मध्यम केश, माता का मुख पश्चिम की ओर, ३ या ५ स्त्रियाँ, शाकादि का भोजन किया हो, माता को शरीर कष्ट, पिता घर में न हो तथा बालक-बालिका ने थोड़ा रूदन किया हो। आयु के २, ४, १३, २८, ३३, ४२, ४८, ५४वें वर्ष विशेष कष्ट हो। बालक पर शनि ग्रह का विशेष प्रभाव रहेगा।

मीन—बालक जन्म समय सुन्दर सौम्य एवं पीत (पिंगल) वर्ण, वात-श्लेष्म कफ प्रकृति, माता पीले वर्ण सहित मिश्रित वर्ण के वस्त्र धारण किए हुए मिष्ठान्न सहित अल्प भोजन किए, उस का मुख उत्तर की ओर, जन्म समय २ या ३ स्त्रियां हों, बालक जन्म से कुछ देरी के बाद रोया हो। आयु के १, ७, १०, १३, १६, २६, २९, ३८, ४१वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

ग्रह व राशियों के तत्त्वों पर से शारीरिक स्थिति

जन्म समय जिस प्रकार की उदित लग्न राशि और ग्रह के तत्त्व होंगे, जातक की शरीर संरचना भी वैसी ही होगी। शरीर की स्थिति के सम्बन्ध में विचार करने के लिए ग्रह और राशियों के तत्त्व नीचे लिखे जाते हैं—

ग्रह	शुष्कादि	तत्त्व	कद
सूर्य	शुष्क ग्रह	अग्नि	मध्यम
चन्द्र	जल ग्रह	जल	दीर्घ
मंगल	शुष्क ग्रह	अग्नि	ह्रस्व
बुध	जलीय	पृथ्वी	मध्यम
गुरु	जलीय	आकाश या तेज़	मध्यम या ह्रस्व
शुक्र	जलीय	जल तत्त्व	ह्रस्व
शनि	शुष्क	वायु तत्त्व	दीर्घ
राहु	शुष्क	वायु	दीर्घ
केतु	शुष्क	वायु	मध्यम

राशि तत्त्व

मेष	अग्नि	ह्रस्व
वृष	पृथ्वी	ह्रस्व
मिथुन	वायु	मध्यम
कर्क	जल	मध्यम
सिंह	अग्नि	दीर्घ
कन्या	पृथ्वी	दीर्घ
तुला	वायु	दीर्घ
वृश्चिक	जल	दीर्घ
धन	अग्नि	मध्यम
मकर	पृथ्वी	मध्यम
कुम्भ	वायु	ह्रस्व
मीन	जल	ह्रस्व

(१) जन्म लग्न में जल राशि हो एवं उसमें जल तत्त्व ग्रह की स्थिति हो, तो जातक का शरीर मोटा एवं पुष्ट होगा।

(२) लग्न एवं लग्नाधिपति ग्रह जलराशिगत हो, तो भी शरीर स्थूल एवं पुष्ट होगा।

(३) यदि जन्म लग्न अग्नि राशि का हो और अग्नि तत्त्व के ग्रह उसमें स्थित हों, तो मनुष्य शक्तिशाली एवं बली होता है, पर शरीर देखने में दुबला लगेगा।

(४) पृथ्वी राशि का लग्न हो और उसका राशि स्वामी ग्रह जल राशि में हो तो शरीर साधारणतया स्थूल होता है।

(५) पृथ्वी राशि लग्न हो और लग्नपति ग्रह पृथ्वी राशि में हो, तो शरीर स्थूल और दृढ़ होता है।

(६) यदि लग्न राशि पृथ्वी तत्त्व की हो और उसमें पृथ्वी तत्त्व का ही ग्रह पड़ा हो, तो जातक नाटे (छोटे) कद वाला होता है।

(७) यदि लग्न वायु तत्त्व राशि वाला हो और उसमें वायु तत्त्व के ग्रह हों, तो जातक दुबला, परन्तु तीक्ष्ण बुद्धि वाला होगा।

(८) यदि लग्न अग्नि या वायु तत्त्व की राशि वाला हो और लग्नाधिपति जल राशिगत हो तो शरीर स्थूल होगा।

(९) यदि लग्न में अग्नि या वायु तत्त्व की राशि हो और लग्नेश ग्रह पृथ्वी राशिगत हो, तो हड्डियाँ साधारणतया मजबूत और शरीर पुष्ट होगा।

इसके साथ ही लग्न की राशि ह्रस्व, दीर्घ या सम (मध्यम), जिस प्रकार की हो, उसी के अनुसार जातक के शरीर की ऊँचाई समझनी चाहिए।

इसी भान्ति लग्न राशि और लग्नेश ग्रह के अनुसार जातक के रूप-रंग का निर्णय करना चाहिए।

राशियों द्वारा वर्ण ज्ञान

मेष लग्न में लाल मिश्रित, **वृष** में पीला मिश्रित श्वेत, **मिथुन** में विविध मिश्रित श्वेत, **कर्क** में नीला मिश्रित सफेद, **सिंह** में गन्दमी, **कन्या** में श्याम मिश्रित सफेद, **तुला** में तालिका युक्त सफेद, **वृश्चिक** में लालिमा युक्त सफेद, **धनु** में पीत वर्ण युक्त सफेद, **मकर** में चितकबरा सफेद, **कुम्भ** में आकाश सदृश नीला, **मीन** में पीत युक्त गौर वर्ण। इस भान्ति लग्न राशि और लग्नेश के स्वरूप के अनुसार जातक के रूप-रंग का निश्चय करना चाहिए। इसके अतिरिक्त लग्न पर ग्रहों की दृष्टियों का भी प्रभाव रहता है।

ग्रहों के अनुसार वर्ण (रूप-रंग) विचार

सूर्य से रक्त-श्याम (गन्दमी) **चन्द्र** से गौरवर्ण, **मंगल** से लाल वर्ण, **बुध** से दूर्वादल के समान श्यामल, **गुरु** सुवर्ण (बादामी), **शुक्र** से (नीलिमा युक्त) सफेद, **शनि** से श्यामवर्ण, **राहु** से कृष्ण एवं **केतु** से **धूम्र वर्ण** जानना चाहिए। **बुध-शुक्र** एक साथ हों तो गौरववर्ण न होते हुए भी सुन्दर आकृति होती है। **लग्न** एवं लग्नेश पर पाप ग्रह की दृष्टि होने से जातक के सौन्दर्य में कमी आती है।

शरीर के अंगों पर व्रण, तिलादि का विचार—जिस अंग का विचार करना हो, उस अंग की राशि जिस प्रकार की ह्रस्व या दीर्घ हो तथा उस राशि में रहने वाला जैसा ग्रह होगा, उस अंग की वैसी ही स्थिति (ह्रस्व या दीर्घ) होगी।

द्वादश भावों में अंग ज्ञान—ज्योतिष शास्त्र में **लग्न भाव** में स्थित राशि से सिर, **दूसरे भाव** की राशि को मुख, **तीसरे भाव** से वक्षस्थल और फेफड़े, **चौथे भाव** की राशि से हृदय और छाती, **पंचम** स्थान से कुक्षि और पीठ, **छठे भाव** से कमर और आंते, **सप्तम** स्थान से नाभि और गुप्तांग के बीच का स्थान, **अष्टम** स्थान से गुप्तांग, **नवम्** भाव से ऊरू और जंघा, **दशम्** स्थान से टेहुना, **एकादश** स्थान की राशि से पिण्डलियाँ, **द्वादश** स्थान से पाँव का विचार करना चाहिए।

राशि के अनुसार अंगों का विचार—(१) **मेष** राशि से मुख, मस्तिष्क। (२) **वृष** से नेत्र, जिह्वा, कण्ठ, भुजाएँ। (३) **मिथुन** राशि से हाथ, कन्धे, हृदय। (४) **कर्क** से पेट, (५) **सिंह** राशि से कमर, पीठ, मेरूदण्ड। (६) **कन्या** राशि से नाभि, पेट। (७) **तुला** राशि से नाभि के नीचे, गुर्दे, मूत्राश्य। (8) **वृश्चिक** से मूत्रेन्द्रिय, जननेन्द्रिय, गुदा आदि। (9) **धनु** से जंघाएँ, नितम्ब। (10) **मकर** राशि से दोनों घुटने। (11) **कुम्भ** से दोनों पिंडलियां। (12) **मीन** राशि से दोनों पाँवों का विचार किया जाता है।

काल पुरुष में राशि ज्ञान

काल पुरुष एक काल्पनिक विराट् समय को पुरुष माना गया है, जिसमें द्वादश राशियों की कल्पना की गई है।



कालपुरुष के शिर में मेष राशि मुख में वृष, वक्षस्थल में मिथुन, हृदय में कर्क, उदर में सिंह, कटि में कन्या इत्यादि काल पुरुष के शरीर की राशि जानें। जिस लग्न में बालक जन्मे वह शिर जानना अन्य सब राशि क्रम से अंग होते हैं।

ग्रहों के अनुसार अंगों पर चिन्ह विचार

जिस भाव एवं राशि पर पाप ग्रह हों, उसमें व्रण (घाव) आदि और जिसमें शुभ ग्रह हों, उस स्थान पर चिन्ह कहना चाहिए। यदि ग्रह अपनी राशि या अपने नवांश में हो, तो, व्रण या चिन्ह जन्म (गर्भ) से ही समझना चाहिए। अन्यथा ग्रह की अपनी दशा के समय व्रण या चिन्ह प्रकट होते हैं।

यदि किसी जातक के जन्म लग्न में मंगल और सप्तम भाव में गुरु या शुक्र हो, तो उसके सिर में व्रण (दाग) होता है।

जन्म लग्न में **मंगल-शुक्र** और चन्द्रमा हों तो जातक को जन्म से दूसरे या छठे वर्ष सिर में चोट लगने से घाव होता है। जन्म लग्न में शुक्र और आठवें स्थान में राहु हो, तो मस्तक या बाएँ कान में चिन्ह होगा। यदि लग्न में गुरु, सप्तम में राहु और आठवें स्थान में पाप ग्रह हों, तो जातक के बाएँ हाथ में चिन्ह होता है अथवा लग्न में गुरु या शुक्र हो और अष्टम में पाप ग्रह हों, तो भी बाएँ हाथ पर चिन्ह होगा।

पाँचवें या नवें (८, ९) शनि हो और उस पर शुक्र की दृष्टि हो, तो मूत्रेन्द्रिय या गुदा के समीप तिल होता है। पांचवें या नवम् भाव में शुक्र और बुध हों, अष्टम में गुरु और लग्न या चतुर्थ भाव में शनि हो, तो पेट पर चिन्ह होता है। **चतुर्थ स्थान** में राहु या शुक्र दोनों में से एक ग्रह स्थित हो और लग्न में शनि या मंगल स्थित हो, तो पाँव के तलवे में चिन्ह होता है। दूसरे भाव में शुक्र, **आठवें भाव** में सूर्य और तीसरे में मंगल हो तो जातक की कमर के आस-पास चिन्ह होता है। १२वें भाव में गुरु, नौवे भाव में चन्द्रमा और तीसरे या ११वें में बुध हो, तो गुदा स्थान में चिन्ह होता है।

जातक के शरीर में तिल, मस्सा, चिन्ह आदि का विचार लग्न राशि, लग्न स्थित द्रेष्काण राशि एवं शीर्षोदय राशि आदि के द्वारा भी किया जाता है।

पितृ-परोक्ष ज्ञान

बालक के जन्म समय पिता घर में था या नहीं ? जन्मकुण्डली में यदि लग्न को चन्द्रमा न देखता हो तो बालक के जन्म समय उसका पिता घर में नहीं था, यदि सूर्य जन्म लग्न से अष्टम, नवम, एकादश तथा द्वादश स्थान में चर राशि का होकर पड़ा हो और चन्द्रमा लग्न को न देखता हो तो पिता बालक के जन्म समय दूसरे देश में था। इन्हीं उपरोक्त स्थानों में सूर्य स्थित राशि का हो तो पिता घर में नहीं था, परन्तु देश ही में है। इसी प्रकार सूर्य के द्विस्वभाव में होने पर मार्ग में कहे, परन्तु इन सब योगों में लग्न को चन्द्रमा न देखता हो तो ऐसा होगा।

माता पिता को अरिष्ट योग

पिता के लिये सूर्य तथा दशम् स्थान से और माता के लिये चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से विचार करना चाहिये। यदि बालक की जन्मकुण्डली में सूर्य के साथ अथवा दशम् स्थान में पाप ग्रह बैटे हों या देखते हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ा हो तो बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिये। यदि सूर्य से ४/ ६ /८ स्थान में पाप ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो तो भी पिता को कष्ट जानें।

इसी प्रकार चन्द्रमा तथा चतुर्थ भाव से माता का विचार करें। चन्द्रमा के साथ २। १२ स्थान में व ४। ६। ८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ न हों तो माता को कष्ट जाने।

बालारिष्ट योग

शास्त्रानुसार जब तक बच्चा १२ वर्ष का न हो जावे, उसकी आयु निश्चित नहीं की जा सकती। बालक की कुण्डली में आयु योग होने पर भी कई बार माता-पिता के किए हुए पाप कर्मों से तथा ग्रहों के प्रभाव से बच्चे की अकाल मृत्यु हो जाती है। प्रथम चार वर्ष की आयु तक माता के पापों के कारण, ८ से १२ वर्ष तक की आयु तक बालक अपने पूर्व जन्म से पापों के कारण अपमृत्यु होती है। जन्म से आठ वर्ष तक बालारिष्ट, आठ से २० वर्ष की आयु तक योगारिष्ट तथा २० वर्ष से ३२ वर्ष की आयु तक अल्पायु कहलाती है। यदि बच्चे की कुण्डली में चतुर्थ या दशम् स्थान में शुभ ग्रह स्थित हों तो माता को सुखपूर्वक प्रसव होता है।

- यदि लग्न या चन्द्रमा से चौथे या सप्तम स्थान में क्रूर ग्रह हों, तो माता को प्रसव के समय अधिक कष्ट होगा अथवा ४ एवं सप्तम भावों पर शनि मंगल आदि क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो, तो आप्रेशन द्वारा प्रसव होता है।
- यदि लग्न से छठे, आठवें तथा १२वे भावों में क्रूर ग्रह हों और इन स्थानों में शुभ ग्रह न हों तथा गुरु या शुक्र पाप ग्रहों के मध्य में हों, तो बच्चे सहित माता व सन्तान दोनों को मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।
- यदि लग्न में पाप ग्रह हों और चन्द्रमा पाप ग्रह के साथ स्थित हो तथा लग्न एवं चन्द्रमा पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो, तो बालारिष्ट समझना चाहिए।
- लग्न एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह स्थित हों, तथा बारहवें भाव में क्षीण चन्द्रमा स्थित हो और उसे कोई शुभ ग्रह न देखता हो, तो विशेष बालारिष्ट योग होता है।
- चन्द्रमा ४-६-८-१२ भावों में हो तथा उसके दोनों ओर पाप ग्रह हों, तो चन्द्रमा पापाक्रान्त होने से बालक एवं माता दोनों को अरिष्ट होता है।
- यदि लग्न का स्वामी ७वें भाव में हो और वह शनि, राहु, मंगल आदि पाप ग्रहों से युक्त हो, तो एक वर्ष तक विशेष अरिष्ट होता है।

उपरोक्त बालारिष्ट के कुछ योग दिए गए हैं और अधिक अल्पायु के योगों के विस्तारपूर्वक जानने के लिए हमारी प्रकाशित ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) प्रथम भाग पुस्तक का अध्ययन करें। उपरोक्त बालारिष्ट योगों के अतिरिक्त बालक के जन्म समय गण्डान्त नक्षत्र, विष घटी नक्षत्र, अशुभ ग्रह दशा, माता-पिता की कुण्डलियों में अशुभ ग्रह योगों पर भी विचार कर लेना चाहिए।

बालक/बालिका की कुण्डली में अरिष्ट योग या उसकी सम-भावना हो, तो उपयुक्त चिकित्सा उपायों के साथ-साथ प्रति वर्ष एवं प्रति मास (परिस्थिति अनुसार) जन्म तिथि, नक्षत्र के दिन (चान्द्र मास के हिसाब) या वर्ष प्रवेश कालीन जप, होम, नवग्रह पूजन, तुलादान, छायादान, मृतसंजीवनी मन्त्र का जप या मृत्युञ्जय मन्त्र का पाठ, दान एवं ब्राह्मण भोजन आदि करवाना कल्याणकारी रहेगा।

नींव में रखने योग्य पदार्थ

शिलान्यास हेतु आवश्यक सामग्री—

- तांबे की गड़वी में चावल भरकर तथा सरसों, हल्दी भरें तथा गड़वीं को मौली तथा आम्र पत्तों से बांध लें।
- ५ नई ईंटे
- ५ पंचरत्नी तथा गीता आदि धार्मिक ग्रन्थ
- १ जोड़ी सर्प, सर्वोषधि, श्रीफल एक, लाल वस्त्र, जनेऊ-जोड़ा
- **(विशेष)** —भाद्रपद, आश्विनी और कार्तिक मास में भवन निर्माण हो तो सर्प का मुख पूर्व में होना चाहिए।
- फाल्गुन, चैत्र, वैशाख मासों में निर्माण हो तो सर्प का मुख पश्चिम दिशा की ओर हो।
- ज्येष्ठ, आषाढ़ श्रावण मासों में सर्प का मुख उत्तर दिशा की ओर हो।
- मार्गशीर्ष, पौष, माघ मासों में सर्प का मुख दक्षिण दिशा में होना चाहिए।
- ५ कौड़ीयां, सिंधूर, ५ सुपारी साबुत
- दरिया या तालाब के किनारे की घास तथा १ पांव कच्चा दूध। (यदि सम्भव हो तो गंगाजल एवं गंगादि तीर्थ से लाई हुई रेत या मिट्टी भी रख दी जाए तो अधिक अच्छा है।
- नारियल

जन्मदिन कैसे मनाएं ?

पाश्चात्य सभ्यता की अन्धानुकरण की दौड़ में आजकल मध्यम एवं उच्च वर्ग के अधिकांश लोग अपना व अपने बच्चों का जन्मदिन गत बीते वर्ष जितनी मोमबत्तियाँ जलाकर, फिर उन्हें फूंक से बुझाकर तालियाँ बजाते हुए Happy Birthday to you बोलते हुए मनाते हैं। फूंकमार **प्रज्वलित ज्योत को बुझा देना** हमारी भारतीय संस्कृति एवं परम्परा के विरुद्ध है।

जन्म दिन के शुभ अवसर पर प्रातः उठकर सर्वप्रथम अपने अग्रजों (माता-पिता, दादा-दादी, गुरू आदि आप्त जन) को प्रणाम करके उनसे शुभाशीष ग्रहण करना चाहिए (इसके अभाव में सर्वप्रथम सूर्य भगवान् के दर्शन करके गायत्री मन्त्र जप करें।)

तदुपरान्त शौचादि कार्यों से निवृत्त होकर सर्वोषधि गंगा जल सहित शुद्ध जल से स्नान कर, स्वच्छ वस्त्र धारण कर पूर्वाभिमुख होकर शुद्धासन पर बैठकर गणपति, शिव, विष्णु आदि देवों तथा नवग्रहों (स्वस्तिवाचन, एवं शान्ति पाठ आदि मन्त्रो का शुद्ध चित्त होकर स्वयं अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मण के द्वारा पूजन व पाठादि करवाना चाहिए। विशेषकर वर्ष कुण्डली और अरिष्टकर ग्रहों एवं मुंथा आदि का दान, जपादि करवाने से आरोग्य, सुख व समृद्धि बनी रहती है। इस दिन श्री मार्कण्डेय, भारद्वाज, कश्यप, अत्रेय, विश्वामित्र, गौतम, श्री परशुराम, श्री नारद, वशिष्ठादि दीर्घजीवी ऋषियों का स्मरण कर नमस्कार करने से दीर्घायुष्य की प्राप्ति होती है।

पूजनोपरान्त हवन करवाना और ब्राह्मण भोजन करवाना शुभ होता है। जन्मदिन पर तिल प्रयोग भी आयुवर्द्धक होता है। तिल स्नान, तिल होम, तिल निर्मित वस्तु (क्षीरादि) का प्रयोग व दानादि शुभप्रद होता है।

पूजा के बाद केशरी वर्ण के वस्त्र में गुग्गल, नीम की पत्तियाँ, गोरोचन, सफेद सरसों तथा दूर्वा बाँधकर दाई भुजा में किसी ब्राह्मण द्वारा स्वस्तिवाचन मंगल मन्त्रों सहित बंधवा लेने से वर्षभर किसी अनिष्ट का भय नहीं रहता है।

जन्मदिन पर सूर्यदेव को '**ॐ घृणि सूर्याय नमः**' आदि मन्त्रों सहित अर्घ्य देना, गायत्री मन्त्र का पाठ तथा इस दिन श्री परमात्म तत्त्व का चिन्तन, स्मरण एवं संकीर्तन करना एवं दानादि शुभ कार्यों में प्रवृत्त रहना शुभ होता है।

जन्मदिन पर क्षौर कर्म (हजामत बनाना), माँस-मदिरा तामसिक वस्तुओं का सेवन, निन्दा, कलह, हिंसा, यात्रा, स्त्री प्रसंग, जूआ आदि कृत्य निषेध हैं। अग्रजों द्वारा मांगलिक मन्त्रों से शुभ आशीर्वाद ग्रहण करना सर्वप्रकार से कल्याणकारी रहता है—

"ॐ असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योर्तिगमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय।"
"भद्रम् कर्णेभिः श्रृणुयाम् देवाः।
भद्रम् पश्येम् अक्षभिः यजत्रा।
स्थिरैः अंङ्गैः तुष्टवांसः तनूभिः वयशेम् वि अशेमहि देवहितम् यदायुः॥"

तिथि, नक्षत्रादि गण्डान्त नक्षत्रों का विचार

अश्विनी नक्षत्र—मेष राशि एवं केतु के इस नक्षत्र में उत्पन्न हुए बच्चे का जीवन प्रायः संघर्षशील होता है। इस नक्षत्र में **प्रथम चरण** में जन्म होने से पिता के लिए कष्टकारी, **दूसरे चरण** में फिजूलखर्ची, **तीसरे चरण** में भ्रमणशील तथा **चतुर्थ नक्षत्र** में कृश शरीर (अपने शरीर के लिए) कष्ट रहता है।

आश्लेषा नक्षत्र—कर्क राशि एवं बुध के नक्षत्र के जातक प्रायः चंचल एवं चतुर बुद्धि वाले तथा परिवर्तनशील प्रकृति के होते हैं। **प्रथम चरण** में जन्म हो तो विशेष दोष नहीं, **दूसरे चरण** में पैतृक धन की हानि, **तीसरे चरण** में माता-पिता के लिए गण्डान्त शूल तथा **चतुर्थ चरण** में पिता के लिए अनिष्टकारी है—

आश्लेषाद्ये न गण्डं स्यातंधनगण्डं द्वितीयके। तृतीये मातृगण्डं तु पितृगण्डं चतुर्थके॥

मघा नक्षत्र—सूर्य राशि और केतु के नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्टवादी, शीघ्र क्रुद्ध होने वाले, उद्यमी और धनवान होते हैं। **प्रथम चरण** में उत्पन्न हो तो माता-पिता को कष्ट या मातृ पक्ष की हानि, **दूसरे चरण** में पिता को परेशानी, **तीसरे चरण** में जन्म हो तो शुभ फलदायक, **चतुर्थ चरण** में जन्म हो तो विद्या, धनादि के लिए शुभ होता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र—मंगल की राशि (वृश्चिक) एवं बुध के नक्षत्र में उत्पन्न जातक सरल हृदय, तीक्ष्ण बुद्धि, धर्म परायण तथा उन्नति के कार्यों में अनेक बाधाओं से युक्त होते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र के **प्रथम पाद** (चरण) में उत्पन्न बच्चा ज्येष्ठ (बड़े) को अरिष्टकर, **दूसरे चरण** में पैदा हो तो छोटे भाई को नेष्ट, **तीसरे चरण** में पिता के लिए अरिष्टकर तथा यदि **चतुर्थ चरण** में उत्पन्न हो जातक स्वयं अपने एवं पिता के लिए अनिष्टकारी होता है।

ज्येष्टाद्यपादेऽवज्रमाशुं हन्याद् द्वितीयपादे यदि तत्कानिष्ठम्।
तृतीयपादे पितरं निहन्ति चतुर्थे मृतमेति जातः॥

ज्येष्ठा नक्षत्र और मंगलवार के योग में उत्पन्न कन्या बड़े भाई के लिए अरिष्टकारक होती है।

अभुक्त मूल नक्षत्र—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम २ घटियाँ तथा मूला नक्षत्र के आरम्भ की २ घटियाँ—कुल चार घड़ियाँ **अभुक्त मूल** गण्ड नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें उत्पन्न कन्या, पुत्र, पशु और नौकर कुल के लिए अनिष्टकारी होते हैं। इनमें उत्पन्न बच्चे को बिना शान्ति कराये न देखें।

अभुक्त मूं गठिका चतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादि भवं हि नारदः।
जातं शिशुं तत्र परित्यजेत् वा मुखं पिताऽस्याष्ट समा न पश्येत्॥

अभुक्त मूल—नक्षत्रों की आद्यान्त घटियों के बारे में विद्वानाचार्यों में मतान्तर पाया जाता है। यथा-नारद के अनुसार ज्येष्ठा, मूला नक्षत्र की चार घटियाँ, वशिष्ठ के अनुसार २ घड़ियाँ तथा बृहस्पति के मतानुसार केवल १-१ अभुक्त-मूल संज्ञक है। अभुक्तमूलोत्पन्न बालक यदि जीवित रहे, तो अपने वंश की वृद्धि करने वाला, धनवान् एवं सम्पत्तिवान होता है।

मूला नक्षत्र—केतु के नक्षत्र और गुरु की राशि (धनु) में उत्पन्न जातक धार्मिक रुचि वाला, उदार हृदय, मिलनसार, परोपकारी, धन-वाहनादि सुखों से युक्त होता है। चरण भेदानुसार मूला के **प्रथम चरण** में उत्पन्न जातक पिता की हानि करता है। **दूसरे चरण** में माता की हानि, **तीसरे चरण** में धन का नाश तथा **चौथा चरण** शुभ होता है। नक्षत्र की विधिपूर्वक शान्ति करवा लेने से अनिष्ट का भय नहीं रहता।

मूलाद्यपादे पितरं निहन्याद् द्वितीयके मातरमाशु हन्ति।
तृतीयजो वित्तविनाशकः स्यात् चतुर्थपादे समुपैति सौख्यम्॥

मूला नक्षत्र और रविवार दोनों के योग में उत्पन्न कन्या श्वसुर के लिए अनिष्टकारी होती है—

भौमवासरे योगेन ज्येष्ठाजा ज्येष्ठ सोदरम्॥ भानुवासरयोगेन मूलजा श्वसुरं हरेत्॥

मूला नक्षत्र फल का अन्य प्रकार

मूला नक्षत्र की सम्पूर्ण घटियों को १५ द्वारा भाग देकर १५ खण्ड बना लें। प्रत्येक खण्ड का फल इस प्रकार से होगा। **प्रथम भाग** हो तो पिता के लिए अनिष्टकर, **दूसरे में** चाचा की हानि, **तीसरे में** बहनोई की हानि, **चौथे में** पितामह (दादा) की हानि, **आठवें में** चाची के लिए अनिष्टकर, **नवमे में** सबके लिए अनिष्टकर, **दसवें अंश में** पशु का नाश, **ग्यारहवें में** नौकर का नाश होता है। **बारहवें अंश में** स्वयं जातक का नाश होता है। **तेरहवें अंश में** हो तो उसके ज्येष्ठ भाई का नाश, **चौदहवें अंश में** जातक की बहिन का अनिष्ट होता है। अगर **पन्द्रहवें में** हो तो नाना का नाश (अनिष्ट) होता है।

उदाहरणार्थ यदि मूल का सर्वर्क्ष योग ६४ घड़ी १८ पल है, तो इसमें १५ द्वारा भाग देने से लब्ध प्रथम भाग में ४ घड़ी, १७ पल हुए। मान लो कि जन्मकालीन भयात् २८ ।४५ है। ४।१७ घट्यादि को ९ से गुणा करने पर पता चला कि ३८।३३ पर नौवां खण्ड (भाग) समाप्त होकर ३८ ।४५ पर दसवां भाग पड़ता है। तदनुसार फल चौपाय आदि पशु के लिए अनिष्ट रहेगा।

रेवती नक्षत्र—बुध के नक्षत्र और गुरु की राशि (मीन) में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्यावान, सुन्दर आकृति, तर्कशील एवं धनवान् होता है। रेवती के **प्रथम चरण** में जन्म हो तो राजा के समान वैभवशाली, **दूसरे में** मन्त्री के समान सुख साधनों से युक्त, **तीसरे में** जन्म होने से धनवान तथा **चतुर्थ में** जन्म होने से माता-पिता के लिए अरिष्टकारी होता है।

दिवाजातस्तु पितरं रात्रिजो जननी तथा। आत्मानं संध्यायोहन्ति नास्ति गण्डे विपर्ययः॥

गण्डमूल नक्षत्र शान्ति के लिए हमारे कार्यालय से **'गण्डमूल शान्ति'** पुस्तक मंगवा लेवें।

अरिष्ट ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवारों के व्रत की विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में कोई अशुभ ग्रह अनिष्टकारक हो अथवा किसी विशेष कार्य सिद्धि में कोई अनिष्ट ग्रह बाधा एवं पीड़ा पहुंचा रहा हो, तो उससे सम्बन्धित वार में विधि अनुसार व्रत, पाठ-पूजा एवं ग्रह मंत्र के जप हवन दानादि करने से अरिष्ट ग्रह की शान्ति होने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से **''व्रत और त्यौहार''** एवं **सप्तवार कथा** मंगवा कर पढ़ सकते हैं। मूल्य ३० रुपए। व्रत, जप, हवनादि अनुष्ठान करने से मानसिक व कायिक पापों का प्रायश्चित हो जाता है।

रविवार के व्रत की विधि—सर्व मनोकामना की पूर्ति विशेषकर शत्रु विजय, पुत्र प्राप्ति, नेत्र रोग, कुष्ठ (कोढ़) आदि चर्म रोगों के निवारण हेतु तथा आयु एवं सौभाग्य वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। इस व्रत को सूर्यषष्ठी (विशेषकर रविवासरी), रथ सप्तमी अथवा शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) रविवार से प्रारम्भ करके प्रत्येक रविवार कम से कम बारह (१२) अथवा एक वर्ष पर्यन्त व्रत रखें। व्रत के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर सूर्य के बीज मंत्र **''ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः''** मंत्र का कम से कम तीन माला करके सूर्य भगवान् का ध्यान करें। **आदित्याय विद्महे भास्कराय धीमहि तन्नो भानुः प्रचोदयात्॥** अथवा गायत्री मंत्र की दो माला जाप करें। तदनन्तर ताम्र वर्तन में शुद्ध जल (गंगा जल सहित), गंगाक्षत, लाल पुष्प या लाल चन्दन एवं कुशा डालकर सूर्य देव को इस मंत्र द्वारा अर्घ्य देकर प्रदक्षिणा करें—**''एहि सूर्य सहस्त्राशों तेजो राशे जगतपते। अनुकम्पय मां गृहाण अर्घ्य दिवाकर''** स्वयं भी लाल चन्दन या केशरादि से तिलक लगाए। उस दिन नमक-तेलादि तामसिक भोजन से परहेज रखें। उद्यापन-कालीन अंतिम रविवार को सूर्य के बीज मंत्र तथा सूर्य गायत्री मंत्र द्वारा हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को मिष्ठान सहित भोजन करवा कर यथाशक्ति गेहूं, गुड़, ताम्र बर्तन, नारियल, लाल वस्त्र, मिष्ठानादि का दक्षिणा सहित दान करें। **सूर्य शान्ति** हेतु मानक (माणिक्य) रत्न सुवर्ण की अंगूठी में धारण करना तथा लाल वस्त्र दान करना शुभ रहता है।

सोमवार के व्रत की विधि—यह व्रत श्रावण, चैत्र, वैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक धारण करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि, आर्द्रा नक्षत्र, सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष माहात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री-पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानानन्तर **''ॐ नमः शिवाय''** आदि शिव मंत्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, चावल, पंचामृत, अक्षत, सुपारी, फल, गंगा, जल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान-दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमक रहित होना चाहिए। व्रत का उद्यापन भी उपर्युक्त महीनों में करना श्रेयकर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद वस्तुओं जैसे—चावल, श्वेत वस्त्र, बरफी, दूध-दही, क्षीर, चांदी, सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति होकर मनोरथ सिद्धि होती है। उद्यापन के दिन ब्राह्मणों तथा बच्चों को खीर, पूड़ी, मिष्ठान भोजन करवा कर यथाशक्ति दान करें।

चन्द्रमा की शान्ति हेतु चांदी की अंगूठी में चन्द्रकान्तमणि एवं मोती धारण करना, श्वेत वस्त्र दान करना, दूध, दही, बरफी, चावलों, बताशे आदि का दान करना कल्याणकारी होता है। व्रत के दिन इसके बीज-मंत्र **''ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः''** की कम से कम तीन माला का जाप करना चाहिए।

मंगलवार के व्रत की विधि—सर्व प्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रु दमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति, स्वास्थ्य लाभ, हृदयमोचनादि के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथाशक्ति जीवन-पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शांत हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फूलों, ताम्र बर्तन तथा नारियल द्वारा पूजा एवं दान करना चाहिए साथ ही श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए **''ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः''** बीज मंत्र की कम से कम तीन माला जाप करनी चाहिए। मंगल की शुभता के लिए ताम्बे की अंगूठी में मूंगा धारण करना शुभ होता है। **मंगल देवता** का ध्यान निम्नलिखित मंत्र द्वारा करना चाहिए—

रक्त माल्य अम्बरधरः शक्ति शूल गदाधारः। चतुर्भुजः रक्तोमा वरदः स्याद धरासुतः॥

इसके अतिरिक्त श्री हनुमान चालीसा तथा श्री हनुमान उपासना करना भी कल्याणप्रद रहता है।

बुधवार के व्रत की विधि—इस व्रत का प्रारम्भ शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से करें। २१ व्रत रखें। बुधवार के व्रत से बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि होती है। यह व्रत विशाखा नक्षत्रकालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार तक करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्त्रणाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए हरा वस्त्र धारण करके, बीजमंत्र **''ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः''** का पाठ कम से कम तीन माला जाप करनी चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित जैसे—मूंगी से बना हुआ हलवा, मीठी पंजीरी व मूंग के लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी सेवन करें। व्रत के अन्तिम बुधवार को मधुसर्पी, दधि तथा घृत के साथ बीज मंत्र का हवन करें। तदुपरांत सुपात्रव्यक्ति को मूंगी सहित भोजन, हरे फल, हरा-पीला वस्त्र दान करें। गौओं को हरा चारा भी डाल देवें।

बुध ग्रह की शान्ति के लिए हरा वस्त्र धारणा करना, छोटी इलाइची, तुलसी तथा कांसे के बर्तन में भोजन करना तथा पन्ना रत्न धारण करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

बृहस्पतिवार के व्रत की विधि—यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा विद्या-बुद्धि, धन-धान्य, पुत्र-पौत्र विवाह आदि सुखों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (ज्येष्ठ) वीरवार से प्रारम्भ करके तीन वर्ष अथवा १६ वीरवार तक करना चाहिए। व्रत प्रारम्भ के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर पीले वस्त्र धारण करके पीले पुष्पों, चने की दाल, पीला यज्ञोपवीत, पीला चन्दन, बेसन की बरफी, हल्दी व पीले चावलों एवं केला आदि पीले फलों सहित भगवान् विष्णु तथा बृहस्पति (गुरू) की पूजा करनी चाहिए तथा गुरू के बीज मन्त्र की कम से कम तीन या पांच अथवा १६ माला करनी चाहिए। व्रती को बृहस्पति वार को शिर नहीं धोना चाहिए तथा एक समय ही नमक रहित भोजन करना चाहिए। व्रती को उस दिन भोग लगा कर किसी ब्राह्मण व बालक को चने की दाल, बेसन की बर्फी, बेसन का हलुवा, घी, लड्डु, पीले चावल, केलों आदि पीतल का बर्तन तथा पीले वस्त्र का दान दक्षिण सहित करके स्वयं भी ऐसा ही भोजन करना चाहिए। इस दिन केले के वृक्ष की पूजा का भी विधान लिखा है। मन-वचन और कर्म द्वारा शुद्ध चित्त होकर गुरु गायत्री मंत्र अथवा गुरु के बीज मंत्र **''ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः''** का यथाशक्ति पाठ करे। उद्यापन में पाठ के दशमांश भाग का समधि,

मधु-सर्पी, घृत, दधि व हरिद्रा सहित सामग्री द्वारा हवन करना कल्याणकारी रहता है। बृहस्पति की शुभता के लिए सोने की अंगूठी में पुखराज पहिनना भी शुभ रहता है।

शुक्रवार व्रत कथा की विधि—यह व्रत धन, विवाह, संतानादि भौतिक सुखों में वृद्धिकारक होता है। यह व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से शुरु किया जाता है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत, चंदन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बाँट दें। ग्रह शान्ति के लिए

"**ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः**" की ३ माला या दस माला का जाप करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक का प्रयोग न करें। यही पदार्थ यथा-शक्ति संभव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दे। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो या उद्यापन उपरान्त हवनादि के पश्चात्, ब्राह्मणों एवं बालकों (बटुकों) को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चाँदी फलादि सफेद पदार्थों का दान करें। यह व्रत शुक्र शान्ति का सरल उपचार है। यह व्रत २१ या ३१ अथवा यथा शक्ति मात्रा में करें—मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी, ऐसा शिवपुराण में लिखा है।

शनिवार व्रत कथा की विधि—यह व्रत शनिग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है और धन-धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास शनिवार के दिन लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान करा कर धूप-गंध, नीले पुष्प (विशेषकर काला गुलाब) फल, तिल, लौंग, सरसों का तेल, चावल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। १९ शनिवार करने के उपरान्त उद्यापन के समय पिप्लेश्वर महादेव का पूजन करें। पीपल के वृक्ष के चारों ओर कच्चे सूत को लपेट कर धूप दीप नैवेद्य से शनिदेव की पूजा करे। ७ बार धागे को लपेटने के साथ ही साथ शनिदेव की जय बोलते रहे और गाधि, कौशिक, पिप्लाद तीनों महामुनियों का स्मरण अवश्य करना चाहिए। इस दिन शनि स्तोत्र का पाठ, जूते, जुराब नीले रंग का वस्त्र काला छाता, काले माश, काले चने, चाकू, नारियल और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को देवें और स्वयं भी उड़दादि तथा तेल निर्मित पदार्थों का सेवन करें और एक समय नमक रहित भोजन करना चाहिए। घोड़े की नाल (लोहे का) छल्ला पहनना चाहिए। हनुमान जी को भी तेल चढ़ाना चाहिए और संकटमोचन का पाठ करना चाहिए। शनिदेव की शान्ति के लिए महामृत्युञ्जय का जाप भी कल्याणकारी रहेगा।

राहु की शान्ति के लिए भी शनि का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करे और दान में नारियल, भूरा काबल, जौं आदि दे और पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। सतनाजा दान करना चाहिए। राहु के बीजमंत्र "**ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः॥**" का पाठ करना श्रेयकर होता है।

केतु ग्रह की शान्ति हेतु-केतु के बीज मंत्र "**ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः**" की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

१२ राशियों का घाती चक्र

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घाती चक्र में दिए अनुसार प्रत्येक तिथि, वार नक्षत्र, लग्न, चंद्रमास घातक होते हैं। अतः मनुष्य को चाहिये कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय वा मुहूर्त्त पर आरंभ न करे। नीचे दिया हुआ घात चक्र युद्ध, विवाद (शास्त्रार्थ) राज सेवा, वाहन, यात्रा, रोगादि कार्यों में देखना चाहिए। अर्थात् इन राशि वालों के लिए इन कार्यों में घात चन्द्र, वारादि शुभ नहीं और तीर्थ यात्रा, विवाहादि में घात चन्द्रादि का विचार न करें। विशेष फलादेश जानने के लिये पत्र व्यवहार करें।

राशयः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्ग	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूला	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिघ	धृति	प्रीति	सुकर्मा	अतिगंड	ब्रह्म	वैधृति	गंड	व्याघात	वज्र
घात करण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बालव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुभ	चतुष्पाद
घात लग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घात प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
पु. घा. चंद्र	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
स्त्री घा. चंद्र	मेष	धनु	धनु	मिथुन	बृश्चिक	बृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	बृश्चिक	मिथुन	मेष

ग्रहों का नैसर्गिक मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मित्र	चंद्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चंद्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र	शुक्र शनि	बुध गुरु
सम	बुध	मंगल गुरु शुक्र शनि	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु	गुरु केतु	मंगल राहु शुक्र
शत्रु	शुक्र शनि	०० ००	बुध राहु	चंद्र	बुध शुक्र	सूर्य चंद्र	सूर्य मंगल चंद्र	सूर्य चंद्र मंगल	सूर्य चंद्र शनि
उच्चांश	मेष १०	वृषे ३	म. २८	कं. १५	कर्क ५	मी. २७	तु. २०	वृ. १५	
नीचांश	तु. १०	बृश्चि ३	क. २८	मी १५	म. ५	कं. २७	मे. २०°	बृ. १५°	

नक्षत्र, राशि, वर्ण, योनि आदि ज्ञान चक्र

नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	वश्य	योनि	महावैर योनि	राशि स्वामी	गण	नाड़ी	तत्त्व हंसका	नाम (संज्ञा)	नक्षत्र देवता	कितने तारे	पंचश्ला का वेध
अश्विनी	चू. चे. चो. ला.	मेष	चतुष्पद	अश्व	महिष	मंगल	देव	आदि	अग्नि	क्षिप्र	अश्वि कु.	३	पू. फा.
भरणी	ली. लू. ले. लो.	मेष	चतुष्पद	गज	सिंह	मंगल	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	यम	३	अनु
कृत्तिका	अ. इ. उ. ए.	मे.१ वृष ३	चतुष्द	मेढ़ा	वानर	मं.१ शु.३	राक्षस	अन्त्य	अ.१ पृ.३	मिश्र	अग्नि	६	विशा
रोहिणी	ओ. वा. वी. वू.	वृष	चतुष्पद	सर्प	न्योला	शुक्र	मनुष्य	अन्त्य	पृथ्वी	ध्रुव	ब्रह्मा	५	अभि
मृगशिर	वे. वो. का. की.	वृ.२ मि.२	च.२ नर२	सर्प	न्योला	शु.२ बु.२	देव	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	चन्द्रमा	५	उषा
आर्द्रा	कु. घ. ङ. छ.	मिथुन	नर(मनुष्य)	श्वान	मृग	बुध	मनुष्य	आदि	वायु	तीक्ष्ण	शिव	१	पूषा
पुनर्वसु	के. को. हा. ही.	मि.३ क.१	न.३ ज.१	मार्जार	मूषक	बु.३ चं.१	देव	आदि	वा.३ ज.१	चर	अदिति	४	मूला
पुष्य	हू. हे. हो. डा.	कर्क	जलचर	मेढ़ा	वानर	चंद्र	देव	मध्य	जल	क्षिप्र	गुरु	३	ज्ये.
आश्लेषा	डी. डू. डे. डो.	कर्क	जलचर	मार्जा.	मूषक	चंद्र	राक्षस	अन्त्य	जल	तीक्ष्ण	सर्प	५	धनि
मघा	मा. मी. मू. मे.	सिंह	चतुष्पद	मूषक	बिडाल	सूर्य	राक्षस	अन्त्य	अग्नि	उग्र	पितर	५	श्रव
पू.फा.	मो. टा.टी. टू.	सिंह	चतुष्पद	मूषक	बिडाल	सूर्य	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	भग, सूर्य	२	अश्वि
उ. फा.	टे. टो. पा. पी.	सिं.१ कं.३	चं.१ न.३	गौ	व्याघ्र	सू.१ बु.३	मनुष्य	आदि	अ.१ पृ.३	ध्रुव	अर्यमा	२	रेव
हस्त	पू. ष. ण. ठ.	कन्या	नर	महिष	अश्व	बुध	देव	आदि	पृथ्वी	क्षिप्र	सूर्य	५	उभा
चित्रा	पे. पो. रा. री.	के.२ तु.२	नर	व्याघ्र	गौ	बु.२ शु.२	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	विश्व	१	पूभा
स्वाती	रू. रे. रो. ता.	तुला	नर	महिष	अश्व	शुक्र	देव	अन्त्य	वायु	चर	वायु	१	शत
विशाखा	ती. तू. ते. तो.	तु.३ वृ.१	न.३ की.१	व्याघ्र	गौ	शु.३ मं.१	राक्षस	अन्त्य	वा.३ ज.१	मिश्र	इंद्राग्नि	४	कृति
अनुराधा	ना. नी. नू. ने.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	देव	मध्य	जल	मृदु	मिश्र	४	भर
ज्येष्ठा	नो. या. यी. यू.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	राक्षस	आदि	जल	तीक्ष्ण	इन्द्र	३	पुष्य
मूला	ये. यो. भा. भी.	धनु	नर	श्वान	मृग	गुरु	राक्षस	आदि	अग्नि	तीक्ष्ण	राक्षस	११	पुन
पूर्वाषाढ़ा	भू. ध. फ. ढ.	धनु	न॥ चतु ३	वानर	मेंढ़ा	गुरु	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	जल	२	आर्द्रा
उत्तराषाढ़ा	भे. भो. जा. जी.	ध.१ मं.३	चतुष्पद	नकुल	सर्प	गु.१ शं.३	मनुष्य	अन्त्य	अ.१ पृ.३	ध्रुव	विश्वे	२	मृग
अभिजित	जु. जे. जो. ख.	मकर	—	नकुल	सर्प	शनि	—	—	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	रोह
श्रवण	खी. खू. खे. खो.	मकर	चतु.१ ॥ज२	वानर	मेढ़ा	शनि	देव	अन्त्य	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	कृति
धनिष्ठा	गा. गी. गू. गे.	म.२ कुं.२	ज.२ न.२	सिंह	गज	शनि	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	चर	वसु	४	विशा
शतभिषा	गो. सा. सी. सू.	कुम्भ	नर	अश्व	महिष	शनि	राक्षस	आदि	वायु	चर	वरुण	१००	स्वा
पूर्वाभाद्रपद	से. सो. दा. दी.	कुं.३ मी.१	न.३ ज.१	सिंह	गज	श.३ गु.१	मनुष्य	आदि	वा.३ ज.१	उग्र	रूद्र	२	चित्रा
उ. भाद्रपद	दू. थ. झ. ञ.	मीन	जलचर	गौ	व्याघ्र	गुरु	मनुष्य	मध्य	जल	ध्रुव	अहिबु	२	हस्त
रेवती	दे. दो. चा. ची.	मीन	जलचर	गज	सिंह	गुरु	देव	अन्त्य	जल	मृदु	पूषा	३२	उफा

नामाक्षरों से वर्ग देखने का चक्र (अपने से चतुर्थ वर्ग को मित्र क्षेत्री समझना चाहिए)

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	बिडांल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	हरिण	मेढ़ा

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	१२/४/८	१/५/९	२/६/१०	३/७/११

ग्रह मैत्री चक्र

ग्रहाः	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्राणि	चं मं गु	सू बु	सू चं गुरु	सू शु	सू चं मं.	बु श	शु बु
समाः	बुधः	मं गु शु श	शु श	मं गु श	श	मं गु	गु
शत्रव	शु श	० ०	बुध	चं	बु शु	सू चं	सू चं मं
उच्चांश	मे १०	वृष ३	म २८	क १५	कर्क ५	मी २७	तु २०
नीचांश	तु १०	बृ ३	क २८	मी १५	म ५	क २७	मे २०

मित्र नवपंचम चक्र									शत्रु नवपंचम चक्र		
१	२	३	५	७	८	९	१०	१२	११	६	४
५	६	७	९	११	१२	१	२	४	३	१०	८

मित्रषडाष्टक चक्र						शत्रुषडाष्टक चक्र					
१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	९	११
८	१०	१२	२	४	६	६	८	१०	१२	२	४

मित्रद्विर्द्वादश चक्र						शत्रुद्विर्द्वादश चक्र					
१२	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	११
१	३	५	७	९	११	२	४	६	८	१०	१२

नव पंचम—कन्या से वर अथवा वर से कन्या की राशि पांचवीं, नौवीं हो, तो दम्पत्ति को संतान हानि की संभावना होती है। परन्तु मीन-कर्क, कर्क-बृश्चिक, कुम्भ-मिथुन, कन्या-मकर विशेषतः त्याज्य माने जाते हैं। राशि मैत्री होने की स्थिति में नव-पंचम दोष अचिन्तनीय है।

षडाष्टक दोष—लड़के और लड़की की राशियां परस्पर छठे-आठवें हों तो षडाष्टक यथा-सम्भव त्याज्य है। शत्रु षडाष्टक दोष विशेषतः त्याज्य माना जाता है।

विस्तृत विवेचन के लिए देखें आगामी पृष्ठ।

वर-कन्या मेलापक सारिणी

वर/नक्षत्र		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
कन्या	नक्षत्र	अश्वि	भर	कृति १	कृति २३४	रोह	मृग १-२	मृग ३-४	आर्द्रा	पुर्न १२३	पुर्न ४	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा १	उफा २३४	हस्त	चित्रा १,२	चित्रा ३-४	स्वा.	विशा १२३	विशा ४	अनु	ज्ये	मूला	पूषा	उषा १	उषा २३४	श्रव	धनि १,२	धनि ३,४	शत	पूभा १२३	पूभा ४	उभा	रेव
मेष	अश्वि	२८ ८	३३	२८ ३	१८ २,३	२१॥ २,३	२२॥ २,३	२६ १,३	१७ ८	१९ ५,८	२३॥ ८	३१॥ ३	२८ ६	२१ ९	२५ ९	१५ ८,९	११ ७,८	९ ४७८	१३ ७,९	२२ १,६	२६॥ ४	२२॥ ४	१८॥ ६,७	२५॥ ३,७	१५ ७,८	१३ ८,९	२५ ९	२३॥ ९,३	२५ ७	२६ ७	२० १,६	२० १,६	१५ ५,८	१६ ८,४	१४॥ २,८	२४॥ २	२६ २
	भर	३४	२८ ८	२९ ६	१९ २,६	२२॥ २	१४॥ २,८	१८ ८	२६ ५	२६॥ १,५	३१॥ ३	२३॥ ८	२५ ६	२० ६,९	१८॥ ८,९	२६ ९	२१ ७	२० ७	६ ६७८	१३॥ ६,८	२९ १,३	२१ ६	१८॥ ६,७	१७॥ ७,८	१९॥ ६,७	२० ६,९	१८ ८,९	२६ ९	२७॥ ५	२६ १,३	१० ४६८	९॥ ४६८	२० ६	२४ ४	२२॥ २,४	१७ २,८	२६॥ २
	कृति १	२७॥ ६,३	२९ ६	२८ ८	१८ २,८	१० ६,७	१६॥ २,६	१९॥ ६	१९॥ ६	२०॥ ६,५	२५॥ ३,६	२६॥ ६	२३॥ ८	१७ ८,९	२० ६,९	२० ६,९	१५॥ ६,७	१५॥ ६,७	१८॥ ७	२७॥ ३,४	१५ ६,८	१९॥ ४,८	१५॥ ७,८	१९॥ ७	२५॥ ७	२५ ९	१९ ४६९	११॥ ६७९	१३॥ ६,८	१४ ४,८	२५ ४	२४॥ ४,५	२७ ५	१८॥ ४,६	१७॥ २,६	१९॥ २,६	११॥ २,८
वृष	कृति २३४	१९ २	२० २,६	१९ २,८	२८ ८	२० ६,८	२६॥	१७॥ २,६	१७॥ २,६	१८॥ २,६	२२ ५,६	२३	२० ८	१९ ८	२२ ६	२२ ६	२१ ६,९	२१ ६,९	२३॥ ९	२२॥ ७	१० ७,८	१४॥ ७,८	२०॥ ४,८	२४॥ ६	३०॥ ३	२० ७	१४ ४६७	७ ६७८	१२ ६८९	१०॥ ४८९	२४॥ ९	२९॥ ३,४	३१॥ ३	२३॥ ६	२० ६	२२ ६	१४ ८
	रोह	२३॥ २	२३॥ २	११ २६८	२० ६,८	२८ ८	३६	२७ २	२३॥ २	२२॥ २	२६	२७	१३ ६,८	१०॥ ६,८	२४॥	२७ ५	२६ ९	२५॥ ९	२० ६,९	१९ ६,७	१५॥ ७,८	९॥ ६७८	१५	२९॥	२३॥ ६	१३॥ ६,७	१९॥ ७	११ ४७८	१६ ४८९	१८ ८,९	२० ६,९	२६ ६	२४ ६	३०॥ १,३	२७ ३,५	२७ ३,५	१९ ८
	मृग १,२	२३॥ २	१४॥ २,८	१८॥ २	२७	३५	२८ ८	१९ २,८	२३॥ २	२२॥ २	२६ ३,४	१९ ८	२१ ५,६	१९॥ ६	१५॥ ८	२४॥ ३,५	२३ ९	२५॥ ९	१२॥ ८,९	११॥ ७,८	२४॥ ७	१८ ६,७	२४	२१॥ ८	२४॥ ६	१५ ६,७	१०॥ ७,८	१६॥ ४,७	२१॥ ४,९	२६ ९	१३ ८,९	१९ ८	२७ ६	२९ ३	२६ ३,५	१८ ८	२७ ३,५
मिथुन	मृग ३,४	२७	१८ ८	२१॥	१९॥ २	२७ २	२० २,८	२८ ८	३३	३१॥	१९॥ २	१२ २,८	१४॥ २	२३॥ ४,६	१९॥ ४,८	२८॥ ३	३१॥ ३	३४	२१ ८	१४ ८,९	२७ ९	२०॥ ९	१४ ७	११ ७,८	१४ ७	२३	१९ ८	२५ ४	१९॥ १४७	२४ ७	११ ७,८	१३ ८,९	२१ ९	२३॥ ३,९	२५ ३,५	१७॥ ८	२६॥ ३,५
	आर्द्रा	१९ ८	२७	२१॥ ६	१९ २,६	२४॥ २	२६ २	३४	२८ ८	२५ ४,८	१३ २,८	२०॥ २	१२॥ २,६	२३॥ ३,६	२९॥ ३	२१॥ ८	२४॥ ८	२४॥ ८	२७ ४,६	२० ६,९	२७ ९	२० ६,९	१३॥ ६,७	१७ ४,७	३ ५६८	१६ ६,८	२८	२७	२३॥ ७	२२॥ ७	१७ ६,७	१९ ४,९	१२ ६,८	१७ ५८९	१८॥ ८	२६॥ ५	२६ ५
	पुन. १२३	२० ८	२७ ३,५	२२॥ ३,५	२० २	२२॥ २	२३॥ २	३१॥ ४	२४ ८	२८ ८	१६ २,८	२३ ९	१७ २	२२॥ ४	२६॥ ४	२१॥ ८	२४॥ ८	२५॥ ८	२७॥ ६	२०॥ ९	२८ ९	२२ ९	१५॥ ७	२१॥ ७	७ ७,८	१४ ८	२७ ३,५	२७ ३,५	२२॥ ७	२३॥ ७	१६॥ ७	१८॥ ९	१४ ८,९	१६ ८,९	१८॥ ८	२८ ५	२८ ५
कर्क	पुन ४	२२॥ ८	२९॥ ३	२५॥ ६	२२ ५,६	२४ ४,५	२५ ४,५	१८ १२४	१० २,८	१५ २,८	२८ ८	३५	२८॥ ६	१६॥ २,४	२०॥ ४,२	१५॥ २,८	१८ ८	१८॥ ८	१९॥	१९	२६॥	२०॥	१९ ९	२५ ९	१०॥ ९	७॥ ७,८	२१ ७	२०॥ ७	२६ ५	२७ ५	२१ ४,६	१२ ७	५॥ ७,८	९॥ ७,८	१६ ७,९	२५॥ ९	२५॥ ६
	पुष्य	३०॥	२१॥ ८	२६॥	२३	२५	१८ ८	११॥ २,८	१८॥ २	२२ २	३५	२८ ८	३० ६	१९॥ २,३	१५॥ २,८	२३॥ २,३	२६ ३,५	२७॥ ५	१२॥ ६,८	११ ८	२७	२१॥	१९ ९	१८ ४,९	२१॥ ९	१७॥ ७	१२॥ ४,७	२१॥ ७,८	२६	२५ ४	१३ ८	४ ७,८	१५ ७	१८॥ ४,७	२४ ४,९	१८ ८,९	२७ ९
	श्ले.	२६	२४॥ ६	२२॥ ८	१९ ८	१२ ६,८	१९	१३ २	१२ २,६	१५॥ २	२८	२९	२८ ८	१५ २४८	१५॥ २४६	१८॥ २,६	२१॥ ६	२१ ६	२६ ३	२५॥	१२॥ ८	१७ ८	१५॥ ८,९	२० ९	२६ ९	२२॥ ७	१६ ६,७	७॥ ६७८	१३ ६,८	१३ ८	२६	१७ ७	२० ७	११ ६,७	१७॥ ६,९	२१ ६,९	१३ ८,९
सिंह	मघा	२० ९	२० ६,९	१६॥ ८,९	१७॥ ८	९॥ ६,८	१७॥ ४५६	२१॥	२२॥ ६	२०॥ ४	१६॥ २,४	१९॥ २	१६॥ २४८	२८ ८	३० ६	२७	१६ २,६	१६॥ २	२१॥ २	२४॥	११॥ ८	१६॥ ८	२२॥ ८	२५॥ ६	३३	२५ ९	१९॥ ६,९	८॥ ६८७	३॥ ६७८	४॥ ७,८	१८॥ ७	२४॥	२५	१८॥ ६	१८॥ ६,७	१९॥ ६,७	१३ ७,८
	पूफा	२६ ९	१८ ८,९	२० ६,९	२१ ६	२३॥	१५॥ ८	१९ ८	२८॥ १,३	२६ ४	२२॥ २,४	१७॥ २,८	१६॥ २४६	३० ६	२८ ८	३५	२४ २	२२॥ १,२	७॥ २६८	१०॥ ६,८	२५॥	१८॥ ६	२४ ६	२३॥ ८	२५॥ ६	२० ६,९	१७ ८,९	२४ ९	१९ ७,१	१८॥ ७	५॥ ६७८	१० ६,८	१९॥ १,५	२४॥	२४॥ ७	१७॥ ७,८	२५॥ ७
	उफा १	१६॥ ८,९	२६ ९	२१ ६,९	२१ ६	२६	२५	२८॥	२० ८,९	२१॥ ८	१७ २८	२५॥ २	१९ २,६	२७॥ ६	३५	२८ ८	१७ २,८	१६॥ २,८	१३॥ २४६	१७॥ ४,६	२५॥	१६॥ ४,६	२२॥ ४,६	३१	१७॥ ६,८	९॥ ६,८	२५ ९	२५ ९	२० ७	२० ७	११॥ ६,७	१७॥ ६	१०॥ ६,८	१५॥ ८	१५॥ ७,८	२६॥ ७	२५॥ १,५
कन्या	उफा २३४	१३ ७,८	२२॥ ७	१६ ६,७	२१ ६,९	२६ ९	२४॥ ९	३१॥	२३॥ ८	२४॥ ८	२० ८	२८	२२ ६	१७॥ २,६	२५ २	१८ २,८	२८ ८	२७ ८	२४॥ ४,६	१६॥ २४६	२५॥ २	१६॥ २४६	१८ ४,६	२६॥	१२ ६,८	१४ ६,८	२९॥ ५	२९॥ ५	२४ ९	२५ ९	१५॥ ६,९	१६॥ ६,७	१०॥ ७,८	१४॥ ७,८	१७॥ ८	२८	२७
	हस्त	१० ४७८	२० ७	१७॥ ७	२१ ९	२५ ९	२६ ९	३३	२२॥ ८	२४ ८	२० ८	२७॥	२३	१८ २	२३॥ २	१६ २,८	२६ ८	२८ ८	२८ ६	२० २	२६॥ २	१८॥ २	२०	२६	१३॥ ८	१५ ८	२७	२८॥	२३ ९	२४ ९	१८ ९	१९ ७	८॥ ४,७	१३॥ ७,८	१६ ८	२६॥	२८
	चित्रा १,२	१३	४॥ ६७८	१९ ७	२३॥ ९	२० ६,९	१२॥ ८,९	१९ ८	२६ ६	२५॥	२०॥	११॥ ८	२७	२२॥ २	८॥ २६८	१४॥ २४६	२४॥ ४,६	२७॥ ६	२८ ८	२० २,८	१९ २	२६॥ २	२८॥	११ ८	२५	२७ ४	१४ ६,८	२१ ६	१७ ६,९	१८ ७	१५॥ ८,९	१६ ७,८	२४ ७	१६॥ ६,७	१९॥ ६	१० ४६८	१९॥

वर/नक्षत्र		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
कन्या	नक्षत्र	अश्वि	भर	कृति १	कृति २३४	रोह	मृग १-२	मृग ३-४	आर्द्रा	पुर्न १२३	पुर्न ४	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा १	उफा २३४	हस्त	चित्रा १,२	चित्रा ३-४	स्वा.	विशा १२३	विशा ४	अनु	ज्ये	मूला	पूषा	उषा १	उषा २३४	श्रव	धनि १,२	धनि ३,४	शत	पूभा १२३	पूभा ४	उभा	रेव
तुला	चित्रा ३,४	२२॥ ३४६	१४॥ ६,८	२८॥	२३॥ ७	२० ६,७	१२ ७,८	१३ ८,९	२१ ६,९	१९॥ ९	२०॥ ६,५	११ ८	२६॥ ३,५	२५॥ ३,५	११॥ ६,८	१७॥ ४,६	१७॥ ४,६	२० २	२१ २,८	२८ ८	२७	३४॥	२३॥ २	६॥ २,८	२०॥ २	२७॥	१४ ६,८	२१ ६	२५ ६	२७	२३॥ ८	१९ ८,९	२६ ९	१८॥ ६,९	१२ ६,७	३ ६८७	१२॥ ७
	स्वा.	२७॥ ४,३	२९॥	१७॥ ८	१२॥ ७,८	१५॥ ७,८	२६ ७	२७ ९	२६॥ ९	२८ ९	२९	२७	१३॥ ८	१३॥ ८	२५॥	२५॥	२५॥ २	२७॥ २	२१ ४२६	२८	२८ ८	२० ७	१० २,८	२३॥ २	१८॥ २	२३	२७	१९ ८	१२ ८	२३ ८	२६ ६,४	२१ ९	२० ७,९	२५ ९	१९ ७	१९॥ ७	१२ ७,८
	विशा १२३	२२॥ ६,४	२२॥ ६,४	२०॥ ८,४	१५॥ ७,८	१०॥ ६,७	१८॥ ८,७	१९॥ ६,९	२० ६,९	२१ ९	२२ ६	२१॥ ६	१८ ८	१७॥ ८	१९॥ ६	१७॥ ४,६	१७॥ २४६	१८॥ २	२७॥ २	३४॥	१९ ८	२८ ८	१७॥ २,८	१६ २	२१॥ २	२७॥	२२ ६	१३ ६,८	१७ ६,८	१६॥ ८	२९॥	२४ ९	२६ ९	२० ६,९	१३॥ ६,७	१३॥ ४,६	४ ६७८
वृश्चिक	विशा ४	१६॥ ७	१६॥ ६,७	१४॥ ७,८	१९॥ ८	१४॥ ६,८	२२॥ ६	११॥ ७	१२॥ ६,७	१३॥ ७	१९ ९	१८ ९	१५ ८,९	२२ ८	२३॥ ६	२१॥ ६	१८ ४,६	१८ ४५६	२७ ५	२२॥ ८	७ २,८	१५ २,८	२८ ८	२७	३१॥ ७	२१॥ २	१६॥ २,६	९ २६८	११ ६,८	११ ८	२५	२४	२६॥	१९॥ ६	१९ ६,९	१८ ६,९	९॥ ४८९
	अनु	२४॥ ६	१५॥ ७,८	१९ ६,७	२४॥	२७॥	२०॥ ८,३	१० ७,८	१५ ४,७	२०॥ ७	२६ ९	१८ ८,९	२१ ९	२४॥	२०॥ ८	२९॥	२५	२५॥	११ ८	६॥ २,८	२२ १,२	१६ २	२८ ४,६	२८ ८	३१ ६	१५॥ २,४	१३॥ २,८	२१॥ २	२५	२६	१२ ८	११ ८	२१	२४॥	२४ ९	१८ ८,९	२७ ९
	ज्ये.	१२ १,८	१८॥ ६,७	२४॥ ७	२९॥	२२॥ ६	२२॥	१२ ७	२ ४८७	४॥ ७,८	१०॥ ८,९	२० ९	२६ ९	३१	२३॥ ६	१६॥ ६,८	१२ ६,८	१२ ८	२४	१९॥ १,२	१५ १२६	१९॥ २	३१॥	३०	२८ ८	१४॥ २४८	१६॥ २,६	१६॥ २,६	२० ६	२० ६	२५ ४	२४ ४,५	१८ ८	१० ६,८	९॥ ६८९	२०॥ ६,९	२१ ९
धनु	मूला	१२ ८,९	२० ६,९	२५ ९	१९॥ ७	१३ ६,७	१२॥ ७	२१	१४ ६,८	१२ ८	७॥ ७,८	१७॥ ६७३	२३॥ ७	२५ ९	१९ ६,९	९॥ ६८९	१३ ६,८	१३ ५८६	२७	२६	२१ ६	२६	२२॥ २	१६॥ २,४	१६ २४८	२८ ८	२८ ६	२५॥ ६	१४॥ २,६	१४॥ २	२० २	२८॥	२१॥ ८	१४॥ ६,८	१६॥ ६,८	२५ ६	२६॥
	पूषा	२६ ९	१९ ८,९	१९ ६४९	१२॥ ४६७	१९ ७	११ ७,८	१९ ८	२७	२७	२३॥ ७	१४॥ ४७८	१६॥ ६	१९ ६,९	१७ ८,९	२५ ९	२८॥	२७	१२॥ ६,८	१२ ६,८	२७	२१ ६	१६॥ २,६	१५॥ २,८	१८ २,६	२७ ६	२८ ८	३४	२२ २	२३ २	५॥ २६८	१४॥ ६,८	२३॥ ६	२८॥ ४	२९॥	२३	३१
	उषा १	२४॥ ९	२६ ९	१२ ६८९	६ ७,८	१० ४,८	१७ ४,७	२५ ४	२६	२७॥	२३ ७	२३ ७	८॥ ६७८	८॥ ६७९	२४ ९	२५ ९	२८॥	२८॥	२१ ५,६	२०	१९	१२ ६	८॥ १,६	२३॥ ८	१८ ६,८	२५॥ २६८	३४ २	२८ २,६	१६	१५	१४॥ ८	२२॥ २,८	२३॥ २,८	२८॥ १,३	३१ ६	३१ ६	२३
मकर	उषा २३४	२७ २,५	२८॥ ५	१४॥ ६,८	१२ ६८९	१६ ४,८	२२॥ ३४९	२०॥ ४,७	२२॥ ७	२२॥ ७	२८ ३,५	२८ ३,५	१४ ६,८	४॥ ६७८	२० ७	२१ ७	२४॥ ९	२५ ९	१७ ६,९	२४ ६,९	२१॥ ८	१४॥ ६,८	१२ ६,८	२७	२१ ६	१४॥ २,६	२४ २	१७ २,८	२८ ८	२६ ८	२६॥ ६	१७ २,६	१७ २,६	२३॥ २	२९॥ ३	३१ ३	२२॥ ३,८
	श्रव	२८ ३,५	२६ ३,५	१४॥ ४,८	१२ ४८९	१७ ८,९	२६ ९	२३ ७	२१ ७	२१॥ ७	२८ ३	२६ ४	१४ ८	६॥ ७,८	१८॥ ७	२० ७	२३ ९	२४॥ ९	१९ ९	२६ ९	२१॥ ८	१६॥ ८	१२ ८	२७ ३	२२ ३,५	१६ ४	२२॥ २	१५ २,८	२६ ८	२८ ८	२७ ६	१८॥ २	१८ २	२०॥ २	२८॥ ३	२९॥ ३	२२॥ ८
	धनि १,२	२० ६	११ ४६८	२६ ५	२३॥ ९	२० ६,९	१२ ८,९	९ ७,८	१६ ६,७	१५॥ ७	२२ ३,६	१३ ८	२७ ३,५	१९॥ ७	४॥ ६७८	१२॥ ६,७	१५॥ ९	१७ ९	१५ ८,९	२३ १,८	२४ १,६	२९॥ ३	२६ ३	१२ ८	२६ ३,५	२०॥ २	६॥ २६८	१६ २,६	२६॥ ६	२७ ६	२८ ८	१८ ८	२३॥ २	१९॥ ६	२६॥ ३,६	१५॥ ६,८	२२॥ ४,६
कुम्भ	धनि ३,४	२० ३,६	१०॥ ४७८	२६	३० ३	२७ ६	१९॥ ८	१२ ८,९	१९ ६,९	१८॥ ९	१३ ७	४ ७,८	१९ ७	२५॥	११ ६,८	१८॥ ६	१७॥ ६,७	१९ ७	१७ ७,८	१८॥ ८,९	२० ९	२४॥ ९	२५ ३,४	११ ८	२५ ३,४	२९॥ ३,४	१५॥ ६,८	२४॥ ६	१८ २,६	१८ २	१९॥ २,८	२८ ८	३३ ८	२८॥ ६	१८ २,६	७ २६८	१४ २,४
	शत	१५ ८	२१ ६	२८ ५	३२॥ ३	२५॥ ६	२७ ६	२० ९	१२ ६,८	१३ ८,९	८ ७,८	१४ ७	२१ ७	२६॥	२०॥	१२॥ ६,८	११॥ ६७८	९ ७	२५ ७	२६ ९	१९ ९	२६ ९	२६॥ ४	२१ ६	१९ ८	२२॥ ८	२४॥ ६	२४॥ ६	१८ २,६	१८॥ ६,७	२४॥ २	३३	२८ ८	१९ ६,८	८ ६,८	१७ २,६	१६ २
	पूभा १२३	१८ ८	२५ ४	२० ६	२४॥ ६	३१॥ ३	३१॥ ३	२४॥ ९	१७ ८,९	१८ ८,९	१२॥ ८,९	२०॥ ७	१३ ६,७	१९॥ ६	२५॥ ५	१६॥ ८	१५॥ ७,८	१५॥ ७,८	१७॥ ६,७	१९॥ ६,९	२६ ९	२० ६,९	२०॥ ६	२६॥ ४	११ ६,८	१५ ६,८	२९॥ ४	३०॥ ३	२४॥ २	२३॥ २	२०॥ २,६	२८॥ ६	१९ ६,८	२८ ८	१७॥ २,८	२२॥ २	२० २,४
मीन	पूभा ४	१४॥ २,८	२१॥ २,४	१६॥ २,६	१९ ६	२६ ३,५	२६ ३,५	२६ ३,५	१८॥ ८	१९ ८	१८ ८,९	२५ ९	१८॥ ६,९	१७॥ ६,७	२३॥ ७	१४॥ ७,८	१६ ८	१७ ८	१८ ६	१२ ६,७	१९॥ ७	१२॥ ६,७	१९ ६,९	२५ ९	९॥ ६८९	१६ ६,८	२९॥ ३,४	३० ३	२९॥ ३	२८॥ ३	२५॥ ६	१७ १२६	७॥ ६,८	१७ २,८	२८ ८	३३	३०॥ ४
	उभा	२४॥ ३	१६॥ २,८	१८॥ २,६	२१ ६	२६ ३,५	१८ ८	१७॥ ८	२५॥	२८	२७ ९	१९ ८,९	२१ ६,९	१८॥ ६,९	१७ ७८९	२५॥ ७	२७ ३,५	२६॥	१० ४६८	२॥ ४६८	१९॥ ७	१२॥ ४६७	१८ ६,९	१९ ८,९	२१ ६,९	२४ ६	२१॥ ८	३०॥ ३	२९॥ ३	२९॥ ३	१४॥ १,८	५॥ २३८	१६ २,६	२१॥ २	३३	२८ ८	३५
	रेव	२५ २	२४॥ २	११॥ २,८	१४ ६,८	१७ ८	२६ ५	२५ ५	२४	२६ ५	२५॥ ९	२७ ९	१४ ८,९	१३ ७,८	२३॥ ७	२३॥ ७	२५॥	२६॥ ५	१९	१३ ६,७	११ १,८	४ ७,८	१०॥ ८,९	२७ ९	२२ ९	२६॥	२९	२१ ८	२०॥ १,८	२१॥ ८	२२॥ ४	१४॥ ४,२	१६॥ २	१८ २,४	२९॥ ४	३४	२८ ८

नोट—गुणों वाली संख्या के नीचे उसी कोष्टक में दोष (१,२,३) संख्या में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह १, द्विर्दादश दोष की जगह (२) तारादोष की जगह, ३, योनिबैर की जगह ४, राशि दोष की जगह ५, गणदोष की जगह ६, भकूटषडाष्टक की जगह ७, नाड़ी दोष की जगह ८ और नवपंचक की जगह ९ यह अंक दिये हुए हैं। विशेष विवरण आगामी पृष्ठों पर देखें।

वर-कन्या मिलान में वर्णादि अष्टकूटों का महत्त्व

विवाह गृहस्थाश्रम की आधारशिला है और उसी के मध्यम से मनुष्य, देव-ऋषि एवं पितरादि ऋण त्रय से उद्धृण होकर परम कल्याण को प्राप्त होता है। तद् हेतु उत्तम लक्षणों जैसे—सुन्दर, सुशीला, मधुरभाषिणी एवं पतिव्रता कन्या तथा कर्त्तव्यनिष्ठ, स्वस्थ, शिक्षित, सदाचारी एवं सुसंस्कृत लड़के के साथ विवाह सम्बन्ध शुभ होता है। विवाह सम्बन्ध करने से पूर्व लड़के-लड़की का कुल-गोत्र, सनाथता, विद्या, धन, स्वस्थ (शरीर) और आयु—इन सात गुणों की परीक्षा करने के पश्चात् ही कुण्डलियों में परस्पर **मंगलीक आदि अरिष्ट** योगों तथा वर्ग, **स्त्रीदूर, कर्तरि एवं वर्णादि अष्टकूटों** का विचार करना चाहिए।

मेलापक प्रक्रिया में **मंगलीक और अष्टकूट** तत्त्वों का विशेष महत्त्व है, क्योंकि वर-कन्या के दाम्पत्य जीवन को अधिकाधिक सुखी एवं मंगलमय बनाने के लिए उनके जन्म नक्षत्रों एवं जन्म कुण्डलियों के अनुसार मिलान करना अत्यन्त आवश्यक है। उपयुक्त मिलान न होने की स्थिति में पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन में—विचार वैमनस्य, सन्तान कष्ट, वैधव्य, वैधुर्यादि दोष अथवा पारिवारिक कष्ट होने की सम्भावनाएं हो जाती है। **मंगलीक दोष** का विशेष विवरण इसी पंचाँग के अन्य पृष्ठों में दिया गया है। यहाँ पर नक्षत्र मिलान के मुख्य तत्त्व अष्टकूट का विवेचन किया जा रहा है। ध्यान रहे, अष्ट (आठ) कुंटों का निर्णय वर-कन्या के जन्म नक्षत्रों से ही किया जाता है। अष्टकूटों के आठ कूट (अंग) निम्नलिखित हैं :—

(१) वर्ण (२) वश्य (३) तारा (४) योनि (५) ग्रहमैत्री (६) गणमैत्री (७) भकूट तथा **(८) नाड़ी** —ये आठ कूट हैं।

प्रत्येक कूट की क्रम संख्या अपने श्रेष्ठ गुणों की सूचक है। वर्णादि अष्टकूटों में **गुणों का योग ३६** होता है। इसमें क्रमानुसार वर्ण का १ गुण, वश्य के २, तारा के ३, योनि के ४, ग्रहमैत्री के ५, गण-मैत्री के ६, भकूट के ७ एवं नाड़ी के ८ (आठ) गुण जानने चाहिएं।

वर्णादि कुल ३६ गुणों के योग में से १ से १७ तक गुण मिलान तुच्छ एवं निन्दनीय (त्याज्य) माने जाते हैं, १८ से २१ तक मध्यम एवं ग्राह्य और २२ से २८ तक उत्तम तथा २९ से ३६ तक गुण सर्वोत्कृष्ट मिलान माना जाता है।

एकैकवृद्धितो ज्ञेया वर्णादीनां गुणाः क्रमात्।
विवाहः शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके॥ —मु० गणपति

वर्णादि अष्टकूट

(१) वर्ण विचार—४, ५, १२ राशियों का **ब्राह्मण,** १, ५, ९ का **क्षत्रिय,** २, ६, १० **वैश्य** तथा ३, ७, ११ राशियों का **शूद्रवर्ण** होता है। वर का वर्ण कन्या के वर्ण से उच्च स्तरीय अथवा समान वर्ण होने पर **एक गुण** प्राप्त होता है। अन्यथा शून्य गुण होगा।

परिहार—यदि वर की राशि का वर्ण कन्या के राशि-वर्ण से हीन हो, परन्तु राशिपति उत्तम वर्ण हो, तो वर्ण मिलान शुभ हो जाता है।

(२) वश्य विचार—सिंह राशि के अतिरिक्त सभी राशियाँ नर (मनुष्य) राशि के वश में हैं। जल राशियाँ (४।१० उ. ।१२) नर राशियों (३ ।६ ।७ ।९ पू. ।११) का भक्ष्य है। वृश्चिक को छोड़कर शेष राशियाँ सिंह राशि के वश्य हैं। **समान वश्य होने पर २ गुण,** एक वश्य और दूसरा शत्रु होने पर एक गुण, एक वश्य और एक भक्ष्य होने पर आधा गुण तथा एक शत्रु और एक भक्ष्य होना शून्य अर्थात् गुणाभाव होगा।

(३) तारा विचार—कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक तथा वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर दोनों संख्याओं को अलग-अलग ९ द्वारा भाग देने पर यदि शेष ३, ५, ७ बचे तो अशुभ तारा होती है।

दोनों (वर-कन्या) ताराओं में अशुभ तारा हो तो शून्य गुण, एक में तारा शुभ और दूसरे में अशुभ हो तो डेढ़ गुण तथा दोनों में तारा शुभ हो तो ३ गुण होते हैं।

(४) योनि विचार—अश्विनी आदि नक्षत्रों के अनुसार जातक की योनि ज्ञात की जाती है। वर और कन्या की योनियों का आपसी वैर त्याज्य है। जैसे—गौ और व्याघ्र में; सिंह और गज, न्यौला और सर्प में, अश्व और महिष में, श्वान और हरिण में, वानर और मेष में, मूषक और मार्जार में, परस्पर महावैर है।

[**नोट**—योनि व महावैर योनि की तालिका चक्र गत पृष्ठों में दिया गया है।]

गुण—वर-कन्या की एक ही योनि होना शुभ है। योनियों में परस्पर अतिमित्र हो तो ४ गुण, मित्र हो तो ३, सहज प्रकृति समान हो तो २, सामान्य वैर हो तो १ गुण तथा योनियों में अतिशत्रुता हो तो शून्य-अर्थात् गुणाभाव होगा।

(५) ग्रह मैत्री—ग्रह मैत्री कूट के सन्दर्भ में वर-कन्या के राशि स्वामियों का एक्य अथवा मैत्री भावादि अभिप्रेत्य है। (राशि स्वामी का विवरण गत पृष्ठों में नक्षत्र, राशि, वर्णादि तालिका चक्र में दिया गया है।)

गुण विचार—वर-कन्या की राशियों में परस्पर अधि-मित्रता या राश्यैक होने पर ५ गुण, एक सम और दूसरा मित्र हो, तो ४ गुण, एक-दूसरे के सम हो, तो ३ गुण, एक मित्र दूसरा शत्रु हो, तो १ गुण, एक सम दूसरा शत्रु हो, तो आधा गुण, दोनों की राशियां परस्पर शत्रु हों, तो शून्य अर्थात् गुणाभाव होता है।

अष्टकूटों में राशि स्वामी की मैत्री को विशेष महत्त्व दिया गया है। मिलान में वर्ण, योनि, गण और षडाष्टक दोष होने पर भी यदि परस्पर राशि मैत्री पाई जाती हो तो अन्य किंचिद् दोषों का निवारण हो जाता है। यथा—

गणदोषो योनि दोषो वर्णदोषः षडाष्टकम्।
चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत्॥ —वृहज्जयोतिः सार

अपवाद—वर-कन्या के राशिपतियों में परस्पर वैर होने पर भी राशि नवांशपति परस्पर मित्र हो, तो विवाह शुभ माना जाता है। यथा—

राशिनाथे विरुद्धेऽपि सबल नवांशकाधिपौ।
तन्मैत्रेऽपि च कर्त्तव्य, दम्पज्योः शुभमिच्छता॥

(६) गण विचार—अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, स्वा., अनु., श्रव., रेवती नक्षत्रों का **देवता गण,** तीनों पूर्वा. तीनों उत्तरा, रोहिणी, भर० और आर्द्रा इन नक्षत्रों का **मनुष्यगण,** कृति., अश्ले, मघा, चित्रा, विशा., ज्ये., मूला, धनि. और शत. का **राक्षसगण।**

वर-कन्या का **एक ही गण** होने पर विवाह **उत्तम,** देव-मनुष्य हो तो शुभ, किसी एक का राक्षसगण और दूसरा मनुष्यगण हो अथवा किसी एक का देवगण और दूसरा राक्षस गण हो तो अशुभ एवं त्याज्य होता है।

गुण विभाजन—वर-कन्या का एक ही गुण हो, तो ६ गुण, वर का देवगण एवं कन्या का मनुष्यगण हो तो भी ६ गुण, पर कन्या देवगण एवं वर का मनुष्य हो तो ५ गुण, एक का देवगण तथा दूसरा राक्षसगण अथवा एक का मनुष्यगण दूसरे का राक्षसगण हो, तो शून्य गुण होता है इत्यादि।

मनुष्यादि गणों का गुण बोधक चक्र

कन्या	गुण	देव	मनुष्य	राक्षस
	देव	६	५	१
	मनुष्य	६	६	०
	राक्षस	०	०	६

गुण दोष परिहार—

(क) राशिपतियों में परस्पर मित्रता या राशिनवांशपति में भिन्नता हो, तो गणदोष नहीं रहता।

ग्रहमैत्री च राशिश्च विद्यते नियतं यदि। न गणभाव जनितं दूषणंस्याद विरोधदम्॥

गर्ग—मु. चिन्तामणि च

(ख) ग्रहमैत्री तथा वर-कन्या के नक्षत्रों की नाड़ियों में भिन्नता हो, तो गणदोष होने पर भी दोष नहीं होता।

—पीयूषधारा

(ग) इसी भान्ति तारा, वश्य, योनि ग्रहमैत्री तथा भकूट की शुद्धि होने पर कोई दोषपत्ति नहीं होती।

—मुहूर्त मार्त्तण्ड

(७) भकूट विचार—इसे **राशिकूट** भी कहते हैं। वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर छठे एवं आठवें हो, तो **षडाष्टक दोष** होता है। यदि वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर पांचवीं-नौवीं हो, तो **नव पंचम दोष**, यदि दोनों की राशियाँ परस्पर दूसरी और बारहवीं हो, तो **द्विद्वादश दोष** कहलाता है। **षडाष्टक दोष** (विशेषकर शत्रु-षडाष्टक) होने की स्थिति में वर-कन्या, इनके माता-पिता अथवा उनके किसी निकटस्थ बन्धु को मृत्यु-तुल्य कष्ट होने की सम्भावना होती है। **नवपंचम दोष** की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति को संतान सम्बन्धी दुःख होने का भय होता है तथा **द्विद्वादश दोष** (शत्रुकूट) होने पर वर कन्या को धन हानि एवं आर्थिक परेशानियों का सामना रहता है।

षडाष्टक परिहार—(i) मेष-वृश्चिक, वृष-तुला, मिथुन-मकर, कर्क-धनु, सिंह-मीन तथा कन्या-कुम्भ आदि मित्र राशियों का षडाष्टक शुभ होता है, जबकि वैर-षडाष्टक ही विशेषतया त्याज्य होता है। यथा—१-६, २-९, ३-८, ४-११, ५-१०, ७-१२ राशियों का शत्रुगत षडाष्टक होने से त्याज्य माना जाता है।

(ii) परन्तु परिहारस्वरूप **तारा-शुद्धि, राशीश-मैत्री, राशिवश्यैक्य,** अथवा **राशि स्वामी ग्रह समान** होने पर षडाष्टक दोष भी ग्राह्य होता है। यथा—

न वर्गवर्णो न गणोः न योनिर्द्विद्वादशे चैव षडाष्टके वा।
तारा विरुद्धे नव पंचमे वा मैत्री यदा स्यात्शुभदो विवाहः॥ —बृ. ज्योतिस्सार

नव पंचम परिहार—

(i) वर की राशि से कन्या की राशि पांचवीं हो और कन्या की राशि से वर की राशि ९वीं हो, तो यह नव-पंचम शुभ होता है—

वरस्य पंचमे कन्या, कन्यायां नवमेवरः। एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यां पुत्रपौत्र सुखावहम्॥

—बृहज्योतिषः सारः

(ii) मीन-कर्क, वृश्चिक-कर्क, मिथुन-कुम्भ और कन्या-मकर—ये चार नवपंचक विशेषतया त्याज्य माने जाते हैं।

मीनालिम्यां युते कीटे कुम्भे मिथुन संगते। मकरे कन्यकायुक्ते न कुर्यान्नवजचमे॥ —शार्गधर

(iii) वर-कन्या दोनों के चन्द्र राशि अधिपति अथवा राशि नवांशपति परस्पर मित्रक्षेत्री हों, तो नवपंचम अविचारणीय है।

द्वि-द्वादश दोष का परिहार—

(i) लड़के की राशि से कन्या की राशि दूसरी हो तो कन्या धन हानिकारक और १२वीं हो तो वह धनवती और पति प्रिया होती है।

(ii) १-२, ३-४, ५-६, ७-८, ९-१० एवं ११-१२ राशियों का द्वि-द्वादश शत्रु-द्विद्वादश एवं च अनिष्टकर मानते हैं।

(iii) मतान्तर में **सिंह और कन्या** द्वि-द्वादश ग्राह्य है। **—मुहूर्त्तमार्त्तण्ड**

इसके अतिरिक्त कुछ परिस्थितियों में वर-कन्या की परस्पर राशि-स्थिति विशेष शुभकारी होती है। जैसे—वर-कन्या, दोनों की एक ही राशि १०वें का होना, दोनों की राशियों का परस्पर ३-११वें (त्रिरेकादश) होना, दोनों की राशियों का आपस में ४-१०वें होना एवं च दोनों की राशियों का परस्पर सप्तम (**समसप्तक**) होना वर-कन्या के वैवाहिक जीवन के लिए शुभफल प्रद होता है। परन्तु **अपवाद** रूप में, कर्क-मकर का तथा सिंह-कुम्भ राशियों का समसप्तक योग वर-कन्या के विवाह में शुभ नहीं माना गया—

मकरे कर्कटे चैव कुम्भे सिंहे तथैव च।
परस्परं सप्तमे च वैधव्यं तु विनिर्दिशेत्॥ —ज्योतिनिबन्ध

(८) नाड़ी दोष विचार—अष्टकूट निर्धारक तत्त्वों में नाड़ी का विशेष महत्त्व है। वर-कन्या की एक ही नाड़ी होना विवाह में अशुभ माना गया है।

अश्वन्यादि २७ जन्म नक्षत्रों को तीन नाड़ियों (पंक्तियों) में विभाजित किया गया है—आदि, मध्य और अन्त्य। इनका विवरण निम्न चक्र में दिया गया है।

नाड़ी चक्र

आदि नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उफा	हस्त	ज्ये.	मूले	शत	पूभा
मध्य नाड़ी	भर	मृग	पुष्य	पूफा	चित्रा	अनु.	पूषा	धनि	उभा
अन्त्य नाड़ी	कृति	रोह	श्ले.	मघा	स्वा	विशा	उषा	श्रव	रेव

वर-कन्या का जन्म नक्षत्र एक ही नाड़ी में पड़ना विवाह में अशुभ माना जाता है। दोनों की **आदि (प्रथम)** नाड़ी हो, तो विवाह के पश्चात् उनका परस्पर वियोग आदि, **मध्य नाड़ी** हो, तो दोनों की हानि तथा अन्त्य नाड़ी हो तो वैधव्य या अतिशय दुःख होता है। —बृहज्योतिषसार

नाड़ी गुण विभाग—भिन्न नाड़ी में आठ गुण तथा समान नाड़ी (नाड्यैक्य) होने की स्थिति में शून्य गुण-अर्थात् गुणाभाव होता है।

नाड़ी दोषापवाद एवं परिहार—

(i) नाड़ी दोष ब्राह्मणों के लिए, वर्णदोष क्षत्रियों के लिए, गण दोष वैश्यों के लिए तथा योनि दोष शूद्रों के लिए विशेष रूप से विचारणीय होता है—

नाड़ी दोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये। गणदोषश्च वैश्येषु योनि दोषस्तु पाद्जान्॥

ध्यान रहे, ब्राह्मणेतर वर्ण जातियों के लिए नाड़ी दोष नितान्तः उपेक्षनीय नहीं होता॥

(ii) यदि वर-कन्या दोनों की एक राशि हो, परन्तु नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों अथवा यदि दोनों का नक्षत्र एक हो और राशि अलग-अलग हो, एवं च नक्षत्र चरण भिन्न (पाद भेद) हो, तो ऐसी स्थिति में नाड़ी एवं गण दोष नहीं होता—अर्थात् शुभ होता है।

राश्यैक्ये चेद् भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाड़ी दोषों नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभंस्यात्॥ —मुहूर्त्त संग्रह दर्पण

यद्यपि वर-कन्या का एक ही नक्षत्र अथवा एक ही राशि का होने से नाड़ी दोष का परिहार माना गया है, परन्तु यदि दोनों के नक्षत्र चरणों में समानता हो अथवा नक्षत्रों में पाद वेध* हो, तो विवाह सर्वदा त्याज्य एवं वर्जित होगा। यथा—

एक नक्षत्र जातानां नाड़ी दोषो न विद्यते। अन्यर्क्षनाड़ीवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा॥
—ज्योतिष तत्त्व प्रकाश

***नोट**—ध्यान रहे, किसी नक्षत्र के प्रथम पाद और चतुर्थ पाद तथा **दूसरे एवं तीसरे पाद** में परस्पर वेध होना भी पाद-वेध कहलाता है।

(iii) 'ज्योतिष चिन्तामणि' अनुसार रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, ज्येष्ठा, कृतिका, पुष्य, श्रवण, रेवती एवं उत्तराभाद्रपद—इन नक्षत्रों में उत्पन्न वर-कन्या को नाड़ी दोष नहीं लगता।

रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते॥ —ज्यो० चिन्तामणि

उपयुक्त उपायों से परिहार—

हमारे मतानुसार गण, योनि, षडाष्टक, द्विद्वादश, नाड़ी आदि अष्टकूटों में परिहार वाक्य उपलब्ध हो जाने पर भी अपनी शक्ति एवं सामर्थ्यानुसार यथोचित संख्या में जप, पाठ, दानादि करवा लेना चाहिए।

'बृहस्पति संहिता' के अनुसार नाड़ी दोष की शान्ति के लिए **श्री मृत्युञ्जय मन्त्र** का जाप (यथोचित संख्या में) करके ब्राह्मणों को गौ, वस्त्र, अनाज, घृतादि सहित भोजन एवं सुवर्ण, चांदी, रत्नों की दक्षिण आदि से सन्तुष्ट करने से नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है—

अन्यत्र भी लिखा है—श्री महामृत्युञ्जय के जप-पाठ के उपरान्त—

षडाष्टके गोमिथुनं प्रदेयं, कांस्यं सरूप्यं नवपंचमेच।
नाड्यां सुवर्णान्नमथो सुधेनुं द्विद्वादशो ब्राह्मणतपर्णं च॥

अर्थात् दुष्ट षडाष्टक दोष होने पर गोमिथुन (एक गाय, एक बैल), **नवपंचम** में चांदी-कांसे का बर्तन, **नाड़ी दोष** में गाय, अन्न, सुवर्ण-वस्त्र का दान तथा **द्विद्वादश** में ब्राह्मणों एवं सुपात्र जनों को यथाशक्ति भोजन, दान-दक्षिणादि द्वारा सन्तुष्ट करने से मिलान सम्बन्धी **अष्टकूट दोषों** की शान्ति हो जाती है।

मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

विवाह योग्य लड़के-लड़की की जन्म कुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, ग्रहमैत्री, नाड़ी आदि अष्टकूट सम्बन्धी गुण मिलान के पश्चात् कुण्डली में मंगल एवं **मंगलीक दोष** पर विशेष रूप से विचार किया जाता है। मंगलीक दोष का आधार सामान्यतः निम्न श्लोक माना जाता है। **मु. संग्रहदर्पण—**

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तुविनाशाय भर्ता कन्या विनाशकः।

अर्थात् जिस कन्या की कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें स्थान में मंगल हो, तो वह कन्या वर (पति) के लिए हानिकारक तथा इसी भान्ति जिस लड़के की कुण्डली में इन्हीं स्थानों में मंगल हो वह कन्या को हानिकारक होता है। इसी भांति लग्न, चन्द्र और कभी-कभी शुक्र की राशि से भी मंगल की उपर्युक्त स्थितियों का विचार किया जाता है।

अपवाद—(१) मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मंगलीक दोष वाले वर के साथ करने से मंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वर-वधू के मध्य दाम्पत्य सुख बढ़ता है—

कुज दोष वती देया कुजदोषवते किल। नास्ति दोषो न चानिष्टं दम्पत्योः सुखवर्धनम्॥

मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक के परिहार स्वरूप मुहूर्त ग्रन्थों में अनेकत्र परिहार वाक्य मिलते हैं। यथा—

(२) यदि लड़की की कुण्डली में जिस स्थान पर मंगल स्थित (मंगलीक कारक) हो, और लड़के की कुण्डली में उसी स्थान पर शनि, मंगल, सूर्य, राहु आदि कोई पाप ग्रह स्थित हों, तो भौमदोष भंग हो जाता है। इसी प्रकार लड़के की कुण्डली में भौम दोष होने पर कन्या की कुण्डली में उसी भाव में कोई पाप ग्रह होने से भी भौमदोष नहीं रहता—

शनि भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाश कृत्॥ —फलित संग्रह **अन्येऽपि—**
भौमेन सदृशो भौमः पापो व तादृशो भवेत्। विवाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्रपौत्रदः॥

अर्थात् एक की कुण्डली में मंगल दोष हो, तो दूसरे की कुण्डली में भी उन्हीं स्थानों में शनि आदि पाप ग्रह होने से मंगलीक दोष भंग होकर विवाह में शुभ होता है।

यामित्रे च सदा सौरि लग्ने वा हिबुके तथा। अष्टमे द्वादशो चैव भौमदोषो न विद्यते॥

यह श्लोक भी लगभग इसी आशय का है।

(३) मेष राशि का मंगल लग्न में, बृश्चिक राशि का चौथे भाव में, मकर का सातवें, कर्क राशि का आठवें, एवं धनु राशि का मंगल १२वें हो, तो मंगल दोष नहीं होता।

यथोक्तम्— अजे लग्ने व्यये चापे पाताले बृश्चिकके कुजे।
द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्यते॥ **—मु. पारिजात**

प्रकारान्तर से, मीन का मंगल ७वें भाव तथा कुम्भ राशि का मंगल अष्टम में हो, तो भौम दोष नहीं होता।
—मु. चिंतामणि
''द्यूने मीनै घटे चाष्टौ भौम दोषो न विद्यते''

(४) यदि द्वितीय भाव में चन्द्र-शुक्र का योग हो, या मंगल गुरु द्वारा दृष्ट हो, केन्द्र भावस्थ राहु हो, अथवा केन्द्र में राहु-मंगल का योग हो, तो मंगल दोष नहीं रहता—

न मंगली चन्द्र भृगु द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवा।
न मंगली केन्द्रगते च राहुः, न मंगली मंगल-राहु योगे॥ —मुहूर्त्त दीपक

पचाँग-परिवर्तन करना

'पंचांगदिवाकर' में जहाँ तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल तथा ग्रहों की वक्री-मार्गी तथा राशि चार्ट भा. स्टै. टा. में दिए गए हैं, उन (समयों) में भारत के किसी अन्य स्थल के लिए कोई संस्कार करने की आवश्यकता नहीं है तथा विश्व के किसी अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्रादि का समाप्ति काल जानने हेतु भा. स्टै. टा. से उस देश का स्टै. अन्तर जमा या घटा कर प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु **पंचांगदिवाकर** में तिथ्यादि के समाप्ति काल घड़ी पलों में दिए हुए हैं, क्योंकि यह घड़ी पल जालन्धर के स्पष्ट सूर्योदय काल से हैं, इसलिए अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र राशि प्रवेश आदि हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। यह ध्यान रहे कि भारतीय ज्योतिष में वार (रविवार, सोमवार) का प्रारम्भ तथा तिथि, नक्षत्र आदि का घड़ी पलों में समाप्तिकाल सूर्योदय के समय से ही माना जाता है।

भारत के किसी भी अन्य नगर का पंचांग अर्थात् तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-सूर्यादि संचार घटी पलों में प्राप्त करना हो तो आप इसी पंचांग में आगामी पृष्ठों से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश, रेखांशादि ज्ञात करके मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से सू. उ. ज्ञात कर लें। आपके अभीष्ट नगर के सू. उ. का जालन्धर के सूर्योदय से जितना अन्तर होगा, उसके घड़ी पल बनाकर $2\frac{1}{2}$ गुणा करके) ऋण (घटावे) या जमा (धन) करे। यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पूर्व अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर से पूर्व (पहले) होगा, वहाँ सूर्योदय अन्तर (कालान्तर) के घड़ी पल बनाकर पंचांगदिवाकर में तिथ्यादि के घड़ी-पलों में जमा करें तथा यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पश्चिम में स्थित होगा अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर के सू. उ. से बाद होगा, वहाँ कालान्तर के घड़ी पल बनाकर तिथ्यादि के घड़ी-पल में से घटावें।

उदाहरण—मान लीजिए २९ सितं., २००४ ई. को दिल्ली का पंचांग बनाना है, तो दिल्ली का अक्षांश, स्टै. अन्तर प्राप्त कर मध्यम सूर्योदय सारिणी से ६/१७ सू.उ. प्राप्त (घण्टा मिनट वाले पृष्ठों से दिल्ली का तैयार दैनिक सू. उ. देख सकते हैं) हुआ जोकि जालन्धर के सू. उ. (६/२३) से 6 मिनट पूर्व (पहले) है। अत: घड़ी पलों में तिथि, नक्षत्रादि दिल्ली के प्राप्त करने के लिए हमें जालन्धर के तिथि, नक्षत्र आदि में ६ मिनट के घटी पल १५ पल जमा करने होंगे। (ढाई गुणा करके)। **ध्यान रहे,** सूर्योदय अन्तर नगरों में सदैव एक समान नहीं रहता। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष अनुसार जन्मपत्री निर्माण के समय जन्मपत्री में उसी तिथि, नक्षत्रादि के घड़ी पल लिखे जाते हैं जो जातक के जन्म वार के दिन स्थानीय सू. उ. के समय वर्तमान हो। चाहे वह तिथि, नक्षत्र जातक के जन्म से पूर्व ही समाप्त क्यों न हो जाए। कई बार पंचांग परिवर्तन करते हुए तिथियों/नक्षत्रों के क्षय या वृद्धि में भी अन्तर पड़ सकता है।

२९ सितं., २००४ ई. को जालन्धर का पंचांग—२९ सितं., २००४ ई. को दिल्ली का पंचांग

	घटी पल		घटी पल
तिथि	— २९/१० (समाप्ति काल)	**तिथि**	— २९/२५ (समाप्ति काल)
नक्षत्र	— ५३/०८	**नक्षत्र**	— ५३/२३
योग	— ३९/३३	**योग**	— ३९/४८

जालन्धर से अतिरिक्त नगर की जन्मपत्री निर्माण हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रक्रिया द्वारा आप भारत के किसी भी नगर का सू. उ. ज्ञात करके जालन्धर के सू.उ. से अन्तर जानकर पंचांग परिवर्तन कर सकते हैं। जबकि जहाँ तिथ्यादि, ग्रहों के वक्री-मार्गी का समय भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। घण्टा मिनट वाले पृष्ठों पर सर्वत्र समय (तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र संचार आदि का) भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं।

लग्न सारिणी द्वारा लग्न स्पष्ट करने की विधि

आगामी पृष्ठों पर विभिन्न अक्षांशों पर आधारित, निर्मित लग्न सारिणियां दी गई हैं। जिस नगर का लग्न स्पष्ट करना हो, सर्वप्रथम अपने अभीष्ट काल का सूर्योदयात् इष्टकाल घट्यादि में बना ले। इसके लिए उस स्थान का सही सूर्योदय का ज्ञान होना आवश्यक है। अपने नगर की शुद्ध एवं सूक्ष्म **सूर्योदय काल** जानने के लिए पंचांगदिवाकर के आगामी पृष्ठों में दी गई। **अक्षांश सारिणियों** का प्रयोग करना चाहिए। स्थानीय इष्टकाल बना लेने के पश्चात् अपने अभीष्ट काल का सूर्य स्पष्ट ग्रहण करें। सूर्यस्पष्ट जिस राशि के जितने अंश पर हो, लग्न सारिणी में उसी राशि के सामने तथा सूर्य स्पष्ट के अंशों के कोष्ठक के नीचे जितने घड़ी पल हो, उनमें अपने इष्ट के घड़ी पल जोड़ (जमा) देने से लग्न स्पष्ट जानने के लिए घड़ी पल होंगे। यह घड़ी पल लग्नसारिणी में जिस राशि के सामने और जितने अंश के नीचे होगा, वही राश्यादि पर लग्नस्पष्ट होगा।

उदाहरण—मान लीजिए, विक्रमी संवत् २०६१ मध्ये कांगड़ा (हि. प्र.) में चैत्र शुक्ल अष्टमी, प्रविष्टे १५ चैत्र, तदनुसार २८ मार्च, २००४ ई. को दोपहर २ बजकर २४ मिनट पर उत्पन्न बालक का लग्न स्पष्ट करना है। इसका सूर्योदयात् ईष्ट २० घड़ी ०५ पल बनेगा तथा ईष्टकालिक सूर्यस्पष्ट ११/१४°/०६'/११" होगा। कांगड़ा का अक्षांश ३२/०५ होने के कारण आगामी पृष्ठों पर दी गई उसके निकटवर्ती अक्षांश ३१/२० की लग्न सारिणी प्रयोग में लाई जा सकती है। लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट की राशि अर्थात् मीन राशि के सामने और १४° अंश के नीचे कोष्ठक में हमें ०/५१ घट्यादि प्राप्त हुए। इनको जन्म इष्ट के घटयादि २०/०५ में जमा कर देने से कुल जोड़ २०/५६ घट्यादि बनेगा। इस जोड़ को पुन: लग्न सारिणी में निकटवर्ती संख्या २०/५२ कर्क (३) राशि के सामने और २० अंश के नीचे प्राप्त हुई। यह संख्या हमारे कुल जोड़ २०/५६ से केवल ४ पल कम है। अब अनुपातिक विधि द्वारा ४ पलों के कलादि निकाल लेने से हमें इष्टकालिक लग्न स्पष्ट पता चल जाएगा। **जैसे** यदि १२ पल के पीछे १ अंश अर्थात् ६० कला का अन्तर पड़ता है तो १ पल के पीछे ५ कला का अन्तर पड़ेगा। इसी प्रकार ४ पलों के पीछे २२ कलाओं का अन्तर पड़ेगा। इस प्रकार उपरोक्त इष्टकाल पर (२०/०५ घट्यादि) ३ गत राशि अर्थात् कर्क लग्न, २० अंश, २२ कला पर लग्न स्पष्ट होगा। (लग्न स्पष्ट ३/२०°/२२'/००')। अधिक सूक्ष्मता के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक **'ज्योतिष तत्त्व'** का अध्ययन करें।

उत्तर पलभा १५।०।।५० लग्न सारणी लंदन (अक्षांश ५१।३०) चरखण्ड १५१।१२०।५१

उपरोक्त लंदन सारिणी विदेशी नगरों जैसे—लंदन, बर्मिंघम, साऊथ हैम्पटन, आक्सफोर्ड, स्लोह तथा लंदन के आसपास नगरों के लग्न निकालने के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। ध्यान रहें, लग्न स्पष्ट करने के लिए लंदनादि नगरों का ही सूर्योदय एवं सूर्य स्पष्ट करना चाहिए।

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	घ.	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
मेष	प.	४६	५०	५५	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३५	४०	४६	५२	५८	३	९	१५	२१	२७	३२	३८	४४	५०	५७	२	८	१२	१८	२४
१	घ.	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८
वृष	प.	३०	३५	४१	४७	५३	५९	५	११	२०	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०७	१५	२३	३२	४१	५०	५९	८	१७	२६
२	घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
मिथुन	प.	३५	४४	५३	०२	११	२०	३१	४२	५३	०२	१५	२८	४१	५४	०७	२०	३३	४६	५९	१२	२४	३७	५०	०३	१६	२९	४२	५५	०७	१९
३	घ.	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१
कर्क	प.	२९	४२	५५	०८	२०	३३	४६	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५२	०७	२१	३५	५०	०४	१८	३२	४६	००	१३	२७	४१	५५	०९
४	घ.	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८
सिंह	प.	२३	३७	५२	०६	२०	३४	४८	०३	१७	३१	४५	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	१८	१८	३२	४६	००	१४	२८	४२	५६	१०
५	घ.	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५
कन्या	प.	२४	३८	५२	०७	२१	३५	५०	०२	१६	३०	४५	५९	१३	२७	४२	५६	१०	२३	३७	५१	५	१९	३३	४७	०१	१५	२९	४३	५७	११
६	घ.	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२
तुला	प.	२५	३९	५३	०७	२२	३७	५१	०५	२०	३४	४८	०२	१६	३१	४५	००	१३	२७	४१	५५	९	२३	३७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	०५
७	घ.	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
वृश्चिक	प.	३०	४४	५८	१२	२६	४१	५६	१०	२३	३५	४७	५८	१२	२६	३८	५०	०२	१६	२८	४२	५४	०६	१९	३१	४४	५६	०८	२०	३२	४४
८	घ.	४८	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३
धनु	प.	५९	११	२४	३७	४९	०२	१५	२७	३८	४७	५५	०४	१३	२२	३१	४०	४९	५८	०६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०८	१७	२६	३५	४४
९	घ.	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७
मकर	प.	५२	०१	१०	१९	२८	३७	४६	५५	००	०६	१२	१७	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५८	०४	१०	१६	२२	२८	३४	३९	४५	५१	५७	०३
१०	घ.	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
कुम्भ	प.	०८	१३	१९	२५	३०	३५	४१	४७	५२	५७	०१	०५	०९	१४	१९	२३	२८	३३	३७	४१	४५	५०	५५	००	०४	०८	१३	१७	२२	२७
११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
मीन	प.	३१	३५	३९	४४	४८	५२	५७	०२	७	११	१५	२०	२४	२८	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५८	०३	०८	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२

अक्षांश १९° पलभा ४।७।५५

मुम्बई, कल्याण, पूना, औरंगाबाद, अहमदनगर, बस्तर, खण्डाला, भुवनेश्वर, पुरी, दादरा आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
मेष	६	१४	२१	२९	३७	४५	५३	१	१०	१९	२८	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१६	२५
१	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
वृष	२५	३४	४३	५१	०	९	१८	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	५०	००	१०	२०	३०	४१	५२	२	१२	२३	३३	४३	५४	४	१४	२५
२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	२४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
मिथुन	२५	३५	४५	५६	६	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४८	५८	१०	२१	३२	४३	५५
३	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
कर्क	५५	६	१७	२८	३९	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	६	१७	२७	३८	४९	५९	१०	२१	३१	४२	५३	३	१४	२४	३५	४६	५६	६	१७	२८	३९	५०
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५०	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४६	५७	८	१८	२९	४०	५०	१	१२	२२	३३	४३	५४	५	१५	२६	३७	४७	५८	०९
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	९	१९	३०	४०	५१	०२	१२	२३	३४	४५	४६	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७
७	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
वृश्चिक	३७	४९	००	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२९	४०	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२२	३२	४२	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१३
८	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
धनु	१३	२४	३५	४६	४७	९	२०	३१	४१	५२	२	१२	२३	३३	४२	५४	४	१४	२५	३५	४५	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	८	१८	२९
९	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	२९	३९	४९	००	१०	२०	३१	४१	५०	५९	८	१६	२५	३४	४३	५२	१	१०	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	२९	३८	४७	५६	५
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	५	१४	२३	३१	४०	४९	५८	७	१५	२३	३१	३९	४६	५४	२	१०	१८	२९	३४	४२	५०	५८	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३
मीन	९	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६

अक्षांश २३°

पलभा ५।५।३८

कलकत्ता, अहमदाबाद, इटारसी, इन्दौर, उज्जैन, कटनी, कच्छ, जबलपुर, भोपाल, राँची, हौशंगाबाद आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
मेष	५९	६	१४	२१	२९	३७	४४	५२	०	९	१८	२६	३५	४४	५२	१	१०	१८	२७	३५	४४	५३	१	१०	१९	२७	३६	४४	५३	२	१०
१	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२
वृष	१०	१९	२८	३६	४५	५४	२	११	२१	३१	४२	५२	२	१२	२८	३३	४३	५३	४	१४	२४	३५	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५७	७
२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
मिथुन	७	१७	२७	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	४	१५	२७	३८
३	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
कर्क	३८	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५४	५	१७
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	१७	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१४	२५	३६	४७
५	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१५
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२०	३२	४३	५४	६	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२
७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
वृश्चिक	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	००	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०
८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	५९	९	२०	३०	४०	५०	१	११	२१	३१	४२	५२	२	१३	२३	३३	४३	५४	४	१४	२४	३५	४५
९	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	४२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
मकर	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५७	५	१४	२३	३१	४०	४९	५७	६	१४	२३	३२	४०	४९	५८	६	१५	२४	३२	४१	४९	५८	७	१५
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	४८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	१५	२४	३३	४१	५०	५९	७	१६	२३	३१	३९	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	३९	४७	५५	२	१०	१७	२५	३३	४१	४७	५५	३	११
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	११	१८	२६	३३	४१	४९	५६	४	११	१९	२७	३४	४२	४९	५७	५	१२	२०	२७	३५	४३	५०	५८	५	१३	२१	२८	३६	४३	५१	५९

अक्षांश २७°

पलभा ६।६।५०

जयपुर, अयोध्या, लखनऊ, कानपुर, गोंडा, गोरखपुर, मथुरा, अजमेर, अलवर, जोधपुर, अलीगढ़, हरदोई, कन्नौज, उन्नाव, देवरिया, फैजाबाद, फर्रूखाबाद भरतपुर, ग्वालियर आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२२	३१	३९	४७	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५४	२	११	१९	२७	३६	४४	५२
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३	४३
२	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	४३	५३	३	१३	२३	३३	४४	५४	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	१७	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	५	१७	२९	४०	५२	३
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५
५	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	००	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	२४	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	०४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६	५८	०९
७	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५६	०८	१९	३१	४२	५४
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	५४	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४५	५५	५	१५	२५	३६	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	०६
९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	४३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	६	१६	२६	३६	४६	५६	०७	१७	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१३	२२	३०	३८	४७	५५	३	१२	२०	२८
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	२८	३७	४५	५३	२	१०	१८	२७	३४	४१	४८	५६	०३	१०	१७	२४	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	३०	३७	४४	५१	५९	६	१३
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	१३	२०	२७	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	१	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	५९	७	१४	२१	२८	३६	४३	५०

लग्न सारणी अक्षांश ३१।२० उत्तर पलभा (७।१७।२१)

जालन्धर, अमृतसर, लुधियाना, चण्डीगढ़, रोपड़, फगवाड़ा, कपूरथला, होशियारपुर, फिरोज़पुर, शिमला, मण्डी, हमीरपुर, ऊना आदि के लिए

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	प.	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४
१	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	प.	३४	४२	५०	५८	६	१४	२३	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०
२	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५३	५	१६	२७	३८	५०	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५८	०९	२१	३२	४४	५५
३	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	प.	५५	०७	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५१	०३	१५	२७	३८	५०
४	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	प.	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
५	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	प.	४२	५३	०५	१७	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३८	५०	०२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५८	०९	२१	३३
६	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	प.	३३	४४	५६	०८	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४२	५४	०६	१७	२९	४१	५३	०५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	०५	१६	२८
७	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
वृश्चिक	प.	२८	४०	५२	०४	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४४	५५	०७	१८
८	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	प.	१८	३०	४२	५३	०५	१६	२८	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
९	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	प.	२९	३९	४९	५८	९	१८	२८	३८	४७	५५	०३	११	१९	२७	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	२९
१०	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
कुम्भ	प.	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४६	५३	००	७	१४	२०	२७	३४	४१	४७	५४	०१	८	२१	२१	२८	३५	४१	४८	५५	०२	९	१६
११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	प.	१६	२३	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारणी अक्षांश २९° उत्तर पलभा (६।३९।०५)

दिल्ली, रोहतक, मेरठ, हिसार, गुड़गांव, मुरादाबाद, नैनीताल, गाज़ियाबाद आदि के लिए उपयोगी

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
१	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	प.	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
२	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३८	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११
३	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
४	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२५	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
५	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
६	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
७	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
८	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
१०	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४१	४८

लग्न सारणी अक्षांश (३०°) पलभा ६/५५/४३

अम्बाला, चण्डीगढ़, कालका, कुराली, खन्ना, देहरादून, नाभा, नाहन, पटियाला, भटिण्डा, रोपड़, फाज़िल्का, सहारनपुर, फरीदकोट इत्यादि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
१	घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
२	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	००	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
३	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
४	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
५	घ.	२८	२८	२९	२९	२१	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
६	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
७	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चिक	प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
८	घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
९	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	००	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
१०	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
कुम्भ	प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३३°) पलभा ७/४८/३०

जम्मू, श्रीनगर, ऊधमपुर, रावलपिंडी, कठुआ, अनन्तनाग, किश्तवाड़, डल्हौज़ी आदि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	घ.	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
मेष	प.	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१८	२६
१	घ.	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
वृष	प.	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०
२	घ.	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	प.	१०	२०	३०	४०	५०	५९	९	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६
३	घ.	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
कर्क	प.	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४३	५५	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४
४	घ.	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	प.	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	१९	३०	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२९	४१
५	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
कन्या	प.	४१	५२	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६	३८	५०	२	१४	२५	३७	४९	१	१३	२५	३६	४८	०	१२	२४	३६
६	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	प.	३६	४७	५९	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५
७	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६
वृश्चिक	प.	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६
८	घ.	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१
धनु	प.	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६
९	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	प.	३६	४६	५६	६	१६	२५	३५	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	००	८	१५	२३	३१	३९	४७
१०	घ.	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
कुम्भ	प.	४७	५५	३	११	१९	२७	३४	४२	४९	५६	२	९	१६	२३	२९	३६	४३	४९	५६	३	९	१६	२३	३०	३६	४३	५०	५६	३	१०	१६
११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	प.	१६	२३	३०	३७	४३	५०	५७	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५०	५७	४	१०	१७	२४	३०	३७	४४	५१	५७	४	११	१७	२४	३१	३७

दशमलग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी) लंकोदय २७८ । २९९ । ३२३

अंश	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	१८ ३३	१८ ४२	१८ ५२	१९ १	१९ १०	१९ १९	१९ २८	१९ ३८	१९ ४८	१९ ५८	२० ८	२० १८	२० २८	२० ३८	२० ४८	२० ५८	२१ ८	२१ १८	२१ २८	२१ ३८	२१ ४८	२१ ५८	२२ ८	२२ १७	२२ २७	२२ ३७	२२ ४७	२२ ५७	२३ ७	२३ १७	२३ २७
१ वृष	२३ २७	२३ ३७	२३ ४७	२३ ५७	२४ ७	२४ १७	२४ २७	२४ ३७	२४ ४८	२४ ५८	२५ ९	२५ २०	२५ ३१	२५ ४२	२५ ५२	२६ ३	२६ १४	२६ २५	२६ ३५	२६ ४६	२६ ५७	२७ ८	२७ १८	२७ २९	२७ ४०	२७ ५१	२८ २	२८ १२	२८ २३	२८ ३४	२८ ४५
२ मिथुन	२८ ४५	२८ ५५	२९ ०६	२९ १७	२९ २८	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २२	३० ३२	३० ४३	३० ५४	३१ ५	३१ १५	३१ २६	३१ ३७	३१ ४८	३१ ५८	३२ ९	३२ १९	३२ ३०	३२ ४१	३२ ५२	३३ ३	३३ १४	३३ २५	३३ ३५	३३ ४३	३३ ५७	३४ ८
३ कर्क	३४ ८	३४ १८	३४ २९	३४ ४०	३४ ५१	३५ १	३५ १२	३५ २३	३५ ३३	३५ ४३	३५ ५३	३६ ३	३६ १३	३६ २३	३६ ३३	३६ ४३	३६ ५३	३७ ३	३७ १३	३७ २३	३७ ३३	३७ ४३	३७ ५३	३८ २	३८ १२	३८ २२	३८ ३२	३८ ४२	३८ ५२	३९ २	३९ १२
४ सिंह	३९ १२	३९ २२	३९ ३२	३९ ४२	३९ ५२	४० २	४० १२	४० २२	४० ३१	४० ४१	४० ५०	४० ५९	४१ ८	४१ १८	४१ २७	४१ ३६	४१ ४५	४१ ५५	४२ ४	४२ १३	४२ २२	४२ ३२	४२ ४१	४२ ५०	४२ ५९	४३ ९	४३ १८	४३ २७	४३ ३७	४३ ४६	४३ ५५
५ कन्या	४३ ५५	४४ ४	४४ १४	४४ २३	४४ ३२	४४ ४१	४४ ५१	४५ ००	४५ १०	४५ १९	४५ २८	४५ ३७	४५ ४६	४५ ५६	४६ ५	४६ १४	४६ २३	४६ ३३	४६ ४२	४६ ५१	४७ ०	४७ १०	४७ १९	४७ २८	४७ ३८	४७ ४७	४७ ५६	४८ ५	४८ १५	४८ २४	४८ ३३
६ तुला	४८ ३३	४८ ४२	४८ ५२	४९ १	४९ १०	४९ १९	४९ २९	४९ ३८	४९ ४८	४९ ५८	५० ८	५० १८	५० २८	५० ३८	५० ४८	५० ५८	५१ ८	५१ १८	५१ २८	५१ ३८	५१ ४८	५१ ५८	५२ ७	५२ १७	५२ २७	५२ ३७	५२ ४७	५२ ५७	५३ ७	५३ १७	५३ २७
७ वृश्चिक	५३ २७	५३ ३७	५३ ४७	५३ ५७	५४ ७	५४ १७	५४ २७	५४ ३७	५४ ४७	५४ ५८	५५ ९	५५ २०	५५ ३१	५५ ४२	५५ ५२	५६ ३	५६ १४	५६ २५	५६ ३४	५६ ४६	५६ ५७	५७ ८	५७ १८	५७ २९	५७ ४०	५७ ५१	५८ २	५८ १२	५८ २३	५८ ३४	५८ ४५
८ धनु	५८ ४५	५८ ५५	५९ ६	५९ १७	५९ २८	५९ ३८	५९ ४९	० ०	० ११	० २२	० ३२	० ४३	० ५४	१ ५	१ १५	१ २६	१ ३७	१ ४८	१ ५८	२ ९	२ २०	२ ३१	२ ४१	२ ५२	३ ३	३ १४	३ २५	३ ३५	३ ४६	३ ५७	४ ८
९ मकर	४ ८	४ १८	४ २९	४ ४०	४ ५१	५ १	५ १२	५ २३	५ ३३	५ ४३	५ ५३	६ ३	६ १३	६ २३	६ ३३	६ ४३	६ ५३	७ ३	७ १३	७ २३	७ ३३	७ ४३	७ ५३	८ २	८ १२	८ २२	८ ३२	८ ४२	८ ५२	९ २	९ १२
१० कुम्भ	९ १२	९ २२	९ ३२	९ ४२	९ ५२	१० २	१० १२	१० २२	१० ३१	१० ४१	१० ५०	१० ५९	११ ८	११ १८	११ २७	११ ३६	११ ४५	११ ५५	१२ ४	१२ १३	१२ २२	१२ ३२	१२ ४१	१३ ५०	१३ ०	१३ ९	१३ १८	१३ २७	१३ ३७	१३ ४६	१३ ५५
११ मीन	१३ ५५	१४ ४	१४ १३	१४ २३	१४ ३२	१४ ४१	१४ ५१	१५ ०	१५ ९	१५ १९	१५ २८	१५ ३७	१५ ४६	१५ ५६	१६ ५	१६ १४	१६ २३	१६ ३३	१६ ४२	१६ ५१	१७ ०	१७ १०	१७ १९	१७ २८	१७ ३८	१७ ४७	१७ ५६	१८ ५	१८ १५	१८ २४	१८ ३३

ग्रहों के छः प्रकार के बल

स्थान बल, दिग्बल, काल बल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल और दृक् बल, यह छः प्रकार के बल हैं। फलित ज्ञान के लिए इन बलों को जान लेना आवश्यक है। **स्थान बल**—जो ग्रह उच्च, मित्रगृही, मूल त्रिकोणस्थ, स्वनवांशस्थ अथवा द्रेष्काणस्थ होता है, वह स्थान बली कहलाता है। **दिग्बल**—बुध और गुरु लग्न में रहने से, शुक्र और चन्द्रमा चतुर्थ में रहने से, शनि सप्तम में रहने से, सूर्य और मंगल दशम स्थान में रहने से दिग्बली होते हैं। **कालबल**—रात में जन्म होने पर चन्द्र, शनि और मंगल तथा दिन में जन्म होने पर सूर्य, बुध और शुक्र कालबली होते हैं। मतान्तर से बध को सर्वदा काल बली माना जाता है। **नैसर्गिक बल**—शनि, मंगल, बुध, शुक्र, चन्द्र और सूर्य उत्तरोत्तर बली होते हैं। **चेष्टाबल**—मकर से मिथुन पर्यन्त किसी राशि में रहने से सूर्य और चन्द्रमा तथा मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि चन्द्रमा के साथ रहने से चेष्टाबली होते हैं। **दृक् बल**—शुभ ग्रहों से दृष्ट ग्रह दृक् बली होते हैं। बलवान् ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस भाव में रहता है, उस भाव का फल देता है। पाठकों को राशि स्वभाव और ग्रहस्वभाव दोनों का समन्वय कर फल अवगत करना चाहिये।

दशम स्पष्ट तथा भावस्पष्ट

इष्ट कालिक द्वादश भावों की वास्तविक स्थिति जानने के लिए भाव-स्पष्ट किया जाता है। भाव स्पष्ट के लिए दशम् लग्न सारिणी का प्रयोग किया जाता है॥ **विधि इस प्रकार है।—लग्न स्पष्ट** करने के लिए लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट के राश्यंशों से प्राप्त घटी-पलों को इष्टकाल के घटी पलों में जमा करने पर जो **योगफल** मिले उसको **दशम लग्न सारिणी** के निकटस्थ कोष्ठकों में देखने पर जो राशि अंशादि प्राप्त होंगे वही **दशम लग्न स्पष्ट** होगा।

भाव स्पष्ट का उदाहरण—मान लो किसी जातक का जन्मोष्टकाल २०।४५ घट्यादि है तथा **जालंधर लग्न सा० से** सूर्य स्पष्ट (०।१२।७) द्वारा प्राप्तांक ४।९ है, और लग्न स्पष्ट ४। १०।३५ है। इष्ट और सू. स्प. से प्राप्तांकों को जमा करने से हमें २४।५४ घट्यादि प्राप्त हुए। इन प्राप्त योगाकों को **दशम् लग्न सारिणी** में देखने पर हमें **दशम् भाव स्पष्ट** १।८।३६ प्राप्त हुआ। **दशभाव** स्प. में ६ राशि जोड़ने से **चतुर्थ भाव** तथा ४ थे भाव में से लग्न भाव स्पष्ट घटा कर शेष को ६ द्वारा भाग देने पर जो अंश-कलादि प्राप्त हों, वह **षष्ठांश** कहलाता है। **षष्ठांश** को लग्न भाव में जोड़ने से लग्न की सन्धि तथा इस सन्धि में षष्ठांश को पुनः जोड़ने से द्वितीय भाव स्प. होगा। **द्वितीय भाव में षष्ठांश** जोड़ने से दूसरे भाव की सन्धि, इस सन्धि में षष्ठांश जमा करने से **तृतीय भाव** होगा। तृतीय भाव में षष्ठांश जमा करते से **३रे भाव की सन्धि,** और इस सन्धि में **षष्ठांश** जोड़ने से **चतुर्थ भाव** प्राप्त हो जाता है। अब उसी षष्ठांश को एक राशि में से घटाकर शेष को ४थें भाव में जोड़ने से चतुर्थ भाव की सन्धि, फिर इस सन्धि में उसी शेष को जोड़ने से **पंचम भाव** होगा। लग्न भाव स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव तथा प्रथम लग्नभाव की सन्धि में ६ राशि युक्त करने से सप्तम भाव की सन्धि होगी। इसी प्रकार २रें, ३रें भावों में प्रत्येक में क्रम से ६-६ राशि जोड़ने से **अष्टम, नवम, दशम, एकादश आदि भाव एवं सन्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।**

—पं० पन्ना लाल ज्यो.

षट्वर्ग सारणी चक्रम्

राशि	वर्ग	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
रा. षट्		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
०	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	सं	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
मे.	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	सं	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	नं	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
वृ.	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	सं	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
मि.	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	सं	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
क.	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	सं	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
सिं.	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	सं	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
कं.	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

राशि	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
६	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	७	७	७	८	८	९	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
तु.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
७	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
वृ.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
८	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
ध.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
म.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
१०	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
कुं	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
११	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
मी.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

षड्वर्गी फलादेश विचार

षड्वर्ग में १ होरा, २ द्रेष्काण, ३ सप्तमाश, ४ नवमांश, ५ द्वादशांश, ६ त्रिशांश स्पष्ट कुण्डलियों का विचार किया जाता है। यदि ६ वर्गों में वर्गेश अधिकांश शुभ ग्रह हों तो शुभफल यदि अधिकांश अशुभ ग्रह हों तो अनिष्ट फल देते हैं।

षड्वर्ग सारणी—होरादि ६ वर्गों के लग्न व उनमें ग्रह स्थापन हेतु पीछे जो षड्वर्ग सारिणी दी गई है। अपने लग्न स्पष्ट से प्राप्त राशि अंशानुसार नवांशादि लग्न का ज्ञान करें। राशि व होरादि वर्ग के सामने और अंशों के नीचे कोष्ठक में जो अंक होगा, वही उस वर्ग का लग्न होगा।

उदाहरण—मान लें लग्न स्पष्ट ५।॥२९।२५ है। यहां पर लग्न राशि कन्या और अंशादि ४।२९॥२५ है। सारिणी में ३ भाग ४।१७ पर समाप्त होता है। अतः हमारे अभीष्ट अंशादि (४।२९) ४ चतुर्थ खाने के नीचे पड़ेगे। अतएवं कन्या राशि के सामने (दाईं ओर) तथा चतुर्थ भाग के नीचे की तालिका पर होरा के सामने ४ अर्थात् **कर्क लग्न, द्रेष्काण ६** (कन्या), सप्तमांश का १ (मेष), नवमांश का ११ (कुम्भ), द्वादशांश का ७ (तुला), एवं त्रिशांश का २ (वृष) लग्न निकलेगा। इन वर्गों के स्वामी क्रमशः चंद्र, बुध, मंगल, शनि, शुक्र व शुक्र ग्रहों में २ पापग्रह तथा शेष ४ शुभ ग्रह होने के कारण उक्त कन्या लग्न शुभग्रह फलयुक्त-श्रेष्ठ फल होगा। ग्रहस्थापन हेतु उदाहरणार्थ यदि सूर्य स्पष्ट ७।८।१०।४२ है, ७वें भाग एवं ८।३४।१७ अंशादि के नीचे तथा (७) एवं राशि वृश्चिक के सामने दाईं ओर कोष्ठक के होरादि वर्गों में क्रमशः ४।८ ।३ ।६ ।११ ।६ राशियां होंगी। सूर्य होरादि वर्गों में तदनुसार राशि में स्थापित करे। इसी भाँति अन्य चन्द्रादि ग्रहों की स्थापना करेंगे।

होरा फल

होरा लग्न में सिंह (५) अथवा कर्क लग्न ही रहता है। **होरा लग्न** विषम ५ राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक पुरुषार्थी, उच्चपदाभिलाषी, शूरवीर होगा, गुरु, मंगलादि मित्र ग्रह साथ में हों तो व्यक्ति विद्वान, धन धान्य युक्त उत्तम मित्र युक्त, उच्चपदासीन, नेता व सम्पत्तिवान् होगा। यदि सम ४ राशि सूर्य होरा में शनि, भौम क्षीण चंद्र, राहु आदि पाप ग्रह हों तो जातक नीच प्रकृति वाला, कुल मर्यादा विरुद्ध आचरण करने वाला एवं निर्धनी होता है। **होरा लग्न** में सम राशि हो और चन्द्रमा उसी में स्थित हो तथा साथ में शुक्रादि शुभ ग्रह हों तो जातक मृदु-भाषी, शान्त स्वभाव, व्यवसायी, समृद्ध, धनी, सुखी परिवार वाला, सुशील व राजदरवार से लाभ प्राप्त करने वाला होगा। यदि चन्द्र होरा में सूर्य, शनि आदि पाप ग्रह हों तो नीचाचरण वाला निर्धनी, नीच कार्यों में प्रवृत्त, सुख में कमी होगी।

द्रेष्काण फल विचार

अपने वर्ग के द्रेष्काण में स्थित सौम्य ग्रह केन्द्र अथवा त्रिकोण में हों तो जातक सत्यवक्ता, धनी, विद्वान् व अनेक कलाओं का ज्ञाता होता है। **द्रेष्काणपति** शुभ ग्रह की राशि में हो या शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट अथवा युक्त हो तो धन, मान व यश की वृद्धि और अनेक सुखों की पूर्ति करता है। **द्रेष्काणपति** चन्द्रमा से युक्त व भौम अथवा शुक्र द्वारा वीक्षित हो तो जातक को स्वार्जित धन की प्राप्ति होती है। **द्रेष्काणेश** शत्रु या नीच राशि में हो तो उस राशि अनुसार शरीर में घाव, चोटादि का चिन्ह होगा। जिस द्रेष्काण में चन्द्रमा स्थित हो उस द्रेष्काण का स्वामी सौम्य ग्रहों द्वारा दृष्ट हों तो तदग्रहानुरूप शुभफलदायक होगा।

सप्तमांशफल विचार

सप्तमांश लग्नपति चन्द्रमा से युक्त या शुभ ग्रहों द्वारा युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक भाई बन्धुओं से युक्त प्रसिद्ध कांतिवान, धनी, वाक्पटु, एवं मित्रों द्वारा सहायक होता है। सप्तमाँश में पड़े अधिकांश ग्रह उच्च राशिस्थ हों तो जातक समृद्ध, नीच हों तो दरिद्र होता है। सप्तमांशपति पुरुष ग्रह स्वराशि हों या मित्रराशि में हों या शुभ ग्रहों से युक्त हों तो जातक को सुन्दर, सुशील, गुणी, पुत्र संतान का सुख प्राप्त होता है। **सप्तमांश लग्नपति** पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो अयोग्य व नीच कर्म करने वाली सन्तान होती है। सप्तमांश लग्नपति स्त्री ग्रह हो और शुक्र, वुध आदि स्त्री ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होंगी। **सप्तमांश** लग्नपति लग्न से ७।८ ।१२वें स्थान में पापग्रह से दृष्ट या गृष्ट हो तो जातक संतानहीन होता है। तृतीय स्थान स्थित रवि या गुरु अथवा भौम सप्तमांश में हो तो जातक सत्यवादी, मनोवांछित अर्थात् निर्वाह योग्य धन प्राप्त करने वाला होता है।

नवमांश कुण्डली विचार

वर्गोत्तम (लग्नानुरूप नवांश) को छोड़कर लग्न का प्रथम नवांश हो तो जातक चंचल, दुष्ट स्वभाव व चोर होता है। **द्वितीय नवांश** हो तो पुरुष संगीत और स्त्रियों का प्रेमी व भोगी होता है। तृतीय नवांश में उत्पन्न धर्मात्मा, रोगी व ज्ञानी होगा। चतुर्थ में उत्पन्न व्यक्ति गुरुभक्त व सम्पन्न होता है। पंचम में दीर्घायु प्रसिद्ध व बहुपुत्र वाला, **षष्ठ** में स्त्री के वशीभूत, नपुसंक अपव्ययी व प्रमादी होता है। सप्तम में उत्पन्न पराक्रमी व बुद्धिमान्, अष्टम नवांश में व्यक्ति कृतघ्न द्वेषी, बहुसंतान युक्त व क्लेश में रहता है। नवांश में उत्पन्न पुरुष प्रतापी, कार्य-कुशल व धनधान्य से युक्त होता है। जो ग्रह जन्मकुण्डली व नवमांश कुण्डली-दोनों में उच्चराशिस्थ या स्वराशिस्थ हो वह वर्गोत्तम कहलाता है जिसका फल अत्युत्तम कहा जाता है। **नवमांश लग्न** का स्वामी मंगल हो या मंगल द्वारा दृष्ट हो तो जातक की स्त्री मिलनसार, श्वेत वर्ण पर कुछ तेज़ स्वभाव की होगी। बुध हो तो सुन्दर आकृति, चतुर, शिल्पविद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, विद्यावान, धार्मिक स्वभाव व शुभाचरभ वाली। शुक्र हो तो चतुर, श्रृंगारप्रिय, श्वेतवर्णा सुन्दरी व कामुक होगी। **नवमांशपति शनि** हो तो क्रूर स्वभाव की, श्यामवर्णा पति से विरोध करने वाली स्त्री होती है। नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और वह स्वराशिस्थ अथवा केन्द्र त्रिकोण में स्थित तो जातक को स्त्री का अच्छा सुख मिलता है। **नवांशपति** भाग्येश के

साथ २।५।११वें भाव में उच्च या स्वराशि का होकर पड़ा हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल से धन लाभ होता है। नवमांशपति पाप ग्रहों से युक्त या पाप ग्रह से दृष्टय होकर ६, ८वें या १२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री सुख नहीं मिलता। अधिकांश ग्रह यदि नीच नवांश में हों तो जातक पराधीन होकर जीवन निर्वाह करता है। **नवाँश कुण्डली** में जितने पुरुष ग्रह बलवान् होकर ५वें भाव में स्थित हों व.५वें भाव पर पूर्ण दृष्टि करें उतने ही पुत्र होंगे। यदि ५वें चन्द्रमा, शुक्र या बुध हो या इनसे दृष्ट हो तो कन्याएं होती हैं। केतु या शनि होने से गर्भ स्थिर नहीं रहता है। अर्थात् गर्भपात का भय होता है।

द्वादशांश फल विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख-दुःख तथा आयु सीमा का विचार किया जाता हैं। **द्वादशांश लग्न** का स्वामी पुरुष ग्रह स्वराशि, मित्रराशि या उच्च राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१०वें भावों में स्थित हो, तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि हो तो पिता का अल्प सुख होता है इसी भांति **द्वादशांश लग्न** का स्वामी स्त्री ग्रह शुभ ग्रहों युक्त, स्वराशि, मित्र या उच्चराशिस्थ होकर १।४।५।७।९।१० वें भावों में हो तो माता का विशेष सुख होता है। यदि स्त्री ग्रह पापयुक्त या दृष्ट होकर ६।८।१२वें भाव में हों तो माता के बहुसुख में कमी रहती है। बारह राशि के द्वादशांश में क्रम से आयु प्रमाण इस प्रकार से वर्णित है। ८०, ८४, ८६, ८४, ६०, ५३, ७०, ५०, ६६, १०० अर्थात् क्रम से द्वादशांश में इतने वर्ष की आयु प्राप्ति की संभावना होती है।

त्रिशांश फल विचार

त्रिशांश में जो ग्रह मित्र के घर में या उच्च में हो वह सभी कार्यों में उत्साही धनी, धर्मिष्ठ व पूज्य होता है। मंगल अपने त्रिशांश में स्थित हो तो वह प्राणी तेजस्वी धैर्यवान स्त्री-धन से युक्त, बुध अपने त्रिशांश में हो तो बुद्धिमान, संगीत, प्रेमी, गुरु हो तो जातक उद्यमी, धनवान, **शुक्र हो** तो जातक बहुपुत्रों वाला, अनेक स्त्रियों से मित्रता करने वाला होता है। **शनि** हो तो परस्त्रीगमन करने वाला, दुःखी व मलिन हृदय होगा।

सहज ग्रह शान्ति

अहिंसकस्य दान्तस्य धर्मार्जित धनस्य च। सर्वदा नियमस्थ सदा सानुग्रहा ग्रहाः॥

जो व्यक्ति किसी को दुख नहीं देता, न किसी की हिंसा चाहता है, जो संयमी (अर्थात् जिसे अपने मन, वचन एवं कमी) आदि इन्द्रियों पर संयम है और जो धर्म निर्दिष्ट मार्ग से धन का उपार्जन करता है तथा जो शास्त्र प्रतिपादित नियमों का पालन करता है। उसपर ग्रह सदैव अनुग्रह—अर्थात् उन्हें अनुकूल शुभ फल प्रदान करते हैं तथा ईश्वर की कृपा बनी रहती है।

अपने पूर्वजों के प्रति श्राद्धादि तर्पण की महिमा

हमारे जो आत्मीय पूर्वज हमारे सुखों में अपने अन्तर्मन में सुखी होते थे एवं हमारे कष्टों से दुखी होते थे, उनकी स्मृति मिटाए नहीं मिटती। अपने उन आत्मीय पूर्वजों का शास्त्रीय मन्त्रों द्वारा आह्वान, पूजन एवं उनके याद में यथाशक्ति अन्न-धनादि का दान करना ही श्राद्ध कहलाता है। इस प्रकार अपने दिवंगत पितरों की स्मृति में जो कुछ भी अन्न, फल, वस्त्र, धनादि का श्रद्धापूर्वक दान किया जाता है, उसे श्राद्ध कहते हैं—

श्रद्धया दीयते यत्र तत् श्राद्धं प्रकीर्तितम् ॥

जो विधिवत् अपने पितृजनों के लिए श्राद्ध करता है, फिर उसे प्रज्ञा, धन, विद्या, धन, सम्पदा, निरोगता, यश अभीष्ट कामनाओं की पूर्ति एवं दीर्घायु का आशीर्वाद देते हैं—

अमावस्या, आश्विन कृष्ण पक्ष, उत्तरायण-दक्षिणायन् श्राद्धयोग्य ब्राह्मण की प्राप्ति होना, विषुव संक्रान्ति (सूर्य की मेष एवं तुला संक्रान्ति), मकर सक्रान्ति, व्यतीपात, गजच्छाया-योग, चन्द्र-सूर्य ग्रहण तथा मृत्यु तिथि—ये सब श्राद्ध के काल (अवसर) कहे गए हैं।

अग्नि को प्रर्थना— **ॐ उशन्तस्त्वा निधीमह्यशन्तः समिधीमहि ।**
उशन्नुशत आवाह पितृन्हविशे अत्तवे ॥ यजु ११।७०॥

'हे अग्ने! तुम्हारे यजन की कामना करते हुए हम तुन्हें स्थापित करते हैं। यजन की ही इच्छा रखते हुए तुम्हें प्रज्वलित करते हैं। हविष्य की इच्छा रखते हुए तुम भी तृप्ति की कामना वाले हमारे पितरों को हविष्य भोजन करने के लिए बुलाओ

आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिः देवयानै :।
अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्तुऽस्मान्॥ (यजु १८/५८)

''हे सोमपान करने योग्य अग्निष्वात पितृगण, देवताओं के साथ गमन करने योग्य मार्गों से यहाँ आवें और इस यज्ञ में स्वधा से तृप्त होकर हमें मानसिक उपदेश दें तथा हमारी रक्षा करें।''

इसके पश्चात् पितृगणों का नाम-गोत्र आदि का उच्चारण करते हुए प्रत्येक दिवंगत पूर्वज के निमित्त सर्वप्रथम कुशाओं को द्विगुणित करके उनका मूल और अग्रभाग दक्षिण की ओर किए हुए उन्हें अँगूठे और तर्जनी के बीच रखे और स्वयं दक्षिणाभिमुख होकर बाएं घुटने को पृथ्वी पर रखकर जनेऊ (यज्ञोपवीत) को अपसव्य (दाएं कंधे पर रखकर) अर्घ्य पात्र में जल एवं गंगाजल, काले तिल मिलाकर पितृ तीर्थ से (अंगूठा और तर्जनी के मध्य भाग से) पितरों के लिए तर्पण करे॥

उपरोक्त विधि से ३-३ अंजलि तिलसहित जल दें। यथा—

पिता के लिए—अमुकगोत्रः अस्मत्पिता, अमुक शर्मा (पिता नाम, जाति आदि). **वसुरूप-स्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलवा) तस्मै स्वधा नमः ॥ ३॥**

दादा को तर्पण के समय वसुरूप के स्थान रूद्र रूप का प्रयोग करें तथा माता को तर्पण के समय दा वसुरूपा शब्द प्रयोग करें।

इसके पश्चात् निम्नमन्त्र से पितृ तीर्थ से जलांजलि देवें—

ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ।
असुं य ईयुरवृका ऋत ज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥ (यजुः १९।४९॥

श्राद्ध कर्म अपने निवास स्थान पर ही करना चाहिए, अथवा आवश्यक परिस्थितिवश मन्दिर या तीर्थों में भी किया जा सकता है। दूसरे के घर में जो श्राद्ध किया जाता है, उसमें श्राद्ध करने वाले पितरों को कुछ नहीं मिलता ॥

श्राद्ध से विमुख नहीं होना चाहिए जो व्यक्ति जानबूझ कर श्राद्ध नहीं करता, पितर शाप देकर वापिस लौट जाते हैं।

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

नोट–जिस शहर के आगे (–) का चिन्ह लगाया गया है, वह नगर 82½ रेखांश में उतने मिनट पश्चिम है और जिस स्थान पर (+) का चिन्ह लगा है, वह स्थान उतने मिनट पूर्व में है। सूर्योदयास्त जानने के लिए ज़िन नगरों का स्टै. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में (–) की बजाए (+) करना होगा तथा '+' चिन्ह वाले नगरों को मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से प्राप्त सू. उ. – सू. अ. में (–) ऋण करें।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टैं. अन्तर मिं. सैं.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टैं. अन्तर मिं. सैं.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टैं. अन्तर मिं. सैं.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टैं. अन्तर मिं. सैं.
अमृतसर (पंजा.)	31 37	74 55	-30 20	उत्तरकाशी (उत्तरां.)	30 44	78 27	-16 12	कोटखाई (हि.प्र.)	31 08	77 36	-19 36	जालन्धर (पंजा.)	31 19	75 04	-28 24
अलीगढ़ (उ. प्र.)	27 54	78 06	-17 36	ऊना (हि. प्र.)	31 32	76 18	-24 48	कन्नौज (उ. प्र.)	27 03	79 58	-09 28	जंडियाला (पंजा.)	31 36	75 03	-29 48
अलीपुर (बंगाल)	22 32	88 24	-23 36	उधमपुर (ज. का.)	32 55	75 07	-29 32	कोटा (राज.)	25 10	75 52	-26 32	जम्मू (ज. का.)	32 43	74 04	-30 24
अगरतला (त्रिपुरा)	23 49	91 18	+35 12	ऋषिकेश (उत्तरां)	30 07	78 18	-15 12	खन्ना (पंजाब)	30 42	76 13	-25 08	जौनपुर (उ. प्र.)	25 46	82 44	+00 56
अहमदाबाद (गुज.)	23 03	72 40	-39 20	एटा (उ. प्र.)	27 38	78 40	-15 20	खरड़ (पंजाब)	30 45	76 37	-23 32	जैसलमेर (राज.)	26 55	70 54	-46 24
अहमदनगर (महा.)	19 05	74 48	-30 48	औरंगाबाद (महा.)	19 53	75 23	-28 28	खुर्जा (उ. प्र.)	28 15	77 50	-18 40	जयपुर (राज.)	26 55	75 52	-26 32
अखनूर (काश.)	32 54	74 45	-31 00	कटक (उड़ी.)	20 28	85 54	+13 36	खण्डवा (म. प्र.)	21 50	78 07	-24 28	जीन्द (हरि.)	29 19	76 21	-24 36
अजमेर (राज.)	26 27	74 48	-31 12	कच्छ (गुज.)	22 35	69 40	-51 20	गढ़वाल (उ. प्र.)	30 15	79 30	-12 00	जमशेदपुर (बिहार)	22 50	86 10	+14 40
अल्मोड़ा (उ. प्र.)	29 37	79 40	-19 20	कठुआ (ज. का.)	32 17	75 36	-27 36	गया (बिहार)	24 49	85 01	+10 04	जामनगर (गुज.)	22 27	70 05	-49 40
अलवर (राज.)	27 34	76 38	-23 28	कार्गिल (ज. का.)	34 30	76 13	-25 08	ग्वालियर (म. प्र.)	26 14	78 10	-17 20	जोगिन्द्रनगर (हि. प्र.)	31 58	86 45	-23 00
अमरावती (महा.)	20 56	77 48	-18 48	किश्तवाड़ (ज. का.)	33 19	75 48	-26 48	गिलगित (ज. का.)	35 55	74 22	-32 32	जोधपुर (राज.)	26 18	73 04	-37 44
अम्बाला (हर.)	30 21	76 52	-22 32	कटरा (ज. का.)	33 01	74 58	-30 08	गुरदासपुर (पंजाब)	32 03	75 27	-28 12	जबलपुर (म. प्र.)	23 10	79 59	-10 04
अंबिकापुर (म. प्र.)	23 10	83 15	+03 00	कटनी (म. प्र.)	23 47	80 27	-08 12	गुड़गांव (हरि.)	28 29	77 04	-21 44	जलगांव (महा.)	21 03	75 39	-27 24
अंकलेश्वर (गुज.)	21 38	73 03	-37 48	करनाल (हरि.)	29 42	77 02	-21 52	गोरखपुर (उ. प्र.)	26 45	83 24	+03 36	जलगांव (गुज.)	22 27	75 40	-27 20
अमेठी (उ. प्र.)	26 08	81 50	-02 40	कलकत्ता (बंगा.)	22 34	88 24	+23 36	गोहाटी (आसा.)	26 11	91 47	+52 36	जैतों (पंजाब)	30 28	74 53	-30 28
अमरोहा (उ. प्र.)	28 54	78 29	-16 04	कपूरथला (पंजा.)	31 23	75 25	-28 20	गोधरा (गुज.)	22 49	73 40	-35 20	ज़ीरा	30 57	74 59	-30 04
आनन्दपुर (पंजा.)	31 15	76 32	-23 52	करौली (राज.)	26 30	77 01	-21 56	गाजीपुर (उ. प्र.)	25 34	83 35	+04 20	जगाधरी (हरि.)	30 10	77 16	-20 56
आनन्द (गुज.)	22 34	73 00	-38 00	कांगड़ा (हि. प्र.)	32 05	76 18	-24 48	गोईदवाल (पंजा.)	31 22	75 08	-29 28	ज्वालामुखी (हि. प्र.)	31 53	76 20	-24 40
अनन्तनाग (काश.)	33 43	75 17	-28 52	कानपुर (उ. प्र.)	26 28	80 24	-08 24	गोराया (पंजा.)	31 06	75 47	-26 52	जाखल (हरि.)	29 49	75 49	-26 44
अनूपगढ़ (राज.)	29 07	73 06	-37 36	कालका (हरि.)	30 49	76 57	-22 12	गंगानगर (राज.)	29 49	73 50	-34 40	जूनागढ़ (गुज.)	21 31	70 6	-47 36
आजमगढ़ (उ. प्र.)	26 03	83 13	+02 52	कुल्लू (हि. प्र.)	31 58	77 10	-21 20	गोंडा (उ. प्र.)	27 08	82 01	-01 56	जोरहाट (आसा.)	26 46	94 6	+47 04
अयोध्या (उ. प्र.)	26 48	82 14	-01 04	कुराली (पंजाब)	30 50	76 35	-23 40	गढ़शंकर (पंजा.)	31 13	76 11	-25 16	झांसी (म. प्र.)	25 27	78 37	-15 32
अबोहर (पंजा.)	30 08	74 12	- 33 12	कोटकपूरा (पंजाब)	30 34	74 52	-30 32	गाजियाबाद (उ. प्र.)	28 40	77 28	-20 08	झरिया (बिहार)	23 50	86 33	+26 12
आसनसोल (बंगा.)	23 42	87 01	+18 04	कादियां (पंजाब)	31 49	75 23	-28 28	गुलमर्ग (ज. का.)	34 05	74 25	-32 20	झुंझुनू (राज.)	28 06	75 25	-28 20
आगरा (उ. प्र.)	27 10	78 05	-17 40	कसौग (हि. प्र.)	31 23	77 14	-21 04	गोवा (पंजिम)	15 27	73 59	-34 04	टाटा नगर (बिहार)	25 50	86 10	+14 40
आबू (राज.)	24 40	72 45	-39 00	किन्नौर (हि. प्र.)	31 32	78 20	-16 40	गोलकुण्डा (हैदरा.)	17 47	82 20	-00 39	टांडा उडमड़ (पंजा.)	31 40	75 41	-27 16
ईलाहाबाद (उ. प्र.)	27 54	78 06	-02 24	कंडाघाट (हि. प्र.)	30 57	77 08	-21 28	चम्बा (हि. प्र.)	32 30	76 10	-25 20	टोहाना (हरि.)	29 43	75 53	-26 28
इटावा (उ. प्र.)	26 47	79 02	-13 52	कोहिमा (ना.)	25 41	94 07	+46 28	चित्तौड़गढ़ (राज.)	24 54	74 42	-31 12	टिहरी उ. प्र.)	30 20	78 00	-16 00
इम्फाल (मणि.)	24 44	93 58	+45 52	कुमारसेन (हि. प्र.)	31 18	77 37	-19 32	चण्डीगढ़ (के. प्र.)	30 44	76 53	-22 28	टोंक (राज.)	26 11	75 50	-26 40
इन्दौर (म. प्र.)	22 44	75 50	-26 40	कुरुक्षेत्र (हरि.)	29 59	76 48	-22 48	चन्दौसी (उ. प्र.)	28 27	78 49	-14 44	टोडारायसिंह (राज.)	26 00	75 29	-28 04
इटारसी (म. प्र.)	22 30	77 55	-18 20	करतारपुर (पंजा.)	31 27	75 32	-27 52	चमौली (उत्तरां.)	30 24	79 21	-12 36	डबवाली (पंजा.)	29 58	74 45	-31 00
उदयपुर (राज.)	27 42	75 33	-27 48	कैथल (हरि.)	29 48	76 26	-24 16	चिरापूंजी (मे.)	25 27	19 47	+37 08	डोडा (ज. का.)	33 11	75 34	-27 44
उज्जैन (म. प्र.)	23 09	75 43	-27 08	कोल्हापुर (महा.)	16 42	74 16	-32 56	चूरु (राज.)	28 19	75 01	-21 56	डलहौज़ी (हि. प्र.)	32 31	76 00	-26 00
उन्नाव (उ. प्र.)	26 48	80 43	-07 08					चिन्तपूर्णी (हि. प्र.)	31 47	76 04	-25 44	डिब्रूगढ़ (आसा.)	27 29	94 58	+49 42

नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टैं. अन्तर मिं. सैं.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टैं. अन्तर मिं. सैं.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टैं. अन्तर मिं. सैं.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टैं. अन्तर मिं. सैं.
डूँगरपुर (राज.)	23 50	76 46	-35 08	पिहोवा (हरि.)	29 56	76 36	-23 36	बनारस (उ. प्र.)	25 20	83 00	+02 00	मुज़फ्फर न. (उ.प्र.)	29 28	77 44	-19 04
तरनतारन (पंजा.)	31 28	74 58	-30 08	पिठौरागढ़ (उ. प्र.)	29 35	80 13	-09 08	बरेली (उ. प्र.)	28 22	79 27	-12 12	मुक्तसर (पंजाब)	30 29	74 31	-31 56
तिरुपति (आंध्र)	13 40	79 20	-12 40	पिंजौर (हरि.)	30 49	76 55	-22 20	बलिया (उ. प्र.)	25 44	84 11	+06 04	मंदसौर (म. प्र.)	24 03	75 08	-29 28
त्रिवेन्द्रम (के.)	08 29	76 57	-22 12	पुंछ (ज. का.)	33 51	74 08	-33 28	बदायूं (उ. प्र.)	28 02	79 10	-13 20	मैसूर (कर्ना.)	12 18	76 42	-23 12
थानेसर (हरि.)	29 58	76 56	-22 16	पहलगाँव (ज. का.)	34 01	75 24	-28 24	बाराबंकी (उ. प्र.)	26 56	81 13	-05 08	मण्डी (हि. प्र.)	31 43	76 58	-22 08
दिल्ली	28 39	77 12	-21 12	पटना (बिहार)	25 37	85 13	+10 52	बारामूला (ज. का.)	34 10	74 30	-32 00	मनीकरण (हि. प्र.)	32 01	77 20	-20 40
देहरादून (उ. प्र.)	30 19	78 04	-17 44	प्रयाग (उ. प्र.)	25 30	81 56	-02 16	बनिहाल (ज. का.)	32 32	75 19	-28 44	मनाली (हि. प्र.)	32 17	77 19	-20 44
दसूहा (पंजा.)	31 49	75 39	-27 24	पीलीभीत (उ. प्र.)	28 38	79 51	-10 36	वल्लभगढ़ (हरि.)	28 22	77 20	-20 40	मद्रास (चेन्नई)	13 04	80 17	-08 52
दीनानगर (पंजा.)	32 08	75 31	-27 56	पालमपुर (हि. प्र.)	32 06	76 33	-23 48	बहादुरगढ़ (हरि.)	28 42	76 55	-22 30	मुम्बई (महा.)	19 00	72 54	-38 24
दतारपुर (पंजा.)	31 53	75 45	-27 00	पपरौला (हि. प्र.)	32 04	76 34	-23 44	बीकानेर (राज.)	28 01	73 22	-36 32	यमुनानगर (हरि.)	30 08	77 16	-20 56
दार्जिलिंग (बंगा.)	27 03	88 18	+23 12	प्रतापगढ़ (उ. प्र.)	25 50	81 59	-02 04	बांसवाड़ा (राज.)	23 30	74 24	-32 24	रामपुर बुशै. (हि. प्र.)	31 28	77 39	-19 24
दुर्गापुर (बंगा.)	23 30	87 20	+19 20	प्रतापगढ़ (म. प्र.)	24 02	74 40	-31 20	बागपत	28 57	77 13	-21 08	रोहड़ू (हि. प्र.)	31 12	77 44	-19 08
द्वारिका (गुज.)	22 14	69 01	-53 56	पाली (राज.)	25 46	73 25	-36 20	बून्दी (राज.)	25 27	75 40	-27 20	रोपड़ (पंजाब)	30 57	76 32	-23 52
देवरिया (उ. प्र.)	23 33	83 45	+05 00	पोरबन्दर (गुज.)	21 37	69 49	-50 44	बैजनाथ (हि. प्र.)	32 03	76 36	-23 36	राजपुरा (पंजाब)	30 29	76 34	-23 44
दतिया (म. प्र.)	25 39	78 27	-16 12	पंचमढ़ी (म. प्र.)	22 30	78 22	-16 32	बिलासपुर (हि. प्र.)	31 19	76 50	-22 40	रायकोट (पंजाब)	30 41	75 36	-27 26
देवप्रयाग (उ. प्र.)	30 09	78 37	-15 32	पुरी (उड़ी)	19 48	85 52	+13 28	बिलासपुर (म. प्र.)	22 05	82 13	-01 08	रोहतक (हरि.)	28 54	76 38	-23 28
धनबाद (बिहा.)	23 47	86 30	+16 00	पुरुलिया (बंगा.)	23 20	86 25	+15 40	बस्तर (म. प्र.)	19 20	81 30	-04 00	रिवाड़ी (हरि.)	28 12	76 40	-23 20
धर्मशाला (हि. प्र.)	32 16	76 23	-24 28	पन्ना (म. प्र.)	24 44	80 14	-09 04	बैंगलौर (क.)	12 58	77 38	-19 28	रामबन (ज. का.)	33 14	75 15	-29 00
धौलपुर (राज.)	26 42	77 53	-18 28	पिलानी (राज.)	28 23	75 35	-27 40	भटिंडा (पंजाब)	30 11	75 00	-30 00	रियासी (ज. का.)	33 04	74 53	-30 28
धूरी (पंजा.)	30 22	75 52	-26 32	पुष्कर (राज.)	28 30	74 34	-31 44	भद्रवाह (का.)	33 04	75 50	-26 40	रामनगर (ज. का.)	32 52	75 22	-28 32
नागौर (राज.)	27 11	73 40	-35 20	पौड़ीगढ़वाल (उत्तरां)	30 09	78 47	-14 52	भिवानी (हरि.)	28 46	76 18	-24 48	रतलाम (म. प्र.)	23 31	75 07	-29 32
नवलगढ़ (राज.)	22 51	75 18	-28 48	फतेहगढ़ (उ. प्र.)	27 23	79 40	-11 20	भुवनेश्वर (हरि.)	20 10	85 50	+13 20	राजौरी (ज. का.)	33 23	74 18	-32 48
[illegible]कोदर (पंजा.)	31 07	75 29	-28 04	फतेहगढ़ सा. (पंजा.)	30 39	76 23	-24 28	भरतपुर (राज.)	27 05	77 30	-20 00	रायपुर (म. प्र.)	21 15	81 41	-03 16
[illegible] (पंजा.)	31 01	75 22	-28 32	फैज़ाबाद (उ. प्र.)	26 47	82 12	-01 12	भावनगर (गुज.)	21 46	72 10	-41 20	रायबरेली (उ. प्र.)	26 14	81 16	-04 56
नोहर (राज.)	29 11	74 46	-30 56	फरुखाबाद (उ. प्र.)	27 24	79 37	-11 32	भुज (गुज.)	23 16	69 40	-51 20	रामपुर (उ. प्र.)	28 48	79 05	-13 40
नसीराबाद (राज.)	28 18	74 46	-30 56	फगवाड़ा (पंजा.)	31 13	75 47	-26 52	भीलवाड़ा (राज.)	25 21	74 40	-31 20	राँची (बिहार)	23 23	85 23	+11 32
नासिक (महा.)	20 02	73 50	-34 40	फरीदकोट (पंजा.)	30 40	74 57	-30 12	भोपाल (म. प्र.)	23 16	77 36	-19 36	रायसिंहनगर (राज.)	29 32	73 27	-36 12
नरवाना (हरि.)	29 36	76 08	-25 28	फाज़िल्का (पंजा.)	30 24	74 04	-33 44	मलेरकोटला (पंजा)	30 31	75 59	-26 04	राजकोट (गुज.)	22 18	70 56	-46 16
नागपुर (म. प्र.)	21 09	79 09	-13 24	फिरोज़पुर (पंजा.)	30 55	74 40	-31 20	मजीठा (पंजाब)	31 46	74 57	-30 12	रामेश्वरम् (ता.)	09 17	79 22	-12 32
नाखौल (हरि.)	28 02	76 14	-25 04	फिल्लौर (पंजा.)	31 01	75 48	-23 48	मलोटा (पंजाब)	30 13	74 29	-32 04	रूड़की (उत्तरां.)	29 52	77 53	-18 28
नंगल (पंजा.)	31 23	76 23	-24 08	फरीदाबाद (हरि.)	28 25	77 22	-20 32	मानसा (पंजाब)	29 59	75 23	-28 28	लुधियाना (पंजा.)	30 55	75 54	-26 24
नवांशहर (पंजा.)	31 07	76 08	-25 28	फतेहाबाद (हरि.)	29 31	75 30	-28 00	मोगा (पंजाब)	30 48	75 10	-29 20	लेह (ज. का.)	34 10	77 40	-19 20
नाभा (पंजा.)	30 25	76 09	-25 24	बटाला (पंजा.)	31 49	75 14	-29 04	मोहाली (पंजा.)	30 43	76 42	-23 12	लद्दाख (रेंज)	32 00	80 00	-10 00
नाहन (हि. प्र.)	30 33	77 21	-20 36	बंगा (पंजा.)	31 11	75 59	-26 04	मार्तण्ड (का.)	33 48	75 18	-28 48	लखनऊ (यू.पी.)	26 55	80 59	-06 04
नालागढ़ (हि. प्र.)	30 57	76 22	-24 32	बलाचौर (पंजा.)	31 03	76 19	-24 44	महेन्द्रगढ़ (हरि.)	28 16	76 10	-25 20	लखीमपुर (उ. प्र.)	27 57	80 49	-06 44
नैनीताल (उत्तरां.)	29 23	79 30	-12 00	बद्रीनाथ (उ. प्र.)	30 44	79 02	-11 52	मनसादेवी (हरि.)	30 44	76 52	-22 32	लाडवा (हरि.)	29 59	77 05	-21 40
नौशेरा (ज. का.)	33 10	74 15	-33 00	बक्सर (उ. प्र.)	25 35	83 59	+05 56	मकराना (राज.)	27 03	74 43	-31 08	वृन्दावन (उ. प्र.)	27 33	77 44	-19 04
पठानकोट (पंजा.)	32 17	75 42	-27 12	बड़ौदा (गुज.)	22 18	73 13	-37 08	मेरठ (उ. प्र.)	29 01	77 05	-19 00	विशाखापट्टनम	17 42	83 20	+03 20
पटियाला (पंजा.)	30 20	76 25	-24 40	बड़गाम (ज. का.)	34 01	74 42	-31 12	मिर्ज़ापुर (उ. प्र.)	25 10	82 07	+00 28	शिमला (हि. प्र.)	31 06	77 13	-21 08
पट्टी (पंजा.)	31 17	74 51	-30 36	बरनाला (पंजा.)	30 23	75 33	-27 48	मुरादाबाद (उ. प्र.)	28 51	78 49	+14 44	शाहदरा (दिल्ली)	28 40	77 20	-20 40
पंचकूला (हरि.)	30 45	76 53	-22 28	बिजनौर (उ. प्र.)	29 23	78 11	-17 16	मुगलसराय (उ. प्र.)	25 17	83 11	+02 44	शाहाबाद (हरि.)	30 10	76 55	-22 20
पानीपत (हरि.)	29 23	77 01	-21 56	बुलन्दशहर (उ. प्र.)	28 24	77 54	-18 24	मंसूरी (उ. प्र.)	30 27	78 06	-17 36				
								मथुरा (उ. प्र.)	27 28	77 41	-19 16				

नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टैं. अन्तर मिं. सैं.
शाहजहांपुर (उ. प्र.)	27 54	79 57	-10 12
शोलापुर (महा.)	17 40	75 56	-26 16
शिलांग (मेघा)	25 34	91 56	+37 44
श्रीनगर (का.)	34 06	74 51	-30 36
श्रीगंगानगर (राज.)	29 49	73 50	-34 40
श्रीमाधोपुर (राज.)	27 25	75 32	-27 52
संगरूर (पंजाब)	30 12	75 53	-26 28
सरहिन्द (पंजाब)	30 38	76 29	-24 04
सुल्तानपुर (पंजाब)	31 58	77 07	-21 32
समाना (पंजाब)	30 09	76 12	-29 12
समराला (पंजाब)	30 51	76 11	-25 16

नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टैं. अन्तर मिं. सैं.
सुनाम (पंजाब)	30 08	75 48	-23 48
साम्बा (ज. का.)	32 33	75 07	-29 32
सुन्दरनगर (हि. प्र.)	31 33	76 54	-22 24
सोलन (हि. प्र.)	30 55	77 09	-21 24
सुजानपुर टि. (हि.प्र.)	31 50	76 31	-23 56
सरकाघाट (हि. प्र.)	31 43	76 22	-24 32
सिरसा (हरि.)	29 32	75 07	-29 32
सोनीपत (हरि.)	28 58	76 59	-22 04
सूरतगढ़ (राज.)	29 19	73 57	-34 12
सूरत (गुजरात)	21 10	72 50	-38 40
सीकर (राज.)	27 36	75 09	-29 24

नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टैं. अन्तर मिं. सैं.
सवाई माधो (राज.)	22 58	76 30	-24 00
साम्भर (राज.)	26 54	75 10	-29 20
सिरोही (राज.)	24 53	72 54	-38 24
सागर (म. प्र.)	23 50	78 45	-13 48
सिहोर (म. प्र.)	23 12	77 00	-22 00
सहारनपुर (उ. प्र.)	29 58	77 23	-20 28
सीतापुर (उ. प्र.)	27 26	80 43	-07 08
सोमनाथ (गुज.)	21 04	70 26	-48 16
होशियारपुर (पंजा.)	31 32	75 57	-26 12
हमीरपुर (हि. प्र.)	31 42	76 30	-24 00
हांसी (हरि.)	29 06	76 00	-26 00

नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टैं. अन्तर मिं. सैं.
हिसार (हरि.)	29 10	75 46	-26 56
हरिद्वार (उत्तरां.)	29 58	78 13	-17 08
हल्द्वानी (उ. प्र.)	29 13	79 31	-11 56
हाथरस (उ. प्र.)	27 36	78 06	-17 36
हनुमानगढ़ (राज.)	29 35	74 21	-32 36
हापुड़ (उ. प्र.)	28 43	77 50	-18 40
हरदोई (उ. प्र.)	27 23	80 10	-09 20
हैदराबाद (आ. प्र.)	17 20	78 30	-16 00
होशंगाबाद (म. प्र.)	22 46	77 45	-19 00
हावड़ा (बंगाल)	22 35	88 23	+23 32

हिमाचल प्रदेश के मुख्य शहरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर

ज़िला कांगड़ा

कांगड़ा	32 05	76 18	-24 48
चामुण्डा देवी	32 08	76 20	-24 40
धर्मशाला	32 16	76 23	-24 28
नूरपुर	32 18	75 56	-26 16
मंगवाल	32 03	76 05	-25 40
कोटला	32 17	76 02	-25 52
अंदौरा	32 06	75 41	-27 16
शाहपुर	32 14	76 12	-25 12
नगरोटा	32 07	76 23	-24 28
देहरा गोपीपुर	31 55	76 14	-25 04
आलमपुर	31 54	76 30	-24 00
जवाली	32 06	76 01	-25 56
नगरोटा बगवां	32 06	76 24	-24 28
ढलियारा	31 52	76 11	-25 16
ज्वालामुखी	39 53	76 20	-24 40
पालमपुर	32 06	76 33	-23 48
पपरौला	32 04	76 34	-23 44
बैजनाथ	32 03	76 36	-23 36
जस्सूर	32 17	75 55	-26 20
गली (परागपुर)	31 48	76 18	-24 48

ज़िला हमीरपुर

हमीरपुर	31 42	76 30	-24 00
नादौन	31 47	76 22	-24 32
बरसार (भोटा)	31 34	76 28	-24 08
सुजानपुर टीहरी	31 50	76 31	-23 56
धनेटा	31 38	76 29	-24 04

ऊना	31 32	76 18	-24 48
बसौली	31 34	76 23	-24 28
संतोखगढ़	31 21	76 20	-24 40
बंगाना तै०	31 33	76 27	-24 16
मेहतपुर	31 22	76 17	-24 52
गगरेट	31 41	76 03	-25 48
अम्ब	31 43	76 06	-25 36
मुबारकपुर	31 44	75 59	-26 04
भरवाई	31 47	76 06	-25 36
दौलतपुर	31 46	75 58	-26 08
चिन्तपूर्णी	31 47	76 04	-25 44

ज़िला बिलासपुर

बिलासपुर	31 19	76 50	-22 40
घुमारवीं	31 30	76 41	-23 16
भाखड़ा	31 20	76 30	-24 00
नैना देवी	31 19	76 31	-23 56

ज़िला मण्डी

मण्डी	31 43	76 58	-22 08
जोगिन्दर नगर	31 58	76 45	-23 00
सरकाघाट	31 43	76 22	-24 32
सुन्दरनगर	31 33	76 45	-22 24
डैहर	31 29	76 52	-22 22
बड़ागांव	31 20	77 15	-21 00
करसोग	31 23	77 14	-21 04
तत्तापानी	31 14	77 10	-21 20
चचयोट	31 36	77 04	-21 44
पण्डोह	31 41	77 07	-21 32

ज़िला कुल्लू

कुल्लू	31 58	77 10	-21 20
नगर	32 10	77 20	-20 40
मनाली	32 17	77 19	-20 44
बंजार	31 40	77 20	-20 40
खाजियार	32 31	76 03	-25 40
भुंतर	31 54	77 09	-21 24
मनीकरण	32 01	77 20	-20 40
अनी	31 28	77 12	-21 12
निरमण्ड	31 28	77 34	-19 44

ज़िला शिमला

शिमला	31 06	77 13	-21 08
जतोग	31 09	77 08	-21 28
तारा देवी	31 04	77 10	-21 20
चायल	31 03	77 14	-21 04
कुफरी	31 07	77 14	-21 04
नारकण्डा	31 15	77 28	-20 08
कुमार सेन	31 18	77 37	-19 32
मशोबरा	31 07	77 14	-21 04
थियोग	31 08	77 33	-19 48
कोटखाई	31 08	77 36	-19 38
रामपुर बुशैहर	31 28	77 39	-19 24
महासू	31 05	77 13	-21 08
रोहडू	31 12	77 44	-19 04
जुब्बल	31 07	77 38	-19 28

ज़िला सोलन

सोलन	30 55	77 09	-21 24
कंडाघाट	30 57	77 08	-21 28
सपाटू	30 56	77 01	-21 56
डगशई	30 53	77 06	-21 36
परवानू	30 52	77 05	-21 40
धर्मपुर	30 54	77 04	-21 44
कसौली	30 54	77 02	-21 52
अर्की	31 09	76 59	-22 04
नालागढ़	30 57	76 22	-24 33
कुनिहार	30 58	77 10	-21 20

ज़िला चम्बा

चम्बा	32 30	76 10	-25 20
बनीखेत	32 32	75 58	-26 08
बकलोह	32 27	75 59	-26 04
डलहौज़ी	32 31	76 00	-26 00
शेरपुर	32 34	75 59	-26 04
हरिपुर	32 39	76 11	-25 16

ज़िला सिरमौर

नाहन	30 33	77 21	-20 36
पौंटा साहिब	30 29	77 38	-19 28
राजगढ़	30 52	77 24	-20 24
दहाहू	30 35	77 28	-20 08
पच्छाद	31 47	77 08	-21 28
त्रिलोकनाथ	32 43	76 39	-23 24

ज़िला किन्नौर

किन्नौर	31 32	78 20	16 40
लाहौल स्पिति	32 31	77 01	-21 56

विदेशी नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैं. अन्तर

आगे लिखे गए विदेशी नगरों के सामने स्थानीय समय का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए अन्तिम कालम में (–) चिन्ह वाले नगरों का समय भा. स्टै. टा. से पहले घटित होगा जबकि (+) चिन्ह वाले नगरों के आगे निर्दिष्ट समय, उतने घण्टे मिनट बाद में घटित होगा। जैसे इंग्लैंड (लंदन) के आगे +5/30 घं. मिं. लिखे हैं, इसका भाव यह हुआ कि यदि इंग्लैंड में प्रातः के 6/30 बजे हैं तो भारत में दोपहर के 12 बजे होंगे। इसी भान्ति न्यूयार्क (अमेरिका) के आगे +10/30 घं. मिं. होने से इसका यह तात्पर्य होगा कि वहां साढ़े दस घण्टे पीछे अर्थात् गत दिवस के डेढ़ (1/30) बजे होंगे। ज्ञातव्य रहे, अमेरिका, कैनेडा, मैक्सीको आदि देशों में एक ही समय अलग–अलग स्टैण्डर्ड टाईम का निर्धारण किया जाता है। **जैसे– एटलांटिक टाईम (A.T.), ईस्टर्न टाईम (Eastern Time), सैंटर्ल टाईम (Central Time), माऊंटेन टाईम, पैसेफिक टाईम इत्यादि।** यह सब स्टै. टाईम अलग–अलग रेखांशों पर आधारित होते हैं। जिसे स्टैण्डर्ड मेरिडियन कहते हैं। उदाहरणतया ईस्टर्न टाईम 75° रेखांश, सैंट्रल टाईम 90° रेखांश पर, माऊंटेन टाईम 105° पश्चिम रेखांश अनुसार निर्धारित होता है। अमरीका या कैनेडा में किसी नगर का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए वहां स्टैण्डर्ड मेरिडियन निर्धारक रेखांश का ज्ञान आवश्यक है। दूसरे, विदेशी समयांतर में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि अमरीका, कैनेडा, ब्रिटेन आदि कुछ देशों में ग्रीष्मकालीन समय (Day Saving Time) या Summer Time का भी विचार किया जाता है। जोकि प्रायः अप्रैल के अन्तिम रविवार से अक्तूबर के अन्तिम रविवार तक होता है। (अमरीका, कैनेडा में)। इन दिनों देश की घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती है।

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टै. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
अर्थीस (Athens)*	Greece	37 54 उ.	23 52 पू.	-24 32	30 00 पू.	+03 30
आकलैण्ड*	Newzealand	36 52 द.	174 42 पू.	-21 12	180 00 पू.	-06 30
ओटावा (E.T.)*	Canada	45 26 उ.	75 42 प.	-02 48	75 00 प.	+10 30
अबु-धाबी	U.A.E.	24 58 उ.	54 10 पू.	-22 20	60 00 पू.	+01 30
आस्टिन (Texa) (Austin)*	U.S.A.	30 16 उ.	97 45 प.	-31 00	90 00 प.	+11 30
ऐबीलेन (Abilen)*	U.S.A.	32 27 उ.	99 44 प.	-38 56	90 00 प.	+11 30
ऐबटसफोर्ड (Abotsford)*	U.S.A.	49 10 उ.	122 30 प.	-10 00	120 00 प.	+13 30
ऐमस्टर्डम* (Netherland)	U.S.A.	52 22 उ.	04 53 पू.	-40 28	15 00 पू.	+04 30
ओक्सफोर्ड (C.T.)*	U.S.A.	34 22 उ.	89 32 प.	+01 52	90 00 प.	+11 30
ऐडनबर्ग (Adenberg)*	England	55 52 उ.	3 12 प.	-12 48	00 00	+05 30
एडमंटन (Edmonton)*	Canada	53 33 उ.	113 29 प.	-33 56	105 00 प.	+12 30
ओक्सफोर्ड (Oxford)*	England	51 46 उ.	1 15 प.	-5 00	00 00	+05 30
ईस्लामाबाद*	Pakistan	33 40 उ.	73 04 पू.	-07 44	75 00 पू.	+00 30
इस्तबूल (Istanbul)*	Turkey	41 00 उ.	29 00 पू.	-04 00	30 00 पू.	+03 30
काठमण्डू	Nepal	27 42 उ.	85 19 पू.	-03 44	86 15 पू.	-00 15
कुआलालमपुर	Malaysia	03 02 उ.	101 40 पू.	-73 20	120 00 पू.	-02 30
कुवैत	Kuwait	29 30 उ.	48 02 पू.	+12 08	45 00 पू.	+02 30
कराची*	Pakistan	24 52 उ.	67 03 पू.	-31 48	75 00 पू.	+00 30
काबुल	Afghanistan	34 32 उ.	69 12 पू.	+06 48	67 30 पू.	+01 00

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टै. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
कन्धार	Afghanistan	31 33 उ.	65 30 पू.	-08 00	67 30 पू.	+01 00
कैण्डी (Kandy)	Sri Lanka	07 18 उ.	80 38 पू.	-07 28	82 30 पू.	+00 00
कोलम्बो	Sri Lanka	06 56 उ.	79 51 पू.	-10 56	82 30 पू.	00 00
कोपनहेगन*	Denmark	55 40 उ.	12 30 पू.	-10 00	15 00 पू.	+04 30
कैलीफोर्निया*	U.S.A.	35 58 उ.	118 40 पू.	+05 20	120 00 प.	+13 30
कोलम्बस (E.T.)*	U.S.A.	32 28 उ.	84 59 प.	-39 56	75 00 प.	+10 30
कोलम्बिया (C.T.)*	U.S.A.	38 57 उ.	92 20 प.	-09 20	90 00 प.	+11 30
कालगिरी (Calgary)*	Canada	51 03 उ.	114 03 प.	-36 12	105 00 प.	+12 30
ग्रीनविच*	England	51 29 उ.	00 00	00 00	00 00	+05 30
जनेवा (Geneva)*	Switzerland	46 12 उ.	06 09 पू.	-35 24	15 00 पू.	+04 30
जकार्ता	Indonesia	06 10 द.	106 49 पू.	+07 16	105 00 पू.	-01 30
जाफना	Sri Lanka	09 40 उ.	80 00 पू.	-10 00	82 30 पू.	00 00
जेरूसलाम	Israel	31 46 उ.	35 14 पू.	+20 56	30 00 पू.	+03 30
टोरंटो (Toronto)*	Canada	43 39 उ.	79 23 प.	-17 32	75 00 प.	+10 30
टोक्यो (Tokyo)	Japan	35 40 उ.	139 46 पू.	+19 04	135 00 पू.	-03 30
टैरेस (Terrace)*	Canada	54 17 उ.	128 57 प.	-35 48	120 00 प.	+13 30
डोनकास्टर (Doncaster)*	England	53 27 उ.	01 02 प.	-04 08	00 00	+05 30
डेट्रोट (Detroit Michi)*	U.S.A.	42 20 उ.	83 03 प.	-32 12	75 00 प.	+10 30
डबलिन (Dublin)*	Ireland	53 21 उ.	06 15 प.	-25 00	00 00 प.	+05 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer or Day Saving Time) प्रचलित है।

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टै. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
डर्बी (Derby)*	England	52 58 उ.	01 25 प.	-05 40	00 00 प.	+05 30
दालेस (Dales Texas)*	U.S.A.	29 56 उ.	97 34 प.	-20 16	90 00 प.	+11 30
दारे-सलाम	Tanzania	06 50 द.	39 17 प.	-22 52	45 00 पू.	+02 30
दुबई (Dubai)	U.A.E.	25 19 उ.	55 18 पू.	-18 48	60 00 पू.	+01 30
न्यूयार्क (New York)*	U.S.A.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	75 00 प.	+10 30
न्यूजर्सी (E.T.)*	U.S.A.	40 43 उ.	74 09 प.	+03 24	75 00 प.	+10 30
नौटिंघम(Nottingham)*	England	52 51 उ.	01 18 प.	-05 12	00 10	+05 30
नैरोबी	Kenya	01 18 द.	36 52 पू.	-32 32	45 00 पू.	+02 30
न्यू कैसल (New Castle)*	England	52 27 उ.	09 04 प.	-36 16	00 00	+05 30
पैरिस (Paris)*	France	48 50 उ.	02 20 पू.	-50 40	15 00 पू.	+04 30
पर्थ* (Perth)	Australia	31 57 द.	115 52 पू.	-16 32	120 00 पू.	-02 30
पेशावर*	Pakistan	34 01 उ.	71 33 पू.	-13 48	75 00 पू.	+00 30
प्लाईमाउथ(Plymouth)*	England	50 25 उ.	04 05 प.	-16 20	00 00	+05 30
प्रिंस जार्ज(Prince George)*	Canada	53 55 उ.	122 46 प.	-11 04	120 00 प.	+13 30
प्रिंस रूपर्ट(Prince Rupert)*	Canada	54 19 उ.	130 19 प.	-41 06	120 00 प.	+13 30
पोर्ट लुईस(Port Louis)*	Mauritius	20 10 द.	57 30 पू.	-10 00	60 00 पू.	+01 30
फ्लोरिडा (Florida City)	U.S.A.	25 27 उ.	80 29 प.	-21 56	75 00 प.	+10 30
बगदाद	Iraq	33 18 उ.	44 30 पू.	-2 00	45 00 पू.	+02 30
बहावलपुर*	Pakistan	30 00 उ.	73 16 पू.	-06 56	75 00 पू.	+00 30
बैंकांक	Thailand	13 43 उ.	100 31 पू.	-17 56	105 00 पू.	-01 30
बीज़िंग	China	39 55 उ.	116 25 पू.	-14 20	120 00 पू.	-02 30
बर्लिन*	Germany	52 32 उ.	13 25 पू.	-06 20	15 00 पू.	+04 30
बर्न*	Switzerland	46 55 उ.	07 30 पू.	-30 00	15 00 पू.	+04 30
बरमिंघम (Birmingham)*	England	52 30 उ.	01 50 प.	-07 20	00 00	+05 30
ब्रैडफोर्ड (Bradford)*	England	53 46 उ.	01 40 प.	-6 40	00 00	+05 30
ब्रैम्पटन (Brampton)*	Canada	43 41 उ.	79 48 प.	-17 32	75 00 प.	+10 30
बेकर्जफील्ड(Bakersfield)*	Cal. U.S.A.	35 23 उ.	119 01 प.	+03 56	120 00 पू.	+13 30
ब्रिसटल (Bristol)*	England	51 27 उ.	02 35 प.	-10 20	00 00	+05 30
बॉन (Bonn)*	Germany	50 44 उ.	07 04 पू.	-31 44	15 00 पू.	+04 30
बोस्टन (Boston)*	U.S.A.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	75 00 प.	+10 30
Frederick (Delaware Maryland)*	U.S.A.	39 38 उ.	78 31 प.	-14 04	75 00 प.	+10 30
ब्रिसबेन*	Australia	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	150 00 पू.	-04 30

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टै. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
मानचैस्टर*	England	53 28 उ.	02 12 प.	-8 48	00 00	+05 30
मिलवाकी सिटी (Milwaukee)*	U.S.A.	42 53 उ.	88 03 प.	+07 58	90 00 प.	+11 30
मौंट्रियाल (Montreal)*	Canada (E.T.)	45 31 उ.	73 33 प.	+05 48	75 00 प.	+10 30
मिसीसागा(Mississauga)*	Canada (E.T.)	43 33 उ.	79 35 प.	-18 20	75 00 प.	+10 30
मैक्सिको सिटी*	Mexico	19 26 उ.	99 10 प.	-36 40	90 00 प.	+11 30
मैलबार्न*	Australia	37 50 उ.	144 59 पू.	-20 04	150 00 पू.	-04 30
मनीला (Manila)*	Philippines	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	120 00 पू.	-02 30
मुल्तान*	Pakistan	30 11 उ.	71 29 पू.	-14 04	75 00 पू.	+00 30
रियाध	Soudi Arabia	24 39 उ.	46 41 पू.	+06 44	45 00 पू.	+02 30
रावलपिंडी*	Pakistan	33 36 उ.	73 04 पू.	-07 44	75 00 पू.	+00 30
लाहौर* (Pakistan)	Pakistan	31 15 उ.	74 18 पू.	-2 48	75 00 पू.	+00 30
लीड्स (Leeds)*	England	53 50 उ.	01 35 प.	-06 20	00 00	+05 30
लिवरपूल (Liverpool)*	England	53 24 उ.	02 58 प.	-11 52	00 00	+05 30
लंदन*	England	51 32 उ.	00 05 प.	-00 20	00 00	+05 30
लिसबन (Lisbon)*	England	38 43 उ.	09 10 प.	-36 40	00 00	+05 30
लास एंजलंस*	U.S.A.	34 03 उ.	118 17 प.	+06 52	120 00 प.	+13 30
वौलवरहैम्पटन (Wolvehampton)*	England	52 36 उ.	02 05 प.	-08 20	00 00	+05 30
वैनकोवर*	Canada (P.T.)	49 17 उ.	123 05 प.	-12 20	120 00 प.	+13 30
विक्टोरिया*	Canada (P.T.)	48 25 उ.	123 21 प.	-13 24	120 00 प.	+13 30
वाशिंगटन*	U.S.A.	38 55 उ.	77 04 प.	-08 16	75 00 प.	+10 30
वौलिंगटन (Wellington)*	New Zealand	41 16 द.	174 47 पू.	-20 52	180 00 पू.	-06 30
शिकांगो (C.T.)*	U.S.A.	41 53 उ.	87 38 प.	+09 28	90 00 प.	+11 30
सेन फ्रांसिसको(P.T.)*	U.S.A. (P.T.)	37 48 उ.	122 25 प.	-09 42	120 00 प.	+13 30
सान्ता रोसा(Santa Rosa)*	U.S.A. (P.T.)	38 30 उ.	123 05 प.	-12 20	120 00 प.	+13 30
साउथ-हैम्पटन*	England	50 54 उ.	01 24 प.	-05 36	00 00	+05 30
सिंगापुर	Singapore	01 17 उ.	103 54 पू.	-64 24	120 00 पू.	-02 30
सिडनी*	Australia	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	150 00 पू.	-04 30
हाउसटन (Texas)*	U.S.A.	29 45 उ.	95 22 प.	-21 28	90 00 प.	+11 30
हैम्लटन (Hamilton)*	Canada	43 15 उ.	79 50 प.	-19 20	75 00 प.	+10 30
Yuba City (California)*	U.S.A.	41 16 उ.	121 08 प.	-04 32	120 00 प.	+13 30
Winnipeg (Manitoba)*	Canada	49 54 उ.	97 08 प.	-28 32	90 00 प.	+11 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer or Day Saving Time) प्रचलित है।

मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदयास्त निकालें

ज्योतिष शास्त्र में सूर्योदयास्त की उपयोगिता सर्वविदित है। पृथ्वी पर सभी स्थानों पर सूर्योदयास्त एवं दिनमान एक समान नहीं होता। पृथ्वी की दैनिक गति एवं परिक्रमण गति के कारण प्रत्येक स्थान पर प्रतिदिन सूर्योदय एवं अस्त काल में अन्तर पड़ता है। सूर्योदयास्तादि तथा विभिन्न स्थानों की पारस्परिक अंशात्मक दूरी जानने के लिए अभीष्ट स्थान का अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर की आवश्यकता पड़ती है। किसी नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर की जानकारी के लिए तत्सम्बन्धी देश के मानक समय (Standard Time) के माध्यमिक मध्यान्ह (Stand. Meridian) रेखा ज्ञान होना चाहिए। भारतीय मानक समय का निर्धारण रेखांश ८२/३० पूर्व (ग्रीनविच से) एवं अक्षांश २३/११ उत्तर रेखाओं के मध्य बिन्दु पर आधारित है। इसी मध्यवर्ती रेखांश बिन्दु ८२/३० के आधार पर भारत में स्थित अन्य नगरों की अंशात्मक दूरी (Standard difference) ४ मिंट प्रति एक अंश के अनुपात से ऋण (—) अथवा जमा (+) किया जाता है। जो भारतीय नगर ८२°/३० रेखांश से पश्चिम में पड़ेंगे, वहां का देशान्तर (स्टै० अन्तर) ऋण (—) लिखा जाता है तथा जो भा० नगर ८२°/३०' के पूर्व में पड़ेंगे, वहां का स्टै० अन्तर जमा (+) में अंकित किया जाता है।

गत पृष्ठों पर लिखे गए प्रायः सभी नगर ८२°/३०' पू० **रेखांश से पश्चिम** में स्थित होने के कारण, **उनका रेखांतर** (स्टैण्डर्ड अन्तर) ऋण (—) लिखा गया है, जबकि अपने नगर का सूर्योदय-अस्त जानने के लिए नगर के आगे लिखे हुए स्टै० अन्तर को स्थानीय मध्यम सूर्योदयास्त अक्षांश सारणी में प्राप्त सूर्योदयास्त में जमा (+) करके अभीष्ट नगर का सूर्योदयास्त पता चलेगा।

यदि आपके नगर के अक्षांश (अंश कला में) मध्यम अक्षांश सारिणी में दिए सूर्योदयादि से कम या अधिक हो तो आप अभीष्ट तिथि से सूर्योदय-अस्त में अनुपातिक विधि से मिंट/सैकिंडज़ का संस्कार करके अभीष्ट तिथि का सूर्योदयास्त निकाल सकते हैं। **इस दृश्यमान सूर्योदयास्त में अपने अक्षांश भेद के अनुसार लगभग २/३ मिंट जमा करने (किरणवक्री भवन संस्कार) से शुद्ध शास्त्रीय मान (इष्टकालिक) का सूर्योदयास्त प्राप्त हो जायेगा।**

उदाहरण—मान लो, आपको २ फर. को सोनीपत का सूर्योदय ज्ञात करना है। सर्वप्रथम सोनीपत के अक्षांश, रेखांश ज्ञात करेंगे। गत पृष्ठों में देखने से हमें सोनीपत का अक्षांश २८/५८, रेखांश ७६/५९ तथा स्टैं. अन्तर —२२/०४ मिं. सै. प्राप्त हुआ है। सारिणी में अक्षांश २५ से ३० के मध्य अनुपातिक विधि से देखने पर हमें सू. उ. ६/४९ प्राप्त हुआ। इसमें स्टैं. अन्तर (—२२/०४) अर्थात् २२ मिनट जमा करने (क्योंकि स्टैं. अन्तर ऋण है अथवा यूं कहिए सोनीपत ८२°/३० रेखांश के पश्चिम में है) से सूर्योदय ७/११ प्राप्त हुए। इसमें ३ मिनट शास्त्रीय समय भी जमा करने से शुद्ध इष्टकालिक सूर्योदय प्राप्त होगा। अर्थात् ७/१४

आगे लिखे अक्षांशों में भारत के अतिरिक्त विदेशों के भी जैसे—इंग्लैण्ड, कैनेडा, अमरीका आदि नगरों के सूर्योदयास्त सुगमता से ज्ञात किए जा सकते हैं।

ध्यान रहे, **भारत के अधिकांश नगर अक्षांश १०° से ३५° अक्षांश तक ही पड़ते हैं, शेष अक्षांश विदेशी नगरों के हैं।** —शुभचिन्तक पं. पन्ना लाल गणितकर्त्ता

नीचे उत्तरी अक्षांशों के अनुसार स्वदेशीय (लोकल) मध्यम सूर्योदयास्त लिख रहे हैं इनमें अपने अभीष्ट अक्षांश का स्टै. अन्तर + या — करने से स्टै. टा. में सू. उ. व सू. अ. निकल आएगा।

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
१ जन	६ १७	१७ ४९	६ ३५	१७ ३१	६ ४५	१७ २१	६ ५६	१७ १०	७ ०८	१६ ५८	७ २२	१६ ४४	७ ३९	१६ २८	७ ५९	१६ ०८	८ ०८	१५ ५८	८ १९	१५ ४७
३ ,,	६ १८	१७ ५१	६ ३६	१७ ३३	६ ४६	१७ २४	६ ५६	१७ १३	७ ०८	१७ ००	७ २२	१६ ४६	७ ३९	१६ ३१	७ ५९	१६ ११	८ ०८	१६ ०१	८ १९	१५ ५०
५ ,,	६ १८	१७ ५२	६ ३६	१७ ३४	६ ४६	१७ २५	६ ५७	१७ १४	७ ०९	१७ ०२	७ २२	१६ ४९	७ ३८	१६ ३३	७ ५९	१६ १३	८ ०८	१६ ०४	८ १९	१५ ५३
७ ,,	६ १९	१७ ५३	६ ३७	१७ ३५	६ ४७	१७ २७	६ ५७	१७ १६	७ ०९	१७ ०४	७ २२	१६ ५१	७ ३८	१६ ३५	७ ५८	१६ १६	८ ०७	१६ ०७	८ १८	१५ ५६
९ ,,	६ २०	१७ ५४	६ ३७	१७ ३६	६ ४७	१७ २८	६ ५७	१७ १७	७ ०९	१७ ०५	७ २२	१६ ५३	७ ३८	१६ ३७	७ ५८	१६ १८	८ ०६	१६ ०९	८ १७	१५ ५९
११ ,,	६ २०	१७ ५५	६ ३८	१७ ३८	६ ४७	१७ २९	६ ५७	१७ १८	७ ०९	१७ ०७	७ २२	१६ ५५	७ ३७	१६ ४०	७ ५७	१६ २१	८ ०५	१६ ११	८ १५	१६ ०२
१३ ,,	६ २१	१७ ५६	६ ३८	१७ ३९	६ ४७	१७ ३०	६ ५७	१७ २०	७ ०८	१७ ०९	७ २१	१६ ५७	७ ३७	१६ ४२	७ ५६	१६ २३	८ ०४	१६ १४	८ १४	१६ ०४
१५ ,,	६ २२	१७ ५८	६ ३८	१७ ४०	६ ४७	१७ ३१	६ ५७	१७ २२	७ ०८	१७ ११	७ २१	१६ ५९	७ ३६	१६ ४४	७ ५५	१६ २६	८ ०३	१६ १७	८ १२	१६ ०८
१७ ,,	६ २२	१७ ५९	६ ३८	१७ ४१	६ ४७	१७ ३३	६ ५७	१७ २४	७ ०८	१७ १३	७ २०	१७ ०१	७ ३५	१६ ४७	७ ५४	१६ २९	८ ०१	१६ २१	८ १०	१६ १२
१९ ,,	६ २३	१८ ००	६ ३८	१७ ४२	६ ४७	१७ ३४	६ ५६	१७ २५	७ ०७	१७ १५	७ १९	१७ ०३	७ ३३	१६ ५०	७ ५२	१६ ३२	७ ५९	१६ २४	८ ०८	१६ १५
२१ ,,	६ २३	१८ ०१	६ ३८	१७ ४३	६ ४७	१७ ३५	६ ५६	१७ २७	७ ०६	१७ १७	७ १८	१७ ०६	७ ३२	१६ ५२	७ ५०	१६ ३५	७ ५७	१६ २७	८ ०६	१६ १९
२३ ,,	६ २३	१८ ०२	६ ३८	१७ ४४	६ ४६	१७ ३८	६ ५५	१७ २९	७ ०५	१७ १९	७ १७	१७ ०८	७ ३०	१६ ५५	७ ४८	१६ ३९	७ ५४	१६ ३०	८ ०४	१६ २३
२५ ,,	६ २३	१८ ०३	६ ३७	१७ ४६	६ ४६	१७ ४०	६ ५५	१७ ३१	७ ०४	१७ २१	७ १६	१७ १०	७ २९	१६ ५८	७ ४५	१६ ४२	७ ५२	१६ ३४	८ ००	१६ २७
२७ ,,	६ २३	१८ ०४	६ ३७	१७ ४८	६ ४५	१७ ४२	६ ५४	१७ ३३	७ ०३	१७ २३	७ १४	१७ १३	७ २७	१६ ०१	७ ४२	१६ ४५	७ ४९	१६ ३८	७ ५७	१६ ३१
२९ ,,	६ २३	१८ ०५	६ ३७	१७ ४९	६ ४५	१७ ४३	६ ५३	१७ ३४	७ ०२	१७ २५	७ १३	१७ १५	७ २५	१६ ०४	७ ४०	१६ ४८	७ ४७	१६ ४२	७ ५४	१६ ३५
३१ ,,	६ २३	१८ ०५	६ ३७	१७ ५१	६ ४४	१७ ४४	६ ५२	१७ ३६	७ ०१	१७ २७	७ ११	१७ १८	७ २३	१६ ०७	७ ३७	१६ ५२	७ ४४	१६ ४६	७ ५१	१६ ३९

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
फरवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
२ फर	६ २३	१८ ०६	६ ३६	१७ ५२	६ ४३	१७ ४५	६ ५०	१७ ३७	६ ५९	१७ २९	७ ०९	१७ २०	७ २१	१७ ०९	७ ३४	१६ ५६	७ ४१	१६ ५०	७ ४८	१६ ४३
४ ,,	६ २२	१८ ०६	६ ३५	१७ ५३	६ ४१	१७ ४७	६ ४९	१७ ३९	६ ५८	१७ ३१	७ ०७	१७ २३	७ १८	१७ १२	७ ३२	१७ ००	७ ३८	१६ ५४	७ ४४	१६ ४७
६ ,,	६ २२	१८ ०७	६ ३४	१७ ५४	६ ४०	१७ ४९	६ ४८	१७ ४१	६ ५६	१७ ३३	७ ०५	१७ २५	७ १६	१७ १५	७ २८	१७ ०३	७ ३४	१६ ५७	७ ४१	१६ ५१
८ ,,	६ २२	१८ ०७	६ ३४	१७ ५५	६ ३९	१७ ५०	६ ४७	१७ ४२	६ ५४	१७ ३५	७ ०३	१७ २७	७ १३	१७ १७	७ २५	१७ ०७	७ ३१	१७ ०१	७ ३७	१६ ५५
१० ,,	६ २१	१८ ०८	६ ३३	१७ ५६	६ ३८	१७ ५०	६ ४५	१७ ४४	६ ५२	१७ ३७	७ ०१	१७ ३०	७ १०	१७ २०	७ २२	१७ १०	७ २७	१७ ०५	७ ३३	१६ ५९
१२ ,,	६ २१	१८ ०८	६ ३२	१७ ५७	६ ३६	१७ ५२	६ ४४	१७ ४६	६ ५०	१७ ३९	६ ५८	१७ ३२	७ ०८	१७ २३	७ १८	१७ १३	७ २४	१७ ०८	७ २९	१७ ०३
१४ ,,	६ २०	१८ ०८	६ ३१	१७ ५८	६ ३६	१७ ५३	६ ४२	१७ ४७	६ ४८	१७ ४१	६ ५६	१७ ३४	७ ०५	१७ २६	७ १५	१७ १६	७ २०	१७ १२	७ २५	१७ ०७
१६ ,,	६ २०	१८ ०९	६ ३०	१७ ५९	६ ३४	१७ ५५	६ ४०	१७ ४९	६ ४६	१७ ४३	६ ५३	१७ ३६	७ ०२	१७ २९	७ ११	१७ २०	७ १६	१७ १५	७ २१	१७ ११
१८ ,,	६ १९	१८ ०९	६ २८	१८ ००	६ ३३	१७ ५६	६ ३८	१७ ५०	६ ४३	१७ ४५	६ ५१	१७ ३९	६ ५८	१७ ३२	७ ०८	१७ २३	७ १२	१७ १९	७ १७	१७ १५
२० ,,	६ १९	१८ ०९	६ २७	१८ ०१	६ ३१	१७ ५७	६ ३६	१७ ५२	६ ४१	१७ ४७	६ ४८	१७ ४२	६ ५५	१७ ३५	७ ०४	१७ २६	७ ०८	१७ २३	७ १२	१७ १९
२२ ,,	६ १८	१८ १०	६ २६	१८ ०२	६ ३०	१७ ५८	६ ३५	१७ ५३	६ ३९	१७ ४९	६ ४५	१७ ४४	६ ५२	१७ ३८	७ ००	१७ २९	७ ०४	१७ २७	७ ०८	१७ २३
२४ ,,	६ १७	१८ १०	६ २४	१८ ०३	६ २७	१७ ५९	६ ३३	१७ ५५	६ ३६	१७ ५१	६ ४३	१७ ४६	६ ४९	१७ ४१	६ ५६	१७ ३३	७ ००	१७ ३०	७ ०३	१७ २७
२६ ,,	६ १६	१८ १०	६ २३	१८ ०३	६ २६	१८ ००	६ ३०	१७ ५६	६ ३४	१७ ५३	६ ४०	१७ ४८	६ ४६	१७ ४३	६ ५२	१७ ३६	६ ५५	१७ ३३	६ ५९	१७ ३१
२८ ,,	६ १५	१८ १०	६ २२	१८ ०४	६ २४	१८ ०१	६ २८	१७ ५८	६ ३२	१७ ५४	६ ३८	१७ ५०	६ ४२	१७ ४५	६ ४८	१७ ३९	६ ५१	१७ ३६	६ ५४	१७ ३४
१ मार्च	६ १५	१८ १०	६ २०	१८ ०५	६ २३	१८ ०२	६ २६	१७ ५९	६ ३०	१७ ५५	६ ३४	१७ ५२	६ ३९	१७ ४७	६ ४४	१७ ४२	६ ४७	१७ ३९	६ ५०	१७ ३८
३ ,,	६ १४	१८ ११	६ १९	१८ ०५	६ २२	१८ ०३	६ २४	१८ ००	६ २८	१७ ५७	६ ३१	१७ ५४	६ ३५	१७ ४९	६ ४०	१७ ४५	६ ४२	१७ ४३	६ ४५	१७ ४१
५ ,,	६ १३	१८ ११	६ १७	१८ ०६	६ २०	१८ ०४	६ २२	१८ ०२	६ २४	१७ ५९	६ २८	१७ ५६	६ ३२	१७ ५२	६ ३६	१७ ४८	६ ३८	१७ ४७	६ ४०	१७ ४४
७ ,,	६ १२	१८ ११	६ १५	१८ ०७	६ १८	१८ ०५	६ २०	१८ ०३	६ २२	१८ ०१	६ २५	१७ ५८	६ २८	१७ ५५	६ ३२	१७ ५१	६ ३३	१७ ५०	६ ३५	१७ ४८
९ ,,	६ ११	१८ ११	६ १४	१८ ०८	६ १६	१८ ०६	६ १८	१८ ०४	६ २०	१८ ०२	६ २२	१८ ००	६ २६	१७ ५८	६ २८	१७ ५५	६ २९	१७ ५४	६ ३०	१७ ५२
११ ,,	६ १०	१८ ११	६ १२	१८ ०८	६ १४	१८ ०७	६ १५	१८ ०५	६ १७	१८ ०४	६ १९	१८ ०३	६ २१	१८ ००	६ २३	१७ ५८	६ २४	१७ ५७	६ २६	१७ ५६
१३ ,,	६ ०८	१८ ११	६ ११	१८ ०९	६ १२	१८ ०८	६ १३	१८ ०७	६ १४	१८ ०६	६ १६	१८ ०५	६ १७	१८ ०३	६ १९	१८ ०१	६ २०	१८ ०१	६ २१	१८ ००
१५ ,,	६ ०७	१८ ११	६ ०९	१८ १०	६ १०	१८ ०९	६ १०	१८ ०८	६ ११	१८ ०७	६ १२	१८ ०८	६ १३	१८ ०७	६ १५	१८ ०५	६ १५	१८ ०४	६ १६	१८ ०३
१७ ,,	६ ०६	१८ ११	६ ०८	१८ १०	६ ०८	१८ १०	६ ०८	१८ ०९	६ ०९	१८ ०९	६ ०९	१८ ०९	६ १०	१८ ०८	६ १०	१८ ०८	६ ११	१८ ०८	६ १२	१८ ०७
१९ ,,	६ ०५	१८ ११	६ ०५	१८ ११	६ ०६	१८ १०	६ ०६	१८ १०	६ ०६	१८ १०	६ ०६	१८ ११	६ ०६	१८ १०	६ ०६	१८ ११	६ ०६	१८ ११	६ ०६	१८ ११
२१ ,,	६ ०४	१८ ११	६ ०४	१८ ११	६ ०४	१८ ११	६ ०३	१८ १२	६ ०२	१८ १२	६ ०२	१८ १३	६ ०२	१८ १३	६ ०२	१८ १४	६ ०१	१८ १५	६ ०१	१८ १५
२३ ,,	६ ०३	१८ ११	६ ०३	१८ १२	६ ०२	१८ १२	६ ०१	१८ १३	५ ५९	१८ १४	५ ५९	१८ १५	५ ५८	१८ १६	५ ५७	१८ १७	५ ५७	१८ १८	५ ५६	१८ १९
२५ ,,	६ ०२	१८ ११	६ ०२	१८ १२	६ ००	१८ १३	५ ५८	१८ १४	५ ५६	१८ १५	५ ५६	१८ १७	५ ५५	१८ १९	५ ५३	१८ २१	५ ५२	१८ २१	५ ५१	१८ २२
२७ ,,	६ ००	१८ ११	६ ००	१८ १२	५ ५७	१८ १४	५ ५६	१८ १५	५ ५३	१८ १६	५ ५३	१८ १९	५ ५१	१८ २१	५ ४८	१८ २४	५ ४७	१८ २४	५ ४६	१८ २६
२९ ,,	५ ५९	१८ ११	५ ५७	१८ १३	५ ५५	१८ १५	५ ५३	१८ १७	५ ५०	१८ १८	५ ५०	१८ २१	५ ४७	१८ २४	५ ४४	१८ २७	५ ४३	१८ २८	५ ४१	१८ ३०
३१ ,,	५ ५८	१८ १०	५ ५५	१८ १३	५ ५३	१८ १६	५ ५१	१८ १८	५ ४६	१८ २०	५ ४६	१८ २३	५ ४३	१८ २६	५ ४२	१८ ३०	५ ३९	१८ ३१	५ ३४	१८ ३३
२ अप्रै	५ ५७	१८ १०	५ ५३	१८ १४	५ ५१	१८ १७	५ ४९	१८ १९	५ ४५	१८ २२	५ ४३	१८ २५	५ ४०	१८ २९	५ ४०	१८ ३३	५ ३४	१८ ३१	५ ३१	१८ ३७
४ ,,	५ ५६	१९ १०	५ ५१	१८ १४	५ ४९	१८ १७	५ ४६	१८ २०	५ ४३	१८ २३	५ ४०	१८ २७	५ ३६	१८ ३१	५ ३६	१८ ३६	५ २९	१८ ३८	५ २६	१८ ४१
६ ,,	५ ५५	१८ १०	५ ५०	१८ १५	५ ४७	१८ १८	५ ४४	१८ २१	५ ४१	१८ २५	५ ३७	१८ २९	५ ३२	१८ ३४	५ ३२	१८ ३९	५ २६	१८ ४२	५ २२	१८ ४५
८ ,,	५ ५४	१८ १०	५ ४८	१८ १६	५ ४५	१८ १९	५ ४२	१८ २२	५ ३८	१८ २६	५ ३४	१८ ३१	५ २९	१८ ३६	५ २९	१८ ४२	५ १९	१८ ४५	५ १७	१८ ४८
१० ,,	५ ५२	१८ १०	५ ४६	१८ १७	५ ४३	१८ २०	५ ४०	१८ २४	५ ३५	१८ २८	५ ३१	१८ ३३	५ २५	१८ ३९	५ २५	१८ ४६	५ १४	१८ ४९	५ १२	१८ ५२
१२ ,,	५ ५१	१८ १०	५ ४५	१८ १७	५ ४१	१८ २१	५ ३८	१८ २५	५ ३३	१८ २९	५ २८	१८ ३५	५ २१	१८ ४१	५ २१	१८ ४९	५ ११	१८ ५२	५ ०७	१८ ५६
१४ ,,	५ ५०	१८ १०	५ ४३	१८ १८	५ ३९	१८ २२	५ ३५	१८ २६	५ ३०	१८ ३१	५ २४	१८ ३७	५ १८	१८ ४४	५ १८	१८ ५२	५ ०६	१८ ५६	५ ०२	१९ ००
१६ ,,	५ ४९	१८ १०	५ ४१	१८ १८	५ ३७	१८ २३	५ ३३	१८ २७	५ २७	१८ ३२	५ २१	१८ ३९	५ १४	१८ ४६	५ १४	१८ ५५	५ ०२	१८ ५९	४ ५८	१९ ०४
१८ ,,	५ ४८	१८ १०	५ ४०	१८ १९	५ ३६	१८ २४	५ ३०	१८ २९	५ २५	१८ ३४	५ १८	१८ ४१	५ १२	१८ ४९	५ १२	१८ ५८	४ ५८	१९ ०२	४ ५३	१९ ०७
२० ,,	५ ४७	१८ ११	५ ३९	१८ १९	५ ३४	१८ २४	५ २८	१८ ३०	५ २२	१८ ३६	५ १६	१८ ४३	५ ०८	१८ ५१	५ ०८	१९ ०१	४ ५३	१९ ०४	४ ४८	१९ ११
२२ ,,	५ ४६	१८ ११	५ ३७	१८ २०	५ ३२	१८ २५	५ २६	१८ ३१	५ २०	१८ ३८	५ १३	१८ ४५	५ ०४	१८ ५४	५ ०४	१९ ०४	४ ४९	१९ ०९	४ ४४	१९ १५
२४ ,,	५ ४५	१८ ११	५ ३६	१८ २०	५ ३१	१८ २६	५ २४	१८ ३२	५ १७	१८ ३९	५ १०	१८ ४७	५ ०१	१८ ५६	५ ०१	१९ ०७	४ ४५	१९ १३	४ ३९	१९ १८

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
अप्रैल	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
२६ अप्रै	५ ४५	१८ ११	५ ३४	१८ २१	५ २९	१८ २७	५ २२	१८ ३४	५ १५	१८ ४१	५ ०८	१८ ४९	४ ५८	१८ ५९	४ ५८	१९ ११	४ ४१	१९ १६	४ ३५	१९ २२
२८ ,,	५ ४४	१८ ११	५ ३३	१८ २२	५ २७	१८ २८	५ २०	१८ ३५	५ १३	१८ ४३	५ ०४	१८ ५१	४ ५४	१९ ०१	४ ५४	१९ १४	४ ३७	१९ १९	४ ३१	१९ २५
३० ,,	५ ४३	१८ ११	५ ३२	१८ २३	५ २६	१८ २९	५ १८	१८ ३६	५ ११	१८ ४४	५ ०२	१८ ५३	४ ५१	१९ ०४	४ ५१	१९ १७	४ ३३	१९ २३	४ २६	१९ २९
२ मई	५ ४२	१८ १२	५ ३०	१८ २३	५ २४	१८ ३०	५ १६	१८ ३८	५ ०९	१८ ४६	४ ५९	१८ ५५	४ ४८	१९ ०६	४ ३५	१९ २०	४ २९	१९ २६	४ २२	१९ ३३
४ ,,	५ ४२	१८ १२	५ २९	१८ २४	५ २३	१८ ३१	५ १५	१८ ३९	५ ०७	१८ ४७	४ ५७	१८ ५७	४ ४५	१९ ०९	४ ३२	१९ २३	४ २५	१९ २९	४ १८	१९ ३७
६ ,,	५ ४१	१८ १२	५ २८	१८ २५	५ २१	१८ ३२	५ १३	१८ ४०	५ ०५	१८ ४९	४ ५४	१८ ५९	४ ४३	१९ ११	४ २८	१९ २६	४ २२	१९ ३२	४ १४	१९ ४०
८ ,,	५ ४०	१८ १२	५ २७	१८ २६	५ २०	१८ ३३	५ १२	१८ ४१	५ ०३	१८ ५१	४ ५२	१९ ०१	४ ४०	१९ १४	४ २५	१९ २९	४ १८	१९ ३६	४ १०	१९ ४४
१० ,,	५ ४०	१८ १३	५ २६	१८ २६	५ १९	१८ ३४	५ ११	१८ ४२	५ ०१	१८ ५३	४ ५०	१९ ०३	४ ३७	१९ १६	४ २०	१९ ३२	४ १५	१९ ३९	४ ०६	१९ ४७
१२ ,,	५ ४०	१८ १३	५ २५	१८ २७	५ १८	१८ ३५	५ ०९	१८ ४४	४ ५९	१८ ५४	४ ४८	१९ ०५	४ ३५	१९ १९	४ १७	१९ ३५	४ ११	१९ ४२	४ ०३	१९ ५१
१४ ,,	५ ३९	१८ १४	५ २४	१८ २८	५ १७	१८ ३६	५ ०७	१८ ४६	४ ५७	१८ ५६	४ ४६	१९ ०७	४ ३२	१९ २१	४ १४	१९ ३७	४ ०८	१९ ४५	३ ५९	१९ ५४
१६ ,,	५ ३९	१८ १४	५ २४	१८ २९	५ १६	१८ ३७	५ ०६	१८ ४७	४ ५६	१८ ५७	४ ४४	१९ ०९	४ ३०	१९ २४	४ १२	१९ ४०	४ ०५	१९ ४९	३ ५६	१९ ५८
१८ ,,	५ ३८	१८ १४	५ २३	१८ ३०	५ १५	१८ ३८	५ ०५	१८ ४८	४ ५४	१८ ५९	४ ४२	१९ ११	४ २८	१९ २६	४ ०९	१९ ४३	४ ०२	१९ ५२	३ ५३	२० ०१
२० ,,	५ ३८	१८ १५	५ २२	१८ ३१	५ १४	१८ ३९	५ ०४	१८ ४९	४ ५३	१९ ००	४ ४१	१९ १३	४ २६	१९ २८	४ ०७	१९ ४६	३ ५९	१९ ५५	३ ५०	२० ०४
२२ ,,	५ ३८	१८ १५	५ २२	१८ ३१	५ १३	१८ ४०	५ ०३	१८ ५०	४ ५२	१९ ०२	४ ३९	१९ १५	४ २४	१९ ३०	४ ०४	१९ ४८	३ ५७	१९ ५८	३ ४७	२० ०७
२४ ,,	५ ३८	१८ १६	५ २१	१८ ३२	५ १२	१८ ४१	५ ०२	१८ ५१	४ ५१	१९ ०३	४ ३८	१९ १६	४ २२	१९ ३२	४ ०२	१९ ५१	३ ५४	२० ००	३ ४४	२० १०
२६ ,,	५ ३८	१८ १६	५ २१	१८ ३३	५ ११	१८ ४२	५ ०१	१८ ५२	४ ५०	१९ ०५	४ ३६	१९ १८	४ २१	१९ ३४	४ ०१	१९ ५३	३ ५२	२० ०३	३ ४२	२० १३
२८ ,,	५ ३८	१८ १७	५ २०	१८ ३४	५ ११	१८ ४३	५ ००	१८ ५४	४ ४९	१९ ०६	४ ३५	१९ १९	४ १९	१९ ३६	३ ५९	१९ ५६	३ ५०	२० ०५	३ ३९	२० १६
३० ,,	५ ३८	१८ १७	५ २०	१८ ३४	५ ११	१८ ४४	५ ००	१८ ५५	४ ४८	१९ ०७	४ ३४	१९ २०	४ १८	१९ ३८	३ ५८	१९ ५८	३ ४८	२० ०८	३ ३७	२० १८
१ जून	५ ३८	१८ १८	५ २०	१८ ३५	५ १०	१८ ४५	४ ५९	१८ ५६	४ ४७	१९ ०८	४ ३३	१९ २२	४ १७	१९ ३९	३ ५६	२० ००	३ ४६	२० १०	३ ३५	२० २१
३ ,,	५ ३८	१८ १८	५ २०	१८ ३६	५ १०	१८ ४६	४ ५९	१८ ५७	४ ४७	१९ ०९	४ ३२	१९ २४	४ १६	१९ ४१	३ ५५	२० ०२	३ ४५	२० १२	३ ३३	२० २३
५ ,,	५ ३८	१८ १९	५ २०	१८ ३७	५ १०	१८ ४७	४ ५८	१८ ५८	४ ४६	१९ १०	४ ३२	१९ २५	४ १५	१९ ४२	३ ५३	२० ०४	३ ४३	२० १४	३ ३२	२० २६
७ ,,	५ ३८	१८ १९	५ २०	१८ ३७	५ १०	१८ ४८	४ ५८	१८ ५९	४ ४६	१९ ११	४ ३१	१९ २७	४ १४	१९ ४४	३ ५२	२० ०६	३ ४२	२० १६	३ ३०	२० २८
९ ,,	५ ३९	१८ २०	५ २०	१८ ३८	५ १०	१८ ४९	४ ५८	१९ ००	४ ४६	१९ १२	४ ३१	१९ २८	४ १४	१९ ४५	३ ५२	२० ०७	३ ४१	२० १८	३ २९	२० ३०
११ ,,	५ ३९	१८ २०	५ २०	१८ ३९	५ १०	१८ ५०	४ ५८	१९ ०१	४ ४५	१९ १३	४ ३०	१९ २९	४ १३	१९ ४६	३ ५१	२० ०८	३ ४१	२० २०	३ २८	२० ३१
१३ ,,	५ ३९	१८ २१	५ २०	१८ ४०	५ १०	१८ ५१	४ ५८	१९ ०१	४ ४५	१९ १४	४ ३०	१९ ३०	४ १२	१९ ४८	३ ५०	२० १०	३ ४०	२० २२	३ २७	२० ३४
१५ ,,	५ ३९	१८ २१	५ २०	१८ ४०	५ १०	१८ ५१	४ ५९	१९ ०२	४ ४६	१९ १५	४ ३०	१९ ३१	४ १२	१९ ४९	३ ५०	२० ११	३ ३९	२० २२	३ २७	२० ३५
१७ ,,	५ ३९	१८ २२	५ २१	१८ ४१	५ १०	१८ ५१	४ ५९	१९ ०३	४ ४६	१९ १६	४ ३१	१९ ३१	४ १३	१९ ४९	३ ५०	२० १२	३ ३९	२० २३	३ २७	२० ३६
१९ ,,	५ ४०	१८ २२	५ २१	१८ ४१	५ ११	१८ ५२	४ ५९	१९ ०३	४ ४६	१९ १६	४ ३१	१९ ३२	४ १३	१९ ५०	३ ५०	२० १२	३ ३९	२० २३	३ २७	२० ३६
२१ ,,	५ ४०	१८ २३	५ २१	१८ ४२	५ ११	१८ ५२	५ ००	१९ ०४	४ ४७	१९ १७	४ ३१	१९ ३२	४ १३	१९ ५०	३ ५१	२० १३	३ ४०	२० २३	३ २७	२० ३६
२३ ,,	५ ४१	१८ २३	५ २२	१८ ४२	५ १२	१८ ५३	५ ००	१९ ०४	४ ४७	१९ १७	४ ३३	१९ ३३	४ १४	१९ ५१	३ ५२	२० १३	३ ४१	२० २४	३ २८	२० ३६
२५ ,,	५ ४१	१८ २४	५ २३	१८ ४३	५ १२	१८ ५३	५ ०१	१९ ०५	४ ४८	१९ १७	४ ३३	१९ ३३	४ १५	१९ ५१	३ ५३	२० १३	३ ४१	२० २४	३ २९	२० ३६
२७ ,,	५ ४२	१८ २४	५ २३	१८ ४३	५ १३	१८ ५३	५ ०१	१९ ०५	४ ४८	१९ १८	४ ३४	१९ ३३	४ १६	१९ ५१	३ ५४	२० १३	३ ४३	२० २४	३ २९	२० ३६
२९ ,,	५ ४२	१८ २४	५ २४	१८ ४३	५ १३	१८ ५३	५ ०२	१९ ०५	४ ४९	१९ १८	४ ३४	१९ ३३	४ १७	१९ ५१	३ ५४	२० १३	३ ४३	२० २४	३ ३२	२० ३६
१ जुला	५ ४२	१८ २४	५ २४	१८ ४३	५ १४	१८ ५३	५ ०२	१९ ०५	४ ४९	१९ १८	४ ३४	१९ ३२	४ १७	१९ ५०	३ ५४	२० १२	३ ४४	२० २३	३ ३२	२० ३५
३ ,,	५ ४३	१८ २५	५ २४	१८ ४३	५ १५	१८ ५४	५ ०३	१९ ०५	४ ५०	१९ १७	४ ३५	१९ ३२	४ १८	१९ ५०	३ ५६	२० १२	३ ४५	२० २२	३ ३३	२० ३४
५ ,,	५ ४४	१८ २५	५ २५	१८ ४३	५ १५	१८ ५३	५ ०४	१९ ०५	४ ५१	१९ १७	४ ३७	१९ ३१	४ १९	१९ ४९	३ ५८	२० ११	३ ४७	२० २१	३ ३५	२० ३३
७ ,,	५ ४४	१८ २५	५ २६	१८ ४३	५ १६	१८ ५३	५ ०५	१९ ०४	४ ५२	१९ १७	४ ३८	१९ ३१	४ २०	१९ ४९	४ ००	२० १०	३ ४९	२० २०	३ ३७	२० ३२
९ ,,	५ ४५	१८ २५	५ २७	१८ ४३	५ १७	१८ ५३	५ ०६	१९ ०४	४ ५३	१९ १६	४ ३९	१९ ३१	४ २२	१९ ४८	४ ०२	२० ०९	३ ५१	२० १८	३ ४०	२० ३०
११ ,,	५ ४५	१८ २५	५ २७	१८ ४३	५ १८	१८ ५३	५ ०७	१९ ०४	४ ५४	१९ १६	४ ४०	१९ ३०	४ २४	१९ ४७	४ ०४	२० ०७	३ ५३	२० १७	३ ४२	२० २८
१३ ,,	५ ४६	१८ २५	५ २८	१८ ४३	५ १९	१८ ५३	५ ०८	१९ ०३	४ ५६	१९ १५	४ ४२	१९ २९	४ २५	१९ ४५	४ ०६	२० ०५	३ ५५	२० १६	३ ४४	२० २६
१५ ,,	५ ४६	१८ २५	५ २९	१८ ४३	५ २०	१८ ५२	५ ०९	१९ ०२	४ ५७	१९ १४	४ ४३	१९ २८	४ २७	१९ ४४	४ ०८	२० ०४	३ ५७	२० १४	३ ४७	२० २४
१७ ,,	५ ४७	१८ २५	५ २९	१८ ४२	५ २१	१८ ५२	५ १०	१९ ०१	४ ५८	१९ १३	४ ४५	१९ २७	४ २९	१९ ४२	४ १०	२० ०२	४ ००	२० १२	३ ५०	२० २२

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख जुलाई	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.
१९ जुल	५ ४७	१८ २५	५ ३०	१८ ४२	५ २२	१८ ५१	५ ११	१९ ०१	४ ५९	१९ १२	४ ४६	१९ २५	४ ३१	१९ ४१	४ १२	२० ००	४ ०३	२० ०९	३ ५२	२० १९
२१ ,,	५ ४७	१८ २५	५ ३१	१८ ४१	५ २२	१८ ५०	५ १२	१९ ००	५ ०१	१९ ११	४ ४८	१९ २४	४ ३३	१९ ३९	४ १४	१९ ५७	४ ०६	२० ०७	३ ५५	२० १७
२३ ,,	५ ४७	१८ २५	५ ३२	१८ ४१	५ २३	१८ ४९	५ १३	१८ ५९	५ ०२	१९ १०	४ ५०	१९ २२	४ ३५	१९ ३७	४ १६	१९ ५५	४ ०८	२० ०४	३ ५८	२० १४
२५ ,,	५ ४८	१८ २४	५ ३२	१८ ४०	५ २४	१८ ४८	५ १४	१८ ५८	५ ०४	१९ ०८	४ ५१	१९ २१	४ ३७	१९ ३५	४ १९	१९ ५३	४ ११	२० ०१	४ ०१	२० ११
२७ ,,	५ ४८	१८ २४	५ ३३	१८ ३९	५ २५	१८ ४७	५ १५	१८ ५७	५ ०५	१९ ०७	४ ५३	१९ १९	४ ३९	१९ ३३	४ २२	१९ ५०	४ १४	१९ ५८	४ ०४	२० ०७
२९ ,,	५ ४९	१८ २३	५ ३४	१८ ३८	५ २६	१८ ४६	५ १७	१८ ५५	५ ०७	१९ ०५	४ ५५	१९ १७	४ ४१	१९ ३१	४ २४	१९ ४७	४ १७	१९ ५५	४ ०७	२० ०४
३१ ,,	५ ४९	१८ २३	५ ३५	१८ ३७	५ २७	१८ ४५	५ १७	१८ ५४	५ ०८	१९ ०४	४ ५७	१९ १५	४ ४४	१९ २८	४ २७	१९ ४४	४ २०	१९ ५२	४ ११	२० ०१
२ अग	५ ५०	१८ २२	५ ३५	१८ ३६	५ २८	१८ ४४	५ १९	१८ ५२	५ ०९	१९ ०२	४ ५९	१९ १३	४ ४६	१९ २५	४ ३०	१९ ४१	४ २३	१९ ४८	४ १४	१९ ५७
४ ,,	५ ५०	१८ २२	५ ३६	१८ ३५	५ २९	१८ ४३	५ २०	१८ ५१	५ ११	१९ ००	५ ००	१९ ११	४ ४८	१९ २३	४ ३३	१९ ३८	४ २६	१९ ४५	४ १८	१९ ५३
६ ,,	५ ५०	१८ २१	५ ३६	१८ ३४	५ ३०	१८ ४२	५ २२	१८ ५०	५ १२	१८ ५८	५ ०२	१९ ०८	४ ५०	१९ २०	४ ३६	१९ ३४	४ २८	१९ ४२	४ २१	१९ ४९
८ ,,	५ ५०	१८ २१	५ ३७	१८ ३३	५ ३१	१८ ४०	५ २३	१८ ४८	५ १४	१८ ५६	५ ०४	१९ ०६	४ ५३	१९ १८	४ ३९	१९ ३१	४ ३२	१९ ३८	४ २५	१९ ४५
१० ,,	५ ५०	१८ २०	५ ३८	१८ ३२	५ ३२	१८ ३९	५ २५	१८ ४६	५ १६	१८ ५४	५ ०६	१९ ०३	४ ५५	१९ १५	४ ४२	१९ २८	४ ३५	१९ ३४	४ २८	१९ ४५
१२ ,,	५ ५१	१८ १९	५ ३९	१८ ३१	५ ३३	१८ ३७	५ २६	१८ ४४	५ १७	१८ ५२	५ ०८	१९ ०१	४ ५७	१९ १२	४ ४५	१९ २४	४ ३८	१९ ३०	४ ३२	१९ ३७
१४ ,,	५ ५१	१८ १८	५ ३९	१८ ३०	५ ३३	१८ ३५	५ २७	१८ ४२	५ १९	१८ ४९	५ १०	१८ ५८	५ ००	१९ ०८	४ ४७	१९ २१	४ ४२	१९ २६	४ ३५	१९ ३२
१६ ,,	५ ५१	१८ १७	५ ४०	१८ २८	५ ३४	१८ ३४	५ २८	१८ ४०	५ २०	१८ ४७	५ १२	१८ ५६	५ ०२	१९ ०५	४ ५१	१९ १७	४ ४५	१९ २२	४ ३९	१९ २८
१८ ,,	५ ५१	१८ १६	५ ४१	१८ २६	५ ३५	१८ ३२	५ २९	१८ ३८	५ २२	१८ ४५	५ १४	१८ २३	५ ०४	१९ ०२	४ ५३	१९ १३	४ ४८	१९ १८	४ ४२	१९ २३
२० ,,	५ ५१	१८ १५	५ ४१	१८ २५	५ ३६	१८ ३०	५ ३०	१८ ३६	५ २३	१८ ४३	५ १६	१८ ५०	५ ०७	१८ ५९	४ ५७	१९ ०९	४ ५१	१९ १४	४ ४६	१९ १९
२२ ,,	५ ५१	१८ १४	५ ४२	१८ २३	५ ३७	१८ २८	५ ३२	१८ ३४	५ २५	१८ ४०	५ १८	१८ ४७	५ ०९	१८ ५६	४ ५९	१९ ०५	४ ५५	१० १०	४ ४९	१९ १५
२४ ,,	५ ५१	१८ १३	४ ४२	१८ २२	५ ३८	१८ २७	५ ३३	१८ ३२	५ २६	१८ ३७	५ १९	१८ ४४	५ १२	१८ ५२	५ ०२	१९ ०१	४ ५८	१९ ०६	४ ५३	१९ १०
२६ ,,	५ ५१	१८ १२	५ ४३	१८ २०	५ ३९	१८ २५	५ ३४	१८ २९	५ २८	१८ ३४	५ २१	१८ ४१	५ १४	१८ ४९	५ ०५	१८ ५७	५ ०१	१९ ०२	४ ५७	१९ ०५
२८ ,,	५ ५१	१८ ११	५ ४३	१८ १९	५ ३९	१८ २३	५ ३५	१८ २७	५ २९	१८ ३२	५ २३	१८ ३८	५ १६	१८ ४५	५ ०८	१८ ५३	५ ०४	१८ ५७	५ ००	१९ ०१
३० ,,	५ ५१	१८ १०	५ ४४	१८ १७	५ ४०	१८ २१	५ ३६	१८ २५	५ ३१	१८ २९	५ २५	१८ ३५	५ १९	१८ ४१	५ ११	१८ ४९	५ ०८	१८ ५३	५ ०४	१८ ५६
१ सितं	५ ५१	१९ ०९	५ ४४	१८ १५	५ ४१	१८ १९	५ ३७	१८ २३	५ ३२	१८ २७	५ २७	१८ ३२	५ २२	१८ ३८	५ १४	१८ ४५	५ ११	१८ ४८	५ ०८	१८ ५१
३ ,,	५ ५१	१८ ०८	५ ४५	१८ १३	५ ४२	१८ १७	५ ३८	१८ २०	५ ३४	१८ २४	५ २९	१८ २९	५ २४	१८ ३४	५ १६	१८ ४१	५ १४	१८ ४३	५ ११	१८ ४७
५ ,,	५ ५१	१८ ०७	५ ४६	१८ १२	५ ४२	१८ १५	५ ३९	१८ १८	५ ३५	१८ २१	५ ३१	१८ २६	५ २६	१८ ३०	५ २०	१८ ३६	५ १७	१८ ३९	५ १५	१८ ४२
७ ,,	५ ५०	१८ ०६	५ ४६	१८ १०	५ ४३	१८ १२	५ ४०	१८ १५	५ ३७	१८ १८	५ ३३	१८ २३	५ २८	१८ २७	५ २३	१८ ३१	५ २१	१८ ३४	५ १८	१८ ३७
९ ,,	५ ५०	१८ ०४	५ ४६	१८ ०८	५ ४४	१८ १०	५ ४१	१८ १३	५ ३८	१८ १६	५ ३५	१८ ११	५ ३१	१८ २३	५ २६	१८ २७	५ २४	१८ २९	५ २२	१८ ३२
११ ,,	५ ५०	१८ ०३	५ ४६	१८ ०७	५ ४४	१८ ०८	५ ४२	१८ १०	५ ३९	१८ १३	५ ३७	१८ १६	५ ३३	१८ १९	५ २९	१८ २३	५ २७	१८ २४	५ २५	१८ २७
१३ ,,	५ ५०	१८ ०२	५ ४७	१८ ०५	५ ४५	१८ ०६	५ ४३	१८ ०८	५ ४१	१८ १०	५ ३९	१८ १३	५ ३६	१८ १५	५ ३२	१८ १९	५ ३०	१८ २०	५ २९	१८ २२
१५ ,,	५ ५०	१८ ००	५ ४७	१८ ०३	५ ४६	१८ ०४	५ ४४	१८ ०५	५ ४२	१८ ०७	५ ४०	१८ १०	५ ३८	१८ ११	५ ३४	१८ १४	५ ३४	१८ १६	५ ३२	१८ १७
१७ ,,	५ ५०	१७ ५९	५ ४८	१८ ०१	५ ४७	१८ ०२	५ ४५	१८ ०३	५ ४४	१८ ०४	५ ४२	१८ ०६	५ ४१	१८ ०८	५ ३८	१८ १०	५ ३७	१८ ११	५ ३६	१८ १२
१९ ,,	५ ४९	१७ ५८	५ ४८	१७ ५९	५ ४७	१८ ००	५ ४६	१८ ०१	५ ४५	१८ ०२	५ ४४	१८ ०३	५ ४३	१८ ०४	५ ४१	१८ ०६	५ ४१	१८ ०६	५ ४०	१८ ०७
२१ ,,	५ ४९	१७ ५७	५ ४८	१७ ५७	५ ४८	१७ ५८	५ ४७	१७ ५८	५ ४७	१७ ५९	५ ४६	१७ ५९	५ ४५	१८ ००	५ ४४	१८ ०२	५ ४४	१८ ०१	५ ४३	१८ ०२
२३ ,,	५ ४९	१७ ५५	५ ४९	१७ ५५	५ ४९	१७ ५५	५ ४९	१७ ५६	५ ४८	१७ ५६	५ ४८	१७ ५६	५ ४८	१७ ५६	५ ४७	१७ ५६	५ ४७	१७ ५६	५ ४७	१७ ५७
२५ ,,	५ ४९	१७ ५४	५ ४९	१७ ५४	५ ५०	१७ ५३	५ ५०	१७ ५३	५ ५०	१७ ५३	५ ५०	१७ ५३	५ ५०	१७ ५२	५ ५०	१७ ५२	५ ५०	१७ ५२	५ ५०	१७ ५२
२७ ,,	५ ४९	१७ ५३	५ ५०	१७ ५२	५ ५१	१७ ५१	५ ५१	१७ ५०	५ ५१	१७ ५०	५ ५२	१७ ५०	५ ५२	१७ ४८	५ ५३	१७ ४८	५ ५३	१७ ४८	५ ५४	१७ ४७
२९ ,,	५ ४९	१७ ५२	५ ५१	१७ ५०	५ ५१	१७ ४९	५ ५२	१७ ४८	५ ५३	१७ ४७	५ ५४	१७ ४६	५ ५५	१७ ४५	५ ५६	१७ ४३	५ ५७	१७ ४३	५ ५८	१७ ४२
१ अक्टू	५ ४९	१७ ५१	५ ५१	१७ ४८	५ ५२	१७ ४७	५ ५३	१७ ४६	५ ५४	१७ ४४	५ ५६	१७ ४३	५ ५७	१७ ४१	५ ५९	१७ ३८	६ ००	१७ ३९	६ ०१	१७ ३७
३ ,,	५ ४९	१७ ४९	५ ५१	१७ ४६	५ ५३	१७ ४५	५ ५४	१७ ४३	५ ५६	१७ ४१	५ ५८	१७ ४०	६ ००	१७ ३७	६ ०३	१७ ३५	६ ०३	१७ ३४	६ ०५	१७ ३२
५ ,,	५ ४८	१७ ४८	५ ५२	१७ ४४	५ ५४	१७ ४३	५ ५५	१७ ४०	५ ५७	१७ ३८	६ ००	१७ ३७	६ ०२	१७ ३३	६ ०६	१७ ३०	६ ०७	१७ २९	६ ०८	१७ २७
७ ,,	५ ४८	१७ ४७	५ ५२	१७ ४३	५ ५५	१७ ४१	५ ५७	१७ ३८	५ ५९	१७ ३६	६ ०२	१७ ३३	६ ०५	१७ ३०	६ ०९	१७ २६	६ १०	१७ २४	६ १२	१७ २२
९ ,,	५ ४८	१७ ४६	५ ५३	१७ ४२	५ ५५	१७ ३९	५ ५८	१७ ३६	६ ०१	१७ ३३	६ ०४	१७ ३०	६ ०७	१७ २७	६ १२	१७ २२	६ १४	१७ १९	६ १६	१७ १७

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
अक्तूबर	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
११ अक्तू	५ ४८	१७ ४५	५ ५३	१७ ४०	५ ५६	१७ ३७	५ ५९	१७ ३४	६ ०२	१७ ३१	६ ०६	१७ २७	६ १०	१७ २३	६ १५	१७ १८	६ १७	१७ १५	६ २०	१७ १३
१३ ,,	५ ४८	१७ ४४	५ ५४	१७ ३८	५ ५७	१७ ३५	६ ००	१७ ३१	६ ०४	१७ २८	६ ०८	१७ २४	६ १२	१७ २०	६ १८	१७ १४	६ २१	१७ ११	६ २३	१७ ०८
१५ ,,	५ ४९	१७ ४३	५ ५५	१७ ३७	५ ५८	१७ ३३	६ ०२	१७ २९	६ ०६	१७ २५	६ १०	१७ २१	६ १५	१७ १६	६ २१	१७ १०	६ २४	१७ ०७	६ २७	१७ ०३
१७ ,,	५ ४९	१७ ४२	५ ५५	१७ ३५	५ ५९	१७ ३१	६ ०३	१७ २७	६ ०७	१७ २३	६ १२	१७ १८	६ १८	१७ १२	६ २४	१७ ०६	६ २८	१७ ०२	६ ३१	१६ ५९
१९ ,,	५ ४९	१७ ४१	५ ५६	१७ ३४	६ ००	१७ ३०	६ ०५	१७ २५	६ ०९	१७ २०	६ १४	१७ १५	६ २०	१७ ०९	६ २८	१७ ०२	६ ३१	१६ ५८	६ ३५	१६ ५४
२१ ,,	५ ४९	१७ ४०	५ ५७	१७ ३२	६ ०१	१७ २८	६ ०६	१७ २३	६ ११	१७ १८	६ १६	१७ १३	६ २३	१७ ०५	६ ३१	१६ ५८	६ ३५	१६ ५४	६ ३९	१६ ४९
२३ ,,	५ ४९	१७ ३९	५ ५८	१७ ३१	६ ०२	१७ २६	६ ०७	१७ २१	६ १२	१७ १५	६ १८	१७ १०	६ २६	१७ ०२	६ ३४	१६ ५४	६ ३८	१६ ५०	६ ४३	१६ ४५
२५ ,,	५ ४९	१७ ३९	५ ५८	१७ २९	६ ०३	१७ २४	६ ०८	१७ १९	६ १४	१७ १३	६ २०	१७ ०३	६ २८	१६ ५९	६ ३८	१६ ५०	६ ४२	१६ ४६	६ ४६	१६ ४१
२७ ,,	५ ५०	१७ ३८	५ ५९	१७ २८	६ ०५	१७ २३	६ १०	१७ १७	६ १६	१७ ११	६ २२	१७ ०४	६ ३१	१६ ५६	६ ४१	१६ ४६	६ ४६	१६ ४२	६ ५०	१६ ३७
२९ ,,	५ ५०	१७ ३८	६ ००	१७ २७	६ ०६	१७ २१	६ १२	१७ १५	६ १८	१७ ०९	६ २४	१७ ०२	६ ३४	१६ ५३	६ ४५	१६ ४२	६ ४९	१६ ३८	६ ५४	१६ ३२
३१ ,,	५ ५०	१७ ३७	६ ००	१७ २६	६ ०७	१७ २०	६ १३	१७ १४	६ २०	१७ ०७	६ २७	१६ ५९	६ ३७	१६ ५०	६ ४८	१६ ३९	६ ५२	१६ ३४	६ ५८	१८ २८
२ नवं.	५ ५१	१७ ३७	६ ०२	१७ २४	६ ०८	१७ ११	६ १४	१७ १२	६ २२	१७ ०५	६ ३०	१६ ५६	६ ३९	१६ ४७	६ ५१	१६ ३५	६ ५६	१६ ३०	७ ०२	१६ २४
४ ,,	५ ५१	१७ ३६	६ ०३	१७ २३	६ ०९	१७ १८	६ १६	१७ ११	६ २३	१७ ०३	६ ३२	१६ ५४	६ ४२	१६ ४५	६ ५४	१६ ३२	७ ००	१६ २७	७ ०६	१६ २१
६ ,,	५ ५२	१७ ३६	६ ०४	१७ २३	६ १०	१७ १७	६ १८	१७ ०९	६ २५	१७ ०१	६ ३४	१६ ५२	६ ४५	१६ ४२	६ ५७	१६ २९	७ ०३	१६ २३	७ १०	१६ १७
८ ,,	५ ५२	१७ ३५	६ ०५	१७ २२	६ १२	१७ १६	६ १९	१७ ०८	६ २७	१६ ५९	६ ३७	१६ ५०	६ ४८	१६ ३९	७ ०१	१६ २६	७ ०७	१६ २०	७ १४	१६ १३
१० ,,	५ ५३	१७ ३५	६ ०६	१७ २२	६ १३	१७ १५	६ २१	१७ ०६	६ २९	१६ ५७	६ ३९	१६ ४८	६ ५०	१६ ३७	७ ०४	१६ २३	७ १०	१६ १७	७ १७	१६ ०९
१२ ,,	५ ५४	१७ ३५	६ ०७	१७ २१	६ १५	१७ १४	६ २२	१७ ०५	६ ३१	१६ ५६	६ ४१	१६ ४७	६ ५३	१६ ३५	७ ०७	१६ २०	७ १४	१६ १४	७ २१	१६ ०६
१४ ,,	५ ५४	१७ ३५	६ ०८	१७ २१	६ १६	१७ १३	६ २४	१७ ०४	६ ३३	१६ ५५	६ ४४	१६ ४५	६ ५६	१६ ३३	७ ११	१६ १७	७ १८	१६ ११	७ २५	१६ ०३
१६ ,,	५ ५५	१७ ३४	६ ०९	१७ २०	६ १७	१७ १२	६ २६	१७ ०३	६ ३५	१६ ५४	६ ४६	१६ ४३	६ ५९	१६ ३१	७ १४	१६ १५	७ २१	१६ ०८	७ २९	१६ ००
१८ ,,	५ ५६	१७ ३४	६ ११	१७ २०	६ १८	१७ १२	६ २७	१७ ०३	६ ३७	१६ ५३	६ ४८	१६ ४१	७ ०१	१६ २९	७ १७	१६ १२	७ २५	१६ ०५	७ ३३	१५ ५७
२० ,,	५ ५७	१७ ३५	६ १२	१७ १९	६ २०	१७ ११	६ २९	१७ ०२	६ ३९	१६ ५२	६ ५१	१६ ४०	७ ०४	१६ २७	७ २०	१६ १०	७ २८	१६ ०३	७ ३६	१५ ५४
२२ ,,	५ ५८	१७ ३५	६ १३	१७ १९	६ २१	१७ ११	६ ३१	१७ ०१	६ ४१	१६ ५१	६ ५३	१६ ३९	७ ०७	१६ २५	७ २३	१६ ०८	७ ३१	१६ ००	७ ४०	१५ ५१
२४ ,,	५ ५८	१७ ३५	६ १४	१७ १९	६ २३	१७ १०	६ ३२	१७ ०१	६ ४३	१६ ५०	६ ५५	१६ ३८	७ ०९	१६ २४	७ २६	१६ ०६	७ ३५	१५ ५८	७ ४४	१५ ४९
२६ ,,	५ ५९	१७ ३५	६ १५	१७ १९	६ २४	१७ १०	६ ३४	१७ ००	६ ४५	१६ ५०	६ ५७	१६ ३७	७ १२	१६ २२	७ २९	१६ ०४	७ ३८	१५ ५६	७ ४७	१५ ४७
२८ ,,	६ ००	१७ ३६	६ १७	१७ १९	६ २६	१७ १०	६ ३६	१७ ००	६ ४७	१६ ४९	६ ५९	१६ ३६	७ १४	१६ २१	७ ३२	१६ ०३	७ ४१	१५ ५५	७ ५०	१५ ४५
३० ,,	६ ०१	१७ ३६	६ १८	१७ १९	६ २८	१७ १०	६ ३७	१७ ००	६ ४९	१६ ४९	७ ०१	१६ ३६	७ १७	१६ २१	७ ३५	१६ ०२	७ ४४	१५ ५३	७ ५४	१५ ४३
२ दिसं.	६ ०२	१७ ३७	६ १९	१७ १९	६ २९	१७ १०	६ ३९	१७ ००	६ ५१	१६ ५८	७ ०३	१६ ३५	७ १९	१६ २०	७ ३८	१६ ०१	७ ४७	१५ ५२	७ ५७	१५ ४२
४ ,,	६ ०३	१७ ३७	६ २१	१७ २०	६ ३०	१७ १०	६ ४१	१७ ००	६ ५२	१६ ४८	७ ०५	१६ ३५	७ २१	१६ २०	७ ४०	१६ ००	७ ४९	१५ ५१	८ ०१	१५ ४१
६ ,,	६ ०४	१७ ३८	६ २२	१७ २०	६ ३२	१७ १०	६ ४२	१७ ००	६ ५४	१६ ४८	७ ०७	१६ ३५	७ २३	१६ १९	७ ४३	१५ ५९	७ ५२	१५ ५०	८ ०४	१५ ३९
८ ,,	६ ०५	१७ ३८	६ २३	१७ २०	६ ३३	१७ १०	६ ४४	१७ ००	६ ५५	१६ ४८	७ ०९	१६ ३५	७ २५	१६ १९	७ ४५	१५ ५९	७ ५४	१५ ५०	८ ०६	१५ ३९
१० ,,	६ ०६	१७ ३९	६ २४	१७ २१	६ ३४	१७ ११	६ ४५	१७ ००	६ ५७	१६ ४८	७ ११	१६ ३५	७ २७	१६ १८	७ ४७	१५ ५८	७ ५७	१५ ४९	८ ०९	१५ ३८
१२ ,,	६ ०७	१७ ४०	६ २५	१७ २२	६ ३५	१७ ११	६ ४६	१७ ०१	६ ५८	१६ ४८	७ १३	१६ ३५	७ २९	१६ १७	७ ४९	१५ ५८	७ ५९	१५ ४८	८ ११	१५ ३७
१४ ,,	६ ०८	१७ ४१	६ २७	१७ २३	६ ३७	१७ १२	६ ४८	१७ ०१	७ ०	१६ ४९	७ १४	१६ ३५	७ ३१	१६ १९	७ ५१	१५ ५८	८ १	१५ ४८	८ १३	१५ ३७
१६ ,,	६ ०९	१७ ४२	६ २८	१७ २३	६ ३८	१७ १३	६ ४९	१७ ०२	७ १	१६ ४९	७ १५	१६ ३६	७ ३२	१६ १९	७ ५३	१५ ५९	८ ३	१५ ४८	८ १४	१५ ३८
१८ ,,	६ १०	१७ ४३	६ २९	१७ २४	६ ३९	१७ १४	६ ५०	१७ ०३	७ २	१६ ५०	७ १७	१६ ३६	७ ३३	१६ २०	७ ५४	१५ ५९	८ ४	१५ ४९	८ १६	१५ ३८
२० ,,	६ ११	१७ ४४	६ ३०	१७ २५	६ ४०	१७ १५	६ ५१	१७ ०४	७ ४	१६ ५१	७ १८	१६ ३७	७ ३५	१६ २१	७ ५५	१६ ००	८ ५	१५ ५०	८ १७	१५ ३९
२२ ,,	६ १२	१७ ४५	६ ३१	१७ २६	६ ४१	१७ १६	६ ५२	१७ ०५	७ ५	१६ ५२	७ १९	१६ ३८	७ ३६	१६ २१	७ ५६	१६ ००	८ ६	१५ ५१	८ १८	१५ ३९
२४ ,,	६ १३	१७ ४६	६ ३२	१७ २७	६ ४२	१७ १७	६ ५३	१७ ०६	७ ६	१६ ५४	७ २०	१६ ३९	७ ३७	१६ २३	७ ५७	१६ ०२	८ ७	१५ ५२	८ १९	१५ ४१
२६ ,,	६ १४	१७ ४७	६ ३३	१७ २८	६ ४३	१७ १८	६ ५४	१७ ०७	७ ६	१६ ५५	७ २१	१६ ४१	७ ३७	१६ २४	७ ५८	१६ ०३	८ ८	१५ ५३	८. १९	१५ ४२
२८ ,,	६ १५	१७ ४८	६ ३४	१७ २९	६ ४४	१७ २०	६ ५५	१७ ०९	७ ७	१६ ५६	७ २२	१६ ४२	७ ३८	१६ २५	७ ५८	१६ ०५	८ ८	१५ ५५	८ १९	१५ ४४
३० ,,	६ १६	१७ ४९	६ ३४	१७ ३०	६ ४५	१७ २१	६ ५६	१७ १०	७ ८	१६ ५७	७ २२	१६ ४४	७ ३८	१६ २६	७ ५९	१६ ०७	८ ८	१५ ५७	८ १९	१५ ४६
३१ ,,	६ १७	१७ ५०	६ ३४	१७ ३१	६ ४५	१७ २३	६ ५६	१७ १०	७ ८	१६ ५८	७ २२	१६ ४४	७ ३८	१६ २७	७ ५९	१६ ०८	८ ८	१५ ५८	८ १९	१५ ४७

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख शहरों के सूर्योदयास्त की सारणी भा. स्टै. टाईम

नीचे हिमाचल प्रदेश के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग २ मिनट घटाने तथा अस्त में २ मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

पाठकों की सुविधा हेतु आगे प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त से पूर्व हिमाचल प्रदेश के विभिन्न नगरों के सूर्योदयास्त में परिवर्तन संस्कार लिख रहे हैं जिससे आप किसी भी अभीष्ट नगर का सू. उदय सुगमता पूर्वक ज्ञात कर सकते हैं।

उदाहरण—मान लीजिए करसोग में ११ अप्रैल को सूर्योदय व सूर्यास्त जानना है तो हमें ज़िला मण्डी के स्तम्भ (Column) में देखने से सूर्योदय ६ घण्टे १ मिनट तथा सूर्यास्त १८ घण्टे ४४ मिनट प्राप्त हुए। इन दोनों सू० उ० व सू० अ० में नीचे दी गई संस्कार तालिका में करसोग का संस्कार—१ घण्टे ०४ मिनट घटाने से हमें ५ घण्टे ५९ मिनट ५६ सैकेण्ड और १८ घण्टे ४२ मिनट २६ सैकेण्ड में प्राप्त हुए। ये करसोग के शुद्ध शास्त्रीय सूर्योदय एवं सूर्यास्त होंगे।

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	७ २८	१७ २९	७ २७	१७ २८	७ २७	१७ २९	७ २३	१७ २८	७ २४	१७ २६	७ २७	१७ २९	७ २२	१७ २७	७ २३	१७ २७	७ २७	१७ २९	७ २२	१७ २५	७ २२	१७ २६
4	७ २८	१७ ३२	७ २८	१७ ३१	७ २८	१७ ३२	७ २४	१७ ३१	७ २५	१७ २९	७ २७	१७ ३१	७ २३	१७ ३०	७ २४	१७ २९	७ २८	१७ ३१	७ २३	१७ २९	७ २२	१७ २८
7	७ २९	१७ ३४	७ २८	१७ ३३	७ २८	१७ ३३	७ २४	१७ ३२	७ २५	१७ ३१	७ २७	१७ ३३	७ २४	१७ ३२	७ २४	१७ ३१	७ २८	१७ ३४	७ २३	१७ ३०	७ २२	१७ २९
10	७ २९	१७ ३७	७ २९	१७ ३६	७ २९	१७ ३६	७ २४	१७ ३४	७ २५	१७ ३३	७ २८	१७ ३५	७ २४	१७ ३४	७ २४	१७ ३३	७ २८	१७ ३६	७ २३	१७ ३२	७ २२	१७ ३१
13	७ २८	१७ ३९	७ २८	१७ ३८	७ २८	१७ ३९	७ २३	१७ ३६	७ २५	१७ ३६	७ २७	१७ ३८	७ २३	१७ ३६	७ २४	१७ ३५	७ २८	१७ ३९	७ २३	१७ ३५	७ २२	१७ ३४
16	७ २८	१७ ४२	७ २७	१७ ४१	७ २८	१७ ४२	७ २३	१७ ३९	७ २५	१७ ३९	७ २६	१७ ४१	७ २३	१७ ३९	७ २३	१७ ३८	७ २७	१७ ४२	७ २२	१७ ३७	७ २१	१७ ३७
19	७ २७	१७ ४४	७ २६	१७ ४३	७ २७	१७ ४३	७ २३	१७ ४२	७ २४	१७ ४३	७ २५	१७ ४३	७ २२	१७ ४१	७ २२	१७ ४२	७ २६	१७ ४६	७ २१	१७ ४१	७ २१	१७ ४१
22	७ २६	१७ ४७	७ २५	१७ ४६	७ २६	१७ ४६	७ २२	१७ ४४	७ २३	१७ ४५	७ २५	१७ ४५	७ २१	१७ ४३	७ २१	१७ ४३	७ २५	१७ ४८	७ २०	१७ ४३	७ २०	१७ ४३
25	७ २५	१७ ५०	७ २५	१७ ४९	७ २५	१७ ४९	७ २१	१७ ४७	७ २२	१७ ४८	७ २४	१७ ४८	७ २०	१७ ४६	७ २०	१७ ४६	७ २४	१७ ५०	७ १९	१७ ४६	७ १९	१७ ४६
28	७ २३	१७ ५२	७ २३	१७ ५१	७ २४	१७ ५२	७ १९	१७ ५०	७ २०	१७ ५०	७ २३	१७ ५१	७ १८	१७ ४९	७ १९	१७ ४९	७ २३	१७ ५३	७ १७	१७ ४८	७ १७	१७ ४८
31	७ २१	१७ ५५	७ २१	१७ ५४	७ २१	१७ ५४	७ १७	१७ ५३	७ १८	१७ ५४	७ २२	१७ ५५	७ १६	१७ ५२	७ १८	१७ ५२	७ २२	१७ ५६	७ १५	१७ ५१	७ १५	१७ ५१
3 फर.	७ २०	१७ ५८	७ १९	१७ ५७	७ १९	१७ ५७	७ १६	१७ ५६	७ १७	१७ ५७	७ १९	१७ ५७	७ १५	१७ ५५	७ १६	१७ ५४	७ २०	१७ ५८	७ १४	१७ ५४	७ १३	१७ ५४
6	७ १८	१८ ००	७ १७	१७ ५९	७ १८	१८ ००	७ १४	१७ ५८	७ १५	१७ ५९	७ १७	१७ ५९	७ १३	१७ ५७	७ १४	१७ ५७	७ १८	१८ ०१	७ १२	१७ ५६	७ १२	१७ ५६
9	७ १५	१८ ०३	७ १४	१८ ०३	७ १५	१८ ०२	७ १२	१८ ०२	७ १२	१८ ०२	७ १४	१८ ०१	७ १०	१८ ०१	७ ११	१८ ००	७ १५	१८ ०४	७ ०९	१८ ००	७ ०९	१८ ००
12	७ १२	१८ ०६	७ १२	१८ ०६	७ १२	१८ ०६	७ ०८	१८ ०४	७ ०९	१८ ०४	७ १२	१८ ०४	७ ०७	१८ ०३	७ ०९	१८ ०२	७ १३	१८ ०६	७ ०६	१८ ०२	७ ०६	१८ ०२
15	७ १०	१८ ०८	७ ०९	१८ ०८	७ १०	१८ ०८	७ ०६	१८ ०६	७ ०६	१८ ०६	७ ०९	१८ ०७	७ ०५	१८ ०५	७ ०६	१८ ०५	७ १०	१८ ०९	७ ०५	१८ ०४	७ ०४	१८ ०४
18	७ ०७	१८ १०	७ ०६	१८ १०	७ ०७	१८ १०	७ ०३	१८ ०८	७ ०३	१८ ०८	७ ०६	१८ ०९	७ ०२	१८ ०७	७ ०३	१८ ०७	७ ०७	१८ १२	७ ०२	१८ ०७	७ ०२	१८ ०७
21	७ ०४	१८ १३	७ ०३	१८ १३	७ ०४	१८ १३	७ ००	१८ ११	७ ००	१८ ११	७ ०३	१८ १२	६ ५९	१८ १०	७ ००	१८ १०	७ ०४	१८ १४	६ ५९	१८ ०९	६ ५८	१८ १०
24	७ ०१	१८ १५	७ ००	१८ १४	७ ०१	१८ १५	६ ५७	१८ १३	६ ५७	१८ १३	७ ०१	१८ १५	६ ५६	१८ १२	६ ५७	१८ १२	७ ०१	१८ १६	६ ५६	१८ ११	६ ५५	१८ १२
27	६ ५८	१८ १८	६ ५७	१८ १७	६ ५८	१८ १८	६ ५४	१८ १६	६ ५४	१८ १६	६ ५६	१८ १७	६ ५३	१८ १५	६ ५४	१८ १५	६ ५७	१८ १९	६ ५२	१८ १४	६ ५३	१८ १४
2 मार्च	६ ५४	१८ २०	६ ५३	१८ २०	६ ५३	१८ १९	६ ५०	१८ १८	६ ५०	१८ १९	६ ५३	१८ २०	६ ४९	१८ १७	६ ५०	१८ १७	६ ५३	१८ २०	६ ४८	१८ १६	६ ४९	१८ १६
5	६ ५१	१८ २२	६ ५०	१८ २१	६ ५१	१८ २२	६ ४७	१८ २०	६ ४७	१८ २०	६ ५०	१८ २२	६ ४६	१८ १९	६ ४७	१८ १९	६ ५१	१८ २३	६ ४६	१८ १८	६ ४६	१८ १८
8	६ ४६	१८ २४	६ ४६	१८ २३	६ ४६	१८ २४	६ ४३	१८ २२	६ ४३	१८ २३	६ ४६	१८ २४	६ ४१	१८ २१	६ ४३	१८ २१	६ ४७	१८ २५	६ ४२	१८ २१	६ ४०	१८ २०
11	६ ४३	१८ २७	६ ४२	१८ २६	६ ४३	१८ २६	६ ३९	१८ २४	६ ४०	१८ २४	६ ४३	१८ २६	६ ३८	१८ २४	६ ४०	१८ २३	६ ४४	१८ १७	६ ३९	१८ २२	६ ३७	१८ २३
14	६ ४०	१८ २८	६ ३९	१८ २७	६ ३९	१८ २७	६ ३६	१८ २५	६ ३६	१८ २५	६ ३९	१८ २७	६ ३६	१८ २५	६ ३७	१८ २४	६ ४०	१८ २८	६ ३५	१८ २४	६ ३५	१८ २४
17	६ ३६	१८ ३०	६ ३५	१८ २९	६ ३५	१८ २९	६ ३२	१८ २७	६ ३२	१८ २७	६ ३५	१८ २९	६ ३१	१८ २७	६ ३२	१८ २६	६ ३६	१८ ३०	६ ३१	१८ २५	६ ३०	१८ २६
20	६ ३१	१८ ३२	६ ३०	१८ ३१	६ ३१	१८ ३१	६ २६	१८ २९	६ २८	१८ ३१	६ ३१	१८ ३१	६ २६	१८ २९	६ २८	१८ २७	६ ३२	१८ ३२	६ २७	१८ २६	६ २५	१८ २८

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
23	६ २८	१८ ३४	६ २७	१८ ३३	६ २८	१८ ३३	६ २४	१८ ३०	६ २५	१८ ३१	६ २८	१८ ३३	६ २३	१८ ३१	६ २५	१८ ३०	६ २९	१८ ३४	६ २४	१८ २८	६ २२	१८ ३०
26	६ २४	१८ ३६	६ २३	१८ ३५	६ २४	१८ ३५	६ २१	१८ ३३	६ २१	१८ ३३	६ २४	१८ ३५	६ २०	१८ ३३	६ २१	१८ ३३	६ २५	१८ ३६	६ २०	१८ ३१	६ १९	१८ ३२
29	६ २१	१८ ३८	६ २०	१८ ३७	६ २०	१८ ३७	६ १८	१८ ३४	६ १८	१८ ३४	६ २०	१८ ३७	६ १६	१८ ३५	६ १७	१८ ३५	६ २१	१८ ३८	६ १६	१८ ३३	६ १५	१८ ३४
2 अप्रै.	६ १५	१८ ४०	६ १४	१८ ३९	६ १५	१८ ४०	६ १२	१८ ३७	६ १३	१८ ३८	६ १५	१८ ४०	६ ११	१८ ३७	६ १२	१८ ३७	६ १६	१८ ४१	६ ११	१८ ३६	६ १०	१८ ३६
5	६ १२	१८ ४३	६ १०	१८ ४२	६ १२	१८ ४२	६ ०८	१८ ३९	६ ०९	१८ ३९	६ १२	१८ ४२	६ ०७	१८ ३९	६ ०९	१८ ३९	६ १३	१८ ४३	६ ०८	१८ ३७	६ ०६	१८ ३८
8	६ ०९	१८ ४५	६ ०८	१८ ४४	६ ०८	१८ ४३	६ ०५	१८ ४२	६ ०६	१८ ४२	६ ०८	१८ ४३	६ ०४	१८ ४१	६ ०५	१८ ४१	६ ०९	१८ ४४	६ ०४	१८ ३९	६ ०३	१८ ४०
11	६ ०४	१८ ४७	६ ०३	१८ ४६	६ ०४	१८ ४६	६ ०१	१८ ४४	६ ०१	१८ ४४	६ ०४	१८ ४६	६ ००	१८ ४३	६ ०१	१८ ४३	६ ०५	१८ ४७	६ ००	१८ ४१	५ ५९	१८ ४२
14	६ ०१	१८ ५०	६ ००	१८ ४९	६ ०१	१८ ४९	५ ५८	१८ ४७	५ ५८	१८ ४७	६ ०१	१८ ४९	५ ५७	१८ ४६	५ ५८	१८ ४६	६ ०२	१८ ४९	५ ५७	१८ ४४	५ ५६	१८ ४५
17	५ ५७	१८ ५१	५ ५६	१८ ५०	५ ५७	१८ ५१	५ ५४	१८ ४९	५ ५४	१८ ४९	५ ५७	१८ ५०	५ ५३	१८ ४७	५ ५४	१८ ४८	५ ५८	१८ ५१	५ ५३	१८ ४६	५ ५२	१८ ४६
20	५ ५४	१८ ५४	५ ५३	१८ ५३	५ ५४	१८ ५३	५ ५१	१८ ५१	५ ५१	१८ ५१	५ ५४	१८ ५३	५ ५०	१८ ५०	५ ५१	१८ ५१	५ ५५	१८ ५४	५ ५०	१८ ४९	५ ४९	१८ ४९
23	५ ५०	१८ ५६	५ ५०	१८ ५६	५ ५०	१८ ५५	५ ४७	१८ ५३	५ ४७	१८ ५३	५ ५०	१८ ५५	५ ४६	१८ ५२	५ ४८	१८ ५२	५ ५१	१८ ५६	५ ४७	१८ ५१	५ ४५	१८ ५१
26	५ ४८	१८ ५८	५ ४७	१८ ५८	५ ४८	१८ ५७	५ ४५	१८ ५५	५ ४५	१८ ५५	५ ४८	१८ ५७	५ ४४	१८ ५४	५ ४५	१८ ५४	५ ४९	१८ ५८	५ ४४	१८ ५२	५ ४३	१८ ५३
29	५ ४६	१९ ०१	५ ४५	१९ ००	५ ४५	१९ ००	५ ४२	१८ ५८	५ ४२	१८ ५८	५ ४५	१९ ००	५ ४२	१८ ५७	५ ४२	१८ ५७	५ ४६	१९ ०१	५ ४१	१८ ५५	५ ४१	१८ ५६
2 मई	५ ४४	१९ ०२	५ ४३	१९ ०१	५ ४३	१९ ०१	५ ४०	१८ ५९	५ ४०	१८ ५९	५ ४३	१९ ०१	५ ३९	१८ ५८	५ ४०	१८ ५८	५ ४४	१९ ०२	५ ३९	१८ ५६	५ ३८	१८ ५७
4	५ ४१	१९ ०३	५ ३९	१९ ०२	५ ४०	१९ ०२	५ ३७	१८ ५९	५ ३७	१८ ५९	५ ४०	१९ ०२	५ ३७	१८ ५९	५ ३७	१९ ००	५ ४१	१९ ०३	५ ३६	१८ ५८	५ ३६	१८ ५८
7	५ ३८	१९ ०५	५ ३७	१९ ०४	५ ३७	१९ ०४	५ ३४	१९ ००	५ ३४	१९ ००	५ ३७	१९ ०४	५ ३४	१९ ०१	५ ३४	१९ ०१	५ ३८	१९ ०५	५ ३३	१९ ००	५ ३३	१९ ००
10	५ ३५	१९ ०७	५ ३४	१९ ०६	५ ३५	१९ ०६	५ ३२	१९ ०३	५ ३३	१९ ०४	५ ३५	१९ ०६	५ ३२	१९ ०३	५ ३२	१९ ०३	५ ३६	१९ ०७	५ ३१	१९ ०३	५ ३१	१९ ०२
13	५ ३४	१९ ०९	५ ३२	१९ ०८	५ ३३	१९ ०९	५ ३०	१९ ०६	५ ३०	१९ ०६	५ ३३	१९ ०९	५ ३०	१९ ०५	५ ३०	१९ ०५	५ ३४	१९ १०	५ २९	१९ ०५	५ २९	१९ ०४
16	५ ३२	१९ ११	५ ३०	१९ ११	५ ३१	१९ ११	५ २८	१९ ०७	५ २९	१९ ०७	५ ३१	१९ ११	५ २८	१९ ०७	५ २८	१९ ०७	५ ३२	१९ १२	५ २७	१९ ०६	५ २७	१९ ०६
19	५ ३०	१९ १३	५ २८	१९ १२	५ २९	१९ १३	५ २६	१९ ०९	५ २६	१९ ०९	५ २९	१९ १३	५ २६	१९ ०९	५ २६	१९ १०	५ ३०	१९ १४	५ २५	१९ ०८	५ २५	१९ ०८
22	५ २८	१९ १४	५ २६	१९ १३	५ २७	१९ १४	५ २४	१९ ११	५ २४	१९ ११	५ २७	१९ १४	५ २४	१९ ११	५ २५	१९ ११	५ २८	१९ १५	५ २३	१९ १०	५ २४	१९ १०
25	५ २७	१९ १६	५ २५	१९ १५	५ २६	१९ १६	५ २३	१९ १४	५ २४	१९ १४	५ २६	१९ १६	५ २३	१९ १३	५ २४	१९ १४	५ २७	१९ १७	५ २२	१९ १२	५ २३	१९ १२
28	५ २५	१९ १८	५ २४	१९ १७	५ २५	१९ १८	५ २२	१९ १६	५ २२	१९ १६	५ २५	१९ १८	५ २१	१९ १५	५ २१	१९ १५	५ २६	१९ १९	५ २१	१९ १४	५ २१	१९ १४
31	५ २४	१९ २०	५ २२	१९ २१	५ २४	१९ २०	५ २१	१९ १७	५ २१	१९ १७	५ २४	१९ २०	५ २०	१९ १७	५ २०	१९ १७	५ २५	१९ २१	५ २०	१९ १६	५ २०	१९ १६
3 जून	५ २३	१९ २३	५ २२	१९ २२	५ २३	१९ २२	५ २०	१९ १९	५ २०	१९ १९	५ २३	१९ २२	५ २०	१९ २०	५ २०	१९ १९	५ २४	१९ २३	५ १९	१९ १८	५ १९	१९ १९
6	५ २३	१९ २४	५ २१	१९ २३	५ २२	१९ २४	५ २०	१९ २१	५ २०	१९ २१	५ २२	१९ २४	५ १९	१९ २१	५ २०	१९ २१	५ २३	१९ २५	५ १९	१९ २०	५ १८	१९ २०
9	५ २२	१९ २५	५ २१	१९ २५	५ २२	१९ २५	५ १९	१९ २२	५ १९	१९ २२	५ २२	१९ २५	५ १९	१९ २२	५ २०	१९ २२	५ २३	१९ २६	५ १९	१९ २१	५ १९	१९ २१
12	५ २२	१९ २७	५ २१	१९ २६	५ २२	१९ २७	५ १८	१९ २३	५ १८	१९ २३	५ २२	१९ २७	५ १८	१९ २३	५ १९	१९ २३	५ २३	१९ २८	५ १९	१९ २२	५ १८	१९ २२
15	५ २२	१९ २८	५ २१	१९ २७	५ २२	१९ २८	५ १८	१९ २३	५ १९	१९ २३	५ २२	१९ २८	५ १८	१९ २३	५ १९	१९ २३	५ २३	१९ २९	५ १८	१९ २३	५ १८	१९ २२
18	५ २१	१९ ३०	५ २१	१९ २९	५ २१	१९ ३०	५ १८	१९ २४	५ १९	१९ २५	५ २१	१९ २९	५ १७	१९ २४	५ १९	१९ २४	५ २३	१९ ३०	५ १८	१९ २४	५ १७	१९ २३
21	५ २२	१९ ३१	५ २२	१९ ३०	५ २२	१९ ३१	५ १९	१९ २५	५ २०	१९ २६	५ २२	१९ ३१	५ १८	१९ २५	५ २०	१९ २५	५ २३	१९ ३१	५ १९	१९ २४	५ १८	१९ २४
24	५ २३	१९ ३२	५ २२	१९ ३१	५ २३	१९ ३२	५ २१	१९ २५	५ २२	१९ २६	५ २३	१९ ३२	५ १९	१९ २५	५ २१	१९ २५	५ २४	१९ ३२	५ २०	१९ २४	५ १८	१९ २४
27	५ २५	१९ ३३	५ २३	१९ ३२	५ २५	१९ ३२	५ २२	१९ २७	५ २२	१९ २७	५ २५	१९ ३२	५ २१	१९ २६	५ २२	१९ २६	५ २६	१९ ३३	५ २१	१९ २५	५ २०	१९ २५
30	५ २५	१९ ३३	५ २४	१९ ३३	५ २५	१९ ३३	५ २३	१९ २७	५ २३	१९ २७	५ २५	१९ ३३	५ २२	१९ २६	५ २३	१९ २७	५ २६	१९ ३२	५ २२	१९ २५	५ २२	१९ २५
3 जुला	५ २६	१९ ३२	५ २५	१९ ३२	५ २६	१९ ३२	५ २४	१९ २८	५ २५	१९ २८	५ २७	१९ ३२	५ २३	१९ २७	५ २४	१९ २८	५ २८	१९ ३२	५ २३	१९ २५	५ २३	१९ २६
6	५ २८	१९ ३२	५ २७	१९ ३१	५ २८	१९ ३२	५ २६	१९ २७	५ २६	१९ २८	५ २८	१९ ३१	५ २५	१९ २८	५ २५	१९ २८	५ २९	१९ ३२	५ २४	१९ २५	५ २५	१९ २७
9	५ ३०	१९ ३०	५ २९	१९ २९	५ ३०	१९ ३१	५ २७	१९ २७	५ २८	१९ २७	५ ३०	१९ ३०	५ २७	१९ २७	५ २७	१९ २७	५ ३१	१९ ३१	५ २६	१९ २४	५ २७	१९ २६
12	५ ३२	१९ २९	५ ३१	१९ २८	५ ३१	१९ २९	५ २९	१९ २६	५ २९	१९ २६	५ ३१	१९ २९	५ २९	१९ २६	५ २८	१९ २५	५ ३२	१९ ३०	५ २७	१९ २३	५ २८	१९ २५

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जुलाई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	५ ३३	१९ २८	५ ३३	१९ २७	५ ३३	१९ २८	५ ३०	१९ २६	५ ३१	१९ २५	५ ३३	१९ २८	५ ३०	१९ २५	५ ३०	१९ २४	५ ३४	१९ २९	५ २९	१९ २२	५ ३०	१९ २४
18	५ ३४	१९ २७	५ ३३	१९ २६	५ ३४	१९ २७	५ ३२	१९ २४	५ ३२	१९ २४	५ ३४	१९ २७	५ ३१	१९ २३	५ ३२	१९ २२	५ ३५	१९ २८	५ ३१	१९ २१	५ ३१	१९ २२
21	५ ३६	१९ २५	५ ३५	१९ २५	५ ३६	१९ २५	५ ३३	१९ २१	५ ३३	१९ २२	५ ३६	१९ २५	५ ३३	१९ २१	५ ३३	१९ २१	५ ३७	१९ २६	५ ३२	१९ २०	५ ३३	१९ २०
24	५ ३८	१९ २३	५ ३७	१९ २२	५ ३८	१९ २३	५ ३५	१९ १९	५ ३६	१९ २०	५ ३८	१९ २३	५ ३५	१९ १९	५ ३५	१९ १९	५ ३९	१९ २४	५ ३४	१९ १८	५ ३५	१९ १८
27	५ ४०	१९ २२	५ ३९	१९ २१	५ ४०	१९ २२	५ ३७	१९ १७	५ ३८	१९ १८	५ ४०	१९ २२	५ ३७	१९ १८	५ ३७	१९ १८	५ ४१	१९ २३	५ ३६	१९ १६	५ ३७	१९ १६
30	५ ४२	१९ १९	५ ४१	१९ १९	५ ४२	१९ १९	५ ३९	१९ १५	५ ४०	१९ १६	५ ४२	१९ १९	५ ३९	१९ १६	५ ३९	१९ १५	५ ४३	१९ २०	५ ३८	१९ १४	५ ३८	१९ १४
2 अग.	५ ४४	१९ १८	५ ४३	१९ १७	५ ४४	१९ १८	५ ४१	१९ १४	५ ४२	१९ १५	५ ४४	१९ १८	५ ४१	१९ १४	५ ४१	१९ १३	५ ४५	१९ १९	५ ४०	१९ १२	५ ४०	१९ १३
5	५ ४६	१९ १६	५ ४५	१९ १५	५ ४६	१९ १६	५ ४३	१९ १२	५ ४४	१९ १३	५ ४६	१९ १६	५ ४३	१९ १३	५ ४३	१९ ११	५ ४७	१९ १७	५ ४२	१९ १०	५ ४३	१९ १२
8	५ ४८	१९ १३	५ ४७	१९ १२	५ ४८	१९ १३	५ ४५	१९ ११	५ ४६	१९ १२	५ ४८	१९ १३	५ ४५	१९ ११	५ ४५	१९ ०९	५ ४९	१९ १४	५ ४४	१९ ०७	५ ४५	१९ १०
11	५ ५०	१९ ११	५ ४९	१९ १०	५ ५०	१९ ११	५ ४७	१९ ०८	५ ४८	१९ ०९	५ ५०	१९ ११	५ ४७	१९ ०८	५ ४७	१९ ०६	५ ५१	१९ १२	५ ४६	१९ ०४	५ ४७	१९ ०७
14	५ ५१	१९ ०९	५ ५०	१९ ०८	५ ५१	१९ ०९	५ ४८	१९ ०६	५ ४९	१९ ०७	५ ५१	१९ ०९	५ ४८	१९ ०५	५ ४८	१९ ०२	५ ५२	१९ १०	५ ४७	१९ ००	५ ४८	१९ ०५
17	५ ५३	१९ ०४	५ ५२	१९ ०३	५ ५३	१९ ०४	५ ५०	१९ ०१	५ ५१	१९ ०३	५ ५३	१९ ०४	५ ५०	१९ ०१	५ ५०	१८ ५९	५ ५४	१९ ०५	५ ४९	१८ ५७	५ ५०	१९ ००
20	५ ५५	१९ ०१	५ ५५	१९ ०१	५ ५५	१९ ०१	५ ५२	१८ ५९	५ ५३	१९ ००	५ ५५	१९ ०१	५ ५२	१८ ५९	५ ५२	१८ ५७	५ ५६	१९ ०२	५ ५१	१८ ५५	५ ५२	१८ ५८
23	५ ५७	१८ ५८	५ ५७	१८ ५८	५ ५७	१८ ५८	५ ५४	१८ ५५	५ ५५	१८ ५५	५ ५७	१८ ५८	५ ५४	१८ ५५	५ ५४	१८ ५४	५ ५८	१८ ५९	५ ५३	१८ ५३	५ ५३	१८ ५४
26	५ ५९	१८ ५४	५ ५९	१८ ५३	५ ५९	१८ ५३	५ ५६	१८ ५०	५ ५७	१८ ५१	५ ५८	१८ ५४	५ ५६	१८ ५०	५ ५६	१८ ५१	५ ५९	१८ ५५	५ ५५	१८ ४८	५ ५५	१८ ४९
29	६ ०१	१८ ५०	६ ००	१८ ४९	६ ००	१८ ५०	५ ५८	१८ ४६	५ ५९	१८ ४७	५ ५९	१८ ५०	५ ५८	१८ ४६	५ ५८	१८ ४६	६ ०२	१८ ५०	५ ५७	१८ ४५	५ ५७	१८ ४५
1 सितं.	६ ०२	१८ ४६	६ ०२	१८ ४५	६ ०२	१८ ४६	५ ५९	१८ ४४	६ ००	१८ ४५	६ ०२	१८ ४६	५ ५९	१८ ४४	६ ००	१८ ४३	६ ०४	१८ ४६	५ ५९	१८ ४२	५ ५८	१८ ४३
4	६ ०४	१८ ४३	६ ०३	१८ ४१	६ ०४	१८ ४२	६ ०२	१८ ४०	६ ०३	१८ ४१	६ ०४	१८ ४२	६ ०१	१८ ३९	६ ०२	१८ ३९	६ ०६	१८ ४२	६ ०१	१८ ३९	६ ००	१८ ३८
7	६ ०६	१८ ४०	६ ०६	१८ ३९	६ ०६	१८ ४०	६ ०४	१८ ३७	६ ०४	१८ ३७	६ ०५	१८ ३९	६ ०३	१८ ३७	६ ०४	१८ ३६	६ ०७	१८ ३९	६ ०३	१८ ३७	६ ०२	१८ ३५
10	६ ०९	१८ ३५	६ ०९	१८ ३४	६ ०९	१८ ३४	६ ०६	१८ ३२	६ ०६	१८ ३२	६ ०८	१८ ३३	६ ०६	१८ ३२	६ ०५	१८ ३२	६ ०९	१८ ३५	६ ०५	१८ ३१	६ ०५	१८ ३१
13	६ ११	१८ ३१	६ ११	१८ ३०	६ ११	१८ ३०	६ ०७	१८ २८	६ ०८	१८ २९	६ १०	१८ २९	६ ०७	१८ २८	६ ०७	१८ २८	६ ११	१८ ३१	६ ०६	१८ २७	६ ०७	१८ २७
16	६ १२	१८ २७	६ १२	१८ २६	६ १२	१८ २७	६ ०९	१८ २४	६ १०	१८ २५	६ १२	१८ २७	६ ०९	१८ २४	६ ०९	१८ २४	६ १३	१८ २८	६ ०८	१८ २४	६ ०९	१८ २३
19	६ १४	१८ २३	६ १४	१८ २३	६ १३	१८ २३	६ १०	१८ २०	६ ११	१८ २१	६ १४	१८ २३	६ १०	१८ २०	६ १०	१८ २०	६ १४	१८ २३	६ ०९	१८ १८	६ १०	१८ १९
22	६ १६	१८ १८	६ १६	१८ १८	६ १६	१८ १८	६ १२	१८ १५	६ १३	१८ १६	६ १६	१८ १८	६ १२	१८ १५	६ १३	१८ १६	६ १७	१८ १८	६ १२	१८ १३	६ १२	१८ १४
25	६ १७	१८ १५	६ १७	१८ १५	६ १७	१८ १५	६ १४	१८ १२	६ १५	१८ १३	६ १७	१८ १५	६ १४	१८ १२	६ १४	१८ १२	६ १८	१८ १५	६ १३	१८ १०	६ १४	१८ ११
28	६ १९	१८ ११	६ १९	१८ ११	६ १९	१८ ११	६ १६	१८ ०८	६ १७	१८ ०९	६ १९	१८ ११	६ १५	१८ ०८	६ १६	१८ ०८	६ १९	१८ १२	६ १५	१८ ०७	६ १५	१८ ०७
1 अक्टू.	६ २२	१८ ०७	६ २१	१८ ०७	६ २२	१८ ०७	६ १८	१८ ०४	६ १८	१८ ०४	६ २१	१८ ०७	६ १७	१८ ०४	६ १८	१८ ०३	६ २२	१८ ०७	६ १७	१८ ०२	६ १६	१८ ०३
4	६ २३	१८ ०४	६ २३	१८ ०३	६ २३	१८ ०४	६ १९	१८ ००	६ १९	१८ ००	६ २३	१८ ०४	६ १८	१८ ००	६ १९	१८ ००	६ २३	१८ ०४	६ १८	१७ ५९	६ १८	१७ ५९
7	६ २५	१८ ०१	६ २४	१८ ००	६ २४	१८ ००	६ २१	१७ ५७	६ २१	१७ ५७	६ २४	१८ ००	६ २०	१७ ५७	६ २१	१७ ५६	६ २५	१८ ००	६ २०	१७ ५६	६ २०	१७ ५६
10	६ २७	१७ ५७	६ २६	१७ ५६	६ २६	१७ ५६	६ २३	१७ ५४	६ २४	१७ ५५	६ २६	१७ ५६	६ २२	१७ ५३	६ २३	१७ ५३	६ २७	१७ ५६	६ २३	१७ ५२	६ २३	१७ ५२
13	६ २९	१७ ५३	६ २८	१७ ५२	६ २९	१७ ५२	६ २६	१७ ५०	६ २६	१७ ५०	६ २९	१७ ५२	६ २४	१७ ४९	६ २६	१७ ४९	६ ३०	१७ ५३	६ २५	१७ ४९	६ २५	१७ ४८
16	६ ३१	१७ ५०	६ ३०	१७ ४९	६ ३१	१७ ४९	६ २८	१७ ४७	६ २८	१७ ४७	६ ३१	१७ ४९	६ २६	१७ ४६	६ २८	१७ ४५	६ ३२	१७ ४९	६ २७	१७ ४५	६ २६	१७ ४५
19	६ ३३	१७ ४६	६ ३२	१७ ४५	६ ३३	१७ ४५	६ ३०	१७ ४३	६ ३०	१७ ४३	६ ३३	१७ ४५	६ २९	१७ ४२	६ ३०	१७ ४२	६ ३४	१७ ४६	६ २९	१७ ४१	६ २९	१७ ४१
22	६ ३६	१७ ४३	६ ३५	१७ ४३	६ ३५	१७ ४२	६ ३२	१७ ४०	६ ३२	१७ ४०	६ ३५	१७ ४२	६ ३१	१७ ३९	६ ३२	१७ ४०	६ ३६	१७ ४३	६ ३१	१७ ३८	६ ३१	१७ ३८
25	६ ३८	१७ ४०	६ ३८	१७ ४०	६ ३७	१७ ४०	६ ३४	१७ ३७	६.३४	१७ ३६	६ ३७	१७ ४०	६ ३३	१७ ३६	६ ३४	१७ ३६	६ ३८	१७ ४०	६ ३३	१७ ३५	६ ३२	१७ ३५
28	६ ४०	१७ ३७	६ ४०	१७ ३७	६ ३९	१७ ३७	६ ३६	१७ ३४	६ ३६	१७ ३३	६ ३९	१७ ३७	६ ३५	१७ ३३	६ ३६	१७ ३४	६ ४०	१७ ३७	६ ३५	१७ ३२	६ ३५	१७ ३२
31	६ ४३	१७ ३४	६ ४३	१७ ३४	६ ४२	१७ ३३	६ ३९	१७ ३१	६ ३९	१७ ३१	६ ४२	१७ ३४	६ ३८	१७ ३०	६ ३९	१७ ३१	६ ४३	१७ ३४	६ ३८	१७ २९	६ ३८	१७ २९
3 नवं.	६ ४५	१७ ३०	६ ४५	१७ ३१	६ ४४	१७ ३०	६ ४१	१७ २८	६ ४१	१७ २८	६ ४४	१७ ३१	६ ४०	१७ २७	६ ४१	१७ २८	६ ४५	१७ ३२	६ ४०	१७ २७	६ ४०	१७ २८

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
नवंबर	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
6	६ ४८	१७ २९	६ ४७	१७ २८	६ ४७	१७ २८	६ ४३	१७ २६	६ ४३	१७ २६	६ ४७	१७ २८	६ ४३	१७ २६	६ ४३	१७ २५	६ ४७	१७ २९	६ ४२	१७ २४	६ ४२	१७ २५
9	६ ५०	१७ २७	६ ४९	१७ २६	६ ४९	१७ २६	६ ४५	१७ २४	६ ४५	१७ २४	६ ४९	१७ २६	६ ४५	१७ २४	६ ४५	१७ २३	६ ५०	१७ २७	६ ४४	१७ २२	६ ४४	१७ २३
12	६ ५२	१७ २५	६ ५१	१७ २४	६ ५१	१७ २४	६ ४७	१७ २२	६ ४७	१७ २३	६ ५१	१७ २४	६ ४७	१७ २२	६ ४७	१७ २१	६ ५२	१७ २५	६ ४६	१७ २०	६ ४६	१७ २१
15	६ ५४	१७ २३	६ ५३	१७ २३	६ ५४	१७ २३	६ ५१	१७ २०	६ ५१	१७ २०	६ ५४	१७ २३	६ ४९	१७ २०	६ ५१	१७ २०	६ ५५	१७ २४	६ ४९	१७ १९	६ ४८	१७ १९
18	६ ५७	१७ २१	६ ५६	१७ २१	६ ५७	१७ २१	६ ५४	१७ १९	६ ५४	१७ १८	६ ५७	१७ २१	६ ५२	१७ १८	६ ५४	१७ १८	६ ५८	१७ २२	६ ५३	१७ १७	६ ५१	१७ १७
21	७ ००	१७ २०	६ ५९	१७ १९	६ ५९	१७ २०	६ ५६	१७ १८	६ ५६	१७ १७	६ ५९	१७ २०	६ ५५	१७ १७	६ ५६	१७ १७	७ ००	१७ २१	६ ५५	१७ १६	६ ५४	१७ १६
24	७ ०२	१७ १९	७ ०१	१७ १८	७ ०२	१७ १९	६ ५९	१७ १७	६ ५९	१७ १८	७ ०३	१७ १९	६ ५८	१७ १६	६ ५९	१७ १६	७ ०४	१७ २०	६ ५८	१७ १५	६ ५७	१७ १५
27	७ ०४	१७ १९	७ ०४	१७ १८	७ ०४	१७ १८	७ ०१	१७ १७	७ ०१	१७ १७	७ ०४	१७ १८	७ ००	१७ १६	७ ०२	१७ १५	७ ०५	१७ १९	७ ०१	१७ १४	६ ५९	१७ १५
30	७ ०७	१७ १८	७ ०६	१७ १८	७ ०७	१७ १८	७ ०४	१७ १६	७ ०४	१७ १६	७ ०६	१७ १८	७ ०३	१७ १५	७ ०४	१७ १५	७ ०७	१७ १९	७ ०३	१७ १४	७ ०२	१७ १४
3 दिसं	७ ०९	१७ १८	७ ०८	१७ १८	७ ०९	१७ १८	७ ०६	१७ १६	७ ०६	१७ १६	७ ०९	१७ १८	७ ०५	१७ १५	७ ०६	१७ १५	७ १०	१७ १९	७ ०५	१७ १४	७ ०४	१७ १४
6	७ १२	१७ १८	७ ११	१७ १७	७ १२	१७ १८	७ ०९	१७ १५	७ ०९	१७ १५	७ १२	१७ १८	७ ०८	१७ १५	७ ०९	१७ १५	७ १३	१७ १९	७ ०८	१७ १४	७ ०७	१७ १४
9	७ १४	१७ १८	७ १३	१७ १८	७ १४	१७ १८	७ ११	१७ १५	७ ११	१७ १५	७ १४	१७ १८	७ १०	१७ १५	७ ११	१७ १५	७ १५	१७ १९	७ १०	१७ १४	७ ०९	१७ १४
12	७ १६	१७ १९	७ १५	१७ १८	७ १६	१७ १९	७ १४	१७ १६	७ १४	१७ १६	७ १६	१७ १९	७ १२	१७ १६	७ १४	१७ १६	७ १७	१७ २०	७ १३	१७ १५	७ ११	१७ १५
15	७ १८	१७ २१	७ १७	१७ २०	७ १८	१७ २१	७ १६	१७ १८	७ १६	१७ १७	७ १८	१७ २१	७ १४	१७ १८	७ १६	१७ १७	७ १९	१७ २२	७ १५	१७ १६	७ १३	१७ १६
18	७ २०	१७ २२	७ १९	१७ २१	७ २०	१७ २१	७ १७	१७ १९	७ १७	१७ १८	७ २०	१७ २२	७ १६	१७ १८	७ १७	१७ १८	७ २१	१७ २३	७ १६	१७ १७	७ १५	१७ १७
21	७ २२	१७ २३	७ २१	१७ २२	७ २२	१७ २३	७ १९	१७ २१	७ १९	१७ २०	७ २२	१७ २३	७ १८	१७ २०	७ १९	१७ १९	७ २३	१७ २४	७ १८	१७ १८	७ १७	१७ १८
24	७ २३	१७ २४	७ २२	१७ २३	७ २३	१७ २४	७ २०	१७ २२	७ २१	१७ २२	७ २३	१७ २४	७ १९	१७ २१	७ २०	१७ २१	७ २४	१७ २५	७ १९	१७ २०	७ १८	१७ १९
27	७ २५	१७ २६	७ २४	१७ २५	७ २५	१७ २६	७ २१	१७ २३	७ २१	१७ २३	७ २५	१७ २६	७ २१	१७ २३	७ २१	१७ २२	७ २६	१७ २७	७ २०	१७ २१	७ २०	१७ २१
30	७ २६	१७ २८	७ २५	१७ २७	७ २६	१७ २८	७ २२	१७ २४	७ २२	१७ २४	७ २६	१७ २७	७ २२	१७ २४	७ २२	१७ २४	७ २७	१७ २८	७ २१	१७ २३	७ २१	१७ १४

हिमाचल प्रदेश के अन्य नगरों के लिए संस्कार सारिणी

धर्मशाला

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
काँगड़ा	+ ० २०
नूरपुर	+ १ २८
नगरोटा	+ ० ०४
खजियार	+ १ १२
ज्वालामुखी	+ ० १२
सरकाघाट	+ ० ०४
पालमपुर	– ० ४०
भुन्तर	– ३ ०४
बैजनाथ	– ० ५२

हमीरपुर

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
नादौन	+ ० ३२
सुजानपुरटिहरी	+ ० ०४

ऊना

नगर	संस्कार
गगरेट	+ १ ००
अम्ब	+ ० ४८
दौलतपुर	+ १ २०
चिन्तपूर्णी	+ ० ५६

बिलासपुर

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
घुमारवीं	+ ० ३६
भाखड़ा	+ १ २०
नैना देवी	+ १ १६

मण्डी

नगर	संस्कार
जोगिन्द्रनगर	+ ० ५२
सुन्दरनगर	+ ० २०
करसोग	– १ ०४
किन्नौर	– ५ २८

मण्डी

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
मनाली	– १ २४
बंजार	– १ २८
अनी	– ० ५६
निरमण्ड	– २ २४

शिमला

नगर	संस्कार
तारादेवी	+ ० १२
नारकण्डा	– १ ००
कुमारसेन	– १ ३६

शिमला

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
कोटरवाई	– १ ३२
रोहड़ू	– २ ०४

सोलन

नगर	संस्कार
सपाटू	+ ० ३२
परवाणु	+ ० १६
कसौली	+ ० २८
अर्की	+ ० ४०
नालागढ़	+ ३ ०८

चम्बा

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
बनीखेत	+ ० ४८
डलहौज़ी	– ० ४०
लाहौल स्पीति	– ३ २४
त्रिलोकनाथ	–३ ३४

नाहन

नगर	संस्कार
पौंटा साहिब	+ १ ०८
राजगढ़	– ० १२

चन्द्रमा-स्पष्ट द्वारा विंशोतरी दशा का भोग्य काल जानना

नीचे चन्द्रमा के अंश-कला की तालिका के सामने चन्द्र संचार की मेषादि बारह राशियों की तालिका तथा उनके द्वारा केतु, सूर्य, भौमादि ग्रहों द्वारा भोग्य दशा वर्षों की सारिणी लिख रहे हैं।

ध्यान रहे, आपके द्वारा किया गया चन्द्र स्पष्ट नितान्त शुद्ध होना चाहिए। चन्द्र स्पष्ट निकालने की सरल विधि हमारे कार्यालय से प्रकाशित ज्योतिष तत्त्व का अवलोकन करें॥

उदाहरण—यदि आपका चन्द्र स्पष्ट ५।१° ।५२' है तो इसका तात्पर्य हुआ कि **चन्द्रमा कन्या राशि** के १° अंश ५२' कला पर संचार कर रहा है। अब **सारिणी नं. I (क)** में चन्द्र-स्पष्ट के नीचे व १° अंश ५० कला के सामने और **चन्द्र राशि कन्या** के नीचे तालिका में देखने पर **सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ८ मास और ३ दिन** प्राप्त हुई। अब शेष २ कलाओं हेतु आगामी पृष्ठों पर **सारिणी नं. II (ख)** में सूर्य की २ कलाओं का भोग्यकाल देखने से ५ दिन प्राप्त हुए क्योंकि जैसे-जैसे चन्द्रमा के अंश बढ़ते हैं, दशा का भोग्यकाल कम होता जाता है। अत: **५ दिन घटा देने से हमें सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ७ मास, २८ दिन** प्राप्त हुई। शुद्ध चन्द्र स्पष्ट की गणित प्रक्रिया जानने के लिए **ज्योतिष तत्त्व** पढ़ें।

सारिणी नं० I (क)

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि				चन्द्र राशि				चन्द्र राशि				चन्द्र राशि			
		मेष-सिंह-धनु				वृष-कन्या-मकर				मिथुन-तुला-कुम्भ				कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
००	००	केतु	७	०	०	सूर्य	४	६	०	मंग	३	६	०	गुरु	४	०	०
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२८		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२५		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	०	२२		३	०	०
१	००		६	५	२१		४	०	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	४	२०		३	११	२१		२	१०	१९		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१६		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	०		२	७	१५		२	०	०
१	५०		६	०	१४	*	३	८	३		२	६	१३		१	९	१८
२	००		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	१०		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	७		१	०	०
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		०	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	०	४		०	७	६
३	००		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		०	४	२४
३	१०		५	४	२		३	०	२७		१	१०	१		०	२	१२
३	२०		५	३	००		३	०	०		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२८		१८	९	४
३	४०		५	०	२७		२	१०	६		१	६	२७		१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२५		१८	३	१३
४	००	केतु	४	१०	२४	सूर्य	२	८	१२	मंग	१	४	२४	शनि	१८	०	१८

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि				चन्द्र राशि				चन्द्र राशि				चन्द्र राशि			
		मेष-सिंह-धनु				वृष-कन्या-मकर				मिथुन-तुला-कुम्भ				कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
४	१०	केतु	४	९	२३	सूर्य	२	७	१५	मंग	१	३	२२	शनि	१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	१९		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	०	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		०	११	१६		१६	१०	१०
५	००		४	४	१५		२	३	०		०	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		०	९	१३		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		०	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	०	९		०	७	१०		१५	१०	२८
५	४०		४	०	९		१	११	१२		०	६	०९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		०	५	७		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		०	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		०	३	४		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		०	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		०	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	०		१	६	०	राहु	१८	०	०		१४	३	०
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	०	४
७	००		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	०	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	०	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		०	११	२१		१६	५	३		१२	७	१
८	००		२	९	१८		०	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०	केतु	२	८	१७	सूर्य	०	९	२७	राहु	१५	११	२१	शनि	१२	१	१०

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
८	२०	केतु	२	७	१५	सूर्य	०	९	०	राहु	१५	९	०	शनि	११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		०	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		०	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		०	६	९		१५	०	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		०	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		०	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७
९	२०		२	१	६		०	३	१८		१४	४	२४		१०	५	१२
९	३०		२	०	५		०	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६
९	४०		१	११	३		०	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२		०	०	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	०	चंद्र	१०	०	०		१३	६	०		९	६	०
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	०		१३	०	१८		९	०	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	०		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	००		१	२	२१		९	३	०		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	०	१८		९	०	०		११	८	१२		७	७	६
११	३०		०	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		०	१०	१५		८	९	०		११	३	०		७	१	१५
११	५०		०	९	१४		८	७	१५		११	०	९		६	१०	१९
१२	००		०	८	१२		८	६	०		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		०	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		०	६	९		८	३	०		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		०	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		०	४	६		८	०	०		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		०	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		०	२	३		७	९	०		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०		०	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	०	०		७	६	०		९	०	०		४	९	०
१३	३०		१९	९	०		७	४	१५		८	९	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	०		७	३	०		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	०		७	१	१५		८	३	२७		४	०	१३
१४	००		१९	०	०		७	०	०		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	०		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	०		६	९	०		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०	शुक्र	१८	३	०	चंद्र	६	७	१५	राहु	७	५	३	शनि	३	१	१

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
१४	४०	शुक्र	१८	०	०	चंद्र	६	६	०	राहु	७	२	१२	शनि	२	१०	६
१४	५०		१७	९	०		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	०		६	३	०		६	९	०		२	४	१५
१५	१०		१७	३	०		६	१	१५		६	६	९		२	१	१९
१५	२०		१७	०	०		६	०	०		६	३	१८		१	१०	२४
१५	३०		१६	९	०		५	१०	१५		६	०	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	०		५	९	०		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	०		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	०	०		५	६	०		५	४	२४		०	११	१२
१६	१०		१५	९	०		५	४	१५		५	२	३		०	८	१६
१६	२०		१५	६	०		५	३	०		४	११	१२		०	५	२१
१६	३०		१५	३	०		५	१	१५		४	८	२१		०	२	२६
१६	४०		१५	०	०		५	०	०		४	६	०	बुध	१७	०	०
१६	५०		१४	९	०		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	०		४	९	०		४	०	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	०		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	०	०		४	६	०		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	०		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	०		४	३	०		३	१	१४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	०		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	०	०		४	०	०		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	०		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	०		३	९	०		२	३	०		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	०		३	७	१५		२	०	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	०	०		३	६	०		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	०		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	०		३	३	०		१	४	६		१४	०	९
१९	१०		११	३	००		३	१	१५		१	१	१५		१३	९	२२
१९	२०		११	०	०		३	०	०		०	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	०		२	१०	१५		०	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	०		२	९	०		०	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	०		२	७	१५		०	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	०	०		२	६	०	गुरु	१६	०	०		१२	९	०
२०	१०		९	९	०		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	०		२	३	०		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	०		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	०	०		२	०	०		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०	शुक्र	८	९	०	चंद्र	१	१०	१५	गुरु	१५	०	०	बुध	११	८	७

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
२१	०	शुक्र	८	६	०	चंद्र	१	९	०	गुरु	१४	९	१८	बुध	११	५	२१
२१	१०		८	३	०		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	०	०		१	६	०		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	०		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	०		१	३	०		१४	०	०		१०	७	१५
२१	५०		७	३	०		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	०	०		१	०	०		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	०		०	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	०		०	९	०		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	०		०	७	१५		१३	०	०		९	६	२२
२२	४०		६	०	०		०	६	०		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	०		०	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	०		०	३	०		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	०		०	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	०	०	मंग	७	०	०		१२	०	०		८	६	०
२३	३०		४	९	०		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	०		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	०		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	०	०		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	०		६	६	२३		११	०	०		७	५	०७
२४	२०		३	६	०		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	०		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	०	०		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	०		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	०		६	१	१५		१०	०	०		६	४	१५
२५	१०		२	३	०		६	०	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	०	०		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	०		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	०		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	०		५	८	८		९	०	०		५	३	२२
२६	०		१	०	०		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		०	९	०		५	६	५		८	७	६		४	१०	१९
२६	२०		०	६	०		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		०	३	०		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	०	०		५	३	०		८	०	०		४	३	०
२६	५०		५	११	३		५	१	२९		७	९	१८		४	०	१३
२७	०		५	१०	६		५	०	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०	सूर्य	५	९	९	मंग	४	११	२६	गुरु	७	४	२४	बुध	३	७	१०
२७	२०	सूर्य	५	८	१२	मंग	४	१०	२४	गुरु	७	२	१२	बुध	३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	०	०		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	०		४	४	१५		६	०	०		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	०	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	०	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	०	०		१	०	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		०	१०	०६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		०	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		०	५	०३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		०	२	१७
३०	०		४	६	०		३	६	०		४	०	०		०	०	०

सारिणी नं० II (ख)

अनुपातिक चन्द्र कलाओं के अनुसार शेष भोग्य दशा

कला	केतु		शुक्र		सूर्य		चन्द्र		मंगल		राहु		गुरु		शनि		बुध		कला
	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	
१	०	०३	०	०९	०	०३	०	०५	०	०३	०	०८	०	०७	०	०९	०	०८	१
२	०	०६	०	१८	०	०५	०	०९	०	०६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५	२
३	०	०९	०	२७	०	०८	०	१४	०	०९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३	३
४	०	१३	१	०६	०	११	०	१८	०	१३	१	०२	०	२९	१	०४	१	०१	४
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	०६	१	१३	१	०८	५
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६	६
७	०	२२	२	०३	०	१९	१	०२	०	२२	१	२७	१	२०	२	००	१	२४	७
८	०	२५	२	१२	०	२२	१	०६	०	२५	२	०५	१	२८	२	०८	२	०१	८
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	०५	२	१७	२	०९	९
१०	१	०१	३	००	०	२७	१	१५	१	०१	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७	१०

ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा का ज्ञान

नीचे लिखे चक्रों में अपने जन्म नक्षत्र को देखें। जिस ग्रह के नीचे जन्म नक्षत्र होगा उसी ग्रह की दशा जन्म समय में होगी और प्रत्येक ग्रह की दशा के वर्ष भी चक्र में लिखे हुए हैं।

दशा का भुक्त भोग्य ज्ञान—जन्म समय जो नक्षत्र हो उसका भयात (जन्म समय तक जितना नक्षत्र व्यतीत हो गया हो) और भभोग (कुल नक्षत्र) बनाओ फिर उसके पलादि बनाकर भयात के पलों को जन्म दशा के वर्षों से गुणा दो और भभोग के पलों से भाग दो, लब्ध व्यतीत दशा के वर्ष आवेंगे। शेष को १२ से गुणा कर भभोग से भाग दो लब्ध मास निकलेंगे, शेष को ३० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध दिन आवेंगे, शेष को ६० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध घड़ी आवेंगी, शेष को ६० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध पल इत्यादि आवेंगे। यह भुक्त दशा के वर्ष मासादि आवेंगे, जन्म समय की दशा के कुल वर्षों में से घटा दो, लब्ध भोग्य दशा आवेगी, इसमें आगामी ग्रहों की दशा के वर्षों को जोड़ते जाने से दशा चक्र हो जाएगा। अधिक सूक्ष्म रूप से दशाऽन्तरदशा का ज्ञान करने के लिए हमारे कार्यालय से **ज्योतिष तत्त्व** मंगवा कर पढ़ें।

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७			
कृ. उ. फा. उ. षा.				रोहि. हस्त श्रवण				मृग. चित्रा. धनि.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९			
आर्द्रा. स्वा. शत.				पुन. विशा.पू. भा.				पुष्य. अनु.उ. भा. ५७			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२
शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०
सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
श्ले. ज्ये. रेवती				मघा. मूला. अश्वि				पू. फा. पू. षा. भर.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञान के लिए चक्र

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	बृ.	मा.	४८	मं.
मं.	०	१०	पिं.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०
भा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पिं.	२	०	धा.	४	०
श्रवण, आर्द्रा चित्रा			पुन. स्वा. धनि			पुष्य विशा शत.			श्ले. अनु. पूभा. अश्वि		

भ्रद्रिका ५			उल्का ६			मिद्धा ७			संकटा ८		
मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पिं.	५	१०
सं.	१३	१०	मं.	२	०	पिं.	४	२०	धा.	८	०
मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०
मघा. ज्ये. उभा. भर.			पूफा मूला रेव कृति			उफा. पूषा रोह			हस्त उषा मृग		

योगिनी दशा विचार—योगिनी दशा कुल ३६ वर्ष की होती है। प्रत्येक ३६ वर्षों के पश्चात् पुनः उसी दशा की पुनरावृत्ति होती है। योगनी दशाओं में क्रमशः मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा—ये आठ नाम हैं। इनकी वर्ष संख्या भी क्रमानुसार 1+2+3+4+5+6+7+8=36 वर्ष होते हैं। मंगला, पिंगला आदि योगिनी दशाएँ अपने नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती हैं।

योगिनी दशा की विधि—अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र तक की संख्या में ३ जोड़कर ८ द्वारा भाग देने पर शेष १ बचे तो मंगला, २ बचें तो पिंगला, ३ बचे तो धान्या एवं च शेष ८ या ० बचे तो संकटा की दशा होगी। उदाहरणार्थ—यदि जन्म नक्षत्र अनुराधा हो, तो अश्विनी से अनुराधा तक गिनने पर १७ की संख्या हुई। इनमें ३ जमा करने पर कुल योग २० मिला। इसको ८ द्वारा भाग देने पर २ लब्धि तथा शेष ४ बचे। पूर्वोक्त क्रमानुसार मंगला से गिनने पर चौथी दशा—अर्थात् भ्रामरी की दशा (जन्मकाल से) प्रारम्भ होगी। योगिनी की भुक्त-भोग्य दशा अन्तरदशा जानने के लिए ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।

अन्तर्दशामासादि शुभ दशा—मंगला, धा. भ. सि., **नेष्टदशा**—पिंगला, भ्रामरी, उल्का, संकटा।

अन्तर्दशा निकालने की विधि—जब किसी ग्रह की अन्तरदशा निकालनी हो तो उस ग्रह के वर्षों को पृथक २ हर एक ग्रह की दशा के वर्षों से गुणा कर महादशा के वर्षों से भाग दें (विंशोत्तरी १२०) (अष्टोत्तरी १०८) (योगिनी ३६) भाग देने से जो अंक आवे अन्तरदशा के वर्ष, मासादि आवेंगे।

अनिष्ट निवारक नवग्रह यन्त्र और उनको धारण करने की विधि

संसार में प्रत्येक मनुष्य को अपने पूर्व जन्म में तथा वर्तमान जन्म में किए गए कर्मों एवं नव ग्रहों के प्रभावस्वरूप अनेक प्रकार के शुभ-अशुभ (सुख-दुखादि) फलों की प्राप्ति होती है। जिस पुरुष/स्त्री की जन्म राशि या प्रसिद्ध राशि पर सूर्य, चन्द्र, मंगल आदि ग्रह अशुभ प्रभाव डाल रहे हों, उन्हें तदानुसार सम्बन्धित ग्रह यंत्र को अष्टगंध की स्याही तथा अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर लिखकर सोने, चांदी अथवा तांबे के तावीज़ में रखकर गले में धारण करें अथवा पुरुष दाहिनी भुजा में तथा स्त्री बाईं भुजा में धारण करें। इन यंत्रों को सोना, चांदी अथवा तांबे के लाकेट अथवा प्लेट पर खुदवा कर उस पर सम्बन्धित ग्रह की पूजा शुभ मुहूर्त में विधिपूर्वक धारण करने से ग्रह जनित अनिष्ट प्रभाव का निवारण होकर सब प्रकार की बाधाएं दूर होती हैं।

अष्टगंध—केशर, कस्तूरी, कपूर, गोरोचन, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, अगर-तगर तथा कुमकुम।

सूर्य का यन्त्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

चन्द्र का यन्त्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

मंगल का यन्त्र

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

बुध का यन्त्र

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

गुरु का यन्त्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

शुक्र का यन्त्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

शनि का यन्त्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

राहु का यन्त्र

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

केतु का यन्त्र

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

'नवग्रहों के ध्यान मन्त्र'

सूर्य—पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भः समद्युतिः। सप्तश्वः सप्तजुश्च द्विभुजः स्यात् सदारविः॥
चन्द्रमा—श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेताश्वः। श्वेतवाहनः गदापाणिर्द्विबाहुश्च कर्तव्यो वरदः शशी॥
मंगल—रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगदाधरः। चतुर्भुजः रक्तरोमा वरदः स्याद् धरासुतः॥
बुध—पीतमाल्याबरधरः कर्णिकारसमद्युतिः। खड्गचर्मगदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः॥
बृहस्पति—देवानां गुरुः तद्वत् पीतवर्णः चतुर्भुजः। दण्डी च वरदः कार्यः साक्षसूत्रकमण्डलुः॥
शुक्र—दैत्यानां गुरुः तद्वत् श्वेतवर्णः चतुर्भुजः। दण्डी च वरदः कार्यः साक्षसूत्रकमण्डलुः॥
शनि—इन्द्रनीलद्युतिः शूली वरदोगृध्रवाहनः। बाणबाणासनधरः कर्त्तव्योऽर्कसुतस्तथा॥
राहु—करालवदनः खड्गचर्मशूली वरप्रदः। नीलसिंहासनस्थश्च राहुरत्र प्रशस्यते॥
केतु—धूम्रा द्विबाहवः सर्वेगदिनो विकृताननाः। गृध्रासनगता नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः॥

(मत्स्यपुराण ९४।१—९)

सूर्यादि ग्रहों के यंत्र-धारण विधि

सूर्य यन्त्र—जन्मपत्री में सूर्य की स्थिति अशुभ हो अथवा विंशोतरी दशा में सूर्य की अशुभ दशा चल रही हो, गोचर स्थिति भी अशुभ हो, तो सूर्य यंत्र को शुक्ल पक्ष के रविवार के दिन (यदि कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र भी हो तो और भी अच्छा है) उपर्युक्त विधि अनुसार अष्टगन्ध से लिखकर सोने या ताम्र के तावीज़ में रखकर अथवा सोने या ताम्र की प्लेट पर खुदवा कर लाल रुमाल एवं लाल (गुलाबी) डोरी में लपेट कर अपने पास रखे। प्रातः धारण करने से पूर्व यंत्र पर "**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः**" इस मन्त्र का ७ हजार बार जाप करना कल्याणकारी होगा।

चन्द्र यन्त्र—आपकी राशि को जन्मकुण्डली में दशा-अन्तरदशा अथवा गोचर में चन्द्रमा अशुभ हो तो चन्द्र यन्त्र को शुक्ल पक्ष के सोमवार विशेषकर रोहिणी, हस्त या श्रवण नक्षत्र में सायं काल को उपर्युक्त विधि अनुसार चांदी का यंत्र धारण करें अथवा भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर चांदी के तावीज़ में रखकर सफेद डोरी में धारण करें। यंत्र धारण करने से पूर्व उस पर "**ॐ स्रों सोमाय नमः**" या "**ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः**" इस मंत्र का ११००० पाठ पूरा कर लेना शुभ होगा।

मंगल यन्त्र—अपनी राशि या कुण्डली में मंगल ग्रह के अनिष्ट निवारण हेतु शुक्ल पक्ष के मंगलवार को मृगशिर, चित्रा या धनिष्टा नक्षत्र कालीन "**ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः**" मन्त्र को दस हजार संख्या में जाप एवं पूजा के पश्चात् ताम्बे का यन्त्र (प्लेट, लाकेट आदि) धारण करना श्रेयकर रहता है। ताम्र यंत्र के अभाव में भोजपत्र पर अष्टगंध से यंत्र लिखकर ताम्बे के तावीज़ में धारण कर सकते हैं।

बुध यन्त्र—अपनी राशि या कुण्डली में बुध के अनिष्ट निवारण हेतु शुक्ल पक्ष के बुधवार को आश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र के समय सोने या चांदी की प्लेट, अंगूठी या लाकेट पर खुदवा कर हरे रुमाल में बुध यंत्र धारण करें। धारण करे से पूर्व इस पर बुध के बीज मंत्र का ९००० की संख्या में पाठ करना शुभ होगा।

गुरु यन्त्र—अपनी राशि पर कुण्डली में गुरु के अरिष्ट निवारण हेतु शुक्ल पक्ष के गुरुवार को पुनर्वसु, विशाखा अथवा पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के समय या किसी अन्य शुभ मुहूर्त पर सोने, चांदी या ताम्बे की प्लेट अथवा लाकेट या अंगूठी पर यन्त्र खुदवा कर गुरु का बीजमंत्र "**ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः**" (१९०००) पढ़ते हुए पीले रुमाल में लपेट कर अपने पास रखने से अनिष्ट प्रभाव दूर हो जाता है।

शुक्र यन्त्र—अपनी राशि या कुण्डली में शुक्र ग्रह के अनिष्ट के निवारण हेतु शुक्ल पक्ष के शुक्रवार को पूर्वाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा या भरणी नक्षत्र कालीन अथवा किसी अन्य शुभ मुहूर्त में चांदी की प्लेट या लाकेट अथवा अंगूठी पर यंत्र खुदवा कर शुक्र का बीज मंत्र "**ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः**" १६००० की संख्या में पढ़कर श्वेत चन्दन और श्री गंगा जल के ३ छींटे देते हुए गुलाबी रुमाल में लपेटकर अपने पास रखें।

शनि यन्त्र—अपनी नाम राशि या जन्म कुण्डली में शनि ग्रह के अनिष्ट निवारण हेतु कृष्ण पक्ष के शनिवार को पुष्य, अनुराधा या उत्तराभाद्रपद नक्षत्र कालीन अथवा किसी अन्य शुभ मुहूर्त में सोने या सप्तधातु की प्लेट, लाकेट अथवा अंगूठी पर यंत्र खुदवा कर, शनि के बीज मंत्र "**ॐ शं शनैश्चराय नमः**" मन्त्र की ३ माला का जाप करके यथाशक्ति दान के उपरान्त काले रुमाल में लपेट कर अपने पास रखें।

राहु यन्त्र—अपनी नाम राशि या जन्मकुण्डली में राहु के अनिष्ट निवारण हेतु कृष्ण पक्ष के शनिवार को आर्द्रा, स्वाती या शतभिषा नक्षत्र कालीन अथवा किसी अन्य शुभ मुहूर्त में चांदी अथवा सप्तधातु की प्लेट, लाकेट अथवा अंगूठी में यन्त्र खुद्वा कर राहु के बीज मन्त्र "**ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः**" की कम-से-कम तीन माला का जाप करके दानपूर्वक धूम्र वर्ण के रुमाल में लपेट कर अपने पास रखने से लाभ होगा।

केतु यन्त्र—अपनी नाम राशि या जन्म कुण्डली में केतु के अनिष्ट प्रभाव को दूर करने के लिए शुक्ल पक्ष के मंगलवार या रविवार को अश्विनी, मघा या मूला नक्षत्र में अथवा किसी शुभ मुहूर्त कालीन चांदी या सप्तधातु की प्लेट, लाकेट या अंगूठी में यंत्र को खुदवाकर केतु के बीज मन्त्र "**ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः**" की तीन माला का जाप करके दानपूर्वक लहसुनिया जैसे वर्ण के रुमाल में लपेट कर अपने पास रखने से नेष्ट फल दूर हो जाता है।

भाग्योदय देखने का चक्र

यदि-आपको किसी व्यक्ति के भाग्य का फल जानना हो, तो उस व्यक्ति को कहें कि वह व्यक्ति 1 से 31 की संख्या के भीतर कोई भी अंक मन में सोच ले। तदुपरान्त उसको पूछें कि नीचे लिखे A से लेकर E तक के पाँच यन्त्रों में से किस-किस यन्त्र में उसका सोचा हुआ अंक विद्यमान् है। जिस-जिस यन्त्र में अमुक व्यक्ति का सोचा हुआ अंक मिले, उस यन्त्र के दाईं तरफ के सबसे ऊपर के कोने वाले पहले हिन्दसों को परस्पर जमा कर लेने से व्यक्ति विशेष के मन में सोची हुई संख्या पता लग जाएगी। उस अंक की संख्या के आधार पर व्यक्ति के '**भाग्य का फल**' आगे लिखे अनुसार जानें—

उदाहरण—मान लो किसी मनुष्य ने अपने मन में 22 का अंक सोचा है। अब देखो कि यह 22 का अंक खाना नं० A, B, C, D, E में कहाँ मिलता है। अब इन यन्त्रों B,C, E के ऊपर के दायें कोनें के अंकों 2 + 4 +16 को जोड़ो तो 22 का जोड़ बनता है। अत: प्रश्नकर्त्ता ने 22 का अंक सोचा है और इसके अनुसार देखा तो लिखा है, कि विदेश गमन सम्बन्धी विचार बनेगा। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन के योग हैं। इसी भान्ति अन्य अंकों के बारे में भी विचार करें।

नं० A

7	5	3	1
15	13	11	9
17	19	21	23
25	27	29	31

नं० B

7	6	3	2
15	14	11	10
23	22	19	18
31	30	27	26

नं० C

30	29	28	4
22	21	20	23
15	13	12	14
5	6	7	31

नं० D

30	10	28	8
26	25	24	31
14	13	12	27
9	29	11	15

नं० E

29	30	31	16
26	25	24	20
21	22	23	27
17	18	19	28

(1) तुम्हारे मन की मुराद उस समय पूरी होगी, जब तुमकों इस का ध्यान भी न होगा। (2) धैर्य रखें, भाग्योदय होने वाला है। फिर भी प्रतिदिन गायत्री मन्त्र का पाठ करते रहें। (3) किसी ऐसे साधन द्वारा तुम्हारी आशा पूर्ण होगी जिसका आपको ध्यान भी नहीं होगा। (4) जिस गुप्त चिन्ता के लिए आप परेशान हो, उसकी सफलता के लिए अभी कुछ विलम्ब हो सकता है, अपना पुरुषार्थ जारी रखें। (5) आपके लिए खुशी का समय आने वाला है, धैर्य रखें। सूर्य उपासना करना शुभ होगा। (6) घबराओ नहीं, तुम्हारी बेहतरी का साधन (ईश्वर कृपा से) शीघ्र निकल आएगा। (7) आपकी मुश्किलों का हल माता-पिता के आशीर्वाद से ही निकल पाएगा। (8) तुम्हारे भाग्य में धन-सम्पत्ति का सुख लिखा है, किन्तु विशेष परिश्रम करना होगा, लक्ष्मी चालीसा का पाठ करना शुभ रहेगा। (9) थोड़े दिनों में आपके सामने विदेश यात्रा सम्बन्धी प्रस्ताव रखा जाएगा, इसको स्वीकृति देने से पहले गम्भीरता से विचार करना उचित होगा। (10) इस समय आपका भाग्य गर्दिश में है, विशेष पुरुषार्थ एवं शिव उपासना करने से सफलता मिलेगी। (11) आपके संघर्ष और परेशानियों का समय बीत गया है, आने वाले दिनों में धन-लाभ एवं सुख के साधन बढ़ेंगे। (12) उतावलेपन से बनते काम बिगड़ सकते हैं। धीरज से काम लें, धीरे-धीरे ही बिगड़े कामों में सुधार आएगा। (13) किसी प्रिय बन्धु के सहयोग से बिगड़ा हुआ कोई विशेष काम बनेगा। (14) अभी बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ रहेंगी। मानसिक तनाव व उद्‌विघ्नता से बचें। (15) भाग्य में अभी कशमकश रहेगी। लगभग अढ़ाई महीने बाद सुधार के योग हैं। (16) ईश्वर पर भरोसा रखो, लगभग दो महीने बाद भाग्य में परिवर्तन होने के संकेत मिलते हैं। (17) अभी सितारे गर्दिश में है, लगभग डेढ़ मास बाद हालात में सुधार होगा। (18) अनावश्यक चिन्ता एवं तनाव से बचें, अच्छा समय आने वाला है। (19) उत्साहपूर्वक कर्म करते रहें, भाग्य में परिवर्तन व शुभ लाभ के योग पाए जाते हैं। (20) अपने भाग्य एवं पुरुषार्थ पर भरोसा रखें, मनोवांछित कार्यों में सफलता मिलने वाली है। (21) वर्तमान काल में आपके भाग्य के सितारे गर्दिश में है। लगभग एक मास बाद हालात में सुधार के योग हैं। (22) विदेश गमन सम्बन्धी विचार बनेगा। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन के योग हैं। (23) आर्थिक परेशानियों के कारण तनाव होगा, लगभग डेढ़ मास बाद भाग्य में लाभ व उन्नति के योग हैं। (24) वर्तमान में समय संघर्षपूर्ण होगा। निकट भविष्य में मनोवांछित कार्यों में सिद्धि प्राप्ति होने के संकेत हैं। (25) किसी अंतरंग मित्र की सहायता से कोई बिगड़ा काम बनेगा। अचानक धन लाभ भी होगा। (26) वृथा कामों में समय न गंवाओ, आने वाले दो महीनों में लाभ व उन्नति के योग हैं। (27) व्यर्थ की चिन्ता न करें, लगभग डेढ़ मास बाद भाग्य में सुखद परिवर्तन होने के आसार हैं। (28) उत्साह से अपने कर्त्तव्य पालन में लगे रहें, लगभग दो मास में भाग्य में शुभ परिवर्तन होने वाला है। (29) संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के कारण मन अशान्त रहेगा। लगभग अढ़ाई मास बाद आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करें। (30) अपने निश्चय पर दृढ़ रहें, लगभग डेढ़ मास आर्थिक कामों में सुधार होगा। (31) वर्तमान परिस्थितियां संघर्षपूर्ण होंगी। कार्य-व्यवसाय में परिवर्तन के बाद सफलता प्राप्त होगी।

स्वप्न—शकुन का शुभाशुभ फल विचार

दैनिक जीवन में मनुष्य की जो वासनाएँ अतृप्त अथवा अपूर्ण रहती हैं, वही स्वप्न रूप में येन-केन प्रकारेण पूर्ति का आभास कराती हैं। सूर्योदय के कुछ पूर्व अथवा ब्रह्म मुहूर्त्त में देखे गए स्वप्न का फल दस दिनों में, रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष के पश्चात्, रात्रि के दूसरे प्रहर में देखे गए का फल छः मास में, तृतीय प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल तीन मास के बाद, रात्रि के अन्तिम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक मास में प्रकट होता है, जबकि दिन में देखे गए स्वप्न विश्वसनीय नहीं होते। शुभ सांकेतिक स्वप्न देखने के पश्चात् सोना नहीं चाहिए, शेष रात्रि भजन, चिंतन में बितानी चाहिए तथा किसी को अपना स्वप्न बताना भी नहीं चाहिए। इसके विपरीत अशुभ स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाएं तथा प्रात:काल यदि उस अशुभ स्वप्न की स्मृति ताजी रहे तो गुरुजनों को उसे बतला दें। अशुभ निवारण के लिए गायत्री पाठ, स्नानदानादि, अनुष्ठानादि कार्यों का सम्पादन करें। अधिक जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से स्वप्न ज्यो. विज्ञान सम्बन्धी पुस्तक मंगवाएँ।

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
अंगूठी पहनना	धन लाभ व प्रसन्नता	कैंची चलाना	व्यर्थ विवाद	गर्भपात	गम्भीर रोग	ज्वर पीड़ित	स्वास्थ्य ठीक	ढोलक बजाना	किसी व्यक्ति से भेंट
आम का वृक्ष देखना	सन्तान सुख	कौआ बोलते देखना	बुरा समाचार मिले	घूंघट देखना	नया कारोबार	जुआ खेलना	धन हानि	तम्बू देखना	नया काम शुरु करें
अतिथि देखना	आकस्मिक विपत्ति	कंघी करना	इच्छा पूर्ण हो	घोड़े से गिरना	परेशानी, चिन्ता	जेब काटना	धन हानि	तलवार चलाना	शत्रु पर विजय
अन्धेरा देखना	दु:ख मिले	कबूतर देखना	शुभ समाचार	घाट पर नहाना	तीर्थ यात्रा	जड़ें देखना	दीर्घायु	तपस्वी देखना	आत्म उन्नति
आकाश से गिरना	मान हानि, चिन्ता	काला नाग	राज्य सम्मान	घायल देखना	संकट से मुक्त होना	जड़ें काटना	संकट का सूचक	तैरते देखना	आयु में वृद्धि
अर्थी देखना	रोग मुक्त	किला देखना	तरक्की पाना	घर बनाना	प्रसिद्धि प्राप्त हो	जनाजा दखना	धन लाभ/तरक्की	तर्पण करते देखना	मृत्यु की सूचना
अग्नि देखना	पित्त सम्बन्धी रोग	कोढ़ी देखना	रोग सूचक	घडी देखना	यात्रा का संकेत	झगड़ा देखना	प्रसन्नता मिले	तारे देखना	मनोरथ सिद्धि
आकाश देखना	तरक्की होना	कन्या देखना	तीर्थ यात्रा	घोड़े पर बैठना	सफलता का सूचक	झाडू देखना	नुकसान हो	तीर मारना	खुशी मिले
आँवला खाना	स्वास्थ्य लाभ	कोयला देखना	व्यर्थ का झगड़ा	चोट लगना	स्वास्थ्य लाभ	झण्डा देखना	सुयश/धन लाभ	तूफान देखना	परेशानी बढ़े
अपने को मृत देखना	आयु वृद्धि	कीचड़ में फंसना	कष्ट हो, व्यय हो	चरखा देखना	आर्थिक लाभ	झांकी देखना	अशुभ	तीर्थ देखना	धार्मिक खींच
आग जलाकर पकड़ना	व्यर्थ व्यय हो	कटा सिर देखना	चिन्ता परेशानी	चावल खाना	शुभ समाचार	झोली देखना	विजय संकेत	तितली देखना	प्रेम सम्बन्ध में सफलता
आत्महत्या करना	दीर्घायु	कुत्ता देखना	उत्तम मित्र प्राप्त हो	चोर देखना	धन प्राप्ति	झोंपड़ी देखना	सुरक्षा सूचक	तोता देखना	धन लाभ
आलू देखना	मुसीबत आना	कोयल देखना	कोई शुभ समाचार	चादर देखना	बदनामी हो	झरना देखना	दु:ख दूर हों	तलाक होते देखना	दाम्पत्य सुख में बाधा
आपरेशन देखना	रोग के चिन्ह	कढ़ाई करते देखना	प्रेम या व्यापार में सफलता	चांदी के जेवर	सम्बन्ध विच्छेद	टिकट लेना	सम्बन्ध टूटना	तरक्की होते देखना	योजनाओं में सफलता
अस्त्र-शस्त्र देखना	दु:खों से निपटारा हो	कबाब खाना	अपयश/विवाद	चौकीदार देखना	धनागमन का संकेत	टोकरी देखना	व्यापार में वृद्धि	तराजू देखना	व्यापार लाभ
इन्द्रिय देखना	सन्तान सुख	कब्रिस्तान देखना	प्रतिष्ठा वृद्धि	चीखें मारना	परेशानी व कष्ट	टाट देखना	सम्मानजनक स्थिति	ताली बजाना	खुशी मिले
इम्तहान में फेल होना	शुभ फल प्राप्ति	खून करना	संकट आना	चुनरी देखना	सौभाग्य प्रतीक	टेलीफोन करना	शुभ समाचार	ताश खेलना	व्यापार लाभ
ईमारत बनाना	धन लाभ, तरक्की	खिलौना देखना	सुख शान्ति	छुरी मारना	परिवार से वाद विवाद	टापू देखना	संकट लक्षण	ताला बन्द देखना	कार्यों में रुकावट
ईंजन देखना	योजनाएं असफल	खरबूजा देखना	धन लाभ	छिपकली देखना	अचानक धन लाभ	टोपी देखना	प्रगति हो	तरबूज देखना	परेशानी
ईमली खाना	पुत्र प्राप्ति	खेत देखना	संकट पूर्ण	छींकना	कार्य बाधा	ठग मिलना	धन हानि	तांगा देखना	झगड़ा हो
ईमली का पेड़ देखना	स्वास्थ्य	खरगोश देखना	स्त्री से मिलाप	छाता देखना	चिन्ताओं से छुटकारा	ठिठुरना	उज्ज्वल भविष्य	थूक देना	परेशानी बढ़े
इन्द्रधनुष देखना	जीवन में परिवर्तन	गुरु देखना	कार्य सफलता	छपाई देखना	अपमानित होना	ठोकर लगते देखना	सफलता का सूचक	थप्पड़ मारना	कलह क्लेश
उल्लू देखना	रोग अथवा शोक हो	गोबर देखना	पशु लाभ हो	छंटनी देखना	पदोन्नति	ठाकुर देखना	आध्यात्मिक प्रवृत्ति	थप्पड़ खाना	शुभ
उल्टा लटके देखना	अपमान मिले	गंगा देखना	शेष जीवन सुखी	जख्म देखना	परेशानियां	डॉक्टर देखना	रोग उत्पत्ति	थन स्पर्श करना	धन प्राप्ति
ऊँट देखना	अंग घात	ग्रहण देखना	रोग व चिन्ता	जादूगर देखना	अशुभ लक्षण	डूबते देखना	कठिनाईयों का सामना	दूध पीना	खुशी प्राप्ति
ऊँचाई पर चढ़ना	तरक्की व मान	गोली चलते देखना	विपत्ति निवारण	जहाज देखना	परेशानी दूर हो	डोली देखना	कोई परेशानी हो	दरवाजा देखना	नए कार्य का आरम्भ
ऐनक देखना (काली)	निराशा	गुलाब देखना	मनोकामना पूर्ण हो	जिन्दा जलना	धन की प्राप्ति	डाकिया देखना	समाचार प्राप्त हो	दही देखना	सफलता
कमल देखना	धन प्राप्ति	गरीबी देखना	सुख समृद्धि	जल देखना	मान सम्मान	डाकू देखना	धन हानि	दाँव लगाना	भारी हानि

स्वप्न	फल
दान करना	शुभ
दर्जी देखना	काम बिगड़ना
दांत गिरते देखना	दुःख एवं झंझट
दलदल देखना	व्यर्थ चिन्ता बढ़े
दवाई पीना	रोग नाश
दुकान (भरी) देखना	धन लाभ
दुकान (खाली) देखना	धन हानि
देवी देवता देखना	खुशी प्राप्ति
दक्षिणा देना	मंगल कार्य सूचक
दरिया में नहाना	रोग नाश
दीवार गिरना	धन हानि
दक्षिणा देना	मंगल कार्य
दाह संस्कार देखना	दीर्घायु
धन देखना	धन की प्राप्ति
धूल देखना	यात्रा पड़े
धमकी देना	शत्रु पर विजय
धार्मिक कार्य करना	पारिवारिक सुख
धोबी देखना	सफलता हो
धुआं देखना	कार्य में विघ्न
धूप देखना	पदोन्नति, लाभ हो
धनुष खींचना	लाभप्रद यात्रा हो
नदी में गिरना	फिक्र, चिन्ता
नंगा देखना	कष्ट प्राप्ति
नदी का पानी पीना	राज्य से लाभ
न्यायालय देखना	झगड़े में सफलता
नदी देखना	आकांक्षा पूर्ति
नवयौवना देखना	प्रेम सम्बन्ध
नाखून काटना	रोग से मुक्ति
नाव में बैठना	झूठा आरोप लगे
नाग देखना	सुख प्राप्ति
नृत्य देखना	धन प्राप्ति
पत्थर देखना	विपत्ति
प्यासा होना	कार्य बाधा
पुल देखना	शुभ यात्रा हो
परछाई देखना	अशुभ होना
पर्व देखना	शुभ हो
पशु देखना	व्यापार में लाभ

स्वप्न	फल
पहरेदार देखना	चोरी होना
पहाड़ देखना	उन्नति का सूचक
पान खाना	प्रिय से मिलाप
परीक्षा देते देखना	असफलता
पहलवान देखना	स्वास्थ्य लाभ
पपीता देखना	धन लाभ
पुजारी देखना	उन्नति का संकेत
पूर्वज देखना	शुभ फल प्राप्ति
पतंग देखना	परेशानी बढ़े
पखाना करना	कष्ट मिले
पानी बरसते देखना	शुभ कारक
पिंजरे में पक्षी देखना	सुख प्राप्ति
पगड़ी देखना	प्रतिष्ठा प्राप्ति
प्रणय प्रबन्ध देखना	दाम्पत्य सुख प्रतीक
प्रेत देखना	सौभाग्य वर्द्धक
फुलवाड़ी देखना	खुशी मिले
फव्वारा देखना	चिन्ता दूर हो
फेल होना	सफलता का सूचक
फकीर देखना	शुभ फलदायक
बहन देखना	सौभाग्य वृद्धि
बकरी देखना	शुभ यात्रा लाभ
बूढ़ी स्त्री देखना	दुःख प्राप्ति
बाग देखना	सुख मिले
बाढ़ देखना	धन की हानि
बिच्छू देखना	चिन्ताकारक
बालू देखना	धन लाभ हो
बादाम देखना	स्वास्थ्य लाभ
बारिश देखना	रोग व कलह
बन्दूक देखना	संकट आवे
बिल्ली देखना	लड़ाई के चिन्ह
बाजार देखना	दरिद्रता दूर हो
बर्फ देखना	प्रिया से मिलाप
बारात देखना	चिन्ता व परेशानी
भूकम्प देखना	सन्तान कष्ट
भाषण देना/सुनना	वाद विवाद
भूखा देखना (स्वयं को)	यात्रा लाभ
भिखारी देखना	यात्रा पड़े

स्वप्न	फल
भोजन पकाना	शुभ समाचार
मिठाई खाना	मान व तरक्की
मुर्दे के साथ खाना	दुःख दूर हो
मछली देखना	धन व स्त्री प्राप्ति
मोर देखना	खुशी प्राप्ति
महल देखना	कष्ट से छुटकारा
मधुमक्खी देखना	व्यापार वृद्धि
मिर्च खाना	लड़ाई संकेत
माली देखना	खुशी मिले
मुर्दे हंसते देखना	फिक्र व चिन्ता
मृत्यु देखना	भाग्योदय
मुण्डन कराना	सुखी गृहस्थी
मन्दिर देखना	इच्छा पूर्ण हो
मंगनी देखना	विवाह में देरी
महात्मा देखना	धन प्राप्ति
यात्रा करना	यात्रा द्वारा धन लाभ
यज्ञ देखना	सौभाग्यसूचक
युद्ध देखना	सफलता के संकेत
यन्त्र देखना	असफलता प्राप्ति
यम देखना	आयु वृद्धि
रोटी खाना	इच्छा पूर्ण हो
रुद्राक्ष देखना	कल्याण का प्रतीक
रोते हुए देखना	प्रसन्नता का प्रतीक
रोगी देखना	दुःख निवृत्ति
रसोईघर देखना	धन धान्य का प्रतीक
रेल देखना	कष्टकारी यात्रा
राख देखना	सफलता की प्राप्ति
रथ देखना	यात्रा पड़े
रेत पर चलना	शत्रु से हानि
रीछ देखना	शुभ समाचार
रिश्वत लेना	अपमान हो
राक्षस देखना	कष्ट से छुटकारा
रखैल देखना	सन्तान कष्ट
लकड़ी उठाना/देखना	अकारण वाद-विवाद
लोहा देखना	स्वास्थ्य हानि
लाटरी का टिकट	सौभाग्य पद
लहंगा देखना	दाम्पत्य सुख प्राप्ति

स्वप्न	फल
लंगर देखना	धन सम्पदा वृद्धि
विष खाना	परेशानी बढ़े
वृक्ष काटना	धन हानि
विदाई देखना	धन वृद्धि
वध दिखाई देना	आकस्मिक विपत्ति
विवाह देखना	दुर्भाग्य सूचक
विधवा देखना	हानि
विदेश यात्रा देखना	परिवारिक विवाद
वर्षगांठ मनाना	आयु में कमी
वर्षा देखना	चिन्ता, हानि
विमान देखना	सौभाग्य सूचक
शेर देखना	शत्रु नाश
शीशा देखना	रोग नाश
शत्रु देखना	सफलता हो
शव देखना	शुभ फल
श्राद्ध करना	पितरों की प्रसन्नता
शिकार करना	पारिवारिक कष्ट
शिशु देखना	सुखी दाम्पत्य जीवन
शोक समूह देखना	आनन्द का प्रतीक
शमशान घाट	दीर्घायु
शराब पीना	वाद विवाद
साँप देखना/पकड़ना	शत्रु पर विजय
सागर देखना	धन वृद्धि
सुन्दरी देखना	धन लाभ
साईकिल चलाना	कार्य सिद्धि
स्टेशन देखना	यात्रा शुभ होगी
सेहरा देखना	गृह क्लेश
सुन्दर वस्त्र देखना	बीमार होना
सेब देखना	दीर्घायु
स्नान करते देखना	व्यवसाय में लाभ
हवालात देखना	मान सम्मान
हंसते हुए देखना	खुशी का प्रतीक
हड्डियाँ देखना	डूबे धन की प्राप्ति
हत्या देखना	परेशानी
हरी फुलवारी देखना	धन-जन वृद्धि
हाथी देखना	व्यवसाय वृद्धि
हिम गिरते देखना	धन प्राप्ति
त्रिशूल देखना	सफलता मिले

शरीर में तिल और उनके शुभाशुभ फल

अंग	फल
माथे पर तिल	धनवान होवे
माथे के दाहिने ओर	मान प्रतिष्ठा में वृद्धि
दोनों भौंह के मध्य में	यात्रा कारक है
बायीं आंख पर	औरत से कलह
दाहिनी आँख पर	औरत से विशेष प्यार रहे
ठोडी पर तिल हो	औरत से प्यार कम हो
बायें गाल पर	धन का अपव्यय
दाहिने गाल पर	धन की बढ़ोतरी हो
ऊपर के होंठ पर	विषयवासना में रत रहे
नीचे के होंठ पर	धन की कमी रहे
कान पर तिल हो	आयु मध्यम रहे
गर्दन पर तिल हो	आराम प्राप्त हो
दाहिनी भुजा पर हो	मान-प्रतिष्ठा प्राप्त हो
नाक पर तिल हो	यात्रा कारक है
बायीं भुजा पर हो	झगड़ा होवे
बायीं छाती पर हो	औरत से झगड़ा हो
दाहिनी छाती पर हो	औरत से प्यार रहे
दोनों छातियों के मध्य	जीवन सुखमय रहे
हृदय पर हो	बुद्धिमान हो
पसली पर तिल हो	डरपोक स्वभाव हो
पीठ पर तिल हो	यात्रा में रहा करे
पेट पर तिल हो	श्रेष्ठ भोजन की इच्छा रहे
बगल में तिल हो	दूसरों को हानि पहुंचावे
कमर पर तिल हो	मन अशान्त रहे
बायें हाथ की पीठ पर	व्यय अधिक हो
दाहिनी हथेली पर	धनवान् हो
बायीं हथेली पर	व्यय कारक है
दाहिने पैर में तिल हो	यात्रा कारक है
बायें पैर पर	अपव्यय कारक
पाँव के तलुवे में	यात्रा अधिक

अंगों पर छिपकली गिरने का फल

अंग फल पल्ली (किरली) पतन पर आवश्यक कर्त्तव्य

शरीर पर छिपकली गिरते समय, उस समय जो भी वस्त्र पहने हों, उन्हें पहिने हुए ही स्नान करना चाहिए। तत्पश्चात् तिल, उड़द, घृत में छाया-पात्र का दान एवं यथाशक्ति धन का दान करके **''महामृत्युञ्जय मन्त्र''** का पाठ करना चाहिए।

अंग	फल	अंग	फल
मस्तक (सिर)	राज्य लाभ	बायें हाथ	धन हानि
कपाल	ऐश्वर्य प्राप्ति	नाभि	पुत्र प्राप्ति
नाक	सौभाग्य वृद्धि	हृदय	सुख-यश प्राप्ति
दाहिना कान	आयु वृद्धि	गुदा	रोग भय
बायां कान	भूषण लाभ	गुप्तांग	मित्र से भेंट
दाईं भुजा	मान-सम्मान	दायें पाँव	यात्रा (भ्रमण)
बाईं भुजा	धन-हानि, राज भय	बायें पाँव	रोग-क्लेश
कण्ठ	शत्रु नाश	पावों की उंगलियों	यात्रा
पीठ के मध्य	क्लह-क्लेश	गर्दन	यश, लाभ
बाईं पीठ	रोग भय		
दायीं पीठ	सुख लाभ		
दायें कन्धे	विजय, सफलता		
बायें कन्धे	दुश्मनों से भय		
कमर	रोग भय		
दाईं जाँघ	धन हानि		
बाईं जाँघ	पुत्र से लाभ		
दायें हाथ	धन लाभ		

अंगस्फुरण फल

सिर	पृथ्वी लाभ	बाहुमध्य	धनागमः
माथा	स्थान लाभ	कर (हाथ)	धन प्राप्ति
वामभुज	प्रिय प्राप्ति	छाती	विजय
नेत्र	प्रियदर्शन	पार्श्व	उत्तम प्रीति
भृकुटियां	लक्ष्मी दर्शन	नाभि	यात्रा से लाभ
कपोल	स्त्री सुख	उदर पेट	कोष प्राप्तिः
नासा	गन्ध सुख	वृष्ण	पुत्र लाभ
ऊपर का होंठ	स्त्री चुम्बन	जानु (घुटना)	रिपु (शत्रु) सन्धि
कण्ठ	भूषण प्राप्ति	जंघा	हानिप्रद
ग्रीवा	शत्रु भय	चरण के ऊपर	स्थान प्राप्ति
पीठ	पराजय	चरण के नीचे	लाभप्रदः
कन्धा	मित्र समागम	दक्षिण कर्ण	दीर्घायु
बाहुप्रदेश	प्रिय प्राप्ति	कण्ठे	शत्रुनाश

फलित ज्योतिष में कुछ प्रसिद्ध योगों का वर्णन

निम्नलिखित योगों में राहु-केतु का समावेश नहीं किया जाता (ज्योतिष तत्त्व फलित खण्ड भाग-2 से उद्धृत)

रूचकादि पंच-महापुरुष योग

'पंच महापुरुष' योग के शीर्षक के अन्तर्गत रूचक आदि पांच शुभ योगों का वर्णन प्रायः सभी प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थों में मिलता है। इनका फल राजयोगों के समान शुभ माना जाता है। आधुनिक युग में इनके फलस्वरूप जातक राजा तो न सही, परन्तु राज तुल्य ऐश्वर्य, धन, सन्तति आदि सुखों को प्राप्त करता है। विशेषकर मंगल, बुध, गुरु आदि योगकारक ग्रहों की अपनी-अपनी दशा में अवश्य शुभ एवं श्रेष्ठ फल होते हैं।

यदि मंगल, बुध, गुरु, शुक्र या शनि अपनी उच्च राशि या मूलत्रिकोण या स्वराशि में स्थित होकर लग्न से केन्द्र में हों, तो क्रम से रूचक, भद्र, हंस, मालव्य और शशक नामक पंच-महापुरुष योग होता है। जातकाभरणम्, मानसागरी, सारावली इत्यादि ग्रन्थों का यही मत है परन्तु मन्त्रेश्वर महाराज के मतानुसार यदि जन्म लग्न से केन्द्र में स्वोच्च, स्वराशिस्थ, भौमादि, ग्रह न भी हों परन्तु यदि चन्द्र लग्न से उपरोक्त भौम आदि ग्रह केन्द्रगत हों, तो भी रूचक आदि योगों का निर्माण होता है तथा धन-धान्य आदि शुभ फल घटित होते हैं-

लग्नेन्दोरपि योग पंचकमिदं साम्राज्य सिद्धिप्रदं॥ तेष्वेकादिषु भाग्यवान् नृपसमो राजा नृपेन्द्रोऽधिक:॥

अर्थात् चन्द्र लग्न से केन्द्र में उपर्युक्त पांच ग्रहों में कोई स्वराशि या उच्च राशि का होकर केन्द्र में हो, तो साम्राज्य और सिद्धि प्रदान करने वाला होता है। शुक्र, भौम, बुधादि ग्रह यदि सूर्य के साथ अस्तंगत हों, तो जातक को विशेष उत्तम फल न देकर अपनी दशा में केवल शुभ फल देते हैं।

(1) **रूचक योग**-यदि मंगल कुंडली में उच्च राशि का या स्वरराशि का होकर केन्द्र में स्थित हो, तो रूचक नामक योग होता है। ऐसे जातक का दीर्घ चेहरा हो, जातक अत्यन्त साहसी, गुणी, शूरवीर, कांति युक्त सुन्दर, सुगठित शरीर, रक्त-गंदमी वर्ण, बलिष्ठ शत्रुओं पर विजय पाने वाला, कीर्तिवान, धनवान्, परिश्रमी और स्वाभिमानी स्वभाव का होता है।

दीर्घास्य स्वच्छ कान्ति बहुरूचिरबलः साहसावाप्त कार्य। गर्विष्ठो रूचके प्रतीत गुणवान् सेनापतिः जित्वर:॥

ऐसा जातक अपने साहस, बल से कार्य सिद्धि करवाने वाला, कुछ तेज स्वभाव, गुरु एवं देवी-देवताओं का भक्त, ज्योतिष, मन्त्र, धर्म आदि शास्त्रों में रुचि रखने वाला, धन, यश एवं सवारी आदि सुखों से युक्त तथा दीर्घायु होता है। देखें उदा. कुंडली नं. 73

(2) **भद्र योग**-बुध यदि अपनी उच्च या स्वराशि का होकर केन्द्र में स्थित हो, तो भद्र नामक योग बनता है। ऐसा जातक तीव्र बुद्धिमान, प्रभावशाली, सुन्दर मुखाकृति, स्वच्छ रहन-सहन, मृदु एवं मधुरभाषी, दीर्घायु, सन्तुलित एवं सुगन्धित शरीर और सुन्दर नाक वाला, सात्विक एवं परोपकारी, दानी स्वभाव, ज्योतिष, धर्म एवं योगादि शास्त्रों का जानकार, विद्वान, धैर्यवान, धर्मात्मा, शंख के समान वाणी, बौद्धिक कार्यों में विशेष कुशल, स्वतन्त्र विचारक किन्तु अपने विचारों को गुप्त रखने वाला, यशस्वी एवं लोगों में आदर प्राप्त करने वाला, ऐसे जातक के हाथ एवं पावों में शंख, पक्षी, चक्र, ध्वजा, कमल आदि के चिन्ह भी होते हैं।

आयुष्मान् सकुशाग्र बुद्धिः अमलो विद्वज्जनश्लाधितो। भूपो भद्रकयोगजोऽति विभवश्चारस्थानं कोलाहल:॥

ऐसे जातक का सुन्दर मस्तक, लम्बी, गोल एवं पुष्ट बाहें, धन-सम्पदा से युक्त वैभवशाली और उच्च पदाधिकारी होता है। उदाहरण कुंडली हेतु देखें धनु लग्न के अन्तर्गत कुंडली नं. 86 (श्री लाल बहादुर शास्त्री) देखें ज्योतिष तत्त्व

॥ अथ नक्षत्रकष्टावलीय ॥

नक्षत्र चरण	चरण १	चरण २	चरण ३	चरण ४	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
अश्विनी १	रोग दिन संख्या ०९	११	१०	२०	अर्ध गात्र पीड़ा वातज्वर निद्राभंग	अश्विनी देवता	घृत कुंभ सुवर्ण ब्राह्मण भोजन	५ हजार	ॐ अश्विनौ तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम् वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यो नमः।	कुमकुम, श्वेत चंदन, चम्पक पुष्प तंदुल मोदक नैवेद्य गुड़, क्षीर, कमल पुष्प, धूप तिल दीपः
भरणी २	दि ००	दि ८०	दि ४०	दि ११	छर्दरोग तीव्रज्वर तंद्रा अनेक रोग	यम देवता	शर्करा घृत अजा गौ महिषी, छायापात्र	१० हजार	ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यस्यत्वा तपसे देवस्यत्वा सवितामध्वा नक्तु पृथिव्या स Ω स्पृशस्पाहिअर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥२॥	अगर गन्ध करवीरपुष्प गुग्गुल धूप गुड़ोदन नैवेद्य धूप दीप क्षेत्रपाल पूजा
कृतिका ३	दि ००	दि ११	दि १६	दि २८	रक्तनेत्र उरु शूल नेत्र पीड़ा अतिदाह	अग्नि देवता	सुवर्ण गौदान ग्रह शांति	१० हजार	ॐ अयमग्नि सहस्त्रिणो वाजस्य शांति Ω वनस्पतिः मूर्द्धा कबोरयीणाम् ॥ ३ ॥ अग्नये नमः॥	चन्दन गंध पुष्प नैवेद्य गुग्गुलधूपघृत दीप तिलमाष गुडोदन पायस नैवेद्य, दशांग
रोहिणी ४	दि ०७	दि ०९	दि १८	दि ३०	शिर दर्द ज्वर पीड़ा कुक्षिशूल प्रलाप	प्रजापति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्ण गौदुग्घखड	५ हजार	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः सबुध्या उपमा अस्यविष्टाः सतश्चयोनिमसतश्चविधः ॥४॥ ॐ ब्रह्मणे नमः॥	चन्दन गन्ध पुष्प नैवेद्य अष्टगन्ध दूध मोदक धूप घृत क्षीर नैवेद्य, दीप, दशांग
मृगशिर ५	दि ०९	दि ०५	दि ०७	दि १०	अर्ध शरीर पीड़ा महाघोर कष्ट	सोम देवता	दधितडुलगोवत्सा दान ब्राह्मण भोजन	१० हजार	ॐ सोमोधनु Ω सोमाअवन्तुमाशु Ω सोमोवीरः कर्मणयन्ददाति यदत्यविदध्य Ω सभेयम्पितृ श्रवणयोम ॐ चन्द्रमसे नमः ॥५॥	चन्दन गंध सौरभ पुष्प गुग्गुल धूप पायस नैवेद्य मधु घृतदुग्धदध्योदन बलि, दशांग
आर्द्रा ६	दि ००	दि १८	दि ००	दि ००	ज्वर सर्वांगपीड़ा निद्रानाश त्रिदोष	रुद्र देवता	कृष्ण वृषभादि दान कृष्ण वस्त्रादि	१० हजार	ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः बाहुभ्यां मुतते नमः॥६॥ ॐ रुद्राय नमः॥	हरिद्रा कुमकुम गन्ध सवन्तिका पुष्प अष्ट गंधतिलपिष्ट धूप नैवेद्य घृत मिष्ठान्न दशांग
पुनर्वसु ७	दि ०७	दि १४	दि ०२	दि २१	अर्ध शरीर पीड़ा शिर पीड़ा ज्वर	अदिति देवता	सुवर्ण कमलदान ५ कन्याभोजनवस्त्र	१० हजार	ॐ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति र्माताः स पिता स पुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिजातम अदितिरर्जनित्वम् ॥७॥ ॐ आदित्याय नमः॥	कुंमकुम गंध वारिज पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य मोदक गुड़बलि पीत वर्णान्न
पुष्य ८	दि ०७	दि ०७	दि १०	दि २१	ज्वर पीड़ा शूल अतिकठिन रोग	बृहस्पति देवता	पीत वस्त्र सुवर्ण गौदान पक्वान्नदान	१० हजार	ॐ बृहस्पते अतियदर्यौ अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदी दयच्छ वसऋतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐ गुरवे नमः ॥	कुमकुम अगर गंध अगस्त पुष्पघृतगुग्गुल धूपक्षीर नैवेद्यदध्योदन, शंक्कर बलिदानम्
आश्लेषा ९	दि ००	दि ००	दि ११	दि ००	सर्व गात्र पीड़ा मृत्युतुल्य कष्ट	सर्प देवता	कुलमातृ योगिनी पूजा गोशय्यादान	१० हजार	ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे यो दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥९॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः	चन्दन गन्धचम्पक पुष्प गुग्गुल घृतधूप क्षीर मिष्टान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि कुंकुम,
मघा १०	दि १५	दि ०७	दि १७	दि २०	अर्धगात्र पीड़ा शीत जन्यरोगभय शिर पीड़ा	पितर देवता	तिल तंडुलमाष वस्त्रदान	१० हजार	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वाधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्न पितरोऽमीमदन्तः पितरोतितृपन्त पितरःशुन्धध्वम् ॥१०॥ ॐ पितरेभ्ये नमः॥	चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प गुग्गुल धूप घृत मिष्ठान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि, दीप, नैवेद्य, दीपादि
पूर्वाफाल गुणी ११	दि ००	दि १५	दि ००	दि ३०	सर्वगात्रे पीड़ा ज्वर अर्धशिररोग	भग देवता	पित्तल पात्र यव माष गोस्वर्णदान	१० हजार	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाददन्नः। भगप्रजननाय गोभिरश्वैर्भगप्रणेतृभिर्नुवन्तः स्यामः ॥११॥ ॐ भगाय नमः॥	चन्दन गंध चम्पक पुष्पगुग्गुलघृतधूप शर्करामोदक पूपोदन घृत पायसनैवेद्य बिल्व
उत्तरा फाल्गु. १२	दि ००	दि १४	दि ०७	दि ६०	शिर रोग महाज्वर कुक्षिशूलरोग	अर्यमा देवता	सुवर्णरजत अन्न गो वस्त्र दान	५ हजार	ॐ दैव्या वद्धर्व्यू च आगत Ω रथेन सूर्य्यत्वचा। मध्वायज्ञ Ω समञ्जायेतं प्रत्नया यं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥१२॥ ॐ अर्यमणे नमः॥	कपूरकुंकुमगंध अर्कपुष्पघृत गुग्गुल धूप घृतपायसनैवेद्य घृतान्नहोम केशर गंध
हस्त १३	दि १५	दि १७	दि १५	दि ००	सर्वाङ्ग पीड़ा उदर शूल प्रस्वेद अफारा	सविता देवता	गोदानछाया पात्र रक्तवस्त्र सुवर्ण	५ हजार	ॐ विभ्राडवृहन्पिवतु सोम्यं मध्वार्य्युदधज्ञ पत्त व विहुतम् वातजूतोयो अभि रक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरुधाविराजति ॥ ॐ सावित्रे नमः॥	कुकुमरक्तचन्दन गंध कमल पुष्पसुगन्ध गुग्गुलधूपः घृत पायसनैवेद्य दीप, केशर
चित्रा १४	दि ११	दि ०९	दि ०९	दि १६	विविधरोग भय महादारुण कष्ट	त्वष्टा देवता	विचित्रवृषभ गुड़ तिल छाया पात्र	५ हजार	ॐ त्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदापदायाः छन्द इन्द्रियमुक्षा गौत्र वयोदधुः ॥१४॥ त्वष्ट्रेनमः ॥ ॐ विश्व कर्मणे नमः॥	कुंकुम दीप अगरगन्ध विचित्र पुष्पगुग्गुल धूपमोदक घृत विचित्रान्नहविनैवेद्य, केशर

नक्षत्र चरण	चरण १	चरण २	चरण ३	चरण ४	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
स्वाती १५	रोग दिन संख्या ६०	१७	३०	००	अनेक तरह के रोग ज्वर, कष्ट	वायु देवता	लाल गो सुवर्ण पक्वान्न दान	५ हजार	ॐ वायरन्नरदि बुधः सुमेध श्वेतः सिषीक्तिनो युतामभि श्री तं वायवे सुमनसा वितस्थुर्विश्वेनरः स्वपत्थ्या निचक्रुः ॥१५॥ ॐ वायवे नमः॥	चन्दनगंध कमल पुष्प अगर गुग्गुल धूप, दीप पायस शर्करा घृत नैवेद्य।
विशाखा १६	दि १५	दि ००	दि ०४	दि १३	कुक्षिशूल रोग सर्व गात्र पीड़ा	इन्द्राग्नी देवता	रक्त पीत वस्त्र कृष्णवृषभ दान	१० हजार	ॐ इन्द्राग्नी आगत Ω सुतं गार्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं धियोषिता ॥१६॥ ॐ इन्द्राग्नीभ्याँ नमः॥	श्री खण्ड चन्दन गंध कमल पुष्प देवदारु धूपधृत पायस नैवेद्य, दीपक केशर।
अनुराधा १७	दि ६०	दि १२	दि ३६	दि ३०	तीव्र ज्वर महारोग शिर पीड़ा	मित्र देवता	अन्न सुवर्ण गो दान छायापात्र	१० हजार	ॐ नमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत Ω सपर्यत दूरंदृशे देव जाताय केतवे दिवसुत्राय सूर्योयश Ω सत ॥१८॥ ॐ मित्राय नमः॥	कुंकुमगंध कमल पुष्प चन्दन धूपः पायस घृत पुष्प मोदक नैवेद्य, केशर, गंध।
ज्येष्ठा १८	दि ५९	दि ०९	दि ०६	दि ०४	पित्तरोग शरीर कांपना व्याकुलता	इन्द्र देवता	सुवर्ण नील वस्त्र तैल छायापात्रदान	५ हजार	ॐ त्रातारमिंद्रमबितारमिंद्र Ω हवे हवेसुहव Ω शूरमिंद्रम् वहयामि शक्रं पुरुहूतमिंद्र Ω स्वास्ति नो मधवा धात्विन्द्रः। ॐ इन्द्राय नमः॥	चन्दन गंध सुगंध पुष्प कपूर धूप विचित्रान्न नैवेद्य, चम्पा पुष्प पायस, नारियल।
मूला १९	दि ००	दि ०९	दि १५	दि ०६	ज्वरशूलसन्निपात महाकठिन रोग	निर्ऋति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्णगोछायापात्र	५ हजार	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि Ω स्वयोनावभारुषा तां विश्वेदैवऋतुभिः संविदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चत। ॐ निऋतये नमः॥	कृष्ण अगर गंध नील पद्म पुष्प कृष्ण अगर धूप मिष्ठान्नहवि माष नैवेद्य।
पूर्वाषाढ़ा २०	दि ००	दि १५	दि २४	दि १०	शरीरपीड़ा कंपरोग शिररोग महाकष्ट	जल देवता	श्वेतवस्त्रतंडुलसु-वर्णजलकुंभ	५ हजार	ॐअपाघ मम कील्विषम पकृल्यामपोरपः अपामार्गत्वमस्मद यदुः स्वपन्य-सुवः ॥२०॥ ॐ अद्भ्यो नमः॥	चन्दनगन्ध पद्म पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य।
उत्तराषाढ़ा २१	दि ३०	दि २४	दि २६	दि १६	कटिपीड़ा प्रलाप उदर शूलरोग युक्त	विश्वेदेवा देवता	ब्राह्मण भोजन अन्न सुवर्ण दान	१० हजार	ॐ विश्वे अद्य मरुत विश्वऽउतो विश्वे भवत्यग्नयः समिद्धाः विश्वेनोदेवा अवसागमन्तु विश्वेमस्तु द्रविणं बाजो अस्मै॥२१॥	चन्दन गंध मालती गुग्गुल पुष्प पायस नैवेद्य।
श्रवण २२	दि ६०	दि २४	दि ०६	दि ०९	वातपित्तकफरोग अतिसारसर्वगात्रपी	गोविन्द देवता	सुवर्णगेदानब्राह्म णभोजनछायापात्र	१० हजार	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥२२॥ ॐ विष्णवे नमः॥	चन्दन गंध मालतीपुष्प कपूर गुग्गुल धूप ओदन पायस षडरम नैवेद्य।
धनिष्ठा २३	दि १५	दि २	दि २०	दि २१	मूत्रकृच्छ ज्वर रक्त अतिसार कंपरोग	वसु देवता	छत्री जूता सुवर्ण गोछायापात्रदान	१० हजार	ॐ वसोःपवित्र मसि शतधारंवसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वासविता पुनातुवसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः। ॐ वसुभ्यो नमः॥	अगर गंध कमल पुष्प अगर धूप घृत पायस नैवेद्य, दीपक, ताम्र बर्तन।
शतभिषा २४	दि ००	दि ४५	दि ०३	दि २२	वायु रोग से भय सन्निपातज्वरपीड़ा	वरुण देवता	तिलसुवर्ण घृत तैल अजागोदान	१० हजार	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कुं मसर्जनी स्थोवरुणस्य ऋत सदन्य सि वरुण स्यऋतमदन ससि वरुणस्यऋतसदनमसि। ॐ वरूणाय नमः॥	कुकम अगर गन्ध कमल पुष्प अगर धूप घृत धूप नैवेद्य।
पूर्वाभाद्र-पद २५	दि ००	दि १२	दि २१	दि १९	सर्वगात्रपीड़ाछर्दी चिन्ताव्याकुलता	ऽजेकपाद देवता	सुवर्ण रजतश्वेत वस्त्र धृत दुग्ध	५ हजार	ॐ उतनाऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपापृथिवी समुद्रःविश्वे देवा ऋता वृधो हुवाना स्तुतामंत्राः कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपदे नमः॥	कंकुम चन्दनगन्धश्वेतार्क पुष्प सर्वोषधी मिश्र धूप दधि पायस नैवेद्य।
उत्तराभा-द्रपद २६	दि १०	दि २०	दि ०९	दि १५	कामलारोगअतिसा ज्वरवायुशूलभ्रम	अहिर्बुध्न देवता	रजत कृष्ण वस्त्र तिल सुवर्ण दान	९ हजार	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तो पिता नमस्तेऽस्तुमामाहि Ω सो निवर्त्तयाम्यायुषेऽत्राधाय प्रजननायर रायम्पोषाय (सुप्रजास्वाय ॥२६॥) ॐ अहिर्बुर्धाय नमः॥	कपूरचन्दनगन्ध पद्म पुष्प विल्व गुग्गुल धूप दधि पायस नैवेद्य।
रेवती २७	दि १८	दि १०	दि ०९	दि २०	वातपित्तज्वर भ्रम उरू शूलपीडा	पूषा देवता	पित्तल पात्र रक्त वृषभवस्त्रछायापात्र	१० हजार	ॐ पूषन् तव व्रते वय नरिष्येभ कदाचन। स्तोतारस्तेइहस्मसि ॥२७॥ ॐ पूष्णेनमः॥	रक्त चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प घृत गुग्गल धूप घृत पायस नैवेद्य।

रोग-त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पूफा	उफा	अनु	ज्ये०	धनि	शत०	भरणी	कृत्ति
पुर्न	मघा	हस्त	विशा	मूला	श्रव०	पूभा	अश्वि	रोहि
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वाती	पूषा	उषा	उभा	रेवती	मृग

मंगलवार १।६।११ तिथि कृत्तिका नक्षत्र। बुधवार २।७।१२ तिथि आश्लेषा नक्षत्र। गुरुवार ३।८।१३ तिथि मघाहस्तनक्षत्र। शुक्रवार ४।९।१४ तिथि–आर्द्रा धनिष्टा नक्षत्र। शनिवार ५।१०।१५ तिथि–भरणीनक्षत्र। इन तीन योगों में रोग का प्रारम्भ हो तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट जानना। (रोग के दिन नक्षत्र से नाम का नक्षत्र ५।१४।२३ संख्या पर काल का मुंह होता है और १०, १८वें नक्षत्र काल की दंष्ट्र (दाढ़) होती हैं, मुख वा दंष्ट्रा में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यंत रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु तुल्य कष्ट जानना। सूर्य जिस नक्षत्र में हो, वह नक्षत्र, चन्द्र नक्षत्र और नाम का नक्षत्र जिस दिन एक नाड़ी में हो उसी दिन असाध्य रोगी की मृत्यु जानना।

॥ अथ बालकष्टावली पूतना विधान ॥

मंत्र को २१ बार पढ़कर सात बार रूग्ण बालक के सिर पर घुमाकर चौरस्ते (चौराहे) पर मौन होकर रख आवे॥

जन्म से			पूतना नाम	ग्रसित लक्षण	मूर्तिद्रव्य	बलि द्रव्य तथा समय	धूप	मन्त्र
दि ०१	मा १	व ०१	१ योगिनी २ मातृका ३ नंदिनी	ज्वर गात्रशोष अनाहार वमन मूर्छा कांपना हीन ज्वर उदर पीड़ा	नदी का मिट्टी का पुतला ३ दिन विधान	उबले चावल सफेद चंदन का लेप सफेदफूल ध्वजा ५ चिलिड़ियां (पूड़े) ५ दीपक ५ प्रातः समय पूर्व दिशा में तीन दिन बलि देवे।	सरसों बालछड़ आक बिल्वपत्र तिल्ली और मनुष्य के केश नीम घी का धूप	ॐ नमो भक्तवत्सले मोचिनी स्वाहा
दि ०२	मा ०२	व ०२	१ सुनंदिनी २ योगिनी ३ स्तनदा	ज्वर हाथ पांव संकोचदांतो का पीसना आँखें मीचना ज्वरादि रोदन आँखें दुखना	सेर चावल की पीठी का पुतला ३ दिन दिन विधान	उबले चावल सेर पर आटे के पूड़े मच्छी और बकरे का मांस ध्वजा १३ दीपक १३ पश्चिम दिशा में सन्ध्या समय ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत् सब वस्तुओं का धूप देना	ॐ नमो भगवती स्वाहा
दि ०३	मा ०३	व ०३	१ पूतना	ज्वर कम्प न प्रलाप अरुचि आँखें मीचना वमन रोमांच	पूर्ववत मूर्ति	लाल चावल लाल ध्वजा लाल चन्दन लालफूल सायंकाल उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और सांप को कांचली का धूप देना	ॐनमो भगवती स्वाहा
दि ०४	मा ०४	व ०४	१ मुखमंडिका २ आकाशयोगिनी	ज्वर गात्र भग आंखमीचना शिर झुकाना श्वास श्याम ता अरुचि नींद न आना	चावल के चूर्ण का पुतला विल्व के कांटे से रेखा	सफेद चंदन का लेप सफेद फूल सफेद ध्वजा सेर भर आटे के पूड़े तीनों सन्ध्या समय पश्चिम दिशा में बलि ३ दिन देवें।	लहसन नीम के पत्ते मनुष्य के और बिल्ली के बाल गो घृत धूप देना।	ॐ नमो पूतने मातवीर्लि भक्ष सुशोभने बालंकमुचंसुयोगेन बलिदाने नहर्षयेत्
दि ०५	मा ०५	व ०५	विडालिका	ज्वर हिक्का श्वास शूल गात्र संकोच अरुचि उदर पीड़ा	सेर भरचावलों की पीठी का पुतला	उबले चावल ध्वजा ५ दीपक ५ सफेद चन्दन सफेद फूल अपरान्ह के समय वृक्ष के मूल में पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ सुभगे सुभलेदेवि सर्व शत्रु निवारिणी। कुरु शांति शिशोः स्वस्थं जीव दानेन राक्षसि
दि ०६	मा ०६	व ०६	शकुनी	ज्वर गात्र संकोच अरुचि श्वास लेने में कठिनाई उदर पीड़ा	सेर चावलों की पीठी का पुतला बनाना	कृष्णोदन ध्वजा ५ दीपक ५ काले फूल मच्छी का मांस बकरे का मांस पायस दूध आधसेर आटे को पूड़े अपरान्ह पश्चिमदिशा में तीन दिन बलि देवे	कूठ गुग्गुल सफेद चन्दन सरसों हाथी का दांत गो घृत धूप देना।	ॐ राक्षसि त्व महाभागे बालमुंच शुभानने। क्षेम कुरु जगत्यस्मिन् शोभावान वरं कुरु
दि ०७	मा ०७	व ०७	शुष्करेवती	ज्वर देह संकोच अरुचि कांपना रोदन करना	पूर्ववत मूर्ति	सफेद ध्वजा ७ दीपक ७ सफेद फूल सफेद चंदन सायंकाल पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गो श्रृङ्ग और लहसन से पूर्ववत धूप देना।	ॐ नमो पद्मपत्राक्षि विशालाक्षि बन शिव। सगृहाँ बलि माषञ्च बाले मुँच सुशोभने।
दि ०८	मा ०८	व ०८	विडालिका	ज्वर गात्र संकोच आँखें मीचना रोना जिव्हाशोष शिर पीड़ा अरुचि	पूर्ववत मूर्ति	पायस (खीर) दूध घी लाजा मध्यान्ह व पूर्व संध्या समय दक्षिण दिशा में ३ दिन बलि देवे	गुग्गुल में धृत मिलाकर उपरोक्त धूप देना।	ॐ नमो सर्व भूतेशि शोभने त्वं पिशाचिनी। बलिचैवा सुरी कृत्य त्वरितं मुंच बालकम्
दि ०९	मा ०९	व ०९	मनोन्मत्ता	ज्वर वमन तृष्णा श्वास अफारा देह संकोच उदर शूल	पूर्ववत मूर्ति	उबले चावल मच्छी का मांस पापड़ गन्ना संध्या समय उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग को घृत में घिसकर पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट स्वाहा।
दि १०	मा १०	व १०	रेवती	ज्वर वमनाकास श्वास पीड़ा	पूर्ववत मूर्ति	गुड़ उबले चावल घी ध्वजा २५ पूड़े २५ लालफूल २५ सफेद फूल ४४ संध्यासमय दक्षिण में ३ दिन बलिदेवे	गोश्रृङ्ग लहसन को घृत में मिलाकर धूप देना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय फट स्वाहा।
दि ११	मा ११	व ११	सुदर्शना	ज्वर अरुचि मुखशोष गात्र पीड़ा रोदन	माष उड़द की पीठी	उबले चावल सफेद चंदन लेपन सफेद फूल ध्वजा २५ दीपक २५ पूड़े २५ बलि संध्या समय दक्षिण दिशा में बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते रावणाय चंद्रहास वज्रहस्ताय ॐ हुं फट स्वाहा।
दि १२	मा १२	व १२	अद्भुता	ज्वर रोदन पसीना आँखें दुखना सन्ताप रोमांच शरीर पीड़ा	सेर चावल की पीठी का पुतला	ध्वजा १३ पूड़े मच्छी का मांस बकरे का मांस पापड़ संध्या समय दक्षिण में ३ दिन बलि देवे	गो श्रृङ्ग को घृत में घिस कर पूर्ववत धूप देना।	ॐनमो नारायणाय प्रज्वल २ ताप हर २ शोषय २ मर्दय २ हन दुष्टान् हुं फट स्वाहा

वर्षफल बनाने की सारिणी (सूर्य सिद्धान्तीय)

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	०४	०५	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	४३	५९	१४	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१३	४३	१५
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	४३	१७	३२	४८	०३	१९	३४	५०	०५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	३०	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस संवत् या वर्ष का वर्ष लग्न निकालना हो, उस संवत् में से जातक के जन्म का सम्वत् घटाने से जो वर्ष शेष बचेंगे वह **गतवर्ष** होंगे फिर वर्षफल सारणी में गत वर्षों के नीचे लिखे वार, घड़ी पलादि के ध्रुवांक को जातक के जन्म, वार, घड़ी, पलादि में जमा कर लेने पर आगामी वर्ष का वार एवं वर्षेष्ट काल निकल आएगा। अब इस वर्षेष्ट को स्थानिक लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न की भान्ति ही वर्ष लग्न ज्ञात कर सकते हैं। फिर वर्ष प्रवेश के वर्षेष्ट अनुसार ही ग्रहस्थापना कर लेंवे। उदाहरण सहित इसका स्पष्टींकरण हमारी प्रकाशित **वर्षफल चन्द्रिका** में पढ़ें।

मुन्था—जन्म लग्न राशि की संख्या में से गतवर्ष की संख्या को जोड़कर जो योगफल आए, उसे १२ से भाग देकर जो संख्या शेष रहे, उसी राशि अंक पर मुंथा स्थापित करनी चाहिए। **मुन्था जन्म** लग्न से प्रति वर्ष एक राशि आगे चलती है।

त्रिपताकी चक्र—त्रिपताकी का **चन्द्रमा** निकालने के लिए वर्ष प्रवेश की संख्या को ९ द्वारा भाग दें। जो शेष बचे जन्मकुण्डली में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित है, उससे आगे उतने भाव गिनकर प्राप्त राशि अंक पर चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए वर्ष प्रवेश संख्या में ४ द्वारा भाग दें। शेष को जन्मस्थान के ग्रहों से जहां वे स्थित हैं, उतना आगे गिनकर चक्र में लिखें।

मुद्दा दशा निकालना—गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें से दो घटावें, ९ द्वारा भाग देने से जो शेष बचे तदनुसार दशा जाननी चाहिए। यदि १ बचे तो **सूर्य** की, २ बचें तो **चन्द्रमा**, ३ बचें तो **मंगल**, ४ से राहु, ५ बचें तो **गुरु**, ६ बचें तो **शनि**, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ अथवा ० बचे तो **शुक्र** की दशा जाननी चाहिएं।

मुद्दा दशा के दिनादि—**सूर्य** के १८ दिन, **चन्द्रमा** के ३०, **मंगल** के २१ दिन, राहु के ५४ दिन, गुरु के ४८ दिन, **शनि** के ५७ दिन, **बुध** के ५१ दिन, **केतु** के २१ दिन तथा **शुक्र** के ६० दिन **मुद्दा दशा में होते हैं।**

स्थानबल—सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३रे, मंगल ६ठे, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वभोच्चबल—सूर्य १।५, चन्द्रमा २।४, मंगल १।८।१०, बुध ३।६, बृहस्पति १२।४, शुक्र २।७।१२, शनि १०।११।७—इन राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुष-स्त्री ग्रहः—स्त्री ग्रह लग्न से १।२।३।७।८।९, घरों में ५ बल देते हैं और पुरुषग्रह लग्न से ४।५।६।१०।११।१२ घरों में ५ बल देते हैं। दिन के समय पुरुष ग्रह तथा रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिनपति	सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.
रात्रिपति	बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.

वर्ष लग्न की जो राशि हो उसकी ऊपर की पंक्ति में राशि के सामने देखो और उसके नीचे यदि इष्ट दिन का हो तो दिनपति के सामने रात्रि का हो तो रात्रिपति के सामने और वर्ष लग्न की राशि के नीचे जो ग्रह हैं वही त्रिराशिपति होगा।

वर्ष कुण्डली में दृष्टि चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
प्रत्यक्ष मित्र	५—९	५—९	५—९	५—९	५—९	५—९	५—९
गुप्त मित्र	३—११	३—११	३—११	३—११	३—११	३—११	३—११
प्रत्यक्ष शत्रु	१—७	१—७	१—७	१—७	१—७	१—७	१—७
गुप्त शत्रु	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो वह उस भाव से पांचवें और ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से, पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से और ४-१० गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

(१) प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि शुभ और बलवान् होती है। (२) गुप्त मित्र दृष्टि सम है। (३) गुप्त शत्रु दृष्टि अशुभ है। (४) शत्रु दृष्टि अशुभ है।

दृष्टि फल

प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि—इस का फल कार्य में शीघ्र सफलता, सम्बन्धियों से सुख-प्रेम और लाभ इत्यादि इस से जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है उन से प्रेम उत्पन्न होता है तथा नए सम्बन्ध स्थापित होते हैं।

गुप्त शत्रु दृष्टि—यह प्रत्यक्ष दृष्टि से कुछ कम फलदायक है। अर्थात् कार्य बड़ी कठिनता से सफलता को प्राप्त होता है, यह प्रत्यक्ष रूप में सहायता करने वाली होती है, परन्तु गुप्त रूप से शत्रुता करने वाली होती है।

गुप्त मित्र दृष्टि—इसका फल प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से कम होता है। यह भी कार्य में सफलता व लाभदायक है, परन्तु प्रत्यक्ष भाव से नहीं, गुप्त भाव से सफलता व कार्य सिद्ध होता है।

प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि—इसका फल शत्रुता उत्पन्न करना, बनता कार्य बिगाड़ना, मित्र से वैर, धन हानि, मानसिक परेशानी, निकट बंधुओं से मन-मुटाव इत्यादि हैं।

वेध-सिद्ध नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी

एक सौर वर्ष में सूर्य द्वारा उसी राशि, अंश, कला, विकला पर घूमकर पुनः जितना समय लगता है, उसकी अवधि (Duration) के सम्बन्ध भिन्न-भिन्न मत पाए जाते रहे हैं। "सूर्य सिद्धान्तानुसार" उक्त समय ३६५ दिन, १५ घड़ी, ३१ पल ३० विपल है, जबकि आधुनिक वेधशालाओं द्वारा प्रमाणित यह समयावधि ३६५ दिन, १५ घड़ी २२ पल और साढ़े ५३ विपल होते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग ८।३० पल अथवा ३ मिन्ट २७ सेकिण्ड का अन्तर पाया जाता है। प्रत्येक शताब्दि (वर्ष) यह अन्तर बढ़ता जाता है। फलस्वरूप वर्ष प्रवेश इष्ट एवं कभी-कभी एक-दो लग्नों का भी अन्तर पड़ जाता है। गत पृष्ठों में हमने सूर्य सिद्धान्तानुसार वर्ष सारिणी पहिले की भान्ति ही दी हुई है। अब आजकल कुछ विद्वान नवीन वेधसिद्ध वर्ष सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। इससे फलादेश में भी अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। अधिक जानकारी हेतु हमारे ज्योतिष कार्यालय से '**वर्षफल चन्द्रिका**' लेखक पण्डित पन्ना लाल गणितकर्त्ता (संशोधित संस्करण) मंगवा कर पढ़ें। यद्यपि परम्परानुगामी सूर्य-सिद्धान्तीय वर्ष सारिणी का ही प्रयोग कर रहे हैं।

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२५	४८	११	३४	५७	२०	४३	६	२९	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५४	१७	४०	३	२६
विपल	५३	४६	३९	३२	२५	१८	११	०४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	०१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०
गताब्द	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२
पल	४९	१२	३५	५८	२०	४३	६	२९	५२	१५	३८	१	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३
विपल	२३	१६	९	२	५५	४८	४१	३४	२७	२०	१३	६	५९	५२	४५	३८	३१	२४	१७	१०	०३	५६	४९	४२	३५	२८	२१	१४	७	०
गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	२	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२५	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०२	१८	३३	४८	०४
पल	१५	३८	१	२४	४७	१०	३३	५६	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	५९	२२	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४७	१०	३३	५६	१९
विपल	५३	५६	३९	३२	२५	१८	११	४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

वर्ष कुण्डली में मुंथा का महत्त्व

वर्ष कुण्डली में नवग्रहों के समान मुंथा की भी स्थापना की जाती है। मुंथा यद्यपि कोई ग्रह नहीं है, तो भी इसका फल ग्रह के समान ही महत्त्वपूर्ण है। मुंथा जन्म लग्न से प्रति वर्ष एक-एक राशि आगे चलती है। वर्ष कुण्डली में ४, ६, ७, ८ एवं १२वें भाव में स्थित मुंथा अशुभ फलदायक होती है। यदि ४, ६, ७, ८, १२वें भाव में शुभ ग्रह युक्त हो तो इतनी अधिक अनिष्टकारी नहीं होती। लग्नादि द्वादश भावों में मुंथा का फल इस प्रकार होगा—(१) **लग्न भाव में मुंथा** स्थित हो तो उस वर्ष शत्रुओं का नाश, भाग्य में वृद्धि, सवारी का सुख, यदि चर राशि में हो तो स्थान परिवर्तन के भी योग बनते हैं। (२) **द्वितीय भावस्थ मुंथा** हो तो कठिन परिश्रम द्वारा धन लाभ एवं धन प्राप्ति के साधन बनते हैं। मनोरंजन एवं सुख साधनों पर व्यय भी बढ़ता है। (३) **तृतीय भावस्थ मुंथा** होने से शत्रुओं का नाश, भाइयों, मित्रों या उच्च पद प्राप्त महानुभावों का सहयोग प्राप्त होता है। (४) **चतुर्थ भावस्थ मुंथा** शरीर कष्ट, वायु विकार, अपने-परायों से विरोध, गुप्त चिन्ताएँ, नौकरी और व्यवसाय में अनेक प्रकार के विघ्न, स्थान परिवर्तन आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (५) **पंचमस्थ मुंथा** अत्यन्त शुभ फल देने वाली होती है। सर्विस अथवा व्यापार में लाभ, धन, पुत्र एवं विद्या का लाभ, नए उद्योग से सफलता मिले। (६) **षष्ठस्थ मुंथा** हो तो शरीर कष्ट, शत्रुओं का भय, चित्त में अशान्ति, नानके पक्ष को हानि, स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहता है। (७) **सप्तमस्थ मुंथा** अशुभ रहती है। स्त्री अथवा निकट बन्धुओं की ओर से कलह-क्लेश, परिवारिक सदस्यों को कष्ट, बने बनाए कार्य बिगड़ना आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (८) **अष्टमस्थ मुंथा** होने से आशाओं में निराशा, पेट तथा अन्य गुप्त रोगों का भय, स्थान परिवर्तन, अनावश्यक यात्राओं तथा स्वास्थ्य पर भी अपव्यय होता है। (९) **नवमस्थ मुंथा** उत्तम फल देती है। नौकरी में पदोन्नति अथवा व्यवसाय में लाभ-वृद्धि, परिवारिक सुख एवं भाग्योन्नति होती है। (१०) **दशमस्थ मुंथा** होने से आर्थिक लाभ, सरकारी क्षेत्र में यदि कोई कार्य रुका होगा तो पूरा होगा (अर्थात् लाभ होगा) तथा सोचे हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। (११) **ग्यारवें भाव में मुंथा** होने से धन लाभ सुख-प्राप्ति, व्यापार और क्रय-विक्रय के कार्यों से लाभ होगा। (१२) **द्वादशस्थ मुंथा** आने से नया व्यापार तथा यात्रा करने से हानि, स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे।

वेध सिद्ध शुद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी (घण्टा-मिनटों में)

सूर्य सिद्धान्तानुसार 365 दिन, 15 घटी, 31 पल, 30 विपलों में—**अर्थात्** 365 दिन, 6 घण्टे, 12 मिनट एवं 36 सैकिंडों में सूर्य पुन: उसी स्थान या बिन्दु पर आ जाता है। जबकि नवीन एवं आधुनिक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि सूर्य (पृथ्वी) को पुन: उसी बिन्दु पर आने में 365 दिन, 6 घण्टे, 9 मिनट एवं 9 सैकिंड लगते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग साढ़े तीन मिनटों अर्थात् 3 मिनट 27 सैकिंड (प्रतिवर्ष) का अन्तर पड़ता है तथा वर्षमान सारिणी में यह अन्तर प्रतिवर्ष बढ़ता जाता है। 40 वर्षों के अतराल में यह अन्तर 2 घण्टे 18 मिनट का हो जाएगा। जिससे प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय सारणी से एक/दो लग्नों का अतर हो जाना स्वाभाविक है।

आजकल अधिकांश ज्योतिषी वेध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। आधुनिक कम्पयूटर प्रणाली द्वारा भी नवीन वर्ष प्रवेश सरिणी का ही अनुमोदन किया जाता है।

गत वर्षों से पंचांग दिवाकर में नवीन सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी घड़ी/पलात्मक में दे चुके हैं। आगे वेद्ध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश सारिणी धण्टा/मिनटों में दे रहे हैं। **वर्ष-लग्न** निकालने के लिए इसका प्रयोग **और भी अधिक सरल** है।

प्रस्तुत सारिणी की प्रयोग विधि—आपको जिस साल का वर्ष प्रवेश ज्ञात करना हो, उस वर्ष में से जन्म वर्ष निकाल देने से हम **गताब्द** अर्थात् गतवर्ष मिलेंगे। गतवर्ष के सामने के वार एवं घंटा/मिंट को अपने जन्म वार एवं जन्म समय (स्टैं. टा.) में जमा कर देने से हमें नववर्ष प्रवेश कालीन वार एवं घण्टा-मिनट भा. स्टैं. टाईम में मिल जाएगा। नववर्ष प्रवेश स्टैं. घंटा/मिंट को दैनिक लग्न् में देखने से हमें लग्न ज्ञात हो जाएगा। **ध्यान रहे,** सारिणी में जमा करने से जोड़ यदि 24 घं. से अधिक आ जाए, तो उसमें से 24 घटा दें, तथा 1 वार जमा कर लेवें तथा वार की गणना रविवार से की जाती है।

	वार	घंटे	मिनट
जन्म वार समयादि	4	9	30
सारिणी से प्राप्त संख्या	+ 2	16	35
	6	26	05
	= 10	03	37
अथवा———	**7 वार**	2	05
	(शनिवार)		

उदाहरण—मान लो किसी जातक का जन्म 2 अक्तूबर, 1974 ई० में, बुधवार की प्रात: साढ़े नौ (9/30)बजे हुआ। यदि हमने उस जातक का सन् 2004 ई. की वर्ष कुण्डली तैयार करनी है, तो 2004 ई. में से जन्म वर्ष घटा देने पर हमें 30 गतवर्ष प्राप्त हुए। आगे दी गई वर्ष प्रवेश सारिणी में गतवर्ष 30 के सामने हमें 2 वार, 16 घण्टे एवं 35 मिनट मिले। इनको जातक के जन्मवार एवं जन्म समय (9.30) में जमा कर देने से हमें 6 वार 26 घण्टे, 05 मिनट प्राप्त हुए। अब 26 घण्टों में से 24 घं. घटा देने और 1 वार बढ़ा देने से हमें 7 वार अर्थात् शनिवार की प्रात: 2 बजकर, 05 मिनट प्राप्त हुए।

जन्त्री/पंचाँग में दी गई दै. लग्न सारिणी से देखने पर 1 अक्तू. की मध्य रात्रि एवं 2 अक्तू. की प्रात: 2 बजकर 05 पर हमें **कर्क वर्ष लग्न** प्राप्त हुआ। वर्ष लग्न कर्क में सं. २०६१ की पंचांग से 2 अक्तू. २००४ ई. प्रात: 2/05 स्टै. टा. के ग्रह स्थापन करके हमें नववर्ष प्रवेश की कुण्डली प्राप्त होगी। मुंथा लगाने के लिए जातक के जन्म लग्न राशि में गतवर्ष जमा करके प्राप्त संख्या को 12 से भाग देने जो संख्या शेष बचे उसी राशि पर **मुंथा** स्थापित की जाती है।

वर्ष लग्न के अंश, कला, विकला जानने के लिए हमें वर्षेष्ट, सूर्य स्पष्ट तथा (जातक द्वारा वर्तमान में स्थायी तौर पर रह रहे) नगर की लग्न सारिणी का प्रयोग करना होगा। अधिक जानकारी एवं फलादेश के लिए हमारी प्रकाशित **'वर्षफल चन्द्रिका'** पुस्तक का अध्ययन करें।

गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट
1	1	6	9	**26**	4	15	58	**51**	1	01	47	**76**	4	11	36
2	2	12	18	**27**	5	22	07	**52**	2	07	57	**77**	5	17	46
3	3	18	27	**28**	0	04	17	**53**	3	14	06	**78**	6	23	55
4	5	00	37	**29**	1	10	26	**54**	4	20	15	**79**	1	06	04
5	6	6	46	**30**	2	16	35	**55**	6	02	24	**80**	2	12	13
6	0	12	55	**31**	3	22	44	**56**	0	08	33	**81**	3	18	22
7	1	19	04	**32**	5	04	53	**57**	1	14	42	**82**	5	00	31
8	3	01	13	**33**	6	11	02	**58**	2	20	51	**83**	6	06	41
9	4	07	23	**34**	0	17	32	**59**	4	03	01	**84**	0	12	50
10	5	13	32	**35**	1	23	21	**60**	5	09	10	**85**	1	18	59
11	6	19	41	**36**	3	05	30	**61**	6	15	19	**86**	3	01	08
12	1	01	50	**37**	4	11	39	**62**	0	21	28	**87**	4	07	17
13	2	07	59	**38**	5	17	48	**63**	2	03	37	**88**	5	13	26
14	3	14	08	**39**	6	23	57	**64**	3	06	43	**89**	6	19	36
15	4	20	17	**40**	1	06	07	**65**	4	15	56	**90**	1	01	45
16	6	02	27	**41**	2	12	16	**66**	5	22	05	**91**	2	07	54
17	0	08	36	**42**	3	18	25	**67**	0	04	14	**92**	3	14	03
18	1	14	45	**43**	5	00	34	**68**	1	10	23	**93**	4	20	12
19	2	20	54	**44**	6	06	43	**69**	2	16	32	**94**	6	02	21
20	4	03	03	**45**	0	12	42	**70**	3	22	41	**95**	0	08	30
21	5	9	12	**46**	1	19	02	**71**	5	04	51	**96**	1	14	40
22	6	15	22	**47**	3	01	11	**72**	6	11	00	**97**	2	20	49
23	0	21	31	**48**	4	07	20	**73**	0	17	09	**98**	4	20	58
24	2	03	40	**49**	5	13	29	**74**	1	23	18	**99**	5	09	07
25	3	09	49	**50**	6	19	38	**75**	3	05	27	**100**	6	15	16

श्री दुर्गा चरित् एवं सप्तशती की महिमा

सृष्टि स्थिति विनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणामये नारायणि नमोऽस्तु ते॥

कलियुग में समस्त दुःखों एवं कष्टों के निवारण का एकमात्र उपाय भगवती देवी दुर्गा की उपासना ही शास्त्रों में बतलाया गया है। "**कलौ हि कार्य सिद्धयर्थमुपायं श्री दुर्गार्चनम्॥**" श्री दुर्गासप्तशती में वर्णित श्री दुर्गा जी के चरितों का विधिपूर्वक पाठ करने से मनुष्यों के पाप नष्ट होकर उन्हें धन-धान्य एवं सौभाग्यादि की प्राप्ति होती है। शुभ कार्यों में बार-बार पड़ने वाले विघ्नों की शान्ति होती है। विधिपूर्वक पाठ करने से जीवन के चारों क्षेत्रों-धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष में मनोवाँछित फल प्रदान कराने वाली **मन्दाकिनी** है। विश्व की अधिकांश महान् विभूतियाँ जैसे जगद्गुरु शंकराचार्य, छत्रपति शिवाजी, गुरु गोबिन्द सिंह, रामकृष्ण परमहंस इत्यादि अनेक महापुरुष, महाशक्ति भगवती दुर्गा के उपासक रहे हैं।

जो व्यक्ति चैत्र, आश्विनादि नवरात्रों में दीपावली, दशहरा, अष्टमी आदि पर्वों पर अथवा कोई आकस्मिक संकट उपस्थित हो जाने पर श्रद्धा भक्ति के साथ श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ करता है। माँ दुर्गा की कृपा शक्ति से समस्त विघ्न दूर होकर मनोवांछित फलों की प्राप्ति हो जाती है। पाठोपरान्त पाठ की दशांश संख्या में श्री दुर्गा हवन करने से शीघ्र ही कामना सिद्धि होती है।

श्री दुर्गासप्तशती मात्र धर्म ग्रन्थ ही नहीं, बल्कि एक सिद्ध ग्रन्थ है। श्री दुर्गा सप्तशती के प्रस्तुत नवीन संशोधित संस्करण में मूल पाठ के साथ हिन्दी टीका, श्री दुर्गा यन्त्र, संक्षिप्त पाठ विधि, श्री दुर्गा पाठ सार कथा, श्री नवदुर्गा महिमा, देवी कवच, अर्गला स्तोत्र, तीनों रहस्य, नवचण्डी, शतचण्डी-विधान, श्री सप्तशती के प्रत्येक अध्याय के मन्त्रों की आहुतियां हवन विधि सहित, अनुष्ठान हेतु अनेक **काम्य तान्त्रिक प्रयोग,** कनकधारा स्तोत्र, आरतियां इत्यादि अनेक नवीन विषय जो अन्य किसी भी अन्य प्रचलित सप्तशती में आप नहीं पाएँगे॥ मूल पाठ के साथ हवन विधि भी (हिन्दी) टीका सहित दी गई है जिससे कर्मकाण्डी पण्डित जी के अतिरिक्त साधारण श्रद्धालु भी विधि अनुसार पाठ करके भगवती देवी की कृपा के पात्र बन सकते हैं। धर्म पारायण प्रत्येक पाठक के लिए संग्रहणीय एवं उपयोगी पुस्तक। इसमें दिए गए तान्त्रिक प्रयोगों की सहायता से मनोवांछित कामनाओं की सहज पूर्ति हो सकती है। श्री दुर्गासप्तशती (सरल भाषा में) भी उपलब्ध है। श्री दुर्गाचन सृति भी उपलब्ध है।

भेंट—55 रुपए डाक व्यय 20 रु. अलग॥

नोट—कार्यालय के नियमानुसार 50 रु. अग्रिम मनीआर्डर द्वारा भेजें।

किसी ग्रह के अंश कलादि स्पष्ट के द्वारा नक्षत्र-पाद (चरण) आरम्भ ज्ञात करना (प्रारम्भ काल)

सूर्य चन्द्रादि ग्रह अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों के क्रांतिवृत्त (Zodiac = 360°) को पूरा परिभ्रमण करने में अलग-अलग समय लेते हैं। ३६० अंश को२७ द्वारा भाग देने से प्रति नक्षत्र का मध्यम मान १३ अंश २० कला बनता है तथा एक नक्षत्र के चार चरण (पाद) होने से प्रत्येक नक्षत्र पाद को भोग्य मान ३°—२०' (अंश कला) होगा (१३°—२०') ÷ 4 = 3°—20' शून्य से प्रारम्भ होकर प्रतयेक ग्रह इसी भान्ति क्रमानुसार नक्षत्र चरण राशि आदि परिवर्तन करता है। अधिक व्याख्या हेतु देखें ज्यो. तत्त्व।

रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि
०—००—००	अश्विनी (१) मेषे	४—००—००	मघा (१) सिंहे	८—००—००	मूला (१) धनु
०—०३—२०	,, (२) ,,	४—०३—२०	,, (२) ,,	८—०३—२०	,, (२) ,,
०—०६—४०	,, (३) ,,	४—०६—४०	,, (३) ,,	८—०६—४०	,, (३) ,,
०—१०—००	,, (४) ,,	४—१०—००	,, (४) ,,	८—१०—००	,, (४) ,,
०—१३—२०	भरणी (१) ,,	४—१३—२०	पूफा (१) ,,	८—१३—२०	पूषा (१) ,,
०—१६—४०	,, (२) ,,	४—१६—४०	,, (२) ,,	८—१६—४०	,, (२) ,,
०—२०—००	,, (३) ,,	४—२०—००	,, (३) ,,	८—२०—००	,, (३) ,,
०—२३—२०	,, (४) ,,	४—२३—२०	,, (४) ,,	८—२३—२०	,, (४) ,,
०—२६—४०	कृतिका (१) मेषे	४—२६—४०	उफा (१) ,,	८—२६—४०	उषा (१) ,,
१—००—००	,, (२) वृषे	५—००—००	,, (२) कन्या	९—००—००	उषा (२) मक
१—०३—२०	,, (३) ,,	५—०३—२०	,, (३) ,,	९—०३—२०	,, (३) ,,
१—०६—४०	,, (४) ,,	५—०६—४०	,, (४) ,,	९—०६—४०	,, (४) ,,
१—१०—००	रोहिणी (१) ,,	५—१०—००	हस्ते (१) ,,	९—१०—००	श्रव (१) ,,
१—१३—२०	,, (२) ,,	५—१३—२०	,, (२) ,,	९—१३—२०	,, (२) ,,
१—१६—४०	,, (३) ,,	५—१६—४०	,, (३) ,,	९—१६—४०	,, (३) ,,
१—२०—००	,, (४) ,,	५—२०—००	,, (४) ,,	९—२०—००	,, (४) ,,
१—२३—२०	मृगशिर (१) ,,	५—२३—२०	चित्रा (१) ,,	९—२३—२०	धनि (१) ,,
१—२६—४०	,, (२) ,,	५—२६—४०	,, (२) ,,	९—२६—४०	,, (२) ,,
२—००—००	,, (३) मिथुन	६—००—००	चित्रा (२) तुला	१०—००—००	,, (३) कुंभे
२—०३—२०	,, (४) ,,	६—०३—२०	,, (४) ,,	१०—०३—२०	,, (४) ,,
२—०६—४०	आर्द्रा (१) ,,	६—०६—४०	स्वाती (१) ,,	१०—०६—४०	शतभिषा (१),,
२—१०—००	,, (२) ,,	६—१०—००	,, (२) ,,	१०—१०—००	,, (२) ,,
२—१३—२०	,, (३) ,,	६—१३—२०	,, (३) ,,	१०—१३—२०	,, (३) ,,
२—१६—४०	,, (४) ,,	६—१६—४०	,, (४) ,,	१०—१६—४०	,, (४) ,,
२—२०—००	पुनर्वसु (१) ,,	६—२०—००	विशाखा (१) ,,	१०—२०—००	पूभा (१) ,,
२—२३—२०	,, (२) ,,	६—२३—२०	,, (२) ,,	१०—२३—२०	,, (२) ,,
२—२६—४०	,, (३) ,,	६—२६—४०	,, (३) ,,	१०—२६—४०	,, (३) ,,
३—००—००	पुनर्वसु (४) कर्के	७—००—००	,, (४) वृश्चिके	११—००—००	पूभा (४) मीने
३—०३—२०	पुष्ये (१) ,,	७—०३—२०	अनुराधा (१) ,,	११—०३—२०	उभा (१) ,,
३—०६—४०	,, (२) ,,	७—०६—४०	,, (२) ,,	११—०६—४०	,, (२) ,,
३—१०—००	,, (३) ,,	७—१०—००	,, (३) ,,	११—१०—००	,, (३) ,,
३—१३—२०	,, (४) ,,	७—१३—२०	,, (४) ,,	११—१३—२०	उभा (४) ,,
३—१६—४०	अश्ले (१) ,,	७—१६—४०	ज्ये. (१) ,,	११—१६—४०	रेवती (१) ,,
३—२०—००	,, (२) ,,	७—२०—००	,, (२) ,,	११—२०—००	,, (२) ,,
३—२३—२०	,, (३) ,,	७—२३—२०	,, (३) ,,	११—२३—२०	,, (३) ,,
३—२६—४०	,, (४) ,,	७—२६—४०	,, (४) ,,	११—२६—४०	रेवती (४) ,,
				००—००—००	अशि. (१) मेषे

घड़ी पलों का घण्टा-मिनट (भा. स्टैं. टा.) में परिवर्तन

भारतीय ज्योतिष में प्राचीन काल से ही तिथि, नक्षत्र, योग एवं ग्रहों के मान के सम्बन्ध में घड़ी-पलों का ही प्रयोग होता आया है। परन्तु आधुनिक काल में पाश्चात्य प्रभाव से घण्टों-मिनटों का प्रचलन विशेषतया सर्वत्र होने लगा है। इसके अतिरिक्त उल्लेखनीय है कि तिथि-नक्षत्रों के सम्बन्ध में दिए गए घटी-पलादि स्थानीय सूर्योदय से सम्बन्धित होने के कारण क्षेत्रीय (एक देशीय) (अथवा निकटस्थ नगर) के लिए ही ग्राह्य होते हैं जबकि घण्टा-मिनटों एवं स्टैं. टा. में दिए गए तिथि, नक्षत्र एवं ग्रहों के संचार आदि सम्पूर्ण भारत में सभी प्रदेशों व नगरों के लिए ग्राह्य एवं उपयोगी होते हैं।

पाठकों की सुविधा के लिए पंचांगदिवाकर में सूर्यादि सभी ग्रहों के राशि-प्रवेश-घंटा-मिनटों (भा. स्टैं. टा.) में भी दिए गए हैं। उनका समय भा. स्टैं. टा. में सभी प्रदेशों के लिए समान रूप में ग्राह्य है। ग्रहों के प्रवेश आदि के समय में विदेशी नगरों का स्टैं. अन्तर जमा अथवा घटा करके विदेशों में ग्रहों के प्रवेश आदि का समय भी जान सकते हैं।

पंचागदिवाकर में दिए गए तिथि, नक्षत्र, योग, भद्रा, सूर्य-चन्द्रादि ग्रहों को घण्टा-मिनटों एवं भा. स्टैं. टा. में परिवर्तन करना अत्यन्त सरल है। पंचाँग में दिए गए तिथि, नक्षत्र, योगादि के घड़ी-पलों को आगे लिखी सारिणी द्वारा घण्टा-मिनटों में परिवर्तन कर लेने तथा प्राप्त घण्टा-मिनटों में उसी दिन का सूर्योदय जमा कर देने से हमें भारतीय स्टैं. टाईम में तिथि, नक्षत्रादि का समाप्ति काल तथा सूर्य-चन्द्रादि ग्रहों का प्रवेश काल ज्ञात हो जाएगा। यह स्टैं. समय भारत के सभी नगरों के लिए ग्राह्य होगा। उदाहरणस्वरूप मान लो हमने वि. संवत् 2061, चतुर्दशी (1 जुलाई, 2003 ई.) के तिथि, नक्षत्र आदि के घड़ी-पलों को स्टैं. टा. में परिवर्तित करना है। इसकी प्रक्रिया इस प्रकार से होगी। चतुर्दशी के आगे 37 घड़ी 35 पल लिखा है। आगे लिखी तालिका के आधार पर इसके 15 घण्टा, 02 मिनट बने, इसको उसी दिन के सूर्योदय 5.30 में जमा करने से 20 घण्टा, 32 मिनट अर्थात् चतुर्दशी तिथि रात्रि 8 बजकर 32 मिनट तक रही। इसी भान्ति ज्येष्ठा नक्षत्र के २१/०८ घड़ी/पलों के 8/27 घं. मिं. में सूर्योदय (5/30) जमा करने पर पुनर्वसु नक्षत्र का समाप्ति काल 13/57 घं. मिं. मिला। इसी दिन चंद्रमा धनु में २१/०८ घट्यादि में प्रवेश करता है। २१/०८ घड़ी/पलों के 8/27 घं. मिं. बने। इसमें भी वही सूर्य उदय 5/30 जमा करने से चन्द्रमा का कन्या में प्रवेश 13/57 घं. मिं. स्टैं. टा. प्राप्त हुआ।

उदाहरण (2)—मानलो कि संवत् 2060 में 13 जुलाई, सन् 2003 को पूर्णिमा के 48/13 घट्यादि, के 19 घण्टे 17 मिनट बने इनमें सूर्योदय 5.36 जमा करने से 24.53 घं. मिं. स्टैं. टा. प्राप्त हुआ। इसी दिन पूषा नक्षत्र 46/25 घटी पलों के 18.34 घण्टा/ मिनटों में 5/36 (सू. उ.) जमा कर देने से मघा नक्षत्र का मसा. काल 24.10 घण्टे - अर्थात् रात्रि 12 बजकर 10 मिंट स्टैं. टाईम बना। यह समय सम्पूर्ण भारतीय नगरों के लिए ग्राह्य होगा। इसी दिन मघा नक्षत्र का समाप्ति काल यदि इंग्लैण्ड में जानना चाहें तो वहाँ पर मघा का समा. काल 4.30 घण्टे पहिले [सामान्यतः इंग्लैण्ड का भारत से स्टैण्डर्ड अन्तर 5.30 घण्टे का होता है परन्तु लगभग अप्रैल से अक्तूबर के मध्य ग्रीष्म कालीन संस्कार होने से एक घण्टा कम करके यह अन्तर 4/30 घण्टे का हो जाता है।] **अर्थात् रात्रि 19 बजकर 40 मिनट पर समाप्त हो जाएगा। इसी प्रकार सभी देशों में तिथि, नक्षत्र एवं ग्रहों का प्रवेश काल जानें।**

घड़ी-पलों का घण्टे-मिनटों में परिवर्तन सारिणी

घड़ी	घंटे मिंट	घड़ी	घंटे मिंट	घड़ी	घंटे मिंट	पल	मिंट सैकिं.	पल	मिंट सैकिं.	पल	मिंट सैकिं.
1	0 ... 24	21	8 ... 24	41	16 ... 24	1	0 ... 24	21	8 ... 24	41	16 ... 24
2	0 ... 48	22	8 ... 48	42	16 ... 48	2	0 ... 48	22	8 ... 48	42	16 ... 48
3	1 ... 12	23	9 ... 12	43	17 ... 12	3	1 ... 12	23	9 ... 12	43	17 ... 12
4	1 ... 36	24	9 ... 36	44	17 ... 36	4	1 ... 36	24	9 ... 36	44	17 ... 36
5	2 ... 00	25	10 ... 00	45	18 ... 00	5	2 ... 00	25	10 ... 00	45	18 ... 00
6	2 ... 24	26	10 ... 24	46	18 ... 24	6	2 ... 24	26	10 ... 24	46	18 ... 24
7	2 ... 48	27	10 ... 48	47	18 ... 48	7	2 ... 48	27	10 ... 48	47	18 ... 48
8	3 ... 12	28	11 ... 12	48	19 ... 12	8	3 ... 12	28	11 ... 12	48	19 ... 12
9	3 ... 36	29	11 ... 36	49	19 ... 36	9	3 ... 36	29	11 ... 36	49	19 ... 36
10	4 ... 00	30	12 ... 00	50	20 ... 00	10	4 ... 00	30	12 ... 00	50	20 ... 00
11	4 ... 24	31	12 ... 24	51	20 ... 24	11	4 ... 24	31	12 ... 24	51	20 ... 24
12	4 ... 48	32	12 ... 48	52	20 ... 48	12	4 ... 48	32	12 ... 48	52	20 ... 48
13	5 ... 12	33	13 ... 12	53	21 ... 12	13	5 ... 12	33	13 ... 12	53	21 ... 12
14	5 ... 36	34	13 ... 36	54	21 ... 36	14	5 ... 36	34	13 ... 36	54	21 ... 36
15	6 ... 00	35	14 ... 00	55	22 ... 00	15	6 ... 00	35	14 ... 00	55	22 ... 00
16	6 ... 24	36	14 ... 24	56	22 ... 24	16	6 ... 24	36	14 ... 24	56	22 ... 24
17	6 ... 48	37	14 ... 48	57	22 ... 48	17	6 ... 48	37	14 ... 48	57	22 ... 48
18	7 ... 12	38	15 ... 12	58	23 ... 12	18	7 ... 12	38	15 ... 12	58	23 ... 12
19	7 ... 36	39	15 ... 36	59	23 ... 36	19	7 ... 36	39	15 ... 36	59	23 ... 36
20	8 ... 00	40	16 ... 00	60	24 ... 00	20	8 ... 00	40	16 ... 00	60	24 ... 00

'दैनिक लग्न सारिणी'—दिल्ली-के लग्न ज्ञान

[जालन्धर की दै. लग्न सारणी के अतिरिक्त दिल्ली की दैनिक सारिणी]

आगामी पृष्ठों में दी गई लग्न सारणी में अंग्रेज़ी तारीखों के अनुसार दिल्ली में निरयण मेषादि लग्नों का समाप्ति काल घंटा-मिंट भा० स्टैं० टा० में दिया गया है। किसी महीने की तारीख को कौन-सा लग्न कब समाप्त होगा। यह इस सारिणी से शीघ्र ही जाना जा सकता है। सूक्ष्मता के लिए आगामी पृष्ठ में दी गई वार्षिक संस्कार तालिका का भी प्रयोग कर लेना उचित रहेगा। लग्न सम्बन्धी और अधिक सूक्ष्मता एवं स्पष्टता लाने के लिए गत पृष्ठों में दी गई दिल्ली की लग्न सारिणी (अक्षांश २९°, पलभा आधारित) का जन्मेष्ट एवं सूर्य स्पष्ट का प्रयोग करते हुए सूक्ष्म लग्न स्पष्ट भी ज्ञात कर सकते हैं।

अथ केरल प्रश्न चक्रम्

प्रातः काले वदेत्पुष्पं मध्याह्ने तु फलं वदेत् ॥ सायंकाले वदेन्नद्यः रात्रौतु देवतां वदेत् ॥१॥

ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष	ध्वजादि अष्टक वर्गाः
अ इ उ ए	क ख ग घ	च छ ज झ	ट ठ ड ढ	त थ द ध	प फ ब भ	य र ल	श ष स	उच्चारित प्रश्नाक्षरणि
ओ	ङ	ञ	ण	न	म	व	ह	
अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	सत्यासत्य प्रश्न निर्णयः
धातु	धातु	मूल	जीव	जीव	जीव	मूल	जीव	धातु मूल जीव ज्ञान
कुशल	रोग	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	प्रवासी सुख दुःख
स्थिर	महाकष्ट	चंचल	चंचल	महाकष्ट	कष्ट	सुख	कष्ट	प्रवासी चर स्थिरादिज्ञानम्
समीप	समीप	दूरस्थ	पुनर्गत	मार्गस्थ	मार्गस्थ	दूरस्थ	पुनर्गत	प्रवासी गमागम ज्ञानम्
स्वल्प	सप्त	एकविंश	एकमास	४५ दिन	दो मास	दो मास	एकवर्ष	प्रवासी दिनावधि ज्ञानम्
पत्र	अस्थि	फल	काष्ठ	धान्य	तृण	जीव	पुष्प	मुष्ठि प्रश्ने द्रव्यं ज्ञानम्
गोधूम	तिल	पीतान्न	दाल	तण्डुल	चणक	गुण	यव	गोधूमादि धान्य ज्ञानम्
कुसुम्भ	श्वेतांग	लोहिता	पांडु	पीत	आकाश	श्याम	मिश्र	मुष्ठि प्रश्ने वर्ण ज्ञानम्
सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	रोगी प्रश्ने सुखादि ज्ञानम्
४५ दिन	दो मास	४५ दिन	१ मास	१५ दिन	१ मास	७ दिन	२ मास	कष्ट दिनादि ज्ञानम्
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	नष्ट लाभालाभ ज्ञानम्
पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	नष्ट लाभालाभ ज्ञानम्
ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	धनिक	नौकर	नीच	नाई	चौर जाति प्रश्ने ज्ञानम्
उखल	अग्निगृहे	अरण्ये	अन्तरिक्ष	भांडगते	काष्टगते	गृहे	भूमिस्थे	चोरित द्रव्य स्थानम्
भैरव	दुर्गा	सूर्य	हनुमन्त	रुद्रगण	सरस्वती	गणेश	पितर	देव पूजा उपासनादि
आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	शत्रु गमागम प्रश्न ज्ञानम्
जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय हानि प्रश्न ज्ञानम्
न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	बन्दी मोक्षामोक्ष ज्ञानम्
७ दिन	१ वर्ष	१५ दिन	६ मास	१ मास	६ मास	३ मास	१ वर्ष	बन्दी मोक्षा अविधि
स्थिर	न सिद्धि	कलह	दीर्घकाल	त्वरित	दीर्घकाल	स्थिर	न सिद्धि	कार्यसिद्धिभविष्यति नवा
शुभः	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभः	कलह	विवाह प्रश्ने शुभाशुभम्
पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र व कन्या प्राप्ति ज्ञानम्
१०० वर्ष	१ वर्ष	१०० वर्ष	२० वर्ष	६० वर्ष	१२ वर्ष	४५ वर्ष	६ वर्ष	आयु प्रश्ने आयु ज्ञानम्
लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	धन लाभ प्रश्ने लाभालाभ
विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	वर्षा प्रश्ने भविष्यति नवा
७ दिन	७ दिन	३० दिन	२० दिन	१० मास	२ मास	२ मास	२ मास	वर्षा वर्षण दिनादि

दैनिक लग्न सारणी जनवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

जनवरी	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	8 10	9 53	11 21	12 45	14 21	16 16	18 30	20 50	23 09	1 25	3 43	6 02
2	8 06	9 49	11 17	12 41	14 17	16 12	18 26	20 47	23 05	1 21	3 39	5 58
3	8 02	9 45	11 13	12 37	14 13	16 08	18 22	20 43	23 01	1 17	3 35	5 54
4	7 58	9 41	11 09	12 33	14 09	16 04	18 18	20 39	22 57	1 13	3 31	5 50
5	7 54	9 37	11 05	12 29	14 05	16 00	18 14	20 35	22 53	1 09	3 27	5 46
6	7 50	9 33	11 01	12 25	14 01	15 56	18 10	20 31	22 49	1 05	3 23	5 42
7	7 46	9 29	10 57	12 21	13 57	15 52	18 06	20 27	22 45	1 01	3 19	5 38
8	7 42	9 25	10 53	12 17	13 53	15 48	18 02	20 23	22 41	0 57	3 15	5 34
9	7 38	9 21	10 49	12 13	13 49	15 44	17 58	20 18	22 37	0 53	3 11	5 30
10	7 34	9 17	10 45	12 09	13 45	15 40	17 54	20 15	22 33	0 49	3 07	5 26
11	7 30	9 13	10 41	12 05	13 41	15 36	17 50	20 11	22 29	0 45	3 03	5 22
12	7 26	9 09	10 37	12 01	13 37	15 32	17 46	20 07	22 25	0 41	2 59	5 18
13	7 22	9 05	10 33	11 57	13 33	15 28	17 42	20 04	22 22	0 37	2 55	5 14
14	7 18	9 01	10 29	11 53	13 29	15 24	17 38	20 00	22 18	0 33	2 51	5 10
15	7 14	8 57	10 25	11 49	13 25	15 20	17 34	19 56	22 14	0 29	2 47	5 6
16	7 10	8 54	10 22	11 46	13 22	15 17	17 31	19 52	22 10	0 26	2 43	5 2
17	7 06	8 50	10 18	11 42	13 18	15 13	17 27	19 48	22 06	0 22	2 39	4 58
18	7 02	8 46	10 14	11 38	13 14	15 09	17 23	19 44	22 02	0 18	2 35	4 54
19	6 58	8 42	10 10	11 34	13 10	15 05	17 19	19 40	21 58	0 14	2 31	4 51
20	6 54	8 38	10 06	11 30	13 06	15 01	17 15	19 36	21 54	0 10	2 27	4 47
21	6 50	8 34	10 02	11 26	13 02	14 57	17 11	19 32	21 50	0 6	2 23	4 43
22	6 47	8 30	9 58	11 22	12 58	14 53	17 07	19 28	21 46	0 2	2 19	4 39
23	6 43	8 26	9 54	11 18	12 54	14 49	17 03	19 24	21 42	23 58	2 15	4 35
24	6 39	8 22	9 50	11 14	12 50	14 45	16 59	19 20	21 38	23 54	2 12	4 31
25	6 35	8 18	9 46	11 10	12 46	14 41	16 55	19 16	21 34	23 50	2 08	4 27
26	6 31	8 15	9 43	11 07	12 43	14 38	16 52	19 13	21 31	23 47	2 04	4 23
27	6 27	8 11	9 39	11 03	12 39	14 34	16 48	19 09	21 27	23 43	2 00	4 19
28	6 23	8 07	9 35	10 59	12 35	14 30	16 44	19 05	21 23	23 39	1 56	4 16
29	6 19	8 03	9 31	10 55	12 31	14 26	16 40	19 01	21 19	23 35	1 52	4 12
30	6 15	7 59	9 27	10 51	12 27	14 22	16 36	18 57	21 15	23 31	1 48	4 08
31	6 12	7 55	9 23	10 47	12 23	14 18	16 32	18 53	21 11	23 27	1 44	4 04
फर	6 08	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी फरवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

फरवरी	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 51	9 19	10 43	12 19	14 14	16 28	18 49	21 07	23 23	1 40	4 00	6 04
2	7 47	9 15	10 39	12 15	14 10	16 24	18 45	21 03	23 19	1 36	3 56	6 00
3	7 43	9 11	10 35	12 11	14 06	16 20	18 41	20 59	23 15	1 32	3 52	5 56
4	7 39	9 07	10 31	12 07	14 02	16 16	18 37	20 55	23 11	1 28	3 48	5 52
5	7 35	9 03	10 27	12 03	13 58	16 12	18 33	20 52	23 07	1 24	3 44	5 48
6	7 31	8 59	10 23	11 59	13 54	16 08	18 29	20 48	23 03	1 21	3 40	5 44
7	7 27	8 55	10 19	11 55	13 50	16 04	18 25	20 44	22 59	1 17	3 36	5 40
8	7 23	8 51	10 15	11 51	13 46	16 00	18 21	20 40	22 55	1 13	3 32	5 36
9	7 19	8 47	10 11	11 47	13 42	15 56	18 18	20 36	22 51	1 09	3 28	5 32
10	7 15	8 43	10 07	11 43	13 38	15 52	18 14	20 32	22 47	1 05	3 24	5 28
11	7 11	8 39	10 03	11 39	13 34	15 48	18 10	20 28	22 43	1 01	3 20	5 24
12	7 07	8 35	9 59	11 35	13 30	15 44	18 06	20 24	22 39	24 57	3 16	5 20
13	7 04	8 31	9 55	11 31	13 26	15 40	18 02	20 20	22 35	24 53	3 12	5 16
14	7 00	8 27	9 51	11 27	13 22	15 36	17 58	20 16	22 31	24 49	3 08	5 12
15	6 56	8 23	9 47	11 23	13 18	15 32	17 54	20 12	22 27	24 45	3 04	5 08
16	6 52	8 19	9 43	11 19	13 14	15 28	17 50	20 08	22 23	24 41	3 00	5 04
17	6 48	8 15	9 39	11 15	13 10	15 24	17 46	20 04	22 19	24 37	2 56	5 01
18	6 44	8 11	9 35	11 11	13 06	15 20	17 42	20 00	22 15	24 33	2 52	4 57
19	6 40	8 07	9 31	11 07	13 02	15 16	17 38	19 56	22 11	24 29	2 48	4 53
20	6 36	8 04	9 28	11 04	12 58	15 13	17 34	19 52	22 07	24 25	2 44	4 49
21	6 32	8 00	9 24	11 00	12 55	15 09	17 30	19 48	22 03	24 21	2 41	4 45
22	6 28	7 56	9 20	10 56	12 51	15 05	17 26	19 44	21 59	24 17	2 37	4 41
23	6 24	7 52	9 16	10 52	12 47	15 01	17 22	19 40	21 55	24 14	2 33	4 37
24	6 20	7 48	9 12	10 48	12 43	14 57	17 18	19 36	21 51	24 10	2 29	4 33
25	6 16	7 44	9 08	10 44	12 39	14 53	17 14	19 32	21 47	24 06	2 25	4 29
26	6 12	7 40	9 04	10 40	12 35	14 49	17 10	19 28	21 43	24 02	2 21	4 25
27	6 08	7 36	9 00	10 36	12 31	14 45	17 06	19 24	21 39	23 58	2 17	4 21
28	6 05	7 32	8 57	10 32	12 27	14 41	17 02	19 20	21 35	23 54	2 13	4 17
मार्च	6 01	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी मार्च भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 28	8 53	10 28	12 23	14 37	16 58	19 16	21 31	23 50	2 09	4 13	5 57
2	7 24	8 49	10 24	12 19	14 33	16 54	19 12	21 27	23 46	2 05	4 09	5 53
3	7 21	8 45	10 21	12 16	14 30	16 50	19 08	21 23	23 42	2 01	4 05	5 49
4	7 17	8 41	10 17	12 12	14 26	16 46	19 04	21 19	23 38	1 57	4 01	5 45
5	7 13	8 37	10 13	12 08	14 22	16 42	19 00	21 15	23 35	1 53	3 58	5 41
6	7 09	8 33	10 09	12 04	14 18	16 38	18 56	21 11	23 31	1 49	3 54	5 37
7	7 05	8 29	10 05	12 00	14 14	16 34	18 52	21 08	23 27	1 45	3 50	5 33
8	7 01	8 25	10 01	11 56	14 10	16 30	18 48	21 04	23 23	1 41	3 46	5 29
9	6 57	8 21	9 57	11 52	14 06	16 27	18 45	21 00	23 19	1 38	3 42	5 25
10	6 53	8 17	9 53	11 48	14 02	16 23	18 41	20 56	23 15	1 34	3 38	5 21
11	6 49	8 13	9 49	11 44	13 58	16 19	18 37	20 52	23 11	1 30	3 34	5 17
12	6 45	8 09	9 45	11 40	13 54	16 15	18 33	20 48	23 08	1 26	3 30	5 14
13	6 41	8 05	9 41	11 36	13 50	16 11	18 29	20 44	23 04	1 23	3 27	5 10
14	6 37	8 01	9 37	11 32	13 46	16 07	18 25	20 40	23 00	1 19	3 23	5 06
15	6 33	7 57	9 33	11 28	13 42	16 03	18 21	20 36	22 56	1 15	3 19	5 02
16	6 29	7 53	9 29	11 24	13 38	15 59	18 17	20 32	22 52	1 11	3 15	4 58
17	6 25	7 49	9 25	11 20	13 34	15 55	18 13	20 28	22 48	1 07	3 11	4 54
18	6 21	7 45	9 21	11 16	13 30	15 51	18 09	20 24	22 44	1 03	3 07	4 50
19	6 17	7 41	9 17	11 12	13 26	15 47	18 05	20 20	22 40	0 59	3 03	4 46
20	6 13	7 37	9 13	11 08	13 23	15 43	18 01	20 16	22 36	0 55	2 59	4 42
21	6 09	7 33	9 09	11 04	13 19	15 39	17 57	20 12	22 32	0 51	2 55	4 38
22	6 05	7 29	9 05	11 00	13 15	15 35	17 53	20 08	22 28	0 47	2 51	4 34
23	6 01	7 26	9 01	10 56	13 11	15 31	17 49	20 04	22 24	0 43	2 47	4 30
24	5 57	7 22	8 57	10 53	13 07	15 27	17 45	20 00	22 20	0 39	2 43	4 27
25	5 53	7 18	8 53	10 49	13 03	15 23	17 41	19 56	22 16	0 35	2 39	4 23
26	5 49	7 14	8 49	10 45	12 59	15 19	17 37	19 53	22 12	0 31	2 35	4 19
27	5 45	7 10	8 46	10 41	12 55	15 15	17 33	19 49	22 08	0 27	2 31	4 15
28	5 41	7 06	8 42	10 37	12 51	15 11	17 29	19 45	22 04	0 23	2 28	4 11
29	5 37	7 02	8 38	10 33	12 47	15 07	17 25	19 41	22 00	0 19	2 24	4 07
30	5 34	6 58	8 34	10 29	12 44	15 03	17 21	19 37	21 56	0 15	2 20	4 03
31	5 30	6 54	8 30	10 25	12 40	14 59	17 17	19 33	21 52	0 11	2 16	3 59
अप्रै	5 26	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 50	8 26	10 21	12 36	14 55	17 13	19 29	21 48	0 07	2 12	3 55	5 22
2	6 46	8 22	10 17	12 32	14 51	17 09	19 25	21 44	0 03	2 08	3 51	5 18
3	6 42	8 18	10 13	12 28	14 47	17 05	19 21	21 40	23 59	2 04	3 47	5 14
4	6 38	8 14	10 09	12 24	14 43	17 01	19 18	21 36	23 55	2 00	3 43	5 10
5	6 34	8 10	10 05	12 20	14 39	16 57	19 14	21 33	23 52	1 56	3 39	5 06
6	6 31	8 07	10 01	12 16	14 35	16 53	19 10	21 29	23 48	1 52	3 35	5 02
7	6 27	8 03	9 58	12 12	14 31	16 49	19 06	21 25	23 44	1 48	3 31	4 58
8	6 23	7 59	9 54	12 08	14 27	16 46	19 02	21 21	23 40	1 44	3 27	4 54
9	6 19	7 55	9 50	12 04	14 23	16 42	18 58	21 17	23 36	1 40	3 23	4 51
10	6 15	7 51	9 46	12 00	14 20	16 38	18 54	21 13	23 32	1 36	3 19	4 47
11	6 11	7 47	9 42	11 56	14 16	16 34	18 50	21 09	23 28	1 32	3 15	4 43
12	6 07	7 43	9 38	11 52	14 12	16 30	18 46	21 05	23 24	1 28	3 11	4 39
13	6 03	7 39	9 34	11 48	14 08	16 26	18 42	21 01	23 20	1 24	3 07	4 35
14	5 59	7 35	9 30	11 44	14 04	16 22	18 38	20 57	23 16	1 20	3 03	4 31
15	5 55	7 31	9 26	11 41	14 00	16 18	18 34	20 53	23 12	1 16	2 59	4 27
16	5 51	7 27	9 22	11 37	13 56	16 14	18 30	20 49	23 08	1 12	2 55	4 23
17	5 47	7 23	9 18	11 33	13 52	16 10	18 26	20 45	23 04	1 08	2 51	4 19
18	5 43	7 19	9 15	11 29	13 49	16 06	18 23	20 41	23 00	1 04	2 47	4 15
19	5 39	7 15	9 11	11 25	13 45	16 02	18 19	20 37	22 56	1 00	2 43	4 11
20	5 35	7 11	9 07	11 21	13 41	15 58	18 15	20 33	22 52	00 56	2 39	4 07
21	5 31	7 07	9 03	11 17	13 37	15 54	18 11	20 29	22 49	00 52	2 35	4 03
22	5 27	7 03	8 59	11 13	13 33	15 50	18 07	20 25	22 45	00 48	2 31	3 59
23	5 23	6 59	8 55	11 09	13 29	15 46	18 03	20 22	22 41	00 44	2 27	3 55
24	5 19	6 55	8 51	11 05	13 25	15 42	17 59	20 18	22 37	00 40	2 23	3 51
25	5 15	6 51	8 47	11 01	13 21	15 38	17 55	20 14	22 33	00 36	2 19	3 47
26	5 11	6 47	8 43	10 57	13 17	15 34	17 51	20 10	22 29	00 32	2 15	3 43
27	5 07	6 44	8 39	10 53	13 13	15 30	17 47	20 06	22 25	00 28	2 11	3 39
28	5 03	6 40	8 35	10 49	13 10	15 26	17 43	20 02	22 21	00 24	2 07	3 35
29	4 59	6 36	8 31	10 45	13 06	15 22	17 39	19 58	22 17	00 20	2 03	3 31
30	4 55	6 32	8 27	10 41	13 02	15 19	17 35	19 54	22 13	00 17	1 59	3 27
मई	4 51	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी मई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 28	8 23	10 37	12 58	15 15	17 31	19 50	22 09	00 13	1 56	3 23	4 47
2	6 24	8 19	10 33	12 54	15 11	17 27	19 46	22 05	00 09	1 52	3 19	4 44
3	6 20	8 15	10 29	12 50	15 7	17 24	19 42	22 01	00 05	1 48	3 16	4 40
4	6 16	8 11	10 25	12 46	15 3	17 20	19 38	21 57	00 01	1 44	3 12	4 36
5	6 12	8 07	10 21	12 42	14 59	17 16	19 34	21 53	23 57	1 40	3 08	4 32
6	6 08	8 03	10 17	12 38	14 55	17 12	19 30	21 49	23 53	1 36	3 04	4 28
7	6 04	7 59	10 13	12 34	14 51	17 08	19 26	21 45	23 49	1 32	3 00	4 24
8	6 00	7 55	10 09	12 30	14 47	17 04	19 22	21 41	23 45	1 28	2 56	4 20
9	5 56	7 51	10 05	12 26	14 43	17 00	19 18	21 37	23 41	1 24	2 52	4 16
10	5 52	7 47	10 01	12 22	14 39	16 56	19 14	21 33	23 37	1 20	2 48	4 12
11	5 48	7 44	9 57	12 18	14 35	16 52	19 10	21 29	23 33	1 16	2 44	4 08
12	5 44	7 40	9 53	12 14	14 31	16 48	19 06	21 25	23 29	1 12	2 40	4 04
13	5 40	7 36	9 49	12 10	14 28	16 44	19 02	21 21	23 25	1 08	2 36	4 00
14	5 36	7 32	9 45	12 06	14 24	16 40	18 58	21 17	23 21	1 04	2 32	3 56
15	5 32	7 28	9 41	12 02	14 20	16 36	18 54	21 13	23 17	1 00	2 28	3 52
16	5 28	7 24	9 37	11 58	14 16	16 32	18 50	21 09	23 13	24 56	2 24	3 48
17	5 24	7 20	9 33	11 54	14 12	16 28	18 46	21 05	23 09	24 52	2 20	3 44
18	5 20	7 16	9 29	11 50	14 08	16 24	18 42	21 01	23 05	24 48	2 16	3 40
19	5 16	7 12	9 25	11 46	14 04	16 20	18 38	20 57	23 01	24 44	2 12	3 36
20	5 12	7 08	9 21	11 42	14 00	16 16	18 34	20 53	22 57	24 40	2 09	3 32
21	5 08	7 04	9 17	11 38	13 56	16 12	18 30	20 49	22 53	24 36	2 05	3 28
22	5 04	7 00	9 13	11 34	13 52	16 08	18 26	20 45	22 49	24 32	2 01	3 24
23	5 00	6 56	9 09	11 30	13 48	16 04	18 22	20 41	22 45	24 28	1 57	3 20
24	4 56	6 52	9 05	11 26	13 44	16 01	18 19	20 38	22 42	24 25	1 53	3 16
25	4 52	6 48	9 01	11 22	13 40	15 57	18 15	20 34	22 38	24 21	1 49	3 12
26	4 48	6 44	8 58	11 18	13 36	15 53	18 11	20 30	22 34	24 17	1 45	3 08
27	4 44	6 40	8 54	11 14	13 32	15 49	18 07	20 26	22 30	24 13	1 41	3 04
28	4 40	6 36	8 50	11 10	13 28	15 45	18 03	20 22	22 26	24 09	1 37	3 01
29	4 36	6 32	8 46	11 06	13 24	15 41	17 59	20 18	22 22	24 05	1 33	2 57
30	4 33	6 28	8 42	11 02	13 20	15 37	17 55	20 14	22 18	24 01	1 29	2 53
31	4 29	6 24	8 38	10 58	13 16	15 33	17 51	20 10	22 14	23 57	1 25	2 49
जून	4 25	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी जून भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 20	8 35	10 54	13 12	15 29	17 47	20 06	22 10	23 3	1 21	2 45	4 21
2	6 16	8 31	10 50	13 08	15 25	17 43	20 02	22 06	23 49	1 17	2 41	4 17
3	6 12	8 27	10 46	13 04	15 21	17 39	19 58	22 02	23 45	1 13	2 37	4 13
4	6 08	8 23	10 42	13 00	15 17	17 35	19 54	21 58	23 41	1 09	2 33	4 09
5	6 04	8 19	10 38	12 56	15 13	17 31	19 50	21 54	23 37	1 05	2 29	4 05
6	6 00	8 15	10 34	12 52	15 09	17 27	19 46	21 50	23 33	1 01	2 25	4 01
7	5 57	8 11	10 31	12 48	15 05	17 23	19 42	21 46	23 29	24 57	2 21	3 58
8	5 53	8 07	10 27	12 44	15 01	17 19	19 39	[illegible]	23 26	24 53	2 17	3 54
9	5 49	8 03	10 23	12 40	14 58	17 16	19 35	21 39	23 22	24 49	2 13	3 50
10	5 45	7 59	10 19	12 37	14 54	17 12	19 31	21 35	23 18	24 46	2 09	3 46
11	5 41	7 55	10 15	12 33	14 50	17 08	19 27	21 31	23 14	24 42	2 05	3 42
12	5 37	7 51	10 11	12 29	14 46	17 04	19 23	21 27	23 10	24 38	2 02	3 38
13	5 33	7 47	10 07	12 25	14 42	17 00	19 19	21 23	23 06	24 34	1 58	3 34
14	5 29	7 43	10 03	12 21	14 38	16 56	19 15	21 19	23 02	24 30	1 54	3 30
15	5 25	7 39	9 59	12 17	14 34	16 52	19 11	21 15	22 58	24 26	1 50	3 26
16	5 21	7 35	9 55	12 13	14 30	16 48	19 07	21 11	22 54	24 22	1 46	3 22
17	5 17	7 31	9 51	12 09	14 26	16 44	19 03	21 07	22 50	24 18	1 42	3 18
18	5 13	7 27	9 47	12 05	14 22	16 40	18 59	21 03	22 46	24 14	1 38	3 14
19	5 09	7 23	9 43	12 02	14 18	16 36	18 55	20 59	22 42	24 10	1 34	3 10
20	5 05	7 19	9 39	11 58	14 14	16 32	18 51	20 55	22 38	24 06	1 30	3 06
21	5 01	7 15	9 36	11 54	14 10	16 28	18 47	20 51	22 34	24 02	1 26	3 02
22	4 57	7 11	9 32	11 50	14 06	16 24	18 43	20 47	22 30	23 58	1 22	2 58
23	4 53	7 07	9 28	11 46	14 02	16 20	18 39	20 43	22 26	23 54	1 18	2 54
24	4 49	7 03	9 24	11 42	13 58	16 16	18 36	20 39	22 22	23 51	1 15	2 50
25	4 46	6 59	9 20	11 38	13 54	16 13	18 32	20 35	22 18	23 47	1 11	2 46
26	4 42	6 55	9 16	1 134	13 50	16 09	18 28	20 31	22 14	23 43	1 07	2 43
27	4 38	6 51	9 12	11 30	13 46	16 05	18 24	20 27	22 10	23 39	1 03	2 39
28	4 34	6 47	9 09	11 26	13 43	16 01	18 20	20 23	22 06	23 35	24 59	2 35
29	4 30	6 43	9 05	11 23	13 39	15 57	18 16	20 20	22 02	23 31	24 55	2 31
30	4 26	6 39	9 01	11 19	13 35	15 54	18 13	20 16	21 59	23 28	24 52	2 28
जुला	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी जुलाई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 35	8 57	11 15	13 31	15 50	18 09	20 13	21 56	23 24	24 48	2 24	4 18
2	6 31	8 53	11 11	13 27	15 46	18 05	20 9	21 52	23 20	24 44	2 20	4 14
3	6 27	8 49	11 07	13 23	15 42	18 01	20 5	21 48	23 16	24 40	2 16	4 10
4	6 24	8 46	11 04	13 19	15 38	17 57	20 01	21 44	23 12	24 36	2 12	4 06
5	6 20	8 42	11 00	13 15	15 34	17 53	19 57	21 40	23 08	24 32	2 08	4 02
6	6 16	8 38	10 56	13 11	15 30	17 49	19 53	21 36	23 04	24 28	2 04	3 58
7	6 12	8 34	10 52	13 07	15 26	17 46	19 49	21 32	23 00	24 24	2 00	3 55
8	6 09	8 30	10 48	13 04	15 22	17 42	19 46	21 28	22 56	24 21	1 56	3 51
9	6 05	8 26	10 44	13 00	15 18	17 38	19 42	21 24	22 53	24 17	1 53	3 47
10	6 01	8 22	10 40	12 56	15 15	17 34	19 38	21 21	22 49	24 13	1 49	3 43
11	5 57	8 18	10 36	12 52	15 11	17 30	19 34	21 17	22 45	24 09	1 45	3 39
12	5 53	8 14	10 32	12 48	15 07	17 26	19 30	21 13	22 41	24 05	1 41	3 36
13	5 49	8 10	10 28	12 45	15 03	17 22	19 26	21 09	22 37	24 01	1 37	3 32
14	5 45	8 06	10 25	12 41	14 59	17 18	19 22	21 05	22 34	23 57	1 33	3 28
15	5 41	8 03	10 21	12 37	14 55	17 14	19 19	21 02	22 30	23 54	1 30	3 24
16	5 37	7 59	10 17	12 33	14 51	17 10	19 15	20 58	22 26	23 50	1 26	3 20
17	5 34	7 55	10 13	12 29	14 47	17 06	19 11	20 54	22 22	23 46	1 22	3 16
18	5 30	7 51	10 09	12 25	14 43	17 02	19 07	20 50	22 18	23 42	1 18	3 12
19	5 26	7 47	10 05	12 21	14 40	16 58	19 03	20 46	22 14	23 38	1 14	3 08
20	5 22	7 43	10 02	12 17	14 36	16 54	18 59	20 42	22 10	23 34	1 10	3 04
21	5 18	7 39	9 58	12 13	14 32	16 51	18 55	20 38	22 06	23 30	1 06	3 00
22	5 15	7 35	9 54	12 09	14 28	16 47	18 51	20 34	22 02	23 26	1 02	2 56
23	5 11	7 32	9 50	12 05	14 24	16 43	18 47	20 30	21 58	23 22	2458	2 53
24	5 07	7 28	9 46	12 01	14 20	16 39	18 43	20 26	21 55	23 18	2454	2 49
25	5 03	7 24	9 42	11 58	14 16	16 35	18 40	20 23	21 51	23 14	2450	2 45
26	5 00	7 20	9 38	11 54	14 12	16 31	18 36	20 19	21 47	23 10	2446	2 41
27	4 56	7 16	9 34	11 50	14 08	16 27	18 32	20 15	21 43	23 06	2442	2 37
28	4 52	7 12	9 30	11 46	14 04	16 23	18 28	20 11	21 39	23 02	2438	2 34
29	4 48	7 08	9 27	11 42	14 00	16 19	18 24	20 07	21 35	22 58	2435	2 30
30	4 44	7 04	9 23	11 38	13 56	16 15	18 20	20 03	21 31	22 54	2431	2 26
31	4 40	7 00	9 19	11 34	13 53	1612	18 16	19 59	21 27	22 50	2427	2 22
अग	4 36	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अगस्त भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 56	9 15	11 31	13 49	16 08	18 12	19 55	21 23	22 47	24 23	2 18	4 32
2	6 52	9 11	11 27	13 45	16 05	18 09	19 51	21 19	22 43	24 19	2 14	4 28
3	6 48	9 07	11 23	13 42	16 01	18 05	19 47	21 15	22 39	24 15	2 10	4 24
4	6 44	9 03	11 19	13 38	15 57	18 01	19 44	21 11	22 35	24 11	2 06	4 20
5	6 40	9 00	11 15	13 34	15 53	17 57	19 40	21 08	22 31	24 08	2 02	4 16
6	6 36	8 56	11 12	13 30	15 49	17 53	19 36	21 04	22 28	24 04	1 58	4 13
7	6 32	8 52	11 08	13 26	15 45	17 49	19 32	21 00	22 24	24 00	1 54	4 09
8	6 29	8 48	11 04	13 22	15 41	17 45	19 28	20 56	22 20	23 56	1 50	4 05
9	6 25	8 44	11 00	13 18	15 37	17 42	19 24	20 52	22 16	23 52	1 46	4 01
10	6 21	8 41	10 56	13 14	15 33	17 38	19 21	20 48	22 12	23 48	1 43	3 57
11	6 17	8 37	10 53	13 10	15 29	17 34	19 17	20 44	22 08	23 44	1 39	3 54
12	6 13	8 33	10 49	13 06	15 25	17 30	19 13	20 40	22 04	23 40	1 35	3 50
13	6 09	8 29	10 45	13 02	15 21	17 26	19 09	20 36	22 00	23 36	1 32	3 46
14	6 05	8 25	10 41	12 59	15 17	17 22	19 05	20 33	21 56	23 32	1 28	3 42
15	6 01	8 21	10 37	12 55	15 14	17 18	19 01	20 29	21 53	23 29	1 24	3 38
16	5 57	8 17	10 33	12 51	15 10	17 14	18 57	20 25	21 49	23 25	1 20	3 34
17	5 54	8 13	10 29	12 47	15 06	17 10	18 53	20 21	21 45	23 21	1 16	3 30
18	5 50	8 09	10 25	12 43	15 02	17 06	18 49	20 17	21 41	23 17	1 12	3 26
19	5 46	8 05	10 21	12 39	14 58	17 02	18 45	2013	21 37	23 13	1 08	3 22
20	5 42	8 02	10 17	12 35	14 54	16 58	18 41	20 09	21 33	23 09	1 04	3 18
21	5 39	7 58	10 13	12 31	14 50	16 54	18 37	20 05	21 29	23 05	1 00	3 14
22	5 35	7 54	10 09	12 27	14 46	16 50	18 33	20 01	21 25	23 01	0 56	3 10
23	5 31	7 50	10 05	12 23	14 42	16 46	18 21	19 57	21 21	22 57	0 52	3 06
24	5 27	7 46	10 02	12 19	14 38	16 42	18 25	19 53	21 17	22 53	0 48	3 02
25	5 23	7 42	9 58	12 15	14 34	16 38	18 21	19 49	21 13	22 49	0 44	2 58
26	5 19	7 38	9 45	12 11	14 30	16 34	18 17	19 45	21 09	22 45	0 41	2 54
27	5 15	7 34	9 50	12 08	14 27	16 31	18 14	19 42	21 06	22 42	0 37	2 50
28	5 11	7 30	9 46	12 04	14 23	16 27	18 10	19 38	21 02	22 38	0 33	2 46
29	5 07	7 26	9 42	12 00	14 19	16 23	18 06	19 34	20 58	22 34	0 29	2 42
30	5 03	7 22	9 38	11 56	14 15	16 19	18 02	19 30	20 54	22 30	0 25	2 38
31	4 59	7 18	9 34	11 52	14 11	16 15	17 58	19 26	20 50	22 26	0 21	2 34
सितं	4 55	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी सितंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

सितंबर	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 14	9 30	11 48	14 07	16 11	17 54	19 22	20 46	22 22	0 17	2 31	4 52
2	7 10	9 26	11 44	14 03	16 07	17 50	19 18	20 42	22 18	0 13	2 27	4 48
3	7 06	9 22	11 40	13 59	16 03	17 46	19 14	20 38	22 14	0 09	2 23	4 44
4	7 02	9 18	11 36	13 55	15 59	17 42	19 10	20 34	22 10	0 05	2 19	4 40
5	6 58	9 14	11 32	13 51	15 55	17 38	19 06	20 30	22 06	0 01	2 15	4 36
6	6 54	9 10	11 28	13 47	15 51	17 34	19 02	20 26	22 02	23 57	2 11	4 32
7	6 50	9 06	11 24	13 43	15 47	17 30	18 58	20 22	21 58	23 53	2 07	4 28
8	6 46	9 02	11 20	13 39	15 43	17 26	18 54	20 18	21 54	23 49	2 03	4 24
9	6 42	8 58	11 16	13 35	15 39	17 22	18 50	20 14	21 50	23 45	1 59	4 20
10	6 38	8 54	11 12	13 31	15 35	17 18	18 46	20 10	21 46	23 41	1 55	4 16
11	6 34	8 50	11 08	13 27	15 31	17 14	18 42	20 06	21 42	23 37	1 51	4 12
12	6 30	8 46	11 04	13 23	15 27	17 10	18 38	20 02	21 38	23 33	1 47	4 08
13	6 26	8 42	11 00	13 19	15 23	17 06	18 34	19 58	21 34	23 29	1 43	4 04
14	6 22	8 38	10 56	13 15	15 19	17 02	18 30	19 54	21 30	23 25	1 39	4 00
15	6 18	8 34	10 52	13 11	15 15	16 58	18 26	19 50	21 26	23 21	1 35	3 56
16	6 14	8 30	10 48	13 07	15 11	16 54	18 22	19 46	21 22	23 17	1 31	3 52
17	6 10	8 26	10 44	13 03	15 07	16 50	18 18	19 42	21 18	23 13	1 27	3 48
18	6 06	8 22	10 40	12 59	15 03	16 46	18 14	19 38	21 14	23 09	1 23	3 44
19	6 02	8 18	10 36	12 55	14 59	16 42	18 10	19 34	21 10	23 05	1 19	3 40
20	5 58	8 14	10 32	12 51	14 55	16 38	18 06	19 30	21 06	23 01	1 15	3 36
21	5 54	8 10	10 28	12 47	14 51	16 34	18 02	19 26	21 02	22 57	1 11	3 32
22	5 50	8 06	10 24	12 43	14 47	16 30	17 58	19 22	20 58	22 53	1 07	3 28
23	5 46	8 02	10 20	12 39	14 43	16 26	17 54	19 18	20 54	22 49	1 03	3 24
24	5 42	7 58	10 16	12 35	14 39	16 22	17 50	19 14	20 50	22 45	0 59	3 20
25	5 38	7 54	10 12	12 31	14 35	16 18	17 46	19 10	20 46	22 41	0 55	3 16
26	5 34	7 50	10 08	12 27	14 31	16 14	17 42	19 06	20 42	22 37	0 51	3 12
27	5 30	7 46	10 04	12 23	14 27	16 10	17 38	19 02	20 38	22 33	0 47	3 08
28	5 26	7 42	10 00	12 19	14 23	16 06	17 34	18 58	20 34	22 29	0 43	3 04
29	5 22	7 38	9 56	12 15	14 19	16 02	17 30	18 54	20 30	22 25	0 39	3 00
30	5 18	7 34	9 53	12 12	14 16	15 59	17 27	18 51	20 27	22 22	0 36	2 57
अक्तू.	5 15	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अक्तूबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अक्तूबर	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 30	9 49	12 08	14 12	15 55	17 23	18 47	20 23	22 18	0 32	2 53	5 11
2	7 26	9 45	12 04	14 08	15 51	17 19	18 43	20 19	22 14	0 28	2 49	5 07
3	7 23	9 42	12 00	14 04	15 47	17 15	18 39	20 15	22 10	0 24	2 45	5 03
4	7 19	9 38	11 56	14 00	15 43	17 11	18 35	20 11	22 06	0 20	2 41	4 59
5	7 15	9 34	11 52	13 56	15 39	17 07	18 31	20 07	22 02	0 16	2 37	4 55
6	7 11	9 30	11 48	13 52	15 35	17 03	18 27	20 03	21 58	0 12	2 33	4 51
7	7 07	9 26	11 44	13 48	15 31	16 59	18 23	19 59	21 54	0 08	2 29	4 47
8	7 03	9 22	11 40	13 44	15 27	16 55	18 19	19 55	21 50	0 04	2 25	4 43
9	6 59	9 18	11 36	13 40	15 23	16 51	18 15	19 51	21 46	24 00	2 21	4 39
10	6 55	9 14	11 32	13 36	15 19	16 47	18 11	19 47	21 42	23 56	2 17	4 35
11	6 51	9 10	11 28	13 32	15 15	16 43	18 07	19 43	21 38	23 52	2 13	4 31
12	6 47	9 06	11 24	13 28	15 11	16 39	18 03	19 39	21 34	23 48	2 09	4 27
13	6 43	9 02	11 20	13 24	15 07	16 35	17 59	19 35	21 30	23 44	2 05	4 23
14	6 39	8 58	11 16	13 20	15 03	16 31	17 55	19 31	21 26	23 40	2 01	4 19
15	6 35	8 54	11 12	13 16	14 59	16 27	17 51	19 27	21 22	23 36	1 57	4 15
16	6 31	8 50	11 08	13 12	14 55	16 23	17 47	19 23	21 18	23 32	1 53	4 11
17	6 27	8 46	11 04	13 08	14 51	16 19	17 43	19 19	21 14	23 28	1 49	4 07
18	6 23	8 42	11 00	13 04	14 47	16 15	17 39	19 15	21 10	23 24	1 45	4 03
19	6 19	8 38	10 56	13 00	14 43	16 11	17 35	19 11	21 06	23 20	1 41	3 59
20	6 15	8 34	10 52	12 56	14 39	16 07	17 31	19 07	21 02	23 16	1 37	3 55
21	6 11	8 30	10 48	12 52	14 35	16 03	17 27	19 03	20 58	23 12	1 33	3 51
22	6 07	8 26	10 44	12 48	14 31	15 59	17 23	18 59	20 54	23 08	1 29	3 47
23	6 03	8 22	10 40	12 44	14 27	15 55	17 19	18 55	20 50	23 04	1 25	3 43
24	5 59	8 18	10 36	12 40	14 23	15 51	17 15	18 51	20 46	23 00	1 21	3 39
25	5 56	8 15	10 33	12 37	14 20	15 48	17 12	18 48	20 43	22 57	1 17	3 36
26	5 52	8 11	10 29	12 33	14 16	15 44	17 08	18 44	20 39	22 53	1 13	3 32
27	5 48	8 07	10 25	12 29	14 12	15 40	17 04	18 40	20 35	22 49	1 09	3 28
28	5 44	8 03	10 21	12 25	14 08	15 36	17 00	18 36	20 31	22 45	1 06	3 24
29	5 40	7 59	10 17	12 21	14 04	15 32	16 56	18 32	20 27	22 41	1 02	3 20
30	5 36	7 55	10 13	12 17	14 00	15 28	16 52	18 28	20 23	22 37	24 58	3 16
31	5 33	7 51	10 09	12 13	13 56	15 24	16 48	18 24	20 19	22 33	24 54	3 12
नवं.	5 29	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी नवंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

नवंबर	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 47	10 6	12 10	13 53	15 21	16 44	18 20	20 15	22 29	0 50	3 08	5 25
2	7 43	10 2	12 06	13 49	15 17	16 40	18 16	20 11	22 25	0 46	3 04	5 21
3	7 39	9 58	12 02	13 45	15 13	16 37	18 13	20 08	22 22	0 43	3 00	5 17
4	7 35	9 54	11 58	13 41	15 09	16 33	18 09	20 04	22 18	0 39	2 56	5 13
5	7 31	9 50	11 54	13 37	15 05	16 29	18 05	20 00	22 15	0 35	2 52	5 09
6	7 27	9 46	11 50	13 33	15 01	16 25	18 01	19 56	22 10	0 31	2 48	5 05
7	7 24	9 42	11 46	13 29	14 57	16 21	17 57	19 52	22 06	0 27	2 45	5 01
8	7 20	9 38	11 42	13 25	14 53	16 17	17 53	19 48	22 02	0 23	2 41	4 57
9	7 16	9 34	11 38	13 21	14 49	16 13	17 49	19 44	21 58	0 19	2 37	4 53
10	7 12	9 30	11 34	13 17	14 45	16 09	17 45	19 40	21 54	0 15	2 33	4 49
11	7 08	9 26	11 30	13 13	14 41	16 05	17 41	19 36	21 50	0 11	2 29	4 45
12	7 04	9 22	11 26	13 09	14 37	16 01	17 37	19 32	21 46	0 07	2 25	4 41
13	7 00	9 18	11 22	13 05	14 33	15 57	17 33	19 28	21 42	0 03	2 21	4 37
14	6 56	9 14	11 28	13 01	14 29	15 53	17 29	19 24	21 38	23 59	2 17	4 33
15	6 52	9 10	11 14	12 57	14 25	15 49	17 25	19 20	21 34	23 55	2 13	4 29
16	6 48	9 06	11 10	12 53	14 21	15 45	17 21	19 16	21 30	23 51	2 09	4 25
17	6 43	9 02	11 06	12 49	14 17	15 41	17 17	19 12	21 26	23 47	2 05	4 21
18	6 39	8 58	11 02	12 45	14 13	15 37	17 23	19 08	21 22	23 43	2 01	4 17
19	6 35	8 54	10 58	12 41	14 09	15 33	17 09	19 04	21 18	23 39	1 57	4 13
20	6 31	8 50	10 54	12 37	14 05	15 29	17 05	19 00	21 14	23 35	1 53	4 09
21	6 27	8 46	10 50	12 33	14 01	15 25	17 01	18 56	21 10	23 31	1 49	4 05
22	6 23	8 43	10 47	12 30	13 58	15 22	16 58	18 53	21 07	23 28	1 46	4 02
23	6 20	8 39	10 43	12 26	13 54	15 18	16 54	18 49	21 03	23 24	1 42	3 58
24	6 16	8 35	10 39	12 22	13 50	15 14	16 50	18 45	20 59	23 20	1 38	3 54
25	6 12	8 31	10 35	12 18	13 46	15 10	16 46	18 41	20 55	23 16	1 34	3 50
26	6 08	8 28	10 31	12 14	13 42	15 06	16 42	18 37	20 51	23 12	1 30	3 46
27	6 04	8 23	10 27	12 10	13 38	15 02	16 38	18 33	20 47	23 08	1 26	3 42
28	6 00	8 19	10 23	12 06	13 34	14 58	16 34	18 29	20 43	23 04	1 22	3 38
29	5 56	8 16	10 20	12 03	13 31	14 55	16 31	18 26	20 40	23 01	1 19	3 35
30	5 53	8 12	10 16	11 59	13 27	14 51	16 27	18 22	20 36	22 57	1 15	3 31
दिसं	5 49	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी दिसंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

दिसंबर	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	8 08	10 12	11 55	13 23	14 47	16 23	18 18	20 32	22 53	1 11	3 27	5 45
2	8 04	10 08	11 51	13 19	14 43	16 19	18 14	20 28	22 49	1 07	3 23	5 41
3	8 00	10 04	11 47	13 15	14 39	16 15	18 10	20 24	22 45	1 03	3 19	5 37
4	7 56	10 00	11 43	13 11	14 35	16 11	18 06	20 20	22 41	0 59	3 15	5 33
5	7 52	9 56	11 39	13 07	14 31	16 07	18 02	20 16	22 37	0 55	3 11	5 29
6	7 48	9 52	11 35	13 03	14 27	16 03	17 58	20 12	22 33	0 51	3 07	5 25
7	7 44	9 48	11 31	12 59	14 23	15 59	17 54	20 08	22 29	0 47	3 03	5 21
8	7 40	9 44	11 27	12 55	14 19	15 55	17 50	20 04	22 25	0 43	2 59	5 17
9	7 36	9 40	11 23	12 51	14 15	15 51	17 46	20 00	22 21	0 39	2 55	5 13
10	7 33	9 37	11 20	12 48	14 12	15 48	17 43	19 57	22 18	0 36	2 52	5 10
11	7 29	9 33	11 16	12 44	14 08	15 44	17 39	19 53	22 14	0 32	2 48	5 06
12	7 25	9 29	11 12	12 40	14 04	15 40	17 35	19 49	22 10	0 28	2 44	5 02
13	7 21	9 25	11 08	12 36	14 01	15 36	17 31	19 45	22 06	0 24	2 40	4 58
14	7 17	9 21	11 04	12 32	13 56	15 32	17 27	19 41	22 02	0 20	2 36	4 54
15	7 13	9 17	11 00	12 28	13 52	15 28	17 23	19 37	21 58	0 16	2 32	4 50
16	7 09	9 13	10 56	12 24	13 48	15 24	17 19	19 33	21 54	0 12	2 28	4 46
17	7 05	9 09	10 52	12 21	13 44	15 20	17 15	19 29	21 50	0 08	2 24	4 42
18	7 11	9 05	10 49	12 17	13 41	15 16	17 11	19 25	21 46	0 04	2 20	4 38
19	6 58	9 01	10 45	12 13	13 36	15 12	17 07	19 21	21 42	0 00	2 16	4 34
20	6 53	8 57	10 41	12 09	13 32	15 08	17 03	19 17	21 38	23 56	2 12	4 30
21	6 49	8 53	10 37	12 05	13 28	15 04	16 59	19 13	21 34	23 52	2 09	4 26
22	6 45	8 49	10 33	12 01	13 24	15 00	16 55	19 10	21 30	23 49	2 05	4 22
23	6 41	8 45	10 29	11 57	13 20	14 56	16 51	19 06	21 26	23 45	2 01	4 18
24	6 37	8 42	10 25	11 53	13 16	14 52	16 48	19 02	21 23	23 41	1 57	4 14
25	6 33	8 38	10 21	11 49	13 12	14 48	16 44	18 58	21 19	23 37	1 53	4 10
26	6 30	8 34	10 17	11 45	13 09	14 44	16 40	18 54	21 15	23 33	1 49	4 06
27	6 26	8 30	10 13	11 41	13 05	14 41	16 36	18 50	21 11	23 29	1 45	4 03
28	6 22	8 26	10 09	11 37	13 01	14 37	16 32	18 46	21 07	23 25	1 41	3 59
29	6 18	8 22	10 05	11 33	12 57	14 33	16 28	18 42	21 03	23 21	1 37	3 55
30	6 14	8 18	10 01	11 29	12 53	14 29	16 24	18 38	20 59	23 17	1 33	3 51
31	6 10	8 14	9 57	11 25	12 49	14 25	16 20	18 34	20 55	23 13	1 29	3 47
जन.	6 06	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अनुकूल कार्य सिद्धि के लिए होरा ज्ञान चक्र (मुहूर्त्त) और फल ज्ञान

सर्वकार्य सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त श्रेयस्कर है। होरा मुहूर्त्त के अनुसार कार्यारम्भ करके प्रत्येक मनुष्य अशुभ समय में से होरा के अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात होरे हैं। **सूर्य की होरा**-टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है। **चंद्रमा की होरा** — सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**-युद्ध, यात्रा, कर्ज़ देने, सभा-सोसाईटी में आना-जाना और मुकद्दमा के कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा** — में विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा** — विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, वड़ों से मिलना, कोषसंग्रह, नवीन काव्य लेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा** — यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, प्रवास, सौभाग्यवर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा** — भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो 'वार' होता है, उस वार के आरम्भ (अर्थात् सूर्योदय के समय) से १ घण्टा तक उसी वार को होरा रहता है। इसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले वार के सूर्योदय समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा उपयुक्त लिखी है, उसके अनुसार ही उस होरा में (१ घण्टे) में वह कार्य करेंगे तो अवश्य सफलता मिलेगी। ऋषियों ने होरा को 'क्षणवार' कहा है। वार से भी क्षण वार में प्रधानता मानी गई है। इसलिए यदि वार और 'क्षणवार' दोनों अनुकूल हों, तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यकता में, यदि वार अनुकूल नहीं हो तो 'क्षणवार' अर्थात् होरा की अनुकूलता के अनुसार कार्य करना चाहिए। **जैसे**— पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इसलिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है। नीचे चक्र के अनुसार रविवार को सोम की होरा सूर्योदय समय से ४, ११, १८ घण्टे बाद के एक-एक घण्टे तक आप सोम की होरा में जा सकते हैं। इसी प्रकार अन्य दिनों के होराओं के विषय में भी समझ लें।

वार	होरा १	होरा २	होरा ३	होरा ४	होरा ५	होरा ६	होरा ७	होरा ८	होरा ९	होरा १०	होरा ११	होरा १२	होरा १३	होरा १४	होरा १५	होरा १६	होरा १७	होरा १८	होरा १९	होरा २०	होरा २१	होरा २२	होरा २३	होरा २४
रवि.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
सोम.	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
मंगल	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र
बुध	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
गुरु	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
शुक्र	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
शनि	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल

।।चौघड़ियां मुहूर्त्त ।।

दिन की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	६.००
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७.३०
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	९.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१०.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	१.३०
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	३.००
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	४.३०

।।चौघड़ियां मुहूर्त्त ।।

रात्रि की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	६.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	७.३०
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	९.००
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	१०.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२.००
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	१.३०
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	४.३०

शीघ्रता में कोई मुहूर्त्त न मिलता हो तो, तथा अचानक यात्रा करनी पड़ी तो, उस समय चौघड़ियां मुहूर्त्त का उपयोग करना श्रेयस्कर रहता है। दिन और रात्रि के आठ-आठ बराबर भाग करने से एक-एक चौघड़ियां मुहूर्त्त होता है। जब दिन और रात्रि बराबर अर्थात् १२ घण्टे का दिन तथा १२ घण्टे की रात्रि हो, तब एक चौघड़ियां मुहूर्त्त १ ¾ घण्टे अर्थात् पौने चार घटी का होगा। इसलिए इसका नाम चौघड़ियां मुहूर्त्त पड़ा। रविवार, चंद्रवार आदि वार सूर्योदय से प्रारम्भ होकर अगले दिन सूर्योदय तक रहता है। प्रत्येक वार के सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस वार का दिनमान तथा सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रिमान में सू. उ. तथा सू. अ. के अन्तर आने के कारण घटते-बढ़ते रहते है। परन्तु 'वार सदैव' २४ घण्टा अर्थात् ६० घटी का होता है। रात्रिमान जानने के लिए पंचांगदिवाकर में दिए गए दिनमान को ६० घटी में घटा दें। जिस दिन यात्रा करनी हो उस दिन के दिनमान के अष्टमांश घटी पल का घण्टा मिन्ट बनाकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जाएँ तो क्रमश: उस दिन की आठों चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस दिन के रात्रिमान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा मिन्ट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमाश: रात्रि की प्रत्येक चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा तथा शुभाशुभ जानने के लिए प्रत्येक वार के नीचे तथा चौघड़ियां के सामने तालिका में देखें।

द्वादश लग्नों एवं राशियों का फल [ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) से उद्धृत]

मेष लग्न–मेष लग्न (राशि) का स्वामी **मंगल** है। जातक का मध्यम कद, मुख का वर्ण लाल अथवा गेहुँआ होगा। राशिपति मंगल की स्थिति शुभ होने से रक्तवर्ण नेत्रों वाला, चंचल एवं उग्र स्वभाव, अत्यन्त साहसी, सतर्क एवं महत्वाकांक्षी होगा। जातक उद्यमी, तीव्र बुद्धि, स्वतन्त्र विचारों वाला, अस्थिर किन्तु तेज स्मरण शक्ति वाला, अत्यधिक उत्साही, स्पष्टवादी एवं भ्रमणप्रिय व्यक्ति होगा। प्रायः अपने परिश्रम के बल पर आय एवं धन के साधन जुटा लेगा। सगे सम्बन्धियों की ओर से सहायता व सुख कम होगा। यह राशि चर और अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण मेष राशि (लग्न) का जातक परिवर्तनशील प्रकृति, अस्थिर स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित हो जाने वाला एवं शीघ्र ही मान जावे। व्यवसाय में अनेक कठिनाईयों के बावजूद उन्नति के लिए प्रयास करता रहता है। जायदाद एवं व्यवसाय में कई प्रकार के झंझट (उलझनें) आती हैं और इन्हीं कामों के द्वारा लाभ भी होता रहता है। पित्त, कफ, सिर दर्द, रक्त विकार, नेत्र विकार, त्वचा आदि रोगों का भय रहता है। मंगल शुभ होने पर जातक को खेल–कूद व संगीतादि में भी विशेष शौक रहता है। सामान्यतः **मूंगा** मेष लग्न वालों के लिए शुभ रहता है, परन्तु योग्य ज्योतिषी से परामर्श के बाद धारण करना चाहिए। **भाग्योदयकारक** वर्ष १६, २२, २८, ३२, ३६वें होंगे।

वृष लग्न–वृष लग्न का **स्वामी शुक्र** है। यदि शुक्र शुभ हो तो जातक सुन्दर, सुगठित शरीर व मध्यम कद वाला होगा। गोल, बड़ी व चमकदार आँखें, सुन्दर वर्ण एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। जातक परिश्रमी, हँसमुख एवं सौम्य प्रकृत्ति वाला, धीर, शान्त एवं दृढ़ स्वभाव का होता है। जातक उदारहृदय, प्रसन्नहृदय और प्रभावशाली व्यक्ति होगा। स्वावलम्बी, उच्चाभिलाषी तथा भौतिक सुखों के लिए कठोर परिश्रम से भी पीछे नहीं हटेगा। जातक मधुरभाषी, सौन्दर्य प्रेमी, संगीत कला–साहित्यादि कार्यों में विशेष रुचि रखने वाला होगा। घर–दफ्तर आदि स्थानों पर सजावट रखेगा तथा ऐश्वर्य साधनों में निरन्तर वृद्धि करते रहने का प्रयास करेगा। जातक प्रायः अपनी इच्छानुसार ही कार्य करने वाला, ऐश्वर्ययुक्त जीवनयापन का इच्छुक, विपरीत योनि वालों के साथ मैत्री करने का आकांक्षी, व्यवहार कुशल तथा कठिन परिस्थितियों में भी अपना कार्य निकालने में कुशल होगा। जातक प्रायः चन्द्र–बुध की स्थिति शुभ होने पर कामर्स, गणित, बैंकिंग, एक्टिंग, वस्त्र उद्योग, क्रय–विक्रय **(Trading)** आदि में सफलता प्राप्त कर लेता है। **शुभ नग हीरा** है। भाग्योदायकारक वर्ष २८, ३६, ४२ एवं ४८वें होंगे।

मिथुन लग्न–मिथुन लग्न (राशि) का स्वामी बुध है। मिथुन लग्न वाला जातक, गौरवर्ण, चंचल आँखों वाला, सामान्य एवं ऊँचे कद वाला होगा। जातक अस्थिर किन्तु मौलिक विचारों से युक्त, तीव्र बुद्धि, परिवर्तनशील प्रकृति, मित्रों को हर प्रकार से सहायक तथा नीति के अनुसार आचरण करने वाला, तर्क–वितर्क करने में कुशल, दूर–दूर के स्थानों की यात्राएँ करने का सौभाग्य प्राप्त करेगा। जातक में बुद्धि तत्त्व एवं भाव तत्त्व दोनों प्रबल होने के कारण पठन–पाठन, कानूनी कार्य, व्यापार सम्बन्धी और लेखन सम्बन्धी कार्यों को बड़ी गम्भीरता से करेगा, मजबूत हृदय वाला परन्तु नर्म स्वभाव होने के कारण कमजोर समझा जाता है। द्विस्वभाव होने से एक ही समय पर एक से अधिक कार्य शुरू करने की प्रवृत्ति रहेगी, अपने कार्य–क्षेत्र (व्यवसाय) में प्रायः परिवर्तन करता रहता है तथा प्रायः अपने परिश्रम, बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर जीवन में सफलता प्राप्त कर लेगा। नए–नए मित्र बनाने में कुशल, बातचीत करने की कला में निपुण होगा। क्रय–विक्रय, पुस्तक–लेखन, लेखाकार **(Accounts),** बैंक, वकालत, अध्यापन, इंजीनियरिंग, कल–पुर्जों के कार्य–व्यवसाय में सफलता प्राप्त हो सकती है। **शुभ नग पन्ना** है, **स्त्रियों के लिए पुखराज** भी अच्छा होगा। भाग्योदयकारक वर्ष २२, ३२, ३५, ३६, ४२ वें होंगे।

कर्क लग्न–कर्क लग्न (राशि) का स्वामी चन्द्रमा है। जल तत्त्व प्रधान एवं चर राशि होने से जातक सुन्दर एवं आकर्षक मुखाकृति, गोल चेहरा और मध्यम कद होगा। **चन्द्र–मंगल** शुभ हो तो जातक बुद्धिमान, संवेदनशील, भावुकहृदय, नयायप्रिय व दयालु स्वभाव वाला होगा। सामान्यतः परिवर्तनशील स्वभाव, चंचल, जलीय वस्तुओं **(Liquids)** का प्रिय, उच्च कल्पनाशील, समयानुकूल काम निकालने में कुशल, मिलनसार प्रकृति होगी। यदि चन्द्रमा अशुभ हो तो चिड़चिड़ा स्वभाव, वातावरण से शीघ्र प्रभावित होने वाला होगा। प्राकृतिक सौन्दर्य, कला–संगीत व साहित्य में विशेष रुचि रखे तथा सौन्दर्यानुभूति भी विशेष रूप से रहे। ऐसा जातक परिस्थितिनुसार ढल जाने वाला, प्यार सम्बन्धों में सच्चा, ईमानदार और सहृदय दयालु प्रकृति का होगा। ऐसा जातक दिल से जिस काम को करना चाहे कर ही लेता है। कल्पना (विचार) शक्ति प्रबल होती है, अन्य पुरुष के भावों को शीघ्र समझ लेने की विशेष क्षमता होती है। कर्क राशि वालों को मकर, बृश्चिक, मीन राशि वालों के साथ मित्रता शुभ रहती है। **शुभ नग सुच्चा मोती** तथा **सफेद पुखराज** है। भाग्योदयकारक वर्ष २४, २५, २८, ३२, ३६, ४० होंगे।

सिंह लग्न–सिंह लग्न (राशि) का स्वामी सूर्य है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर–पुष्ट शरीर वाला, चौड़ा मस्तक, सुगठित, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होगा। जातक बुद्धिमान, उद्यमी, कर्मठ, निडर, स्वतन्त्र विचारों वाला, पराक्रमी, व्यवहार कुशल, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, उच्चाकांक्षी, खानपान का शौकीन, देश–विदेश में भ्रमण करने वाला, शीघ्र क्रुद्ध हो जाने की प्रकृति होने पर भी अपने बुद्धि–चातुर्य से स्थिति को सम्भाल लेने वाला होगा। छोटी–छोटी एवं मामूली बातों को उपेक्षा की दृष्टि से देखने वाला होगा तथा बड़े–बड़े कामों को भी अपने उद्यम द्वारा पूरा करने से तत्पर हो जाएगा। भाई–बन्धु होने पर भी उनका सुख कम रहता है। उच्चाभिलाषी होने के कारण प्रत्येक कार्य–व्यवसाय को बड़े पैमाने एवं उच्चस्तर पर करना पसन्द करेगा। उच्चस्तरीय, वैभवशाली एवं रईसी जीवन–यापन करने की प्रबल इच्छा रखेंगे जिसके कारण अपनी सीमा से बढ़कर भी खर्च कर डालते हैं। इस लग्न वाले जातक का बाह्य रूप में आकर्षक रूप एवं अच्छा स्वास्थ्य रहता है। **शुभ नग माणिक्य है। सिंह लग्न (राशि) वालों को सूर्य उपासना** करनी चाहिए। भाग्योन्नति वर्ष १६, २२, २४, २६, २८, ३२ होते हैं।

कन्या लग्न–कन्या लग्न (राशि) वाले जातक का मध्यम कद, कोमल शरीर, सुन्दर व आकर्षक आँखें, लम्बी नाक, वाणी तेज और बारीक होगी। जातक प्रियभाषी, हर कार्य में सहायक, लज्जाशील प्रकृति, नर्म स्वभाव और नीति के अनुकूल काम करने वाला होगा। कल्पनाशील, सूक्ष्मदर्शी, एवं संवेदनशील **(Senstivie)** स्वभाव होगा। शान्तचित्त एवं एकान्तप्रिय प्रवृत्ति होगी। परन्तु कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को ढालने का सामर्थ्य होगा। एक ही समय पर अनेक यात्राएँ एवं विषयों में पारंगत होने की चेष्टा करेगा। संगीत, कला एवं साहित्य की ओर विशेष दिलचस्पी रखेगा। द्विस्वभाव एवं परिवर्तनशील प्रकृति होने के कारण एक विषय पर चिरकाल तक स्थिर नहीं हो पाता। **बुध–शुक्र** का शुभ योग होने से लेखा–गणित, **(Account),** संगीत, कला, अध्यापन, लेखन, क्रय–विक्रय आदि की ओर विशेष झुकाव रहेगा तथा सफलता भी होगी। धन की अपेक्षा बौद्धिक कार्यों में विशेष रुचि रहती है। बुद्धिमान, तीव्र स्मरणशक्ति एवं अध्ययनशील प्रकृति होगी। **शुभ नग पन्ना** है। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २५, ३२ तथा ३५, ३६, ४२ वें वर्ष होते हैं।

तुला लग्न–तुला लग्न (राशि) का स्वामी शुक्र है। तुला लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक श्वेत

व सुन्दर वर्ण, मध्यम अथवा लम्बा कद, सौम्य एवं हंसमुख प्रकृति होगी। जातक/जातिका न्यायप्रिय, हंसमुख, व्यवहारशील एवं नीति के अनुसार कार्य करने में कुशल होगा। ईमानदार, मिलनसार, नए-नए मित्र बनाने में कुशल होगा। सौंदर्यानुभूति विशेष होगी, संगीत, कला, नाट्य की ओर विशेष झुकाव होगा। रहन-सहन का ढंग रईसी एवं प्रभावपूर्ण होगा। जातक पर संगीत का प्रभाव जल्दी होगा। **चन्द्र-शुक्र** शुभ हों, तो मानसिक एवं कल्पनाशक्ति प्रबल होगी, परन्तु मन की केन्द्रीय शक्ति बहुत देर तक नहीं रहती। जब तक किसी कार्य में लगा रहे तब तक दिलोजान और मजबूत दिल से करे, परन्तु अपने विचार व योजना में परिवर्तन करने में भी शीघ्र तैयार हो जाएगा। जातक को देश-विदेशों में अनेक स्थानों पर भ्रमण करने के अवसर प्राप्त होते हैं। बुद्धिमान, तर्कशील, सावधान एवं सतर्क रहने वाला, मध्यस्थता एवं न्याय करने में कुशल, विपरीत योनि **(Sex)** के प्रति विशेष झुकाव रखे। इनको **हीरा (Diamond)** अथवा **श्वेत मोती शुभ नग** है जोकि किसी सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करने चाहिएं। जीवन के २५, २७, ३२, ३३, ३५ एवं ४७वें वर्ष भाग्य वृद्धिकारक होंगे।

वृश्चिक लग्न–वृश्चिक लग्न (राशि) का स्वामी मंगल है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक सुन्दर मुख वाला, परिश्रमी, अपने सामर्थ्य पर ही भरोसा करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति होगी। **मंगल** शुभ हो तो उत्साही, उदार, परिश्रमी, साहसी, ईमानदार, स्पष्टवादी, परोपकारी, व्यवहार-कुशल, कर्त्तव्यनिष्ठ, दृढ़ संकल्प शक्ति वाला होगा। भाई बहनों अथवा सम्बन्धियों की सहायता कम मिलती है, निजी पुरुषार्थ द्वारा ही निर्वाह योग्य आय के संसाधन जुटा पाते हैं। तनिक विरुद्ध बात हो जाने पर शीघ्र उत्तेजित हो जाएंगे, परन्तु सच्चाई अथवा सुपात्रता की दृष्टि से सुयोग्य जन की सहायता करने में अपने स्वार्थ की भी बलि देने से पीछे नहीं हटेंगे। जातक जिस कार्य को करना का निश्चय कर लेता है, उसे दृढ़तापूर्वक पालन करने का प्रयास करता है। कैमिस्ट, इंजीनियर, वकील, पुलिस, सेना विभाग, अध्यापन, ज्योतिष, अनुसंधानकर्त्ता के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे। **शुभ नग मूँगा** है। शुभ रंग लाल, संतरी, पीला, हल्का गुलाबी **(Pink)** है। अपनी आयु के २४, २८, ३२, ३६, ४४वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

धनु लग्न–धनु लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक का ऊँचा मस्तक, कान बड़े, लग्न भाव में क्रूर ग्रह होने की स्थिति में सिर मध्य अल्पबाल अथवा गंजा हो सकता है। **गुरु-बुध** की स्थिति शुभ हो तो सौम्य एवं शान्त, सरल स्वभाव, धार्मिक प्रकृति, उदार हृदय, परोपकारी, संवेदनशील, करुणा-दया आदि भावनाओं से युक्त होगा। दूसरों के मनोभावों को जान लेने की विशेष क्षमता होगी, इस लग्न (राशि) प्रभावित व्यक्ति में बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति की प्रबलता के साथ-साथ अश्व जैसी तीव्रता, उत्साह एवं उत्तेजना से कार्य करने की क्षमता होगी। द्विस्वभाव राशि के कारण शीघ्र कोई निर्णय नहीं ले पाएं और इनको क्रोध जल्दी नहीं आता, परन्तु जब आता है तो देर तक क्रोधित रहते हैं। अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण कठिन से कठिन समस्याओं को अपने सब, साहस एवं परिश्रम के द्वारा सुलझा लेंगे तथा निजी पुरुषार्थ द्वारा जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति करने वाला, धन, सम्पदा, भूमि-जायदाद व सवारी आदि सुखों को प्राप्त करने में सफल होगा। **मंगल-गुरु** शुभ हो तो उच्च व्यवसायिक विद्या के योग है। शिक्षक, धर्म-प्रचारक, राजनीतिक, वैद्य-डॉक्टर, वकील, पुस्तक व्यवसाय आदि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। **शुभ नग पुखराज** है। अपनी आयु के २३, २७, ३२, ३६वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

मकर लग्न–मकर लग्न (राशि) का स्वामी शनि है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाले जातक का मध्यम कद, नयन नक्श तीखे, सुन्दर मुखाकृति, काले घने बाल एवं पतली कमर वाला होगा। जातक गम्भीर, भावुक, हृदय, संवेदनशील, उच्चाभिलाषी, सेवाधर्मी, मननशील एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होगा। बुध व शुक्र शुभ होने पर व्यवहार-कुशल, गहन विचार एवं सूक्ष्म विश्लेषण के पश्चात् ही महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते हैं। क्षमाशील प्रायः कम होते हैं तथा इन्हें बदले एवं शत्रुता की भावना भुला पाना अत्यन्त कठिन होता है। चर राशि एवं लग्न होने से जातक की मानसिक एवं आत्मिक शक्ति प्रबल होगी। **गुरु-शनि** शुभ हो तो, जातक नर्म स्वभाव (विनम्र), विनयशील, व्यवहार-कुशल, नीति के अनुकूल आचरण करने वाला, तर्कशील, भली-बुरी बात की पहचान करने में कुशल, विश्वसनीय, मित्रता स्थापित करने में अत्यन्त सावधान **(Selective)** तथा ईमानदार होंगे। तर्क-वितर्क करने में कुशल, अपने विरुद्ध बात को हृदय से भुला पाना कठिन होता है। खांसी तथा वायु रोग से सावधानी बरतें। **शुभ नग नीलम** है। भाग्योन्नति वर्ष २२, २४, २८ एवं ३२, ४६ होते हैं।

कुम्भ लग्न–लग्नेश (राशिपति) शनि शुभ अवस्था में हो तो जातक मध्यम अथवा ऊँचे कद वाला, सुन्दर प्रभावशाली व्यक्तित्व होगा। बुद्धिमान, साधन सम्पन्न, तीव्र स्मरण शक्ति एवं गम्भीर प्रकृति वाला होगा। दूसरों के प्रति दयाभाव रखने वाला, परोपकारी मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए हर प्रकार से सहायक होगा। व्यवहार कुशल, मिलनसार, स्पष्टवादी एवं निस्वार्थ भाव से सेवा करने में तत्पर होगा। जातक स्वाभिमानी, स्वतन्त्रताप्रिय एवं नए-नए मित्र बनाने में भी पीछे नहीं हटेगा। उद्योगी, उद्यमी, परिश्रमी प्रकृति एवं प्रबन्धात्मक योग्यता विशेष होगी एवं उपयुक्त साधन उपलब्ध होने पर देश-विदेशों में जाने के सुअवसर प्राप्त होंगे। महत्त्वकांक्षी होते हुए भी क्रियात्मक दृष्टिकोण रखेंगे तथा अनेक विघ्न-बाधाओं व कठिनाइयों के होने पर भी जीवन में उच्च स्थिति, धन पदादि प्राप्त करने में सफल होंगे। कुम्भ लग्न में यदि गुरु मित्र क्षेत्री या शुभ में हो तो जातक उच्चाधिकारी, उच्चपदासीन, क्रय-विक्रय, प्रोफेसर, जज-वकील अथवा उच्च एवं धनी-व्यापारी होगा, प्रारम्भिक जीवन में आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष होगा। आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष व कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। **शुभ नग नीलम** है। **स्त्रियों के लिए, पुखराज शुभ** होगा।

मीन लग्न–मीन लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। मीन लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक बुद्धिमान, गम्भीर एवं सौम्य प्रकृति, परोपकारी कार्य करने में तत्पर, ईमानदार, सत्यप्रिय, धार्मिक, धर्म-कर्म एवं फिलास्फी, साहित्य एवं गूढ़ विद्याओं की ओर विशेष अभिरुचि रखेगा। उच्चाभिलाषी, उच्चाकांक्षी एवं स्वाभिमानी प्रकृति, अपनी मान-मर्यादा एवं प्रतिष्ठा का विशेष ध्यान रखें। सेवाभाव रखने वाला, तीव्र बुद्धि, परिश्रमी, उद्यमी, दूरदर्शी, व्यवहार कुशल एवं नीति के अनुसार आचरण करने वाला, विश्वसनीय, ईमानदार तथा हर प्रकार से मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए सहायक होगा। परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेने की अपूर्व क्षमता होगी। देव तुल्य प्रकृति होती है। दूसरों पर न तो अन्याय करेंगे न ही किसी भान्ति अन्याय को सहन करेंगे। जातक कलाकार, चल-चित्र, व्यवसाय, खाने-पीने की वस्तुओं से सम्बन्धित, समाज सुधारक, अध्यापन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। **शुभ नग पुखराज** है। शुभ वैवाहिक जीवन के लिए **पन्ना** धारण करें। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २४, २८, ३३, ३८, ४५ वर्ष होते हैं।

जब हमारी घड़ियां बारह (१२) बजाती हैं

विश्व के प्रत्येक देश का मानक समय (स्टैण्डर्ड टाईम) अलग-अलग होता है। एक ही समय में अनेक देशों के स्टैण्डर्ड टाईम में कई घण्टों का अन्तर रहता है। **उदाहरणार्थ** जब भारत में दोपहर के १२ बजे होते हैं, तो इंग्लैण्ड में प्रात: के साढ़े छ: (६.३०) बजे होते हैं। एवं पाकिस्तान में प्रात: के साढ़े ग्यारह (११.३०) बजे होते हैं। ध्यान रहे, अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि कई देशों में अप्रैल के प्रथम रविवार से अक्तूबर के प्रथम सप्ताह तक सभी घड़ियों का समय एक घण्टा आगे बढ़ा दिया जाता है। जिससे उनके मानक समयान्तर (Difference of Standard Times) में एक घण्टे का अन्तर पड़ जाता है। नीचे भिन्न-भिन्न कुछ देशों के स्टै. समय और भारत के स्टै. समय का अन्तर स्पष्ट करते हैं। अमेरिका, कैनेडा, रूस आदि अति विस्तृत देशों में एक से अधिक स्टै. टाईम का निर्धारण किया जाता है।

नाम देश	राजधानी	स्टै. समय	नाम देश	राजधानी	स्टै. समय
अमेरिका	वाशिंगटन	९.३० प्रात:	भारत	नई दिल्ली	१२ दुपैहर
अफगानिस्तान	काबुल	११.०० प्रात:	पाकिस्तान	इस्लामाबाद	११.३० दुपै.
आस्ट्रेलिया	कैनबरा	४.३० सायं	फ्रांस	पैरिस	७.३० प्रात:
आयरलैंड	डबलिन	६.३० प्रात:	स्विट्ज़रलैंड	जिनेवा	७.३० प्रात:
इंडोनेशिया	जकार्ता	१.३० दुपै..	जापान	टोकियो	३.३० दुपै.
इंग्लैंड	लन्दन	६.३० प्रात:	चीन	पीकिंग	२.३० दुपै.
इटली	रोम	७.३० प्रात:	रूस	मास्को	९.३० प्रात:
ईरान	तैहरान	१०.०० प्रात:	सऊदी अरब	मक्का	९.३० प्रात:
ओमान	मस्कट	१०.३० प्रात:	थाईलैंड	बैंकाक	१.३० दुपै.
कीनिया	नैरोबी	९.३० प्रात:	डैनमार्क	कोपनहैगन	७.३० प्रात:
कैनेडा	ओटावा	१.३० प्रात:	श्रीलंका	कोलम्बो	१२.०० दुपै.
कुवैत	कुवैत	९.३० प्रात:	सिंगापुर	सिंगापुर	२.०० दुपै.
बंगलादेश	ढाका	१२.३० दुपै.	मलेशिया	कुआलालम्पुर	२.०० दुपै.
द. कोरिया	सियोल	३.३० सायं	न्यूजीलैंड	वलिंगटन	६.३० शाम
ग्रीस	एथसिं	८.३० प्रात:	जर्मनी	बर्लिन	७.३० प्रात:
जांबिया	लुसाका	७.३० प्रात:	जार्डन	अमन	७.३० प्रात:
कतर	अरब	९.३० प्रात:	फिलिपाईन	मनीला	२.३० दुपै.
बर्मा	रंगून	१३.०० दुपै.	रोमानिया	बुखापेस्ट	८.३० प्रात:

चरणामृत ग्रहण करने का मन्त्र—

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधि विनाशनम्।
विष्णो: पादोदकां पीटवा पुनर्जन्म न विद्यते॥

दैनिक लग्न सारणी में वार्षिक संस्कार

आगामी पृष्ठों में दी गई दैनिक लग्न सारणी ३१°। १९ अक्षांश जालन्धर, एवं २३°। ३० अयनांश पर आधारित है। इसमें प्रत्येक लग्न का समाप्तिकाल अंग्रेजी तारीखों के मुताबक, भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में लिखा गया है। सूर्योदयास्त एवं लग्नों के प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल का आधार मुख्यत: अंग्रेजी तारीखें ली गई हैं। चूंकि पृथ्वी की अयनगति में प्रतिवर्ष परिवर्तन होता है, इसके अतिरिक्त तीन वर्षों के पश्चात् हर चौथे वर्ष **लीप वर्ष** (अर्थात् **फरवरी मास** के दिन २८ की अपेक्षा २९ होते हैं) होने के कारण लग्नों के मान में प्रति वर्ष कुछ स्थूलता आ जाती है। इसको सूक्ष्म बनाने के लिए वार्षिक संस्कार सारणी दी जा रही है। यह वार्षिक संस्कार (+ या –) करने से अभीष्ट सन् एवं तारीख (Desired date and Year) का सूक्ष्मतम लग्न समाप्तिकाल प्राप्त होगा। वार्षिक संस्कार सारणी में लीप वर्ष (Leap Year) दो बार लिखा गया है। जिस सन् ईसवी के साथ (A) का निशान दिया गया है, उस संस्कार तालिका को जनवरी की १ तारीख से २८ फरवरी तक के लिए जाने तथा जिस सन् के साथ (B) का निशान है, उस संस्कार तालिका का प्रयोग **१ मार्च से ३१ दिसंबर** तक की अवधि के लिए करें।

२९ फरवरी के लग्न मान के लिए २८ फरवरी के प्रत्येक लग्न (कुम्भ से मकर तक) समा. काल में से २/२ मिनट हीन (कम) कर देवे। लीप रहित जिस सन् के आगे कोई निशान नहीं दिया गया उस **संस्कार** तालिका का प्रयोग **१ जनवरी** से ३१ दिसंबर तक के महीनों के लिए करें। **उदाहरणार्थ**—ता. १६ अप्रैल, १९९५ को मेष लग्न समाप्ति देखना है तो सारिणी में ता. १६ अप्रैल को ७.२९ पर मेष लग्न समाप्त हुआ। अब इसमें वार्षिक संस्कार तालिका से हमें +२ मिनट प्राप्त हुए। अत: सन् १९९५ में **मेष लग्न** ७.३१ पर समाप्त होगा।

दैनिक लग्न सारिणी में वार्षिक संस्कार तालिका

सन् ई.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१९८८A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
१९८८B	—१	—१	०	०	०	०	०	०	—१	—१	—१	—१
१९८९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
१९९०	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९९१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
१९९२A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
१९९२B	—१	—१	०	०	०	०	०	०	०	—१	—१	—१
१९९३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१९९४	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९९५	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
१९९६A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
१९९६B	—१	—१	०	०	०	०	०	०	—१	—१	—१	—१
१९९७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
१९९८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९९९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०००A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०००B	—१	—१	०	०	०	०	०	०	०	—१	—१	—१
२००१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००४A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००४B	—१	—१	०	०	०	०	०	०	०	—१	—१	—१

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल-मई (वैशाख) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

अप्रैल	वैशाख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ ३७	९ ३१	११ ४५	१४ ०८	१६ २८	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ३३	३ १४	४ ३९	६ ००
15	२	७ ३३	९ २७	११ ४२	१४ ०४	१६ २४	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ २९	३ १०	४ ३५	५ ५६
16	३	७ २९	९ २३	११ ३८	१४ ००	१६ २०	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ २५	३ ०६	४ ३१	५ ५२
17	४	७ २५	९ १९	११ ३४	१३ ५७	१६ १७	१८ ३४	२० ५६	२३ १६	१ २१	३ ०२	४ २७	५ ४८
18	५	७ २१	९ १६	११ ३०	१३ ५३	१६ १३	१८ ३१	२० ५२	२३ १२	१ १७	२ ५८	४ २३	५ ४४
19	६	७ १७	९ १२	११ २६	१३ ४९	१६ ०९	१८ २७	२० ४८	२३ ०८	१ १३	२ ५४	४ १९	५ ४०
20	७	७ १३	९ ०८	११ २२	१३ ४५	१६ ०५	१८ २३	२० ४४	२३ ०४	१ ०९	२ ५०	४ १५	५ ३६
21	८	७ ०९	९ ०४	११ १८	१३ ४१	१६ ०१	१८ १९	२० ४०	२३ ०१	१ ०५	२ ४६	४ ११	५ ३२
22	९	७ ०५	९ ००	११ १५	१३ ३७	१५ ५७	१८ १५	२० ३६	२२ ५७	१ ०१	२ ४२	४ ०७	५ २८
23	१०	७ ०१	८ ५६	११ ११	१३ ३३	१५ ५३	१८ ११	२० ३३	२२ ५३	०० ५७	२ ३८	४ ०३	५ २४
24	११	६ ५७	८ ५२	११ ०७	१३ २९	१५ ५०	१८ ०७	२० २९	२२ ४९	०० ५३	२ ३४	३ ५९	५ २१
25	१२	६ ५३	८ ४८	११ ०३	१३ २५	१५ ४६	१८ ०३	२० २५	२२ ४५	०० ४९	२ ३०	३ ५५	५ १७
26	१३	६ ४९	८ ४४	१० ५९	१३ २१	१५ ४२	१७ ५९	२० २१	२२ ४१	०० ४५	२ २७	३ ५१	५ १३
27	१४	६ ४६	८ ४०	१० ५५	१३ १७	१५ ३८	१७ ५५	२० १७	२२ ३७	०० ४१	२ २३	३ ४७	५ ०९
28	१५	६ ४२	८ ३६	१० ५१	१३ १४	१५ ३५	१७ ५१	२० १३	२२ ३३	०० ३७	२ १९	३ ४३	५ ०५
29	१६	६ ३८	८ ३२	१० ४७	१३ १०	१५ ३१	१७ ४७	२० ०९	२२ २९	०० ३३	२ १५	३ ३९	५ ०१
30	१७	६ ३४	८ २८	१० ४३	१३ ०६	१५ २७	७ ४४	२० ०५	२२ २५	०० २९	२ ११	३ ३५	४ ५७
मई	१८	६ ३०	८ २४	१० ३९	१३ ०२	१५ २३	१७ ४०	२० ०१	२२ २१	००.२५	२ ०७	३ ३२	४ ५३
2	१९	६ २६	८ २०	१० ३५	१२ ५८	१५ १९	१७ ३६	१९ ५७	२२ १७	०० २१	२ ०३	३ २८	४ ५०
3	२०	६ २२	८ १६	१० ३१	१२ ५४	१५ १५	१७ ३२	१९ ५३	२२ १३	०० १८	१ ५९	३ २४	४ ४६
4	२१	६ १८	८ १२	१० २७	१२ ५०	१५ ११	१७ २८	१९ ४९	२२ ०९	०० १४	१ ५५	३ २०	४ ४२
5	२२	६ १४	८ ०८	१० २३	१२ ४६	१५ ०७	१७ २४	१९ ४५	२२ ०५	०० १०	१ ५१	३ १६	४ ३८
6	२३	६ १०	८ ०४	१० १९	१२ ४२	१५ ०३	१७ २०	१९ ४१	२२ ०१	०० ०६	१ ४७	३ १२	४ ३४
7	२४	६ ६	८ ००	१० १५	१२ ३८	१४ ५९	१७ १६	१९ ३७	२१ ५७	०००२	१ ४३	३ ०८	४ ३०
8	२५	६ २	७ ५६	१० ११	१२ ३४	१४ ५५	१७ १२	१९ ३३	२१ ५३	२३ ५८	१ ३९	३ ०४	४ २६
9	२६	५ ५८	७ ५२	१० ०७	१२ ३०	१४ ५१	१७ ०८	१९ २९	२१ ४९	२३ ५४	१ ३५	३ ००	४ २२
10	२७	५ ५४	७ ४८	१० ०३	१२ २६	१४ ४७	१७ ०४	१९ २५	२१ ४५	२३ ५०	१ ३१	२ ५६	४ १८
11	२८	५ ५०	७ ४५	९ ५९	१२ २२	१४ ४३	१७ ००	१९ २१	२१ ४१	२३ ४६	१ २७	२ ५२	४ १४
12	२९	५ ४६	७ ४१	९ ५५	१२ १८	१४ ३९	१६ ५६	१९ १७	२१ ३७	२३ ४२	१ २३	२ ४८	४ १०
13	३०	५ ४२	७ ३७	९ ५१	१२ १५	१४ ३५	१६ ५२	१९ १३	२१ ३३	२३ ३८	१ १९	२ ४४	४ ०६
14	३१	५ ३९	७ ३३	९ ४७	१२ ११	१४ ३१	१६ ४८	१९ ०९	२१ २९	२३ ३४	१ १५	२ ४०	४ ०२
15	ज्ये.	५ ३५	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी मई-जून (ज्येष्ठ) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

मई	ज्येष्ठ	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	७ २९	९ ४४	१२ ०७	१४ २७	१६ ४५	१९ ०६	२१ २६	२३ ३०	०१ ११	२ ३६	३ ५८	५ ३१
16	२	७ २५	९ ४०	१२ ०३	१४ २३	१६ ४१	१९ ०२	२१ २२	२३ २६	०१ ०७	२ ३२	३ ५४	५ ३७
17	३	७ २२	९ ३६	११ ५९	१४ १९	१६ ३७	१८ ५८	२१ १८	२३ २२	०१ ०३	२ २८	३ ५०	५ २३
18	४	७ १८	९ ३२	११ ५५	१४ १५	१६ ३३	१८ ५४	२१ १४	२३ १८	०० ५९	२ २४	३ ४६	५ १९
19	५	७ १४	९ २८	११ ५१	१४ ११	१६ २९	१८ ५०	२१ १०	२३ १५	०० ५६	२ २०	३ ४२	५ १५
20	६	७ १०	९ २४	११ ४७	१४ ०७	१६ २५	१८ ४६	२१ ०६	२३ ११	०० ५२	२ १७	३ ३८	५ ११
21	७	७ ०६	९ २०	११ ४३	१४ ०३	१६ २१	१८ ४२	२१ ०२	२३ ०७	०० ४८	२ १३	३ ३४	५ ०७
22	८	७ ०२	९ १६	११ ३९	१३ ५९	१६ १७	१८ ३८	२० ५८	२३ ०३	०० ४४	२ ०९	३ ३०	५ ०३
23	९	६ ५९	९ १३	११ ३६	१३ ५६	१६ १४	१८ ३५	२० ५५	२३ ००	०० ४१	२ ०५	३ २७	५ ००
24	१०	६ ५५	९ ०९	११ ३२	१३ ५२	१६ १०	१८ ३१	२० ५१	२२ ५६	०० ३७	२ ०२	३ २३	४ ५६
25	११	६ ५१	९ ०५	११ २८	१३ ४८	१६ ०६	१८ २७	२० ४७	२२ ५२	०० ३३	१ ५८	३ १९	४ ५२
26	१२	६ ४७	९ ०१	११ २४	१३ ४४	१६ ०२	१८ २३	२० ४३	२२ ४८	०० २९	१ ५४	३ १५	४ ४८
27	१३	६ ४३	८ ५७	११ २०	१३ ४०	१५ ५८	१८ १९	२० ३९	२२ ४४	०० २५	१ ५०	३ ११	४ ४४
28	१४	६ ३९	८ ५३	११ १६	१३ ३६	१५ ५४	१८ १५	२० ३५	२२ ४०	०० २१	१ ४६	३ ०७	४ ४०
29	१५	६ ३५	८ ४९	११ १२	१३ ३२	१५ ५०	१८ ११	२० ३१	२२ ३६	०० १७	१ ४२	३ ०३	४ ३६
30	१६	६ ३१	८ ४५	११ ०८	१३ २८	१५ ४६	१८ ०७	२० २७	२२ ३२	०० १३	१ ३८	२ ५९	४ ३२
31	१७	६ २७	८ ४१	११ ०४	१३ २४	१५ ४२	१८ ०३	२० २३	२२ २८	०० ०९	१ ३४	२ ५५	४ २८
जून	१८	६ २३	८ ३७	११ ००	१३ २०	१५ ३८	१७ ५९	२० १९	२२ २४	०० ०५	१ ३०	२ ५१	४ २४
2	१९	६ १९	८ ३३	१० ५६	१३ १६	१५ ३४	१७ ५५	२० १५	२२ २०	०००१	१ २६	२ ४७	४ २०
3	२०	६ १५	८ २९	१० ५२	१३ १२	१५ ३०	१७ ५१	२० ११	२२ १६	२३ ५७	१ २२	२ ४३	४ १६
4	२१	६ ११	८ २५	१० ४८	१३ ०८	१५ २६	१७ ४७	२० ०७	२२ १२	२३ ५३	१ १८	२ ३९	४ १२
5	२२	६ ०७	८ २१	१० ४४	१३ ०४	१५ २२	१७ ४३	२० ०३	२२ ०८	२३ ४९	१ १४	२ ३५	४ ०८
6	२३	६ ०३	८ १८	१० ४१	१३ ०१	१५ १९	१७ ४०	२० ००	२२ ०५	२३ ४६	१ १०	२ ३२	४ ०४
7	२४	५ ५९	८ १४	१० ३७	१२ ५७	१५ १५	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०१	२३ ४२	१ ०६	२ २८	४ ०१
8	२५	५ ५५	८ १०	१० ३३	१२ ५३	१५ ११	१७ ३२	१९ ५२	२१ ५७	२३ ३८	१ ०२	२ २४	३ ५७
9	२६	५ ५१	८ ०६	१० २९	१२ ४९	१५ ०७	१७ २८	१९ ४८	२१ ५३	२३ ३४	०० ५८	२ २०	३ ५३
10	२७	५ ४७	८ ०२	१० २५	१२ ४५	१५ ०३	१७ २४	१९ ४४	२१ ४९	२३ ३०	०० ५४	२ १६	३ ४९
11	२८	५ ४३	७ ५८	१० २१	१२ ४१	१४ ५९	१७ २०	१९ ४०	२१ ४५	२३ २६	०० ५०	२ १२	३ ४५
12	२९	५ ३९	७ ५४	१० १७	१२ ३७	१४ ५५	१७ १६	१९ ३६	२१ ४१	२३ २२	०० ४६	२ ०८	३ ४१
13	३०	५ ३५	७ ५०	१० १३	१२ ३३	१४ ५१	१७ १२	१९ ३२	२१ ३७	२३ १८	०० ४२	२ ०४	३ ३७
14	३१	५ ३१	७ ४६	१० ०९	१२ २९	१४ ४७	१७ ०८	१९ २८	२१ ३३	२३ १४	०० ३८	२ ००	३ ३३
15	आ.	५ २८	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी जून-जुलाई (आषाढ़) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

जून	आषाढ़	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	७ ४२	१० ०५	१२ २५	१४ ४३	१७ ०४	१९ २४	२१ २९	२३ १०	०० ३५	१ ५६	३ २९	५ २४
16	२	७ ३८	१० ०१	१२ २१	१४ ३९	१७ ००	१९ २०	२१ २५	२३ ०६	०० ३१	१ ५२	३ २५	५ २०
17	३	७ ३४	९ ५७	१२ १७	१४ ३५	१६ ५६	१९ १६	२१ २१	२३ ०२	०० २७	१ ४८	३ २१	५ १६
18	४	७ ३०	९ ५३	१२ १३	१४ ३१	१६ ५२	१९ १२	२१ १७	२२ ५८	०० २३	१ ४४	३ १७	५ १२
19	५	७ २६	९ ४९	१२ ०९	१४ २७	१६ ४८	१९ ०८	२१ १३	२२ ५४	०० १९	१ ४०	३ १३	५ ०८
20	६	७ २२	९ ४५	१२ ०५	१४ २३	१६ ४४	१९ ०४	२१ ०९	२२ ५०	०० १५	१ ३६	३ ०९	५ ०४
21	७	७ १८	९ ४१	१२ ०१	१४ १९	१६ ४०	१९ ००	२१ ०५	२२ ४६	०० ११	१ ३२	३ ०५	५ ००
22	८	७ १५	९ ३७	११ ५७	१४ १५	१६ ३६	१८ ५६	२१ ०१	२२ ४२	०० ०७	१ २८	३ ०१	४ ५६
23	९	७ ११	९ ३३	११ ५३	१४ ११	१६ ३२	१८ ५२	२० ५७	२२ ३८	०० ०३	१ २४	२ ५७	४ ५२
24	१०	७ ०७	९ २९	११ ४९	१४ ०७	१६ २८	१८ ४८	२० ५३	२२ ३४	२३ ५९	१ २०	२ ५३	४ ४८
25	११	७ ०३	९ २५	११ ४५	१४ ०३	१६ २४	१८ ४४	२० ४९	२२ ३०	२३ ५५	१ १६	२ ४९	४ ४४
26	१२	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ५९	१६ २०	१८ ४०	२० ४५	२२ २६	२३ ५१	१ १२	२ ४५	४ ४०
27	१३	६ ५५	९ १८	११ ३८	१३ ५६	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ ०९	२ ४२	४ ३७
28	१४	६ ५१	९ १४	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ०५	२ ३८	४ ३३
29	१५	६ ४७	९ १०	११ ३०	१३ ४८	१६ ०९	१८ २९	२० ३४	२२ १५	२३ ४०	१ ०१	२ ३४	४ २९
30	१६	६ ४३	९ ०६	११ २६	१३ ४४	१६ ०५	१८ २५	२० ३०	२२ ११	२३ ३६	००५७	२ ३०	४ २५
जुला.	१७	६ ३९	९ ०२	११ २२	१३ ४०	१६ ०१	१८ २१	२० २६	२२ ०७	२३ ३२	००५३	२ २६	४ २१
2	१८	६ ३५	८ ५८	११ १८	१३ ३६	१५ ५७	१८ १७	२० २२	२२ ०३	२३ २८	०० ४९	२ २२	४ १७
3	१९	६ ३१	८ ५४	११ १४	१३ ३२	१५ ५३	१८ १३	२० १८	२१ ५९	२३ २४	०० ४५	२ १८	४ १३
4	२०	६ २७	८ ५०	११ १०	१३ २८	१५ ४९	१८ ०९	२० १४	२१ ५५	२३ २०	०० ४१	२ १४	४ ०९
5	२१	६ २३	८ ४६	११ ०६	१३ २४	१५ ४५	१८०५	२० १०	२१ ५१	२३ १६	०० ३८	२ ११	४ ०५
6	२२	६ १९	८ ४२	११ ०२	१३ २०	१५ ४१	१८ ०१	२० ०६	२१ ४७	२३ १२	०० ३४	२ ०७	४ ०१
7	२३	६ १६	८ ३९	१० ५९	१३ १७	१५ ३८	१७ ५८	२० ०३	२१ ४४	२३ ०९	०० ३१	२ ०४	३ ५८
8	२४	६ १२	८ ३५	१० ५५	१३ १३	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५९	२१ ४०	२३ ०५	०० २७	२ ००	३ ५४
9	२५	६ ०८	८ ३१	१० ५१	१३ ०९	१५ ३०	१७ ५०	१९ ५५	२१ ३६	२३ ०१	००२३	१ ५६	३ ५०
10	२६	६ ०४	८ २७	१० ४७	१३ ०५	१५ २६	१७ ४६	१९ ५१	२१ ३२	२२ ५७	०० १९	१ ५२	३ ४६
11	२७	६ ००	८ २३	१० ४३	१३ ०१	१५ २२	१७ ४२	१९ ४७	२१ २८	२२ ५३	०० १५	१ ४८	३ ४२
12	२८	५ ५६	८ १९	१० ३९	१२ ५७	१५ १८	१७ ३८	१९ ४३	२१ २४	२२ ४९	०० ११	१ ४४	३ ३८
13	२९	५ ५२	८ १५	१० ३५	१२ ५३	१५ १४	१७ ३४	१९ ३९	२१ २०	२२ ४५	०० ०७	१ ४०	३ ३४
14	३०	५ ४८	८ ११	१० ३१	१२ ४९	१५ १०	१७ ३०	१९ ३५	२१ १६	२२ ४१	०० ०३	१ ३६	३ ३०
15	३१	५ ४४	८ ०७	१० २७	१२ ४५	१५ ०६	१७ २६	१९ ३१	२१ १२	२२ ३७	२३ ५९	१ ३२	३ २६
16	श्रा.	५ ४०	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी जुला.-अग. (श्रावण) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

जुलाई	श्रावण	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ ०३	१० २३	१२ ४१	१५ ०२	१७ २२	१९ २७	२१ ०८	२२ ३३	२३ ५५	१ २८	३ २२	५ ३६
17	२	७ ५९	१० १९	१२ ३७	१४ ५८	१७ १८	१९ २३	२१ ०४	२२ २९	२३ ५१	१ २४	३ १८	५ ३२
18	३	७ ५५	१० १५	१२ ३३	१४ ५४	१७ १४	१९ १९	२१ ००	२२ २५	२३ ४७	१ २०	३ १४	५ २८
19	४	७ ५२	१० १२	१२ ३०	१४ ५१	१७ ११	१९ १६	२० ५६	२२ २१	२३ ४३	१ १७	३ १०	५ २४
20	५	७ ४८	१० ०८	१२ २६	१४ ४७	१७ ०७	१९ १२	२० ५२	२२ १८	२३ ४०	१ १३	३ ६	५ २०
21	६	७ ४४	१० ०४	१२ २२	१४ ४३	१७ ०३	१९ ८	२० ४८	२२ १४	२३ ३६	१ ०९	३ ०२	५ १६
22	७	७ ४०	१० ००	१२ १८	१४ ३९	१६ ५९	१९ ०४	२० ४४	२२ १०	२३ ३२	१ ०५	२ ५८	५ १२
23	८	७ ३६	९ ५६	१२ १४	१४ ३५	१६ ५५	१९ ००	२० ४०	२२ ०६	२३ २८	१ ०१	२ ५४	५ ०८
24	९	७ ३२	९ ५२	१२ १०	१४ ३१	१६ ५१	१८ ५६	२० ३६	२२ ०२	२३ २४	० ५७	२ ५०	५ ०४
25	१०	७ २८	९ ४८	१२ ६	१४ २७	१६ ४७	१८ ५२	२० ३२	२१ ५८	२३ २०	० ५३	२ ४६	५ ००
26	११	७ २४	९ ४४	१२ ०२	१४ २४	१६ ४४	१८ ४८	२० २९	२१ ५४	२३ १६	० ४९	२ ४२	४ ५६
27	१२	७ २०	९ ४०	११ ५८	१४ २०	१६ ४०	१८ ४४	२० २५	२१ ५०	२३ १२	० ४५	२ ३८	४ ५२
28	१३	७ १६	९ ३६	११ ५५	१४ १६	१६ ३६	१८ ४०	२० २१	२१ ४६	२३ ०८	० ४१	२ ३४	४ ४९
29	१४	७ १२	९ ३२	११ ५१	१४ १२	१६ ३२	१८ ३६	२० १७	२१ ४२	२३ ०४	० ३७	२ ३०	४ ४५
30	१५	७ ०८	९ २८	११ ४७	१४ ८	१६ २८	१८ ३२	२० १३	२१ ३८	२३ ००	० ३३	२ २७	४ ४१
31	१६	७ ०४	९ २४	११ ४३	१४ ०४	१६ २५	१८ २८	२० ९	२१ ३४	२२ ५६	० २९	२ २३	४ ३७
अग.	१७	७ ००	९ २०	११ ३९	१४ ००	१६ २१	१८ २४	२० ०५	२१ ३०	२२ ५२	० २५	२ १९	४ ३३
2	१८	६ ५६	९ १६	११ ३५	१३ ५६	१६ १७	१८ २०	२० ०१	२१ २६	२२ ४८	० २१	२ १५	४ २९
3	१९	६ ५२	९ १२	११ ३१	१३ ५२	१६ १३	१८ १६	१९ ५७	२१ २२	२२ ४४	० १७	२ ११	४ २५
4	२०	६ ४८	९ ०९	११ २७	१३ ४८	१६ ९	१८ १२	१९ ५३	२१ १८	२२ ४१	० १३	२ ०७	४ २१
5	२१	६ ४४	९ ०५	११ २४	१३ ४५	१६ ५	१८ ९	१९ ५०	२१ १४	२२ ३८	० १०	२ ०४	४ १७
6	२२	६ ४०	९ ०१	११ २०	१३ ४१	१६ ०१	१८ ५	१९ ४६	२१ ११	२२ ३४	० ०६	२ ००	४ १४
7	२३	६ ३७	८ ५७	११ १६	१३ ३७	१५ ५७	१८ ०१	१९ ४२	२१ ७	२२ ३०	० ०२	१ ५६	४ १०
8	२४	६ ३३	८ ५३	११ १२	१३ ३३	१५ ५४	१७ ५७	१९ ३९	२१ ०३	२२ २६	२३ ५८	१ ५२	४ ०६
9	२५	६ २९	८ ४९	११ ८	१३ २९	१५ ५०	१७ ५३	१९ ३५	२० ५९	२२ २२	२३ ५४	१ ४८	४ ०२
10	२६	६ २५	८ ४५	११ ४	१३ २५	१५ ४६	१७ ४९	१९ ३१	२० ५५	२२ १८	२३ ५०	१ ४४	३ ५८
11	२७	६ २१	८ ४१	११ ००	१३ २१	१५ ४२	१७ ४५	१९ २७	२० ५१	२२ १४	२३ ४६	१ ४०	३ ५४
12	२८	६ १७	८ ३७	१० ५६	१३ १७	१५ ३८	१७ ४१	१९ २३	२० ४८	२२ १०	२३ ४२	१ ३७	३ ५०
13	२९	६ १३	८ ३३	१० ५२	१३ १३	१५ ३४	१७ ३७	१९ १९	२० ४४	२२ ०६	२३ ३८	१ ३३	३ ४७
14	३०	६ ०९	८ २९	१० ४८	१३ ०९	१५ ३०	१७ ३३	१९ १५	२० ४०	२२ ०२	२३ ३४	१ २९	३ ४३
15	३१	६ ०५	८ २५	१० ४४	१३ ०५	१५ २६	१७ २९	१९ ११	२० ३६	२१ ५८	२३ ३०	१ २५	३ ३९
16	३२	६ ०१	८ २१	१० ४०	१३ ०१	१५ २२	१७ २५	१९ ०७	२० ३२	२१ ५४	२३ २६	१ २१	३ ३५
17	भाद्र	५ ५७	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अग.-सितं. (भाद्रपद) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

अगस्त	भाद्रपद	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ १७	१० ३६	१२ ५७	१५ १८	१७ २१	१९ ०३	२० २८	२१ ५०	२३ २२	१ १७	३ ३१	५ ५३
18	२	८ १३	१० ३३	१२ ५३	१५ १४	१७ १७	१८ ५९	२० २४	२१ ४६	२३ १८	१ १३	३ २७	५ ४९
19	३	८ ९	१० २९	१२ ४९	१५ १०	१७ १३	१८ ५५	२० २०	२१ ४२	२३ १४	१ ०९	३ २३	५ ४५
20	४	८ ६	१० २५	१२ ४६	१५ ०६	१७ ०९	१८ ५१	२० १६	२१ ३८	२३ १०	१ ०५	३ १९	५ ४१
21	५	८ ०२	१० २१	१२ ४२	१५ ०२	१७ ०६	१८ ४७	२० १२	२१ ३४	२३ ०७	१ ०१	३ १५	५ ३७
22	६	७ ५८	१० १७	१२ ३८	१४ ५८	१७ ०२	१८ ४४	२० ८	२१ ३०	२३ ०३	० ५७	३ ११	५ ३३
23	७	७ ५४	१० १३	१२ ३४	१४ ५४	१६ ५८	१८ ४०	२० ४	२१ २६	२२ ५९	० ५३	३ ०७	५ २९
24	८	७ ५०	१० ०९	१२ ३०	१४ ५०	१६ ५४	१८ ३६	२० ०१	२१ २२	२२ ५५	० ५०	३ ०३	५ २५
25	९	७ ४६	१० ५	१२ २६	१४ ४६	१६ ५०	१८ ३२	१९ ५७	२१ १९	२२ ५१	० ४६	३ ००	५ २२
26	१०	७ ४२	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४६	१८ २८	१९ ५३	२१ १५	२२ ४७	० ४२	२ ५६	५ १८
27	११	७ ३८	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २४	१९ ४९	२१ ११	२२ ४३	० ३८	२ ५२	५ १४
28	१२	७ ३४	९ ५३	१२ १५	१४ ३५	१६ ३९	१८ २०	१९ ४५	२१ ७	२२ ३९	० ३४	२ ४८	५ १०
29	१३	७ ३०	९ ४९	१२ ११	१४ ३१	१६ ३५	१८ १६	१९ ४१	२१ ०३	२२ ३५	० ३०	२ ४४	५ ६
30	१४	७ २६	९ ४५	१२ ०७	१४ २७	१६ ३१	१८ १२	१९ ३७	२० ५९	२२ ३१	० २६	२ ४०	५ ०२
31	१५	७ २२	९ ४१	१२ ०३	१४ २३	१६ २७	१८ ०८	१९ ३३	२० ५५	२२ २७	० २२	२ ३६	४ ५८
सितं	१६	७ १८	९ ३७	११ ५९	१४ १९	१६ २३	१८ ०४	१९ २९	२० ५१	२२ २३	० १८	२ ३२	४ ५४
2	१७	७ १४	९ ३४	११ ५५	१४ १५	१६ १९	१८ ००	१९ २५	२० ४७	२२ १९	० १४	२ २८	४ ५०
3	१८	७ १०	९ ३०	११ ५१	१४ ११	१६ १५	१७ ५६	१९ २१	२० ४३	२२ १६	० १०	२ २४	४ ४६
4	१९	७ ०६	९ २६	११ ४७	१४ ०७	१६ ११	१७ ५२	१९ १७	२० ३९	२२ १२	० ६	२ २०	४ ४२
5	२०	७ ०२	९ २२	११ ४३	१४ ०३	१६ ०७	१७ ४८	१९ १३	२० ३५	२२ ८	० ०२	२ १६	४ ३८
6	२१	६ ५९	९ १८	११ ३९	१३ ५९	१६ ०३	१७ ४४	१९ ९	२० ३१	२२ ०४	२३ ५८	२ १२	४ ३४
7	२२	६ ५५	९ १४	११ ३५	१३ ५५	१५ ५९	१७ ४०	१९ ५	२० २७	२२ ००	२३ ५४	२ ०८	४ ३०
8	२३	६ ५१	९ १०	११ ३१	१३ ५१	१५ ५५	१७ ३६	१९ ०१	२० २३	२१ ५६	२३ ५०	२ ०४	४ २६
9	२४	६ ४७	९ ०६	११ २७	१३ ४७	१५ ५१	१७ ३२	१८ ५७	२० १९	२१ ५२	२३ ४६	२ ००	४ २२
10	२५	६ ४३	९ ०२	११ २३	१३ ४३	१५ ४७	१७ २८	१८ ५३	२० १५	२१ ४८	२३ ४२	१ ५६	४ १८
11	२६	६ ३९	८ ५८	११ १९	१३ ३९	१५ ४३	१७ २४	१८ ४९	२० ११	२१ ४४	२३ ३८	१ ५२	४ १४
12	२७	६ ३५	८ ५४	११ १५	१३ ३५	१५ ३९	१७ २०	१८ ४५	२० ७	२१ ४०	२३ ३४	१ ४८	४ १०
13	२८	६ ३१	८ ५०	११ ११	१३ ३१	१५ ३५	१७ १६	१८ ४१	२० ०३	२१ ३६	२३ ३०	१ ४४	४ ६
14	२९	६ २७	८ ४६	११ ७	१३ २७	१५ ३१	१७ १२	१८ ३७	१९ ५९	२१ ३२	२३ २६	१ ४०	४ ०२
15	३०	६ २३	८ ४२	११ ०३	१३ २३	१५ २७	१७ ०८	१८ ३३	१९ ५५	२१ २८	२३ २२	१ ३६	३ ५८
16	३१	६ १९	८ ३८	१० ५९	१३ १९	१५ २३	१७ ०४	१८ २९	१९ ५१	२१ २४	२३ १८	१ ३२	३ ५४
				—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी सितं.-अक्टू. (आश्विन) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

सितंबर	आश्विन	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ ३४	१० ५५	१३ १५	१५ १९	१७ ००	१८ २५	१९ ४७	२१ २०	२३ १४	१ २८	३ ५१	६ ११
18	२	८ ३०	१० ५१	१३ ११	१५ १५	१६ ५६	१८ २१	१९ ४३	२१ १६	२३ १०	१ २४	३ ४७	६ ०७
19	३	८ २६	१० ४७	१३ ०७	१५ ११	१६ ५२	१८ १७	१९ ३९	२१ १२	२३ ०६	१ २०	३ ४३	६ ०३
20	४	८ २२	१० ४३	१३ ०३	१५ ०७	१६ ४८	१८ १३	१९ ३५	२१ ०८	२३ ०२	१ १६	३ ३९	५ ५९
21	५	८ १८	१० ३९	१२ ५९	१५ ०३	१६ ४४	१८ ०९	१९ ३१	२१ ०४	२२ ५८	१ १२	३ ३५	५ ५५
22	६	८ १४	१० ३५	१२ ५५	१४ ५९	१६ ४०	१८ ०५	१९ २७	२१ ००	२२ ५४	१ ०८	३ ३१	५ ५१
23	७	८ १०	१० ३१	१२ ५१	१४ ५५	१६ ३६	१८ ०१	१९ २३	२० ५६	२२ ५०	१ ०४	३ २७	५ ४७
24	८	८ ६	१० २७	१२ ४७	१४ ५१	१६ ३२	१७ ५७	१९ १९	२० ५२	२२ ४६	१ ००	३ २३	५ ४३
25	९	८ ०२	१० २३	१२ ४३	१४ ४७	१६ २८	१७ ५३	१९ १५	२० ४८	२२ ४२	०० ५७	३ १९	५ ३९
26	१०	७ ५८	१० २०	१२ ४०	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ १२	२० ४४	२२ ३८	०० ५३	३ १५	५ ३५
27	११	७ ५४	१० १६	१२ ३६	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ८	२० ४०	२२ ३५	०० ४९	३ ११	५ ३१
28	१२	७ ५०	१० १२	१२ ३२	१४ ३६	१६ १७	१७ ४२	१९ ०४	२० ३६	२२ ३१	०० ४५	३ ०७	५ २७
29	१३	७ ४६	१० ०८	१२ २८	१४ ३२	१६ १३	१७ ३८	१९ ००	२० ३२	२२ २७	०० ४१	३ ०३	५ २३
30	१४	७ ४२	१० ०४	१२ २४	१४ २८	१६ ०९	१७ ३४	१८ ५६	२० २८	२२ २३	०० ३७	२ ५९	५ १९
अक्टू	१५	७ ३८	१० ०	१२ २०	१४ २४	१६ ०५	१७ ३०	१८ ५२	२० २४	२२ १९	०० ३३	२ ५५	५ १५
2	१६	७ ३४	९ ५६	१२ १६	१४ २०	१६ ०१	१७ २६	१८ ४८	२० २१	२२ १५	०० २९	२ ५२	५ ११
3	१७	७ ३०	९ ५२	१२ १२	१४ १६	१५ ५७	१७ २२	१८ ४४	२० १७	२२ ११	०० २५	२ ४८	५ ०७
4	१८	७ २६	९ ४८	१२ ०८	१४ १२	१५ ५३	१७ १८	१८ ४०	२० १३	२२ ०७	०० २१	२ ४४	५ ०३
5	१९	७ २२	९ ४४	१२ ०४	१४ ८	१५ ४९	१७ १४	१८ ३६	२० ०९	२२ ०३	०० १७	२ ४०	५ ००
6	२०	७ १८	९ ४०	१२ ००	१४ ४	१५ ४५	१७ १०	१८ ३२	२० ०५	२१ ५९	०० १३	२ ३६	४ ५६
7	२१	७ १४	९ ३६	११ ५६	१४ ००	१५ ४१	१७ ०६	१८ २८	२० ०१	२१ ५५	०० ०९	२ ३३	४ ५२
8	२२	७ १०	९ ३२	११ ५२	१३ ५६	१५ ३७	१७ ०२	१८ २४	१९ ५७	२१ ५१	०० ०५	२ २९	४ ४८
9	२३	७ ०६	९ २८	११ ४८	१३ ५२	१५ ३३	१६ ५८	१८ २०	१९ ५३	२१ ४७	०० ०१	२ २५	४ ४४
10	२४	७ ०३	९ २५	११ ४५	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १७	१९ ४९	२१ ४४	२३ ५८	२ २१	४ ४१
11	२५	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १३	१९ ४५	२१ ४०	२३ ५४	२ १७	४ ३७
12	२६	६ ५५	९ १७	११ ३७	१३ ४१	१५ २२	१६ ४७	१८ ९	१९ ४१	२१ ३६	२३ ५०	२ १३	४ ३३
13	२७	६ ५१	९ १३	११ ३३	१३ ३७	१५ १८	१६ ४३	१८ ०५	१९ ३७	२१ ३२	२३ ४६	२ ०९	४ २९
14	२८	६ ४७	९ ०९	११ २९	१३ ३३	१५ १४	१६ ३९	१८ ०१	१९ ३३	२१ २८	२३ ४२	२ ०५	४ २५
15	२९	६ ४३	९ ०५	११ २५	१३ २९	१५ १०	१६ ३५	१७ ५७	१९ २९	२१ २४	२३ ३८	२ ०१	४ २१
16	३०	६ ३९	९ ०१	११ २१	१३ २५	१५ ०६	१६ ३१	१७ ५३	१९ २५	२१ २०	२३ ३४	१ ५७	४ १७
17	का.	६ ३५	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अक्तू-नवं. (कार्तिक) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

अक्टूबर	कार्तिक	तुला घं. मिं.	बृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.
17	१	८ ५७	११ १७	१३ २१	१५ ०२	१६ २७	१७ ४९	१९ २१	२१ १६	२३ ३०	१ ५३	४ १३	६ ३१
18	२	८ ५३	११ १३	१३ १७	१४ ५८	१६ २३	१७ ४५	१९ १७	२१ १२	२३ २६	१ ४९	४ ०९	६ २७
19	३	८ ४९	११ ०९	१३ १३	१४ ५४	१६ १९	१७ ४१	१९ १३	२१ ०८	२३ २२	१ ४५	४ ०५	६ २३
20	४	८ ४५	११ ०५	१३ ०९	१४ ५०	१६ १५	१७ ३७	१९ ०९	२१ ०४	२३ १८	१ ४१	४ ०१	६ १९
21	५	८ ४१	११ ०१	१३ ०५	१४ ४६	१६ ११	१७ ३३	१९ ०५	२१ ००	२३ १४	१ ३७	३ ५७	६ १५
22	६	८ ३७	१० ५७	१३ ०१	१४ ४२	१६ ०७	१७ २९	१९ ०१	२० ५६	२३ १०	१ ३३	३ ५३	६ ११
23	७	८ ३३	१० ५३	१२ ५७	१४ ३८	१६ ०३	१७ २५	१८ ५७	२० ५२	२३ ०७	१ २९	३ ५०	६ ७
24	८	८ २९	१० ४९	१२ ५३	१४ ३४	१५ ५९	१७ २१	१८ ५३	२० ४८	२३ ०३	१ २५	३ ४६	६ ४
25	९	८ २६	१० ४६	१२ ५०	१४ ३०	१५ ५५	१७ १८	१८ ५०	२० ४४	२२ ५९	१ २२	३ ४२	६ ००
26	१०	८ २२	१० ४२	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १४	१८ ४६	२० ४१	२२ ५५	१ १८	३ ३९	५ ५६
27	११	८ १८	१० ३८	१२ ४२	१४ २३	१५ ४८	१७ १०	१८ ४२	२० ३७	२२ ५१	१ १४	३ ३५	५ ५२
28	१२	८ १४	१० ३४	१२ ३८	१४ १९	१५ ४४	१७ ०६	१८ ३८	२० ३३	२२ ४७	१ १०	३ ३१	५ ४८
29	१३	८ १०	१० ३०	१२ ३४	१४ १५	१५ ४०	१७ ०२	१८ ३४	२० २९	२२ ४३	१ ०६	३ २७	५ ४४
30	१४	८ ०६	१० २६	१२ ३०	१४ ११	१५ ३६	१६ ५८	१८ ३०	२० २५	२२ ३९	१ ०२	३ २३	५ ४१
31	१५	८ ०२	१० २२	१२ २६	१४ ०७	१५ ३२	१६ ५४	१८ २६	२० २१	२२ ३५	० ५८	३ १९	५ ३७
नवं.	१६	७ ५८	१० १८	१२ २२	१४ ०३	१५ २८	१६ ५०	१८ २२	२० १७	२२ ३१	० ५४	३ १५	५ ३३
2	१७	७ ५४	१० १४	१२ १८	१३ ५९	१५ २४	१६ ४६	१८ १८	२० १३	२२ २७	० ५०	३ ११	५ २९
3	१८	७ ५०	१० १०	१२ १४	१३ ५५	१५ २०	१६ ४२	१८ १५	२० ०९	२२ २३	० ४६	३ ०७	५ २५
4	१९	७ ४६	१० ०६	१२ १०	१३ ५१	१५ १६	१६ ३८	१८ ११	२० ०५	२२ १९	० ४२	३ ०३	५ २१
5	२०	७ ४२	१० ०२	१२ ०६	१३ ४७	१५ १२	१६ ३४	१८ ०७	२० ०१	२२ १५	० ३८	२ ५९	५ १७
6	२१	७ ३८	९ ५८	१२ ०२	१३ ४३	१५ ०८	१६ ३०	१८ ०३	१९ ५७	२२ ११	० ३४	२ ५५	५ १३
7	२२	७ ३५	९ ५४	११ ५८	१३ ३९	१५ ०४	१६ २६	१७ ५९	१९ ५३	२२ ०७	० ३०	२ ५१	५ ९
8	२३	७ ३१	९ ५०	११ ५४	१३ ३५	१५ ००	१६ २२	१७ ५५	१९ ४९	२२ ०३	० २६	२ ४७	५ ५
9	२४	७ २७	९ ४६	११ ५०	१३ ३१	१४ ५६	१६ १८	१७ ५१	१९ ४५	२१ ५९	० २२	२ ४३	५ ०१
10	२५	७ २३	९ ४२	११ ४६	१३ २७	१४ ५२	१६ १४	१७ ४७	१९ ४२	२१ ५६	० १८	२ ३९	४ ५७
11	२६	७ १९	९ ३८	११ ४२	१३ २४	१४ ४९	१६ ११	१७ ४३	१९ ३८	२१ ५२	० १४	२ ३५	४ ५३
12	२७	७ १५	९ ३४	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ०७	१७ ३९	१९ ३४	२१ ४८	० ११	२ ३१	४ ४९
13	२८	७ ११	९ ३१	११ ३५	१३ १६	१४ ४१	१६ ०३	१७ ३५	१९ ३०	२१ ४४	० ०७	२ २७	४ ४५
14	२९	७ ०७	९ २७	११ ३१	१३ १२	१४ ३७	१५ ५९	१७ ३१	१९ २६	२१ ४०	० ०३	२ २३	४ ४१
15	३०	७ ०३	९ २३	११ २७	१३ ०८	१४ ३३	१५ ५५	१७ २७	१९ २२	२१ ३६	२३ ५९	२ १९	४ ३७
16	मा.	६ ५९	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी नवं.-दिसं. (मार्गशीर्ष) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

नवम्बर	मार्ग.	बृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.
16	१	९ १९	११ २३	१३ ०४	१४ २९	१५ ५१	१७ २३	१९ १८	२१ ३२	२३ ५५	२ १५	४ ३३	६ ५५
17	२	९ १५	११ १९	१३ ००	१४ २५	१५ ४७	१७ १९	१९ १४	२१ २८	२३ ५१	२ ११	४ २९	६ ५१
18	३	९ ११	११ १५	१२ ५६	१४ २१	१५ ४३	१७ १५	१९ १०	२१ २४	२३ ४७	२ ०७	४ २५	६ ४७
19	४	९ ०७	११ ११	१२ ५२	१४ १७	१५ ३९	१७ ११	१९ ०६	२१ २०	२३ ४३	२ ०३	४ २१	६ ४३
20	५	९ ०३	११ ०७	१२ ४८	१४ १३	१५ ३५	१७ ०७	१९ ०२	२१ १६	२३ ३९	१ ५९	४ १७	६ ३९
21	६	८ ५९	११ ०३	१२ ४४	१४ ०९	१५ ३१	१७ ०३	१८ ५८	२१ १२	२३ ३५	१ ५५	४ १३	६ ३५
22	७	८ ५५	१० ५९	१२ ४०	१४ ०५	१५ २७	१७ ००	१८ ५५	२१ ०९	२३ ३१	१ ५२	४ १०	६ ३२
23	८	८ ५१	१० ५५	१२ ३६	१४ ०१	१५ २३	१६ ५६	१८ ५१	२१ ०५	२३ २७	१ ४८	४ ६	६ २८
24	९	८ ४७	१० ५१	१२ ३२	१३ ५७	१५ १९	१६ ५२	१८ ४७	२१ ०१	२३ २३	१ ४४	४ ०२	६ २४
25	१०	८ ४४	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १६	१६ ४८	१८ ४३	२० ५७	२३ १९	१ ४०	३ ५८	६ २०
26	११	८ ४०	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १२	१६ ४४	१८ ३९	२० ५३	२३ १६	१ ३६	३ ५४	६ १६
27	१२	८ ३६	१० ४०	१२ २१	१३ ४६	१५ ०८	१६ ४०	१८ ३५	२० ४९	२३ १२	१ ३२	३ ५०	६ १२
28	१३	८ ३२	१० ३६	१२ १७	१३ ४२	१५ ०४	१६ ३६	१८ ३१	२० ४५	२३ ०८	१ २८	३ ४६	६ ०८
29	१४	८ २८	१० ३२	१२ १३	१३ ३८	१५ ००	१६ ३३	१८ २७	२० ४१	२३ ०५	१ २५	३ ४३	६ ०४
30	१५	८ २४	१० २८	१२ ०९	१३ ३४	१४ ५६	१६ २९	१८ २३	२० ३७	२३ ०१	१ २१	३ ३९	६ ००
दिसं	१६	८ २०	१० २४	१२ ०५	१३ ३०	१४ ५२	१६ २५	१८ १९	२० ३३	२२ ५७	१ १७	३ ३५	५ ५६
2	१७	८ १६	१० २०	१२ ०१	१३ २६	१४ ४८	१६ २१	१८ १५	२० २९	२२ ५३	१ १३	३ ३१	५ ५२
3	१८	८ १२	१० १६	११ ५७	१३ २२	१४ ४४	१६ १७	१८ ११	२० २५	२२ ४९	१ ०९	३ २७	५ ४८
4	१९	८ ०८	१० १२	११ ५३	१३ १८	१४ ४०	१६ १३	१८ ०७	२० २१	२२ ४५	१ ०५	३ २३	५ ४४
5	२०	८ ०४	१० ०८	११ ४९	१३ १४	१४ ३६	१६ ०९	१८ ०३	२० १७	२२ ४१	१ ०१	३ १९	५ ४०
6	२१	८ ००	१० ०४	११ ४५	१३ १०	१४ ३२	१६ ०५	१७ ५९	२० १३	२२ ३७	०० ५७	३ १५	५ ३६
7	२२	७ ५६	१० ००	११ ४१	१३ ०६	१४ २८	१६ ०१	१७ ५५	२० ०९	२२ ३३	०० ५३	३ ११	५ ३२
8	२३	७ ५२	९ ५६	११ ३७	१३ ०२	१४ २४	१५ ५७	१७ ५१	२० ०५	२२ २९	०० ४९	३ ७	५ २८
9	२४	७ ४८	९ ५२	११ ३३	१२ ५८	१४ २०	१५ ५३	१७ ४७	२० ०१	२२ २५	०० ४५	३ ०३	५ २४
10	२५	७ ४५	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १७	१५ ५०	१७ ४४	१९ ५८	२२ २२	०० ४२	३ ००	५ २१
11	२६	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १३	१५ ४६	१७ ४०	१९ ५४	२२ १८	०० ३८	२ ५६	५ १७
12	२७	७ ३७	९ ४१	११ २२	१२ ४७	१४ ०९	१५ ४२	१७ ३६	१९ ५०	२२ १४	०० ३४	२ ५२	५ १३
13	२८	७ ३३	९ ३७	११ १८	१२ ४३	१४ ०५	१५ ३८	१७ ३२	१९ ४६	२२ १०	०० ३०	२ ४८	५ ९
14	२९	७ २९	९ ३३	११ १४	१२ ३९	१४ ०१	१५ ३४	१७ २८	१९ ४२	२२ ०६	०० २६	२ ४४	५ ०५
15	३०	७ २५	९ २९	११ १०	१२ ३५	१३ ५७	१५ ३०	१७ २४	१९ ३८	२२ ०२	०० २२	२ ४०	५ ०१
16	पौ.	७ २१	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी दिसं.-जन. (पौष मास) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

दिसम्बर	पौष	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ २५	११ ०६	१२ ३१	१३ ५३	१५ २६	१७ २०	१९ ३४	२१ ५८	०० १८	२ ३६	४ ५७	७ १७
17	२	९ २१	११ २	१२ २८	१३ ४९	१५ २२	१७ १६	१९ ३०	२१ ५४	०० १४	२ ३२	४ ५३	७ १३
18	३	९ १७	१० ५९	१२ २४	१३ ४५	१५ १८	१७ १२	१९ २६	२१ ५०	०० १०	२ २८	४ ४९	७ ९
19	४	९ १३	१० ५५	१२ २०	१३ ४१	१५ १४	१७ ८	१९ २२	२१ ४६	०० ०६	२ २४	४ ४५	७ ५
20	५	९ ९	१० ५१	१२ १६	१३ ३७	१५ १०	१७ ४	१९ १८	२१ ४२	०० ०२	२ २०	४ ४१	७ १
21	६	९ ५	१० ४७	१२ १२	१३ ३३	१५ ६	१७ ००	१९ १४	२१ ३८	२३ ५८	२ १७	४ ३७	६ ५७
22	७	९ ०१	१० ४३	१२ ८	१३ २९	१५ २	१६ ५६	१९ ११	२१ ३४	२३ ५४	२ १३	४ ३३	६ ५३
23	८	८ ५७	१० ३९	१२ ४	१३ २५	१४ ५८	१६ ५२	१९ ०७	२१ ३०	२३ ५०	२ ९	४ २९	६ ४९
24	९	८ ५४	१० ३५	१२ ००	१३ २१	१४ ५४	१६ ४९	१९ ३	२१ २६	२३ ४६	२ ५	४ २५	६ ४५
25	१०	८ ५०	१० ३१	११ ५६	१३ १७	१४ ५०	१६ ४५	१८ ५९	२१ २२	२३ ४२	२ १	४ २१	६ ४२
26	११	८ ४६	१० २७	११ ५२	१३ १४	१४ ४६	१६ ४१	१८ ५५	२१ १८	२३ ३८	१ ५७	४ १७	६ ३८
27	१२	८ ४२	१० २३	११ ४८	१३ १०	१४ ४३	१६ ३७	१८ ५१	२१ १४	२३ ३४	१ ५३	४ १४	६ ३४
28	१३	८ ३८	१० १९	११ ४४	१३ ६	१४ ३९	१६ ३३	१८ ४७	२१ १०	२३ ३०	१ ४९	४ १०	६ ३०
29	१४	८ ३४	१० १५	११ ४०	१३ २	१४ ३५	१६ २९	१८ ४३	२१ ०६	२३ २६	१ ४५	४ ६	६ २६
30	१५	८ ३०	१० ११	११ ३६	१२ ५८	१४ ३१	१६ २५	१८ ३९	२१ ०२	२३ २२	१ ४१	४ २	६ २२
31	१६	८ २६	१० ०७	११ ३२	१२ ५४	१४ २७	१६ २१	१८ ३५	२० ५८	२३ १८	१ ३७	३ ५८	६ १८
जन.	१७	८ २२	१० ०३	११ २८	१२ ५०	१४ २३	१६ १७	१८ ३१	२० ५४	२३ १४	१ ३३	३ ५४	६ १४
2	१८	८ १८	९ ५९	११ २४	१२ ४६	१४ १९	१६ १३	१८ २७	२० ५०	२३ १०	१ २९	३ ५०	६ १०
3	१९	८ १४	९ ५५	११ २०	१२ ४२	१४ १५	१६ ९	१८ २३	२० ४६	२३ ०६	१ २५	३ ४६	६ ६
4	२०	८ १०	९ ५१	११ १६	१२ ३८	१४ ११	१६ ५	१८ १९	२० ४२	२३ ०२	१ २१	३ ४२	६ २
5	२१	८ ६	९ ४७	११ १२	१२ ३४	१४ ०७	१६ १	१८ १५	२० ३८	२२ ५८	१ १७	३ ३८	५ ५८
6	२२	८ ०२	९ ४३	११ ८	१२ ३०	१४ ०३	१५ ५७	१८ ११	२० ३४	२२ ५४	१ १३	३ ३४	५ ५४
7	२३	७ ५८	९ ३९	११ ४	१२ २६	१३ ५९	१५ ५३	१८ ७	२० ३०	२२ ५०	१ ९	३ ३०	५ ५०
8	२४	७ ५४	९ ३५	११ ००	१२ २२	१३ ५५	१५ ४९	१८ ३	२० २६	२२ ४६	१ ५	३ २६	५ ४६
9	२५	७ ५०	९ ३१	१० ५६	१२ १८	१३ ५१	१५ ४५	१७ ५९	२० २२	२२ ४२	१ ०१	३ २२	५ ४२
10	२६	७ ४६	९ २७	१० ५२	१२ १४	१३ ४७	१५ ४१	१७ ५५	२० १८	२२ ३८	०० ५७	३ १८	५ ३८
11	२७	७ ४२	९ २३	१० ४८	१२ १०	१३ ४३	१५ ३७	१७ ५१	२० १४	२२ ३४	०० ५३	३ १४	५ ३४
12	२८	७ ३८	९ १९	१० ४४	१२ ०६	१३ ३९	१५ ३३	१७ ४७	२० १०	२२ ३०	०० ४९	३ १०	५ ३०
13	२९	७ ३४	९ १५	१० ४०	१२ ०२	१३ ३५	१५ २९	१७ ४३	२० ०६	२२ २६	०० ४५	३ ०६	५ २६
14	मा.	७ ३०	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी जन.-फर. (माघ) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

जनवरी	माघ	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	९ ११	१० ३६	११ ५८	१३ ३१	१५ २५	१७ ३९	२० ०२	२२ २२	०० ४१	३ ०२	५ २२	७ २६
15	२	९ ०७	१० ३२	११ ५४	१३ २७	१५ २१	१७ ३५	१९ ५८	२२ १८	०० ३७	२ ५८	५ १८	७ २२
16	३	९ ०४	१० २९	११ ५१	१३ २४	१५ १८	१७ ३२	१९ ५५	२२ १५	०० ३४	२ ५४	५ १४	७ १८
17	४	९ ००	१० २५	११ ४७	१३ २०	१५ १४	१७ २८	१९ ५१	२२ ११	०० ३०	२ ५०	५ १०	७ १४
18	५	८ ५६	१० २१	११ ४३	१३ १६	१५ १०	१७ २४	१९ ४७	२२ ०७	०० २६	२ ४६	५ ०६	७ १०
19	६	८ ५२	१० १७	११ ३९	१३ १२	१५ ६	१७ २०	१९ ४३	२२ ०३	०० २२	२ ४२	५ ०३	७ ०६
20	७	८ ४८	१० १३	११ ३५	१३ ८	१५ २	१७ १६	१९ ३९	२१ ५९	०० १८	२ ३८	४ ५९	७ ०२
21	८	८ ४४	१० ९	११ ३१	१३ ४	१४ ५८	१७ १२	१९ ३५	२१ ५५	०० १४	२ ३४	४ ५५	६ ५९
22	९	८ ४०	१० ०५	११ २७	१३ ००	१४ ५४	१७ ०८	१९ ३१	२१ ५१	०० १०	२ ३०	४ ५१	६ ५५
23	१०	८ ३६	१० ०१	११ २३	१२ ५६	१४ ५०	१७ ४	१९ २७	२१ ४७	०० ०६	२ २६	४ ४७	६ ५१
24	११	८ ३२	९ ५७	११ १९	१२ ५२	१४ ४६	१७ ००	१९ २४	२१ ४३	०० ०२	२ २३	४ ४३	६ ४७
25	१२	८ २८	९ ५३	११ १५	१२ ४८	१४ ४२	१६ ५६	१९ २०	२१ ३९	२३ ५८	२ १९	४ ३९	६ ४३
26	१३	८ २५	९ ५०	११ १२	१२ ४५	१४ ३९	१६ ५३	१९ १६	२१ ३६	२३ ५५	२ १५	४ ३५	६ ३९
27	१४	८ २१	९ ४६	११ ०८	१२ ४१	१४ ३५	१६ ४९	१९ १२	२१ ३२	२३ ५१	२ ११	४ ३१	६ ३५
28	१५	८ १७	९ ४२	११ ०४	१२ ३७	१४ ३१	१६ ४५	१९ ०८	२१ २८	२३ ४७	२ ०७	४ २७	६ ३१
29	१६	८ १३	९ ३८	११ ००	१२ ३३	१४ २७	१६ ४१	१९ ०४	२१ २४	२३ ४३	२ ०३	४ २३	६ २७
30	१७	८ ०९	९ ३४	१० ५६	१२ २९	१४ २३	१६ ३७	१९ ००	२१ २०	२३ ३९	१ ५९	४ २०	६ २४
31	१८	८ ५	९ ३०	१० ५२	१२ २५	१४ १९	१६ ३३	१८ ५६	२१ १६	२३ ३५	१ ५५	४ १६	६ २०
फर.	१९	८ १	९ २६	१० ४८	१२ २१	१४ १५	१६ २९	१८ ५२	२१ १२	२३ ३१	१ ५१	४ १२	६ १६
2	२०	७ ५७	९ २२	१० ४४	१२ १७	१४ ११	१६ २५	१८ ४८	२१ ०८	२३ २७	१ ४७	४ ०८	६ १२
3	२१	७ ५३	९ १८	१० ४०	१२ १३	१४ ०७	१६ २१	१८ ४४	२१ ०४	२३ २३	१ ४३	४ ०४	६ ८
4	२२	७ ४९	९ १४	१० ३६	१२ ०९	१४ ०३	१६ १७	१८ ४०	२१ ००	२३ १९	१ ३९	४ ००	६ ०४
5	२३	७ ४५	९ १०	१० ३२	१२ ०५	१३ ५९	१६ १३	१८ ३६	२० ५७	२३ १५	१ ३५	३ ५६	६ ००
6	२४	७ ४१	९ ०६	१० २८	१२ ०१	१३ ५५	१६ ०९	१८ ३२	२० ५३	२३ ११	१ ३२	३ ५२	५ ५६
7	२५	७ ३७	९ ०२	१० २४	११ ५७	१३ ५१	१६ ०५	१८ २८	२० ४९	२३ ७	१ २८	३ ४८	५ ५२
8	२६	७ ३३	८ ५८	१० २०	११ ५३	१३ ४७	१६ ०१	१८ २४	२० ४५	२३ ०३	१ २४	३ ४४	५ ४८
9	२७	७ २९	८ ५४	१० १६	११ ४९	१३ ४३	१५ ५७	१८ २१	२० ४१	२२ ५९	१ २०	३ ४०	५ ४४
10	२८	७ २५	८ ५०	१० १२	११ ४५	१३ ३९	१५ ५३	१८ १७	२० ३७	२२ ५५	१ १६	३ ३६	५ ४०
11	२९	७ २१	८ ४६	१० ०८	११ ४१	१३ ३५	१५ ४९	१८ १३	२० ३३	२२ ५१	१ १२	३ ३२	५ ३६
12	३०	७ १७	८ ४२	१० ०४	११ ३७	१३ ३१	१५ ४५	१८ ०९	२० २९	२२ ४७	१ ०८	३ २८	५ ३२
13	फा.	७ १४	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

सूर्य संक्रान्तियों में प्रतिवर्ष परिवर्तन के कारण देशी प्रविष्टे एवं अंग्रेज़ी तारीखों में कई बार परस्पर एक दिन का अन्तर पड़ जाता है। सूक्ष्मता के लिए सारिणी का प्रयोग अंग्रेज़ी तारीखानुसार करें।

दैनिक लग्न सारणी **फर.-मार्च (फाल्गुन)** भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

फरवरी	फाल्गुन	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
13	१	८ ३८	१० ००	११ ३३	१३ २७	१५ ४१	१८ ०५	२० २५	२२ ४३	१ ०४	३ २४	५ २८	७ १०
14	२	८ ३४	९ ५६	११ २९	१३ २३	१५ ३७	१८ ०१	२० २१	२२ ३९	१ ००	३ २०	५ २४	७ ०६
15	३	८ ३०	९ ५२	११ २५	१३ १९	१५ ३३	१७ ५७	२० १७	२२ ३५	० ५६	३ १६	५ २०	७ ०२
16	४	८ २६	९ ४८	११ २१	१३ १५	१५ २९	१७ ५३	२० १३	२२ ३१	० ५२	३ १२	५ १६	६ ५८
17	५	८ २२	९ ४४	११ १७	१३ ११	१५ २५	१७ ४९	२० ०९	२२ २७	० ४८	३ ०८	५ १३	६ ५४
18	६	८ १८	९ ४०	११ १३	१३ ०७	१५ २१	१७ ४५	२० ०५	२२ २३	० ४४	३ ०४	५ ०९	६ ५०
19	७	८ १४	९ ३६	११ ०९	१३ ०३	१५ १७	१७ ४१	२० ०१	२२ १९	० ४०	३ ००	५ ०५	६ ४६
20	८	८ ११	९ ३३	११ ०६	१२ ५९	१५ १४	१७ ३७	१९ ५७	२२ १५	० ३६	२ ५६	५ ०१	६ ४२
21	९	८ ०७	९ २९	११ ०२	१२ ५६	१५ १०	१७ ३३	१९ ५३	२२ ११	० ३२	२ ५३	४ ५७	६ ३८
22	१०	८ ०३	९ २५	१० ५८	१२ ५२	१५ ०६	१७ २९	१९ ४९	२२ ०७	० २८	२ ४९	४ ५३	६ ३४
23	११	७ ५९	९ २१	१० ५४	१२ ४८	१५ ०२	१७ २५	१९ ४५	२२ ०३	० २५	२ ४५	४ ४९	६ ३०
24	१२	७ ५६	९ १८	१० ५१	१२ ४५	१४ ५९	१७ २२	१९ ४२	२२ ००	० २२	२ ४२	४ ४६	६ २७
25	१३	७ ५३	९ १५	१० ४८	१२ ४२	१४ ५६	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
26	१४	७ ५०	९ १२	१० ४५	१२ ३९	१४ ५३	१७ १६	१९ ३६	२१ ५४	० १६	२ ३६	४ ४०	६ २१
27	१५	७ ४७	९ ०९	१० ४२	१२ ३६	१४ ५०	१७ १३	१९ ३३	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ३६	६ १८
28	१६	७ ४३	९ ०५	१० ३८	१३ ३२	१४ ४६	१७ ०९	१९ २९	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ३२	६ १४
29	१७	७ ३९	९ ०१	१० ३४	१२ २८	१४ ४२	१७ ०५	१९ २५	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ २८	६ ११
मार्च	१८	७ ३५	८ ५७	१० ३०	१२ २४	१४ ३८	१७ ०१	१९ २१	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ २५	६ ०७
2	१९	७ ३१	८ ५३	१० २६	१२ २०	१४ ३४	१६ ५७	१९ १७	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ २१	६ ०३
3	२०	७ २८	८ ५०	१० २३	१२ १७	१४ ३१	१६ ५३	१९ १३	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ १७	५ ५९
4	२१	७ २४	८ ४६	१० १९	१२ १३	१४ २७	१६ ४९	१९ ०९	२१ २७	२३ ४९	२ ०९	४ १३	५ ५५
5	२२	७ २०	८ ४२	१० १५	१२ ०९	१४ २३	१६ ४५	१९ ०५	२१ २३	२३ ४६	२ ०५	४ १०	५ ५१
6	२३	७ १६	८ ३८	१० ११	१२ ०५	१४ १९	१६ ४१	१९ ०१	२१ १९	२३ ४२	२ ०१	४ ६	५ ४७
7	२४	७ १२	८ ३४	१० ०७	१२ ०१	१४ १५	१६ ३७	१८ ५७	२१ १६	२३ ३८	१ ५७	४ ०२	५ ४३
8	२५	७ ०८	८ ३०	१० ०३	११ ५७	१४ ११	१६ ३३	१८ ५३	२१ १२	२३ ३४	१ ५३	३ ५८	५ ३९
9	२६	७ ०४	८ २६	९ ५९	११ ५३	१४ ०७	१६ ३०	१८ ५०	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	३ ५४	५ ३५
10	२७	७ ००	८ २२	९ ५५	११ ४९	१४ ०३	१६ २६	१८ ४६	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	३ ५०	५ ३१
11	२८	६ ५६	८ १८	९ ५१	११ ४५	१३ ५९	१६ २३	१८ ४२	२१ ००	२३ २२	१ ४२	३ ४६	५ २७
12	२९	६ ५२	८ १४	९ ४७	११ ४१	१३ ५५	१६ १९	१८ ३९	२० ५६	२३ १९	१ ३८	३ ४२	५ २४
13	३०	६ ४८	८ १०	९ ४३	११ ३७	१३ ५१	१६ १५	१८ ३५	२० ५२	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
14	चैत्र	६ ४४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी **मार्च-अप्रैल (चैत्र)** भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

मार्च	चैत्र	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	८ ०६	९ ३९	११ ३३	१३ ४७	१६ ११	१८ ३१	२० ४८	२३ ११	१ ३१	३ ३५	५ १६	६ ४०
15	२	८ ०२	९ ३५	११ २९	१३ ४३	१६ ०७	१८ २७	२० ४४	२३ ०७	१ २७	३ ३१	५ १२	६ ३६
16	३	७ ५८	९ ३१	११ २५	१३ ३९	१६ ०३	१८ २३	२० ४०	२३ ०३	१ २३	३ २७	५ ०८	६ ३२
17	४	७ ५४	९ २७	११ २१	१३ ३५	१५ ५९	१८ १९	२० ३६	२२ ५९	१ १९	३ २३	५ ०४	६ २८
18	५	७ ५०	९ २३	११ १७	१३ ३१	१५ ५५	१८ १५	२० ३२	२२ ५५	१ १५	३ १९	५ ००	६ २४
19	६	७ ४६	९ १९	११ १३	१३ २७	१५ ५१	१८ ११	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ १५	४ ५६	६ २०
20	७	७ ४२	९ १५	११ ०९	१३ २४	१५ ४७	१८ ०७	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ ११	४ ५२	६ १६
21	८	७ ३८	९ ११	११ ०५	१३ २०	१५ ४३	१८ ०३	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ ०७	४ ४८	६ १२
22	९	७ ३४	९ ०७	११ ०१	१३ १६	१५ ३९	१७ ५९	२० १६	२२ ३९	०० ५९	३ ०३	४ ४४	६ ०८
23	१०	७ ३१	९ ०३	१० ५८	१३ १२	१५ ३५	१७ ५५	२० १२	२२ ३५	०० ५५	२ ५९	४ ४०	६ ४
24	११	७ २७	८ ५९	१० ५४	१३ ८	१५ ३१	१७ ५१	२० ०८	२२ ३१	०० ५१	२ ५५	४ ३७	६ ००
25	१२	७ २३	८ ५५	१० ५०	१३ ४	१५ २७	१७ ४७	२० ०४	२२ २७	०० ४७	२ ५१	४ ३३	५ ५६
26	१३	७ १९	८ ५१	१० ४६	१३ ०	१५ २३	१७ ४३	२० ०१	२२ २३	०० ४३	२ ४७	४ २९	५ ५२
27	१४	७ १५	८ ४८	१० ४२	१२ ५६	१५ १९	१७ ३९	१९ ५७	२२ १९	०० ३९	२ ४३	४ २५	५ ४८
28	१५	७ ११	८ ४४	१० ३८	१२ ५२	१५ १५	१७ ३५	१९ ५३	२२ १५	०० ३५	२ ४०	४ २१	५ ४४
29	१६	७ ०७	८ ४०	१० ३४	१२ ४८	१५ ११	१७ ३१	१९ ४९	२२ ११	०० ३१	२ ३६	४ १७	५ ४१
30	१७	७ ०३	८ ३६	१० ३०	१२ ४५	१५ ०७	१७ २७	१९ ४५	२२ ७	०० २७	२ ३२	४ १३	५ ३७
31	१८	६ ५९	८ ३२	१० २६	१२ ४१	१५ ०३	१७ २३	१९ ४१	२२ ०३	०० २३	२ २८	४ ०९	५ ३३
अप्रै.	१९	६ ५५	८ २८	१० २२	१२ ३७	१४ ५९	१७ १९	१९ ३७	२१ ५९	०० १९	२ २४	४ ०५	५ २९
2	२०	६ ५१	८ २४	१० १८	१२ ३३	१४ ५५	१७ १५	१९ ३३	२१ ५५	०० १५	२ २०	४ ०१	५ २५
3	२१	६ ४७	८ २०	१० १४	१२ २९	१४ ५१	१७ ११	१९ २९	२१ ५१	०० ११	२ १६	३ ५७	५ २१
4	२२	६ ४३	८ १६	१० १०	१२ २५	१४ ४७	१७ ०७	१९ २६	२१ ४७	०० ०७	२ १२	३ ५३	५ १७
5	२३	६ ३९	८ १२	१० ०६	१२ २१	१४ ४३	१७ ०३	१९ २२	२१ ४४	०० ०४	२ ०८	३ ४९	५ १३
6	२४	६ ३६	८ ०९	१० ०२	१२ १७	१४ ३९	१६ ५९	१९ १८	२१ ४०	२४ ००	२ ०४	३ ४५	५ ०९
7	२५	६ ३२	८ ०५	९ ५९	१२ १३	१४ ३५	१६ ५६	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ ००	३ ४१	५ ०५
8	२६	६ २८	८ ०१	९ ५५	१२ ०९	१४ ३१	१६ ५२	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	१ ५६	३ ३७	५ ०१
9	२७	६ २४	७ ५७	९ ५१	१२ ०५	१४ २७	१६ ४८	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	१ ५२	३ ३३	४ ५८
10	२८	६ २०	७ ५३	९ ४७	१२ ०१	१४ २४	१६ ४४	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	१ ४८	३ २९	४ ५४
11	२९	६ १६	७ ४९	९ ४३	११ ५७	१४ २०	१६ ४०	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ४४	३ २५	४ ५०
12	३०	६ १२	७ ४५	९ ३९	११ ५३	१४ १६	१६ ३६	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ४१	३ २१	४ ४६
13	३१	६ ०८	७ ४१	९ ३५	११ ४९	१४ १२	१६ ३२	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ३७	३ १८	४ ४३
14	वै.	६ ०४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

भारत के प्रमुख नगरों में लग्नों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल जानना

इस पंचांग के गत पृष्ठों में जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह जालन्धर के अक्षांश ३१।१९ पर आधारित है। भारत के किसी अन्य नगर में लग्नारम्भ अथवा समाप्तिकाल जानने के लिए नीचे दी गई तालिका में मेष, वृषादि राशियों के नीचे लिखे संस्कार अनुसार जालन्धर सारणी में जमा (+) करने अथवा (—) देने से आपको अभीष्ट तारीख एवं नगर में लग्नों का समाप्तिकाल भा. स्टै. टाईम में ज्ञात हो जाएगा। **उदाहरण स्वरूप**—मान लो आपने १६ जुलाई, २००३ को दिल्ली में कन्या लग्न का समाप्तिकाल जानना है, तो सर्व प्रथम जालन्धर की दैनिक लग्न सारणी में देखने पर हमें १६ जुलाई को कन्या लग्न १२।४१ पर समाप्ति काल लिखा मिला है। तदनन्तर आगे सारणी में **दिल्ली** के आगे कन्या लग्न के नीचे देखने पर हमें —८ मिनट मिले। इन्हें जालन्धर में कन्या ल. समा., १२।४१ (घं. मिं.) में से और घटाने पर हमें **१२।३३ (घं. मिं.)** पर **कन्या लग्न** समाप्ति काल प्राप्त हुआ। **कन्या लग्न** का समाप्ति काल ही **तुला लग्न** का **प्रारम्भकाल** होगा। **नोट**—नीचे **लग्न संस्कार तालिका** में यदि किसी अभीष्ट नगर का नाम न मिले, तो आप अपने निकटस्थ नगर का संस्कार ग्रहण कर सकते हैं। —**पं. पन्ना लाल ज्योतिषी।**

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
अमृतसर	+२	+२	+२	+३	+२	+२	+३	+३	+३	+३	+२	+२
अम्बाला	−५	−५	−५	−३	−३	−६	−५	−५	−४	−५	−५	−५
अजमेर	+९	+१२	+१४	+१२	+८	+४	−१	−३	−४	−१	+६	+१०
अबोहर	+५	+५	+५	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
अहमदाबाद	+२६	+३०	+३०	+२५	+१७	+७	−१	−५	−४	+२	+११	+१८
अलाहाबाद	−१५	−१२	−१३	−१५	−२१	−२९	−३४	−३७	−३६	−३२	−२६	−२०
अलीगढ़	−४	−३	−३	−५	−७	−१३	−१६	−१७	−१७	−१३	−११	−७
अयोध्या	−१८	−१८	−१५	−१९	−२१	−२५	−२८	−३०	−२८	−२७	−२४	−१६
अलवर	+३	+४	+४	+२	+१	−४	−६	−७	−७	−४	+१	+४
आगरा	−४	−२	−२	−४	−७	−१२	−१५	−१६	−१६	−१३	−१०	−६
इन्दौर	+१३	+१७	+१५	+१०	+३	−८	−१४	−१९	−१७	−१०	−१	+७
ऊना (हि. प्र.)	−३	−३	−३	−३	−२	−२	−२	−२	−२	−२	−२	−३
उधमपुर	−२	−२	−२	+११	+३	+४	+७	+७	+७	+६	+५	+२
उज्जैन	+१३	+१६	+१४	+६	+०	−७	−१४	−१९	−१७	−१०	−२	+६
उदयपुर	+१९	+२१	+२०	+१३	+७	+२	−४	−८	−६	−१	+६	+१३
करनाल	−५	−६	−६	−५	−५	−६	−६	−७	−७	−५	−४	−३
कालका	−५	−५	−५	−४	−४	−५	−६	−६	−७	−७	−४	−३
कुरुक्षेत्र	−५	−५	−५	−५	−५	−६	−६	−७	−७	−५	−३	−३
करतारपुर	+१	+१	+०	+०	−१	−१	+१	−०	−०	−०	−०	−१
कोटखाई	−७	−७	−७	−७	−७	−८	−७	−७	−७	−६	−६	−७
कोटा	+९	+११	+१०	+५	−१	−६	−११	−१४	−१३	−८	−२	+४
कपूरथला	+१	+१	+०	−०	−०	−१	+०	−०	−०	−०	−०	−१
काठमण्डू	−३२	−३१	−३१	−३०	−३३	−३८	−४०	−४२	−४२	−४०	−३६	−३३
कलकत्ता	−३७	−३२	−३५	−४०	−४९	−५८	−६४	−६९	−६८	−६१	−५३	−४४
कानपुर	−१०	−८	−९	−११	−१५	−२१	−२५	−२७	−२६	−२१	−१७	−१३
कांगड़ा	−५	−५	−६	−५	−५	−५	−५	−५	−४	−४	−४	−४
कुल्लू	−७	−७	−७	−६	−६	−६	−५	−४	−४	−४	−५	−५

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
कठुआ	−२	−२	−२	−१	−०	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+१
कटड़ा	+३	+३	+२	+४	+६	+७	+७	+७	+७	+६	+६	+३
किश्तवाड़	−१	−१	−१	−०	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+१	+१
खन्ना (पंजा.)	−२	−३	−३	−२	−२	−३	−३	−३	−३	−२	−२	−३
ग्वालियर	−३	−१	−१	−२	−९	−१२	−१६	−१८	−१७	−१३	−८	−५
गुरदासपुर	+१	+१	+१	+१	+१	+०	+१	+१	+१	+१	+१	+०
गोरखपुर	−२३	−२१	−२२	−२४	−२७	−३२	−३५	−३७	−३६	−३२	−२७	−२४
गुड़गांव	−१	−१	−१	−१	−३	−७	−१०	−११	−११	−९	−६	−४
गोहाटी	−५५	−४८	−५३	−५५	−६१	−६८	−७२	−७५	−७३	−६९	−६४	−६०
गाज़ियाबाद	−२	−१	−१	−२	−२	−७	−९	−११	−११	−९	−६	−३
गंगानगर	+६	+६	+६	+७	+७	+६	+६	+६	+६	+७	+७	+६
गया (बिहार)	−२६	−१८	−२३	−२७	−३३	−४२	−४७	−५१	−४१	−४४	−३७	−३२
चण्डीगढ़	−५	−५	−५	−५	−५	−६	−६	−६	−५	−५	−५	−५
चिन्तपूर्णी	−२	−२	−२	−२	−३	−३	−३	−२	−२	−२	−२	−१
चम्बा	−३	−३	−३	−३	−४	−४	−४	−४	−३	−३	−३	−३
जयपुर	+७	+१०	+१३	+६	+२	−३	−७	−९	−९	−७	−२	+३
ज्वालामुखी	−५	−५	−६	−५	−५	−५	−५	−५	−४	−४	−४	−४
जम्मू	−१	−२	−१	−१	+२	+४	+६	+७	+६	+५	+३	+१
जोधपुर	+१९	+२१	+१९	+१४	+१०	+५	+१	−२	−१	+४	+९	+१३
जीन्द	+०	+१	+०	−१	−३	−५	−६	−७	−७	−५	−४	−१
जैसलमेर	+२६	+२७	+२६	+२२	+१८	+१४	+१०	+९	+१०	+१३	+१७	+२२
झाँसी	−२	+०	−१	−६	−११	−१७	−२२	−२५	−२३	−१८	−१३	−७
जगन्नाथपुरी	−२२	−१६	−१३	−२६	−३७	−४९	−५९	−६४	−६३	−५५	−४४	−३२
दिल्ली	−२	−१	−१	−२	−४	−८	−११	−१२	−१२	−१०	−७	−५
देहरादून	−९	−८	−८	−९	−९	−११	−१२	−१२	−१३	−११	−९	−९
धर्मशाला	−५	−५	−६	−५	−५	−५	−५	−५	−४	−४	−४	−४
नाहन (हि.प्र.)	−६	−६	−६	−५	−५	−६	−६	−७	−७	−५	−५	−६

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
…ंगल (पंजा.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
…नैनीताल	-१२	-११	-११	-१२	-१३	-१७	-१८	-२०	-१९	-१७	-१४	-११
नवलगढ़	+७	+९	+९	+८	+६	+३	+१	+२	-२	-१	+४	+४
नवांशहर	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-३	-३	-२	-२
नागपुर	+३	+९	+११	+०	-१०	-२१	-३०	-३४	-३३	-२७	-७	-६
नदौन (हि.प्र.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३	-३
नाभा (पंजा.)	-२	-३	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-२	-२
पटियाला	-३	-३	-३	-३	-३	-३	-५	-५	-४	-३	-३	-३
पानीपत	-६	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-६	-५
पठानकोट	-२	-२	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१
पुंछ	-१	-२	-१	+०	+४	+८	+१२	+१४	+१२	+९	+६	+३
प्रयाग	-१६	-१४	-१५	-१८	-२४	-३०	-३५	-३७	-३७	-३१	-२७	-२१
पूना (महा.)	+२८	+३५	+३७	+२४	+११	-२	-१३	-१९	-१७	-९	+३	+१७
पंचकूला	-५	-५	-५	-४	-४	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-५
पटना	-२९	-२५	-२१	-२९	-३५	-४२	-४७	-४९	-४९	-४६	-४०	-३३
पालमपुर	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-६	-६	-५	-५	-५	-५
फरीदकोट	+३	+३	+२	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
फगवाड़ा	-१	-१	-१	-१	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१
फाजिल्का	+५	+५	+५	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
फिरोज़पुर	+३	+३	+३	+४	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+३	+३
फरीदाबाद	-३	-२	-२	-३	-५	-९	-१२	-१३	-१३	-११	-८	-६
बटाला	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
वाराणसी	-२०	-१६	-१२	-२१	-२६	-३३	-३८	-४१	-४१	-३७	-३२	-२५
बिलासपुर	-५	-५	-५	-४	-४	-५	-४	-४	-४	-३	-३	-४
बंगलौर	+२१	+२९	+२७	+१६	-१	-२१	-३६	-४४	-४१	-२८	-११	+६
बरेली	-११	-९	-९	-१०	-१२	-१५	-१७	-१९	-१९	-१७	-१३	-११
बीकानेर	+१३	+१५	+१५	+१४	+१३	+९	+८	+६	+६	+८	+११	+१४
बड़ौदा	+२६	+३०	+२९	+२३	+१६	+७	+२	-५	-५	+१	+११	+११
बुलन्दशहर	-५	-५	-५	-६	-८	-१२	-१४	-१५	-१५	-१४	-११	-८
बरनाला	-१	-१	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-०	-०	-०	-०
विशाखापटनम	-९	-१	+१	-१३	-२६	-४०	-५२	-५८	-५६	-४७	-३४	-२०
भटिण्डा	+३	+३	+२	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
भुवनेश्वर	-२३	-१७	-१९	-२५	-३६	-४९	-५८	-६३	-६२	-५४	-४३	-३२
भरतपुर	-२	+०	-१	-२	-६	-१२	-१५	-१७	-१७	-१२	-१०	-५
भोपाल	+६	+१०	+९	+५	-३	-१३	-२०	-२३	-२२	-१७	-९	-१
मेरठ (उ. प्र.)	-४	-३	-३	-३	-४	-७	-१०	-११	-११	-१०	-७	-५
मुरादाबाद	-८	-७	-७	-८	-१०	-१४	-१६	-१८	-१७	-१४	-११	-८

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
मण्डी (हि. प्र.)	-५	-४	+०	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-६	-६	-५
मोगा	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
मथुरा	+४	-३	-३	-४	-६	-१०	-१२	-१३	-१३	-११	-८	-६
मद्रास	+१०	+२०	+२१	+४	-१३	-३१	-४६	-५५	-५२	-४०	-२३	-०५
मैसूर	+२६	+३६	+३७	+१९	+२	-१७	-३३	-४१	-३९	-२६	-९	+१०
मुक्तसर	+४	+४	+३	+४	+४	+३	+५	+४	+४	+४	+३	+३
मलेरकोटला	-१	-१	-२	-१	-१	-२	+०	-१	-१	-१	-२	-२
मुम्बई	+३१	+३७	+३५	+२८	+१७	+३	-८	-१४	-१२	-३	+९	+२१
रोपड़	-४	-४	-४	-३	-३	-५	-५	-५	-३	-४	-४	-४
राँची	-२५	-२१	-२३	-२८	-३६	-४५	-५१	-५७	-५५	-४८	-३९	-३१
रोहतक	+०	+१	+१	-०	-२	-६	-९	-१०	-१०	-८	-५	-३
लुधियाना	-२	-२	-२	-१	-१	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-२
लखनऊ	-१४	-७	-५	-१४	-१९	-२४	-२८	-३०	-३०	-२७	-२३	-१८
लाहौर	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३
शिलांग	-५५	-४९	-५२	-५५	-६१	-६९	-७४	-७६	-७५	-७१	-६५	-६१
श्रीनगर	-३	-३	+२	+१	+४	+८	+११	+१२	+११	+७	+४	+१
शिमला	-६	-५	-१	-४	-४	-५	-५	-५	-५	-७	-७	-६
सोलन	-६	-५	-३	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-६	-६
सोनीपत	-२	-२	-२	-२	-३	-७	-१०	-११	-११	-९	-७	-५
सहारनपुर	-६	-५	-५	-६	-६	-७	-८	-९	-९	-७	-५	-६
सुन्दरनगर	-६	-६	-६	-५	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-५
सूरत	+२८	+३३	+३१	+२४	+१५	+४	-४	-९	-८	+१	+१२	+२१
शाहपुर	-४	-४	-५	-५	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
हरिद्वार	-८	-७	-७	-७	-८	-१०	-११	-११	-१२	-११	-१०	-९
हैदराबाद	+११	+१९	+१७	+७	-७	-२१	-३३	-३९	-३७	-२८	-१५	-१
होशियारपुर	-३	-४	-४	-३	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-३	-३
हमीरपुर	-५	-५	-४	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-४
हाँसी	+२	+२	+३	+२	+०	-४	-५	-७	-५	-४	-१	+२
हिसार	+१	-१	-१	+०	+०	-१	-१	-२	-२	+०	+१	+२

पुस्तकों के महासागर में से मोती रूप पुस्तकें वी. पी. द्वारा मंगवाएँ

टैक्निकल पुस्तकें

ट्टे का कल्प वृक्ष (मंदा-तेजी)	81 रु.
मोटर मैकेनिक गाईड	40 रु.
मोटर वाईडिंग	40 रु.
पशु चिकित्सा	40 रु.
कुकरी बुक (बड़ी)	60 रु.
कुकरी बुक (छोटी)	25 रु.
विवाहित आनन्द	35 रु.
पत्नी पथ प्रदर्शक	35 रु.
लाटरी गाईड	40 रु.
स्वर लिपि संग्रह	50 रु.
व्यापार रत्न	250 रु.
टेलीविज़न वीडियो गाईड	30 रु.
Dictionary (Big)	180 रु.
Dictionary (Med.)	90 रु.
ताश के जादू	40 रु.
स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज़	30 रु.
स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज़ (बड़ी)	150 रु.
इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स	95 रु.
कम्पयूटर कोर्स (बड़ा)	150 रु.
रेडियो ट्रांजिस्टर गाईड	30 रु.
इलैक्ट्रिक गाईड	45 रु.
फोटोग्राफी व कलर प्रोसेसिंग	50 रु.
जूडो कराटे सीखें	30 रु.
हारमोनियम सीखिए	60 रु.
होम टेलरिंग कोर्स	50 रु.
सिलाई कटाई	30 रु.
101 मैजिक ट्रिक्स	40 रु.
मोटर ड्राइवरी शिक्षा	30 रु.
हिन्दी उर्दू टीचर	25 रु.
तेज़ी मन्दा सट्टा	30 रु.
मिलिंग मशीन	45 रु.
महिलाओं के उद्योग	120 रु.
पोल्ट्री फार्मिंग	50 रु.
किचन गार्डनिंग	30 रु.

घर में रखने योग्य पुस्तकें

बनाइये खाना वेजी.	75 रु.
खाना खजाना	160 रु.
कुकरी बुक (बड़ी)	100 रु.
आचार, चटनी व मुरब्बे	30 रु.
भारतीय व्यंजन	25 रु.
रोटी-पराठे व कचौरियां	36 रु.
151 पेय पदार्थ	36 रु.
फल सब्जी से चिकित्सा	40 रु.
101 वर्ष कैसे जिएं	35 रु.
चाइनिज़ कुकरी	35 रु.
शहनाज़ ब्यूटी बुक	125 रु.
भारतीय व्रत-त्यौहार	60 रु.
हिन्दुओं के व्रत और त्यौहार	35 रु.

चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकें

एलोपैथिक चिकि. (कोकचा)	200 रु.
वृहद् होम्योपैथिक चिकित्सा	180 रु.
अमृतसागर	150 रुपए
माधवनिदान	100 रुपए
हृदय रोग	40 रुपए
घर का वैद्य	40 रुपए
रसराज महोदधि	250 रुपए
सूर्य शक्ति से ईलाज	25 रुपए
आयुर्वेदिक गाईड	150 रुपए
अनुपम आयुर्वेदिक गाईड	35 रुपए
एलोपैथिक मैडी. गाईड	135 रुपए
न्यू एलोपैथिक मैडी. गाईड	40 रुपए
होम्योपैथी द्वारा ईलाज	50 रुपए
योगासन एवं साधना	35 रुपए
वृहद् बूटी प्रचार	35 रुपए
जड़ी-बूटियाँ	30 रुपए
आयुर्वेद सार संग्रह (बैद्यनाथ)	140 रु.
यूनानी चिकित्सा सार (बैद्यनाथ)	100 रु.
सचित्र योगासन	30 रुपए
वनौषधि शतक (बैद्यनाथ)	100 रु.
रस भस्मों का सेवन	25 रु.
भैषज्य भास्कर	50 रु.
ईलाजुलगुर्बा	85 रु.
शरीर रचना क्रिया वि.	50 रु.
भोजन द्वारा चिकित्सा	40 रु.
आयुर्वेद मंथन	30 रु.
सुगम परिवार चिकित्सा	40 रु.
रसेन्द्र सार संग्रह	245 रु.
गुणकारी जड़ी-बूटियां	60 रु.
आयुर्वेदिक पेटेण्ट चिकित्सा	45 रु.
आयुर्वेदिक पेटेण्ट चिकित्सा	35 रु.
होम्योपैथिक चिकित्सा	70 रुपए
भाव प्रकाश निघन्टु	70 रुपए
योग के अद्भुत चमत्कार	30 रुपए
योग द्वारा इलाज	30 रुपए
योगासन	30 रुपए
प्राकृतिक चिकित्सा	30 रुपए
घरेलू इलाज	30 रुपए
चरक संहिता (सम्पूर्ण)	125 रुपए
आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान	100 रुपए
84 योगासन व स्वास्थ्य	40 रुपए
प्राणायाम कुण्डलिनी हठयोग	30 रु.

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र

काली किताब	400 रुपए
काली किताब (छोटी)	150 रुपए
महाइन्द्रजाल	150 रुपए
असली प्राचीन इन्द्रजाल	100 रुपए
शाबर मंत्र विद्या	50 रुपए
यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र (बड़ी)	60 रुपए
यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र (छोटी)	35 रुपए
इस्लामी तंत्र शास्त्र	60 रुपए
हिन्दू तंत्र शास्त्र	60 रुपए
श्री दुर्गा साधना तंत्र	125 रुपए
भारतीय तंत्र विद्या	200 रुपए
अनुभूत यंत्र तंत्र ओर टोटके	120 रु.
बगुलामुखी रहस्यम्	40 रुपए
कालिका सिद्धि	150 रुपए
सिद्ध शाबर मन्त्र	50 रुपए
तांत्रिक सिद्धियां	60 रुपए
काली तंत्र शास्त्र	50 रुपए
तारा तंत्र शास्त्र	50 रुपए
तांत्रिक मुद्रा विज्ञान	60 रुपए
तंत्र विद्या के अद्भुत प्रयोग	30 रुपए
यंत्र-मंत्र-तंत्र टोटके	40 रुपए
छिन्नमस्तका तंत्र शास्त्र	50 रुपए
धनप्रदायक तांत्रिक क्रियाएं	50 रु.
तंत्र द्वारा यश धन प्राप्ति	30 रुपए
यंत्र-मंत्र द्वारा धन कमाएं	30 रुपए
मंत्र रहस्य	80 रुपए
यंत्र विधान	120 रुपए
यंत्र विद्या के 121 प्रयोग	75 रुपए
नवग्रह अनुकूलन तंत्र	50 रुपए
धन प्रदायक साधनाएं	50 रुपए
ग्रह नक्षत्र तंत्रम्	60 रुपए
श्री यन्त्रम् महिमा	60 रुपए
मनोकामना सिद्धि	30 रुपए
वशीकरण मन्त्र	30 रुपए
चीन बंगाल का जादू	30 रुपए
कामाक्षा मन्त्र	30 रुपए
सूर्य तन्त्रम्	40 रुपए
कामाख्या उपासना	40 रुपए
रुद्रायमल तंत्र (बड़ा)	125 रुपए
महाविद्या मंत्र तंत्र	30 रुपए
परमसिद्ध 121 चमत्कारी यन्त्र	80 रु.
श्री नवग्रह साधना रहस्य	50 रुपए

कर्मकाण्ड सम्बन्धी पुस्तकें

कर्मकाण्ड प्रदीपः	80 रु.
विवाह पद्धति	45 रु.
कर्मकाण्ड पद्धति	100 रु.
दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)	65 रु.
कार्तिक प्रसूता शान्ति	12 रु.
श्राद्ध पद्धति	25 रु.
कर्मकाण्ड भास्कर	100 रु.
कर्मकाण्ड भारती	70 रुपए
पूजा पद्धति	50 रुपए
पूजा भास्कर	40 रुपए
हवन रहस्यम्	50 रुपए
ग्रह नक्षत्र शान्ति रहस्यम्	50 रु.
नित्यकर्म व देवपूजा पद्धति	55 रु.
हनुमान कवच	15 रुपए
श्री दुर्गा पूजन विधान	15 रुपए
महालक्ष्मी पूजन विधान	25 रुपए
नवग्रह पूजन विधान	15 रुपए
गरुड़ पुराण (भाषा टीका)	60 रु.
गरुड़ पुराण (भाषा)	30 रुपए
सनातन संस्कार विधि	125 रुपए
संस्कार पद्धति	60 रुपए
श्राद्ध विवेक	150 रुपए
नित्यकर्म पद्धति	40 रुपए
पितृकर्म पद्धति	75 रुपए
सर्वदेव पूजा पद्धति	20 रुपए
सर्वदेव प्रतिष्ठा प्रकाश	160 रुपए
हवन पद्धति	25 रुपए
वशिष्ठी हवन पद्धति	25 रुपए
नित्यकर्म प्रयोग माला	40 रुपए
आदित्य हृदय स्तोत्र (भा.टी.)	25 रु.
सर्वदेव प्रतिष्ठा समुच्चय	50 रुपए
अन्त्येष्टि संस्कार पद्धति	15 रु.
सर्व व्रतोद्यापन प्रकाश	100 रु.
नित्यकर्म पूजा प्रकाश	30 रु.
दुर्गार्चन पद्धति	100 रुपए

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए उपयोगी रत्न (नग) एवं उपरत्न

लेखक—पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी (M.A., LLB.)

शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि और अनिष्ट ग्रहों के कुप्रभाव के निवारण हेतु उपयुक्त ग्रह रत्न (नग) धारण करना अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते हैं। अपनी जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों की स्थिति एवं अपनी राशि के अनुसार ही उपयुक्त रत्न (नग) का चयन करना चाहिए, **अन्यथा कई बार लाभ की अपेक्षा गलत नग धारण करने से हानि की सम्भावना हो जाती है।** उनका परिचय से पूर्व यदि सुयोग्य ज्योतिषी से परामर्श कर लिया जावे तो लाभप्रद होगा। धारण करने की विधि, उपयोगादि का **संक्षिप्त विवरण** लिख रहे हैं—

सूर्य रत्न माणक (RUBY)

संस्कृत में इसे माणिक्य, पद्मराग, हिन्दी में माणक, **मानिक, अंग्रेज़ी** में रूबी कहते हैं। सूर्य रत्न होने से इस ग्रह रत्न का अधिष्ठाता सूर्यदेव है।

पहचान विधि—असली माणिक्य लाल सुर्ख वर्ण का पारदर्शी, स्निग्ध-कान्तियुक्त और कुछ भारीपन वज़न लिए होते हैं। अर्थात् हथेली में रखने से हल्की ऊष्णता एवं सामान्य से कुछ अधिक वज़न का अनुभव होता है। (२) **कांच के पात्र में** रखने से इसकी हल्की लाल किरणें चारों ओर से निकलती दिखाई देंगी। (३) **गाय के दूध में** असली माणिक्य रखा जाये तो दूध का रंग गुलाबी दिखलाई देगा।

धारण विधि—माणिक्य रत्न रविवार को सूर्य की होरा में, कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों, **रविपुष्य योग में सोने अथवा ताँबे की अंगूठी में जड़वा कर तथा सूर्य के बीजमन्त्रों द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ३, ५ ७ अथवा ९ रत्ति के क्रम से होना चाहिए।**

सूर्य बीज मन्त्र—ॐ, ह्रां, ह्रीं, ह्रौं सः सूर्याय नमः

धारण करने के पश्चात् गायत्री मन्त्र की ३ माला का पाठ, हवन एवं सूर्य **भगवान** को विधिपूर्वक अर्घ्य प्रदान करना तथा ताम्र बर्तन, कनक, नारियल, मानक, गुड़, लाल वस्त्रादि सूर्य से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना चाहिए।

विधिपूर्वक माणिक्य धारण करने से राजकीय क्षेत्रों में प्रतिष्ठा, भाग्योन्नति, पुत्र संतान लाभ, तेजबल में वृद्धिकारक तथा हृदय रोग, चक्षुरोग, रक्त विकार, शरीर दौर्बल्यादि में लाभकारी होता है।

मेष, कर्क, सिंह तुला, वृश्चिक एवं धनु राशि अथवा इसी लग्न वालों को मानक धारण करना शुभ लाभप्रद रहता है अथवा जिनकी चन्द्र कुण्डली में सूर्य योगकारक होता हुआ भी प्रभावी न हो रहा हो, उन्हें भी माणिक्य धारण शुभ रहता है।

चन्द्र-रत्न मोती (PEARL)

चन्द्र-रत्न मोती को संस्कृत में मौक्तिक, चन्द्रमणि इत्यादि, हिन्दी-पंजाबी में मोती एवं अंग्रेज़ी में पर्ल **(Pearl) कहा जाता है। मोती या मुक्ता रत्न का स्वामी चन्द्रमा है।**

पहचान—शुद्ध एवं श्रेष्ठ मोती गोल, श्वेत, उज्ज्वल, चिकना, चन्द्रमा के समान कान्तियुक्त, निर्मल एवं हल्कापन लिए होता है।

परीक्षा—(१) गोमूत्र को किसी मिट्टी के बर्तन में डालकर उसमें मोती रात भर रखें, यदि वह अखण्डित रहे तो मोती को शुद्ध (सुच्चा) समझें। (२) पानी से भरे शीशे के गिलास में मोती डाल दें यदि पानी से किरणें सी निकलती दिखलाई पड़ें, तो मोती असली जानें। सुच्चा मोती के अभाव में **चन्द्रकान्त मणि** अथवा सफेद **पुखराज** धारण किया जा सकता है।

असली शुद्ध मोती धारण करने से **मानसिक शक्ति का विकास, शारीरिक सौन्दर्य की वृद्धि, स्त्री एवं धनादि सुखों की प्राप्ति होती है। इसका प्रयोग स्मरण शक्ति में भी वृद्धिकारक होता है।**

रोग शान्ति—चिकित्सा शास्त्र में भी मोती या मुक्ता भस्म का उपयोग मानसिक रोगों, मूर्छा-मिरगी, उन्माद, रक्तचाप, उदर-विकार, पत्थरी, दन्तरोगादि में।

धारण विधि—मोती चाँदी की अंगूठी में शुक्ल पक्ष के सोमवार को पूर्णिमा के दिन, चन्द्रमा की होरा में गंगा जल, कच्चा दूध व पाण्डुलादि में डूबोते हुए **'ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः'** के बीजमन्त्र का पाठ ११००० की संख्या में करने के पश्चात् धारण करना चाहिए। तदुपरान्त चावल, चीनी, क्षीर, श्वेत फल एवं वस्त्रादि का दान करना शुभ होगा।

मोती २, ४, ६ अथवा ११ रति का अनामिका या कनिष्ठका अंगुली में हस्त, **रोहिणी अथवा श्रवण** नक्षत्र में सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा बताए गए मुहूर्त में धारण करना चाहिए। **मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन राशि/लग्न वालों को मोती शुभ रहता है।**

चन्द्रमा का उपरत्न—चन्द्रकान्त मणि (Moon Light Stone)—यह उपरत्न चाँदनी जैसे चमक लिए हुए चन्द्रमा का 'उपरत्न' (मोती का पूरक) माना जाता है। इसको हिलाने से, इस पर एक दुधिया जैसी प्रकाश रेखा चमकती है। यह रत्न भी मानसिक शान्ति, प्रेरणा, स्मरण शक्ति में वृद्धि तथा प्रेम में सफलता प्रदान करता है। लाभ की दृष्टि से चन्द्रकान्त मणि मलाई के रंग का (सफेद और पीले के बीच का) उत्तम माना जाता है। **इसे चाँदी में ही धारण करना चाहिए।**

मंगल-रत्न मूंगा (CORAL)

इसे **संस्कृत** में अंगारकमणि तथा **अंग्रेज़ी** में **कोरल** (Coral) कहते हैं।

गोल, चिकना, चमकदार एवं औसत से अधिक वज़नी, सिन्धूरी से मिलते-जुलते रंग का मूंगा श्रेष्ठ माना जाता है। इसका स्वामी ग्रह **मंगल** है।

परीक्षा—(१) **असली मूंगे को** खून में डाल दिया जाये तो उसके चारों ओर गाढ़ा रक्त जमा होने लगता है। (२) **असली मूंगा यदि** गौ के दूध में डाल दिया जाए तो उसमें लाल रंग की झाई सी दीखने लगती है।

श्रेष्ठ जाति का मूंगा धारण करने से **भूमि, पुत्र एवं भ्रातृ सुख, नीरोगता** आदि की प्राप्ति होती है। इसके **अतिरिक्त रक्त-विकार, भूत-प्रेत बाधा, दुर्बलता, मन्दाग्नि, हृदय-रोग, वायु-कफादि विकार, पेट विकारादि में मूंगे की भस्म अथवा मिट्टी** का प्रयोग किया जाता है। **मेष, कर्क, सिंह, तुला, बृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन राशि एवं लग्न** वालों को सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करना लाभप्रद होगा।

धारण विधि—शुक्ल पक्ष के मंगलवार को प्रातः मंगल की होरा में मृगशिर, चित्रा या धनिष्ठा नक्षत्र,

में सोने या तांबे के अंगूठी में जड़वा कर, बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में ६, ८, १० या १२ रत्ति के वज़न में धारण करना कल्याणकर होता है। धारणोपरान्त मंगल स्तोत्र एवं मंगल ग्रह का दान करना शुभ होता है।

भौम बीज मन्त्र—ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः

शारीरिक स्वास्थ्य एवं कुं. में मंगल नीच राशिस्थ हो तो सफेद मूँगा भी धारण किया जाता है।

बुध रत्न पन्ना (EMERALD)

"पन्ना" बुध ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत** में मरकतमणि, फारसी में जमरूद व अंग्रेज़ी में इमराल्ड (Emerald)। पन्ना रत्न हरे रंग, स्वच्छ, पारदर्शी कोमल, चिकना व चमकदार होता है।

परीक्षा—(१) शीशे के गिलास में साफ पानी और पन्ना डाल दिया जाए तो हरी किरणें निकलती दिखाई देंगी। (२) शुद्ध पन्ने को हाथ में लेने पर वह हल्का, कोमल व आँखों को शीतलता प्रदान करता है।

गुण—'पन्ना' धारण करने से **बुद्धि तीव्र एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है। विद्या, बुद्धि, धन एवं व्यापार में वृद्धि के लिए लाभप्रद** माना जाता है। पन्ना सुख एवं **आरोग्यकारक** भी है। **यह रत्न जादू-टोने, रक्त विकार, पथरी, बहुमूत्र, नेत्र रोग, दमा, गुर्दे के विकार, पाण्डु, मानसिक विकलतादि रोगों में लाभकारी माना जाता है।**

धारण विधि—यह नग शुक्ल पक्ष के बुधवार को अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, पू.फा. अथवा पुष्य नक्षत्रों में अथवा बुध की होरा में सोने की अंगूठी में दाएं हाथ की कनिष्ठिका (छोटी) अंगुली में बुधग्रह के बीजमन्त्र से अभिमंत्रित करते हुए धारण करना चाहिए। इसका वज़न ३, ६, ७ रत्ति होना चाहिए।

बुध बीज मन्त्र—ॐ, ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, मकर व मीन राशि वालों को विशेष लाभप्रद रहता है।

गुरु—रत्न पुखराज (TOPAZ)

पुखराज गुरु (बृहस्पति) ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत में** इसे पुष्प राजा, **हिन्दी में पुखराज,** व अंग्रेज़ी में टोपाज (Topaz) कहते हैं।

पहचान विधि—जो पुखराज स्पर्श में **चिकना, हाथ में लेने पर कुछ भारी लगे, पारदर्शी, प्राकृतिक चमक से युक्त** हो वह **उत्तम कोटि का** माना जाता है।

परीक्षा—(i) जहां किसी विषैले कीड़े ने काटा हो, वहां पर असली पुखराज घिस कर लगाने से विष उतर जाता है। (ii) चौबीस घण्टे कच्चे दूध में रखने के बाद यदि चमक में अन्तर न पड़े तो पुखराज असली होगा। इत्यादि।

गुण—पुखराज धारण करने से **बल, बुद्धि, स्वास्थ्य एवं आयु** की वृद्धि होती है। **वैवाहिक सुख, पुत्र सन्तान कारक एवं धर्म-कर्म** में प्रेरक होता है। प्रेत-बाधा का निवारण एवं स्त्री के **विवाहसुख की बाधा को दूर करने में** सहायक होता है।

औषधी प्रयोग—इसको वैद्य के परामर्शानुसार केवड़ा एवं शहदादि के साथ देने से **पीलिया, तिल्ली, पाण्डु रोग, खांसी, दन्त रोग, मुख की दुर्गन्ध, बवासीर, मन्दाग्नि, पित्त-ज्वरादि** में लाभदायक होता है।

धारण विधि—पुखराज रत्न ३, ५, ७, ९ या १२ रत्ति के वजन का सोने की अंगूठी में जड़वा कर तर्जनी अंगुली में धारण करें, सुवर्ण या ताम्र बर्तन में कच्चा दूध, गंगाजल, पीले पुष्पों से एवं **"ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः"** के बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके धारण करना चाहिए। मन्त्र संख्या १९ हजार।

यह नग शुक्ल पक्ष के गुरुवार की होरा में, अथवा गुरुपुष्य योग में या पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में धारण करना चाहिए।

पुखराज धनु, मीन राशि के अतिरिक्त मेष, कर्क, वृश्चिक, राशि वालों को लाभप्रद रहता है। धारण करने के पश्चात् गुरू से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

गुरु का उपरत्न—सुनैला इसे पुखराज का उपरत्न माना जाता है। पुखराज मूल्यवान होने के कारण सुनैला को उसके पूरक के रूप में धारण किया जा सकता है। श्रेष्ठ सुनैला हल्के पीले रंग (सरसों के जैसा पीलापन) का होता है। कई बार पुखराज से अधिक पीलापन लिए होता है तथा आंशिक मात्रा में पुखराज के समान ही उपयोगी होता है। धारण विधि पुखराज के समान ही होगी।

शुक्र-रत्न 'हीरा' (DIAMOND)

शुक्र ग्रह का मुख्य प्रतिनिधित्व 'हीरा' है।

संस्कृत में इसे वज्रमणि, हिन्दी में हीरा तथा अंग्रेज़ी में डायमण्ड (Diamond) कहते हैं।

हीरा अत्यन्त चमकदार प्रायः श्वेत वर्ण का होता है।

पहचान—अत्यन्त चमकदार, चिकना, कठोर, पारदर्शी एवं किरणों से युक्त हीरा असली होता है।

परीक्षा—(i) धूप में यदि हीरा रख दिया जाये तो उसमें से इन्द्रधनुष जैसी किरणें दिखाई देती हैं। (ii) तोतले बच्चे के मुंह में रखने से बच्चा ठीक से बोलने लगता है। (iii) अन्धेरे में जुगनू की भान्ति चमकता है।

गुण—हीरे में **वशीकरण करने की विशेष शक्ति होती है।** इसके पहनने से **वंश-वृद्धि, धन-लक्ष्मी व सम्पत्ति की वृद्धि, स्त्री एवं सन्तान सुख की प्राप्ति व स्वास्थ्य** में लाभ होता है। **वैवाहिक सुख** में भी वृद्धिकारक माना जाता है।

औषधीय गुण—हीरे की भस्म शहद-मलाई आदि के साथ ग्रहण करने से अनेक रोगों में लाभ होता है जैसे—दौर्बल्यता, नपुंसकता, वायु प्रकोप, मन्दाग्नि, वीर्य विकार, प्रमेह दोष, हृदय रोग, श्वेत प्रदर, विषैला व्रण, बच्चों में सूखा रोग, मानसिक कमज़ोरी इत्यादि।

धारण विधि—शुक्ल पक्ष के शुक्रवार वाले दिन, शुक्र की होरा में, **भरणी, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र,** एक रत्ति या इससे अधिक वज़न का हीरा सोने की अंगूठी में जड़वा कर शुक्र के बीज मन्त्र (**ॐ द्रां, द्रीं द्रौं सः शुकाय नमः**) का १६ हज़ार की संख्या में जाप करके शुभ मुहूर्त में धारण करना चाहिए। हीरा मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। धारण करने के दिन शुक्र ग्रह से सम्बन्धित वस्तुएं जैसे दूध, चाँदी, दही, मिश्री, चावल, श्वेत वस्त्र, चन्दनादि का दान यथाशक्ति करना चाहिए।

हीरा (धारण करने की तिथि से) सात वर्ष पर्यन्त प्रभावकारी बना रहता है। **हीरा वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ राशि वालों को लाभदायक रहता है।**

शुक्र के उपरत्न—(i) फिरोज़ा- नीले आकाशीय रंग जैसा यह नग शुक्र का उपरत्न माना गया है। यह रत्न भूत, प्रेत, दैवी आपदा तथा आने वाले कष्टों से धारक की रक्षा करता है। यदि इस रत्न को कोई भेंटस्वरूप प्राप्त करके पहनेगा तो अधिक प्रभावशाली रहेगा। हल्के-प्रखर चमकदार रंग वाला रत्न उत्तम होता है। कोई भी कष्ट या रोग आने से पहले यह रत्न अपना रंग बदल लेता है। नेत्र रोग, सौन्दर्य, सिर दर्द, विषादि रोगों में विशेष लाभकारी रहता है।

(ii) ओपल (Opel)— यह भी शुक्र का अन्य उपरत्न है, इसको धारण करने से सदाचार, सदचिन्तन तथा धार्मिक कार्यों की ओर रुचि रहती है। अधिक लोकप्रिय नहीं है। इसके अतिरिक्त शुक्र के अन्य भी बहुत से उपरत्न प्रचलित हैं।

शनि रत्न नीलम (SAPHIRE)

नीलम शनिग्रह का मुख्य रत्न है। हिन्दी में नीलम तथा अंग्रेज़ी में सैफायर (Saphire) कहते हैं।

पहचान—असली नीलम चमकीला, चिकना, मोरपंख के समान वर्ण जैसा, नीली किरणों से युक्त एवं पारदर्शी होगा।

परीक्षा—(i) असली **नीलम को गाय के दूध में डाल दिया जाए तो** दूध का रंग नीला लगता है। (ii) पानी से भरे कांच के गिलास में डाला जाए नीली किरणें दिखाई देंगी। (iii) सूर्य की धूप में रखने **से नीले रंग की किरणें दिखाई देंगी।**

गुण—नीलम धारण करने से **धन-धान्य, यश-कीर्ति, बुद्धि चातुर्य, सर्विस एवं व्यवसाय तथा वंश में वृद्धि होती है। स्वास्थ्य सुख का लाभ होता है।**

ध्यान रहे, बहुधा नीलम चौबीस घण्टे के भीतर ही प्रभाव करना शुरू कर देता है। यदि नीलम अनुकूलन न बैठे तो भारी नुक्सान की आशंका हो जाती है। अतएव परीक्षा के तौर पर कम से कम ३ दिन तक पास रखने पर यदि बुरे स्वप्न आएं, रोग-उत्पन्न हो या चेहरे की बनावट में अन्तर आ जाए तो नीलम मत पहनें।

रोग शान्ति—नीलम धारण करने या औषधि रूप में ग्रहण करने से दमा, क्षय, कुष्ट रोग, हृदय रोग, अजीर्ण, मूत्राशय सम्बन्धी रोगों में लाभकारी है।

धारण विधि—नीलम ५, ७, ९, १२ अथवा अधिक रत्ति के वजन का, पंचधातु, लोहे अथवा सोने की अंगूठी में शनिवार को शनि की होरा में एवं **पुष्य, उभा, चित्रा, स्वा, धनि या शतभिषा नक्षत्रों** में **शनि के बीज मन्त्र ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः** मन्त्र से २३००० की **संख्या में अभिमन्त्रित** करके धारण करें। तत्पश्चात् शनि की वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना कल्याणकारी होगा।

राहु रत्न-गोमेद (ZIRCON)

राहु रत्न गोमेद को संस्कृत में गोमेदक, अंग्रेज़ी झिरकन (Zircon) कहते हैं। गोमेद का रंग गोमूत्र के समान हल्के पीले रंग का, कुछ लालिमा तथा श्यामवर्ण होता है। स्वच्छ, भारी, चिकना गोमेद उत्तम होता है तथा उसमें शहद के रंग की झांई भी दिखाई देती है।

पहचान विधि—सामान्यतः गोमेद उल्लू अथवा बाज की आँख के समान होता है तथा गोमूत्र के समान, दल रहित अर्थात् जो परतदार न हों, ऐसे गोमेद उत्तम होंगे। (१) शुद्ध गोमेद को २४ घण्टे तक गोमूत्र में रखने से गोमूत्र का रंग बदल जाएगा।

धारण विधि—गोमेद रत्न शनिवार को शनि की होरा में, स्वाती, शतभिषा, आर्द्रा अथवा रविपुष्य योग में पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी में जड़वाकर तथा राहु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ५, ७, ९ रत्ती का होना चाहिए।

राहु बीज मन्त्र—"ॐ भ्रां भ्रीं, भ्रौं सः राहवे नमः"

धारण करने के पश्चात् बीजमन्त्र का पाठ हवन एवं सूर्य भगवान को अर्घ्य प्रदान कर नीले रंग का वस्त्र, कम्बल, तिल, बाजरा आदि दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक गोमेद धारण करने से अनेक प्रकार की बीमारियां नष्ट होती हैं, धन-सम्पत्ति-सुख, सन्तान वृद्धि, वकालत व राजपक्ष आदि की उन्नति के लिए अत्यन्त लाभकारी है। शत्रु-नाश हेतु भी इसका प्रयोग प्रभावी रहता है।

जिनकी जन्म कुण्डली में राहु १, ४, ७, ९, १० वें भाव में हो, उन्हें गोमेद रत्न पहनना चाहिए। मकर लग्न वालों के लिए गोमेद शुभ होता है।

केतु रत्न लहसनिया (CAT'S EYE STONE)

केतु-रत्न लहसनिया को संस्कृत में वैदूर्य, हिन्दी में लहसनिया, अंग्रेज़ी में Cat's eye Stone कहते हैं। यह नग अन्धेरे में बिल्ली की आंखों के समान चमकता है। लहसनिया ४ रंगों में पाया जाता है। काली तथा श्वेत आभा युक्त लहसनिया जिस पर यज्ञोपवीत के समान तीन धारियां खिंची हों, वह वैदूर्य ही उत्तम होता है।

पहचान—(१) असली लहसनिया को यदि हड्डी के ऊपर रख दिया जाए तो वह २४ घण्टे के भीतर हड्डी के आर-पार छेद कर देता है। (२) असली वैदूर्य में ढाई या तीन सफेद सूत्र होते हैं, जो बीच में इधर-उधर घूमते हिलते रहते हैं।

धारण विधि—लहसनिया रत्न बुधवार के दिन अश्विनी, मघा, मूला नक्षत्रों में, रविपुष्य योग में पंचधातु की अंगूठी में कनिष्ठका अंगुली में धारण करें। धारण करने से पूर्व केतु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करें। ५ रत्ती से कम वज़न का नहीं होना चाहिए। प्रत्येक ३ वर्ष पश्चात् नई अंगूठी में लहसनिया जड़वाकर उसे अभिमन्त्रित कर धारण करना चाहिए।

केतु बीज मन्त्र—"ॐ स्रां स्रीं, स्रौं, सः केतवे नमः"

रत्न धारण करने के पश्चात् बुधवार को ही किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को तिल, तेल, कम्बल, धूर्मवर्ण का वस्त्र, सप्तधान्य (अलग-अलग रूप में) यथाशक्ति दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक लहसनिया धारण करने से भूत प्रेतादि की बाधा नहीं रहती है। सन्तान सुख, धन की वृद्धि एवं शत्रु व रोग नाश में सहायता प्रदान करता है।

अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे यहाँ 'रत्न ज्योतिष विज्ञान' पुस्तक 35 रु० भेजकर मंगवा सकते हैं। **बृहदरत्न शास्त्र, मूल्य १०० रुपये, जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।**

ज्योतिष सम्बन्धी अनुपम पुस्तकें वी० पी. पी. द्वारा मंगवाएँ

ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड)

इसमें भारतीय ज्योतिष के प्रारम्भिक इतिहास से लेकर ज्योतिष सम्बन्धी प्रारम्भिक ज्ञान—सम्पूर्ण बड़ी जन्मपत्री निर्माण शैली, ग्रहों से सप्तवर्गी बलाबल निकालना। भावों, राशियों एवं ग्रहों तथा फलादेश सम्बन्धी मूलभूत सिद्धान्तों को अत्यन्त सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है। (मूल्य 60 रुपए)

वर्षफल चन्द्रिका

(नवीन संशोधित संस्करण)

इसमें अब प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय, नवीन वेधसिद्ध सारिणी के अतिरिक्त लाल किताब के अनुसार वर्षफल बनाने तथा पुराणोक्त, तान्त्रिक व लाल किताब के उपायों का समावेश किया गया है। प्रश्नकाल एवं गोचरफल कथन की रीतियों का विशद वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त वर्षफल बनाने और वर्ष भर का ठीक–ठीक फलादेश कहने के लिए उत्तम पुस्तक है। (मूल्य 60 रु.)

ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) प्रथम भाग

गत कई वर्षों से जो प्रकाशानाधीन था। अब छपकर आ चुका है। फलित ज्योतिष सम्बन्धी आरम्भिक जानकारी सहित प्रत्येक लग्न एवं राशि के अनुसार ग्रहों का फल, दृष्टि फल, तथा कुण्डली में बनने वाले अनेकों योगों एवं फलादेश बताने के मूलभूत सिद्धान्तों को अत्यन्त सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है। लेखक के अथक परिश्रम का परिणाम है। मूल्य 250/–

ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) द्वितीय भाग

(फलित ज्योतिष सम्बन्धी सम्पूर्ण ज्ञान हेतु)

फलादेश कथन में विशेष सूत्र, तुला से मीन लग्न राशियों तक के सम्बन्ध में गुण, स्वभाव, शिक्षा, कैरियर, स्वास्थ्य रोग, प्रेम विवाह, व्यवसाय उपायों आदि के सम्बन्ध में सूक्ष्म एवं विस्तृत जानकारी, कुण्डली में सभी ग्रहों का अनेक उदाहरण कुण्डलियों सहित भावगत फलादेश, दो–तीन एवं अधिक ग्रहों के योग फल, दशाऽन्तर्दशाओं द्वारा फलादेश, त्रिशांश, ज्योतिष और रोग, स्त्री जातिकाओं सम्बन्धी फल एवं मंगलीक दोष आदि विषयों पर महत्त्वपूर्ण एवं शोधपूर्ण व्याख्याओं सहित अत्यन्त सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है।

मूल्य 250 रुपए।

पं० देवीदयालु ज्यो. एण्ड सन्ज़ द्वारा प्रकाशित 'राशिफल'—सन् 2004 ई.

जन्म एवं नाम राशि के आधार पर सन् 2004 ई० का दैनिक एवं साप्ताहिक राशिफल—जिसमें प्रत्येक स्त्री–पुरुष की वर्षभर में समय-समय पर घटने वाली घटनाएँ और उनका प्रभाव, व्यवसाय, दाम्पत्य सुख, स्वास्थ्य तथा अन्य समस्त विषयों के फलादेश सहित उपाए दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त संक्षिप्त त्यौहार, शनि-साढ़ेसाति तथा रत्नों सम्बन्धी जानकारी भी दी गई है। (मूल्य—30 रु.)

ज्योतिष सम्बन्धी अन्य अमूल्य पुस्तकें

अर्द्ध शताब्दि पंचांग	**640 रु०**
श्री दशवर्षीय पंचांग	160 रु०
Indian Ephemeris	**50 रु०**
ग्रहों को कैसे शान्त करें	**—85 रु०**
तनुभाव प्रकाश	**30 रु०**
मुफीद आलम जन्त्री (हिन्दी–उर्दू–पंजाबी)	40 रु०
ज्योतिष और सन्तान योग	50 रु०
ज्योतिष और रोग	60 रु०
ज्योतिष और व्यवसाय	50 रु०
भारतीय ज्योतिष (नेमिचन्द्र)	200 रु०
फलदीपिका	120 रु०
भृगु संहिता	200 रु०
भृगु संहिता (छोटी)	100 रु०
भारतीय ज्योतिष (लाल किताब)	155रु.
लाल किताब ज्योतिष (पं. अशान्त)	200 रु०
शनि साढ़ेसति से छुटकारा	40 रु०
षड्वर्ग फलम	180 रु०
ज्योतिष के अनुभूत रहस्य	250 रु०
अष्टकवर्ग सिद्धान्त व प्रयोग	100 रु०
कालसर्पयोग कारण-निवारण	60 रु०
मंगलीक दोष भ्रांति-निदान	90 रु०
फलित ज्योतिष रैडिरैक्नर	50 रु०
क्या कहते हैं कुण्डली के ग्रह	80 रु०
रावण संहिता (छोटी)	**400 रु०**
रावण संहिता (बड़ी)	**2500 रु०**
काली किताब	**150 रु०**
भृगु संहिता महाशास्त्र	**2100 रु०**
शनि शमन	**90 रु०**
शत्रु शमन	**190 रु०**
मानसागरी (भा० टी०)	100 रु०
भारतीय फलित ज्योतिष	100 रु०
बृहज्योतिषसार	80 रु०
जातकभरणम्	80 रु०
मुहूर्त्त चिन्तामणि	60 रु०
बृहजातकम्	150 रु०
वृहद् होरा शास्त्रम्	200 रु०
आयुर्निर्णय	**200 रु०**
जातकतत्त्वम्	**125/–**
अर्घ मार्तण्ड	55 /–
मुहूर्त्त मार्तण्ड	125/–
ज्योतिष तत्त्व प्रकाश	**155/–**
प्रश्न मार्ग (दो खण्ड)	300/–
केवलज्ञान प्रश्नचूड़ामणि	45/–
प्रश्न चन्द्रप्रकाश	70/–
प्रश्न भास्कर	80/–
प्रश्न विद्या	50/–
वैवाहिक सुख	**95/–**
सन्तान सुख-सर्वांग चिंतन	165/–
वैवाहिक विलम्ब के उपाए	95/–
भावकुतूहलम्	60/–
नाक्षत्र ज्योतिष	80/–
जातक भूषणम्	150 रु०
कुण्डली दर्पण	80 रु०
दशाफल विचार	**45 रु०**
दशाफल दर्पण	**60 रु०**
कालसर्प योग निवारण	65 रु०
लघु पराशरी भाष्य	**125 रु०**
मंत्र सागर	**100 रु०**
शिव मंत्रावली	**100 रु०**
हस्तरेखा शास्त्र	50 रु०
चन्द्र हस्त विज्ञान	225 रु०
हस्त रेखा विज्ञान	125 रु०
सम्पूर्ण हस्तरेखा शास्त्र	150 रु०
हस्तरेखाएँ और दाम्पत्य जीवन	50 रु०
चमत्कार चिन्तामणि	175/–
ज्यो० द्वारा रोग विचार	125/–
हस्तरेखा शास्त्र के वैज्ञानिक सिद्धान्त	150/–
कालसर्प एवं घट विवाह	100/–
लग्न दर्शन पं. अशान्त (चार भाग)	400/–
ज्योतिष सर्वस्व	200/–
अनिष्ट ग्रह निवारण	40/–
सूर्य सिद्धान्त	60/–
लघु पाराशरी	40/–
सर्वार्थ चिन्तामणि	70/–
सुनहरी किताब	150/–
अष्टकवर्ग से भविष्य ज्ञान	100/–

वास्तुशास्त्र विज्ञान पर

सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र	100 रु०
वास्तुशास्त्रानुसार भवन निर्माण	120 रु०
रेमिडियल वास्तु शास्त्र	150 रु०
भारतीय वास्तुशास्त्र	120 रु०
व्यवहारिक वास्तुशास्त्र	100 रु०
कमर्शियल वास्तुशास्त्र	150 रु०
पर्यावरण वास्तुशास्त्र	150 रु०
वास्तुकला और भवन निर्माण	120 रु०
वास्तुशास्त्र रहस्य	250 रु०
वास्तु द्वारा धन प्रवेश	300 रु०
समरांगण वास्तुशास्त्र	70 रु०
त्रिफला गृह प्रवेश	150 रु०
वास्तु दोष निवारण	100 रु०
फेंग शुई 151 स्वर्णिम सूत्र	100 रु०

रत्न ज्योतिष

रत्न ज्योतिष	30 रु०
रत्न ज्यो० विज्ञान	40 रु.
रत्न प्रदीप	100 रु.
सम्पूर्ण रत्न विज्ञान	110 रु.
रत्न, रुद्राक्ष और भाग्य	150 रु.
रत्न और रुद्राक्ष	40 रु.
रत्न परिचय	40 रु.
रत्नों का रहस्यमय संसार	**150 रु.**
रेखाओं का रहस्यमय संसार	100 रु.

ज्योतिष ज्ञान शास्त्र

(पंजाबी भाषा में)

यह पुस्तक हमारे पंजाबी भाषा के पाठकों के लिए विशेष रूप से तैयार की गई है। जिसमें सम्पूर्ण जन्मपत्री बनाने की सरल विधि तथा उसके फलकथन के लिए आवश्यक नियम तथा जानकारी प्रस्तुत की गई है। गणित तथा फलित ज्योतिष की एक सम्पूर्ण पुस्तक पंजाबी भाषा में। आज ही मंगवाएं। मूल्य 75 रु.

ज्योतिष की दुर्लभ

लाल किताब

अब हिन्दी में उपलब्ध मूल्य डाक व्यय सहित 500 रुपए

उर्दू की फ़ोटोस्टेट (असली)

मूल्य—1500 रुपए

सभी प्रकार की पुस्तकें मंगवाने का पता—

जनरल बुक डिपो (पब्लिशर्ज़)

अड्डा होशियारपुर

जालन्धर शहर (पंजाब) फोन : 2457959

नोट—प्रत्येक आर्डर के साथ 50 रुपए अग्रिम राशि M.O. द्वारा भेजें। (डाक व्यय अलग)

स्थापित सं० १८७५ ई०

गौरवमयी वर्ष प्रवेश १२१वां

मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी के सर्वप्राचीन प्रतिष्ठित

पंचाँग दिवाकर ज्योतिष कार्यालय के नियम

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से उत्तरी भारत में सर्वप्राचीन एवं सुप्रतिष्ठित मशहूर पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान से छपने वाली सुप्रसिद्ध पंचाँग दिवाकर व मुफीद–आलम जन्त्री उर्दु, हिन्दी, पंजाबी एवं अन्य ज्योतिष व धार्मिक प्रकाशनों को, पंचाँग प्रवर्त्तक पं० देवी दयाल (लाहौर) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में, राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीयस्तर पर जो ख्याति प्राप्त हुई है, वह हमारे सुविज्ञ पाठकों से छिपी नहीं।

हमारे ज्योतिष कार्यालय में प्रामाणिक जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि शुद्ध गणित द्वारा तैयार किए जाते हैं जिससे आप घर बैठे ही अपना भविष्य जान सकते हैं। **ध्यान रहे**, सही फलादेश का आधार वैज्ञानिक ढंग से बनी शुद्ध जन्मपत्री है। जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्षों जैसे विद्या में सफलता, व्यवसाय एवं कैरियर सम्बन्धी प्रश्न, भाग्योदय विवाह–सन्तानादि, परिवारिक सुख, विदेश यात्रा योग इत्यादि प्रश्नों के उत्तर जन्मपत्री एवं ग्रहों के आधार पर अनुशीलन करके भेजे जाते हैं। यदि ग्रहों सम्बन्धी कोई विघ्न बाधाएं हों, तो अनिष्ट ग्रहों के उपाय भी शास्त्रोक्त विधि पर आधारित निर्दिष्ट किए जाते हैं।

* **मध्यम जन्मपत्री**—संक्षिप्त रूप से अपना भविष्य जानने के लिए जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम, दादा का नाम, गोत्र आदि लिखें। जिसकी फीस २५१ रुपए होगी। विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री के लिए ५५१ रुपए अथवा ११ पौंड होगी।

* **सम्पूर्ण वृहद् जन्मपत्री**—आपके जीवन में होने वाली महत्त्वपूर्ण घटनाओं, नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, विवाहादि के सम्बन्ध में विस्तृत रूप से विवरण दिया जाता है। बड़ी हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान, जन्म तारीख, गोत्र, प्रसिद्ध नाम, पिता का नाम, दादा का नाम, वर्तमान व्यवसाय आदि लिख भेजें। इसके लिए वृहद् जन्मपत्री के लिए फीस ५०१ रुपए से ११०० रुपए तक। विदेश में उत्पन्न जातक के लिए फीस ७५१ रुपए अथवा ३१ पौंड होगी। डाक व्यय अलग।

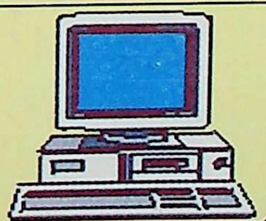
* **वर्षफल**—आपके लिए आगामी वर्ष कैसा रहेगा ? इसके लिए जन्म कुण्डली की फोटो कापी अवश्य साथ भेजें। यदि जन्मपत्री नहीं है, तो जन्म समय, तारीख, सन्, ई० व्यवसाय अंग्रेज़ी तारीख, स्थान तथा अपनी पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखते हुए मनपसन्द फूल का नाम लिखें। फलादेश के लिए फीस २५१रुपए होगी। कृपया पूर्ण राशि अग्रिम भेजें। विदेश के लिए २१ पौंड होगी। डाक व्यय अलग।

* **वायदा—व्यापारियों के लिए चाँस**—वायदा व हाज़िर व्यापारियों के लिए रुई, बिनौले, खल, सरसों, गुड़, चने आदि के लिए चाँस की मासिक रिपोर्ट तैयार की जाती है। मासिक रिपोर्ट की फीस ३०१ रुपए है। यदि एक जिन्स से अधिक होगी तो २०० रुपए अतिरिक्त होंगे।

* **शेयर—बाज़ार**—शेयर बाज़ार के उतार–चढ़ावतथा प्रमुख शेयरों के तेज़ी के चाँस के लिए शेयर बाज़ार की मासिक रिपोर्ट की फीस ३५० रुपए। साथ में अपनी जन्मपत्री की फोटो कापी भी भेज दें।

* **नोट**—पण्डित जी से प्रत्यक्ष केवल शनिवार एवं बुधवार को मिला जा सकता है। अतः दूर से आने वाले सज्जन फोन या पत्र द्वारा पहले समय निश्चित करके सम्पर्क करें।

कम्प्यूटर (Computerized) शुद्ध/वैज्ञानिक जन्मपत्री—लेटैस्ट प्रामाणिक सौफ्टवेयर से तैयार कम्प्यूटर जन्मपत्री एवं हस्तलिखित उपायों सहित मध्यम २५१/रुपये,
वृहद् षड्वर्गी फलादेश व हस्त लिखित उपायों सहित ५५०/–रुपए।



Pt. Panna Lal Jyotishi M.A. **Office Pt. Devi Dayal Jyotishi & Sons.**
Adda Hoshiarpur, Jalandhar—144008 (India) Ph. 2457959, 2221325 Fax : 2227388

कृपया ड्राफ्ट/मनीआर्डर पं० पन्ना लाल ज्योतिषी, जालन्धर के नाम से ही भेजें।

